Jannat Mein Le Jane Wale Aa'mal (Hindi)

नेक आ'माल के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 2000 से ज़ाइद अहादीसे मुबा-रका का मुस्तनद मज्मूआ

اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ

तरजमा बनाम

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

मुअल्लिफ़

हाफ़िज़ मुहम्मद श-रफ़ुद्दीन अब्दुल मुअमिन बिन ख़लफ़ दम्याती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْہَادِی

मु-तवफ़्फ़ा 705 हि.

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج١ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

येह किताब (**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**)

हाफ़िज़ **मुह़म्मद श-रफ़ुद्दीन** अ़ब्दुल मुअमिन बिन ख़लफ़ दम्याती़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى (मु-तवफ़्फ़ा 705 हि.) की **अ़-रबी** तालीफ़ اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِىْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ का मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) की त़रफ़ से पेश कर्दा **उर्दू** तरजमा है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अह़मदआबाद-1, गुजरात
M0. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

"जन्नती आ'माल अपना लो" के 15 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "15 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। (2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

1...... रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ा-लआ़ करूंगा।

2...... ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और

3...... क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा।

4...... कुरआनी आयात और

5...... अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा।

6...... जहां जहां "अल्लाह" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और

7...... जहां जहां "सरकार" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढूंगा।

8...... फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर अ़मल की कोशिश करूंगा।

9...... इस रिवायत "عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है।" (حلیۃ الاولیاء، رقم ١٠٧٥٠، ج٧، ص٣٣٥) पर अ़मल करते हुए इस किताब में दिये गए वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की ब-र-कतें लूटूंगा।

10...... (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा।

11...... (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा।

12...... दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा।

13...... इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या'नी एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी।" (مؤطا امام مالک، ج٢، ص٤٠٧، رقم: ١٧٣١) पर अ़मल की निय्यत से (कम अज़ कम 12 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा।

14...... इस किताब के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा।

15...... किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को मुत्त़लअ़ करूंगा।

नेक आ'माल के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 2000 से ज़ाइद
अहादीस का मुस्तनद मज्मूआ

जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

तरजमा

اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ

मुअल्लिफ़
हाफ़िज़ मुहम्मद श-रफ़ुद्दीन अब्दुल मुअमिन बिन ख़लफ़ दम्याती عَلَيْهِ الرَّحْمَة

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर
मक-त-बतुल मदीना, अहमदआबाद

الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِیْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ

तरजमा बनाम : जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

मुअल्लिफ़ : हाफ़िज़ अबू मुहम्मद श-रफ़ुद्दीन दम्याती عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो'बए तराजिमे कुतुब)

सिने तबाअ़त : जुमादिल अव्वल 1434 हि. ब मुताबिक़ मार्च 2013 ई.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

मुम्बई : 19,20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपुर : मस्जिद ग़रीब नवाज़ के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर फ़ोन : 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, अजमेर.

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

WWW.DAWATEISLAMI.NET

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिके़ आ'ला ह़ज़रत, शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله علٰی اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلی اللّٰہ تعالٰی علیہ وسلم तब्लीग़े कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़्याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का कि़याम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه

(2) शो'बए दर्सी कुतुब

(3) शो'बए इस्लाही़ कुतुब

(4) शो'बए तराजिमे कुतुब

(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब

(6) शो'बए तख़्रीज

''**अल मदीनतुल इल्मिय्या**'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ''**दा'वते इस्लामी**'' की तमाम मजालिस ब शुमूल ''**अल मदीनतुल इल्मिय्या**'' को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 सि.हि.

नम्बर शुमार	ज़िम्नी फ़ेहरिस्त	सफ़हा नम्बर
1	इल्म के फ़ज़ाइल	31
2	त़हारत का बयान	49
3	नमाज़ का सवाब	59
4	नफ़्ल नमाज़ का सवाब	127
5	जुमुआ़ का सवाब	161
6	नमाज़े जनाज़ा का सवाब	171
7	स-दक़ात का सवाब	197
8	रोज़े का सवाब	253
9	ह़ज का सवाब	290
10	जिहाद का सवाब	327
11	कुरआन पढ़ने का सवाब	385
12	ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल	410
13	हुस्ने अख़्लाक़ का सवाब	502
14	ज़ोह्द और अदब का सवाब	541

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	सफ़्हा नम्बर
पेशे लफ़्ज़	23
मुअल्लिफ़ का मुख़्तसर तआरुफ़	25
श-रफ़े इन्तिसाब	30
इ़ल्म के फ़ज़ाइल	31
इ़ल्म और उ़-लमा का सवाब	31
इ़ल्म की फ़ज़ीलत के बारे में अक़्वाले सहा़बा व ताबिई़न (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم)	37
रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये इ़ल्म सीखने और सिखाने का सवाब	38
बह़स और झगड़ा तर्क करने का सवाब	42
ता'लीम, तस्नीफ़ और रिवायत बयान करने का सवाब	43
किताब व सुन्नत पर अ़मल करने का सवाब	46
त़हारत का बयान	49
मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करने की फ़ज़ीलत	53
मिस्वाक शरीफ़ की फ़ज़ीलत	54
हर वक़्त बा वुज़ू रहने का सवाब	55
दौराने वुज़ू अवराद पढ़ने का सवाब	57
तहि़य्यतुल वुज़ू का सवाब	58
नमाज़ों का सवाब	59
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अज़ान देने का सवाब	59
अज़ान का जवाब देने का सवाब	65

पेशे लफ्ज़

फ़ी ज़माना मुसल्मानों की अक्सरिय्यत नेक आ'माल के मुआ-मले में बेहद ग़फ़्लत व सुस्ती में मुब्तला दिखाई देती है। इबादात में रग़बत न होने के बराबर है जब कि गुनाहों का बाज़ार ख़ूब गर्म है। इबादात में रग़बत न होने की दो बड़ी वुजूहात हो सकती हैं एक तो इन की अदाएगी में मशक़्क़त का महसूस होना और दूसरी इन इबादात के बदले हासिल होने वाले इन्आमात से ला इल्म होना। नेक आ'माल के बदले इन्सान किन इन्आमात का मुस्तहिक़ होता है और उसे कैसी कैसी अज़ीम ने'मतों से नवाज़ा जाएगा, ज़ेरे नज़र किताब "**जन्नत में ले जाने वाले आ'माल**" इन्ही उमूर के बयान पर मुश्तमिल है। येह किताब अज़ीम मुहद्दिस हाफ़िज़ श-रफ़ुद्दीन दम्याती عَلَيْهِ الرَّحْمَة की मायानाज़ तालीफ़ "**اَلْمَتْجَرُ الرَّابِحُ فِىْ ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِحِ**" का उर्दू तरजमा है। इस किताब में मुख़्तलिफ़ नेक आ'माल म-सलन हुसूले इल्म, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, दीगर स-दक़ात, तिलावते कुरआन, सब्र, हुस्ने अख़्लाक़, तौबा, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और दुरूदे पाक के सवाब के बारे में 2000 से ज़ाइद अहादीस मौजूद हैं। इस किताब का मुता-लआ करने वाले ख़ुद में अमल का जज़्बा बेदार होता महसूस करेंगे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ। येह किताब न सिर्फ़ आम मुसल्मानों के लिये मुफ़ीद है बल्कि नेकी की दा'वत आम करने का जज़्बा रखने वाले मुबल्लिग़ीन, अइम्मए मसाजिद और ख़ु-तबाए इज़ाम के लिये इस में कसीर मवाद मौजूद है।

इस किताब पर इन्तिहाई एहतियात से दर्जे ज़ैल काम किया गया है।

★ तरजमे में आसान फ़ह्म अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं।

★ हर हदीस की तख़्रीज अस्ल माख़ज़ से की गई है।

★ आयात का तरजमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के शोहरए आफ़ाक़ तर-ज-मए कुरआन "कन्ज़ुल ईमान" से दर्ज किया गया है।

★ बा'ज़ अहादीस में मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआनी व मतालिब ब्रेकेट में लिख दिये गए हैं।

★ अक्सर रावियों के नामों पर ए'राब लगा दिये गए हैं।

★ किसी हदीस के बारे में मुअल्लिफ़ की तरफ़ से बयान कर्दा तफ़्सील को वज़ाहत के उन्वान से मिन्नो व अन दर्ज कर दिया गया है।

अल ग़रज़ ! इस किताब को आप तक पहुंचाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मु-तअ़द्दद म-दनी उ़-लमा ने मुसल्सल मेह़नत की है। इस तरजमे की ख़ूबियां **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला की अ़ता और मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इनायतों और अस्लाफ़े इ़ज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُم नीज़ बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की ब-र-कतों का नतीजा हैं और इस में पाई जाने वाली ख़ामियों में हमारी ना दानिस्ता कोताही को दख़्ल है। इस किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दूसरे मुसल्मानों को इस के मुत़ा-लए़ की तरग़ीब दे कर नेकी की दा'वत को आ़म करने का सवाब लूटिये। नीज़ इस के इ़लावा मु-तअ़द्दद कुतुब पर ब-यक वक़्त काम जारी है। अ़न्क़रीब एक और ज़ख़ीम किताब ''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल ''(اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْکَبَائِرِ لِابْنِ حَجَرِ الْھَیْتَمِی) भी आप के सामने पेश की जाएगी اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि हमें **''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश''** करने के लिये म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब
(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

हालाते मुअल्लिफ़

इमाम हाफ़िज़ श-रफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन बिन ख़लफ़ अद्दम्याती رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ

नाम व नसब :

अल इमाम अल हाफ़िज़ अश्शैख़ अबू मुहम्मद श-रफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मुअमिन बिन ख़लफ़ इब्ने अबिल ह़सन बिन श-रफ़ुद्दीन बिन अल ख़िज़्र बिन मूसा अत्तौनी अद्दम्याती मा'रूफ़ बिह इब्नुल माजिद।

पैदाइश व वफ़ात :

आप 613 हि. ब मुताबिक़ 1217 ई. में पैदा हुए और 705 हि. ब मुताबिक़ 1306 ई. में इस दारे फ़ानी से रेह़लत फ़रमा गए।

हुसूले इल्म :

आप की पैदाइश 613 हि. में तौना शहर में हुई जिस को आज जज़ीरा बह़रुल मन्ज़िला में कोम अ़ब्दुल्लाह बिन मलाम के नाम से मौसूम किया है। आप की उ़म्र का इब्तिदाई हिस्सा मिस्र के मशहूर शहर दम्यात् में गुज़रा इस शह्र में आप ने अपने मज़्हब में तफ़क़्क़ोह हासिल किया और वहीं पर इमाम अबुल मकारिम अ़ब्दुल्लाह और अबू अ़ब्दुल्लाह हुसैन इब्नी मन्सूरुस्सा'दी से क़िराअत और ह़दीस का समाअ़ और शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन मूसा बिन नो'मान से भी ह़दीस का समाअ़ किया जिन्हों ने इमाम दम्याती को ह़दीस के इल्म की त़रफ़ मु-तवज्जेह किया वरना उन्हों ने इमामे शाफ़ेई رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ की फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह की त़रफ़ अपनी तवज्जोह मब्ज़ूल कर रखी थी। उस वक़्त आप की उ़म्र 23 साल की थी, इस के बा'द आप मिस्र के शह्र अस्कन्दरिया मुन्तक़िल हो गए और वहां पर सिने 630 हि. में उ़-लमा के जम्मे ग़फ़ीर से इल्मे ह़दीस का समाअ़ किया। इस के बा'द आप क़ाहिरा तशरीफ़ ले गए और इल्मे ह़दीस की रिवायत और दरायत में आ'ला मक़ाम हासिल किया और हाफ़िज़ ज़किय्युद्दीन अ़ब्दुल अ़ज़ीम मुन्ज़री मुसन्निफ़े तरग़ीब व तरहीब से वासिता रहे और इन से इल्मे ह़दीस की समाअ़त की और श-रफ़े तलम्मुज़ तै किया। फिर आप ने 643 हि. में ह़ज के लिये ह़-रमैने शरीफ़ैन का सफ़र किया और फिर 645 हि. में शाम का सफ़र किया फिर जज़ीरा का फिर दो मरतबा इराक़ का, इन मुमालिक में मौजूद अकाबिरीने इस्लाम से उ़लूम का समाअ़ किया और इल्म का ख़ूब नफ़अ़ हासिल किया। इस त़रह़ से आप ने दिमिश्क़, ह़मात और ह़लब के मशाइख़ से भी इल्म हासिल किया और ह़लब में हाफ़िज़ अबुल ह़ज्जाज यूसुफ़ बिन ख़लील के ह़ल्क़े में काफ़ी अ़र्सा गुज़ारा और फिर मारिदीन और बग़दाद में भी इल्मी सफ़र किया। आप की अक्सर सुकूनत दिमिश्क़ और क़ाहिरा में रही, यहीं पर उन्हों ने इल्म की शनाख़्त की, यहीं से फ़ु-क़हा, उ़-लमा और त़-लबा ह़दीस वग़ैरा के लिये मुस्तफ़ीद होते थे, आप इल्म के मैदान में इस द-रजे तरक़्क़ी कर गए थे कि इमाम ताजुद्दीन सुब्की رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने अपनी किताब त़ब्क़ातुश्शाफ़िइय्या अल कुब्रा में आप का इन अल्फ़ाज़ में तज़्किरा किया :

" حافظ زمانه واستاذ الاستاذین فی معرفة الانساب و امام اهل الحدیث المجمع علی جلالته،الجامع بین الدرایة والروایة با لسند االعالی القدر"

इमाम हाफ़िज़ मज़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं, " ما رایت احفظ منه"

हाफ़िज़ बरज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं,

"کان آخر من بقی من الحفاظ واهل الحدیث اصحاب الروایه العالیه والدرایه الوافرة"

हाफ़िज़ इमाम ज़-हबी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अपनी मो'जम में फ़रमाते हैं,

"العلامة الحافظ الحجة احد الائمة الاعلام وبقية نقاد الحديث وحل سمع الكثير ومعجمعه نحو الف وما ئتين و خمسين شيخا وله تصانيف فى الحديث وا لعوالى والفقه واللغه وغير ذلك ومحاسنه جمة،كان مليح الهيئة حسن الخلق بساما فصيحا لغويامقرء اجيد العبارة كبير النفس صحيح الكتب مفيد جيد المذاكرة موسعا عليه الرزق وله حرمة وجلالة."

तफ़्सीरे बह़रे मुह़ीत़ वाले इमाम अबू ह़य्यान उन्दुल्सी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इन की मद्ह़ में फ़रमाते हैं,

"حافظ المشرق والمغرب"

इन अकाबिरीने इस्लाम के इन अक़्वाल और शहादतों से आप की ह़दीस व फ़िक़्ह और दीगर उ़लूम में शानो शौकत और मर्तबे का पता चलता है, इसी त़रह़ से आप की तालीफ़ व तस्नीफ़ कर्दा कुतुब के मुत़ा-लए से भी आप की रिफ़्अ़त और मन्ज़िलत का अन्दाज़ा होता है जिस त़रह़ से कि आप के असातिज़ा और तलामिज़ा के अस्माए गिरामी से आप के इ़ल्म और अख़्ज़ व समाअ़ का इ़ल्म होता है ।

आप के असातिज़ए किराम :

इब्नुल मक़ीर, यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल मुअ़त़ी अल मह़ल्ली, इ़ल्म बिन साबूनी, कमाल बिन ज़रीर, इब्ने अ़लीक़, इब्ने क़मीरा, मौहूब अल जवालीक़ी, हिब्बतुल्लाह मुह़म्मद बिन मफ़्रह़ अल वाइ़ज़, शुऐ़ब बिन ज़ा'फ़रान, इब्ने रवाह़, इब्ने रवाह़ा, इब्नुल जमीज़ी, रशीद बिन स-लमह, मक्की बिन इलान, और इन ह़ज़रात के शागिर्दों से भी इ़ल्मे ह़दीस की समाअ़त की जैसे अस्ह़ाबुस्स-लफ़ी, शहदा, इब्ने अ़साकिर, और मुह़द्दिस इब्ने शातील के बहुत से शागिर्दान, क़ज़ाज़, इब्ने बर्री नह़्वी, ख़ुशूई, और ह़ाफ़िज़ ज़किय्युद्दीन मुन्ज़री साहि़बे अत्तरग़ीब वत्तरहीब से बिल मुशाफ़ा इ़ल्मे ह़दीस की समाअ़त की और ज़िन्दगी का काफ़ी हिस्सा उन के पास रहे ह़त्ता कि उन के जा नशीन हुए, आप के असातिज़ा की ता'दाद जैसा कि ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी ने अद्दु-ररे कामिनह में नक़्ल की है एक हज़ार दो सो पचास (1250) है ।

शागिर्दाने गिरामी :

(1) कमालुद्दीन बिन अल अ़दीम (2) अबुल ह़सन अल यूनीनी (3) क़ाज़ी इल्मुद्दीन इख़्नाई (4) इल्मुद्दीन अल क़ौनवी (5) शैख़ असीरुद्दीन अबू ह़य्यान नह़वी साह़िबे तफ़्सीरे बह़रे मुह़ीत़ (6) ह़ाफ़िज़ फ़त्हुद्दीन इब्ने सय्यिदुन्नास (7) अल इल्म अल बरज़ाली (8) ज़किय्युद्दीन अल मज़ी (9) अल उ़मर अन्नवेरी (10) इमाम अन्न-ववी (11) अ़ल्लामा तक़िय्युद्दीन अस्सुब्की वग़ैरा رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی

ज़ाहिरी और बात़िनी हुस्नो जमाल और शक्लो सूरत :

इमाम ज़-हबी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं आप की ज़ाते सितूदा सिफ़ात में वजाहत, एह़तिराम और जलालत आशकार रहती थी, रिज़्क़ व मईशत में ख़ूब वुस्अ़त थी, आप को **मशै-ख़तुज़्ज़ाहिरिय्यह** और **मशै-ख़तुल मन्सूरिय्यह** के बड़े और अहम ओहदों पर फ़ाइज़ किया गया, हुस्ने सूरत इन्तिहा द-रजे की ह़ासिल थी वज़्अ़ क़त़्अ़ में मलाह़त थी, हुस्ने ख़ल्क़त थी, मुस्कुराहट थी, जवानी की शक्लो सूरत इन्तिहाई साफ़ और चिकनी थी त़र्ज़े गुफ़्त-गू में फ़साह़त निसार होती थी, लुग़त के माहिर थे, क़िराअत में रवानी थी, जय्यिदुल इ़बारत थे, मुख़्तलिफ़ फ़ुनून पर ह़ावी थे, बेहतरीन मुज़ा-करा और हुस्ने अ़क़ीदा के मालिक थे।

वफ़ात :

इमाम दम्याती़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपनी सातवीं सदी हिजरी के तक़रीबन 92 साल गुज़ारे, जिन में आप ने उ़लूमे इस्लामिया की तह़सील, तदरीस और तस्नीफ़ में बिल ख़ुसूस इल्म की ख़िदमत में सर्फ़ फ़रमाई। आप की वफ़ात ब क़ौले ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة के इस त़रह़ से पेश आई कि आप अपने घर तशरीफ़ ले जा रहे थे कि अचानक बेहोश हो गए और ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से जा मिले और ह़ाफ़िज़ इब्ने तग़री बरदी ने आप की वफ़ात की येह सूरत लिखी है कि आप क़ाहिरा में अ़स्र की नमाज़ पढ़ने के बा'द अचानक बेहोश हो गए तो इन्हें इन के घर ले जाया गया और उसी वक़्त वफ़ात पा गए, येह दिन इतवार का था तारीख़ 15 ज़ुल क़ा'दा 705 हि. की थी और आप को क़ाहिरा में बाबुन्नस्र के क़ब्रिस्तान में दफ़्न किया गया, आप की नमाज़े जनाज़ा क़ाज़ी बदरुद्दीन इब्ने जमाअ़ा ने पढ़ाई।

आप की तस्नीफ़ात :

अकाबिरीने इस्लाम की कुतुब के मु-तअ़ल्लिक़ जिन मुसन्निफ़ीन ने आ'ला क़िस्म की ख़िदमात सर अन्जाम दी हैं और हमें इन की कुतुब मुहय्या हो सकी हैं इन में से श-रफ़ुद्दीन दम्याती رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की जिन कुतुब का तज़्किरा मिलता है ता'दाद छब्बीस है, नाम हुरूफ़े तहज्जी की तरतीब के मुताबिक़ ये हैं :

1...... اخبار عبد المطلب بن عبد مناف

2...... اخبار بنی نوفل

3...... الاربعون الابدال فی تساعیات البخاری و المسلم

4...... الاربعون الحلبیة فی الاحکام النبویة

5...... الاربعون فی الجهاد

6...... الاربعون المتباینة بالاسناد المخرجة علی الصحیح من حیث اهل بغداد

7...... الاربعون الصغری (مختصر الکتاب السابق)

8...... التسلی والاغتباط بثواب من تقدم من الافراط

9...... جزء فیه احادیث عوال وابدال وموافقات و تساعیات ومسافحات واناشید ومقطعات

10...... ذکر ازواج النبی صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم واولاده واسلافه

11...... الذکروالتسبیح عقیب الصلوت

12...... السیرة النویة

13...... صیام ستةشوال (افادفیه اجادوجمع مالم یسبق الیه)

14...... العقد المثمن فیمن اسمه عبد المؤمن

15...... فضل الخیل

16...... قبائل الخزرج (ویسمی ایضا:اخبار قبائل الخزرج اخی الاوس)

17...... قبائل الاوس

18...... کشف المغطی فی تبیین الصلوة الوسطی

19...... المائة التساعةفی الموافقات والابدال العالیة

20...... المتبحر الرابح فی ثواب العمل الصالح

21...... المجالس البغدادية

22...... المجالس الدمشقية

23...... مختصر فی سیر ة سید البشر

24...... معجم شیوخ الدیاطی

25...... حواشی علی البخاری بهوامش نسخته

26...... حواشی علی مسلم بهوامش نسخته

अ़ल्लामा इब्ने शाकिर कतबी फ़वातुल वफ़्यात में फ़रमाते हैं कि ''इन की कुतुब पालकी में ह़दीस और लुग़त के फ़न में पच्चीस जिल्दों में उठाई गईं।''

शो'बए तराजिमे कुतुब

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

((مَنْ تَكَفَّلَ لِیْ اَنْ لَّا یَسْأَلُ النَّاسَ شَیْئًا وَاَتَكَفَّلُ لَهُ بِالْجَنَّةِ))

या'नी ''जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।

("سنن أبي داود"، كتاب الزكاة، باب كراهية المسألة، الحديث: ١٦٤٣، ص ١٧٠)

श-रफ़े इन्तिसाब

दुन्याए इस्लाम की उन दो अ़ज़ीम हस्तियों के नाम जिन्हों ने उम्मते मुस्लिमा को गुनाहों की दलदल से निकालने में अपना तारीख़ी किरदार अदा किया या'नी

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत अश्शाह अल मुफ़्ती अल ह़ाफ़िज़ इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

और

शैख़े त़रीक़त, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

इल्म के फ़ज़ाइल

इल्म और उ-लमा का सवाब

कुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद में कई मक़ामात पर इल्म के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1)

شَھِدَ اللّٰہُ اَنَّہٗ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ وَالْمَلٰٓئِکَۃُ وَاُولُوا الْعِلْمِ (پ۳،آل عمران:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आलिमों ने।

इस आयते मुबा-रका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गवाही की इब्तिदा अपनी ज़ाते मुक़द्दस से फ़रमाई फिर दूसरे द-रजे में मलाएका और तीसरे द-रजे में अहले इल्म का ज़िक्र फ़रमाया। अगर्चे हमारे लिये इल्म की फ़ज़ीलत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येही फ़रमान काफ़ी था लेकिन रब तबा-र-क व तआ़ला ने फ़रमाया,

(2)

بَلْ ھُوَ اٰیٰتٌ بَیِّنٰتٌ فِیْ صُدُوْرِ الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ (پ۲۱،العنکبوت:۴۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बल्कि वोह रोशन आयतें हैं उन के सीनों में जिन को इल्म दिया गया।

(3)

وَتِلْکَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُھَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا یَعْقِلُھَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ (پ۲۰،سورۃ العنکبوت:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह मिसालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं और इन्हें नहीं समझते मगर इल्म वाले।

(4)

اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰہَ مِنْ عِبَادِہِ الْعُلَمٰٓؤُا ط (پ۲۲،سورۂ فاطر:۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

(5)

یَرْفَعِ اللّٰہُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْکُمْ ۙ وَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ط (پ۲۸،المجادلۃ:۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया द-रजे बुलन्द फ़रमाएगा।

(6)

ھَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَالَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ط اِنَّمَا یَتَذَکَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ (پ۲۳،الزمر:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान नसीहत तो वोही मानते हैं जो अक़्ल वाले हैं।

इल्म के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अहादीसे मुबा-रका :

(1)...... हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** तआला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अता फ़रमाता है और मैं तो तक्सीम करने वाला हूं और अता करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। इस उम्मत का मुआ-मला हमेशा दुरुस्त रहेगा यहां तक कि क़ियामत क़ाइम हो जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म आ जाए।''

(صحیح البخاری، کتاب العلم، باب من یرد اللہ بہ خیرا الخ، رقم ۷۱، ج۱، ص۴۲)

जब कि त-बरानी शरीफ़ की रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूं हैं कि ''मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि, ''इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक्ह ग़ौरो फ़िक्र से हासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अता फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में से वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।''

(طبرانی، کتاب الاعتصام، رقم ۷۳۱۲، ج۱۹، ص۵۱۱)

(2)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''थोड़ा इल्म ज़ियादा इबादत से बेहतर है और इन्सान के फ़क़ीह होने के लिये **अल्लाह** तआला की इबादत करना ही काफ़ी है और इन्सान के जाहिल होने के लिये अपनी राय को पसन्द करना ही काफ़ी है।'' (طبرانی اوسط، باب المیم، رقم ۸۶۹۸، ج۶، ص۲۵۷)

(3)...... हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''इल्म की फ़ज़ीलत इबादत की फ़ज़ीलत से बढ़ कर है और तुम्हारे दीन का बेहतरीन अमल तक़्वा या'नी परहेज़ गारी है।''

(طبرانی اوسط، رقم ۳۹۶۰، ج۳، ص۹۲)

(4)...... हज़रते मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''इल्म हासिल करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इल्म सीखना ख़शिय्यत, इसे तलाश करना इबादत, इस की तक्रार करना तस्बीह और इस की जुस्त-जू करना जिहाद है और ला इल्म को इल्म सिखाना स-दक़ा है और इसे अहल पे ख़र्च करना क़ुरबत या'नी नेकी है क्यूं कि इल्म हलाल और हराम की पहचान का ज़रीआ है और अहले जन्नत के रास्ते का निशान है और वहशत में बाइसे तस्कीन है और सफ़र में हम नशीन है और तन्हाई का साथी है और तंगदस्ती व ख़ुशहाली में राहनुमा है, दुश्मनों के मुक़ाबले में हथियार है और दोस्तों के नज़्दीक ज़ीनत है, अल्लाह तआला इस के ज़रीए से क़ौमों को बुलन्दी व बरतरी अता फ़रमा कर भलाई के मुआ-मले में क़ाइद और इमाम बना देता है फिर उन के निशानात और अफ़्आल की पैरवी की जाती है और उन की राय को हर्फ़े आख़िर समझा जाता है और मलाएका उन की दोस्ती में रग़बत करते हैं और उन को अपने

परों से छूते हैं और उन के लिये हर ख़ुश्को तर चीज़ और समुन्दर की मछलियां और जानदार और ख़ुश्की के दरिन्दे और चौपाए इस्तिग़्फ़ार करते हैं क्यूं कि इल्म जहालत के मुक़ाबले में दिलों की ज़िन्दगी है और तारीकियों के मुक़ाबले में आंखों का नूर है, इल्म के ज़रीए बन्दा अख़्यार या'नी औलिया की मनाज़िल को पा लेता है और दुन्या व आख़िरत में बुलन्द मर्तबे पर पहुंच जाता है और इल्म में ग़ौरो फ़िक्र करना रोज़ों के बराबर है और इसे सीखना सिखाना नमाज़ के बराबर है, इसी के ज़रीए सिलए रेह्मी की जाती है और इसी से ह़लाल व ह़राम की मा'रिफ़त ह़ासिल होती है और येह अ़मल का इमाम है और अ़मल इस के ताबेअ़ है और ख़ुश बख़्तों को इल्म का इल्हाम किया जाता है जब कि बद बख़्तों को इस से मह़रूम कर दिया जाता है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب العلم، باب الترغیب فی العلم، رقم۸، ج۱، ص۵۲)

(5)...... ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ियामत के दिन उ़-लमा की सियाही और शु-हदा के ख़ून को तोला जाएगा।'' और एक रिवायत में है कि ''और उ़-लमा की सियाही शु-हदा के ख़ून पर ग़ालिब आ जाएगी।'' (تاریخ بغداد، ج۲، ص۱۹۰)

(6)...... ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, कि ''इस इल्म को क़ब्ज़ होने से पहले ह़ासिल कर लो और इस के क़ब्ज़ होने से मुराद इस का उठा लिया जाना है।'' फिर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शहादत और बीच की उंग्लियां मिला कर इर्शाद फ़रमाया कि ''आ़लिम और मु-तअ़ल्लिम ख़ैर में ह़िस्सेदार हैं और इन के इ़लावा दीगर लोगों में कोई भलाई नहीं।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب السنہ، رقم۲۲۸، ج۱، ص۱۵۰)

(7)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मुझे इल्म और हिदायत के साथ मब्ऊ़स करने की मिसाल उस बारिश की त़रह़ है जो बन्जर ज़मीन के एक अच्छे टुकड़े पर बरसी जिस ने उसे क़बूल किया और उस पानी से घास उगाई और बहुत से दरख़्त लगाए और वहां कुछ ख़ुश्क ज़मीनें ऐसी थीं जिन्हों ने पानी को रोक लिया और अल्लाह तआ़ला ने उस के ज़रीए लोगों को नफ़्अ़ पहुंचाया तो उन्हों ने उसे पिया और पिलाया और काश्त कारी की और येही बारिश जब ज़मीन के दूसरे टुकड़े तक पहुंची जिस की सत़्ह़ हमवार थी जो न तो पानी रोकती थी और न ही घास उगाती थी पस येह मिसाल उस शख़्स की है जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का दीन सीख कर दूसरों को सिखाया और जिस चीज़ के साथ अल्लाह तआ़ला ने मुझे मब्ऊ़स फ़रमाया है उस ने उसे नफ़्अ़ पहुंचाया और उस ने इल्म सीखा और सिखाया और उस शख़्स की मिसाल है जिस ने इल्म के ज़रीए बिल्कुल भी बुलन्दी ह़ासिल न की और न ही उस हिदायत को क़बूल किया जो मेरे साथ भेजी गई।'' (صحیح بخاری، کتاب العلم، رقم۷۹، ج۱، ص۴۶، بتغیر قلیل)

(8)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "ह़सद (जाइज़) नहीं मगर दो आदमियों से, पहला वोह शख़्स है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़त़ा फ़रमाया और उसे ह़क़ के मुआ़-मले में ख़र्च करने पर मुक़र्रर कर दिया और दूसरा वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इ़ल्मो ह़िक्मत अ़त़ा फ़रमाई और वोह उस के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करे और उसे दूसरों को सिखाए।" (صحیح بخاری، کتاب العلم، رقم ۷۳، ج۱، ص۴۳)

वज़ाह़त :

इस ह़दीस में ह़सद से मुराद **ग़िब्त़ह** या'नी रश्क है और दूसरे की ने'मत की अपने लिये तमन्ना करना ग़िब्त़ह कहलाता है जब कि उस की ने'मत के ज़वाल की तमन्ना न की जाए।

(9)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो इ़ल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है, **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते त़ालिबुल इ़ल्म के अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक ज़मीन व आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां आ़लिमे दीन के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उ़-लमा अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के वारिस हैं, बेशक अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि वोह नुफ़ूसे कुदसिय्या عَلَیْہِمُ السَّلَام तो सिर्फ़ इ़ल्म का वारिस बनाते हैं, तो जिस ने इसे ह़ासिल कर लिया उस ने बड़ा ह़िस्सा पा लिया।" (سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل العلماء الخ، رقم ۲۲۳، ج۱، ص۱۴۵)

(10)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "इस उम्मत के उ़-लमा दो शख़्स हैं एक वोह जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया तो उस ने वोह इ़ल्म लोगों को सिखाया लेकिन उस के बदले किसी शै के ह़ुसूल का लालच न किया और न ही उस के बदले माल ह़ासिल किया और येह वोही शख़्स है जिस के लिये समुन्दर में मछलियां और ख़ुश्की में चलने वाले जानवर और फ़ज़ा में परिन्दे इस्तिग़फ़ार करते हैं और दूसरा वोह जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया और उस ने उसे **अल्लाह** के बन्दों से बुख़्ल करते हुए छुपाया और लालच करते हुए इस के बदले माल कमाया, येह वोही शख़्स है जिसे क़ियामत के दिन आग की लगाम पहनाई जाएगी और एक मुनादी निदा करेगा कि, "येह वोह शख़्स है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया तो इस ने उसे **अल्लाह** तआ़ला के बन्दों से बुख़्ल करते हुए रोक लिया और लालची हो कर उस के ज़रीए़ माल कमाया।" उस का ह़िसाब ख़त्म होने

तक इसी त़रह़ निदा होती रहेगी।'' (طبرانی اوسط،باب المیم،رقم ۷۱۸۷،ج۵،ص۲۳۷)

(11)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र उस की पसन्दीदा चीज़ों नीज़ आ़लिम और इ़ल्म सीखने वाले के इ़लावा दुन्या और जो कुछ इस में है सब मल्ऊ़न है।'' (سنن ابن ماجہ،کتاب الزھد،باب مثل الدنیا،رقم ۴۱۱۲،ج۴،ص۴۲۸)

(12)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''बेशक ज़मीन पर उ़-लमा की मिसाल उन सितारों की त़रह़ है जिन से बह़रो बर की तारीकियों में रहनुमाई ह़ासिल की जाती है तो जब सितारे मांद पड़ जाएं तो क़रीब है कि हिदायत याफ़्ता लोग गुमराह हो जाएं।''

(مسند احمد،مسند انس بن مالک،رقم ۱۲۶۰۰،ج۴،ص۳۱۴)

(13)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में दो आदमियों का तज़्किरा हुवा जिन में से एक आ़बिद था और दूसरा आ़लिम, तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसे मेरी फ़ज़ीलत तुम में से अदना शख़्स पर है।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते और ज़मीन व आस्मान वाले यहां तक कि सूराख़ों में च्यूंटियां और समुन्दर में मछलियां लोगों को ख़ैर सिखाने वालों की भलाई की ख़्वाहां हैं।'' (ترمذی،کتاب العلم،باب فضل الفقہ علی العبادۃ،رقم ۲۶۹۴،ج۴،ص۳۱۳)

(14)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क़ियामत के दिन आ़लिम और इ़बादत गुज़ार को उठाया जाएगा तो आ़बिद से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ जब कि आ़लिम से कहा जाएगा कि जब तक लोगों की शफ़ाअ़त न कर लो ठहरे रहो।''

(الترغیب والترھیب،کتاب العلم،الترغیب فی العلم،،رقم ۳۴،ج۱،ص۵۷)

(15)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'लबा बिन ह़कम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला अपने बन्दों का फ़ैसला करने के लिये जब क़ियामत के दिन कुरसी पर क़ुऊ़द फ़रमाएगा (जैसा कि) उस की शान के लाइक़ है, तो उ़-लमा से फ़रमाएगा कि ''बेशक मैं ने अपना इ़ल्म और ह़िल्म तुम्हें इसी लिये दिया था ताकि तुम्हारी ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दूं और मुझे कोई परवाह नहीं।'' (طبرانی کبیر،رقم ۱۳۸۱،ج۲،ص۸۴)

(16)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन,

रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** तआला क़ियामत के दिन बन्दों को उठाएगा तो उ-लमा को उन से अ़लाहि़दा फ़रमा देगा। फिर फ़रमाएगा "ऐ उ-लमा के गुरौह! मैं ने तुम्हें अ़ज़ाब देने के लिये अपना इ़ल्म अ़ता़ नहीं फ़रमाया, जाओ! मैं ने तुम्हें मुआफ़ फ़रमा दिया।"

(طبرانی اوسط، باب العین، رقم ۴۲۶۴، ج ۳، ص ۱۸۴)

वज़ाहत :

इस ह़दीसे पाक और इस की मिस्ल दीगर अहा़दीसे मुबा-रका में उ-लमा की जो फ़ज़ीलत बयान की गई है उस से मुराद वोह आ़लिमे बा अ़मल है जो अपने इ़ल्म के ज़रीए **अल्लाह** तआला की रिज़ा का त़लबगार हो, जब कि बे अ़मल आ़लिम को तो क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब होगा और जो आ़लिम **अल्लाह** तआला की रिज़ा के लिये इ़ल्म हा़सिल न करे वोह जन्नत की ख़ुश्बू तक न सूंघ सकेगा और वोह उन तीन बद नसीबों में से एक होगा जिन्हें सब से पहले जहन्नम में जलाया जाएगा इस बाब में बहुत सी सही़ह़ अहा़दीस आई हैं लेकिन चूंकि हमारी येह किताब आ'माल के सवाब पर मुश्तमिल है लिहाज़ा उन्हें यहां बयान नहीं किया गया।

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सन्जी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से किसी चीज़ के बारे में सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस का जवाब दे दिया तो सय्यिदुना फ़रक़द عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने कहा कि "फ़ु-क़हा तो इस मुआ-मले में आप की मुख़ा-लफ़त करते हैं?" तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, "तेरी मां तुझे रोए! क्या तूने कभी अपनी आंखों से किसी फ़क़ीह को देखा है? फ़क़ीह तो वोह होता है जो दुन्या में ज़ोह्द इख़्तियार करे, आख़िरत में रग़बत करे, दीन में बसीरत रखे, अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत पर हमेशगी इख़्तियार करे, मुसल्मानों की इ़ज़्ज़त व आबरू के मुआ-मले में कमाल द-रजे परहेज़ गार हो, उन के माल के मुआ-मले में पाक दामन हो, उन की जमाअ़त का ख़ैर ख़्वाह हो और तौफ़ीक़ देने वाला तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है जिस के इ़लावा कोई परवर्द गार नहीं।"

(17)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "आ़लिम को आ़बिद पर सत्तर द-रजा फ़ज़ीलत हा़सिल है और उन में से हर दो द-रजों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितना तेज़ रफ़्तार घोड़े की सत्तर साल दौड़ का सफ़र है।" (الترغیب والترہیب، کتاب العلم، الترغیب فی العلم الخ، رقم ۳۶، ج ۱، ص ۵۷)

(18)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "एक फ़क़ीह आ़लिम, शैता़न पर एक हज़ार इ़बादत गुज़ारों से ज़ियादा सख़्त है।" (سنن ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، رقم ۲۶۹۰، ج ۴، ص ۳۱۱)

(19)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि "**अल्लाह** तआला की इबादत के लिये कोई ज़रीआ दीन में ग़ौरो फ़िक्र से अफ़्ज़ल नहीं और बेशक एक फ़क़ीह आलिम शैतान पर हज़ार इबादत गुज़ारों से ज़ियादा सख़्त है और हर चीज़ का एक सुतून होता है और इस दीन का सुतून फ़िक़्ह है।" (سنن الدارقطنی، کتاب البیوع، رقم ۳۰۶۲، ج۳، ص۹۷)

इल्म की फ़ज़ीलत के बारे में अक़्वाले सहाबा व ताबिईन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم :

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते अ़ली बिन अबी तालिब کَرَّمَ اللّٰہُ وَجْهَهُ الْکَرِیْم इर्शाद फ़रमाते हैं कि "आलिमे दीन दिन भर रोज़ा रखने वाले और रात भर क़ियाम करने वाले मुजाहिद से अफ़्ज़ल है और जब आलिम मर जाता है तो इस्लाम में एक ऐसा रख़्ना पड़ जाता है जिसे उस आलिम के जा नशीन के इलावा कोई पुर नहीं कर सकता।"

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, "इल्म को लाज़िम पकड़ो, उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! **अल्लाह** की राह में क़त्ल किये जाने वाले शु-हदा जब उ-लमाए किराम की इज़्ज़त और मर्तबा देखेंगे तो तमन्ना करेंगे कि काश ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इस हाल में उठाता कि वोह आलिम होते और बेशक कोई शख़्स पैदाइशी आलिम नहीं होता बल्कि इल्म तो सीखने से आता है।"

हज़रते सय्यिदुना अबुल अस्वद عَلَیْہِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं कि, "कोई शै इल्म से अफ़्ज़ल नहीं, बादशाह लोगों पर हुक्मरान हैं और उ-लमा बादशाहों पर हुक्मरान हैं।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा गया कि "इन्सान कौन हैं ?" फ़रमाया, "उ-लमा।" फिर पूछा गया कि "बादशाह कौन हैं ?" फ़रमाया, "आख़िरत के लिये दुन्या से रू गरदानी करने वाले।" फिर पूछा गया कि "बे वुक़ूफ़ कौन हैं ?" फ़रमाया, "अपने दीन के बदले दुन्या कमाने वाले लोग।" (المحدث الفاصل، ج۱، ص۲۰۵)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ के लिये इल्म सीखने और सिखाने का सवाब

(20)...... हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन अ़सालुल मुरादी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में अपना सुर्ख़ कम्बल ओढ़े टेक लगाए तशरीफ़ फ़रमा थे। मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इ़ल्म ह़ासिल करने आया हूं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''त़ालिबुल इ़ल्म को ख़ुश आ-मदीद, बेशक त़ालिबुल इ़ल्म को मलाएका अपने परों से ढांप लेते हैं फिर उन में बा'ज़ मलाएका दीगर बा'ज़ मलाएका पर सुवारी करते हुए त़-लबे इ़ल्म की वजह से त़ालिबुल इ़ल्म की मह़ब्बत में आस्माने दुन्या तक पहुंच जाते हैं।''

एक और रिवायत में है कि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो शख़्स इ़ल्म की त़लब में घर से निकलता है फ़िरिश्ते उस के इस अ़मल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं।'' (طبرانی کبیر،رقم۷۳۴۷،ج۸،ص۵۴)

(21)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये इ़ल्म की जुस्त-जू में निकलता है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत का एक दरवाज़ा खोल देता है और फ़िरिश्ते उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और उस के लिये दुआ़ए रह़मत करते हैं और आस्मानों के फ़िरिश्ते और समुन्दर की मछलियां उस के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और आ़लिम को आ़बिद पर इतनी फ़ज़ीलत ह़ासिल है जितनी चौदहवीं रात के चांद को आस्मान के सब से छोटे सितारे पर और उ़-लमा अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام के वारिस हैं, बेशक अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام दिरहमो दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि वोह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या عَلَیۡہِمُ السَّلَام तो इ़ल्म का वारिस बनाते हैं, लिहाज़ा जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया उस ने अपना हिस्सा ले लिया और आ़लिम की मौत एक ऐसी आफ़त है जिस का इज़ाला नहीं हो सकता और एक ऐसा ख़ला है जिसे पुर नहीं किया जा सकता (गोया कि) वोह एक सितारा था जो मांद पड़ गया, एक क़बीले की मौत एक आ़लिम की मौत से ज़ियादा आसान है।''

(بیہقی شعب الایمان،باب فی طلب العلم،رقم۱۶۹۹،ج۲،ص۲۶۳)

(22)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो कोई **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के फ़राइज़ से मु-तअ़ल्लिक़ एक या दो या तीन या चार या पांच कलिमात सीखे और उसे अच्छी त़रह़ याद कर ले और फिर लोगों को सिखाए तो वोह जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगा।''

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह बात सुनने के बा'द कोई ह़दीस नहीं भूला।" (الترغیب والترہیب، کتاب العلم، الترغیب فی العلم الخ، رقم ۲۰، ج۱، ص۵۴)

(23)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा येह है कि मुसल्मान इ़ल्म सीखे, फिर अपने इस्लामी भाई को सिखाए।" (سنن ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب ثواب معلم الناس بالخیر، رقم ۲۴۳، ج۱، ص۱۵۸)

(24)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तुम्हारा किसी को किताबुल्लाह की एक आयत सिखाने के लिये जाना तुम्हारे लिये सो रक्अ़तें अदा करने से बेहतर है और तुम्हारा किसी को इ़ल्म का एक बाब सिखाने के लिये जाना ख़्वाह उस पर अ़मल किया जाए या न किया जाए तुम्हारे लिये हज़ार रक्अ़तें अदा करने से बेहतर है।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل من تعلم القرآن وعلمہ، رقم ۲۱۹، ج۱، ص۱۴۲)

(25)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रा करो तो ख़ूब चुन लिया करो।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जन्नत की क्यारियां कौन सी हैं ?" फ़रमाया, "इ़ल्म की महफ़िलें।"

(طبرانی کبیر، رقم ۱۱۱۵۸، ج۱۱، ص۷۸)

(26)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ह़िक्मत मोमिन का गुमशुदा ख़ज़ाना है लिहाज़ा मोमिन इसे जहां पाए वोही इस का ज़ियादा ह़क़दार है।"

(سنن ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، رقم ۲۶۹۶، ج۴، ص۳۱۴)

वज़ाह़त :

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़िक्मत को गुमशुदा शै से तश्बीह देने से मुराद येह है कि मोमिन हमेशा इ़ल्म को तलाश करता रहता है जैसा कि अगर किसी शख़्स की कोई चीज़ गुम हो जाए तो वोह उसे तलाश करता रहता है यहां तक कि उसे पा लेता है। इस बात का एक दूसरा मा'ना येह है कि "जिस की चीज़ गुम हो जाए वोह उसे तलाश करता रहता है अगर उसे वोह शै किसी बच्चे के पास भी मिले तो भी उसे लेने में कोई आ़र मह़सूस नहीं करता, इसी त़रह़ त़ालिबुल इ़ल्म को भी चाहिये कि वोह हुसूले इ़ल्म में कोई आ़र मह़सूस न करे। जब कि इस का तीसरा मा'ना येह है कि जिस के पास कोई गुमशुदा चीज़ मौजूद हो उस के लिये जाइज़ नहीं कि उसे उस के मालिक से छुपाए क्यूं कि वोही इस का ह़क़दार है लिहाज़ा आ़लिम को चाहिये की वोह अपना इ़ल्म त़ालिबुल

इल्म पर ख़र्च करे और इस में कन्जूसी न करे।'' وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

(27)...... ह़ज़रते क़ुबैसा बिन मुख़ारिक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''ऐ क़ुबैसा ! कैसे आए ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मेरी उ़म्र ज़ियादा हो गई और हड्डियां नर्म पड़ गईं हैं, मैं आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में इस लिये ह़ाज़िर हुवा हूं कि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई ऐसी चीज़ सिखाएं जो मेरे लिये मुफ़ीद हो।'' तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ क़ुबैसा ! (इ़ल्म की जुस्त-जू में) तुम जिस पथ्थर या दरख़्त के क़रीब से भी गुज़रे उस ने तुम्हारे लिये इस्तिग़्फ़ार किया।''

(مسند امام احمد، مسند البصرین/حدیث قبیصہ بن مخارق، رقم ۲۰۶۲۵، ج۷، ص۳۵۲)

(28)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो सुब्ह़ को मस्जिद की त़रफ़ भलाई सीखने या सिखाने के इरादे से चलेगा उसे कामिल ह़ज करने वाले का सवाब मिलेगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۴۷۳، ج۸، ص۹۴)

(29)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो इ़ल्म की तलाश में निकलता है वोह वापस लौटने तक **अल्लाह** तआ़ला की राह में होता है।'' (جامع ترمذی، کتاب العلم، باب فضل طلب العلم، رقم ۲۶۵۶، ج۴، ص۲۹۴)

ह़ज़रते सययिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी ह़दीस के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि आप फ़रमाते हैं, ''मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना ''जो मेरी इस मस्जिद में सिर्फ़ भलाई की बात सीखने या सिखाने के लिये आया तो वोह **अल्लाह** की राह में जिहाद करने वाले की त़रह़ है और जो किसी और निय्यत से आया तो वोह ग़ैर के माल पर नज़र रखने वाले की त़रह़ है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب العلم، باب فضل العلماء، رقم ۲۲۷، ج۱، ص۱۴۹)

(30)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़ली बिन अबी त़ालिब كَرَّمَ اللّٰهُ وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो बन्दा इ़ल्म की जुस्त-जू में जूते, मोज़े या कपड़े पहनता है तो अपने घर की चौखट से निकलते ही उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।'' (طبرانی اوسط، باب المیم، رقم ۵۷۲۲، ج۴، ص۲۰۴)

(31)...... ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हु़स्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जिस ने इ़ल्म की जुस्त-जू की और उसे पा लिया तो

अल्लाह तआ़ला उस के लिये अज्र के दो ह़िस्से लिखेगा और जिस ने इ़ल्म की जुस्त-जू की मगर उसे पा न सका तो **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये अज्र का एक ह़िस्सा लिखेगा।'' (طبرانی کبیر،رقم ۱۲۵،ج۲۲،ص۶۸)

(32)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिसे इ़ल्म की त़लब में मौत आ जाए वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस के और अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के दरमियान द-र-जए नुबुव्वत का फ़र्क़ होगा (या'नी मर्तबए नुबुव्वत और उस के मु-तअ़ल्लिक़ कमालात के इलावा हर मर्तबा व कमाल उस राहे इ़ल्म में फ़ौत होने वाले को अ़त़ा होगा)।'' (طبرانی اوسط،رقم ۹۴۵۴،ج۶،ص۴۷۵)

(33)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा और अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, ''इ़ल्म का एक बाब जिसे आदमी सीखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक हज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने से ज़ियादा पसन्दीदा है और जब किसी त़ालिबुल इ़ल्म को इ़ल्म ह़ासिल करते हुए मौत आ जाए तो वोह शहीद है।''

(الترغیب والترہیب،کتاب العلم،الترغیب فی العلم،رقم ۱۶،ج۱،ص۵۴)

अक़्वाले सह़ाबा व ताबिईन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''रात के कुछ ह़िस्से में इ़ल्म की तक्रार करना मुझे सारी रात शब बेदारी करने से ज़ियादा पसन्द है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''इ़ल्म का एक मस्अला सीखना मेरे नज़्दीक पूरी रात क़ियाम करने से ज़ियादा पसन्दीदा है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं कि ''जो येह कहे, कि इ़ल्म की जुस्त-जू में रहना जिहाद नहीं उस की राय और अ़क़्ल नाक़िस है।''

इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि ''इ़ल्म ह़ासिल करना नवाफ़िल पढ़ने से अफ़्ज़ल है।''

✡ ===✡ ===✡ ===✡
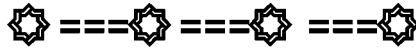
बहस और झगड़ा तर्क करने का सवाब

(34)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो ग़-लती पर होते हुए झगड़ना छोड़ दे उस के लिये जन्नत के कनारे पर एक घर बनाया जाएगा और जो ह़क़ पर होते हुए झगड़ना छोड़ देगा उस के लिये जन्नत के वस्त़ में एक घर बनाया जाएगा और जिस का अख़्लाक़ अच्छा होगा उस के लिये जन्नत के आ'ला मक़ाम में एक घर बनाया जाएगा।'' (سنن ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی المراء، رقم ۲۰۰۰، ج ۳، ص ۴۰۰)

(35)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा, अबू उमामा और वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायात का ख़ुलासा है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''झगड़ना छोड़ दो मैं ह़क़ पर होते हुए झगड़ा छोड़ने वाले को जन्नत के कनारे, वस्त़ और आ'ला द-रजे में तीन घरों की ज़मानत देता हूं, झगड़ना छोड़ दो, बेशक मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बुतों की पूजा से मन्अ़ करने के बा'द सब से पहले झगड़ा करने से मन्अ़ फ़रमाया है।''
(طبرانی کبیر، رقم ۷۶۵۹، ج ۸، ص ۱۵۲)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

ता'लीम, तस्नीफ़ और रिवायत बयान करने का सवाब

पिछले सफ़ह़ात में दर्ज शुदा अह़ादीस भी इस बाब के उ़न्वान पर दलालत करती हैं, मज़ीद अह़ादीस दर्जे ज़ैल हैं।

(36)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मोमिन के इन्तिक़ाल के बा'द उस के अ़मल और नेकियों में से जो चीज़ें उसे मिलती हैं वोह येह हैं (1) उस का वोह इ़ल्म जिसे उस ने सिखाया और फैलाया और (2) नेक बेटा जिसे छोड़ कर मरा, (3) क़ुरआने पाक जिसे वु-रसा में छोड़ा, (4) वोह मस्जिद जिसे उस ने बनाया, (5) मुसाफ़िरों के लिये कोई घर बनाया हो, (6) किसी नह्‌र को जारी किया हो, (7) वोह स-द-क़ए जारिया जिसे उस ने ह़ालते सिह़ह़त और ज़िन्दगी में अपने माल से दिया हो।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب ثواب معلم الناس الخیر، رقم ۲۴۲، ج۱، ص۱۵۷)

(37)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब आदमी इन्तिक़ाल करता है तो उस का अ़मल मुन्क़तेअ़ हो जाता है मगर तीन अ़मल जारी रहते हैं (1) स-द-क़ए जारिया (2) या जिस इ़ल्म से नफ़्अ़ ह़ासिल किया जाता हो (3) या नेक बच्चा जो उस के लिये दुआ़ करता हो।'' (صحیح مسلم، کتاب الوصیۃ، باب ما یلحق الانسان من الثواب بعد وفاتہ، رقم ۱۶۳۱، ص۸۸۶)

(38)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इन्सान का बेहतरीन तर्का तीन चीज़ें हैं, (1) नेक बच्चा जो उस के लिये दुआ़ करे (2) स-द-क़ए जारिया जिस का सवाब उस तक पहुंचे (3) वोह इ़ल्म जिस पर उस के बा'द अ़मल किया जाए।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب ثواب معلم الناس الخیر، رقم ۲۴۱، ج۱، ص۱۵۷)

(39)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जिस ने किसी को इ़ल्म सिखाया उसे उस इ़ल्म पर अ़मल करने वाले का सवाब भी मिलेगा और उस अ़मल करने वाले के सवाब में भी कमी न होगी।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب ثواب معلم الناس الخیر، رقم ۲۴۰، ج۱، ص۱۵۶)

(40)...... ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''लोगों ने ऐसा कोई स-दक़ा नहीं किया जो इ़ल्म की इशाअ़त की मिस्ल हो।'' (طبرانی کبیر، رقم ۶۹۶۴، ج۷، ص۲۳۱)

(41)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें सब से ज़ियादा जूदो करम वाले के बारे में ख़बर न दूं ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से ज़ियादा जूदो करम वाला है और मैं औलादे आदम عَلَیْہِ السَّلَام में सब से ज़ियादा सख़ी हूं और मेरे बा'द इन में से ज़ियादा सख़ी वोह शख़्स है जो इल्म हासिल करे फिर अपने इल्म को फैलाए, उसे क़ियामत के दिन एक उम्मत के तौर पर उठाया जाएगा और इन के बा'द सब से बड़ा सख़ी वोह शख़्स है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के हुसूल के लिये अपने आप को वक़्फ़ कर दे यहां तक कि उसे क़त्ल कर दिया जाए।" (مسند ابویعلی، مسند انس بن مالک، رقم ۲۷۸۲، ج۳، ص۱۶)

(42)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम्हारी रहनुमाई से एक शख़्स को हिदायत मिल जाए तो येह तुम्हारे लिये सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है।"

(بخاری، کتاب الجہاد، رقم ۲۹۴۲، ج۲، ص۲۹۴)

(43)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि "जो हिदायत की त़रफ़ बुलाए तो उसे हिदायत की पैरवी करने वालों के अज्र के बराबर सवाब मिलेगा और उन के सवाब में से कुछ भी कम न होगा और जो गुमराही की त़रफ़ बुलाए उस पर गुमराही की पैरवी करने वालों के गुनाहों की मिस्ल गुनाह लाज़िम होगा और उन पैरवी करने वालों के गुनाह से कुछ भी कम न होगा।"

(صحیح مسلم، کتاب العلم، باب من سن سنۃ حسنۃ او سیئۃ الخ، رقم ۲۶۷۴، ص۱۴۳۸)

(44)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को तरो ताज़ा रखे जिस ने हम से कुछ सुना फिर उसे इसी त़रह़ आगे पहुंचा दिया जैसे सुना था, क्यूं कि जिन तक इल्म पहुंचाया जाएगा उन लोगों में से कुछ लोग इस सुनने वाले से ज़ियादा याद रखने वाले होंगे।" (سنن ترمذی، کتاب العلم، رقم ۲۶۶۶، ج۴، ص۲۹۹)

(45)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को तरो ताज़ा रखे जिस ने हम से कोई बात सुनी फिर दूसरे तक पहुंचा दी क्यूं कि कुछ इल्म के हामिल ज़ियादा समझदार लोगों तक इल्म पहुंचाते हैं और इल्म के हामिल कुछ अफ़्राद फ़क़ीह नहीं होते।

तीन अ़मल ऐसे हैं कि मोमिन का दिल उन में ख़ियानत नहीं करता (1) ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल करना (2) हुक्मरानों की ख़ैर ख़्वाही और (3) उन की जमाअ़त को लाज़िम पकड़ना क्यूं कि इन हुक्मरानों को दीन की दा'वत देना उन के मा तह़्त लोगों की इस्लाह़ का ज़रीआ़ बन सकता है और जिस का मक़्सद दुन्या कमाना होगा **अल्लाह** तआ़ला उस के काम को मु-तफ़र्रिक़ या'नी जुदा जुदा कर देगा और उस के फ़क़्र को उस के सामने कर देगा और उसे दुन्या से वोही मिलेगा जो उस के लिये लिखा गया होगा और जिस का मत़्लूब आख़िरत होगी **अल्लाह** तआ़ला उसे उस का मत़्लूब अ़त़ा फ़रमा देगा और उस के दिल को ग़ना से भर देगा और दुन्या ज़लील हो कर उस के पास आएगी।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الفقر، رقم ۶۷۹، ج۲، ص۳۵)

(46)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रुदैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़्बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जो क़ौम इज्तिमाई त़ौर पर किताबुल्लाह की तक्रार करती है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मेहमान होती है और मलाएका उसे ढांप लेते हैं यहां तक कि वोह उठ खड़े हों या किसी दूसरी बात में मसरूफ़ हो जाएं और जो आ़लिम मौत, कस्रते मसरूफ़ियत या इ़ल्म के ना पैद हो जाने के ख़ौफ़ से इ़ल्म की त़लब में निकले वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में दिन रात आ-मदो रफ़्त रखने वाले की त़रह़ है और जिस का अ़मल उसे सुस्त कर दे उस का नसब उसे तेज़ नहीं कर सकता।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिद साह़िब से पूछा कि "मैं रात को तहज्जुद पढ़ूं या इ़ल्म लिखूं ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने फ़रमाया कि "इ़ल्म लिखा करो।" (طبرانی کبیر، رقم ۸۴۴، ج۲۲، ص۳۳۷)

वज़ाह़त :

इमाम साह़िब عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने अपने साह़िब ज़ादे को इ़ल्म लिखने का मश्वरा इस लिये दिया कि इ़ल्म का नफ़्अ़ दूसरों को भी ह़ासिल होगा और उन्हें अपने इ़ल्म के सवाब के साथ साथ उन लोगों का सवाब भी मिलेगा जो इस इ़ल्म से उन की ज़िन्दगी में या मौत के बा'द इस्तिफ़ादा करेंगे जब कि तहज्जुद पढ़ने की सूरत में उन्हें सिर्फ़ अपना सवाब ही ह़ासिल हो सकेगा, واللہ تعالیٰ اعلم

=== === ===

किताब व सुन्नत पर अ़मल करने का सवाब

किताब व सुन्नत पर अ़मल करने के सवाब के बारे में क़ुरआने पाक की कई आयात हैं, चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1)

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَیَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ (پ۳،آل عمران:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो कि लोगो ! अगर तुम **अल्लाह** को दोस्त रखते हो तो मेरे फ़रमां बरदार हो जाओ **अल्लाह** तुम्हें दोस्त रखेगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा।

(2)

مَنْ یُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ (پ۵،النساء:۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने रसूल का हुक्म माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना।

(3)

اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِیْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِیَحْكُمَ بَیْنَهُمْ اَنْ یَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ یُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَیَخْشَ اللّٰهَ وَیَتَّقْهِ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ ۝ (پ۱۸،النور:۵۱۔۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मानों की बात तो येही है जब **अल्लाह** और रसूल की त़रफ़ बुलाए जाएं कि रसूल उन में फ़ैसला फ़रमाए कि अ़र्ज़ करें हम ने सुना और हुक्म माना और येही लोग मुराद को पहुंचे और जो हुक्म माने **अल्लाह** और उस के रसूल का और **अल्लाह** से डरे और परहेज़ गारी करे तो येही लोग काम्याब हैं।

(4)

فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ ۙ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ جَمِیْعَاﰳ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ص فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝

(پ۹،الاعراف:۱۵۷،۱۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो उस पर ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के साथ उतरा वोही बा मुराद हुए तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की त़रफ़ उस **अल्लाह** का रसूल हूं कि आस्मानों और ज़मीन की बादशाही उसी को है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं जिलाए और मारे तो ईमान लाओ **अल्लाह** और उस के रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि **अल्लाह** और उस की बातों पर ईमान लाते हैं और उन की ग़ुलामी करो कि तुम राह पाओ।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(47)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने हलाल खाया और सुन्नत के मुताबिक़ अमल किया और लोग उस के शर से महफ़ूज़ रहे तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐसे लोग तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में बहुत हैं।" तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अन्क़रीब मेरे बा'द एक क़ौम में होंगे।"

(المستدرک للحاکم، کتاب الاطعمۃ، ذکر معیشۃ النبی ﷺ، رقم ۷۱۵۵، ج۵ص۱۴۲)

(48)...... हज़रते सय्यिदुना अबू शुरैह खुज़ा-ई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया कि "क्या तुम गवाही नहीं देते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं और येह कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं ?" हम ने अर्ज़ किया, "क्यूं नहीं।" तो फ़रमाया कि "बेशक इस कुरआन का एक कनारा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दस्ते कुदरत में है और एक कनारा तुम्हारे हाथों में है, लिहाज़ा इसे मज़्बूती से थाम लो कि इस के बा'द तुम हरगिज़ गुमराह न होगे और न ही हलाक होगे।"

(طبرانی کبیر، رقم ۴۹۱، ج۲۲ص۱۸۸)

(49)...... हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें चन्द नसीहतें फ़रमाईं जिन से हमारे दिल तड़प उठे और आंखें बह पड़ीं तो हम ने अर्ज़ किया कि "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह रुख़्सत होने वाले की नसीहत लगती है, लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें कुछ वसिय्यत फ़रमाएं।"

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने की और अमीर की बात सुन कर उस की इताअत करने की वसिय्यत करता हूं अगर्चे किसी गुलाम को तुम्हारा अमीर बना दिया जाए और तुम में से जो ज़िन्दा रहेगा वोह अन्क़रीब बहुत से इख़्तिलाफ़ देखेगा तो उस वक़्त मेरी सुन्नत और हिदायत याफ़्ता खु-लफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को लाज़िम पकड़ना और उसे दांतों से पकड़ लेना और नौ पैद उमूर से बचते रहना क्यूं कि हर बिदअत (या'नी ख़िलाफ़े शर-अ काम) गुमराही है।"

(جامع ترمذی، باب ماجاء فی الاخذ بالسنۃ، رقم ۲۶۸۵، ج۴ص۳۵۸)

वज़ाहत :

दांतों से पकड़ने से मुराद येह है कि सुन्नत को इस तरह लाज़िम पकड़ना और उस में ऐसी

रग़बत रखना जैसे दांतों से किसी शै को पकड़ने वाला उस को मज़्बूती से पकड़ता है ताकि वोह ज़ाएअ़ न हो जाए । इसी त़रह़ तुम अपने आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के ख़ु-लफ़ाए राशिदीन की सुन्नत को मज़्बूत़ी से थाम लेना । (سنن ابن ماجہ،شرح الامام ابی الحسن،رقم ۴۲،ج۱،ص۳۱)

(50)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जिस ने मेरी उम्मत के फ़साद के वक़्त मेरी सुन्नत को मज़्बूत़ी से थामे रखा उस के लिये एक शहीद का सवाब है ।''

(الترغیب والترہیب،الترغیب فی اتباع الکتاب والسنۃ،رقم ۵،ج۱،ص۴۱)

(51)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''हर अ़मल का एक जोश और हर जोश की एक इन्तिहा है तो जिस की इन्तिहा मेरी सुन्नत पर होगी वोह हिदायत याफ़्ता होगा और जिस की इन्तिहा मेरी सुन्नत के ख़िलाफ़ होगी वोह हलाकत में मुब्तला होगा ।''

(المسند الامام احمد بن حنبل،رقم ۶۹۷۶،ج۲،ص۶۶۱)

(52)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, ''ऐ बिलाल ! जान लो ।'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या जान लूं ?'' फ़रमाया ''जान लो कि जिस ने मेरी सुन्नतों में से एक मुर्दा सुन्नत को ज़िन्दा किया, उसे उस सुन्नत पर अ़मल करने वालों के बराबर सवाब मिलेगा और उन अ़मल करने वालों के सवाब में भी कोई कमी न होगी और जिस ने ऐसी बिदअ़त ईजाद की जिस से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم राज़ी नहीं तो उसे उस पर अ़मल करने वालों के बराबर गुनाह मिलेगा और उन अ़मल करने वालों के गुनाह में भी कुछ कमी न होगी ।''

(سنن ابن ماجہ،کتاب السنۃ،باب من احیاء سنۃ قد امیتت،رقم ۲۱۰،ج۱،ص۱۳۸)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
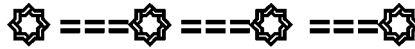
तहारत का बयान

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,......

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيۡنَ وَيُحِبُّ الۡمُتَطَهِّرِيۡنَ

(پ۲،البقرة:۲۲۲)

तर–ज–मए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को ।

सूरए माइदह में इर्शाद फ़रमाया,......

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا قُمۡتُمۡ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغۡسِلُوۡا وُجُوۡهَكُمۡ وَاَيۡدِيَكُمۡ اِلَى الۡمَرَافِقِ وَامۡسَحُوۡا بِرُءُوۡسِكُمۡ وَاَرۡجُلَكُمۡ اِلَى الۡـكَعۡبَيۡنِ‌ؕ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوۡا‌ؕ وَاِنۡ كُنۡتُمۡ مَّرۡضٰۤى اَوۡ عَلٰى سَفَرٍ اَوۡ جَآءَ اَحَدٌ مِّنۡكُمۡ مِّنَ الۡغَآئِطِ اَوۡ لٰمَسۡتُمُ النِّسَآءَ فَلَمۡ تَجِدُوۡا مَآءً فَتَيَمَّمُوۡا صَعِيۡدًا طَيِّبًا فَامۡسَحُوۡا بِوُجُوۡهِكُمۡ وَاَيۡدِيۡكُمۡ مِّنۡهُ‌ ؕ مَا يُرِيۡدُ اللّٰهُ لِيَجۡعَلَ عَلَيۡكُمۡ مِّنۡ حَرَجٍ وَّلٰـكِنۡ يُّرِيۡدُ لِيُطَهِّرَكُمۡ وَلِيُتِمَّ نِعۡمَتَهٗ عَلَيۡكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُوۡنَ ۝ (پ۶،المآئدة:۶)

तर–ज–मए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपना मुंह धोव और कोहनियों तक हाथ और सरों का मस्ह करो और गिट्टों तक पाउं धोव और अगर तुम्हें नहाने की हाजत हो तो खूब सुथरे हो लो और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुम में से कोई क़ज़ाए हाजत से आया या तुम ने औरतों से सोहबत की और इन सूरतों में पानी न पाया तो पाक मिट्टी से तयम्मुम करो तो अपने मुंह और हाथों का इस से मस्ह करो **अल्लाह** नहीं चाहता कि तुम पर कुछ तंगी रखे हां येह चाहता है कि तुम्हें खूब सुथरा कर दे और अपनी ने'मत तुम पर पूरी कर दे कि कहीं तुम एहसान मानो ।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(53)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब कोई मोमिन वुज़ू करते हुए चेहरा धोता है तो उस के चेहरे पर पानी पड़ने या पानी का आख़िरी क़तरा पड़ने से उस के चेहरे से हर वोह गुनाह झड़ जाता है जिस की तरफ़ उस ने अपनी आंखों से देखा हो, फिर जब वोह अपने हाथ धोता है तो उस के हाथों पर पानी पड़ने या पानी का आख़िरी क़तरा पड़ने से हर वोह गुनाह झड़ जाता है जिसे उस के हाथों ने किया हो, फिर जब वोह अपने पाउं धोता है तो पानी पड़ने या पानी का आख़िरी क़तरा पड़ने से उस के क़दमों का हर वोह गुनाह झड़ जाता है जिस की तरफ़ उस के क़दम चल कर गए, यहां तक कि वोह गुनाहों से पाक हो जाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب خروج الخطایا مع ماء الوضوء، رقم ۲۴۴، ص ۱۴۹)

(54)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सुनाबिही رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जब बन्दा वुज़ू करते हुए कुल्ली करता है तो उस के मुंह से गुनाह निकल जाते हैं, जब नाक में पानी डालता है तो नाक के गुनाह निकल जाते हैं, फिर जब चेहरा धोता है तो उस के चेहरे से गुनाह झड़ जाते हैं, यहां तक कि उस की आंखों की पलकों के नीचे के गुनाह भी झड़ जाते हैं और जब वोह दोनों हाथ धोता है तो उस के दोनों हाथों से गुनाह झड़ जाते हैं ह़त्ता कि उस के हाथ के नाख़ुनों के नीचे से भी गुनाह झड़ जाते हैं, फिर जब वोह अपने सर का मस्ह़ करता है तो उस के सर के गुनाह झड़ जाते हैं यहां तक कि उस के कानों के गुनाह भी झड़ जाते हैं, फिर जब अपने पाउं धोता है तो उस के पाउं से गुनाह झड़ जाते हैं ह़त्ता कि पाउं के नाख़ुनों के गुनाह भी झड़ जाते हैं, फिर उस का मस्जिद की त़रफ़ चलना और नमाज़ पढ़ना मज़ीद बर आं (या'नी इस के इ़लावा इ़बादत) है।''

(سنن نسائی، کتاب الطہارۃ، باب مسح الاذنین مع الرأس، رقم......، ج۱، ص۲۷)

(55)...... मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में येह अल्फ़ाज़ ज़ाइद हैं कि ''फिर अगर वोह खड़ा हो और नमाज़ पढ़े इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान के लाइक़ बुज़ुर्गी बयान करे और अपने दिल को **अल्लाह** तआ़ला की याद के लिये फ़ारिग़ करे तो अपने गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो कर लौटेगा जैसे आज ही अपनी मां के पेट से पैदा हुवा हो।''

(مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین، باب اسلام عمرو بن عبسہ، ص۴۱۴)

(56)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जो शख़्स नमाज़ का इरादा करते हुए वुज़ू करने के लिये आता है फिर अपने दोनों हाथ धोता है तो पहला क़त़रा पड़ते ही उस की हथेलियों के गुनाह झड़ जाते हैं, जब वोह कुल्ली करता है और नाक में पानी चढ़ाता है और नाक साफ़ करता है तो पहला क़त़रा टपक्ते ही उस की ज़बान और होंटों के तमाम गुनाह झड़ जाते हैं, फिर जब वोह अपना मुंह धोता है तो उस की आंख और कान के तमाम गुनाह पहला क़त़रा पड़ते ही झड़ जाते हैं और जब वोह कोहनियों समेत हाथ और टख़्नों समेत पाउं धोता है तो हर गुनाह से सलामती (या'नी पाकी) ह़ासिल कर लेता है और इस ह़ाल में निकलता है जैसा उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था, फिर जब वोह नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का द-रजा बुलन्द फ़रमा देता है और अगर बैठ जाए तो सलामती के साथ बैठता है।''

और एक रिवायत में है कि मैं ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने कामिल त़रीक़े से वुज़ू किया और अपने दोनों हाथ और चेहरा धोया और अपने सर का मस्ह़ किया और कानों का मस्ह़ किया फिर फ़र्ज़ नमाज़ के लिये खड़ा हुवा तो उस के क़दम उस दिन में जिस बुराई की त़रफ़ चले और उस के हाथों ने जिसे पकड़ा और उस के कानों ने जो सुना, उस की आंखों ने जो देखा और जो उस ने बुरी गुफ़्त-गू की सब मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।'' फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

ने फ़रमाया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इतनी बातें सुनी हैं जिन्हें मैं शुमार नहीं कर सकता।" (مسند احمد، حدیث امام ابی اُمَامَہ الباہلی، رقم ۲۲۳۳۰، ۲۲۳۳۵، ج۸، ص۲۹۸)

(57)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अफ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जो अह़सन त़रीक़े से वुज़ू करता है उस के जिस्म से गुनाह झड़ जाते हैं यहां तक कि नाख़ुनों के नीचे से भी।"

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वुज़ू किया फिर फ़रमाया कि "मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ वुज़ू करते हुए देखा जैसे मैं ने वुज़ू किया है, फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो इस त़रह़ वुज़ू करता है उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं और उस का नमाज़ पढ़ना और मस्जिद की त़रफ़ चलना नफ़्ल शुमार होता है।"

और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना, "जो आदमी अह़सन त़रीक़े से वुज़ू करे फिर नमाज़ पढ़े तो उस की इस नमाज़ और साबिक़ा नमाज़ के दरमियान होने वाले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।"

नसाई शरीफ़ के अल्फ़ाज़ यूं हैं, "जो शख़्स कामिल वुज़ू करे जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है तो उस की नमाज़ें बीच के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हैं।" (نسائی، کتاب الطہارۃ، باب ثواب من توضاء، رقم ۱۴۴، ج۱، ص۹۰)

(58)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन हुमरान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक सर्द रात में सफ़र का इरादा किया और वुज़ू के लिये पानी मंगवाया। मैं उन के लिये पानी ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना चेहरा और दोनों हाथ धोए। (येह देख कर) मैं ने अ़र्ज़ किया, "बस इतना ही काफ़ी है क्यूं कि आज रात बहुत सर्दी है।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि "मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो बन्दा कामिल वुज़ू करेगा उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।" (مسند بزار، رقم ۴۲۲، ج۲، ص۷۵)

(59)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी ह़दीसे जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام में है कि जब ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस्लाम के बारे में सुवाल किया गया तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "इस्लाम येह है कि तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह तआ़ला के इ़लावा कोई मा'बूद नहीं और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं और नमाज़ पढ़ो और ज़कात अदा करो और ह़ज व उ़म्रह करो और जनाबत से ग़ुस्ल करो और कामिल वुज़ू करो और र-मज़ान का रोज़ा रखो।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया,

''जब मैं येह आ'माल बजा लाऊं तो क्या मैं मुसल्मान हूं ?'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हां।'' (صحیح ابن خزیمہ، کتاب الصلوۃ، باب اقام الصلوۃ من الاسلام، رقم ۳۰۸/۳۰۹، ج۱، ص۱۵۹، بتغیر قلیل)

(60)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान की त़रफ़ तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, ''ऐ मोमिन क़ौम के घर ! तुझ पर सलामती हो अगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने चाहा तो हम भी तुम्हारे साथ मिलने वाले हैं, मैं पसन्द करता हूं कि हम अपने भाइयों को देख लेते।'' तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के भाई नहीं हैं ?'' फ़रमाया, ''तुम मेरे सह़ाबा हो और हमारे भाई वोह लोग हैं जो अभी तक पैदा नहीं हुए।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''जो अभी तक पैदा नहीं हुए, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें कैसे पहचानेंगे ?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारा क्या ख़याल है कि अगर किसी शख़्स के पास एक सियाह घोड़ा हो और उस के सियाह कन्धों के दरमियान एक चमकदार निशान हो तो क्या वोह अपने घोड़े को न पहचान सकेगा ?'' अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो फ़रमाया ''जब येह मेरे ह़ौज़ पर आएंगे तो उन लोगों के आ'ज़ा वुज़ू के बाइ़स चमकते होंगे और मैं ह़ौज़े कौसर पर उन की पेश्वाई के लिये मौजूद होउंगा।'' (صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب استحباب اطالۃ الغرۃ، رقم ۲۴۹، ص۱۵۰)

(61)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना ''जब मेरी उम्मत को क़ियामत के दिन पुकारा जाएगा तो वुज़ू के बाइ़स उन की पेशानियां और क़दम चमक्ते होंगे, लिहाज़ा तुम में से जो अपनी चमक में इज़ाफ़ा करने की इस्तित़ाअ़त रखे उसे चाहिये कि इस में इज़ाफ़ा करे।'' (صحیح بخاری، کتاب الوضوء والقر المحجلون الخ، رقم ۱۳۶، ج۱، ص۷۱)

(62)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जन्नत में मोमिन का ज़ेवर वहां तक होगा जहां तक वुज़ू का पानी पहुंचता है।''

इब्ने खुज़ैमा की रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना ''जन्नत में आ'ज़ाए वुज़ू तक ज़ेवर होंगे।'' (صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب تبلغ الحلیۃ حیث یبلغ الوضوء، رقم ۲۵۰، ص۱۵۱)
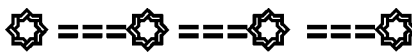
मशक्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करने की फ़ज़ीलत

(63)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हारी ऐसे अ़मल की त़रफ़ रहनुमाई न करूं जिस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गुनाह मिटाता है और द-रजात को बुलन्द फ़रमाता है ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्यूं नहीं, ज़रूर कीजिये।'' इर्शाद फ़रमाया ''दुश्वारी के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ कसरत से चलना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना, पस येही गुनाहों से हिफ़ाज़त के लिये क़ल्आ है, पस येही क़ल्आ है।'' (صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب فضل اسباغ الوضوء علی مکارہ، رقم ۲۵۱، ص ۱۵۱)

(64)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हारी ऐसे अ़मल की त़रफ़ रहनुमाई न करूं जिस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़त़ाओं को मिटाता है और गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमा देता है।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم!'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''दुश्वारी के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ कसरत से आना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الطھارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۱۰۳۶، ج ۲، ص ۱۸۸)

(65)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ कसरत से आ-मदो रफ़्त और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना गुनाहों को अच्छी त़रह़ धो देता है।''

(المستدرک للحاکم، کتاب الطھارۃ، باب فضیلۃ تحیۃ الوضوء، رقم ۴۶۸، ج ۱، ص ۳۴۲)

(66)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सख़्त सर्दी में कामिल वुज़ू किया उस के लिये सवाब के दो हिस्से हैं।'' (مجمع الزوائد، کتاب الطھارۃ، باب فی اسباغ الوضوء، رقم ۱۲۱۷، ج ۱، ص ۵۴۲)

मिस्वाक शरीफ़ का सवाब

(67)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''मिस्वाक में मुंह की पाकीज़गी और रब عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा है।'' त़-बरानी शरीफ़ की रिवायत में येह भी है कि ''और आंखों की जिला या'नी ज़िन्दगी है।'' (سنن نسائی، کتاب الطہارۃ، باب السواک اذا قام من اللیل، ج۱،ص۱۰)

(68)...... ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मिस्वाक किया करो क्यूं कि मिस्वाक में मुंह की पाकीज़गी और रब عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा है, जब भी जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلام मेरे पास आए तो उन्हों ने मुझे मिस्वाक करने की वसिय्यत की यहां तक कि मुझे अन्देशा हुवा कि कहीं येह मुझ पर और मेरी उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाए और अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक़्क़त में पड़ने का ख़ौफ़ न होता तो मैं इन पर मिस्वाक करना फ़र्ज़ कर देता और बेशक मैं इस क़दर मिस्वाक करता हूं कि मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं अपने अगले दांत ज़ाइल न कर लूं।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الطہارۃ، باب السواک، رقم ۲۸۹، ج۱،ص۱۸۶)

(69)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बिला शुबा मुझे मिस्वाक का इस क़दर हुक्म दिया गया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं मिस्वाक के बारे में मेरी त़रफ़ वह़्य न आ जाए।'' (مسند احمد، مسند عبداللہ بن العباس، رقم ۲۷۹۹، ج۱،ص۶۵۸)

(70)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक़्क़त में पड़ने का ख़ौफ़ न होता तो मैं उन्हें हर नमाज़ से पहले मिस्वाक करने का हुक्म देता।'' जब कि एक रिवायत में है कि ''मैं उन्हें हर नमाज़ के वक़्त वुज़ू के साथ मिस्वाक करने का हुक्म देता।'' (صحیح بخاری، کتاب الجمعہ، باب السواک یوم الجمعۃ، رقم ۸۸۷، ج۱،ص۳۰۷)

(71)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मिस्वाक करने का हुक्म दिया और फ़रमाया कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''बन्दा जब मिस्वाक करता है फिर नमाज़ के लिये खड़ा होता है तो उस के पीछे एक फ़िरिश्ता भी खड़ा हो जाता है और उस की क़िराअत को ग़ौर से सुनता है और जब भी वोह कोई आयत या कलिमा पढ़ता है तो फ़िरिश्ता उस से क़रीब हो जाता है यहां तक कि उस के मुंह पर अपना मुंह रख देता है तो उस के

मुंह से जितना क़ुरआन निकलता है फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाता है, इस लिये तुम क़ुरआन के लिये अपने मुंह को पाक रखा करो ।'' (مسند بزار، رقم ۶۰۳، ج۲، ص۲۱۴)

(72)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मिस्वाक के साथ दो रक्अ़त पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक के सत्तर रक्अ़तें पढ़ने से अफ़्ज़ल है ।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الطہارۃ، الترغیب فی السواک، رقم۱۸، ج۱، ص۱۰۲)

(73)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुझे मिस्वाक के साथ दो रक्अ़तें पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक के सत्तर रक्अ़तें पढ़ने से ज़ियादा पसन्द है ।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الطہارۃ، الترغیب فی السواک، رقم۱۸، ج۱، ص۱۰۲)

(74)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मिस्वाक के साथ नमाज़ पढ़ना बिग़ैर मिस्वाक के नमाज़ पढ़ने से सत्तर गुना अफ़्ज़ल है ।'' (مسند احمد، مسند عائشہ رضی اللہ عنہا، رقم ۲۶۴۰۰، ج۱۰، ص۱۴۱)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

हर वक़्त बा वुज़ू रहने का सवाब

(75)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''दीन पर साबित क़दम रहो, तुम हरगिज़ इस की ब-रकात शुमार न कर सकोगे और जान लो कि तुम्हारे आ'माल में सब से बेहतर अ़मल नमाज़ है और मोमिन ही हर वक़्त बा वुज़ू रह सकता है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الطہارۃ، باب المحافظۃ علی الوضوء، رقم ۲۷۷، ج۱، ص۱۷۸)

(76)...... ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ जरशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''साबित क़दम रहो और क्या ही अच्छा है अगर तुम साबित क़दम रहो और वुज़ू पर हमेशगी इख़्तियार करो क्यूं कि तुम्हारे आ'माल में सब से बेहतर अ़मल नमाज़ है और ज़मीन से ख़बरदार रहो कि येह तुम्हारी अस्ल है और इस ज़मीन पर जो कोई भी अच्छा या बुरा अ़मल करेगा ज़मीन उस के बारे में ख़बर देगी।''

(طبرانی کبیر، رقم ۴۵۹۶، ج۵، ص۶۵)

(77)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''अगर मेरी उम्मत पर गिरां न गुज़रता तो मैं उन्हें हर नमाज़ के वक़्त वुज़ू और हर वुज़ू के साथ मिस्वाक करने का हुक्म देता।'' (مسند احمد، مسند ابی ہریرہ، رقم ۷۵۱۶، ج۳، ص۷۲)

(78)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कहते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे ''जो वुज़ू होने के बा वुजूद वुज़ू करेगा उस के लिये दस नेकियां लिखी जाएंगी।''

(سنن ابوداؤد، کتاب الطہارۃ، باب الرجل یجدد الوضوء من غیر حدث، رقم ۶۲، ج۱، ص۵۶)

(79)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक सुब्ह़ हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेदार हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पुकारा फिर दरयाफ़्त फ़रमाया ''ऐ बिलाल! कौन सी चीज़ तुम्हें मुझ से पहले जन्नत में ले गई? आज शब मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने अपने आगे तुम्हारे क़दमों की आवाज़ सुनी।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! मैं (वुज़ू करने के बा'द) हमेशा दो रक्अ़तें पढ़ कर अज़ान देता हूं और जब बे वुज़ू हो जाता हूं तो फ़ौरन वुज़ू कर लेता हूं।'' तो रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''(अच्छा!) येही वजह है।''

(مسند احمد، حدیث بریدہ الاسلمی، رقم ۲۳۰۵۷، ج۹، ص۲۰)

दौराने वुज़ू अवराद पढ़ने का सवाब

(80)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से जो शख़्स कामिल वुज़ू करे फिर येह कलिमा पढ़े,

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْکَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ''

तरजमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।''
तो उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाएंगे जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए।''

(صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب ذکر المستحب عقب الوضوء، رقم ۲۳۴، ص۱۴۴)

(81)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना ''जिस ने वुज़ू का इरादा किया फिर कुल्ली की और तीन मरतबा नाक में पानी डाला और तीन मरतबा अपना चेहरा धोया और अपने दोनों हाथ तीन मरतबा कोहनियों समेत धोए फिर कोई बात किये बिग़ैर येह कलिमा पढ़ा,

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ''

तरजमा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।''
तो उस के उस वुज़ू और पिछले वुज़ू के दरमियान जो गुनाह हुए वोह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الطھارۃ، باب مایقول بعد الوضوء، رقم ۱۲۲۸، ج۱، ص۵۴۵)

(82)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जो सूरए कह्फ़ पढ़ेगा तो येह सूरत क़ियामत के दिन उस के (पढ़ने के) मक़ाम से मक्का तक के लिये नूर होगी और जो इस की आख़िरी दस आयतें पढ़ ले फिर दज्जाल भी आ जाए तो उसे नुक़्सान न पहुंचा सकेगा और जो वुज़ू करने के बा'द येह कलिमात पढ़ेगा,

سُبْحَانَکَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَيْکَ''

तरजमा : ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं।''
तो इन कलिमात पर मोहर लगा दी जाती है पस उसे क़ियामत तक नहीं तोड़ा जाता।''

(طبرانی اوسط، رقم ۱۴۵۵، ج۱، ص۳۹۷)

=== === ===

तहिय्यतुल वुज़ू का सवाब

(83)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया "मुझे अपने इस्लाम में किये गए सब से ज़ियादा उम्मीद दिलाने वाले अ़मल के बारे में बताओ क्यूं कि मैं ने जन्नत में अपने आगे तुम्हारे जूतों की आवाज़ सुनी है।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "मैं ने इतना उम्मीद दिलाने वाला अ़मल तो कोई नहीं किया, अलबत्ता मैं दिन और रात की जिस घड़ी में भी वुज़ू करता हूं तो जितनी रक्अ़तें हो सकती हैं नमाज़ अदा कर लेता हूं।" (صحیح بخاری، کتاب التہجد، باب فضل الطھور باللیل والنھار الخ، رقم ۱۱۴۹، ج۱، ص۳۹۰)

(84)...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जो शख़्स अह़सन त़रीक़े से वुज़ू करे और दो रक्अ़तें क़ल्बी तवज्जोह से अदा करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी।"

(صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ، باب ذکر المستحب عقب الوضوء، رقم ۲۳۴، ص۱۴۴)

(85)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक मरतबा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वुज़ू किया फिर फ़रमाया कि "मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ वुज़ू करते हुए देखा, फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जो मेरी त़रह़ वुज़ू करे फिर दो रक्अ़तें पढ़े और उन में कोई ग़-लत़ी न करे तो उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" (صحیح بخاری، کتاب الوضوء، باب الوضوء ثلاثا ثلاثا، رقم ۱۵۹، ج۱، ص۷۸)

(86)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने अह़सन त़रीक़े से वुज़ू किया फिर दो रक्अ़तें इस त़रह़ पढ़ीं कि उन में कोई ग़-लत़ी न की तो उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।" (سنن ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، باب کراھیۃ الوسوسۃ، رقم ۹۰۵، ج۱، ص۲)

(87)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस ने अह़सन त़रीक़े से वुज़ू किया फिर उठ कर दो या चार रक्अ़तें पढ़ीं और उन के रुकूअ़ व सुजूद, खुशूअ़ के साथ अदा किये फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब की तो **अल्लाह** तआ़ला उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।"

(مسند احمد، بقیۃ حدیث ابی الدرداء، رقم ۲۷۶۱۶، ج۱۰، ص۴۳۰)
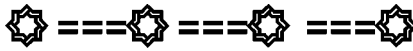
नमाज़ों का सवाब

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये अज़ान देने का सवाब

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया,......

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ (پ۲۴،حٰم السجدہ:۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की त़रफ़ बुलाए और नेकी करे और कहे मैं मुसल्मान हूं।

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, ''मेरा ख़याल है कि येह आयत मुअज़्ज़िनीन के ह़क़ में नाज़िल हुई।''

(88)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी सअ़-सआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मुझ से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''मैं देखता हूं कि तुम जानवरों और जंगल में रहने को पसन्द करते हो, लिहाज़ा जब तुम जंगल में हुवा करो और नमाज़ के लिये अज़ान दो तो बुलन्द आवाज़ के साथ अज़ान दिया करो क्यूं कि मुअज़्ज़िन की आवाज़ को जो कोई जिन्न या इन्सान या दूसरी चीज़ सुनेगी वोह क़ियामत के दिन उस के लिये गवाही देगी।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''मैं ने येह बात रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب رفع الصوت بالنداء، رقم ۶۰۹، ج۱، ص۲۲۲)

इब्ने ख़ुज़ैमा की रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि बेशक मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''मुअज़्ज़िन की आवाज़ को जो भी दरख़्त, पथ्थर, जिन्न या इन्सान सुनेगा वोह उस के लिये गवाही देगा।''

(89)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आवाज़ की इन्तिहा तक मुअज़्ज़िन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है और हर ख़ुश्को तर चीज़ उस के लिये गवाही देगी।'' एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है, ''उसे अपने साथ नमाज़ पढ़ने वालों के सवाब की मिस्ल सवाब मिलेगा।''

(سنن ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، باب رفع الصوت بالاذان، رقم ۵۱۵، ج۱، ص۲۱۸)

(90)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अज़ान की इन्तिहा तक मुअज़्ज़िन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है और उस के लिये हर ख़ुश्को तर चीज़ इस्तिग़्फ़ार करती है।''

(مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمر بن خطاب، رقم ۶۲۱۰، ج۲، ص۵۰۰)

(91)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर रह़मत भेजते हैं और मुअज़्ज़िन की आवाज़ की इन्तिहा तक उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है, उस की आवाज़ जो ख़ुश्को तर चीज़ सुनती है उस की तस्दीक़ करती है और उसे अपने साथ नमाज़ पढ़ने वालों की मिस्ल सवाब मिलता है।'' (سنن نسائی، کتاب الاذان، باب رفع الصوت بالاذان، ج۲،ص۱۳)

वज़ाह़त :

मुअज़्ज़िन की आवाज़ की इन्तिहा तक मग़्फ़िरत कर दिये जाने से मुराद येह है कि जैसे जैसे उस की आवाज़ बुलन्द होती जाती है मग़्फ़िरत भी ग़ायत तक पहुंचती जाती है और एक क़ौल येह है कि अगर मुअज़्ज़िन के मक़ाम से अज़ान की आवाज़ पहुंचने की इन्तिहा तक मुअज़्ज़िन के गुनाह भर दिये जाएं तो **अल्लाह** तआ़ला वोह गुनाह भी मुआ़फ़ फ़रमा देगा। وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

(92)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''रह़मान عَزَّوَجَلَّ का दस्ते कुदरत मुअज़्ज़िन के सर पर होता है और बेशक मुअज़्ज़िन की आवाज़ की इन्तिहा तक उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।''

(طبرانی اوسط، رقم ۱۹۸۷، ج۱،ص۵۳۹)

(93)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर लोग जान लें कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है ? और फिर इन दोनों सआ़दतों को पाने के लिये उन्हें कुरआ़ अन्दाज़ी करना पड़े तो ज़रूर कर गुज़रें।'' (صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب الاستھام فی الاذان، رقم ۶۱۵، ج۱،ص۲۲۴)

वज़ाह़त :

लोग जब अज़ान और सफ़े अव्वल के सवाब को जान लेंगे तो हर एक येही चाहेगा कि उसे अज़ान का मौक़अ़ दिया जाए तो ऐसी सूरत में नज़ाअ़ ख़त्म करने के लिये कुरआ़ अन्दाज़ी का त़रीक़ा इख़्तियार करना पड़ेगा, मगर अफ़्सोस ! कि लोग इन दोनों आ'माल के सवाब और इन की फ़ज़ीलत से ला इल्म हैं।

(94)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर लोग जान लें कि अज़ान में क्या है ? तो इस के हुसूल के लिये तलवार से लड़ें।''

(مسند احمد، مسند ابی سعید الخدری، رقم ۱۱۲۴۱، ج۴،ص۵۹)

(95)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकर हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इमाम ज़िम्मादार हैं और मुअज़्ज़िन अमानत दार हैं ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! आइम्मा को हिदायत अ़ता फ़रमा और मुअज़्ज़िनीन की मग़्फ़िरत फ़रमा।''

(سنن ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، باب مایجب علی المؤذن من تعاھد الوقت، رقم ۵۱۷، ج۱، ص ۲۱۸)

इब्ने ख़ुज़ैमा की रिवायत में है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुअज़्ज़िनीन अमानत दार हैं और आइम्मा ज़िम्मादार हैं फिर तीन मरतबा दुआ़ फ़रमाई कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुअज़्ज़िनीन की मग़्फ़िरत फ़रमा और आइम्मा को हिदायत अ़ता फ़रमा।''

जब कि इब्ने ह़ब्बान में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''इमाम ज़िम्मादार है और मुअज़्ज़िन अमानत दार है **अल्लाह** तआ़ला आइम्मा को हिदायत अ़ता फ़रमाए और मुअज़्ज़िनीन को मुआ़फ़ फ़रमाए।''

(96)...... हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िनीन लोगों में सब से लम्बी गरदनों वाले होंगे।''

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب فضل الاذان وھرب الشیطان عند سماعہ، رقم ۳۸۷، ص ۲۰۴)

वज़ाह़त :

लम्बी गरदनों से मुराद एक क़ौल के मुत़ाबिक़ येह है कि क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़मल वाले लोग मुअज़्ज़िनीन होंगे और एक क़ौल येह है कि मुअज़्ज़िनीन की गरदनें ह़क़ीक़तन लम्बी होंगी क्यूं कि क़ियामत के दिन लोग ता'दाद में कसीर और परेशान ह़ाल होंगे कोई पसीने में मुंह तक डूबा हुवा होगा, किसी का पसीना कानों की लौ तक पहुंचता होगा और किसी का पसीना सर से बुलन्द हो जाएगा, जब कि मुअज़्ज़िनीन उस दिन लोगों में सब से लम्बी गरदनों वाले होंगे और उन के सर दीगर लोगों से बुलन्द होंगे। और वोह जन्नत में दाख़िले की इजाज़त के मुन्तज़िर होंगे।

एक एह़तिमाल येह भी है कि उन की गरदनें लम्बी न होंगी बल्कि मकान की ऊंचाई की बिना पर उन की गरदनें लम्बी नज़र आएंगी क्यूं कि मुअज़्ज़िनीन क़ियामत के दिन मुश्क के टीलों पर खड़े होंगे, जब कि दीगर लोग मह़शर की ज़मीन पर होंगे जैसा कि अगली ह़दीसे मुबा-रका में बयान होगा, और उन का मक़ाम हमवार होने की वजह से उन के सर की ऊंचाई यक्सां होगी जब कि मुअज़्ज़िनीन को बुलन्द मक़ाम से मुशर्रफ़ किया जाएगा और येह कोई बई़द नहीं, وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(97)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीन शख़्स मुश्क के टीलों पर होंगे (1) वोह गुलाम जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने आक़ा का ह़क़ अदा किया (2) वोह शख़्स जो किसी क़ौम का इमाम बने और वोह उस से राज़ी हों (3) वोह शख़्स जो दिन और रात में पांच नमाज़ों के लिये अज़ान देता है।''

(سنن ترمذی، کتاب البر والعلۃ، باب ماجاء فی فضل المملوک الصالح، رقم ۱۹۹۳، ج۳، ص۳۹۷)

त़-बरानी की रिवायत में है कि ''तीन अश्ख़ास ऐसे होंगे जिन्हें बड़ी घबराहट या'नी क़ियामत दह्शत ज़दा न कर सकेगी और ह़िसाब उन तक न पहुंचेगा, वोह मुश्क के टीले पर होंगे यहां तक कि मख़्लूक़ ह़िसाब से फ़ारिग़ हो जाए।

पहला : वोह शख़्स जो **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये कुरआन पढ़े और इस के ज़रीए किसी क़ौम की इमामत कराए और वोह क़ौम भी उस से राज़ी हो, दूसरा : वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नमाज़ों के लिये अज़ान दे और तीसरा : वोह गुलाम जिस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ और अपने आक़ा का मुआ-मला ख़ुश उस्लूबी से निभाया।''

एक और रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि अगर मैं ने येह बात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सात[7] मरतबा न सुनी होती तो मैं इसे हरगिज़ न बयान करता। मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''तीन अफ़राद मुश्क के टीलों पर होंगे क़ियामत के दिन की घबराहट उन्हें दह्शत ज़दा न करेगी और वोह उस वक़्त भी पुर सुकून होंगे जब लोग दह्शत ज़दा होंगे। पहला वोह शख़्स जिस ने कुरआन सीखा फिर उस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और इन्आ़म का त़लब गार हुवा और दूसरा वोह शख़्स जो हर दिन रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के इन्आ़मात में रग़्बत करते हुए पांचों नमाज़ों के लिये अज़ान दे और तीसरा वोह शख़्स जिस को दुन्या की गुलामी अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त से न रोके, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस के इन्आ़मात में रग़्बत करते हुए पांचों नमाज़ों के लिये अज़ान दे।''

(98)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर मैं क़सम उठा कर कहूं तो सच ही कहूंगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा बन्दे सूरज और चांद (या'नी अवक़ाते नमाज़) का ख़याल रखने वाले या'नी मुअज़्ज़िनीन हैं और येह लोग क़ियामत के दिन अपनी गरदनों की लम्बाई के बाइस पहचाने जाएंगे।''

(طبرانی اوسط، رقم ۸۰۸ ،۳۸۰۸، ج۳، ص۳۴۸)

(99)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में सब से बेहतर वोह हैं जो नमाज़ के लिये सूरज और चांद (या'नी अवक़ाते नमाज़) की रिआ़यत करते हैं।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب فضل الاذن، رقم ۱۸۴۰، ج۲، ص۸۳)

(100)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अज़ान देने वाले और तल्बिया पढ़ने वाले अपनी क़ब्रों से अज़ान देते और तल्बिया पढ़ते हुए निकलेंगे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب فضل الاذان، رقم ۱۸۴۱، ج۲، ص۸۴)

(101)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जब शैत़ान अज़ान की आवाज़ सुनता है ''रौह़ा'' के मक़ाम तक दूर हट जाता है।'' रावी फ़रमाते हैं कि रौह़ा मदीनए मुनव्वरह से 36 मील के फ़ासिले पर है। (صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب فضل الاذان وھرب الشیطان عند سماعہ، رقم ۳۸۸، ص۲۰۴)

(102)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब नमाज़ के लिये निदा या'नी अज़ान दी जाती है तो शैत़ान पीठ फैर कर भागता है उस का ह़ाल येह होता है जब तक अज़ान की आवाज़ सुनता है गोज़ मारता (या'नी रीह़ ख़ारिज करता) रहता है ताकि अज़ान की आवाज़ न सुन सके।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب فضل التاذین، رقم ۶۰۸، ج۱، ص۲۲۲)

(103)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सवाब की उम्मीद पर अज़ान देने वाला मुअज़्ज़िन अपने ख़ून से लिथड़े हुए शहीद की त़रह़ है, वोह अज़ान और इक़ामत के दरमियान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी पसन्दीदा शै की तमन्ना करता है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۳۵۵۴، ج۱۲، ص۳۲۲، بتغیر قلیل)

(104)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब किसी बस्ती में अज़ान दी जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दिन उस बस्ती को अपने अ़ज़ाब से अमान अ़त़ा फ़रमा देता है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۴۶، ج۱، ص۲۵۷)

(105)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस क़ौम में सुब्ह़ को अज़ान दी जाती है वोह शाम तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमान में होती है और जिस क़ौम में शाम को अज़ान दी जाती है वोह सुब्ह़ तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमान में होती है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۴۹۸، ج۲۰، ص۲۱۵)

(106)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दौराने सफ़र एक शख़्स को **अल्लाहु अक्बर अल्लाहु** अक्बर कहते हुए सुना तो फ़रमाया कि ''फ़ित़रत के मुत़ाबिक़ है।'' फिर

उस शख़्स ने اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहा तो फ़रमाया, ''येह जहन्नम से महफ़ूज़ हो गया।'' फिर लोग उस शख़्स की त़रफ़ दौड़े तो देखा कि वोह एक चरवाहा था जो नमाज़ का वक़्त होने पर खड़े हो कर अज़ान दे रहा था। (صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب الامساک عن الاغارۃ علی قوم الخ، رقم ۳۸۲ص۲۰۲)

(107)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ, पहाड़ की चट्टान पर नमाज़ के लिये अज़ान देने और नमाज़ पढ़ने वाले चरवाहे से बहुत ख़ुश होता है और फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे को देखो मेरा येह बन्दा मेरे ख़ौफ़ से अज़ान देता और नमाज़ पढ़ता है, बेशक मैं ने इस की मग़्फ़िरत कर दी और इसे जन्नत में दाख़िल कर दिया।'' (سنن نسائی، کتاب الاذان، باب الاذان لمن یصلی وحدہ، ج۲،ص۲۰)

(108)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि ''मुझे ऐसा अ़मल सिखाइये या ऐसे अ़मल की त़रफ़ मेरी रहनुमाई कीजिये जो मुझे जन्नत में पहुंचा दे।'' इर्शाद फ़रमाया, ''मुअज़्ज़िन बन जाओ।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''मैं इस की त़ाक़त नहीं रखता।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''इमाम बन जाओ।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''मैं येह भी नहीं कर सकता।'' तो फ़रमाया ''(फिर) इमाम के बराबर में खड़े हुवा करो।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الصلوۃ، باب فی الاذان، رقم ۲۲، ج۱،ص۱۱۲)

(109)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बारह साल तक अज़ान देगा उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी और उस के अज़ान देने के बदले में उस के लिये रोज़ाना साठ नेकियां और हर इक़ामत के इवज़ तीस नेकियां लिखी जाएंगी।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الاذان والسنۃ فیھا، باب فضل الاذان، رقم ۷۲۸، ج۱،ص۴۰۲)

(110)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सवाब की उम्मीद पर सात साल तक अज़ान दी, उस के लिये दोज़ख़ से नजात लिख दी जाएगी।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الاذان والسنۃ فیھا، باب فضل الاذان، رقم ۷۲۸، ج۱،ص۴۰۲)

(111)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबू आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे जो आख़िरी वसिय्यत फ़रमाई वोह येह थी कि ''मुअज़्ज़िन ऐसे शख़्स को बनाओ जो अज़ान देने पर उजरत न ले।''

(سنن ترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء فی کراھیۃ ان یاخذ المؤذن علی الاذان اجرا، رقم ۲۰۹، ج۱،ص۲۵۲)

=== === ===

अज़ान के जवाब का सवाब

(112)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जब मुअज़्ज़िन اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे तो तुम में से कोई اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ कहे तो वोह शख़्स اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ कहे तो वोह शख़्स اَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ कहे तो वोह शख़्स لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ कहे तो वोह शख़्स لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहे, फिर जब मुअज़्ज़िन اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे तो वोह शख़्स اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे और जब मुअज़्ज़िन لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहे और येह शख़्स सिद्क़ दिल से لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहे तो जन्नत में दाखि़ल होगा।''
(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول مثل قول المؤذن الخ، رقم ۳۸۵، ص۲۰۳)

(113)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जो शख़्स मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुन कर येह दुआ़ पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्श देगा,

وَاَنَا اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ رَضِیْتُ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ رَسُوْلاً''

तरजमा : और मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब होने पर और इस्लाम के दीन होने पर और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रसूल होने पर राज़ी हूं।''
(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب استحباب القول مثل قول المؤذن الخ، رقم ۳۸۶، ص۲۰۴)

(114)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मर्दों और औ़रतों की सफ़ के दरमियान खड़े हो कर फ़रमाया, ''ऐ ख़वातीन के गुरौह ! जब तुम इस ह़ब्शी (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की अज़ान और इक़ामत सुनो तो जैसे येह कहे तुम भी इसी त़रह़ कह लिया करो क्यूं कि तुम्हारे लिये ऐसा करने में हर ह़र्फ़ के बदले में दस लाख नेकियां हैं।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''येह फ़ज़ीलत तो औ़रतों के लिये है मर्दों के लिये क्या है ?'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''ऐ उ़मर ! मर्दों के लिये इस से दुगना सवाब है।''
(طبرانی کبیر، رقم ۲۸، ج ۲۴، ص ۱۶)

(115)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि

हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अज़ान देना शुरूअ़ की । जब वोह ख़ामोश हुए तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो इस मुअज़्ज़िन के क़ौल पर यक़ीन करते हुए इस की मिस्ल कहेगा जन्नत में दाख़िल होगा ।'' (سنن نسائی، کتاب الاذان، باب القول مثل مایقول المؤذن، ج۲،ص۲۴)

(116)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुअज़्ज़िनीन हम से सवाब में बढ़ जाते हैं ।'' तो सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुअज़्ज़िन जैसे कहे तुम भी वैसे ही कह लिया करो जब तुम पूरी अज़ान का जवाब दे चुको तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी मुरादें मांगो तुम्हारी मुरादें पूरी की जाएंगी ।'' (سنن نسائی، کتاب الصلوۃ، باب مایقول اذا سمع المؤذن، رقم ۵۲۴، ج۱،ص۲۲۱)

अज़ान के बा'द की दुआ़ पढ़ने का सवाब

(117)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जो अज़ान सुनने के बा'द येह दुआ़ पढ़ेगा क़ियामत के दिन उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त ह़लाल होगी,

''اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّآمَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ اٰتِ مُحَمَّدَانِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَابْعَثْہُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَانِ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐ इस कामिल दा'वत और क़ाइम की जाने वाली नमाज़ के रब ! मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा और उन्हें उस मक़ामे मह़मूद पर पहुंचा जिस का तूने उन से वा'दा फ़रमाया है ।'' (صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب الدعاء عند النداء، رقم ۶۱۴، ج۱،ص۲۲۴)

(118)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़–मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अज़ान के बा'द येह दुआ़ मांगा करते थे,

''اَللّٰھُمَّ رَبَّ ھٰذِہِ الدَّعْوَۃِ التَّآمَّۃِ وَالصَّلٰوۃِ الْقَآئِمَۃِ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَعْطِہٖ سُؤْلَہٗ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ इस कामिल दा'वत और क़ाइम की जाने वाली नमाज़ के रब عَزَّوَجَلَّ ! मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और क़ियामत के दिन इन की मुराद पूरी फ़रमा ।''

और येह कलिमात अपने गिर्द मौजूद सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को सुनाया करते थे और इस बात को पसन्द फ़रमाते थे कि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी अज़ान सुनने के बा'द येह कलिमात कहें और फ़रमाया करते कि ''जो इन कलिमात की मिस्ल कहेगा क़ियामत के दिन मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त उस के लिये वाजिब हो जाएगी ।''

एक और रिवायत में है कि अज़ान के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ किया करते थे,

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ صَلِّ عَلٰى عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَاجْعَلْنَا فِیْ شَفَاعَتِهٖ يَوْمَ الْقِيَامَةِ''

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐ इस कामिल दा'वत और क़ाइम की जाने वाली नमाज़ के रब ! तू अपने बन्दे और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और हमें क़ियामत के दिन इन की शफ़ाअ़त पाने वालों में शामिल फ़रमा।''

और फ़रमाया करते कि ''अज़ान के बा'द जो शख़्स येह कलिमात कहेगा अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन उन लोगों में शामिल फ़रमाएगा जिन की मैं शफ़ाअ़त करूंगा।''

(مجمع الزوائد، رقم ۱۸۷۸،۱۸۷۹، ج۲، ص۹۴)

(119)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अज़ान और इक़ामत के दरमियान दुआ़ रद नहीं की जाती।'' (سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی الدعاء بین الاذان والاقامۃ، رقم ۵۲۱، ج۱، ص۲۲۰)

तिरमिज़ी की रिवायत में है सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो हम क्या दुआ़ मांगा करें ?'' फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुन्या और आख़िरत में अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत मांगा करो।''

इक़ामत के वक़्त दुआ़ करने का सवाब

(120)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दो साअ़तें ऐसी हैं जिन में दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ रद नहीं की जाती (1) जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाए (2) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में बांधी गई सफ़ में।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب صفۃ الصلوۃ، رقم ۱۷۶۱، ج۳، ص۱۲۸)

(121)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जब नमाज़ के लिये अज़ान दी जाती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दुआ़ क़बूल की जाती है।'' (مسند احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، رقم ۱۴۶۹۵، ج۵، ص۱۰۷)

===   ===   ===

नमाज़ का सवाब

(122)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''साबित क़दम रहो और (इस की ब-र-कतें) हरगिज़ शुमार न कर सकोगे और याद रखो कि तुम्हारे आ'माल में सब से बेहतर अ़मल नमाज़ पढ़ना है और मोमिन ही हर वक़्त बा वुज़ू रह सकता है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الطہارۃ، باب المحافظۃ علی الوضوء، رقم ۲۷۷، ج۱، ص۱۷۸)

(123)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सफ़ाई निस्फ़ ईमान है और ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہ'' मीज़ान को भर देती है और ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ'' ज़मीन व आस्मान के दरमियान हर चीज़ को भर देते हैं और नमाज़ नूर है और स-दक़ा दलील या'नी रहनुमा है, सब्र रोशनी है और क़ुरआन तेरे ह़क़ में या तेरे ख़िलाफ़ ह़ुज्जत है।'' (صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۲۲۳، ص۱۴۰)

(124)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मौसिमे सरमा में बाहर तशरीफ़ लाए जब कि दरख़्तों के पत्ते झड़ रहे थे तो आप ने एक दरख़्त की टहनी पकड़ कर उस के पत्ते झाड़ते हुए इर्शाद फ़रमाया, ''ऐ अबू ज़र!'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ह़ाज़िर हूं।'' तो इर्शाद फ़रमाया, '' बेशक जब कोई मुसल्मान, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे इस दरख़्त के पत्ते झड़ रहे हैं।''

(مسند احمد، مسند الانصار/حدیث ابی ذر غفاری، رقم ۲۱۶۱۲، ج۸، ص۱۳۳)

(125)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नमाज़ एक बेहतरीन अ़मल है जो इस में इज़ाफ़ा कर सके तो वोह ज़रूर करे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب فضل الصلوۃ، رقم ۳۵۰۵، ج۲، ص۵۱۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह अल मुज़्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''ऐ इब्ने आदम! तेरी मिस्ल कौन है? जो जब चाहे अपने रब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में बिग़ैर इजाज़त ह़ाज़िर हो जाए।'' उन से पूछा गया, ''वोह किस त़रह़?'' तो फ़रमाया, ''तुम पूरा वुज़ू कर के अपनी मेह़राब (जाए नमाज़) में दाख़िल हो जाते हो तो तुम उस वक़्त किसी तरजुमान के बिग़ैर अपने रब عَزَّ وَجَلَّ के साथ हम कलाम हो जाते हो।''

✡ ===✡ ===✡ ===✡

नमाज़ में रुकूअ़ और सज्दा करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया,

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (پ۱۷،الحج:۷۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो रुकूअ़ और सज्दा करो और अपने रब की बन्दगी करो और भले काम करो और इस उम्मीद पर कि तुम्हें छुटकारा हो।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया,......

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ (پ۲۶،الفتح:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुहम्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल तो उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते सज्दे में गिरते, **अल्लाह** का फ़ज़्लो रिज़ा चाहते उन की अ़लामत उन के चेहरों में है सज्दों के निशान से।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(126)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''तुम में से जो मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ के साथ दो रक्अ़तें अदा करे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी।'' (صحیح مسلم،کتاب الطھارۃ،باب الذکر مستحب عقب الوضوء،رقم ۲۳۴،ص۱۴۴)

(127)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के क़रीब से गुज़रे तो दरयाफ़्त फ़रमाया, ''येह किस की क़ब्र है ?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''फ़ुलां शख़्स की।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''(इस वक़्त) इस के नज़्दीक दो रक्अ़त नमाज़ तुम्हारी बक़िय्या सारी दुन्या से ज़ियादा मह़बूब है।'' (مجمع الزوائد،کتاب الصلوۃ،باب فضل الصلوۃ،رقم ۳۵۰۶،ج۲،ص۵۱۶)

(128)...... ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के म-रज़े मौत में उन से मिलने के लिये ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''ऐ भतीजे ! तुम्हारा इस शहर में कैसे आना हुवा ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं सिर्फ़ उस तअ़ल्लुक़ के सबब ह़ाज़िर हुवा हूं जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मेरे वालिद के साथ था।'' तो उन्हों ने फ़रमाया, ''इस घड़ी (या'नी म-रज़ुल मौत में) झूट बोलना बहुत बुरा है।'' (फिर फ़रमाया) मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना ''जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया फिर दो या चार रक्अ़तें अदा कीं (यहां रावी को शक है कि दो फ़रमाया था या चार) और ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से रुकूअ़ व सुजूद किये फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत त़लब की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।'' (مسند احمد،بقیۃ حدیث ابی الدرداء،رقم ۲۷۶۱۶،ج۱۰،ص۴۳۰)

(129)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'दान बिन अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरी मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से हुई तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि ''मैं कौन सा ऐसा अ़मल करूं जिस की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दे या (येह कहा कि) मुझे उस अ़मल के बारे में बताइये जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ज़ियादा पसन्द हो ?'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ख़ामोश हो गए । मैं ने दोबारा येही सुवाल किया लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फिर भी ख़ामोश रहे । जब मैं ने तीसरी मरतबा अ़र्ज़ किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया, ''जब मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येही सुवाल किया था तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि ''कसरत से सज्दे किया करो क्यूं कि तुम जब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सज्दा करोगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा एक द-रजा बुलन्द फ़रमा देगा और इस के बदले तुम्हारी एक ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा देगा ।''

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب فضل السجود والحث علیہ، رقم ۴۸۸،ص ۲۵۲)

(130)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को एक मरतबा सज्दा करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस के सबब सज्दा करने वाले के लिये एक नेकी लिखता है और उस का एक गुनाह मिटा देता है और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमा देता है, लिहाज़ा कसरत से सज्दे किया करो ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فی کثرۃ السجود، رقم ۱۴۲۴، ج۲، ص ۱۸۲)

(131)...... ह़ज़रते सय्यिदुना रबीआ़ बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं रात में नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर रहता और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में वुज़ू और ह़ाजत के लिये पानी पेश किया करता था तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''मुझ से मांगो ।'' तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त का त़लब गार हूं ।'' इर्शाद फ़रमाया, ''कुछ और भी चाहिये ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''बस येही काफ़ी है ।'' फ़रमाया, ''कस्रते सुजूद से मेरी मदद करो ।''

त़-बरानी की रिवायत इस से त़वील है उस के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि मैं दिन में रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत किया करता था और जब रात होती तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस दौलत कदे के दरवाज़े को रात का ठिकाना बना लेता और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ुरबत में रात बसर करता और हमेशा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को سُبۡحَانَ اللّٰہِ ,سُبۡحَانَ اللّٰہِ سُبۡحَانَ رَبِّیۡ कहते हुए सुनता यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तवक्क़ुफ़ फ़रमाते या मुझ पर नींद ग़ालिब आ जाया करती और मैं सो जाता एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ रबीआ़ ! मुझ से मांगो ताकि में तुम्हें कुछ अ़त़ा करूं ।'' मैं ने अ़र्ज़ किया ''मुझे कुछ मोहलत दीजिये ताकि मैं कुछ सोच सकूं ।'' फिर मैं ने सोचा कि दुन्या फ़ानी है और ख़त्म होने वाली है, लिहाज़ा मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से

सुवाल करता हूं कि आप अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरे लिये जहन्नम से नजात और जन्नत में दाख़िले की दुआ फ़रमाएं।''

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हें इस बात के सुवाल का किस ने कहा ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मुझ से किसी ने नहीं कहा लेकिन मैं ने जान लिया कि दुन्या फ़ानी और ख़त्म होने वाली है और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में वोह मरतबा ह़ासिल है जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ही के लाइक़ है। लिहाज़ा मैं ने चाहा कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ करें।'' तो आप ने फ़रमाया, ''मैं ऐसा करूंगा जब कि तुम कस्रते सुजूद से मेरी मदद करो।'' (صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب فضل السجود والحث علیہ، رقم ۴۸۹، ص۲۵۲)

(132)...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बन्दे की कोई ह़ालत ऐसी नहीं जो सज्दे में बन्दे के चेहरे को मिट्टी में लिथड़े हुए देखने से ज़ियादा मह़बूब हो।'' (طبرانی اوسط، رقم ۶۰۷۵، ج۴، ص۳۰۸)

(133)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ''ऐ अबू फ़ातिमा ! अगर तुम मुझ से मिलना चाहते हो तो कसरत से सज्दे किया करो।''

इब्ने माजह की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْکَ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जिसे मैं किया करूं और उस पर साबित क़दमी इख़्तियार करूं ?'' फ़रमाया, ''सज्दे किया करो क्यूं कि जब तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को एक सज्दा करोगे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के सबब तुम्हारा एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और तुम्हारा एक गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ والسنۃ فیھا، رقم ۱۴۲۲، ج۲، ص۱۸۱)

(134)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को एक सज्दा करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखेगा और उस की एक ख़त़ा मिटा देगा और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा।'' (مسند احمد، مسند الانصار/احادیث ابی ذر غفاری، رقم ۲۱۳۷۵، ج۸، ص۷۱)

(135)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सब से ज़ियादा क़रीब सज्दे की ह़ालत में होता है, लिहाज़ा सज्दे में कसरत से दुआ किया करो।''

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب مایقول فی الرکوع والسجود، رقم ۴۸۲، ص۲۵۰)

नमाज़ में त़वील क़ियाम करने का सवाब

(136)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि ''कौन सी नमाज़ सब से अफ़्ज़ल है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''त़वील क़ियाम वाली नमाज़ ।'' (صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین، قصرھا، باب افضل الصلوۃ طول القنوت، رقم ۷۵۶، ص ۳۸۰)

(137)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ुब्शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया कि ''कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''त़वील क़ियाम ।''

(سنن ابی داؤد، کتاب التطوع، باب افتتاح صلاۃ اللیل برکعتین، رقم ۱۳۲۵، ج ۲، ص ۵۳)

वज़ाह़त :

इस से क़ब्ल कसरत से सुजूद के फ़ज़ाइल वाली रिवायात भी गुज़र चुकी हैं बा'ज़ उ़-लमा का कहना है कि दिन के वक़्त सज्दे कसरत से करना अफ़्ज़ल हैं जब कि रात के वक़्त त़वील क़ियाम करना अफ़्ज़ल है जैसा कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नमाज़ के त़रीक़े से मु-तअ़ल्लिक़ रिवायात में आया है । इस त़रह़ दोनों त़रह़ की रिवायात में तत़्बीक़ या'नी मुता़-बक़त भी हो जाती है । وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

फ़र्ज़ नमाज़ों पर इस्तिक़ामत का सवाब

क़ुरआने अज़ीम में कई मक़ामात पर फ़र्ज़ नमाज़ों का सवाब बयान किया गया है चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) وَالْمُقِیْمِیْنَ الصَّلٰوۃَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّکٰوۃَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰہِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓئِکَ سَنُؤْتِیْهِمْ اَجْرًا عَظِیْمًا۝ (پ۶،النساء:۱۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और अल्लाह और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अन्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

(2) اِنِّیْ مَعَکُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوۃَ وَاٰتَیْتُمُ الزَّکٰوۃَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِیْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا لَّاُکَفِّرَنَّ عَنْکُمْ سَیِّاٰتِکُمْ وَلَاُدْخِلَنَّکُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ (پ۶،المائدہ:۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मैं तुम्हारे साथ हूं ज़रूर अगर तुम नमाज़ क़ाइम रखो और ज़कात दो और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ और उन की ता'ज़ीम करो और अल्लाह को क़र्ज़े ह़सन दो बेशक मैं तुम्हारे गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर तुम्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां।

(3) اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اِذَا ذُکِرَ اللّٰہُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِیَتْ عَلَیْهِمْ اٰیٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِیْمَانًا وَّعَلٰی رَبِّهِمْ یَتَوَکَّلُوْنَ۝ الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوۃَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ۝ اُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَۃٌ وَّرِزْقٌ کَرِیْمٌ۝ (پ۹،الانفال:۲،۳،۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले वोही हैं कि जब अल्लाह याद किया जाए उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ीं जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये द-रजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी।

(4) وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِکَ ذِکْرٰی لِلذّٰکِرِیْنَ (پ۱۲،ھود:۱۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के ह़िस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीह़त है नसीह़त मानने वालों को।

(5) وَالَّذِیْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْہِ رَبِّہِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوۃَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰہُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَۃً وَّیَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَۃِ السَّیِّئَۃَ اُولٰٓئِکَ لَہُمْ عُقْبَی الدَّارِ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ یَّدْخُلُوْنَہَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِہِمْ وَاَزْوَاجِہِمْ وَذُرِّیّٰتِہِمْ وَالْمَلٰٓئِکَۃُ یَدْخُلُوْنَ عَلَیْہِمْ مِّنْ کُلِّ بَابٍ ۝ سَلٰمٌ عَلَیْکُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَی الدَّارِ ۝ (پ۱۳،الرعد:۲۲،۲۳،۲۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जिन्हों ने सब्र किया अपने रब की रिज़ा चाहने को और नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया और बुराई के बदले भलाई कर के टालते हैं उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है बसने के बाग़ जिन में वोह दाख़िल होंगे और जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में और फ़िरिश्ते हर दरवाज़े से उन पर येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।

(6) قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِیْنَ ہُمْ فِیْ صَلَاتِہِمْ خٰشِعُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ ہُمْ عَلٰی صَلَوٰتِہِمْ یُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ الَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ ہُمْ فِیْہَا خٰلِدُوْنَ ۝ (پ۱۸،المومنون:۱،۲،۹،۱۰،۱۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़-गिड़ाते हैं। और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे वोह उस में हमेशा रहेंगे।

(7) وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوۃَ وَاٰتُوا الزَّکٰوۃَ وَاَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّکُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝ (پ۱۸،النور:۵۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और नमाज़ बरपा रखो और ज़कात दो और रसूल की फ़रमां बरदारी करो इस उम्मीद पर कि तुम पर रह़्म हो।

(8) اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْہٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ ؕ (پ۲۱،العنکبوت:۴۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है बे ह़याई और बुरी बात से।

(9) وَالَّذِیْنَ ہُمْ عَلٰی صَلَاتِہِمْ یُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِکَ فِیْ جَنّٰتٍ مُّکْرَمُوْنَ ۝ (پ۲۹،المعارج:۳۴۔۳۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जो अपनी नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करते हैं येह हैं जिन का बाग़ों में ए'ज़ाज़ होगा।

इस बारे में अह़ादीसे मुबा-रका :

(138)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर

अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसे अ़मल के बारे में बताइये जिसे करने के बा'द मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इ़बादत करो कि किसी को उस का शरीक न ठहराओ और फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करो और ज़कात अदा करो और र-मज़ान के रोज़े रखो।'' तो उस ने अ़र्ज़ किया मुझे उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है मैं इस पर ज़ियादती न करूंगा। जब वोह लौट गया तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किसी जन्नती को देखना चाहे वोह इस शख़्स को देख ले।'' (صحیح بخاری، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، رقم ۱۳۹۷، ج۱، ص۴۷۲)

(139)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं तो जो इन्हें अदा करेगा और इन के ह़क़ को हलका जानते हुए इन्हें ज़ाएअ़ न करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का उस से अ़ह्द है कि वोह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इन्हें अदा नहीं करेगा उस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास कोई अ़ह्द नहीं अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे चाहे तो उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए।''

अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, जो इन के लिये बेहतर त़रीक़े से वुज़ू करे और इन्हें इन के वक़्त में अदा करे और इन के रुकूअ़ व सुजूद, ख़ुशूअ़ के साथ पूरे करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे और जो इन्हें अदा नहीं करेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे उस के लिये कुछ नहीं चाहे तो उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे।''

(سنن ابوداود، کتاب الصلوۃ، باب المحافظۃ علی وقت الصلوات، رقم ۴۲۵، ج۱، ص۱۷۶)

(140)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सब से अफ़्ज़ल अ़मल के बारे में सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''नमाज़।'' उस ने पूछा, ''इस के बा'द ?'' फ़रमाया ''नमाज़।'' उस ने अ़र्ज़ किया ''इस के बा'द ?'' फ़रमाया ''नमाज़।'' उस ने अ़र्ज़ किया ''इस के बा'द ?'' फ़रमाया ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना।'' (مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۶۱۳، ج۲، ص۵۸۰)

(141)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन हमें ख़ुत़्बा देते हुए तीन मरतबा इर्शाद फ़रमाया, ''क़सम है उस ज़ात की जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है !'' येह फ़रमाने के बा'द आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़मीन पर निगाहें जमा दीं तो हम में से हर शख़्स रोते हुए ज़मीन की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा ह़ालां कि हम नहीं जानते थे कि रसूलुल्लाह

صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़सम क्यूं उठाई है ? फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सर उठाया तो आप के चेहरे पर ऐसी मुसर्रत थी जो हमें सुर्ख़ ऊंटों से ज़ियादा पसन्द थी। फिर फ़रमाया ''जो शख़्स पांच नमाज़ें अदा करे और र-मज़ान के रोज़े रखे और अपने माल से ज़कात निकाले और सात कबीरा गुनाहों से बचता रहे उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस से कहा जाता है कि सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ।'' (سنن نسائی، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، ج۵،ص۸)

(142)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ा और उसे हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया, ''ऐ अबू उ़स्मान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने ऐसा क्यूं किया ?'' मैं ने पूछा कि ''आप ने ऐसा क्यूं किया ?'' तो फ़रमाया, ''एक मरतबा मैं रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक दरख़्त के नीचे खड़ा था तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ किया और उस दरख़्त की एक ख़ुश्क टहनी को पकड़ कर हिलाया यहां तक कि उस के पत्ते झड़ गए फिर फ़रमाया, ''ऐ सलमान ! क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं ने येह अ़मल क्यूं किया ?

मैं ने अ़र्ज़ किया, ''आप ने ऐसा क्यूं किया ?'' इर्शाद फ़रमाया ''बेशक जब मुसल्मान अच्छी त़रह़ वुज़ू करता है और पांच नमाज़ें अदा करता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जिस त़रह़ येह पत्ते झड़ जाते हैं।'' फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका पढ़ी,

وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِکَ ذِکْرٰی لِلذّٰکِرِیْنَ ۝ (پ۱۲،ھود:۱۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के ह़िस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं येह नसीह़त है नसीह़त मानने वालों को।

(مسند احمد، حدیث سلمان فارسی، رقم ۲۳۷۶۸، ج۹،ص۱۷۸)

(143)...... हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुसल्मान जब नमाज़ पढ़ता है तो उस के गुनाह उस के सर पर रख दिये जाते हैं जब भी वोह सज्दा करता है उस के गुनाह झड़ने लगते हैं लिहाज़ा जब वोह अपनी नमाज़ से फ़ारिग़ होता है तो उस के तमाम गुनाह झड़ चुके होते हैं।''

(طبرانی کبیر، رقم ۶۱۲۵، ج۶،ص۲۵۰)

(144)...... हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि दो भाई थे, उन में से एक भाई का दूसरे भाई की वफ़ात से चालीस रातें पहले इन्तिक़ाल हो गया। उन में से पहले मरने वाले का ज़िक्र सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में किया गया और उस की फ़ज़ीलत बयान की गई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''क्या दूसरा भाई मुसल्मान नहीं था ?'' तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं और उस में कोई बुराई नहीं

थी।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''तुम्हें क्या मा'लूम कि उस की नमाज़ ने उसे कहां पहुंचा दिया ? नमाज़ की मिसाल ऐसी है कि तुम में से किसी के दरवाज़े पर मीठे पानी की बड़ी नहर हो जिस में वोह रोज़ाना पांच मरतबा ग़ोते लगाए तो तुम्हारा क्या ख़याल है उस के बदन पर कोई मैल बाक़ी रहेगी ? तुम्हें क्या मा'लूम कि उस की नमाज़ ने उसे कहां तक पहुंचा दिया ?''

(مسند احمد،مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص،رقم ۱۵۳۴،ج۱،ص۳۷۵)

(145)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि कुज़ाआ के क़बीले बल्ली के दो भाई नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए। उन में से एक शहीद हो गया और दूसरा एक साल तक ज़िन्दा रहा। हज़रते सय्यिदुना तल्हा बिन उबैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि ''मैं ने ख़्वाब में देखा की बा'द में फ़ौत होने वाले भाई को अपने शहीद भाई से पहले जन्नत में दाख़िल कर दिया गया है।'' मुझे इस पर बड़ा तअज्जुब हुवा सुब्ह हुई तो येह बात सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अर्ज़ की गई तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या उस ने शहीद (भाई) के बा'द र-मज़ान के रोज़े नहीं रखे ? और फिर छ हज़ार रक्अतें नहीं पढ़ीं ? और साल में इतनी इतनी रक्अतें अदा नहीं कीं ?'' इब्ने हब्बान की रिवायत में येह भी है कि ''तो फिर इन दोनों के दरमियान ज़मीन व आस्मान की दूरी क्यूं न हो।''

(مسند احمد،مسند ابی اسحاق ابی محمد طلحہ بن عبد اللہ،رقم ۱۴۰۳،ج۱،ص۳۴۴بتغیر قلیل)

(146)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि, ''तुम्हारा क्या ख़याल है अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर नहर हो और वोह रोज़ाना पांच मरतबा उस में गुस्ल करे तो क्या उस के जिस्म पर मैल बचेगा ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया कि ''उस के बदन पर कुछ मैल न बचेगा।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''येही मिसाल इन पांच नमाज़ों की है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन के सबब गुनाहों को मिटा देता है।''

(صحیح بخاری،کتاب مواقیت الصلوۃ،باب الصلوۃ الخمس کفارۃ،رقم ۵۲۸،ج۱،ص۱۹۶)

(147)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''पांच नमाज़ें दरमियान के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हैं।'' फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारा क्या ख़याल है अगर कोई शख़्स किसी जगह काम में मसरूफ़ हो और उस जगह और उस के घर के दरमियान पांच नहरें बहती हों जब वोह अपने काम करने की जगह पर आए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मशिय्यत से वोह कोई काम करे और इस दौरान उस पर गर्द पड़े या उसे पसीना आए फिर जब भी वोह किसी नहर से गुज़रे उस में नहा ले तो क्या गर्द में से कुछ बाक़ी बचेगा ?

(फिर ख़ुद ही इर्शाद फ़रमाया) येही नमाज़ की मिसाल है जब भी कोई बन्दा गुनाह करे फिर **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगे और मग़िफ़रत चाहे तो उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।'' (طبرانی اوسط، رقم ۱۹۸، ج۱،ص۷۱)

(148)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''पांच नमाज़ें और नमाज़े जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक दरमियान के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हैं जब तक कबीरा गुनाह न किये जाएं।'' (صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب الصلوۃ الخمس الخ ,رقم ۲۳۳، ج،ص۱۴۴)

(149)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस मुसल्मान पर फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आए और वोह नमाज़ के लिये अच्छे त़रीक़े से वुज़ू करे और उसे ख़ुशूओ़ ख़ुज़ूअ़ के साथ अदा करे तो येह नमाज़ उस के पिछले गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगी जब तक कबीरा गुनाह का इरतिकाब न करे, और येह अ़मल सारी ज़िन्दगी जारी रहेगा या'नी वोह नमाज़ उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बनती रहेगी।''

(صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء والصلوۃ عقبہ، رقم ۲۲۸، ص۱۴۲)

(150)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''(अगर) तुम से मुसल्सल गुनाह होते रहें लेकिन जब तुम फ़ज्र की नमाज़ अदा करोगे तो वोह तुम्हारे उन गुनाहों को धो देगी, इस के बा'द फिर तुम से मुसल्सल गुनाहों का सुदूर होता रहे लेकिन जब ज़ोहर की नमाज़ अदा करोगे तो वोह तुम्हारे गुनाहों को धो देगी, इस के बा'द फिर गुनाह होते रहें लेकिन जब अ़स्र की नमाज़ अदा करोगे तो वोह तुम्हारे गुनाहों को धो देगी, इस के बा'द फिर गुनाह मुसल्सल होते रहें लेकिन जब तुम मग़रिब की नमाज़ अदा करोगे तो वोह तुम्हारे गुनाहों को धो देगी, इस के बा'द भी तुम से गुनाहों का सुदूर होता रहे लेकिन जब तुम इ़शा की नमाज़ अदा करोगे तो वोह तुम्हारे गुनाहों को धो देगी। फिर तुम सो जाओगे तो बेदार होने तक तुम्हारा कोई गुनाह न लिखा जाएगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب فضل الصلوۃ وحقنھا للدم، رقم ۱۶۵۸، ج۲،ص۳۳)

(151)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हर नमाज़ के वक़्त एक मुनादी भेजा जाता है वोह कहता है : ''ऐ इब्ने आदम ! उठ खड़े हो और जो आग तुम ने अपने लिये जलाई है उसे बुझा दो।'' पस लोग उठ खड़े होते हैं और अच्छी त़रह़

तहारत हासिल करते हैं तो उन के दो नमाज़ों के दरमियान के गुनाह मिटा दिये जाते हैं, फिर जब नमाज़े अस्र का वक़्त होता है तो इसी तरह निदा की जाती है, मग़रिब के वक़्त भी येही निदा होती है और जब इशा का वक़्त होता है तो इसी तरह निदा होती है, फिर लोग सो जाते हैं तो कोई ख़ैर में रात गुज़ारता है और कोई शर में रात गुज़ारता है।'' (طبرانی کبیر،رقم ۱۰۲۵۲،ج۱۰،ص۱۴۱)

(152)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता हर नमाज़ के वक़्त निदा देता है कि ऐ बनी आदम ! अपनी जलाई हुई आग के पास आओ और इसे बुझा दो।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب فضل الصلوۃ وحفظھا للدم رقم ۱۶۵۹،ج۲،ص۳۳)

(153)...... हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन मुर्रह जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप क्या फ़रमाते हैं कि अगर मैं गवाही दूं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और आप, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم हैं और मैं पांचों नमाज़ें अदा करूं और ज़कात अदा करूं और र-मज़ान के रोज़े रखूं और इस में क़ियाम करूं तो मेरा शुमार किन लोगों में होगा ?'' तो इर्शाद फ़रमाया ''सिद्दीक़ीन या शु-हदा में।'' (صحیح ابن حبان، باب فضل رمضان الخ، رقم ۲۹،ج۵،ص۱۸۴)

(154)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हम हज़रते उस्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ बैठे हुए थे कि अज़ान का वक़्त हो गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वुज़ू के लिये पानी मांगा। मेरा ख़याल है कि वोह पानी एक मद (एक पैमाना) की मिक़्दार में था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वुज़ू किया फिर फ़रमाया, ''मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी तरह वुज़ू करते हुए देखा तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया,

''जो इस तरह वुज़ू करे फिर ज़ोहर की नमाज़ अदा करे तो उस के ज़ोहर और फ़ज्र के दरमियान के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे, फिर अस्र की नमाज़ अदा करे तो उस केअस्र और ज़ोहर के दरमियान के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे, फिर मग़रिब की नमाज़ अदा करे तो उस के अस्र और मग़रिब के दरमियान के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे, फिर इशा की नमाज़ पढ़े तो उस के इशा और मग़रिब के दरमियान के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं, फिर शायद वोह अपनी रात लैट कर गुज़ारे, और अगर वोह बेदार हो कर वुज़ू कर के सुब्ह की नमाज़ पढ़ेगा तो फ़ज्र व इशा के दरमियान के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे, येह नमाज़ें वोही ह-सनात (या'नी नेकियां) हैं जो बुराई को मिटा देती हैं।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया ''ऐ उस्मान ! رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह तो ह-सनात हैं बाक़ियात से क्या मुराद है ?'' फ़रमाया वोह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہ और سُبْحٰنَ اللہ और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और اَللّٰہُ اَکْبَرُ और لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ हैं।'' (مسند احمد، مسند عثمان بن عفان، رقم ۵۱۳،ج۱،ص۱۵۴)

(155)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते कि ''हर नमाज़ पिछले गुनाहों को मिटा देती है।'' (مسند احمد، حدیث ابی ایوب الانصاری، رقم ۲۳۵۶۲، ج۹، ص۱۳۱)

(156)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मुझ पर ह़द (या'नी इस्लामी सज़ा) लाज़िम हो गई है, लिहाज़ा मुझ पर ह़द क़ाइम फ़रमाएं।'' इसी अस्ना में नमाज़ का वक़्त हो गया तो उस शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ अदा की। जब सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमा ली तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मुझ पर ह़द लाज़िम हो गई है लिहाज़ा किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हुक्म मुझ पर क़ाइम कीजिये।'' तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तुम ने हमारे साथ नमाज़ पढ़ी है?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां।'' फ़रमाया, ''तुम्हारी मग़्फ़िरत हो गई।'' (صحیح بخاری، کتاب المحاربین من اھل الکفر والردۃ، باب اذا اقر بالحد الخ، رقم ۶۸۲۳، ج۴، ص۳۴۴)

वज़ाह़त :

इस ह़दीसे मुबा-रका में ह़द लाज़िम होने से मुराद येह है कि मैं ऐसे गुनाह का मुर-तकिब हो गया हूं जो ता'ज़ीर को वाजिब करता है येह मुराद हरगिज़ नहीं कि उस शख़्स ने मूजिबे ह़द गुनाह म-सलन ज़िना किया या शराब नोशी वग़ैरा का इरतिकाब किया था क्यूं कि इन गुनाहों को नमाज़ नहीं मिटा सकती और न ही ह़ाकिमे इस्लाम को ऐसे शख़्स को छोड़ने की इजाज़त है और इस की वज़ाह़त दीगर अह़ादीस से भी होती है। وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

(157)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि एक शख़्स किसी औ़रत का बोसा ले बैठा फिर वोह सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अपने गुनाह का ए'तिराफ़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई,

وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ (پ۱۲، ھود:۱۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के ह़िस्सों में बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।

तो उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह आयत किस के लिये नाज़िल हुई है?'' फ़रमाया, ''मेरी सारी उम्मत के लिये।'' (صحیح بخاری، کتاب مواقیت الصلوۃ، باب الصلوۃ کفارۃ، رقم ۵۲۶، ج۱، ص۱۹۶)

(158)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''पांच चीज़ें ऐसी हैं जो इन्हें ईमान की ह़ालत में अदा करेगा जन्नत में दाख़िल होगा, जो पांच नमाज़ों के वुज़ू, रुकूअ़, सुजूद और अवक़ात का लिह़ाज़ रखे और र-मज़ान के रोज़े रखे और अगर इस्तिताअ़त रखता हो तो बैतुल्लाह का ह़ज करे और ख़ुशदिली के साथ ज़कात और अमानत अदा करे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या

रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अमानत की अदाएगी से क्या मुराद है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''जनाबत से गुस्ल करना, **अल्लाह** तआ़ला ने इब्ने आदम को इस के दीन में गुस्ले जनाबत के इलावा किसी चीज़ में रुख़्सत अ़ता नहीं फ़रमाई ।'' (مجمع الزوائد، کتاب الایمان، باب فیمابنی علیہ الاسلام، رقم ۱۳۹، ج ۱، ص ۲۰۴)

(159)...... कातिबे वह्य ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो पाबन्दी से पांचों नमाज़ें अदा करे और इन के रुकूअ़ व सुजूद और अवक़ात का लिह़ाज़ रखे और येह यक़ीन करे कि येह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ह़क़ हैं वोह जन्नत में दाख़िल होगा या उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी या येह फ़रमाया कि उस पर जहन्नम ह़राम है ।'' (مسند احمد، رقم ۱۸۳۷۳، ۱۸۳۷۴، ج ۶، ص ۳۷۲)

(160)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से फ़रमाया, ''तुम मुझे छ चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं ।'' मैं ने अ़र्ज़ किया ''वोह छ चीज़ें कौन सी हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''नमाज़, ज़कात, अमानत, शर्मगाह, पेट और ज़बान ।'' (طبرانی اوسط، رقم ۴۹۲۵، ج ۳، ص ۳۹۶)

(161)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि दिन और रात में कुछ फ़िरिश्ते तुम्हें तलाश करते हैं और वोह नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र में इकठ्ठे होते हैं और फिर जब तुम्हारे साथ रात गुज़ारने वाले फ़िरिश्ते ऊपर चले जाते हैं तो उन का रब عَزَّ وَجَلَّ उन से पूछता है ह़ालां कि वोह तुम्हें उन से ज़ियादा जानता है, ''तुम ने मेरे बन्दों को किस ह़ाल में छोड़ा ?'' तो वोह अ़र्ज़ करते हैं कि ''जब हम उन से जुदा हुए तो वोह नमाज़ पढ़ रहे थे और जब हम उन के पास पहुंचे तो उस वक़्त भी वोह नमाज़ पढ़ रहे थे ।'' जब कि इब्ने ख़ुज़ैमा की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि (फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं) ''ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! क़ियामत के दिन उन की मग़्फ़िरत फ़रमा देना ।''

(صحیح بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الملائکۃ، رقم ۳۲۲۳، ج ۲، ص ۳۸۵)

(162)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़म्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने सूरज के तुलूअ़ और ग़ुरूब होने से पहले नमाज़ अदा की या'नी जिस ने फ़ज्र और अ़स्र की नमाज़ अदा की वोह हरगिज़ जहन्नम में दाख़िल न होगा ।'' (صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ، باب فضل صلاتی الصبح والعصر الخ، رقم ۶، ص ۳۱۸)

(163)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने फ़ज्र की नमाज़ अदा की वोह

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमान में है, लिहाज़ा कोई शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमान में ख़लल न डाले क्यूं कि जो **अल्लाह** तआला की अमान में ख़लल डालेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुंह के बल औंधा कर के जहन्नम में डाल देगा।'' (صحیح مسلم،کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ،فضل صلوۃ العشاء والصبح فی جماعۃ،رقم ۶۵۷،ص۳۲۹)

(164)...... हज़रते सय्यिदुना मुआविया बिन हकम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह नमाज़ या'नी नमाज़े अ़स्र तुम से पिछले लोगों पर पेश की गई तो उन्हों ने इसे ज़ाएअ़ कर दिया लिहाज़ा जो इसे पाबन्दी से अदा करेगा उसे दुगना सवाब मिलेगा।'' (صحیح مسلم،کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا،باب الاوقات،رقم ۸۳۰،ص۴۱۴)

(165)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन नमाज़ का तज़्किरा करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ''जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करेगा तो येह उस के लिये क़ियामत के दिन नूर, बुरहान और नजात का सबब बनेगी और जो इसे पाबन्दी से अदा नहीं करेगा उस के लिये न तो नूर होगा, न बुरहान और न ही नजात और वोह क़ियामत के दिन क़ारून, फ़िरऔ़न, हामान और उबय्य बिन ख़लफ़ के साथ होगा।''

(مسند احمد،مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص،رقم ۶۵۸۷،ج۲،ص۵۷۴)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने का सवाब

(166)...... ह़ज़रते इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया ''कौन सा अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा है ?'' फ़रमाया, ''वक़्त पर नमाज़ पढ़ना।'' (صحیح بخاری، کتاب التوحید، رقم ۷۵۳۴، ج۴، ص۵۸۹ بتغیر قلیل)

(167)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे फ़रवह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا उन औ़रतों में से हैं जिन्हों ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त की थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया ''कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है ?'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''वक़्त पर नमाज़ पढ़ना।''

(سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب المحافظۃ علی وقت الصلوات، رقم ۴۲۶، ج۱، ص۱۸۶)

(168)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इयाज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र की पाबन्दी किया करो और अपनी नमाज़ें अव्वल वक़्त में अदा किया करो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें दुगना सवाब अ़ता फ़रमाएगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۰۱۳، ج۱۷، ص۳۶۹)

(169)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अव्वल वक़्त को आख़िरी वक़्त पर ऐसी फ़ज़ीलत ह़ासिल है जैसी आख़िरत को दुन्या पर फ़ज़ीलत ह़ासिल है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصلوۃ، الترغیب فی الصلوۃ فی اول وقتھا، رقم ۵، ج۱، ص۱۵۶)

(170)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नमाज़ का अव्वल वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है और आख़िरी वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से रुख़्सत है।''

(سنن ترمذی، کتاب ابواب الصلوۃ، باب ما جاء فی الوقت الاول الخ، رقم ۱۷۲، ج۱، ص۲۱۷)

(171)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं गवाही देता हूं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, जो इन के लिये अह़्सन त़रीक़े से वुज़ू करे और इन्हें इन के वक़्त में अदा करे और इन के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब का लिह़ाज़ रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे और जो ऐसा न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे उस के लिये कुछ नहीं अगर चाहे तो उसे मुआ़फ़ फ़रमा दे और चाहे तो उसे अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाए।''

(سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب المحافظۃ علی وقت الصلوۃ، رقم ۴۲۵، ج۱، ص۱۸۶)

(172)...... हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मैं ने तुम्हारी उम्मत पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं और इन के बारे में अपने आप से अ़हद किया है कि जो इन (या'नी नमाज़ों) को पाबन्दी के साथ इन के वक़्त में अदा करेगा उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा और जो इन को पाबन्दी के साथ अदा न करेगा उस के लिये मेरे पास कोई अ़हद नहीं।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلوۃ، باب المحافظۃ علی وقت الصلوۃ، رقم ۴۳۰، ج۱، ص۱۸۸)

(173)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के क़रीब से गुज़रे तो फ़रमाया, ''क्या तुम जानते हो कि तुम्हारा रब तबा-र-क व तआ़ला क्या फ़रमाता है ?'' सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।'' सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा येही सुवाल किया फिर फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मुझे अपनी इ़ज़्ज़त और अपने जलाल की क़सम ! जो भी नमाज़ को उस के वक़्त में अदा करेगा मैं उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाऊंगा और जो इन को वक़्त गुज़ार कर अदा करेगा अगर मैं चाहूंगा तो उस पर रह़म फ़रमाऊंगा और अगर चाहूंगा तो उसे अ़ज़ाब दूंगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۰۵۵۵، ج۱۰، ص۲۲۸)

(174)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो नमाज़ों को अपने वक़्त में अदा करे और नमाज़ के लिये कामिल वुज़ू करे और इस के क़ियाम, रुकूअ़ और सुजूद को ख़ुशूअ़ो ख़ुज़ूअ़ से अदा करे तो उस की नमाज़ सफ़ेद रोशनी की त़रह़ चमकती होगी और कहेगी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी इसी त़रह़ हि़फ़ाज़त फ़रमाए जिस त़रह़ तूने मेरी हि़फ़ाज़त की और जो नमाज़ को बे वक़्त अदा करे और इस के लिये कामिल वुज़ू न करे और इस के रुकूअ़ व ख़ुशूअ़ और सुजूद को पूरा न करे तो वोह उस से इस ह़ाल में जुदा होगी कि काली सियाह होगी और कहती होगी कि **अल्लाह** तआ़ला तुझे बरबाद करे जैसा कि तूने मुझे बरबाद किया।''

(طبرانی اوسط، رقم ۳۰۹۵، ج۲، ص۲۲۷)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
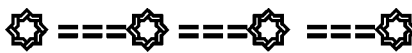
नमाज़ की इब्तिदा में पढ़े जाने वाले कलिमात का सवाब

(175)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि हम ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक शख़्स ने कहा, **اَللّٰہُ اَکْبَرُ کَبِیْرًا وَّالْحَمْدُلِلّٰہِ کَثِیْرًا وَّسُبْحَانَ اللّٰہِ بُکْرَۃً وَّاَصِیْلًا** तरजमा : **अल्लाह** बहुत बड़ा है और तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं और मैं सुब्हो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करता हूं।

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''येह कलिमात कहने वाला कौन है ?'' तो वोह शख़्स खड़ा हुवा और अ़र्ज़ किया, ''वोह मैं हूं या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''मुझे इन कलिमात से बहुत ख़ुशी हुई इन की वजह से आस्मान के दरवाज़े खोल दिये गए।'' ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''जब से मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना है मैं ने येह कलिमात पढ़ना कभी नहीं छोड़े।''

(صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ، باب مایقول بین تکبیرۃ الاحرام والقراءۃ، رقم ۶۰۱، ص ۳۰۲)

रुकूअ़ से उठते वक़्त पढ़े जाने वाले कलिमात का सवाब

(176)...... ह़ज़रते सय्यिदुना रिफ़ाआ़ बिन राफ़ेअ़ ज़ु-रक़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''हम ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़ अदा कर रहे थे। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रुकूअ़ से अपना सर उठाया तो سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ कहा। पीछे से एक शख़्स ने कहा, ''**رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا فِیْہِ**'' तरजमा : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं बे शुमार पाकीज़ा और ब-र-कतों वाली।''

जब सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ अदा फ़रमा ली तो दरयाफ़्त फ़रमाया, ''येह कलिमात कहने वाला कौन था ?'' उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''मैं हूं।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''मैं ने तीस से ज़ाइद फ़िरिश्तों को इन कलिमात को लिखने में सब्क़त करते हुए देखा।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب فضل اللّٰھم ربنا لک الحمد، رقم ۷۹۹، ج ۱، ص ۲۸۰)

(177)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब इमाम سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ कहे तो तुम **اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْد** कहा करो क्यूं कि जिस का क़ौल फ़िरिश्तों के क़ौल के मुवाफ़िक़ होगा उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।'' जब कि एक रिवायत में है कि رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْد कहा करो।

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب فضل اللّٰھم ربنا لک الحمد، رقم ۷۹۶، ج ۱، ص ۲۷۹)
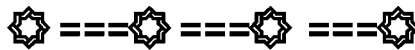
बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने का सवाब

(178)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बा जमाअ़त नमाज़ अदा करना तन्हा नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस द-रजे अफ़्ज़ल है।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلوۃ الجماعۃ، رقم ۶۴۵، ج۱، ص۲۳۲)

(179)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मर्द का जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करना उस के अपने घर और बाज़ार में नमाज़ अदा करने से पच्चीस द-रजे अफ़्ज़ल है, और इस की वजह येह है कि जब वोह अच्छे त़रीक़े से वुज़ू करता है फिर मस्जिद की त़रफ़ निकलता है और उस की निय्यत सिर्फ़ नमाज़ की होती है तो उस के हर क़दम पर **अल्लाह** तआ़ला उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है और उस की एक ख़त़ा को मुआ़फ़ फ़रमा देता है। जब वोह नमाज़ पढ़ लेता है तो जब तक अपनी जगह पर बैठा रहता है, फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं और कहते हैं, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रह़्म फ़रमा।'' और जब तक तुम में से कोई नमाज़ के इन्तिज़ार में होता है नमाज़ ही में होता है।'' एक और रिवायत में है कि ''जब तक वोह किसी को ईज़ा न पहुंचाए या कोई बात न करे तो फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते रहते हैं कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की तौबा क़बूल फ़रमा।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلوۃ الجماعۃ، رقم ۶۴۷، ج۱، ص۲۳۳)

वज़ाह़त :

इस ह़दीस से ज़ाहिर होता है कि अगर बन्दा फ़क़त़ नमाज़ के इरादे से अपने घर से निकले तो उसे येह अ़ज़ीम सवाब ह़ासिल होगा और अगर वोह घर से नमाज़ और किसी दूसरे मक़्सद के लिये निकले तो हर क़दम पर मिलने वाला सवाब उसे कामिल त़ौर पर ह़ासिल न होगा और येह बात भी ज़ाहिर होती है कि बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने से तन्हा नमाज़ के मुक़ाबले में कई गुना ज़ियादा सवाब ह़ासिल होता है। وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

(180)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मर्द का बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना उस के तन्हा नमाज़ पढ़ने से पच्चीस द-रजे अफ़्ज़ल है।''

(مسند احمد، مسند عبداللہ بن مسعود، رقم ۳۵۶۴، ج۲، ص۹)

(181)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जिसे येह पसन्द हो कि वोह क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुसलमान हो कर मिले उसे चाहिये कि जब अज़ान हो तो इन नमाज़ों को पाबन्दी से अदा कर लिया करे क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हिदायत वाले त़रीक़े अ़ता फ़रमाए हैं और बेशक येह नमाज़ें उन्ही में से हैं। अगर तुम अपने घर में नमाज़ पढ़ोगे जैसे उस नमाज़ से पीछे रहने वाले शख़्स ने अपने घर में नमाज़ अदा की तो बेशक तुम ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत को छोड़ दिया और अगर तुम अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे। जो शख़्स अच्छे त़रीक़े से वुज़ू करे फिर इन मस्जिदों में से किसी मस्जिद की त़रफ़ आए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर क़दम के बदले एक नेकी लिखेगा और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और उस का एक गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देगा। हम देखा करते थे कि खुला मुनाफ़िक़ ही जमाअ़त से पीछे रहता है और जब कि किसी आदमी को तो दो अफ़राद सहारा दे कर लाते और सफ़ में खड़ा कर देते।''

एक रिवायत में है कि ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें जो हिदायत वाले त़रीक़े सिखाए उन में से एक येह भी है कि जिस मस्जिद में अज़ान होती हो उस में नमाज़ पढ़ना भी सुन्नते मुअक्कदा है।'' (صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ، باب صلوۃ الجماعۃ من سنن الھدی، رقم ۶۵۴، ۳۲۸)

(182)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने कामिल वुज़ू किया और किसी फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी के लिये चला और नमाज़ बा जमाअ़त अदा की तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصلوۃ، الترغیب فی المشی الی المساجد، رقم ۶، ج۱، ص۱۳۰)

(183)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने वालों से ख़ुश होता है।''

(مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمر بن الخطاب، رقم ۵۱۱۲، ج۲، ص۳۰۹)

(184)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये चालीस दिन बा जमाअ़त तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ पढ़ेगा उस के लिये दो आज़ादियां लिखी जाएंगी, एक जहन्नम से दूसरी निफ़ाक़ से।'' (سنن ترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء فی فضل التکبیرۃ الاولی، رقم ۲۴۱، ج۱، ص۲۷۴)

(185)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि "जो चालीस दिन मस्जिद में बा जमाअ़त नमाज़ अदा करे और उस की इ़शा की नमाज़ से पहली रक्अ़त फ़ौत न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से नजात लिख देगा।" (سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب صلوۃ العشاء والفجر فی جماعۃ، رقم ۷۹۸، ج۱، ص۴۳۷)

(186)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई फिर इर्शाद फ़रमाया, "क्या फुलां शख़्स ह़ाज़िर है?" अ़र्ज़ किया गया "नहीं।" फिर पूछा, "क्या फुलां ह़ाज़िर है?" अ़र्ज़ किया गया, "नहीं।" फिर फ़रमाया, "बेशक फ़ज्र और इ़शा की नमाज़ें मुनाफ़िक़ीन पर सब से ज़ियादा भारी हैं, अगर जानते कि इन नमाज़ों में क्या है? तो इन नमाज़ों में ज़रूर ह़ाज़िर होते, अगर्चे घिसटते हुए आते, और बेशक पहली सफ़ मलाएका की सफ़ की मिस्ल है, और अगर तुम पहली सफ़ की फ़ज़ीलत जान लेते तो उसे ह़ासिल करने के लिये जल्द बाज़ी से काम लेते, और बेशक एक मुसल्मान के साथ नमाज़ पढ़ना तन्हा नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है और दो मुसल्मानों के साथ नमाज़ पढ़ना एक मुसल्मान के साथ नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है और जमाअ़त जितनी बड़ी हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उतनी ही ज़ियादा पसन्द है।"

(مسند احمد، مسند الانصار، حدیث ابی بصیر وابنہ عبداللہ بن ابی بصیر، رقم ۲۱۳۲۳، ج۸، ص۵۷)

(187)...... ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन अशैम अल्लैसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "दो शख़्सों का इस त़रह़ नमाज़ पढ़ना कि उन में से एक इमाम बने, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक चार अफ़राद के अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा नमाज़ पढ़ने से ज़ियादा पसन्दीदा है, और चार का बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना आठ अफ़राद के अलग अलग नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है, और आठ अफ़राद का बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ना सो अफ़राद के तन्हा नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।" (طبرانی کبیر، رقم ۷۳، ج۱۹، ص۳۶)

۞===۞===۞===۞
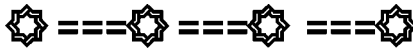
फ़ज्र और इशा बा जमाअ़त अदा करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया,

وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا۝ (پ۱۵،بنی اسرآئیل:۷۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और सुब्ह का कुरआन बेशक सुब्ह के कुरआन में फ़िरिश्ते हाज़िर होते हैं।

मुफ़स्सिरीने किराम फ़रमाते हैं इस आयते मुबा-रका में फ़ज्र से मुराद सुब्ह की नमाज़ है कि उस में दिन और रात के मलाएका हाज़िर होते हैं।

(188)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की गोया उस ने आधी रात क़ियाम किया और जिस ने फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की गोया उस ने पूरी रात क़ियाम किया।'' (صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ، باب فضل صلوۃ العشاء والصبح فی جماعۃ، رقم ۶۵۶، ج، ص۳۲۹)

(189)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुनाफ़िक़ीन पर सब नमाज़ों से भारी फ़ज्र और इशा की नमाज़ है, अगर जान लेते कि इन दोनों नमाज़ों में क्या है तो ज़रूर हाज़िर होते अगर्चे घिसटते हुए आते, और बेशक मैं ने इरादा किया कि मैं नमाज़ क़ाइम करने का हुक्म दूं और किसी शख़्स को नमाज़ पढ़ाने पर मुक़र्रर करूं फिर कुछ लोगों को अपने साथ चलने के लिये कहूं जो लकड़ियां उठाए हुए हों फिर उन लोगों की त़रफ़ जाऊं जो नमाज़ में हाज़िर नहीं होते और उन के घरों को आग से जला दूं।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب فضل العشاء فی الجماعۃ، رقم ۶۵۷، ج۱، ص۲۳۵)

(190)...... इमाम त़-बरानी एक शख़्स का नाम लिये बिग़ैर रिवायत करते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी हुवा तो मैं ने उन को फ़रमाते हुए सुना कि मैं तुम्हें शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हुई एक ह़दीस सुनाता हूं, (फिर फ़रमाया) मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इबादत करो गोया कि तुम उसे देख रहे हो अगर तुम उसे देख नहीं सकते तो बेशक वोह तुम्हें देख रहा है और अपने आप को मुर्दों में शुमार करो और मज़्लूम की बद दुआ़ से बचते रहो क्यूं कि वोह ज़रूर क़बूल होती है और तुम में जो फ़ज्र और इशा की नमाज़ में हाज़िर हो सके अगर्चे घिसटते हुए तो उसे चाहिये कि वोह ज़रूर हाज़िर हो।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب فی صلوۃ العشاء الآخرۃ والصبح فی جماعۃ، رقم ۲۱۴۹، ج۲، ص۱۶۵)

(191)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की, उस ने शबे क़द्र में से अपना ह़िस्सा पा लिया।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۷۴۵، ج۸، ص۱۷۹)

(192)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने वुज़ू किया और मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा और फ़ज्र से पहले दो रक्अ़तें पढ़ीं और फ़ज्र की नमाज़ तक बैठा रहा तो उस की उस दिन की नमाज़ नेक लोगों की नमाज़ में शुमार होगी और उसे रह़मान عَزَّوَجَلَّ के वफ़्द या'नी मेहमानों में लिखा जाएगा।''

(طبرانی کبیر، رقم ۷۷۶۶، ج۸، ص۱۸۵)

(193)...... ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमान में होता है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب المسلمون فی ذمۃ اللہ عزوجل، رقم ۳۹۴۶، ج۴، ص۳۲۵)

(194)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो सुब्ह़ को फ़ज्र की नमाज़ के लिये चला वोह ईमान का झन्डा लिये चला और जो सुब्ह़ को बाज़ार की त़रफ़ चला तो शैत़ान का झन्डा ले कर चला।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन सुलैमान बिन अबू ह़स्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक दिन फ़ज्र की नमाज़ में मेरे वालिद सुलैमान बिन अबू ह़स्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को न पाया तो बाज़ार की त़रफ़ चले क्यूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिहाइश गाह मस्जिद और बाज़ार के बीच में थी। जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शिफ़ा उम्मे सुलैमान के क़रीब से गुज़रे तो उन से कहा कि, ''मैं ने फ़ज्र की नमाज़ में सुलैमान को नहीं देखा?'' तो उन्हों ने जवाब दिया, ''वोह सारी रात इ़बादत करते रहे सुब्ह़ को उन की आंख लग गई।'' येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करना मेरे नज़्दीक सारी रात इ़बादत करने से बेहतर है।''

(ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب الاسواق ودخولھا، رقم ۲۲۳۴، ج۳، ص۵۳)

(195)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने कामिल वुज़ू किया फिर मस्जिद की त़रफ़ चला और देखा कि लोग तो नमाज़ पढ़ चुके हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने और जमाअ़त में ह़ाज़िर होने वाले के बराबर सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और उन लोगों के सवाब में भी कुछ कमी न होगी।'' (سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب فیمن خرج یرید الصلوۃ فسبق بھا، رقم ۵۶۴، ج۱، ص۲۳۴)

(196)...... हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब एक अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की मौत का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें सवाब की उम्मीद पर एक ह़दीस सुनाता हूं, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जब तुम में से कोई शख़्स कामिल वुज़ू कर के नमाज़ की त़रफ़ चलता है तो उस के दायां क़दम उठाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखता है और बायां क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा देता है, अब चाहे तुम में से कोई मस्जिद के क़रीब रहे या दूर, फिर अगर वोह मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा और बा जमाअ़त नमाज़ अदा की तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी और अगर वोह शख़्स मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा और कुछ रक्अ़तें निकल चुकी थीं बक़िय्या कुछ रक्अ़तें उस ने पा लीं और नमाज़ मुकम्मल कर ली तो उस की भी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी और अगर वोह मस्जिद में जमाअ़त की निय्यत से ह़ाज़िर हुवा लेकिन जमाअ़त हो चुकी थी फिर उस ने तन्हा नमाज़ अदा की तो उस की भी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی الھدی فی المشی الی الصلوۃ، رقم ۵۶۳، ج۱، ص۲۳۳)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

क़ौम की रिज़ा से इमाम बनने वाले का सवाब

(197)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन तीन क़िस्म के लोग मुश्क के टीलों पर होंगे पहला वोह गुलाम जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने आक़ा के हुक़ूक़ अदा किये, दूसरा वोह शख़्स जो किसी क़ौम का इमाम बना और वोह क़ौम उस से राज़ी हो, तीसरा वोह शख़्स जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के लिये अज़ान दे।"

एक रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "तीन त़रह़ के लोगों को बड़ी घबराहट या'नी क़ियामत दह्शत ज़दा न कर सकेगी और न ही उन लोगों का ह़िसाब होगा और वोह लोगों के ह़िसाब से फ़ारिग़ होने तक मुश्क के टीलों पर होंगे वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कि रिज़ा के लिये कुरआन पढ़े और वोह शख़्स जो क़ौम की रिज़ा मन्दी से इमाम बने...... اِلٰخ"

(سنن ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی فضل المملوک الصالح، رقم ۱۹۹۳، ج۳، ص۳۹۷)

(198)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो क़ौम का इमाम बने उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना चाहिये और येह जान लेना चाहिये कि वोह ज़िम्मादार है और उस से उस की इमामत के बारे में पूछा जाएगा, लिहाज़ा! अगर वोह अपने मन्सब को खुश उस्लूबी से निभाएगा तो उसे अपने पीछे नमाज़ पढ़ने वालों के बराबर सवाब मिलेगा और उन नमाज़ियों के सवाब में भी कुछ कमी न होगी और अगर इमामत की अदाएगी में कोई कमी रह गई तो वोह खुद ही उस का जवाब देह होगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب الامام ضامن، رقم ۲۳۳۵، ج۳، ص۲۰۹)

=== === ===

नमाज़ में आमीन कहने का सवाब

(199)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब इमाम ''غَیْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَاالضَّآلِّیْنَ○'' कहे तो आमीन कहा करो क्यूं कि जिस का क़ौल फ़िरिश्तों के क़ौल के मुवाफ़िक़ हो जाए उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।''

एक रिवायत में है कि, ''जब तुम में से कोई आमीन कहता है तो फ़िरिश्ते आस्मानों पर आमीन कहते हैं, अगर उन दोनों का क़ौल मुवाफ़िक़ हो जाए तो उस शख़्स के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।''

एक और रिवायत में है कि, ''जब इमाम ''غَیْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَاالضَّآلِّیْنَ○'' कहे तो तुम आमीन कहा करो क्यूं कि जिस का क़ौल फ़िरिश्तों के क़ौल के मुवाफ़िक़ हो जाए तो उस की वजह से मस्जिद में मौजूद हर शख़्स की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' (صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب جہر الماموم بالتامین، رقم ۷۸۲، ج۲، ص۲۷۵)

(200)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम नमाज़ पढ़ने लगो तो अपनी सफ़ों को क़ाइम कर लिया करो और तुम में से एक शख़्स इमामत कराए जब वोह तक्बीर कहे तुम भी तक्बीर कहो और जब वोह ''غَیْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَاالضَّآلِّیْنَ○'' कहे तो आमीन कहा करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी दुआ़ क़बूल फ़रमाएगा।'' (صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب التشہد فی الصلوۃ، رقم ۴۰۴، ص۲۱۴)

(201)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब इमाम ''غَیْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَاالضَّآلِّیْنَ○'' कहे और मुक़्तदी इस पर आमीन कहे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे के पिछले गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है, और उस शख़्स की मिसाल जो आमीन न कहे उस शख़्स की त़रह़ है जो किसी क़ौम के साथ जिहाद के लिये निकला फिर उन्हों ने क़ुरआ़ डाला तो उन का क़ुरआ़ निकल आया मगर उस का क़ुरआ़ न निकला तो उस ने कहा कि मेरा क़ुरआ़ क्यूं नहीं निकला तो उसे जवाब दिया गया कि तूने आमीन नहीं कही।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب التامین، رقم ۲۶۶۴، ج۲، ص۲۸۸)

(202)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''यहूदियों ने तुम्हारी किसी चीज़ पर इतना ह़सद नहीं किया जितना ह़सद तुम्हारे आमीन कहने पर किया है लिहाज़ा कसरत से आमीन कहा करो।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ والسنۃ فیھا، باب الجھر بآمین، رقم ۸۵۷، ج۱، ص۴۶۶)

(203)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुझे तीन चीज़ें अ़ता फ़रमाई हैं मुझे बा जमाअ़त नमाज़ अ़ता फ़रमाई, मुझे सलाम अ़ता फ़रमाया जो कि अहले जन्नत की तहिय्यत है और मुझे आमीन अ़ता फ़रमाई और येह चीज़ें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने सिवाए हारून عَلَیْہِ السَّلام के किसी भी नबी को अ़ता नहीं फ़रमाई, मूसा عَلَیْہِ السَّلام दुआ़ मांगा करते और हारून عَلَیْہِ السَّلام आमीन कहा करते थे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصلوۃ، الترغیب فی التامین خلف الامام، رقم ۳، ج۱، ص۱۹۴)

(204)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने यहूदियों का तज़्किरा किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''यहूदियों ने किसी चीज़ पर भी हम से इतना ह़सद नहीं किया जितना उस जुमुआ़ पर किया है, जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हमारी रहनुमाई फ़रमाई और यहूदी इस से मह़रूम रहे और उस क़िब्ले पर जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हमारी रहनुमाई फ़रमाई और हमारे इमाम के पीछे आमीन कहने पर।''

एक रिवायत में है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''यहूदियों ने तुम से किसी चीज़ पर इतना ह़सद नहीं किया जितना आमीन कहने और सलाम करने पर किया है।''

(مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنہا، رقم ۲۵۰۸۳، ج۹، ص۴۵۹)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

पहली सफ़ में नमाज़ पढ़ने का सवाब

(205)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ पर तशरीफ़ लाते तो क़ौम के सीनों और कांधों को बराबर फ़रमाते और फ़रमाया करते, ''जुदा जुदा न रहो कहीं तुम्हारे दिल जुदा न हो जाएं, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर रह़मत भेजते हैं।''

(ابن خزیمہ، باب التغلیظ فی ترک تسویۃ الصفوف، رقم ۱۵۵۱، ج۳، ص۲۴)

(206)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ या अगली सफ़ों पर रह़मत भेजते हैं।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ والسنۃ فیھا، باب فضل الصف المقدم، رقم ۹۹۷، ج۱، ص ۵۲۸، بتغیر قلیل)

(207)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ वालों पर रह़मत भेजते हैं।'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! और दूसरी सफ़ पर ?'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर रह़मत भेजते हैं।'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने फिर अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह ! और दूसरी सफ़ पर ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''और दूसरी पर भी।'' (مسند احمد مسند الانصار/حدیث ابی امامۃ الباھلی، رقم ۲۲۳۲۶، ج۸، ص۲۹۵)

(208)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पहली सफ़ वालों के लिये तीन मरतबा और दूसरी सफ़ वालों के लिये एक मरतबा इस्तिग़फ़ार किया करते थे।

(سنن ابن ماجہ، کتاب امامۃ الصلوۃ والسنۃ فیھا، باب الصف المقدم، رقم ۹۹۶، ج۱، ص۵۲۸)

(209)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर लोग जान लेते कि अज़ान और पहली सफ़ में क्या है फिर क़ुरआ़ अन्दाज़ी के इलावा कोई चारा न पाते तो ज़रूर क़ुरआ़ अन्दाज़ी करते।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب الاستھام فی الاذان، رقم ۶۱۵، ج۱، ص۲۲۴)

(210)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मर्दों की सफ़ों में बेहतरीन सफ़ पहली सफ़ है और बुरी सफ़ आख़िरी सफ़ है और औ़रतों की सफ़ों में से बेहतरीन सफ़ आख़िरी सफ़ है और उन की बुरी सफ़ पहली सफ़ है।'' (صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب تسویۃ الصفوف واما متھا الخ، رقم ۴۴۰، ص۲۳۲)

सफ़ की दाहिनी जानिब नमाज़ पढ़ने का सवाब

(211)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते सफ़ों की दाहिनी जानिब नमाज़ पढ़ने वालों पर रह़मत भेजते हैं।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب الصلوۃ، باب مایستحب ان یلی الامام فی الصف، رقم ۶۷۶، ج۱، ص ۲۶۸)

सफ़ों को मिलाने या ख़ाली रह जाने वाली जगह पुर करने का सवाब

(212)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़ पर तशरीफ़ लाते और क़ौम के सीनों और कन्धों को बराबर फ़रमाते और फ़रमाया करते, ''जुदा जुदा न रहो कहीं तुम्हारे दिल जुदा न हो जाएं बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते पहली सफ़ पर रह़मत भेजते हैं।'' एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''जो सफ़ की कुशा-दगी को पुर करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है।'' एक और रिवायत में है कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक कोई क़दम सफ़ के ख़ला को पुर करने के लिये उठाए जाने वाले क़दम से ज़ियादा पसन्दीदा नहीं।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب الصلوۃ، باب تسویۃ الصفوف، رقم ۶۶۴، ج۱، ص ۲۶۵)

(213)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते सफ़ों के ख़ला को पुर करने वालों पर रह़मत भेजते हैं।'' (صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب فرض متابعۃ الامام، رقم ۲۱۹۰، ج۳، ص ۲۹۷)

(214)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बन्दा सफ़ के ख़ला को पुर करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है और मलाएका उस पर ख़ैर निछावर करते हैं।'' (طبرانی اوسط، رقم ۵۷۹۷، ج ۳، ص ۲۹)

(215)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सफ़ को जोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जोड़ेगा और जो सफ़ को तोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस को तोड़ेगा।'' (سنن نسائی، کتاب الامامۃ، باب من وصل صفا، ج۲، ص ۹۳)

(216)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सफ़ के ख़ला को पुर करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।'' (طبرانی اوسط، رقم ۵۷۹۷، ج۴، ص۲۲۵)

(217)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबी जुहै़फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सफ़ के ख़ला को पुर करेगा उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب صلۃ الصفوف وسد الفرج، رقم ۲۵۰۳، ج۲، ص۲۵۱)

(218)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''दो क़दम ऐसे हैं जिन में से एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा है और दूसरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा ना पसन्द है। जो शख़्स सफ़ में ख़ला देखे फिर उसे पुर करने के लिये चले और उसे पुर कर दे तो उस का येह क़दम उठाना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है और जो क़दम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को ना पसन्द है, वोह येह कि कोई शख़्स खड़ा होने के लिये अपनी दाईं टांग फैला कर उस पर अपना हाथ रखे फिर अपनी बाईं टांग खड़ी कर के उठे।''

(المستدرک للحاکم، کتاب الامامۃ وصلوۃ الجماعۃ/خطوتان احدھما احب الی اللہ والاخری الخ، رقم ۱۰۴۶، ج۱، ص۵۲۰)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
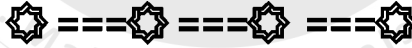
मस्जिदे ह़राम और मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में नमाज़ पढ़ने का सवाब

(219)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है।''

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل الصلوۃ بمسجدی مکۃ والمدینۃ، رقم ۱۳۹۴، ص ۷۲۰)

(220)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मेरी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना एक लाख नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है।''

(مسند احمد، مسند المدنیین/ حدیث عبداللہ عن الزبیر بن العوام، رقم ۱۶۱۱۷، ج ۵، ص ۴۵۲)

(221)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुलताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मेरी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में एक लाख नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है।''

(مسند احمد، مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۱۴۷۰۰، ج ۵، ص ۱۰۸)

(222)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मेरी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मेरी इस मस्जिद में जुमुआ़ अदा करना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार जुमुए़ अदा करने से अफ़्ज़ल है और मेरी इस मस्जिद में र-मज़ान का एक महीना गुज़ारना मस्जिदे ह़राम के इलावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार माहे र-मज़ान गुज़ारने से अफ़्ज़ल है।''

(بیہقی شعب الایمان، باب فی المناسک، فصل فضل الحج والعمرۃ، رقم ۴۱۴۷، ج ۳، ص ۴۸۶)

(223)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ना

दीगर मसाजिद में एक लाख नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मेरी मस्जिद में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से और बैतुल मुक़द्दस में पांच सो नमाज़ें अदा करने से अफ़्ज़ल है।''

एक और रिवायत में है कि ''मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में एक लाख नमाज़ें पढ़ने और मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और बैतुल मुक़द्दस में एक नमाज़ पढ़ना आ़म मसाजिद में पांच सो नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الحج، ج۲، رقم ۱۰، ص۱۴۰)

(224)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मेरी मस्जिद में लगातार चालीस नमाज़ें पढ़ लीं उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाएगी और वोह निफ़ाक़ से बरी हो जाएगा।''

(مسند احمد، مسند انس بن مالک النضر، رقم ۱۲۵۸۴، ج۴، ص۳۱۱)
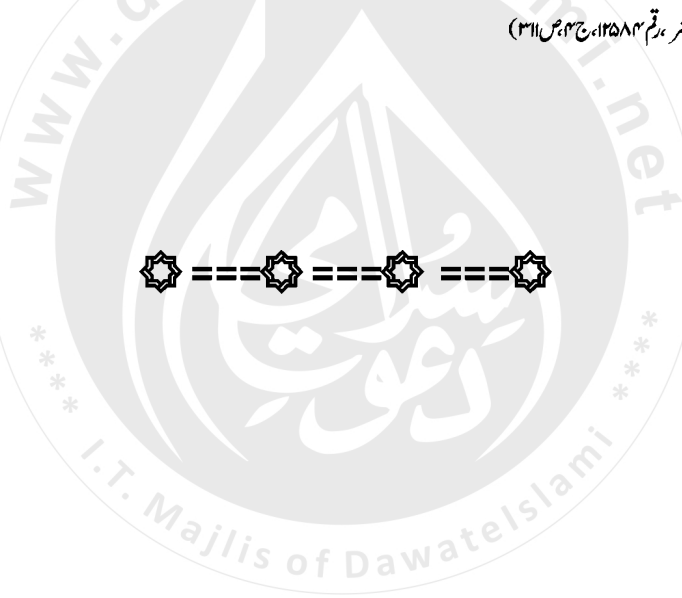
मस्जिदे अक्सा में नमाज़ पढ़ने का सवाब

पिछले सफ़हात में गुज़र चुका कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बैतुल मुक़द्दस में एक नमाज़ पढ़ना आम मसाजिद में पांच सो नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है।''

(225)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلَیۡہِمَاالسَّلَام बैतुल मुक़द्दस की ता'मीर से फ़ारिग़ हुए तो उन्हों ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से एक ऐसी बादशाहत का सुवाल किया जो इन के बा'द किसी और को ह़ासिल न हो और वोह उस की बादशाहत का मज़्हर हो और येह सुवाल किया कि इस मस्जिद में जो भी नमाज़ के इरादे से आए वोह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाए जैसा कि उस की मां ने उसे जना था। फिर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''दो चीज़ें तो उन्हें अ़ता फ़रमा दी गईं और मुझे उम्मीद है कि तीसरी चीज़ भी उन्हें अ़ता फ़रमा दी गई होगी।''

(مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۶۵۵، ج۲، ص۵۸۹ بتغیر قلیل)

(226)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आदमी का अपने घर में नमाज़ पढ़ना एक नमाज़ के बराबर है और मह़ल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पच्चीस नमाज़ों के बराबर है और जामेअ़ मस्जिद में नमाज़ पढ़ना पांच सो नमाज़ों के बराबर है और मस्जिदे अक़्सा और मेरी मस्जिद (या'नी मस्जिदे न-बवी) में नमाज़ पढ़ना पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है और मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ना एक लाख नमाज़ों के बराबर है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فی الصلوۃ الخ، رقم ۱۴۱۳، ج۲، ص۱۷۶)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़ने का सवाब

(227)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا मदीनए मुनव्वरह के मह़ल्ले औसात़ में ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घर एक जनाज़े में शरीक हुए। इस के बा'द ह़ारिस बिन ख़ज़्रज के मह़ल्ले में बनू अ़म्र बिन औ़फ़ के पास तशरीफ़ ले गए। उन से अ़र्ज़ किया गया "ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! आप इमामत कहां फ़रमाते हैं ?" इर्शाद फ़रमाया, "मैं बनू अ़म्र बिन औ़फ़ की उस मस्जिद में इमामत करता हूं क्यूं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि जिस ने इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ी उसे एक उ़म्रे के बराबर सवाब मिलेगा।"

(صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب المساجد، رقم ۱۶۲۵، ج۳، ص۷۴)

(228)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन ज़ुहैर अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मस्जिदे कुबा में एक नमाज़ पढ़ना एक उ़म्रे के बराबर है।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فی الصلوۃ فی مسجد قباء، رقم ۱۴۱۱، ج۲، ص۱۷۵)

(229)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन ह़ुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो अपने घर से वुज़ू कर के मस्जिदे कुबा में आए फिर उस मस्जिद में नमाज़ पढ़े उसे एक उ़म्रे का सवाब दिया जाएगा।"

(مسند امام احمد، ج۵، رقم ۱۵۹۸۱، ص۳۱۱)

एक और रिवायत में है कि "जिस ने अह़्सन त़रीक़े से वुज़ू किया फिर मस्जिदे कुबा में दाख़िल हो कर चार रक्अ़तें अदा कीं तो उस का येह अ़मल एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی الصلوۃ، ج۲، رقم ۱۸، ص۱۴۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन सा'द और ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा बिन्ते सा'द ने अपने वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को फ़रमाते हुए सुना कि "मुझे मस्जिदे कुबा में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे अक़्सा में नमाज़ पढ़ने से ज़ियादा पसन्द है।"

✡ ===✡ ===✡ ===✡
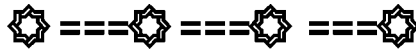
औ़रत के लिये घर में नमाज़ पढ़ने का सवाब

(230)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''औ़रत का अपने कमरे में नमाज़ पढ़ना घर के इह़ाते़ में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है, और इस का इह़ाते़ में नमाज़ पढ़ना सेह़न में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है, और सेह़न में नमाज़ पढ़ना घर से बाहर नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।'' (طبرانی اوسط، رقم ۹۱۰۱، ج۶، ص۳۶۸)

(231)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपनी औ़रतों को मस्जिद में ह़ाज़िर होने से न रोको और इन का अपने घरों में नमाज़ पढ़ना इन के ह़क़ में बेहतर है।'' (سنن ابی داوٗد، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی خروج النساء الی المسجد، رقم ۵۶۷، ج۱، ص۲۳۴)

(232)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''औ़रत छुपाने की चीज़ है और जब येह अपने घर से निकलती है तो शैता़न पर ज़ाहिर हो जाती है और बेशक औ़रत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जितनी क़रीब अपने घर के तहख़ाने में होती है कहीं और नहीं होती।'' (طبرانی اوسط، رقم ۲۸۹۰، ج۲، ص۱۲۳)

(233)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''औ़रतों के नमाज़ पढ़ने के लिये सब से बेहतरीन जगह उन के घरों के तहख़ाने हैं।''

(مسند احمد، حدیث ام سلمۃ زوج النبی صلی اللہ علیہ وسلم، رقم ۲۶۶۰۴، ج۱۰، ص۱۸۴)

(234)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक औ़रत की सब से पसन्दीदा नमाज़ वोह है जिसे वोह अंधेरी कोठड़ी में अदा करती है।''

(صحیح ابن خزیمہ، کتاب الامامۃ، باب اختیار صلوۃ المرأۃ فی اشد مکان من بیتھا ظلمۃ، رقم ۱۶۹۶، ج۳، ص۹۶)

(235)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''औ़रत का कोठड़ी में नमाज़ पढ़ना इह़ाते़ में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है और उस का तहख़ाने में नमाज़ पढ़ना कमरे में नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।'' (سنن ابوداوٗد، کتاب الصلوۃ، باب التشدید فی ذالک، رقم ۵۷۰، ج۱، ص۲۳۵)

(236)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हु़मैद साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा उम्मे हु़मैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हु़स्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो

नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! मैं आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हूं।'' तो आप ने फ़रमाया, ''मैं जानता हूं कि तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ना पसन्द करती हो लेकिन तुम्हारा घर के अन्दरूनी कमरे में नमाज़ पढ़ना बैरूनी कमरे में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और बैरूनी कमरे में नमाज़ पढ़ना सेहन में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और सेहन में नमाज़ पढ़ना अपने मह़ल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और तुम्हारा अपने मह़ल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है।'' रावी कहते हैं कि (येह सुनने के बा'द) उम्मे हुमैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने घर के एक कोने में मस्जिद बनाने का हुक्म दिया और जब तक ज़िन्दा रहीं उसी कोने में नमाज़ पढ़ती रहीं।

(مسند احمد، حدیث ام حمید وام حکیم وامراۃ، رقم ۲۷۱۵۸، ج۱۰، ص۳۱۰)

वज़ाहत :

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की हयाते ज़ाहिरी में जब औरतें नमाज़ के लिये अपने घरों से निकलती थीं तो अच्छी तरह बा पर्दा हो कर ज़ीनत किये बिग़ैर निकलती थीं। जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ का सलाम फैरते तो मर्दों से फ़रमाते ''जब तक औरतें चली न जाएं अपनी जगहों पर ठहरे रहो।'' इस एहतियात के बा वुजूद नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने औरतों के बारे में फ़रमाया कि इन का अपने घरों में नमाज़ पढ़ना इन के हक़ में बेहतर है। तो आप का उन औरतों के बारे में क्या ख़याल है जो अपने घरों से बेहतरीन कपड़े पहन कर ज़ीनत किये हुए खुश्बू लगा कर निकलती हैं? और बेशक उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया, ''अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इस को देख लेते जो अब औरतें करती हैं तो उन को मस्जिद आने से रोक देते जैसे बनी इस्राईल की औरतों को रोक दिया गया था।''

(صحیح مسلم، کتاب الصلاۃ، باب خروج النساء الی المسجد، رقم ۴۴۵، ص۲۳۴)

उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का येह क़ौल पहली सदी की उन औरतों के बारे में है जो सहाबियात थीं अगर वोह आज की औरतों को देख लेतीं तो न जाने क्या इर्शाद फ़रमातीं?

हज़रते सय्यिदुना अबू अम्र शैबानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जुमुआ के दिन औरतों को मस्जिद से निकालते और फ़रमाते हुए सुना कि ''अपने घरों को चली जाओ येह तुम्हारे लिये मस्जिद में हाज़िर होने से बेहतर है।''

=== === ===
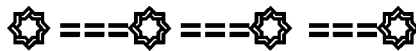
रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये मस्जिद बनाने का सवाब

(237)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी चाहते हुए मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।"

(صحیح بخاری، کتاب الصلوۃ، باب من بنی مسجدا، رقم ۴۵۰، ج ۱، ص ۱۷۱)

(238)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन ह़य्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं हम एक मस्जिद बना रहे थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमारे पास तशरीफ़ लाए और सलाम किया फिर फ़रमाया कि मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि "जो लोगों के नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में उस से बेहतर घर बनाएगा।"

(مسند احمد، مسند المکیین/ حدیث واثلۃ بن الاسقع، رقم ۱۶۰۰۵، ج ۵، ص ۴۱۹)

(239)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जो ह़लाल माल से मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में मोती और याक़ूत का घर बनाएगा।"

(طبرانی اوسط، رقم ۵۰۵۹، ج ۴، ص ۱۷)

(240)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो रियाकारी और लोगों को सुनाने का इरादा किये बिग़ैर मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।"

(طبرانی اوسط، رقم ۷۰۰۵، ج ۵، ص ۱۸۴)

(241)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बेशक मोमिन के मरने के बा'द भी उस के आ'माल और नेकियों में से जो कुछ उस तक पहुंचता रहता है, उन में से एक तो वोह इ़ल्म है जिसे इस ने लोगों को सिखाया और फैलाया, वोह नेक औलाद है जिसे उस ने छोड़ा या वोह मुस्ह़फ़ जिसे तर्के में छोड़ा या मस्जिद बनवाई या नह्र जारी कर दी या अपनी सिह़्ह़त और ह़यात में अपने माल से ऐसा स-दक़ा दिया जिस का सवाब उसे मरने के बा'द भी मिलता रहे।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنہ، باب ثواب معلم الناس الخیر، رقم ۲۴۲، ج ۱، ص ۱۵۷)

(242)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये थोड़े रक़्बे पर भी मस्जिद बनाई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।"

(صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب المساجد، رقم ۱۶۰۸، ج ۳، ص ۶۹)

(243)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने पानी का कूंआं खुदवाया उस कूंएं में से जिन्नो इन्स और परिन्दों में से जो भी पानी पियेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस शख़्स को इस का सवाब अ़ता फ़रमाएगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये छोटी सी मस्जिद बनाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।''

(صحیح ابن خزیمہ، باب فی فضل المسجد، رقم ۱۲۹۲، ج۲، ص۲۶۹)

(244)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मस्जिद बनवाए ख़्वाह छोटी हो या बड़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।''

(سنن ترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء فی فضل بنیان المسجد، رقم ۳۱۹، ج۱، ص۳۴۳)
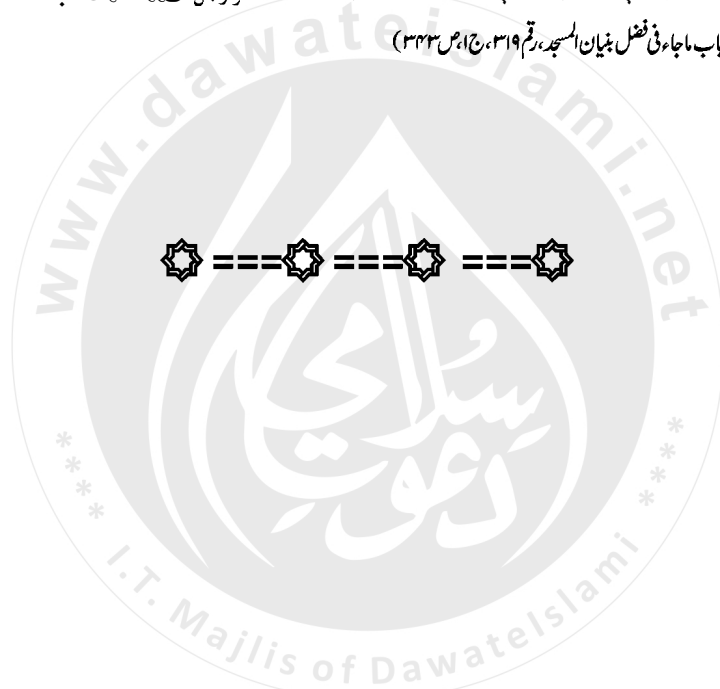
मस्जिद की सफ़ाई करने का सवाब

(245)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुझ पर अपनी उम्मत के सवाब पेश किये गए यहां तक कि उस गर्द का सवाब भी पेश किया गया जिसे मुसल्मान मस्जिद से निकालता है, और मुझ पर अपनी उम्मत के गुनाह पेश किये गए तो मैं ने उन में क़ुरआन की सूरत या आयत याद कर के भुला देने से बड़ा कोई गुनाह नहीं पाया।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلوۃ، باب فی کنس المسجد، رقم ۴۶۱، ج۱، ص۱۹۸)

(246)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक हब्शी औ़रत मस्जिद से कचरा निकाला करती थी एक रात उस का इन्तिक़ाल हो गया। जब सुब्ह़ हुई और सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उस की वफ़ात की ख़बर दी गई तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम ने मुझे उस के बारे में (रात ही में) क्यूं नहीं बताया ?'' फिर सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम को साथ ले कर निकले और उस की क़ब्र पर जा कर उस की नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस औ़रत के लिये दुआ़ फ़रमाई और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़े जनाज़ा अदा की फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले आए।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصلوۃ علی القبر، رقم ۱۵۳۳، ج۲، ص۲۳۵)

(247)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं एक औ़रत मस्जिद से गर्दो ग़ुबार साफ़ किया करती थी। जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उस की तदफ़ीन की ख़बर न दी गई। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''जब तुम में से किसी का इन्तिक़ाल हो तो मुझे ख़बर दे दिया करो।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस औ़रत की नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई और फ़रमाया कि ''मैं उसे मस्जिद से गर्दो ग़ुबार साफ़ करने की वजह से जन्नत में देख रहा हूं।''

(طبرانی کبیر، رقم ۱۱۶۰۷، ج۱۱، ص۱۹۰)

(248)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन मरज़ूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मदीना शरीफ़ में एक औ़रत मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी। जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उस के बारे में ख़बर न दी गई। एक मरतबा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस की क़ब्र के क़रीब से गुज़रे तो दरयाफ़्त फ़रमाया, ''येह किस की क़ब्र है ?'' तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''उम्मे मिह़्जन की।'' फ़रमाया, ''वोही जो मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने लोगों को उस की क़ब्र पर सफ़ बनाने का हुक्म दिया और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। फिर उस औ़रत को मुख़ात़ब कर के फ़रमाया कि ''तूने कौन सा काम सब से अफ़्ज़ल पाया ?'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! क्या येह सुन

रही है ?" इर्शाद फ़रमाया, "तुम इस से ज़ियादा सुनने वाले नहीं हो।" रावी बयान करते हैं कि फिर रसूले अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "इस ने मेरे सुवाल के जवाब में कहा, "मस्जिद की सफ़ाई को।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الصلوۃ، الترغیب فی تنظیف المساجد وتطہیر ھا الخ، رقم ۴، ج۱، ص۱۲۲)

(249)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक ह़ब्शी जवान या औ़रत मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी। जब शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे मौजूद न पाया तो उस के बारे में पूछा। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "वोह तो फ़ौत हो गई।" फ़रमाया, "क्या तुम मुझे इस की ख़बर नहीं दे सकते थे ?" रावी कहते हैं शायद सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस मुआ-मले को छोटा समझते हुए हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस की ख़बर न दी। फिर हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मुझे उस की क़ब्र पर ले चलो।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उस की क़ब्र पर ले आए तो हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा अदा फ़रमाई फिर फ़रमाया, "बेशक येह क़ब्रें अंधेरे से भरी हुई थीं, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे इन पर नमाज़ पढ़ने के सबब इन क़ब्रों को मुनव्वर फ़रमा देगा।"

(صحیح مسلم، کتاب الصلوۃ، باب الصلوۃ علی القبر، رقم ۹۵۶، ج۱، ص۴۷۶، بتغیر قلیل)

(250)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो मस्जिद से तक्लीफ़ देह चीज़ निकालेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب تطہیر المساجد، رقم ۷۵۷، ج۱، ص۴۱۹)

(251)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िरसाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "मस्जिदें बनाओ और उन में से गर्दो ग़ुबार निकाल दिया करो कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मस्जिद बनाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।" एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह ! क्या मस्जिदें गुज़र गाहों पर बनाई जाएं ?" इर्शाद फ़रमाया, "हां ! और इन में से गर्दो ग़ुबार साफ़ करना हूरे ईन का महर है।"

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب بناء المسجد، رقم ۱۵۲۱، ج۲، ص۱۱۳)

(252)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मह़ल्लों मे मस्जिदें बनाने और उन्हें पाक व साफ़ रखने का हुक्म दिया है।

(مسند احمد، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنہا، رقم ۲۶۴۴۶، ج۱۰، ص۱۵۲)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ चलने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया,......

فَاسْعَوْا اِلٰی ذِکْرِ اللّٰہِ وَذَرُوا الْبَیْعَ ؕ ذٰلِکُمْ خَیْرٌ لَّکُمْ اِنْ کُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝ (پ۲۸،الجمعۃ:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो।

(253)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने कामिल वुज़ू किया और नमाज़ के इरादे से चला तो जब तक उस की नमाज़ की निय्यत बाक़ी है वोह नमाज़ ही में है और उस के पहले क़दम के इवज़ एक नेकी लिखी जाएगी और दूसरे क़दम के इवज़ एक गुनाह मिटा दिया जाएगा। जब तुम में से कोई इक़ामत सुने तो हरगिज़ तेज़ क़दम न चले और बेशक तुम से ज़ियादा सवाब वाला वोह है जिस का घर मस्जिद से ज़ियादा दूर है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने (रावी से) पूछा, ''ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ! ऐसा क्यूं है?'' फ़रमाया, ''ज़ियादा क़दम चलने की वजह से।''

एक और रिवायत में है कि जो अपने घर से वुज़ू कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ में से किसी फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी के लिये किसी मस्जिद की त़रफ़ चला तो उस का एक क़दम चलना एक गुनाह मिटा देता है और दूसरा क़दम एक द-रजा बुलन्द कर देता है। (الموطاامام مالک،کتاب الطہارۃ،باب جامع الوضوء،رقم۶۷،ج۱،ص۵۴)

(254)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जो जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ चले उस का एक क़दम एक गुनाह मिटा देता है और दूसरा क़दम एक नेकी लिखवा देता है।'' (مسند احمد،مسند عبداللہ بن عمرو،رقم۶۶۱۰،ج۲،ص۵۸۰)

(255)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''अच्छी बात कहना स-दक़ा है और नमाज़ के लिये जाते हुए उठने वाला हर क़दम स-दक़े के बराबर है।''

(صحیح بخاری،کتاب الجہاد،باب فضل من حمل متاع صاحبہ فی السفر،رقم۲۸۹۱،ج۲،ص۲۷۹)

(256)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब कोई शख़्स कामिल वुज़ू कर के मस्जिद में आए और नमाज़ का इन्तिज़ार करे तो उस के

फ़िरिश्ते (किरामन कातिबीन) उस के मस्जिद की त़रफ़ आते हुए उठने वाले हर क़दम के इ़वज़ दस नेकियां लिखते हैं और बैठ कर नमाज़ का इन्तिज़ार करने वाला नमाज़ पढ़ने वाले की त़रह़ है और उसे घर से निकलते ही लौटने तक नमाज़ी शुमार किया जाता है।'' (مسند احمد، مسند الشامیین/حدیث عقبہ بن عامر، رقم ۱۷۴۴۵، ج۶،ص۱۴۶)

(257)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मौत का वक़्त क़रीब आया तो फ़रमाने लगे कि मैं तुम्हें फ़क़त़ ह़ुसूले सवाब की निय्यत से एक ह़दीस सुनाता हूं, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''तुम में से जो कामिल वुज़ू करे और मस्जिद की त़रफ़ चले तो दायां क़दम उठाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखता है और बायां क़दम रखने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मिटा देता है, अब तुम्हारी मरज़ी कि तुम मस्जिद से क़रीब रहो या दूर। फिर जब वोह मस्जिद में आता है और बा जमाअ़त नमाज़ अदा करता है तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं, फिर अगर वोह मस्जिद में ह़ाज़िर हो और उस की बा'ज़ रक्अ़तें निकल चुकी हों और बा'ज़ बाक़ी रह गई हों उसे चाहिये कि जो रक्अ़तें वोह पा सके इमाम के साथ पढ़ ले और बाक़ी रक्अ़तें मुकम्मल कर ले तो भी उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है, और अगर वोह मस्जिद में (जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने की निय्यत से) ह़ाज़िर हुवा लेकिन जमाअ़त हो चुकी हो तो उसे चाहिये कि अपनी नमाज़ अदा कर ले कि उस के लिये भी येही बिशारत है।''

(مسلم، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی الھدی فی المشی الی الصلوۃ، رقم ۵۶۳، ج۱،ص۲۳۳)

(258)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मस्जिदे न-बवी عَلٰی صَاحِبِھَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के क़रीब कुछ मकानात ख़ाली हुए तो बनू स-लमह ने मस्जिद के क़रीब मुन्तक़िल हो जाने का इरादा किया। जब येह बात नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू स-लमह से फ़रमाया, ''मुझे येह ख़बर पहुंची है कि तुम मस्जिद के क़रीब मुन्तक़िल होने का इरादा रखते हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया ''जी हां या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो आप ने दो मरतबा इर्शाद फ़रमाया, ''ऐ बनू स-लमह ! अपने ही घरों में रहो क्यूं कि तुम्हारे हर क़दम पर नेकियां लिखी जाती हैं।'' बनू स-लमह कहते हैं (येह फ़रमान सुन कर हमें इतनी ख़ुशी हुई) कि अगर हम अपने मकानात तब्दील कर लेते तो हमें हरगिज़ ऐसी ख़ुशी ह़ासिल न होती।

एक और रिवायत में है कि सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनू स-लमह से फ़रमाया, ''बेशक तुम्हें हर क़दम के इ़वज़ एक द-रजा अ़त़ा किया जाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع العلوم، باب فضل کثرۃ الخطا الی المسجد، رقم ۶۶۵ص۳۳۵)

(259)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अन्सार के घर मस्जिदे न-बवी शरीफ़ से ज़रा दूर थे। फिर उन्हों ने मस्जिदे न-बवी के क़रीब रिहाइश इख़्तियार करने का

इरादा किया तो येह आयते करीमा नाज़िल हुई, ''نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَ اٰثَارَهُمْ ط'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम लिख रहे हैं जो उन्हों ने आगे भेजा और जो निशानियां पीछे छोड़ गए।'' (پ۲۲،یس:۱۲)

(ابن ماجہ،کتاب المساجد والجماعات،باب الابعد فالابعد من المسجد اعظم ثوابا،رقم ۷۸۵،ج۱،ص۴۳۲)

(260)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़ पढ़ने जाया करता था। सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दरमियाने क़दम चला करते थे। एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''क्या तुम जानते हो कि मैं दरमियाने क़दम क्यूं चलता हूं?'' मैं ने अ़र्ज़ किया ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''जब तक बन्दा नमाज़ की त़लब में होता है नमाज़ ही में होता है।'' एक और रिवायत में है कि ''मैं दरमियाने क़दम इस लिये चलता हूं ताकि नमाज़ की त़लब में ज़ियादा क़दम चल सकूं।''

(مجمع الزوائد،کتاب الصلوۃ،باب کیف المشی الی الصلوۃ،رقم ۲۰۹۲،ج۲،ص۱۵۱)

(261)......ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नमाज़ के मुआ़-मले में सब से ज़ियादा सवाब पाने वाला वोह शख़्स है जो ज़ियादा दूर से नमाज़ के लिये चल कर आए, इस के बा'द वोह शख़्स जो उस से कम लेकिन दूसरों से ज़ियादा क़दम चले और जो शख़्स (अगली) बा जमाअ़त नमाज़ अदा करने का इन्तिज़ार करता है वोह उस शख़्स से ज़ियादा सवाब पाएगा जो (एक) नमाज़ पढ़ कर सो जाता है।''

(صحیح بخاری،کتاب الاذان،باب فضل صلوۃ الفجر فی جماعۃ،رقم ۶۵۱،ج۱،ص۲)

(262)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक अन्सार सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की रिहाइश मस्जिद से बहुत दूर थी लेकिन उन की नमाज़ कभी नहीं छूटती थी। जब उन से कहा गया कि ''तुम एक दराज़ गोश (या'नी गधा) ख़रीद लो ताकि तुम दिन और रात में उस पर नमाज़ के लिये आ सको।'' तो उन्हों ने फ़रमाया, ''मुझे तो मस्जिद के क़रीब रिहाइश इख़्तियार करना भी पसन्द नहीं क्यूं कि मैं चाहता हूं कि मस्जिद की त़रफ़ आते हुए और मस्जिद से वापस घर लौटते हुए मेरे क़दमों को लिखा जाए।'' तो सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे तमाम क़दमों को जम्अ़ फ़रमा देगा।'' एक रिवायत में है कि ''तेरी ख़्वाहिश पूरी होगी।''

(صحیح مسلم،کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ،باب فضل کثرۃ الخطاء الی المسجد،رقم ۶۶۳،ص۳۳۴)

(263)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मस्जिद की त़रफ़ चला...या... मस्जिद से वापस लौटा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर आ-मदो रफ़्त पर उस के लिये जन्नत में एक मेहमान ख़ाना बनाएगा।''

(صحیح مسلم،کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ،باب المشی الی الصلوۃ الخ،رقم ۶۶۹،ص۳۳۶)

(264)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मस्जिद की त़रफ़ आ-मदो रफ़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद की मिस्ल है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۷۳۹، ج۸، ص۱۷۷)

(265)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ चलना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना गुनाहों को अच्छी त़रह़ धो देता है।'' (مسند ابویعلی، مسند علی بن ابی طالب، رقم ۴۸۴، ج۱، ص۳۳۴)

(266)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं ? जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुनाहों को मिटा देता है और द-रजात को बुलन्द फ़रमा देता है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्यूं नहीं, ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया, ''मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ कसरत से आ-मदो रफ़्त रखना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना, येही जिहाद है, येही जिहाद है।'' (صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب فضل اسباغ الوضوء علی مکارہ، رقم ۲۵۱، ص۱۵۱)

(267)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि, ''क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़त़ाओं को मिटा देता है और गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर बताइये।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येही ह़दीस बयान की। (صحیح ابن حبان، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۱۰۳۶، ج۲، ص۱۸۸)

(268)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जो शख़्स अपने घर से किसी फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी के लिये चला, उस का सवाब एह़राम बांधने वाले ह़ाजी की त़रह़ है और जो सिर्फ़ चाश्त की नमाज़ अदा करने के लिये निकला, उस का सवाब उ़म्रह करने वाले की त़रह़ है और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ इस त़रह़ पढ़ना कि दरमियान में कोई लग़्व बात न की जाए इ़ल्लिय्यीन में लिखा जाता है।''

(سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی فضل المشی الی الصلوۃ، رقم ۵۵۸، ج۱، ص۲۳۱)

(269)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाया, ''जो अपने घर से कामिल वुज़ू कर के मस्जिद की त़रफ़ आया वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मेहमान है और मेहमान का इक्राम करना मेज़बान का ह़क़ है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۶۱۳۹، ج۶، ص۲۵۳)

(270)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीन शख़्स ऐसे हैं जिन का ज़ामिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है अगर ज़िन्दा रहें तो रिज़्क़ दिये जाएं और अगर मर जाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा : (1) जो अपने घर में दाख़िल हो कर सलाम करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है, (2) जो मस्जिद की त़रफ़ चले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है, (3) जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में निकले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الرحمۃ، رقم ۴۹۹، ج۱، ص۳۵۹)

अंधेरी रात में मस्जिद को जाने का सवाब

(271)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो रात के अंधेरे में मस्जिद की त़रफ़ चलेगा क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुनव्वर हो कर मिलेगा।'' इब्ने ह़ब्बान की रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं, ''जो रात के अंधेरे में मस्जिद की त़रफ़ चलेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे अपने नूर की ज़ियारत कराएगा।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، فصل فی فضل الجماعۃ، رقم ۲۰۴۴، ج۳، ج۳، ص۲۴۶)

(272)......हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबिय्यों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रात की तारीकी में मस्जिद की त़रफ़ चलने वालों को क़ियामत के दिन मिलने वाले कामिल नूर की बिशारत दे दो।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی المشی الی الصلوۃ فی الظلام، رقم ۵۶۱، ج۱، ص۲۳۲)

(273)...... हज़रते सय्यिदुना उबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रात की तारीकियों में मस्जिद की त़रफ़ चलने वालों के लिये क़ियामत के दिन एक फैलने वाला नूर रोशन फ़रमाएगा।''

(طبرانی اوسط، رقم ۸۴۳، ج۱، ص۲۴۵)

(274)...... हजरते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रात की तारीकियों में मस्जिद की त़रफ़ चलने वालों को क़ियामत के दिन एक कामिल नूर की बिशारत दी जाएगी।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب المشی الی الصلوۃ، رقم ۷۸۰، ج۱، ص۴۳۰)

(275)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रात की तारीकियों में मस्जिद की त़रफ़ आ-मदो रफ़्त रखने वालों को नूर के मिम्बरों की बिशारत दे दो, जब लोग घबराहट में मुब्तला होंगे तो येह घबराहट से मह़फ़ूज़ होंगे।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۶۳۳، ج۸، ص۱۴۲)

(276)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रात की तारीकियों में मस्जिद की त़रफ़ आ-मदो रफ़्त रखने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत में ग़ोते लगाते हैं।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب المشی الی الصلوۃ، رقم ۷۷۹، ج۱، ص۴۲۹)

इमाम नख़ई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان तारीक रात में मस्जिद की त़रफ़ चलने को जन्नत वाजिब करने वाला अ़मल समझा करते थे।
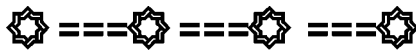
मस्जिद को आबाद करने और ख़ैर के लिये मस्जिद में बैठने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया,

اِنَّمَا یَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ (پ۱۰،التوبہ:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाते ।

एक और मक़ाम में है,......

فِیْ بُیُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَیُذْكَرَ فِیْهَا اسْمُهٗ ۙ یُسَبِّحُ لَهٗ فِیْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِیْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَیْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِیْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ یَخَافُوْنَ یَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِیْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۙ لِیَجْزِیَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَیَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ (پ۱۸،النور:۳۶،۳۷،۳۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन घरों में जिन्हें बुलन्द करने का **अल्लाह** ने हुक्म दिया है और उन में उस का नाम लिया जाता है **अल्लाह** की तस्बीह़ करते हैं उन में सुब्ह़ और शाम वोह मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और न ख़रीदो फ़रोख़्त **अल्लाह** की याद और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने से डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे दिल और आंखें ताकि **अल्लाह** उन्हें बदला दे उन के सब से बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें इन्आ़म ज़ियादा दे और **अल्लाह** रोज़ी देता है जिसे चाहे बे गिनती ।

(277)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''सात अफ़राद ऐसे हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने अ़र्श के साए में उस दिन जगह देगा जिस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए के इलावा कोई साया न होगा, (1) आ़दिल हुक्मरान, (2) वोह नौ जवान जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दी, (3) वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद में लगा रहे, (4) वोह दो शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करते हुए जम्अ़ हुए और मह़ब्बत करते हुए जुदा हो गए, (5) वोह शख़्स जिसे कोई माल व जमाल वाली औ़रत गुनाह के लिये बुलाए और वोह कहे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं, (6) वोह शख़्स जो स-दक़ा इस त़रह़ छुपा कर दे कि उस के दाएं हाथ के स-दक़ा देने से बायां हाथ बे ख़बर रहे, (7) वोह शख़्स जिस की आंखों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुए आंसू बहना शुरूअ़ हो जाएं ।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب من جلس فی المسجد ینتظر الصلوۃ، رقم ۶۶۰، ج۱، ص۲۳۶)

(278)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''मस्जिद हर परहेज़ गार का घर है और जिस का घर मस्जिद हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी रहमत, रिज़ा और पुल सिरात से बा हिफ़ाज़त गुज़ार कर अपनी रिज़ा वाले घर जन्नत की ज़मानत देता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب لزوم المسجد، رقم ۲۰۲۶، ج۲، ص۱۳۴)

(279)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम किसी मस्जिद में कसरत से आ-मदो रफ़्त रखने वाले को देखो तो उस के ईमान की गवाही दो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

اِنَّمَا یَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰہِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ (پ۱۰، التوبۃ:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाते।

(سنن ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمۃ الصلوۃ، رقم ۲۶۲۶، ج۴، ص۲۸۰)

(280)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले ही **अल्लाह** वाले हैं।'' (طبرانی اوسط، رقم ۲۵۰۲، ج۲، ص۵۸)

(281)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मस्जिद से महब्बत करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपना महबूब बना लेता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب لزوم المساجد، رقم ۲۰۳۱، ج۲، ص۱۳۵)

(282)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब कोई बन्दा ज़िक्रो नमाज़ के लिये मस्जिद को ठिकाना बना लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ऐसे ख़ुश होता है जैसे लोग अपने गुमशुदा शख़्स की अपने हां आमद पर ख़ुश होते हैं।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب لزوم المساجد، رقم ۸۰۰، ج۱، ص۴۳۸)

(283)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक शैतान रेवड़ के भेड़िये की तरह एक भेड़िया है जो पीछे रह जाने वाली तन्हा भेड़ को पकड़ता है, लिहाज़ा!

घाटियों से बचते रहो और जमाअ़त, आ़म लोगों और मस्जिद से तअ़ल्लुक़ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो।''

(مسند احمد، مسند الانصار/حدیث معاذ بن جبل، رقم ۲۲۰۹۰، ج۸، ص۲۳۸)

(284)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक कुछ लोग (गोया) मसाजिद के सुतून होते हैं, मलाएका उन के हम नशीन होते हैं अगर वोह ग़ाइब हो जाएं तो मलाएका उन्हें तलाश करते हैं और अगर बीमार हों तो उन की इयादत करते हैं और अगर उन्हें कोई ह़ाजत दरपेश हो तो उन की मदद करते हैं।''

(مستدرک للحاکم، کتاب التفسیر، رقم ۳۵۵۹، ج۳، ص۱۶۲)

(285)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''फिर फ़रमाया कि मस्जिद में बैठने वाले में तीन ख़स्लतें होती हैं (1) उस से फ़ाएदा ह़ासिल किया जाता है (2) या वोह ह़िक्मत भरा कलाम करता है (3) या रह़मत का मुन्तज़िर होता है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصلوۃ، رقم ۸، ج۱، ص۱۳۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''जो मस्जिद में बैठता है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मजलिस में बैठता है लिहाज़ा उस पर लाज़िम है कि अच्छी बात के इलावा कोई बात न कहे।''

मस्जिद में बैठ कर नमाज़ का इन्तिज़ार करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया,.......

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۠

(پ۴، آل عمران:۲۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और **अल्लाह** से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो ।

(286)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक नमाज़ में ही होता है जब तक नमाज़ उसे रोके रखती है (या'नी वोह नमाज़ के इन्तिज़ार में होता है), और उस के अपनी जगह से उठने या गुफ़्त-गू करने तक मलाएका अ़र्ज़ करते रहते हैं, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की मग़्फ़िरत फ़रमा ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रह़म फ़रमा ।''

और एक रिवायत में है कि ''बन्दा जब तक अपनी जगह बैठ कर नमाज़ का इन्तिज़ार करता है नमाज़ ही में होता है और मलाएका उस के उठने या मुह़दिस होने तक उस के लिये येह दुआ़ करते रहते हैं कि ''ऐ **अल्लाह** ! इस की मग़्फ़िरत फ़रमा ऐ **अल्लाह** ! इस पर रह़म फ़रमा ।'' अ़र्ज़ किया गया, ''ह़दस से क्या मुराद है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''बे आवाज़ या बा आवाज़ रीह़ ख़ारिज करना ।''

(صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب فضل صلوۃ الجماعۃ، رقم ۶۴۹، ج۱، ص۳۳۲)

(287)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं जिस के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ताओं को मिटाता और गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाता है ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! ज़रूर बताइये ।'' इर्शाद फ़रमाया, ''मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ कसरत से आ-मदो रफ़्त रखना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना ।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الطھارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۱۰۳۶، ج۲، ص۱۸۸)

(288)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ चलना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना गुनाहों को अच्छी त़रह़ धो देता है ।''

(المستدرک للحاکم، کتاب الطھارۃ، باب فضیلۃ تحیۃ الوضوء، رقم ۴۶۸، ج۱، ص۳۴۲)

(289)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "गुज़श्ता रात मेरे रब के पास से एक आने वाला मेरे पास आया, (जब कि एक रिवायत में है) गुज़श्ता रात मेरा रब عَزَّوَجَلَّ अह़सन सूरत में मेरे पास आया और मुझ से फ़रमाया, "ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) !" मैं ने अ़र्ज़ किया, "لَبَّیْکَ رَبِّیْ" या'नी ऐ मेरे रब मैं ह़ाज़िर हूं।" फ़रमाया, "क्या तुम जानते हो कि फ़िरिश्ते किस मुआ़-मले में झगड़ रहे हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "मैं नहीं जानता।" तो उस ने अपना दस्ते क़ुदरत मेरे दोनों कन्धों के दरमियान रखा यहां तक कि मैं ने उस की ठन्डक अपने सीने में मह़सूस की।"

एक और रिवायत में है कि "मेरी गरदन पर रखा, तो मैं ने जो कुछ आस्मानों और ज़मीनों में है सब जान लिया।" (या येह फ़रमाया), "जो कुछ मशरिक़ व मग़रिब में है सब जान लिया।" फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया "ऐ मुह़म्मद ! क्या तुम जानते हो कि मलाए आ'ला के फ़िरिश्ते किस मुआ़-मले में झगड़ रहे हैं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "हां ! वोह द-रजात, कफ़्फ़ारात, जमाअ़त की त़रफ़ चलने और शदीद सर्दी के आ़लम में कामिल वुज़ू करने और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करने और जो शख़्स पाबन्दी से नमाज़ें अदा करता है, वोह भलाई के साथ ज़िन्दगी गुज़ारता और भलाई के साथ मरता है और उस के गुनाह इस त़रह़ मिटा दिये जाते हैं जैसे उस दिन थे जिस दिन उस की मां ने उसे जना था,...... इन मुआ़-मलात में झगड़ रहे हैं।" (ترمذی، کتاب التفسیر، باب من سورۃ "ص"، رقم ۳۲۴۵، ج۵، ص۱۵۹)

वज़ाह़त :

फ़िरिश्तों के झगड़ने से मुराद नेक आ'माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ले जाने में एक दूसरे से जल्दी करना है क्यूं कि फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में नेक आ'माल ले कर ह़ाज़िर होने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब पाते हैं।

(290)...... ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अबी सालेह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से पूछा "ऐ भतीजे ! क्या तू जानता है कि येह आयते मुबा-रका किन लोगों के बारे में नाज़िल हुई ?

اِصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا (پ۴، النساء:۲۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो।

मैं ने अ़र्ज़ किया, "नहीं।" तो फ़रमाया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते हुए सुना कि "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में जिहाद के मवाक़ेअ़ कम होते थे मगर येह कि एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना।"

(مستدرک للحاکم، کتاب التفسیر، باب شان نزول آیۃ (اصبروا وصابروا)، رقم ۳۲۳۱، ج۳، ص۲۱)

(291)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम

नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठने वाला क़ियाम करने वाले की त़रह़ है और अपने घर से निकलने के वक़्त से लौटने तक नमाज़ियों में लिखा जाता है।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب الامامۃ والجماعۃ، رقم ۲۰۳۶، ج۳، ص۲۴۳)

(292)...... इमाम अह़मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी मुस्नद में शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर बैअ़त करने वाली औ़रतों में से एक औ़रत से रिवायत करते हैं कि एक मरतबा सरवरे कौनैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बनू स-लमह के कुछ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी थे। हम ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने खाना पेश किया आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने खाना तनावुल फ़रमाया फिर हम ने वुज़ू के लिये पानी पेश किया।

आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया फिर अपने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ रुख़ कर के फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें गुनाहों को मिटाने वाले अ़मल के बारे में न बताऊं?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर बताइये।'' तो इर्शाद फ़रमाया कि, ''मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और मस्जिद की त़रफ़ कसरत से आ-मदो रफ़्त रखना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना।'' (مسند احمد، مسند الانصار/حدیث عبد اللہ بن السعدی، رقم ۲۲۳۸۹، ج۸، ص۳۱۱)

(293)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं जिस की वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गुनाहों को मिटाता और नेकियों में इज़ाफ़ा फ़रमाता है।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! ज़रूर बताइये।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना और जो अपने घर से वुज़ू कर के निकले फिर मस्जिद में ह़ाज़िर हो कर जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करे फिर दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करता रहे तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं कि ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! इस की मग़्फ़िरत फ़रमा ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! इस पर रह़म फ़रमा।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الطہارۃ وسننھا، باب ماجاء فی اسباغ الوضوء، رقم ۴۲۷، ج۱، ص۲۵۵)

(294)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि येह आयते मुबा-रका इशा की नमाज़ के इन्तिज़ार के बारे में नाज़िल हुई,

تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ (پ۲۱، السجدۃ:۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से।

(سنن ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ السجدۃ، رقم ۳۲۰۷، ج۵، ص۱۳۶)

(295)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक रात ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इशा की नमाज़ को आधी रात तक मुअख़्ख़र फ़रमाया फिर नमाज़े इशा अदा करने के बा'द अपना रुख़े अन्वर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ कर के फ़रमाया, ''लोग नमाज़ पढ़ कर सो गए लेकिन तुम जब से नमाज़ का इन्तिज़ार कर रहे थे नमाज़ ही में थे।''

(صحیح بخاری، کتاب الاذان، باب من جلس فی المسجد ینتظر الصلوۃ، رقم ۶۶۱، ج۱، ص ۲۳۶)

(296)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हम ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़ी फिर वापस जाने वाले चले गए और जिसे वहीं बैठना था वोह दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करने लगा। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जल्दी से तशरीफ़ लाए, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत तेज़ सांस ले रहे थे और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने घुटनों के सहारे बैठ कर इर्शाद फ़रमाया, ''ख़ुश ख़बरी सुन लो कि तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने आस्मानों के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा खोल दिया है और फ़िरिश्तों के सामने तुम पर फ़ख़्र करते हुए फ़रमाता है कि मेरे इन बन्दों को देखो जिन्हों ने एक फ़रीज़ा अदा कर लिया और दूसरे के इन्तिज़ार में हैं।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب لزوم المساجد، رقم ۸۰۱، ج۱، ص ۴۳۸)

(297)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करने वाला उस शह सुवार की त़रह़ है जिस ने अपना घोड़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में बांधा और येह शख़्स उस घोड़े के पहलू से टेक लगाए बैठा है और येह जिहादे अक्बर में है।'' (مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، رقم ۸۶۳۳، ج۳، ص ۲۶۷)

=== === ===
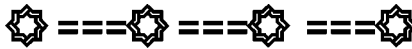
फ़ज्र के बा'द तुलूए शम्स तक ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करने का सवाब

(298)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा की फिर तुलूए आफ़्ताब तक बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया फिर दो रक्अ़तें अदा कीं उसे एक कामिल ह़ज और एक कामिल उ़म्रे का सवाब मिलेगा।''

(سنن ترمذی، کتاب السفر، باب ذکر مایستحب من الجلوس فی المسجد، رقم ۵۸۶، ج۲، ص۱۰۰)

(299)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो नमाज़े फ़ज्र के बा'द चाश्त की दो रक्अ़तें अदा करने तक अपनी जगह बैठा रहे और ख़ैर के इलावा कोई बात न कहे उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग से ज़ियादा हों।'' (مسند احمد، مسند المکیین /حدیث معاذ بن انس الجھنی، رقم ۱۵۶۲۳، ج۵، ص۳۱۰)

(300)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो नमाज़े फ़ज्र अदा करने के बा'द अपनी जगह बैठा रहे और कोई दुन्यवी बात न करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता रहे फिर चाश्त की चार रक्अ़तें अदा करे तो गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाएगा जैसा पाक उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था कि उस पर कोई गुनाह न था।'' (مسند ابی یعلی، مسند عائشہ، رقم ۴۳۴۸، ج۴، ص۹)

(301)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने फ़ज्र की नमाज़ अदा की फिर तुलूए आफ़्ताब तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता रहा फिर दो या चार रक्अ़तें अदा कीं उस के बदन को जहन्नम की आग न छू सकेगी।''

(شعب الایمان، باب فی الصیام/ فصل فیمن فطر صائم، رقم ۳۹۵۷، ج۳، ص۴۲۰)

(302)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी ऐसी ही एक ह़दीसे पाक मरवी है मगर उस में रक्अ़तों का ज़िक्र नहीं है। (طبرانی کبیر، رقم ۷۷۴۱، ج۸، ص۱۷۸)

(303)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जो फ़ज्र की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करे फिर तुलूए शम्स तक बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता रहे, फिर खड़ा हो कर दो रक्अ़तें अदा करे तो एक ह़ज और उ़म्रे का सवाब ले कर लौटेगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۷۴۱، ج۸، ص۱۷۸)

(304)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमा लेते तो उस वक़्त तक अपनी जगह से न उठते जब तक नमाज़ पढ़ने का इख़्तियार न मिलता और फ़रमाते ''जो फ़ज्र की नमाज़ अदा करे फिर नमाज़ पढ़ने का इख़्तियार मिलने तक अपनी जगह बैठा रहे यहां तक कि नमाज़ का इख़्तियार मिले तो येह उस के लिये एक मक़्बूल ह़ज और उ़म्रे के बराबर है।'' (طبرانی اوسط، رقم ۵۶۰۲، ج۴، ص۱۶۹)

वज़ाह़त :

नमाज़ का इख़्तियार मिलने से मुराद येह है कि तुलूए़ शम्स के बा'द जब तक सूरज बुलन्द न हो जाए नमाज़ अदा करना मक्रूह है और यहां कराहत के वक़्त का गुज़र जाना मुराद है।

(305)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक लश्कर को नज्द की जानिब भेजा वोह बहुत सा माले ग़नीमत लिये जल्दी लौट आया तो हम में से एक शख़्स ने कहा कि ''हम ने इस गुरौह से ज़ियादा जल्दी लौटने और कसरत से माले ग़नीमत लाने वाला लश्कर कभी नहीं देखा।'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''क्या मैं तुम्हें ऐसी क़ौम के बारे में न बताऊं जो इस से ज़ियादा माले ग़नीमत ह़ासिल कर लेती और जल्दी लौट आती है ? येह वोह क़ौम है जो फ़ज्र की नमाज़ में ह़ाज़िर होती है फिर तुलूए़ शम्स तक बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करती है येही वोह क़ौम है जो जल्दी लौटने और ज़ियादा ग़नीमत वाली है।''

(سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب۱۰۸، رقم ۳۵۷۲، ج۵، ص۳۲۸)

(306)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब फ़ज्र की नमाज़ अदा कर लिया करते तो तुलूए़ आफ़्ताब तक अपनी जगह पर चार ज़ानू बैठा करते।

जब कि त़–बरानी शरीफ़ की रिवायत में है कि जब रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमा लिया करते तो तुलूए़ आफ़्ताब तक बैठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते रहते। (صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ، باب فضل الجلوس فی صلوۃ بعد الصبح، رقم ۶۷۰، ص۳۳۷)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

अ़स्र के बा'द ग़ुरूबे आफ़्ताब तक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने का सवाब

(307)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''फ़ज्र की नमाज़ के बा'द तुलूए शम्स तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों के साथ बैठना मुझे औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام में से चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है और अ़स्र की नमाज़ अदा करने के बा'द ग़ुरूबे आफ़्ताब तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वाली क़ौम के साथ बैठना मुझे चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب العلم، باب فی القصص، رقم ۳۶۶۷، ج۳، ص۴۵۲)

(308)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुलूए शम्स तक बैठ कर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र और उस की बड़ाई बयान करना और उस की ह़म्दो सना करना और तस्बीह़ व तह्लील करना मुझे औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام से दो ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है और अ़स्र के बा'द ग़ुरूबे शम्स तक ज़िक्र करना मुझे औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام से चार ग़ुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है।''

(مسند احمد، مسند الانصار/حدیث ابی امامۃ الباہلی، رقم ۲۲۲۵۶، ج۸، ص۲۸۱)

===

फ़ज्र, अ़स्र और मग़रिब के बा'द के अज़्कार का सवाब

(309)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बा'द दो ज़ानू बैठ कर बात करने से पहले येह कलिमात दस मरतबा पढ़ेगा,

لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِ وَیُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ''

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये बादशाही है और उसी के लिये ह़म्द है ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और उस का वोह पूरा दिन हर ना पसन्दीदा चीज़ से मह़फ़ूज़ हो जाएगा और उस की शैत़ान से ह़िफ़ाज़त की जाएगी और उसे उस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क के इलावा कोई गुनाह नुक़्सान न पहुंचा सकेगा।'' (سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب۶۳، رقم ۳۴۸۵، ج۵، ص۲۸۹)

(310)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़दीस में येह इज़ाफ़ा है कि ''जिस ने नमाज़े अ़स्र से लौटते वक़्त येह कलिमात कहे उसे उस रात में ऐसा ही सवाब दिया जाएगा या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और उस की वोह पूरी रात हर ना पसन्दीदा चीज़ से मह़फ़ूज़ रहेगी और उस की शैत़ान से ह़िफ़ाज़त की जाएगी और उसे उस रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क के इलावा कोई गुनाह नुक़्सान न पहुंचा सकेगा।''

(311)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बा'द सो मरतबा येह कलिमात पढ़ेगा,

''لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِ وَیُمِیْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ ط وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ''

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये बादशाही है और उसी के लिये ह़म्द है ज़िन्दा करता है और मौत देता है उस के दस्ते क़ुदरत में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

तो वोह उस दिन अ़मल के ए'तिबार से अहले ज़मीन में सब से अफ़्ज़ल होगा मगर वोह जो उस की मिस्ल पढ़े या वोह जो उस से ज़ियादा मरतबा पढ़े।'' (طبرانی کبیر، رقم ۸۰۷۵، ج۸، ص۲۸۰)

(312)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ से लौटते वक़्त येह कलिमात दस मरतबा पढ़ेगा, ''لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِ وَیُمِیْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ ط وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ'' तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये बादशाही है और उसी के लिये ह़म्द है ज़िन्दा करता है और मौत देता है उस के दस्ते क़ुदरत में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

तो उसे सात फ़ज़ीलतें ह़ासिल होंगी (1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा, (2) उस के दस गुनाह मिटा देगा, (3) उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा, (4) वोह कलिमात उस के लिये दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर होंगे, (5) उस की शैत़ान से ह़िफ़ाज़त की जाएगी, (6) उसे हर ना पसन्दीदा चीज़ से बचाया जाएगा, (7) उसे उस दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ शिर्क के इलावा कोई गुनाह न पहुंच सकेगा और जो नमाज़े मग़रिब के बा'द येह कलिमात पढ़ेगा उसे उस रात में येही फ़ज़ीलत ह़ासिल होगी।''

(طبرانی کبیر، رقم ۱۱۹، ج ۲۰، ص ۶۵)

(313)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो फ़ज्र की नमाज़ के बा'द दो ज़ानू बैठ कर कोई बात करने से पहले येह कलिमात दस मरतबा पढ़ेगा, ''لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِ وَیُمِیْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ ط وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ'' तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये बादशाही है और उसी के लिये ह़म्द है ज़िन्दा करता है और मौत देता है उस के दस्ते क़ुदरत में भलाई है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।''

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के एक मरतबा पढ़ने पर उस के लिये दस नेकियां लिखेगा, उस के दस गुनाहों को मिटा देगा, उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमा देगा, उस का वोह पूरा दिन हर ना पसन्दीदा चीज़ से ह़िफ़ाज़त में गुज़रेगा, उस की शैत़ान मरदूद से ह़िफ़ाज़त की जाएगी और उस का हर मरतबा येह कलिमात पढ़ना औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام से एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा जिस की क़ीमत बारह हज़ार है और शिर्क के इलावा उस दिन उसे कोई गुनाह न पहुंच सकेगा और जिस ने नमाज़े मग़रिब के बा'द इन कलिमात को पढ़ा उस के लिये भी येही अज्रो सवाब है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول بعد صلوٰۃ الصبح والمغرب، رقم ۱۶۹۵۸، ج ۱۰، ص ۱۴۰)

(314)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''जब तुम फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लिया करो तो गुफ़्त-गू करने से पहले येह कलिमात सात मरतबा पढ़ लिया करो, ''اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ'' तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे जहन्नम से नजात अ़त़ा फ़रमा।'' फिर अगर तुम

उस दिन मर गए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये जहन्नम से अमान लिख देगा, और जब तुम मग़रिब की नमाज़ अदा कर लिया करो तो बातचीत करने से पहले येही कलिमात सात मरतबा पढ़ लिया करो, ''اَللّٰھُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ'' तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे जहन्नम से नजात अ़ता फ़रमा।'' फिर अगर तुम उस रात में मर गए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये जहन्नम से अमान लिख देगा।''

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح، رقم ۵۰۷۹، ج۴، ص۴۱۵)

(315)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स फ़ज्र और अ़स्र के बा'द तीन तीन मरतबा येह दुआ़ पढ़ेगा :

''اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ''

तरजमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश चाहता हूं जिस के इलावा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है क़ाइम है और मैं उस की बारगाह में तौबा करता हूं।''

तो उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।'' (جامع ترمذی، کتاب الدعوات، رقم ۳۴۰۸، ج۵، ص۲۵۵)

(316)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त येह (कलिमात) दस मरतबा पढ़ेगा : ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ'' तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये बादशाही है और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा, उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और येह कलिमात उस के लिये चार गुलाम आज़ाद करने के बराबर होंगे और येह शाम तक उस की ह़िफ़ाज़त करते रहेंगे और जो मग़रिब की नमाज़ के बा'द पढ़ेगा उस के लिये सुब्ह़ तक येही फ़ज़ीलत है।''

(مسند احمد، حدیث ابی ایوب انصاری، رقم ۲۳۵۷۷، ج۹، ص۱۳۵)

(317)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मारह बिन शबीब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स मग़रिब की नमाज़ के बा'द दस मरतबा येह कलिमात पढ़ेगा : ''لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ'' तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये बादशाही है और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।'' तो अल्लाह तआ़ला उस के लिये मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते भेजेगा जो सुब्ह़ तक उसे शैतान से मह़फ़ूज़ रखेंगे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत वाजिब करने वाले दस अ़मल लिखेगा और उस के जहन्नम वाजिब करने वाले दस गुनाह मिटा देगा और येह उस के लिये दस मोमिन गुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، رقم ۳۵۴۵، ج۵، ص۳۱۵)

नफ़्ल नमाज़ों का सवाब

घर में नमाज़ पढ़ने का सवाब

(318)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''लोगो ! अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो, फ़र्ज़ नमाज़ के इलावा मर्द की सब से अफ़्ज़ल नमाज़ वोह होती है जिसे वोह अपने घर में पढ़े ।''

(سنن نسائی، کتاب قیام اللیل الخ، باب الحث علی الصلوۃ فی البیوت، ج۳،ص۱۹۷)

(319)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जब तुम में से कोई शख़्स अपनी मस्जिद में नमाज़ अदा कर ले तो उसे चाहिये कि अपने घर के लिये नमाज़ में से कुछ हिस्सा बचा रखे क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस नमाज़ के सबब उस के घर में ख़ैरो ब-र-कत अ़ता फ़रमाएगा ।''

(صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب صلوۃ النافلۃ فی بیتہ الخ، رقم ۷۷۸، ص۳۹۳)

(320)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जिस घर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया जाता है और जिस घर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र नहीं किया जाता, उन की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की है ।''

(صحیح بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر اللہ عزوجل، رقم ۶۴۰۷، ج۴، ص۲۲۰)

(321)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि ''जो नमाज़ मैं घर में अदा करूं या जो नमाज़ मैं मस्जिद में अदा करूं इन में से कौन सी नमाज़ अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''क्या तुम नहीं देखते कि मेरा घर मस्जिद से कितना क़रीब है फिर भी मुझे फ़र्ज़ नमाज़ के इलावा दीगर नमाज़ें अपने घर में अदा करना मस्जिद में अदा करने से ज़ियादा पसन्द हैं ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فی التطوع فی البیت، رقم ۱۳۷۸، ج۲، ص۱۵۲)

पाबन्दी से सुन्नते मुअक्कदा पढ़ने का सवाब

(322)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना ''जो मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये रोज़ाना बारह रक्अ़त नवाफ़िल अदा करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा या उस के लिये जन्नत में एक

घर बनाया जाएगा।'' जब कि एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है ''चार रक्अ़तें ज़ोहर से पहले और दो रक्अ़तें ज़ोहर के बा'द और दो रक्अ़तें मग़रिब के बा'द और दो रक्अ़तें इशा के बा'द और दो रक्अ़तें फ़ज्र से पहले।'' (صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین، باب فضل السنن الراتبۃ الخ، رقم ۷۲۸،ص ۲۶۷)

फ़ज्र की सुन्नतें अदा करने का सवाब

(323)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''फ़ज्र की दो रक्अ़तें दुन्या और जो कुछ इस दुन्या में है, सब से बेहतर हैं।'' और एक रिवायत में है कि ''येह दो रक्अ़तें मुझे सारी दुन्या से ज़ियादा मह़बूब हैं।'' (صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب رکعتی سنۃ الفجر الخ، رقم ۷۲۵،ص ۳۶۵)

(324)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुझे नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाए।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''फ़ज्र की दो रक्अ़तों की पाबन्दी करो क्यूं कि इस में फ़ज़ीलत है।'' और एक रिवायत में है कि ''मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''फ़ज्र की दो रक्अ़तें न छोड़ा करो क्यूं कि इन में बड़ी बख़्शिश है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب النوافل، الترغیب فی المحافظۃ علی رکعتین قبل الصبح، رقم ۳، ج ۱،ص ۲۲۳)

ज़ोहर की सुन्नतें और नफ़्ल अदा करने का सवाब

(325)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो शख़्स पाबन्दी के साथ ज़ोहर से पहले और बा'द में चार चार रक्अ़तें अदा करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर जहन्नम को ह़राम फ़रमा देगा।'' जब कि एक रिवायत में है कि ''उस के चेहरे को जहन्नम की आग कभी न छू सकेगी।''

(مسند احمد، حدیث ام حبیبہ بنت ابی سفیان، رقم ۲۶۸۲۵، ج۱۰، ص۲۳۲ بتغیر قلیل)

(326)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़वाले शम्स के बा'द ज़ोहर से पहले चार रक्अ़तें अदा फ़रमाया करते और इर्शाद फ़रमाते कि ''येह वोह घड़ी है जिस में आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं लिहाज़ा मैं पसन्द करता हूं कि उस घड़ी में मेरा कोई नेक अ़मल आस्मानों तक पहुंचे।''

(مسند احمد، احادیث عبداللہ بن السائب، رقم ۱۵۳۹۶، ج۵، ص۲۵۰ بتغیر قلیل)

(327)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने ज़ोहर से पहले चार रक्अ़तें अदा कीं गोया कि उस ने वोह रक्अ़तें रात को तहज्जुद में अदा कीं और जो चार रक्अ़तें इ़शा के बा'द अदा करेगा तो येह शबे क़द्र में चार रक्अ़तें अदा करने की मिस्ल हैं।''

(طبرانی اوسط، رقم ۶۳۳۲، ج۴، ص۳۸۶)

(328)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''ज़वाल के बा'द ज़ोहर से पहले चार रक्अ़तें अदा करना सुब्ह़ में चार रक्अ़तें अदा करने की त़रह़ है और इस घड़ी में हर चीज़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करती है।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई,......

يَتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ ۝ (پ۱۴، النحل:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उस की परछाइयां दाहिने और बाएं झुकती हैं **अल्लाह** को सज्दा करती और वोह उस के हुज़ूर ज़लील हैं।

(سنن ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ النحل، رقم ۳۱۳۹، ج۵، ص۸۸)

(329)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم निस्फ़ुन्नहार के बा'द नमाज़ पढ़ना पसन्द फ़रमाया करते थे। उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! मैं देखती हूं कि आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस घड़ी में नमाज़ पढ़ना पसन्द फ़रमाते हैं ?'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''इस घड़ी में आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला अपनी मख़्लूक़ पर नज़रे रह़मत फ़रमाता है और येह वोही नमाज़ है जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना आदम व नूह़ व इब्राहीम व मूसा व ईसा عَلَيْهِمُ السَّلَام पाबन्दी से अदा किया करते थे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، الترغیب فی الصلوۃ قبل الظہر وبعدھا، رقم ۵، ج۱، ص۲۲۵)

(330)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ज़ोहर से पहले जो चार रक्अ़तें एक सलाम से अदा की जाती हैं, उन के लिये आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं।''

एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ''जब सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे हां रोनक़ अफ़रोज़ हुए तो मैं ने देखा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ोहर से पहले चार रक्अ़तें पाबन्दी से अदा किया करते और फ़रमाते कि ''जब ज़वाले शम्स होता है तो आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और नमाज़े ज़ोहर की अदाएगी तक उन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और मैं पसन्द करता हूं इस घड़ी में मेरी त़रफ़ से कोई ख़ैर उठाई जाए।'' (سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الاربع قبل الظہر، رقم ۱۲۷۰، ج۲، ص۳۵)

(331)...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाबूस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मुझे उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से येह पूछने के लिये भेजा कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किस नमाज़ को पाबन्दी के साथ अदा करना पसन्द फ़रमाया करते थे ?'' तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया कि ''नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ोहर से पहले चार रक्अ़तें अदा फ़रमाया करते और इन में त़वील क़ियाम फ़रमाया करते और इन रक्अ़तों के रुकूअ़ व सुजूद निहायत ख़ुश उस्लूबी के साथ अदा फ़रमाते।''

और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ''दिन की नफ़्ल नमाज़ों में ज़ोहर की चार रक्अ़तों के इ़लावा कोई नमाज़ रात की नमाज़ के बराबर नहीं और दिन में अदा की जाने वाली नफ़्ल नमाज़ों पर इन रक्अ़तों की फ़ज़ीलत ऐसे ही है जैसे बा जमाअ़त नमाज़ की फ़ज़ीलत तन्हा पढ़ी जाने वाली नमाज़ पर है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ والسنۃ فیھا، باب فی الاربع الرکعات قبل الظہر، رقم ۱۱۵۶، ج۲، ص۳۹)
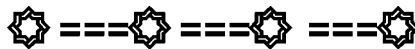
अ़स्र की पहली चार रक्अ़तों का सवाब

(332)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें अदा करता है।''

(سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الاربع قبل الظہر وبعدھا، رقم ۱۲۷۱، ج۲، ص ۳۵)

(333)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें अदा करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के बदन को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۶۱۱، ج۲۳، ص ۲۸۱)

(334)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अ़स्र से पहले चार रक्अ़तें पाबन्दी से अदा करेगा उसे जहन्नम की आग न छू सकेगी।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب الصلوۃ قبل العصر، رقم ۳۳۳۲، ج۲، ص ۴۶۰، بتغیر قلیل)

(335)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कि मेरी उम्मत हमेशा अ़स्र से पहले इन चार रक्अ़तों को अदा करती रहेगी यहां तक कि इस दुन्या ही में उस की ह़त्मी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।'' (طبرانی اوسط، رقم ۵۱۳۱، ج۴، ص ۳۸)

=== === ===

मग़रिब के बा'द छ रक्अ़तें अदा करने का सवाब

(336)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मग़रिब के बा'द छ रक्अ़तें इस त़रह़ अदा करे कि उन के दरमियान कोई बुरी बात न कहे तो येह छ रक्अ़तें बारह साल की इ़बादत के बराबर होंगी।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فی الست الرکعات بعد المغرب، رقم ۱۱۶۷، ج۲، ص۴۵)

(337)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मग़रिब के बा'द छ रक्अ़तें अदा करते देखा और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो मग़रिब के बा'द छ रक्अ़तें अदा करेगा उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।'' (طبرانی اوسط، رقم ۷۲۴۵، ج۵، ص۲۵۵)

(338)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स मग़रिब के बा'द छ रक्अ़तें अदा करेगा, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فی الصلوۃ بین المغرب والعشاء، رقم ۱۳۷۳، ج۲، ص۱۵۰)

(339)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा फिर मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़े मग़रिब अदा की और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इ़शा तक नमाज़ अदा फ़रमाते रहे।

(الترغیب والترہیب، الترغیب فی الصلوۃ بین المغرب والعشاء، رقم ۷، ج۱، ص۲۲۸)

(340)...... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **अल्लाह** तआ़ला के फ़रमान ''**تَتَجَافٰی جُنُوْبُہُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ** (پ۲۱، السجدۃ:۱۶) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से।'' की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं इन से मुराद वोह लोग हैं जो मग़रिब और इ़शा के दरमियान नवाफ़िल अदा किया करते हैं। (سنن ابی داؤد، کتاب التطوع، باب وقت قیام النبی صلی اللہ علیہ وسلم من اللیل، رقم ۱۳۲۱، ج۲، ص۵۳)
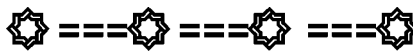
इशा के बा'द चार रक्अ़तें अदा करने का सवाब

ज़ोहर से पहले की नमाज़ के बयान में ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़दीस गुज़र चुकी कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने ज़ोहर से क़ब्ल चार रक्अ़तें अदा कीं गोया उस ने वोह रक्अ़तें तहज्जुद में अदा कीं और जिस ने इशा के बा'द चार रक्अ़तें अदा कीं गोया कि उस ने शबे क़द्र में चार रक्अ़तें (नफ़्ल) अदा कीं।''

(341)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ज़ोहर से पहले चार रक्अ़तें इशा के बा'द चार रक्अ़तें अदा करने की त़रह़ है और इशा के बा'द चार रक्अ़तें अदा करना शबे क़द्र में चार रक्अ़तें अदा करने के बराबर है।'' (طبرانی اوسط،رقم ۲۳۳۲،ج۲،ص۱۲۱)

(342)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने इशा की नमाज़ बा जमाअ़त अदा की और मस्जिद से निकलने से पहले चार रक्अ़तें (नफ़्ल) अदा कर लीं तो उस की येह रक्अ़तें शबे क़द्र में अदा की जाने वाली रक्अ़तों के बराबर हैं।''

(طبرانی اوسط،رقم ۵۲۳۹،ج۴،ص۶۸)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

नमाज़े वित्र का सवाब

(343)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ऐ अहले कुरआन ! वित्र अदा किया करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ वित्र है और वित्र को पसन्द फ़रमाता है।" (سنن ابی داوٗد، کتاب الوتر، باب استحباب الوتر، رقم ۱۴۱۶، ج۲، ص۸۸)

(344)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ वित्र है वित्र को पसन्द फ़रमाता है लिहाज़ा ऐ अहले कुरआन ! वित्र अदा किया करो।"

(سنن ابی داوٗد، کتاب الوتر، باب استحباب الوتر، رقم ۱۴۱۶، ج۲، ص۸۸)

(345)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिसे येह ख़ौफ़ हो कि रात के आख़िरी पहर बेदार न हो सकेगा, उसे चाहिये कि वोह सोने से क़ब्ल ही वित्र अदा कर लिया करे और जिसे येह ख़ौफ़ न हो तो उसे चाहिये कि रात के आख़िरी पहर वित्र अदा किया करे क्यूं कि रात के आख़िरी पहर की नमाज़ में दिन और रात के मलाएका ह़ाज़िर होते हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا، باب من خاف ان لایقوم من آخر اللیل، رقم ۷۵۵، ص۳۸۰)

(346)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जिस ने चाश्त की नमाज़ अदा की और हर महीने में तीन रोज़े रखे और सफ़र व ह़ज़र में वित्र न छोड़े तो उस के लिये एक शहीद का सवाब लिखा जाएगा।" (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب ماجاء فی الوتر، رقم ۳۹، ج۲، ص۵۰۱)

(247)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ारिजा बिन हुज़ाफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, "बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुम्हारी मदद एक ऐसी नमाज़ के ज़रीए से फ़रमाई है जो तुम्हारे ह़क़ में सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है और येह नमाज़ वित्र है और इसे तुम्हारे लिये इशा से तुलूए फ़ज्र के दरमियान रखा है।"

(سنن ابی داوٗد، کتاب الوتر، باب استحباب الوتر، رقم ۱۴۱۸، ج۲، ص۸۸)

बा वुज़ू सोने का सवाब

(348)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो बा वुज़ू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुए अपने बिस्तर की त़रफ़ आए यहां तक उस पर ग़ुनूदगी छा जाए तो वोह रात की जिस घड़ी में भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुन्या और आख़िरत की जो भलाई त़लब करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह भलाई अ़त़ा फ़रमा देगा।'' (سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۹۲، رقم ۳۵۳۷، ج۵، ص۳۱۱)

(349)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स बा वुज़ू रात गुज़ारता है तो एक फ़िरिश्ता उस के पहलू में रात गुज़ारता है, जब वोह बेदार होता है तो फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपने फ़ुलां बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमा दे कि उस ने बा वुज़ू रात गुज़ारी है।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الطھارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۱۰۴۸، ج۲، ص۱۹۴)

(350)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कि जो मुसल्मान बा वुज़ू सोए फिर जब वोह रात में बेदार हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुन्या और आख़िरत की कोई भलाई त़लब करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह भलाई अ़त़ा फ़रमा देगा।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النوم علی طھارۃ، رقم ۵۰۴۲، ج۴، ص۴۰۳)

(351)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपने अज्साम को ख़ूब पाक रखा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें पाक फ़रमा देगा क्यूं कि जो शख़्स पाक रहते हुए रात गुज़ारता है तो उस के पहलू में एक फ़िरिश्ता भी रात गुज़ारता है और रात की कोई घड़ी ऐसी नहीं गुज़रती जिस में वोह येह दुआ़ न करता हो, ''ऐ **अल्लाह** ! अपने बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमा दे क्यूं कि येह बा वुज़ू सो रहा है।'' (طبرانی اوسط، رقم ۵۰۸۷، ج۴، ص۲۶)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
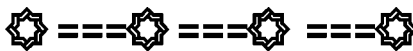
तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब

इस बारे में कुरआने मजीद फुरक़ाने ह़मीद में कई आयात हैं चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ۝ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِی الْخَيْرٰتِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝ (پ۴، آل عمران: ۱۱۳، ۱۱۴، ۱۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : किताबियों में कुछ वोह हैं कि ह़क़ पर क़ाइम हैं **अल्लाह** की आयतें पढ़ते हैं रात की घड़ियों में और सज्दा करते हैं **अल्लाह** और पिछले दिन पर ईमान लाते हैं और भलाई का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते हैं और नेक कामों पर दौड़ते हैं और येह लोग लाइक़ हैं और वोह जो भलाई करें उन का ह़क़ न मारा जाएगा और **अल्लाह** को मा'लूम हैं डर वाले।

(2) وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖۗ عَسٰۤى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝ (پ۱۵، بنی اسرآئیل: ۷۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रात के कुछ ह़िस्से में तहज्जुद करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी ह़म्द करें।

(3) وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖۗ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَاۤ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝ (پ۱۹، الفرقان: ۶۳ تا ۶۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रह़मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं और जब जाहिल उन से बात करते हैं तो कहते हैं बस सलाम और वोह जो रात काटते हैं अपने रब के लिये सज्दे और क़ियाम में और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हम से फैर दे जहन्नम का अ़ज़ाब बेशक इस का अ़ज़ाब गले का गुल (फन्दा) है बेशक वोह बहुत ही बुरी ठहरने की जगह है और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और इन दोनों के बीच ए'तिदाल पर रहें।

(4) وَالَّذِیْنَ لَا یَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا یَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا یَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِکَ یَلْقَ اَثَامًا ۝ یُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ وَیَخْلُدْ فِیْهٖ مُهَانًا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِکَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَکَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ یَتُوْبُ اِلَی اللّٰهِ مَتَابًا ۝ وَالَّذِیْنَ لَا یَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا کِرَامًا ۝ وَالَّذِیْنَ اِذَا ذُکِّرُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ یَخِرُّوْا عَلَیْهَا صُمًّا وَّعُمْیَانًا ۝ وَالَّذِیْنَ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا ۝ اُولٰٓئِکَ یُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَیُلَقَّوْنَ فِیْهَا تَحِیَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ (پ۱۹، الفرقان: ۶۷ تا ۷۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाहक़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है। और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं देते और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इ़ज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं और वोह कि जब उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो उन पर बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेशवा बना उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का और वहां मुजरे और सलाम के साथ उन की पेशवाई होगी हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह।

(5) تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۝ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا کَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۲۱، السجدة: ۱۶، ۱۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

(6) اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّیْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا یَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَیَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَالَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ۠ 0

(پ۲۳،الزمر:۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में आख़िरत से डरता और अपने रब की रह़मत की आस लगाए क्या वोह ना फ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं।

(7) اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ جَنّٰتٍ وَّعُیُوْنٍ 0 اٰخِذِیْنَ مَاۤ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِیْنَ 0 كَانُوْا قَلِیْلًا مِّنَ الَّیْلِ مَا یَهْجَعُوْنَ 0 وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ 0 وَفِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ 0 (پ۲۶،الذٰریٰت:۱۵تا۱۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक परहेज़ गार बाग़ों और चश्मों में हैं अपने रब की अ़त़ाएं लेते हुए बेशक वोह इस से पहले नेकूकार थे वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़्फ़ार करते और उन के मालों में ह़क़ था मंगता और बे नसीब का।

इस बारे में अह़ादीसे मुक़द्दसा :

(352)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''र-मज़ान के बा'द सब से अफ़्ज़ल रोज़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महीने मुह़र्रम के हैं और फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द सब से अफ़्ज़ल नमाज़ रात में पढ़ी जाने वाली नमाज़ है।''

(صحیح مسلم،کتاب الصیام،باب فضل صوم المحرم،رقم ۱۱۶۳،ص۵۹۱)

(353)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम में से कोई शख़्स सो जाता है तो शैत़ान उस के सर के पिछले हिस्से पर तीन गिरहें लगा देता है, वोह हर गिरह पर कहता है कि ''लम्बी तान के सो जा, अभी तो बहुत रात बाक़ी है।'' जब वोह शख़्स बेदार हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो एक गिरह खुल जाती है फिर अगर वोह वुज़ू करे तो दूसरी गिरह खुल जाती है और अगर नमाज़ अदा करे तो तीसरी भी खुल जाती है और वोह शख़्स ताज़ा दम हो कर सुब्ह़ करता है ब सूरते दीगर थका मांदा सुस्त हो कर सुब्ह़ करता है।'' एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है, ''तो वोह ताज़ा दम हो कर सुब्ह़ करता है और ख़ैर को पा लेता है ब सूरते दीगर थका मांदा सुब्ह़ करता है और ख़ैर को नहीं पाता।'' जब कि एक रिवायत में है ''लिहाज़ा शैत़ान की गांठों को खोल लिया करो अगर्चे दो रक्अ़तों के ज़रीए़ ही से हो।''

(صحیح بخاری،کتاب التہجد،باب عقد الشیطان علی قافیۃ الراس الخ،رقم ۱۱۴۲،ج۱،ص۳۸۷)

(354)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

को फ़रमाते हुए सुना कि "मेरी उम्मत में से जो शख़्स रात को बेदार हो कर अपने नफ़्स को त़हारत की त़रफ़ माइल करता है ह़ालां कि उस पर शैत़ान गिरहें लगा चुका होता है तो जब वोह अपने हाथ धोता है तो एक गिरह खुल जाती है, जब वोह चेहरा धोता है तो दूसरी गिरह खुल जाती है, जब वोह अपने सर का मस्ह़ करता है तो तीसरी गिरह खुल जाती है जब वोह अपने पाउं धोता है तो चौथी गिरह खुल जाती है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हिजाब के पीछे मौजूद फ़िरिश्तों से फ़रमाता है कि "मेरे इस बन्दे को देखो जो अपने नफ़्स को मुझ से सुवाल करने पर माइल करता है येह बन्दा मुझ से जो कुछ मांगेगा वोह उसे अ़त़ा कर दिया जाएगा।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الطھارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۱۱۴۹، ج ۲، ص ۱۹۴)

(355)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "बेशक रात में एक ऐसी साअ़त है कि उस घड़ी में मुसल्मान बन्दा जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से दुन्या व आख़िरत की कोई भलाई त़लब करता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे वोह भलाई ज़रूर अ़त़ा फ़रमाता है और येह साअ़त हर रात में होती है।"

(صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا، باب فی اللیل ساعۃ مستجاب فیھا الدعاء، رقم ۷۵۷، ص ۳۸۰)

(356)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरह तशरीफ़ लाए तो लोग जूक़ दर जूक़ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने लगे। मैं भी उन लोगों में शामिल था। जब मैं ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेह़रए मुबारक को ग़ौर से देखा और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में छान बीन की तो जान लिया कि येह किसी झूटे का चेहरा नहीं और पहली बात जो मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी वोह येह थी कि "ऐ लोगो! सलाम को आ़म करो और मोह़ताजों को खाना खिलाया करो और सिलए रेह़्मी इख़्तियार करो और रात को जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ा करो जन्नत में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओगे।"

(سنن ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۴۲، رقم ۲۴۹۳، ج ۴، ص ۲۱۹)

(357)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "बेशक जन्नत में कुछ ऐसे मह़ल्लात हैं जिन में आर पार नज़र आता है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने वोह मह़ल्लात उन लोगों के लिये तय्यार किये हैं जो मोह़ताजों को खाना खिलाते हैं, सलाम को आ़म करते और रात को जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ते हैं।" (صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام واطعام الطعام، رقم ۵۰۹، ج ۱، ص ۳۶۳)

(358)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! जब मैं आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देख लेता हूं तो मेरा दिल खु़श हो जाता है और मेरी आंखें ठन्डी हो जाती हैं मुझे अश्या के ह़क़ाइक़ से मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर दीजिये।" तो

इर्शाद फ़रमाया, ''हर चीज़ पानी से पैदा की गई है।'' फिर मैं ने अ़र्ज़ किया ''मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जिसे कर के मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।'' तो फ़रमाया कि ''मोह़ताजों को खाना खिलाओ और सलाम को आ़म करो और सिलए रेह़्मी इख़्तियार करो और रात में जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ा करो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।'' (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب فصل فی قیام اللیل، رقم ۲۵۵۰، ج۴، ص۱۱۵)

(359)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ियामत के दिन तमाम लोग एक ही जगह इकठ्ठे होंगे फिर एक मुनादी निदा करेगा कि ''कहां हैं वोह लोग जिन के पहलू बिस्तरों से जुदा रहते थे ?'' फिर वोह लोग खड़े होंगे और वोह ता'दाद में बहुत कम होंगे और बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे, फिर तमाम लोगों से ह़िसाब शुरूअ़ होगा।''

(الترغیب، والترهیب، کتاب النوافل، رقم ۹، ج۱، ص ۲۴۰)

(360)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक जन्नत में एक दरख़्त है जिस की शाख़ों से हुल्ले या'नी कपड़ों के नए जोड़े निकलते हैं जब कि उस की जड़ों से सोने के घोड़े निकलते हैं जो कि ज़ीन पहने हुए हैं। उन की लगामें मोती और याक़ूत की होती हैं और वोह बौलो बराज़ नहीं करते उन के पर होते हैं और वोह ह़द्दे निगाह पर क़दम रखते हैं अहले जन्नत उन पर उड़ते हुए सुवारी करेंगे और उन से एक द-रजा नीचे वाले लोग अ़र्ज़ करेंगे कि ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन लोगों को येह द-रजा कैसे मिला ?'' तो उन से कहा जाएगा, ''येह रात को नमाज़ पढ़ा करते थे जब कि तुम सो जाया करते थे, येह दिन में रोज़ा रखा करते जब कि तुम खाया करते थे और येह अल्लाह की राह में जिहाद किया करते थे जब कि तुम जिहाद से फ़िरार इख़्तियार करते थे।''

(الترغیب والترهیب، کتاب النوافل، الترغیب فی قیام اللیل، رقم ۸، ج۱، ص ۲۴۰)

(361)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रात की नमाज़ की दिन की नमाज़ पर फ़ज़ीलत इसी त़रह़ है जैसे पोशीदा स-दक़े की फ़ज़ीलत ए'लानिया स-दक़े पर है।''

(طبرانی کبیر، رقم ۸۹۹۸، ج۹، ص ۲۰۵)

(362)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि ''मेरी मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना दस हज़ार नमाज़ों के बराबर है और मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ना एक लाख नमाज़ों के बराबर है और मैदाने

जिहाद में नमाज़ पढ़ना बीस लाख नमाज़ों के बराबर है, और इन सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाली नमाज़ बन्दे की वोह दो रक्अ़तें हैं जिन्हें वोह रात के दरमियानी हि़स्से में रिज़ाए इलाही के लिये अदा करता है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، الترغیب فی قیام اللیل، رقم ۲۲، ج۱، ص۲۴۳)

(363)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग ह़ामिलीने क़ुरआन और रात को जाग कर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इ़बादत करने वाले हैं।''

(الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، الترغیب فی قیام اللیل، رقم ۲۷، ج۱، ص۲۴۳)

(364)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام, सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोजे़ शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह ! जितना चाहें ज़िन्दा रहें बिल आख़िर मौत आनी है, जो चाहें अ़मल करें बिल आख़िर उस की जज़ा मिलनी है, जिस से चाहें मह़ब्बत करें बिल आख़िर उस से जुदा होना है, जान लीजिये कि मोमिन का कमाल रात को क़ियाम करने में है और उस की इ़ज़्ज़त लोगों से बे नियाज़ होने में है।''

(طبرانی اوسط، رقم ۴۲۷۸، ج۳، ص۱۸۷)

(365)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रात के क़ियाम को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह तुम से पहले सालिह़ीन का त़रीक़ा और तुम्हारे रब عَزَّ وَجَلَّ की क़ुरबत का ज़रीआ़ है और गुनाहों को मिटाने और गुनाहों से बचाने का सबब है।''

(سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی دعاء النبی، رقم ۳۵۶۰، ج۵، ص۳۲۳)

(366)...... इमाम तिरमिज़ी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने इसी ह़दीस को ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत किया है।

(سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی دعاء النبی، رقم ۳۵۶۰، ج۵، ص۳۲۳)

(367)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रात के क़ियाम को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह तुम से पहले सालिह़ीन का त़रीक़ा और तुम्हारे रब عَزَّ وَجَلَّ की क़ुरबत का ज़रीआ़ है और गुनाहों को मिटाने और जिस्म से बीमारियां दूर करने का सबब है।''

(طبرانی کبیر، رقم ۶۱۵۴، ج۶، ص۲۵۸)

(368)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और ह़ज़रते अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो रात को बेदार हो कर अपनी अहलिया को जगाए और फिर वोह दोनों दो रक्अ़तें अदा करें तो उन का शुमार कसरत के साथ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों में होगा।''
(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فیمن ایقظ اھلہ من اللیل، رقم ۱۳۳۵، ج ۲، ص ۱۲۸)

(369)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस शख़्स पर रह़्म फ़रमाए जो रात को बेदार हो कर नमाज़ पढ़ता है और अपनी ज़ौजा को नमाज़ के लिये जगाता है अगर वोह इन्कार करती है तो उस के चेहरे पर पानी छिड़क्ता है, **अल्लाह** उस औ़रत पर रह़्म फ़रमाए जो रात को उठ कर नमाज़ पढ़ती है और अपने शोहर को नमाज़ के लिये जगाती है अगर उस का शोहर उठने से इन्कार करता है तो उस के चेहरे पर पानी छिड़क्ती है।''
(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلوۃ، باب ماجاء فیمن ایقظ اھلہ من اللیل، رقم ۱۳۳۶، ج ۲، ص ۱۲۸)

(370)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स रात को उठ कर अपनी ज़ौजा को जगाता है अगर उस की ज़ौजा पर नींद ग़ालिब होती है तो उस के चेहरे पर पानी छिड़क्ता है फिर वोह दोनों उठ कर अपने घर में नमाज़ पढ़ते हैं और एक घड़ी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं तो उन दोनों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।''
(طبرانی کبیر، رقم ۴۸، ج ۳، ص ۲۹۵)

(371)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बन्दे के सब से ज़ियादा क़रीब रात के आख़िरी हि़स्से में होता है अगर तुम उस घड़ी में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों में शामिल हो सको, तो शामिल हो जाओ।''
(صحیح ابن خزیمہ، جماع ابواب صلوۃ التطوع باللیل، باب استحباب الدعاء فی نصف اللیل الخ، رقم ۱۱۴۷، ج ۲، ص ۱۸۲)

(372)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स रात के आख़िरी हि़स्से में उठ कर सूरए ब-क़रह और आले इमरान पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे कभी रुस्वा न करेगा।''
(طبرانی اوسط، رقم ۲۷۷۱، ج ۱، ص ۴۸۰)

(373)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स रात को थोड़ा खाना खाए और पानी कम पिये और नमाज़ पढ़ते हुए रात गुज़ारे तो सुब्ह़ तक हूरे ई़न उस के पहलू में होती हैं।''
(طبرانی کبیر، رقم ۱۱۸۹۱، ج ۱۱، ص ۱۵۸)

(374)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तीन आदमियों से मह़ब्बत फ़रमाता है, उन से ख़ुश होता है और उन्हें ख़ुश ख़बरी देता है, (1) वोह शख़्स कि जब कुफ़्फ़ार का कोई लश्कर ह़म्ला आवर

हो तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उस से अपनी जान के ज़रीए जिहाद करे फिर या तो क़त्ल हो जाए या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मदद करे और उसे किफ़ायत करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाता है कि मेरे इस बन्दे की त़रफ़ तो देखो कि मेरी रिज़ा के लिये अपनी जान पर कैसे सब्र करता है ? (2) वोह शख़्स जिस की बीवी ख़ूब सूरत और बिस्तर उ़म्दा व नर्म है और वोह रात को बेदार हो कर नमाज़ पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''येह अपनी ख़्वाहिश को छोड़ कर मेरा ज़िक्र कर रहा है अगर चाहता तो सो जाता ।'' (3) वोह शख़्स जो सफ़र में हो और उस के साथ एक क़ाफ़िला भी हो वोह रात देर तक जागते रहें फिर सो जाएं और वोह शख़्स रात के आख़िरी ह़िस्से में तंगदस्ती और ख़ुशह़ाली दोनों ह़ालतों में नमाज़ पढ़े ।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب ثان فی صلوۃ اللیل، رقم ۳۵۳۶، ج۲، ص۵۲۵)

(375)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हमारा रब عَزَّوَجَلَّ दो आदमियों से ख़ुश होता है, (1) जो शख़्स अपने और अपनी बीवी के बिस्तर को छोड़ कर नमाज़ अदा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है ''मेरे इस बन्दे को देखो जो अपने और अपनी बीवी के बिस्तर को छोड़ कर मेरे इन्आ़मात में रग़बत और मेरे अ़ज़ाब के ख़ौफ़ की वजह से नमाज़ पढ़ता है ।'' (2) जो दुश्मन से जिहाद करता हो फिर उस के साथी शिकस्त खा कर भाग जाएं और येह शिकस्त के नुक़्सान और साबित क़–दमी के इन्आ़म को याद करे और फिर पलट कर मरते दम तक लड़ता रहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''मेरे इस बन्दे को देखो जो मेरे इन्आ़मात की उम्मीद और मेरे अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से लौट आया और डट कर लड़ता रहा यहां तक कि इस का ख़ून बहा दिया गया ।''

(مسند احمد، مسند عبداللہ بن مسعود رقم ۳۹۴۹، ج۲، ص۹۲)

(376)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़–मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़सद जाइज़ नहीं मगर दो आदमियों से (1) वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन अ़त़ा फ़रमाया और वोह दिन रात उस की तिलावत करता रहे, (2) वोह शख़्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़त़ा फ़रमाया और वोह उसे दिन रात (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में) ख़र्च करता रहे ।''

(صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا، باب فضل من یقوم بالقران ویعلمہ، رقم ۸۱۵، ص۴۰۷)

वज़ाह़त :

किसी की ने'मत के ज़वाल की तमन्ना करना ह़सद कहलाता है और येह ह़राम है और कभी कभार ह़सद का इत़्लाक़ ग़िब्त़ा (रश्क) पर भी होता है। इस से मुराद किसी की ने'मत अपने लिये भी त़लब करना है इसे रश्क कहते हैं इस ह़दीस में ह़सद का येही मा'ना मुराद है और येह एक अच्छी तमन्ना है और इस पर सवाब दिया जाएगा ।

(377)...... ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद और ह़ज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो रात में दस आयतें पढ़ेगा उस के लिये एक क़िन्त़ार सवाब लिखा जाएगा और एक क़िन्त़ार दुन्या और उस की हर चीज़ से बेहतर है। फिर जब क़ियामत क़ाइम होगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स से फ़रमाएगा क़ुरआन पढ़ते जाओ और द-रजात तै़ करते जाओ, (तुम्हारे लिये) हर आयत के बदले एक द-रजा है, यहां तक कि जो आख़िरी आयत उसे याद होगी उतने द-रजात तै़ करता जाएगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे से फ़रमाएगा थाम ले तो वोह बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ख़ूब जानने वाला है।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''इस ख़ुल्द (हमेशगी) और इन ने'मतों को थाम ले।'' (طبرانی کبیر،رقم ۱۲۵۳،ج۸،ص۵۰)

(378)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स ने किसी रात में नमाज़ के दौरान सो आयतें पढ़ीं, उस का शुमार ग़ाफ़िलीन में न होगा और जिस शख़्स ने किसी रात में नमाज़ के दौरान दो सो आयतें पढ़ीं, उस का शुमार इबादत गुज़ार बन्दों और मुख़्लिसीन में होगा।''

(صحیح ابن خزیمہ، جماع ابواب صلوۃ التطوع باللیل، رقم ۱۱۴۳، ج۲، ص۱۸۰)

(379)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो रात में दस आयतें पढ़ेगा ग़ाफ़िलीन में न लिखा जाएगा। और जो चार सो आयतें पढ़ेगा उस का शुमार आ़बिदीन में होगा और जो पांच सो आयतें पढ़ेगा उस का शुमार ह़ाफ़िज़ीन में होगा और जो छ सो आयतें पढ़ेगा उस का शुमार ख़ाशिईन में होगा और जो आठ सो आयतें पढ़ेगा उस का शुमार इत़ाअ़त गुज़ारों में होगा और जो हज़ार आयतें पढ़ेगा उस के लिये एक क़िन्त़ार सवाब है और एक क़िन्त़ार बारह सो ऊक़िया का होता है और एक ऊक़िया ज़मीन व आस्मान के दरमियान जो कुछ है उन सब से बेहतर है।'' (रावी कहते हैं) येह फ़रमाया कि ''(एक ऊक़िया) हर उस चीज़ से बेहतर है जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है और जो दो हज़ार आयतें पढ़ेगा उस का शुमार उन लोगों में होगा जिन के लिये जन्नत वाजिब हो चुकी।''

(طبرانی کبیر،رقم ۷۷۴۸،ج۸،ص۱۸۰)

(380)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स रात को उठ कर नमाज़ में दस आयतें पढ़ेगा उस का शुमार ग़ाफ़िलीन में न होगा और जो सो आयतें पढ़ेगा उस का शुमार इबादत गुज़ारों में होगा और जो एक हज़ार आयतें पढ़ेगा उस का शुमार उन लोगों में होगा जिन के लिये एक क़िन्त़ार सवाब लिखा जाता है।'' (صحیح ابن خزیمہ، جماع ابواب صلوۃ التطوع الخ، باب فضل قراءۃ الف آیۃ الخ، رقم ۱۱۴۴، ج۲، ص۱۸۱)

(381)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाया, ''एक क़िन्त़ार बारह सो ऊक़िया का होता है और एक ऊक़िया ज़मीन व आस्मान के दरमियान की हर चीज़ से बेहतर है।'' (صحیح ابن حبان، فصل فی قیام اللیل، رقم ۲۵۶۴، ج۴، ص۱۲۰)

(382)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रात को उठ कर नमाज़ अदा फ़रमाया करते थे यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़-दमैने शरीफ़ैन सूज गए। मैं ने अ़र्ज़ किया, ''आप ऐसा क्यूं करते हैं? ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सबब से आप के अगलों और पिछलों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''क्या मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र गुज़ार बन्दा बनना पसन्द न करूं?'' (صحیح بخاری، کتاب التہجد، باب قیام النبی صلی اللہ علیہ وسلم حتی ترم قدماہ، رقم ۱۱۳۰، ج۱، ص۳۸۴)

(383)...... ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मुझ से उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया ''रात की नमाज़ (या'नी तहज्जुद) को तर्क न किया करो क्यूं कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इसे तर्क न फ़रमाया करते थे और जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बीमार होते या थके हुए होते तो इसे बैठ कर अदा फ़रमा लिया करते।'' (صحیح ابن خزیمہ، جماع ابواب صلوۃ التطوع باللیل، باب استحباب صلوۃ اللیل الخ، رقم ۱۱۳۷، ج۲، ص۱۷۷)

(384)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام से उन की वालिदा ने फ़रमाया, ''बेटा रात को ज़ियादा देर न सोना क्यूं कि रात को ज़ियादा सोना इन्सान को क़ियामत के दिन फ़क़ीर बना देगा।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان فصل فی قیام اللیل، رقم ۱۳۳۲، ج۲، ص۱۲۵)

(385)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! मुझे ऐसे अ़मल के बारे में ख़बर दीजिये जो मुझे जन्नत में दाख़िल और जहन्नम से दूर कर दे।'' इर्शाद फ़रमाया, ''तुम ने एक अ़ज़ीम चीज़ के बारे में सुवाल किया है और बेशक येह अ़मल उसी के लिये आसान है जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे आसान फ़रमाए।'' (फिर फ़रमाया), ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कोई शरीक ठहराए बिग़ैर उस की इ़बादत करो और नमाज़ अदा करो और ज़कात अदा करो और र-मज़ान के रोज़े रखो और अगर बैतुल्लाह की त़रफ़ जाने की इस्तित़ाअ़त पाओ तो ह़ज करो।'' फिर फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें ख़ैर के दरवाज़ों के बारे में न बताऊं? रोज़ा ढाल है और स-दक़ा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ पानी आग को बुझा देता है और बन्दे का रात के आख़िरी ह़िस्से में नमाज़ पढ़ना भलाई के दरवाज़े हैं।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

تَتَجَافٰی جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۝ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۲۱، السجدہ:۱۶۔۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का ।

(ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب کف اللسان فی الفتنۃ، رقم ۳۹۷۳، ج۴، ص۳۴۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि तौरात में लिखा हुवा है कि ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों के लिये जिन के पहलू बिस्तरों से जुदा रहते हैं ऐसे ऐसे इन्आ़मात तय्यार किये हैं कि जिन्हें न तो किसी आंख ने देखा न ही किसी कान ने सुना और न किसी बन्दे के दिल में इस का ख़याल गुज़रा, उन्हें न तो कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता जानता है न ही कोई नबिय्ये मुरसल । फिर अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हमारे क़ुरआन में इस का तज़्किरा इस त़रह़ किया गया है

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ (پ۲۱، السجدہ:۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का ।

चन्द ईमान अफ़रोज़ रिवायात

ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन महरान عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ कहते हैं कि मुझ तक येह बात पहुंची है कि ''अ़र्श के नीचे मुर्ग़ की सूरत का एक फ़िरिश्ता है जिस के नाख़ुन मोती के और कल्ग़ी सब्ज़ ज़बर-जद की है। जब रात का तिहाई ह़िस्सा गुज़र जाता है तो वोह अपने परों को फड़-फड़ाता है और कहता है, ''क़ियाम करने वाले उठ जाएं।'' फिर जब आधी रात गुज़र जाती है तो अपने परों को फड़-फड़ाते हुए कहता है कि ''तहज्जुद पढ़ने वाले उठ जाएं।'' और जब दो तिहाई रात गुज़र जाती है तो अपने पर फड़फड़ा कर कहता है कि ''नमाज़ी उठ जाएं।'' और जब फ़ज्र तुलूअ़ हो जाती है तो कहता है कि ''ग़ाफ़िल लोग उठ जाएं उन के गुनाह उन के सर पर मौजूद हैं।''

बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ख़्वाब में देखा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को फ़रमाते हुए सुना कि ''मुझे अपनी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम ! मैं सुलैमान तीमी के ठिकाने को ज़रूर इ़ज़्ज़त वाला बनाऊंगा क्यूं कि उस ने चालीस साल तक मेरे लिये इ़शा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ अदा की।''

कहा जाता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान तीमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का मज़्हब येह था कि अगर नींद दिल को ग़ाफ़िल कर दे तो वुज़ू टूट जाता है।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब लोगों के सो जाने के बा'द उठ कर क़ियाम फ़रमाया करते तो उन से सुब्ह़ तक शह्द की मखखी की सी भिन-भिनाहट सुनाई देती।

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब अपने बिस्तर पर जाते तो इस त़रह़ करवटें बदलते जैसे हंडिया में गन्दुम का दाना उलट पुलट होता है और फ़रमाते, "जहन्नम की याद मुझे नींद से रोक रही है।" फिर उठ कर नमाज़ पढ़ने लगते।

हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ अपना बिस्तर बिछा कर उस पर लैट जाते और फिर इस त़रह़ करवटें बदलते जैसे हंडिया में दाना उछलता है फिर उछल कर खड़े होते और बिस्तर को तह कर के रख देते और सुब्ह़ तक नमाज़ में मश्ग़ूल रहते फिर कहते "जहन्नम की याद ने इबादत गुज़ारों की नींदें उड़ा दी हैं।"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रवाद رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ सारी रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर आते और उस पर हाथ फैर कर कहते, "तू बहुत नर्म और उ़म्दा है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जन्नत का बिस्तर तुझ से ज़ियादा नर्म होगा फिर सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते।"

हज़रते सय्यिदुना सिला बिन अश्यम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रात नमाज़ पढ़ते जब सुब्ह़ होती तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करते, "इलाही ! मैं जन्नत के क़ाबिल तो नहीं मगर तू अपनी रह़मत से मुझे जहन्नम से पनाह अ़त़ा फ़रमा।"

हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजए मोह़-त-रमा फ़रमाती हैं कि "हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की टांगें नमाज़ की कसरत से हर वक़्त सूजी रहती थीं, अगर मैं उन के पीछे बैठती हूं तो खुदा की क़सम ! उन पर रह़म खा कर रो पड़ती हूं।"

हज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ से ज़ियादा किसी इबादत गुज़ार को नहीं देखा आप عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ ने अठानवे साल की उ़म्र पाई मगर म-रज़े मौत के इलावा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को कभी आराम करते हुए नहीं देखा गया।

हज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद मग़ाज़िली عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद जरीरी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِ ने एक साल मक्कए मुकर्रमा में गुज़ारा इस दौरान न आप عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ सोए, न किसी से कोई बात की न किसी सुतून या दीवार से टेक लगा कर बैठे और न ही अपने पाउं फैलाए।

हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़बीब عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ को देखा कि आप ने इशा के बा'द वुज़ू किया, फिर जाए नमाज़ पर पहुंच कर अपनी दाढ़ी पकड़ कर रोने लगे और अ़र्ज़ करने लगे, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मालिक के बुढ़ापे को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा दे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि जन्नती कौन है और जहन्नमी कौन ? और "मालिक" इन दोनों में से कौन है ? और मालिक का उख़्रवी घर कौन सा है ?" आप عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ तुलूए फ़ज्र तक येही मुनाजात करते रहे।

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उ़त्बा बिन फ़रक़द عَلَیْہِ الرَّحْمَة रोज़ाना रात को अपने घर से निकल कर क़ब्रिस्तान आते और कहते, ''ऐ क़ब्र वालो ! सह़ीफ़े लपेट दिये गए और आ'माल उठा लिये गए।'' फिर क़दम सीधे कर के सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते फिर वापस आ कर नमाज़े फ़ज्र में ह़ाज़िर हो जाते।

हज़रते अ़ली बिन अबुल ह़सन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक रात हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ज़-करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام ने पेट भर कर गन्दुम की रोटी खा ली और अपने वज़ाइफ़ तर्क कर के सुब्ह़ तक सोए रहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की त़रफ़ वह़्य नाज़िल फ़रमाई कि ''ऐ यह़्या ! क्या तुम्हें मेरे घर से बेहतर कोई घर मिल गया है ? या मेरे पड़ोस से अच्छा कोई पड़ोस मिल गया है ? मुझे अपनी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम अगर फ़िरदौस तुम पर ज़ाहिर हो जाती तो उस के शौक़ में तुम्हारा जिस्म पिघल जाता और तुम्हारी जान चली जाती और अगर जहन्नम तुम पर ज़ाहिर हो जाती तो तुम्हारा जिस्म पिघल जाता और तुम आंसूओं के बा'द ख़ून और पीप बहा कर रोते और लोहे का लिबास पहन लेते।''

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं एक रात अपना विर्द भूल गया, जब सोया तो मैं ने ख़्वाब में एक ख़ूब सूरत लड़की को देखा उस के हाथ में एक रुक़्आ़ था उस ने मुझ से कहा '' क्या तुम इसे पढ़ना पसन्द करते हो ?'' मैं ने कहा ''हां।'' तो उस ने वोह रुक़्आ़ मुझे दे दिया मैं ने उसे देखा तो उस में लिखा था,......

أ ألهتك اللذائذ والامانى — عن البيض الاوانس فى الجنان

تعيش مخلداً لاموت فيها — وتلهو فى الجنان مع الحسان

تنبه من منامك ان خيرا — من النوم التهجد بالقران

तरजमा : (1) क्या तुझे लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों ने जन्नत की कंवारी लड़कियों से ग़ाफ़िल कर दिया। (2) जन्नत में तू हमेशा ज़िन्दा रहेगा क्यूं कि उस में मौत नहीं। और वहां तू ख़ूब सूरत औ़रतों के साथ खेलेगा। (3) अपनी नींद से बेदार हो जा क्यूं कि तहज्जुद में कुरआन पढ़ना नींद से बेहतर है।

हज़रते सय्यिदुना अज़्हर बिन मुग़ीस عَلَیْہِ الرَّحْمَة जो कि निहायत इबादत गुज़ार थे, फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में एक ऐसी औ़रत को देखा जो दुन्या की औ़रतों की त़रह़ न थी तो मैं ने उस से पूछा, ''तुम कौन हो ?'' उस ने जवाब दिया, ''मैं जन्नत की हूर हूं।'' येह सुन कर मैं ने उस से कहा, ''मेरे साथ शादी कर लो उस ने कहा मेरे मालिक के पास निकाह़ का पैग़ाम भेज दो और मेरा महर अदा कर दो।'' मैं ने पूछा, ''तुम्हारा महर क्या है ?'' तो उस ने कहा, ''रात में देर तक नमाज़ पढ़ना।''

हज़रते सय्यिदुना उ़ला बिन ज़ियाद عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ रोज़ाना रात को एक कुरआने पाक ख़त्म किया करते थे। आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने एक रात अपनी ज़ौजए मोह़-त-रमा से फ़रमाया, "आज रात मैं कुछ थकावट मह़सूस कर रहा हूं कुछ देर बा'द मुझे जगा देना।" जब उन की ज़ौजए मोह़-त-रमा ने कुछ देर बा'द उन्हें जगाया तो आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने त़बीअ़त में कुछ गिरानी मह़सूस की तो अपनी ज़ौजा से कहा, "मुझे एक घन्टा और सोने दो।" और दोबारा सो गए तो ख़्वाब में एक शख़्स उन के पास आया और पेशानी के बाल पकड़ कर उन्हें जगा कर कहा, "ऐ इब्ने ज़ियाद ! उठो, अपने रब عَزَّوَجَلَّ को याद करो वोह तुम्हारा चरचा करेगा।" तो आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ घबरा कर उठे तो आप की पेशानी के बाल उसी त़रह़ खड़े थे और मरते दम तक खड़े ही रहे।

इमाम अबू बक्र त़रत़ोशी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि एक रात मैं मस्जिदे अक़्सा में सो रहा था कि एक फ़लक शिगाफ़ आवाज़ ने मुझे डरा दिया, मुनादी कह रहा था :

اخوف وامن ان ذا لعجیب ثکلتك من قلب فانت کذوب

اما وجلال اللہ لو کنت صادقاً لما کان للاغماض منك نصیب

(1) ख़ौफ़ भी रखते हो और अम्न से सो रहे हो येह बड़ी अ़जीब बात है मैं तो दिल से तुम पर रो रहा हूं क्यूं कि तुम बहुत झूटे हो।

(2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर तुम सच्चे होते तो नींद का तुम्हारे पास कोई ह़िस्सा न होता।

(फिर फ़रमाया), "ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस आवाज़ ने आंखों को रुला दिया और दिलों को ग़मगीन कर दिया।"

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़सीम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की बेटी ने आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ से अ़र्ज़ किया, "ऐ अब्बूजान ! क्या वजह है कि लोग सो जाते हैं और आप नहीं सोते ?" तो इर्शाद फ़रमाया, "बेटी ! तुम्हारा बाप जहन्नम से डरता है।"

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन्हें फ़ज्र की नमाज़ के बा'द बैठे हुए पाया मैं ने अपने दिल में कहा कि मैं इन की तस्बीह़ में रुकावट नहीं डालता। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी जगह बैठे रहे, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ज़ोहर की नमाज़ अदा करने तक अपनी जगह बैठे रहे, फिर अ़स्र तक नमाज़ पढ़ते रहे और अ़स्र की नमाज़ अदा फ़रमाई फिर मग़रिब की नमाज़ तक अपनी जगह बैठे रहे, फिर मग़रिब अदा की और इशा तक बैठे रहे, फिर इशा की नमाज़ अदा की और फ़ज्र तक अपनी जगह बैठे रहे जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ग़ुनू-दगी छाने लगी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ किया, "या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं बहुत ज़ियादा सोने वाली आंख और न भरने वाले पेट से तेरी पनाह चाहता हूं।" येह सुन कर मैं ने अपने दिल में कहा, "मेरे लिये इतना ही काफ़ी है।" और वापस लौट आया।

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन हर्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं तअज्जुब है उस पर जो जानता है कि उस के सर पर जन्नत सजी हुई है और उस के नीचे जहन्नम दहक रही है फिर वोह इन दोनों के दरमियान कैसे सो जाता है।

हज़रते सय्यिदुना सिला बिन अश्यम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की टांगें तवा-लते क़ियाम (लम्बे क़ियाम) की वजह से सूज गईं थीं। आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ इस क़दर कसरत से इबादत किया करते थे कि अगर आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ से कह दिया जाता कि कल क़ियामत है तो भी अपनी इबादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते। जब सर्दी का मौसिम आता तो आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ मकान की छत पर सोया करते ताकि सर्दी आप को जगाए रखे और जब गर्मियों का मौसिम आता तो कमरे के अन्दर आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तक्लीफ़ के सबब सो न सकें। सज्दे की हालत में ही आप का इन्तिक़ाल हुवा। आप दुआ किया करते थे "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ! मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा।"

हज़रते सय्यिदुना ख़व्वास عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि हम एक आबिदा के पास गए जिन का नाम रेहूला था। येह इस क़दर रोज़े रखती थीं कि उन का रंग सियाह पड़ गया था और इतना रोतीं कि उन की बीनाई जाती रही और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़तीं कि खड़ी न हो सकती थीं, लिहाज़ा बैठ कर ही नमाज़ पढ़ती थीं। हम ने उन्हें सलाम किया फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अफ़्व का तज़्किरा किया ताकि हम उन के जोश को कुछ ठन्डा कर सकें तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا रोने लगीं और फ़रमाया, "मुझे अपनी जान की क़सम! मेरे इल्म ने मेरे दिल को ज़ख़्मी कर दिया है ख़ुदा की क़सम! मैं चाहती हूं कि काश **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे पैदा न किया होता और मैं कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती।" और दोबारा नमाज़ में मश्ग़ूल हो गईं।

हज़रते सय्यि-दतुना हबीबा अ-दविय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के बारे में मन्क़ूल है कि जब आप इशा की नमाज़ अदा फ़रमा लेतीं तो अपनी छत पर खड़ी हो जातीं और अपनी चादर अच्छी तरह लपेट कर अर्ज़ करतीं, "या इलाही عَزَّوَجَلَّ! तारे निकल आए और आंखें सो गईं, दुन्या के बादशाहों ने अपने दरवाज़े बन्द कर लिये और हर मुहिब अपने महबूब के साथ ख़ल्वत में चला गया जब कि मैं तेरी बारगाह में खड़ी हूं।" फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا नमाज़ में मश्ग़ूल हो जातीं। जब पौ फट जाती और फ़ज्र तुलूअ हो जाती तो अर्ज़ करतीं, "या इलाही عَزَّوَجَلَّ! रात गुज़र गई और दिन रोशन हो गया मगर मैं नहीं जानती कि तूने मेरी इस रात को क़बूल किया कि मैं ख़ुशी मनाऊं? या इसे अपनी बारगाह से धुत्कार दिया कि मैं सोग मनाऊं? मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! जब तक तू मुझे ज़िन्दा रखेगा मेरा येही मा'मूल रहेगा, अगर तूने मुझे अपनी बारगाह से धुत्कार दिया फिर भी मेरे दिल में तेरे जूदो करम की उम्मीद बाक़ी रहेगी।"

हज़रते सय्यि-दतुना मुआज़ह अ-दविय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا रोज़ाना सुब्ह के वक़्त फ़रमातीं, "(शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है।" फिर शाम तक कुछ न खातीं फिर जब रात होती तो कहतीं, "येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है।" फिर सुब्ह तक नमाज़ पढ़ती रहतीं।

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन राशिद शैबानी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना ज़म्आ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ मुहस्सब में हमारे पास आए। आप की ज़ौजा और बेटियां भी हमराह थीं। आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ देर तक नमाज़ पढ़ते रहे। जब स-ह़री का वक़्त हुवा तो बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया, "ऐ रात में पड़ाव करने वाले क़ाफ़िले के मुसाफ़िरो ! क्या सारी रात सोते रहोगे ? क्या उठ कर सफ़र नहीं करोगे ?" तो लोग जल्दी से उठ गए और कहीं से रोने की आवाज़ आने लगी और कहीं से दुआ मांगने की, एक जानिब से कुरआने पाक पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी तो दूसरी जानिब से वुज़ू करने वाले की। फिर जब फ़ज्र का वक़्त हुवा तो आप ने बुलन्द आवाज़ से इर्शाद फ़रमाया, "रात को सफ़र करने वाली क़ौम सुब्ह के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करती है।"

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि सफ़्वान बिन सुलैम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने क़सम उठा ली कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलने तक अपने पहलू ज़मीन पर न रखूंगा।" फिर तीस साल से ज़ियादा अ़र्सा इस क़सम पर क़ाइम रहे। जब आप की मौत का वक़्त हुवा और नज़्अ़ व बीमारी ने ज़ोर पकड़ा तो उस वक़्त भी आप बजाए लैटने के बैठे हुए थे। आप के बेटे ने अ़र्ज़ किया, "ऐ अब्बूजान ! अगर आप लैट जाएं तो ?" आप عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने फ़रमाया कि "अगर मैं ने ऐसा कर लिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मानी हुई नज़्र और उस से उठाया हुवा ह़ल्फ़ पूरा न कर सकूंगा।" और बैठे ही रहे ह़त्ता कि आप का इन्तिक़ाल हो गया।

(मुअल्लिफ़ फ़रमाते हैं) मुझे एक क़ब्र खोदने वाले ने बताया कि "मैं एक शख़्स के लिये क़ब्र खोद रहा था कि अचानक दूसरी (खुली हुई) क़ब्र में गिर गया। वहां मैं ने एक शख़्स की खोपड़ी को देखा जिस की हड्डियों पर सज्दे के निशान थे तो मैं ने किसी से पूछा, "येह किस की क़ब्र है ?" तो उस ने कहा "क्या तुम नहीं जानते ? येह ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्र है।"

मदीना : (मुअल्लिफ़ फ़रमाते हैं कि) तहज्जुद गुज़ार और इबादत गुज़ार हस्तियों के वाक़िआ़त बे शुमार हैं जिन में से कुछ वाक़िआ़त मैं ने अपनी इस किताब में ज़िक्र कर दिये हैं। अगर्चे मेरी इस किताब के उस्लूब के मुत़ाबिक़ नहीं लेकिन मैं ने हुसूले ब-र-कत और मुसल्मानों की तरग़ीब के लिये इसे ज़िक्र कर दिया। और (नेकी की) तौफ़ीक़ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही देता है उस के इलावा कोई परवर्द गार नहीं।

===

नियते इबादत के बा वुजूद ग़-ल-बए नींद के सबब न उठ सकने वाले का सवाब

(386)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बन्दा अपने आप को रात में एक घड़ी क़ियाम के लिये तय्यार करे फिर वोह सोया रह जाए तो उस की नींद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से स-दक़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ सवाब लिखेगा।'' जब कि एक रिवायत में है, ''जो इस निय्यत से बिस्तर की त़रफ़ आए कि रात में उठ कर नमाज़ अदा करेगा मगर सुब्ह़ तक उस पर नींद ग़ालिब रहे तो उसे उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ सवाब दिया जाएगा और उस की नींद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के लिये स-दक़ा है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، فصل فی قیام اللیل، رقم ۲۵۷۹، ج۴، ص۱۲۵)

(387)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स रात को मख़्सूस रक्अ़तें पढ़ने का आ़दी हो फिर किसी रात उस पर नींद ग़ालिब आ जाए तो उसे उस की नमाज़ का सवाब अ़त़ा कर दिया जाएगा और उस की नींद उस पर स-दक़ा है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب التطوع، باب من نوی القیام فنام، رقم ۱۳۱۴، ج۲، ص۵۱)

अपने विर्द से मह़रूम रह जाने वाले का सवाब

(388)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अपने विर्द... या... उस में से किसी चीज़ से मह़रूम रह जाए और फिर उसे फ़ज्र या ज़ोहर के बा'द पढ़ ले तो उसे वोही सवाब अ़त़ा किया जाएगा जो रात में पढ़ने पर अ़त़ा किया जाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا، باب جامع صلوۃ اللیل ومن نام الخ، رقم ۷۴۷، ص۳۷۶)

चाश्त की नमाज़ पाबन्दी से अदा करने का सवाब

(389)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारे हर जोड़ पर स-दक़ा है और हर तस्बीह़ या'नी سُبْحَانَ اللّٰہِ कहना स-दक़ा है और हर तह़मीद या'नी اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना स-दक़ा है और हर तह्लील या'नी لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ कहना स-दक़ा है और हर तक्बीर या'नी اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहना स-दक़ा है और अच्छी बात का हुक्म देना स-दक़ा है और बुरी बात से रोकना स-दक़ा है और चाश्त की दो रक्अ़तें इन सब को किफ़ायत करती हैं।'' (صحیح مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین وقصرھا، باب استحباب صلوۃ الضحی...الخ، رقم ۷۲۰، ص ۳۶۳)

(390)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''आदमी के तीन सो साठ जोड़ होते हैं, इसे हर जोड़ का स-दक़ा अदा करना लाज़िम है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''इस की त़ाक़त कौन रख सकता है ?'' फ़रमाया, ''मस्जिद में पड़ी हुई रींठ को दफ़्न कर देना और रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटा देना स-दक़ा है, अगर तुम इस पर क़ुदरत न रखो तो चाश्त की दो रक्अ़तें तुम्हारी त़रफ़ से किफ़ायत करेंगी।'' (مسند احمد حدیث بریدہ الاسلمی، رقم ۲۳۰۵۹، ج ۹، ص ۲۰)

(391)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे तीन चीज़ों की वसिय्यत फ़रमाई, लिहाज़ा ! मैं इन्हें हरगिज़ नहीं छोड़ता (1) मैं वित्र अदा किये बिग़ैर न सोऊं, (2) मैं चाश्त की दो रक्अ़तें तर्क न करूं क्यूं कि येह अव्वाबीन या'नी कसरत से तौबा करने वालों की नमाज़ है, (3) और हर महीने तीन दिन रोज़े रखा करूं।'' (صحیح بخاری، کتاب التہجد، باب صلوۃ الضحی فی الحضر، رقم ۱۱۷۸، ج ۱، ص ۳۹۷)

(392)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ के बा'द चाश्त की दो रक्अ़तें अदा करने तक अपनी जगह बैठा रहे और ख़ैर के इ़लावा कोई बात न कहे उस की ख़त़ाएं मुआ़फ़ कर दी जाती हैं अगर्चे समुन्दर की झाग से ज़ियादा हों।'' (مسند احمد، مسند المکیین احدیث معاذ بن انس الجھنی، رقم ۱۵۶۲۳، ج ۵، ص ۲۶۰)

(393)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाती हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के बा'द चाश्त की चार रक्अ़तें अदा करने तक अपनी जगह बैठा रहे और कोई लग़्व बात न कहे बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता रहे तो अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।'' (مسند ابی یعلی، رقم ۴۳۸، ج ۴، ص ۹)

(394)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक लश्कर को नज्द की जानिब भेजा वोह लश्कर बहुत सा माले ग़नीमत ले कर जल्द लौट आया तो लोग लश्कर के मक़ाम की नज़्दीकी, कसरते माले ग़नीमत और जल्द लौट आने के बारे में गुफ़्त-गू करने लगे। नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें एक ऐसी क़ौम के बारे में न बताऊं जो इन से भी क़रीब जिहाद करने वाली इस से भी ज़ियादा माले ग़नीमत ह़ासिल करने वाली और जल्दी लौटने वाली है।'' (फिर फ़रमाया), ''जो शख़्स वुज़ू करे फिर नमाज़े चाश्त अदा करने के लिये मस्जिद में ह़ाज़िर हो वोह इन लोगों से भी क़रीब, ज़ियादा ग़नीमत लाने वाला और जल्दी लौटने वाला है।'' (مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۶۴۹، ج ۲، ص ۵۸۸)

(395)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अपने घर से किसी फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी के लिये निकला, उस का सवाब एह़राम बांधने वाले ह़ाजी की त़रह़ है और जो चाश्त की नमाज़ अदा करने के लिये निकला उस का सवाब उ़म्रह करने वाले की त़रह़ है और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इस त़रह़ इन्तिज़ार करना कि बीच में लग़्व बात न की जाए तो उस का नाम इल्लिय्यीन (या'नी आ'ला द-रजे वालों) में लिखा जाता है।'' (سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب صلوۃ الضحی، رقم ۱۲۸۸، ج ۲، ص ۴۱)

(396)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो चाश्त की दो रक्अ़तें पाबन्दी से अदा करता है उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب امامۃ الصلوۃ والسنۃ فیہا، باب ماجاء فی صلوۃ الضحی، رقم ۱۳۸۲، ج ۲، ص ۱۵۳)

(397)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ज़्वए तबूक के लिये गया। एक दिन रह़मते आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बैठ कर अपने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से गुफ़्त-गू फ़रमा रहे थे कि दौराने गुफ़्त-गू इर्शाद फ़रमाया कि : ''जो शख़्स सूरज के बुलन्द होने तक अपनी जगह पर बैठा रहे फिर उठ कर कामिल वुज़ू करे और दो रक्अ़तें अदा करे तो उस के गुनाह ऐसे मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे जैसे उस की मां ने उसे आज ही जना हो।'' (مسند ابی یعلی، رقم ۱۷۵۷، ج ۲، ص ۱۸۰)

(398)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब सूरज अपने मत़्लअ़ से त़ुलूअ़ हो कर ऐसी ह़ालत पर आ जाए जैसे नमाज़े अ़स्र के वक़्त से ग़ुरूब तक होता है। फिर जो

शख़्स दो या चार रक्अ़तें अदा करे तो उस के लिये उस दिन का सवाब है और उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं, अगर उस दिन उस का इन्तिक़ाल हो गया तो जन्नत में दाख़िल होगा।'' (طبرانی کبیر،رقم ۷۷۹۰،ج۸،ص۱۹۲)

(399)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कसरत से तौबा करने वाले ही नमाज़े चाश्त पाबन्दी से अदा करते हैं और येह अव्वाबीन या'नी तौबा करने वालों की नमाज़ है।'' (طبرانی اوسط،رقم ۳۸۶۵،ج۳،ص۶۰)

(400)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसे ज़ुह़ा कहा जाता है जब क़ियामत का दिन आएगा तो एक मुनादी निदा करेगा नमाज़े चाश्त की पाबन्दी करने वाले कहां हैं? येह तुम्हारा दरवाज़ा है इस में दाख़िल हो जाओ।'' (طبرانی اوسط،رقم ۵۰۶۰،ج۴،ص۱۸)

(401)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन हम्मार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है ऐ इब्ने आदम! तू शुरूअ़ दिन में चार रक्अ़तें अदा करने से आ़जिज़ न हो, मैं आख़िर दिन तक तेरी किफ़ायत करूंगा।'' (السنن الکبریٰ،رقم ۴۶۸،ج۱،ص۱۷۷)

(402)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी इसी की मिस्ल एक ह़दीस मरवी है।

(403)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुर्रह त़ाइफ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है ऐ इब्ने आदम! तू शुरूअ़ दिन में मेरे लिये चार रक्अ़तें अदा कर, मैं आख़िर दिन तक तेरी किफ़ायत करूंगा।'' (مسند امام احمد،مسند الانصار/حدیث نعیم بن ھمار،رقم ۲۲۵۳۶،ج۸،ص۳۴۳)

(404)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शुरूअ़ दिन में चाश्त की दो रक्अ़तें अदा करेगा ग़ाफ़िलीन में न लिखा जाएगा। और जो चार रक्अ़तें अदा करेगा उस का शुमार आ़बिदीन में होगा और जो छ रक्अ़तें अदा करेगा वोह उस के उस दिन के लिये काफ़ी होंगी जो आठ रक्अ़तें अदा करेगा **अल्लाह** तआ़ला उसे क़ानितीन या'नी क़ियाम करने वालों में लिखेगा और जो बारह

रक्अ़तें अदा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा और हर दिन और हर रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों पर एक एह़सान और एक स-दक़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों में किसी पर अपने ज़िक्र के इल्हाम से अफ़्ज़ल कोई एह़सान नहीं फ़रमाता।'' (مجمع الزوائد،کتاب الصلوۃ،رقم ۳۴۱۹،ج۲،ص۴۹۴)

(405)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो चाश्त की बारह रक्अ़तें अदा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में सोने का एक मह़ल बनाएगा।'' (ترمذی کتاب الوتر، باب ماجاء فی صلوۃ الضحی، رقم ۴۷۲، ج۲، ص۱۷)

=== === ===
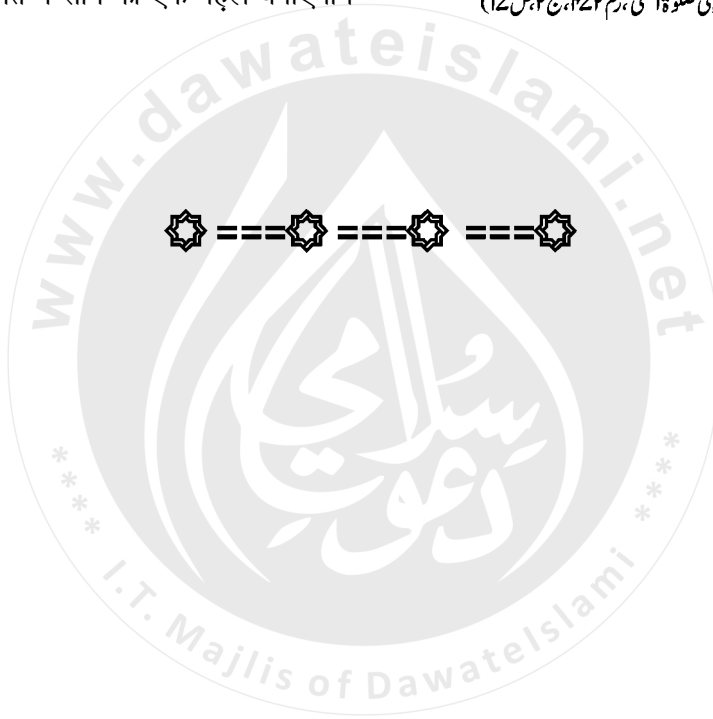
सलातुत्तस्बीह़ का सवाब

(406)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, ''ऐ मेरे चचा अ़ब्बास ! क्या मैं तुम को अ़ता न करूं ? क्या मैं तुम को बख़्शिश न दूं ? क्या मैं तुम्हारे साथ एह़सान न करूं ? क्या तुम्हें ऐसी दस ख़स्लतों के बारे में न बताऊं कि जब तुम उन को करो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे अगले पिछले, नए पुराने, जो भूल कर किये और जो जान बूझ कर किये, छोटे बड़े, पोशीदा और ज़ाहिर गुनाह बख़्श देगा ?'' (फिर फ़रमाया) ''वोह दस ख़स्लतें येह हैं कि तुम चार रक्अ़तें इस त़रह़ अदा करो कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और कोई दूसरी सूरत पढ़ो, जब तुम पहली रक्अ़त में क़िराअत से फ़ारिग़ हो जाओ तो ह़ालते क़ियाम में ही पन्दरह मरतबा ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ'' कहो, फिर रुकूअ़ करो और ह़ालते रुकूअ़ में येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर रुकूअ़ से सर उठाओ और येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर सज्दा करो और ह़ालते सज्दा में येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर सज्दे से सर उठाओ और येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर दूसरे सज्दे में जाओ और येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर सज्दे से उठ कर दस मरतबा येही कलिमात कहो, तो येह कलिमात हर रक्अ़त में 75 मरतबा पढ़े जाएंगे। तुम चारों रक्अ़तों में इसी तरतीब से येह कलिमात पढ़ कर नमाज़ मुकम्मल कर लो। अगर तुम रोज़ाना येह नमाज़ अदा कर सको तो कर लिया करो, अगर रोज़ाना न हो सके तो हर जुमुआ़ को अदा कर लिया करो, ऐसा भी न कर सको तो हर महीने अदा कर लिया करो और येह भी न हो सके तो साल में एक मरतबा अदा कर लिया करो और अगर इस की भी इस्तित़ाअ़त न रखो तो ज़िन्दगी में एक मरतबा अदा कर लो। फिर अगर तुम्हारे गुनाह समुन्दर की झाग और रैत के टीलों के बराबर भी हुए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।''

(ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، رقم ۱۳۸۷، ج۲، ص ۱۵۸)

(407)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने चचा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, ''ऐ मेरे चचा अ़ब्बास ! क्या मैं तुम को अ़ता न करूं ? क्या मैं तुम को बख़्शिश न दूं ? क्या तुम्हारे साथ एह़सान न करूं ?'' उन्हों ने कहा ''क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' इर्शाद फ़रमाया, ''तुम चार रक्अ़तें इस त़रह़ अदा करो कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और कोई दूसरी सूरत पढ़ो, जब तुम पहली रक्अ़त में क़िराअत से फ़ारिग़ हो जाओ तो ह़ालते क़ियाम में ही पन्दरह मरतबा ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ'' कहो, फिर रुकूअ़ करो और ह़ालते रुकूअ़ में येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर रुकूअ़ से सर उठाओ और येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर सज्दा करो और ह़ालते सज्दा में येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर सज्दे से सर उठाओ

और येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर दूसरे सज्दे में जाओ और येही कलिमात दस मरतबा कहो, फिर सज्दे से उठ कर बैठे बैठे दस मरतबा येही कलिमात कहो, तो येह कलिमात हर रक्अ़त में 75 मरतबा पढ़े जाएंगे। तुम चारों रक्अ़तों में इसी तरतीब से येह कलिमात पढ़ कर नमाज़ मुकम्मल कर लो।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर कोई शख़्स रोज़ाना इन कलिमात को कहने की त़ाक़त न रखता हो तो ?" इर्शाद फ़रमाया, "अगर तुम रोज़ाना येह नमाज़ अदा कर सको तो कर लिया करो, अगर रोज़ाना न हो सके तो हर जुमुआ़ को अदा कर लिया करो, ऐसा भी न कर सको तो हर महीने अदा कर लिया करो और येह भी न हो सके तो साल में एक मरतबा अदा कर लिया करो और अगर इस की भी इस्तित़ाअ़त न रखो तो ज़िन्दगी में एक मरतबा अदा कर लो।"

इमाम बैहक़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ येह नमाज़ पढ़ा करते थे और सालिह़ीन में येह नमाज़ मु-तदावल (या'नी राइज) थी और सालिह़ीन का अ़मल इस ह़दीसे मरफ़ूअ़ की तक़्वियत का सबब है। (ترمذی، باب صلوۃ التسبیح، کتاب الوتر، رقم ۴۸۲، ج۲، ص۲۵)

वज़ाह़त :

नमाज़े तस्बीह़ की अदाएगी का इस के इलावा भी एक त़रीक़ा मरवी है जिस के मुत़ाबिक़ क़िराअत शुरूअ़ करने से पहले पन्दरह मरतबा येही कलिमात पढ़े जाते हैं जब कि क़िराअत के बा'द येही कलिमात दस मरतबा पढ़े जाते हैं और दूसरे सज्दे के बा'द दस मरतबा नहीं पढ़े जाते। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم (الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، ج۱، ص۲۶۹)
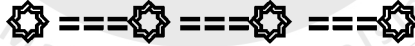
सलातुल हाजात अदा करने का सवाब

(408)...... हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि एक नाबीना शख़्स शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** तआला से दुआ कीजिये कि वोह मेरी बीनाई वापस लौटा दे।'' तो सरवरे कौनैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''क्या मैं तेरे लिये दुआ करूं ?'' उस ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी बसारत का चला जाना मुझ पर बहुत शाक़ गुज़रता है।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''जाओ ! वुज़ू करो और फिर दो रक्अतें अदा करो, इस के बा'द येह दुआ मांगो, **اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ وَاَتَوَجَّہُ اِلَیۡکَ بِنَبِیِّیۡ مُحَمَّدٍ نَبِیِّ الرَّحۡمَۃِ یَا مُحَمَّدُ اِنِّیۡ اَتَوَجَّہُ اِلٰی رَبِّیۡ بِکَ اَنۡ یَّکۡشِفَ لِیۡ عَنۡ بَصَرِیۡ اَللّٰھُمَّ شَفِّعۡہُ فِیَّ وَشَفِّعۡنِیۡ فِیۡ نَفۡسِی**'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तेरी बारगाह में अपने नबी मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से मु-तवज्जेह होता हूं जो रहमत वाले नबी हैं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप के वसीले से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ करता हूं कि वोह मेरी बीनाई से पर्दा हटा दे, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सिफ़ारिश मेरे हक़ में क़बूल फ़रमा और मेरी मुराद पूरी फ़रमा।''

रावी फ़रमाते हैं कि ''जब वोह शख़्स वहां से पलटा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की बीनाई वापस लौटा दी थी।'' (الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، باب الترغیب فی صلاۃ الحاجۃ ودعائھا، رقم ۱، ج ۱، ص ۲۷۱)

नोट : तिरमिज़ी की रिवायत में بِنَبِیِّیۡ مُحَمَّدٍ की जगह بِنَبِیِّکَ مُحَمَّدٍ के अल्फ़ाज़ हैं।

(409)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ कोई हाजत हो या किसी बन्दे की तरफ़ हाजत हो तो उसे चाहिये कि कामिल वुज़ू कर के दो रक्अतें अदा करे। इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द बयान करे और अपने नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे फिर येह दुआ मांगे,

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہُ الۡحَلِیۡمُ الۡکَرِیۡمُ سُبۡحَانَ اللہِ رَبِّ الۡعَرۡشِ الۡعَظِیۡمِ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ اَسۡئَلُکَ مُوۡجِبَاتِ رَحۡمَتِکَ وَعَزَائِمَ مَغۡفِرَتِکَ وَالۡغَنِیۡمَۃَ مِنۡ کُلِّ بِرٍّ وَالسَّلَامَۃَ مِنۡ کُلِّ اِثۡمٍ لَا تَدَعۡ لِیۡ ذَنۡبًا اِلَّا غَفَرۡتَہٗ وَلَا ھَمًّا اِلَّا فَرَّجۡتَہٗ وَلَا حَاجَۃً ھِیَ لَکَ رِضًا اِلَّا قَضَیۡتَھَا یَا اَرۡحَمَ الرّٰحِمِیۡنَ''

''तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह हिल्म वाला, जूदो करम वाला है **अल्लाह** अ-ज़मत वाले अर्श के मालिक को पाकी है, तमाम आलम के रब, **अल्लाह** ही के लिये तमाम ख़ूबियां हैं।

मैं तुझ से तेरी रहमत और बख़्शिश वाजिब करने वाले आ'माल और हर नेकी से हिस्सा और हर गुनाह से छुटकारा मांगता हूं, मेरे हर गुनाह को मुआफ़ फ़रमा और हर तंगी को कुशादा फ़रमा और हर उस हाजत को जो तेरी रिज़ा का सबब हो पूरा फ़रमा, ऐ सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाले।''
येह दुआ मांगने के बा'द अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से किसी दुन्यवी या उख़रवी चीज़ के बारे में सुवाल करे तो वोह चीज़ उस के लिये लिख दी जाएगी।''

(ترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی صلاۃ الحاجۃ، رقم ۴۷۸، ج۲، ص۲۱)

(410)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बारह रक्अतें ऐसी हैं कि जिन्हें तुम दिन या रात में इस तरह अदा करो कि हर दो रक्अतों के बा'द तशह्हुद में बैठो फिर जब तुम नमाज़ का आख़िरी क़ा'दा कर लो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना करो और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजो फिर सज्दे में जा कर सूरए फ़ातिहा सात मरतबा पढ़ो और दस मरतबा येह कलिमात पढ़ो, **''لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ''** तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाही है और उसी के लिये तमाम ख़ूबियां हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।''
फिर कहो, **''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِکَ وَمُنْتَھَی الرَّحْمَۃِ مِنْ کِتَابِکَ وَاسْمِکَ الْاَعْظَمِ وَجَدِّکَ الْاَعْلٰی وَکَلِمَاتِکَ التَّامَّۃِ''** तरजमा : ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे अर्श की बुलन्दियों, तेरी किताब की रहमत की इन्तिहा, तेरे इस्मे आ'ज़म और तेरी आ'ला बुज़ुर्गी और तेरे कलिमाते ताम्मह के वसीले से दुआ करता हूं।''

फिर अपनी हाजत तलब करो फिर अपना सर उठा कर दाएं बाएं सलाम फैर दो और येह तरीक़ा बे वुक़ूफ़ों को हरगिज़ न बताना क्यूं कि वोह इन कलिमात के वसीले से दुआ मांगेंगे और उन की दुआएं क़बूल कर ली जाएंगी।'' (تنزیہ الشریعۃ، کتاب الصلاۃ، الفصل الثانی، رقم ۹۲، ج۲، ص۱۱۲)

इमाम हाकिम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि हज़रते हमीद बिन हर्ब عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने फ़रमाया मैं ने इस का तजरिबा किया और इसे हक़ पाया। हज़रते सय्यिदुना अयहम बिन अली दुबैली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने इस का तजरिबा किया तो इसे हक़ पाया। इमाम हाकिम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि अबू ज़-करिय्या عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने हम से फ़रमाया, ''मैं ने इस का तजरिबा किया तो इसे हक़ पाया।'' और इमाम हाकिम عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ुद भी इस का तजरिबा किया और इसे हक़ पाया।

वज़ाहत : (मुअल्लिफ़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं) हम ने नमाज़े इस्तिख़ारा को इस बाब में इस लिये शामिल नहीं किया कि अहादीस में इस का सवाब बयान नहीं किया गया जब कि हमारी येह किताब आ'माल के सवाब के बयान पर मुश्तमिल है।

=== === ===

जुमुआ का बयान

(411)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद साहिब जुमुआ के दिन हमारे पास तशरीफ़ लाए। मैं उस वक़्त गुस्ल कर रहा था। उन्हों ने पूछा, ''तुम ने येह गुस्ल, जनाबत की वजह से किया है या फिर जुमुआ के लिये ?'' मैं ने अर्ज़ किया, ''जनाबत की वजह से।'' तो उन्हों ने फ़रमाया, ''दोबारा गुस्ल करो क्यूं कि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''जो शख़्स जुमुआ के दिन गुस्ल करेगा अगले जुमुआ तक पाक रहेगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، رقم ۳۰۶۴، ج۲، ص۳۹۱)

(412)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक जुमुआ के दिन गुस्ल करना गुनाहों को बालों की जड़ों से भी निकाल देता है।''

(المعجم الکبیر، رقم ۷۹۹۶، ج۸، ص۲۵۶)

(413)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जिस ने जुमुआ के दिन गुस्ल किया उस के गुनाह और ख़ताएं मुआफ़ कर दी जाएंगी।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، رقم ۳۰۶۲، ج۲، ص۳۹۱)

नमाज़े जुमुआ और इस की एक साअ़त की फ़ज़ीलत

(414)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''पांच नमाज़ें और जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक और एक र-मज़ान अगले र-मज़ान तक के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हैं जब कि बन्दा कबीरा गुनाहों से इज्तिनाब करता रहे।'' (مسلم، کتاب الطہارۃ، باب الصلوات الخمس والجمعۃ الی الجمعۃ، رقم ۱۶، ج۱، ص۱۴۴)

(415)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया फिर जुमुआ़ की नमाज़ के लिये आया और ख़ुत़्बा तवज्जोह से सुना और ख़ामोश रहा तो उस के अगले जुमुआ़ और उस के बा'द तीन दिन तक (या'नी दस दिन) के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।'' (مسلم، کتاب الجمعہ، رقم ۲۷، ج۱، ص۴۲۷)

(416)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''पांच आ'माल ऐसे हैं जो उन्हें एक दिन में करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नतियों में लिखेगा, (1) मरीज़ की इयादत करना, (2) जनाज़े में ह़ाज़िर होना, (3) एक दिन का रोज़ा रखना, (4) जुमुआ़ के लिये जाना और (5) ग़ुलाम आज़ाद करना।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب مایفعل من الخیر یوم الجمعۃ، رقم ۳۰۲۷، ج۲، ص۳۸۲)

(417)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जुमुआ़ के दिन तीन गुरौह आते हैं, पहला वोह शख़्स जो लग़्व काम करता हुवा ह़ाज़िर हुवा, उस के लिये जुमुआ़ में से येही ह़िस्सा है और दूसरा वोह शख़्स जो दुआ़ मांगता हुवा ह़ाज़िर हुवा, उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पुकारा अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे तो उसे अ़त़ा फ़रमाए और चाहे तो रोक दे और तीसरा वोह शख़्स जो ख़ामोशी से ह़ाज़िर हुवा और किसी मुसल्मान की गरदन न फलांगी और न ही किसी को ईज़ा दी तो उस की येह नमाज़े जुमुआ़ अगले जुमुआ़ तक और इस के बा'द तीन दिन के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाती है। क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ (پ۸، الانعام: ۱۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं।

(ابوداود، کتاب الصلاۃ، باب الکلام والامام یخطب، رقم ۱۱۱۳، ج۱، ص۴۱۱)

(418)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''दिनों को अपनी हैअत पर उठाया जाएगा। जुमुआ़ चमक्ता हुवा आएगा और उस के साथी उसे इस त़रह़ ढांप लेंगे जैसे दुल्हन को पर्दे में भेज दिया जाता है। येह दिन उन के लिये रोशनी करेगा, वोह उस की रोशनी में चलते होंगे, उन के रंग बर्फ़ की त़रह़ सफ़ेद और उन की ख़ुश्बू मुश्क की त़रह़ होगी, वोह काफ़ूर के पहाड़ में दाख़िल होंगे तो जिन्नो इन्स उन की त़रफ़ देखेंगे और उन के जन्नत में दाख़िल होने तक तअ़ज्जुब की वजह से पलक झपक्ना भूल जाएंगे, सवाब की उम्मीद पर अज़ान कहने वालों के इ़लावा कोई शख़्स उन के इस ह़ाल में उन का शरीक न होगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب فی الجمعۃ وفضلھا، رقم ۳۰۰۴، ج۲، ص۳۷۴)

(419)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक जुमुआ़ के दिन और रात में चौबीस साअ़तें (या'नी घन्टे) हैं और हर साअ़त में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ छ लाख अफ़राद को जहन्नम से नजात अ़त़ा फ़रमाता है।'' बा'ज़ रावियों ने इस में येह इज़ाफ़ा किया है कि ''जिन में से हर एक पर जहन्नम वाजिब हो चुकी थी।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، رقم ۳۰۰۸، ج۲، ص۳۷۵)

(420)...... हज़रते सय्यिदुना अबू लुबाबा बिन अ़ब्दुल मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''बेशक जुमुआ़ दिनों का सरदार और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में दीगर अय्याम से ज़ियादा मर्तबे वाला और ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा के दिन से भी ज़ियादा अ़-ज़मत वाला है। इस में पांच ख़स्लतें हैं, (1) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आदम عَلَیْہِ السَّلَام को इसी दिन पैदा फ़रमाया और (2) इसी दिन **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आदम عَلَیْہِ السَّلَام को ज़मीन पर उतारा और (3) इसी दिन में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام को वफ़ात अ़त़ा फ़रमाई, (4) इस में एक ऐसी साअ़त है जिस में बन्दा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से जो कुछ मांगेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमाएगा जब तक वोह ह़राम शै त़लब न करे, (5) इसी में क़ियामत क़ाइम होगी और कोई मुक़र्रब फ़िरिश्ता या आस्मान या ज़मीन या हवा या पहाड़ या समुन्दर ऐसा नहीं जो जुमुआ़ के दिन से न डरता हो।'' (ابن ماجہ، کتاب الاقامۃ الصلاۃ، رقم ۱۰۸۴، ج۲، ص۸)

(421)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब से बेहतर दिन जिस में सूरज तुलूअ़ होता है जुमुआ़ का दिन है, इसी दिन हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام की पैदाइश हुई और इसी दिन वोह जन्नत में दाख़िल हुए और इसी दिन जन्नत से अलग किये गए।''

(مسلم شریف، کتاب الجمعۃ، باب فضل یوم الجمعۃ، رقم ۱۷، ج۱، ص۴۲۵)

(422)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जुमुआ के दिन से अफ़ज़ल किसी दिन पर न तो सूरज तुलूअ होता है न ही गुरूब होता है और इन्सान व जिन्न के इलावा ज़मीन पर रेंगने वाला हर जानवर जुमुआ के दिन से डरता है।'' (المعجم الاوسط طبرانی، رقم ۸۷۹۰، ج۶، ص۲۸۵)

(423)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा जुमुआ के दिन का तज़्किरा करते हुए फ़रमाया कि ''जुमुआ के दिन में एक ऐसी साअत है कि जो मुसल्मान इस में नमाज़ पढ़ते हुए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से सुवाल करे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे वोह चीज़ ज़रूर अता फ़रमाएगा।'' फिर आप ने अपने दस्ते मुबा-रका से उस साअत की मिक़्दार की कमी की तरफ़ इशारा फ़रमाया।

वज़ाहत :

उस साअत की ता'यीन में उ-लमाए किराम का इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ का ख़याल है कि ''येह तुलूए फ़ज्र से तुलूए शम्स तक का वक़्त है।'' उन की दलील मेरे इल्म में नहीं और बा'ज़ की राय येह है कि ''उस साअत से मुराद इमाम के खुत्बा के लिये मिम्बर पर बैठने से नमाज़े जुमुआ पढ़ लेने तक का वक़्त है।'' उन की दलील मुस्लिम शरीफ़ की हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''उस साअत से मुराद इमाम के मिम्बर पर बैठने से ले कर नमाज़े जुमुआ की इन्तिहा तक का वक़्त है।'' जब कि बा'ज़ कहते हैं कि ''येह अस्र और मग़रिब के दरमियान का वक़्त है।'' उन की दलील इब्ने माजह में हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी सहीह हदीस है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे कि मैं ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम क़ुरआने मजीद में जुमुआ के दिन में एक ऐसी साअत का तज़्किरा पाते हैं जिस में कोई मोमिन बन्दा उस घड़ी में नमाज़ पढ़ते हुए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से किसी शै का सुवाल करे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे वोह शै ज़रूर अता फ़रमाएगा।'' तो सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया ''या साअत का कुछ हिस्सा (या'नी तुम्हारी मुराद साअत का कुछ हिस्सा तो नहीं ?)'' तो मैं ने अर्ज़ किया, ''आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सच फ़रमाया, येही मेरी मुराद है।'' फिर मैं ने अर्ज़ किया, ''येह कौन सी साअत है ?'' फ़रमाया, ''दिन की आख़िरी साअत।'' मैं ने अर्ज़ किया, ''येह नमाज़ का वक़्त तो नहीं है ?'' फ़रमाया, ''क्यूं नहीं बन्दा जब एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठता है तो वोह नमाज़ ही में होता है।''

और उन की दूसरी दलील हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की येह रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, ''जुमुआ के दिन में बारह घन्टे हैं इन में जो बन्दा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से कुछ मांगे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे वोह चीज़ ज़रूर अता फ़रमाएगा, लिहाज़ा ! जुमुआ के दिन अस्र के बा'द आख़िरी घड़ी में इसे तलाश करो।'' وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب (بخاری شریف ،کتاب الجمعہ، باب الساعۃ التی فی یوم الجمعہ، رقم ۹۳۵، ج۱، ص۳۲۱)

नमाज़े जुमुआ के लिये तय्यारी करने का सवाब

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,......

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ۝ (پ۲۸، الجمعہ:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ के दिन तो **अल्लाह** के ज़िक्र की त़रफ़ दौड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो ।

(424)...... ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जुमुआ की नमाज़ के लिये जाते हुए मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते अ़बाया बिन रिफ़ाआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई तो उन्हों ने कहा, ''ख़ुश ख़बरी सुन लो कि तुम्हारी येह आ-मदो रफ़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है कि मैं ने अबू उ़बैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते हुए सुना कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं वोह जहन्नम पर ह़राम हैं ।''

जब कि बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़बाया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''मैं नमाज़े जुमुआ के लिये जा रहा था तो रास्ते में मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई । उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस के क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं उस पर जहन्नम की आग ह़राम कर दी जाती है ।''

और एक रिवायत में है कि ''जिस के क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं उसे जहन्नम की आग न छू सकेगी ।''

(ترمذی شریف، کتاب فضائل الجہاد، باب فی فضل من اغبرت قدماہ فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۳۸، ج ۳، ص ۲۳۵)

(425)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जिस ने जुमुआ के दिन ग़ुस्ल किया और अच्छे कपड़े पहने फिर अगर उस के पास ख़ुश्बू थी तो उसे लगाया, फिर जुमुआ के लिये सुकून व वक़ार के साथ चला और किसी की गरदन न फलांगी और न किसी को ईज़ा पहुंचाई, फिर नमाज़ अदा की फिर इमाम के लौटने तक इन्तिज़ार किया तो उस के दो जुमुओं के दरमियान के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلوۃ، باب حقوق الجمعۃ من الغسل والطیب، رقم ۳۰۳۹، ج ۲، ص ۳۸۵)

(426)...... ह़ज़रते अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने जुमुआ के दिन ग़ुस्ल किया और ख़ुश्बू मौजूद होने की सूरत में ख़ुश्बू लगाई और अच्छे कपड़े पहने और घर से निकल कर मस्जिद में ह़ाज़िर हुवा फिर उस से जितनी रक्अ़तें हो सकीं अदा कीं और किसी को ईज़ा न पहुंचाई फिर नमाज़ की अदाएगी तक ख़ामोश रहा तो उस का येह अ़मल इस जुमुआ से अगले जुमुआ तक के गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा ।''

(مسند احمد بن حنبل، رقم ۲۳۶۳۰، ج ۹، ص ۱۴۵)

(427)...... हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''जो शख़्स जुमुआ़ के दिन गुस्ल करे और जितना हो सके त़हारत करे फिर तेल और घर में मौजूद ख़ुश्बू लगाए, दो अफ़राद में जुदाई न डाले, जितनी रक्अ़तें हो सकें अदा करे, जब इमाम कलाम करे तो येह ख़ामोश रहे तो उस के उस जुमुआ़ और अगले जुमुआ़ के दरमियान के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।'' (بخاری شریف، کتاب الجمعہ، باب الدھن للجمعۃ، رقم ۸۸۳، ج۱، ص۳۰۶)

(428)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अच्छी त़रह़ गुस्ल किया फिर सुब्ह़ मस्जिद की त़रफ़ आया और इमाम के क़रीब बैठा और उसे तवज्जोह से सुना तो वोह जितने क़दम चला हर क़दम पर उस के लिये एक साल की इबादत और एक साल के रोज़ों का सवाब है।'' (مسند احمد، رقم ۶۹۷۲، ج۲، ص۶۶۰)

(429)...... हज़रते सय्यिदुना ओस बिन ओस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने जुमुआ़ के दिन अच्छी त़रह़ गुस्ल किया और सुब्ह़ सवेरे बेदार हो कर मस्जिद की त़रफ़ पैदल चला, किसी सुवारी पर सुवार न हुवा और इमाम के क़रीब हो कर बैठा और उस का ख़ुत़्बा तवज्जोह से सुना और कोई लग़्व बात न की तो उसे हर क़दम चलने पर एक साल के रोज़ों और नमाज़ों का सवाब मिलेगा।''

नीज़ हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अ़र्ज़ किया कि लोग कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जुमुआ़ के दिन गुस्ल किया करो और अपने सरों को अच्छी त़रह़ धोया करो अगर्चे तुम जुनुबी न हो और ख़ुश्बू भी लगाया करो तो हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''ख़ुश्बू लगाने का तो मुझे मा'लूम नहीं अलबत्ता रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने गुस्ल करने का हुक्म ज़रूर फ़रमाया है।'' (مسند احمد، رقم ۲۱۱۷۳، ج۵، ص۴۶۵)

(430)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स जुमुआ़ के दिन गुस्ल करे और अपना सर अच्छी त़रह़ धोए फिर अपनी ख़ुश्बूओं में से बेहतरीन ख़ुश्बू लगाए और अपने कपड़ों में से बेहतरीन कपड़े पहने फिर नमाज़ के लिये निकले और दो शख़्सों में जुदाई न डाले फिर इमाम की बात को तवज्जोह से सुने तो उस के इस जुमुआ़ से अगले जुमुआ़ और मज़ीद तीन दिन के गुनाहों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' (ابن خزیمۃ، رقم ۱۸۰۳، ج۳، ص۱۵۲)
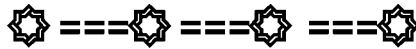
जुमुआ की नमाज़ के लिये जल्दी जाने का सवाब

(431)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने जुमुआ़ के दिन ग़ुस्ले जनाबत की त़रह़ ग़ुस्ल किया फिर पहली घड़ी में नमाज़ के लिये चला तो गोया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक ऊंट स-दक़ा किया और जो दूसरी घड़ी में चला गोया उस ने एक गाय स-दक़ा की और जो तीसरी घड़ी में चला तो गोया उस ने सींग वाला मेंढा स-दक़ा किया और जो चौथी घड़ी में चला तो गोया उस ने मुर्ग़ी स-दक़ा की और जो पांचवी घड़ी में चला गोया उस ने एक अन्डा स-दक़ा किया और जब इमाम मिम्बर पर आ जाए तो मलाएका ह़ाज़िर हो कर उस का ख़ुत़्बा सुनते हैं।'' (صحیح البخاری، کتاب الجمعۃ، باب فضل الجمعۃ، رقم ۸۸۱، ج۱، ص۳۰۵)

एक और रिवायत में है कि ''जब जुमुआ़ का दिन आता है तो फ़िरिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो कर पहले आने वालों के नाम लिखते हैं। सब से पहले आने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जिस ने एक ऊंट स-दक़ा किया, उस के बा'द आने वाले की मिसाल उस शख़्स की सी है जिस ने एक गाय स-दक़ा की, उस के बा'द आने वाले की मिसाल एक मेंढा स-दक़ा करने वाले की सी है, उस के बा'द आने वाले की मिसाल मुर्ग़ी स-दक़ा करने वाले की सी है, और उस के बा'द आने वाले की मिसाल अन्डा स-दक़ा करने वाले की सी है और जब इमाम मिम्बर पर आ जाए तो वोह अपने सह़ीफ़े लपेट कर ख़ुत़्बा सुनने में मसरूफ़ हो जाते हैं।'' (صحیح البخاری، کتاب الجمعۃ، باب الاستماع الی الخطبۃ، رقم ۹۲۹، ج۱، ص۳۱۹)

जब कि एक रिवायत में है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जुमुआ़ के दिन हर मस्जिद के दरवाज़े पर दो फ़िरिश्ते खड़े कर दिये जाते हैं जो पहले आने वालों के नाम लिखते हैं और उन के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक ऊंट या एक गाय या एक बकरी या एक परिन्दा या एक अन्डा का स-दक़ा करने का सवाब लिखते हैं और जब इमाम मिम्बर पर बैठ जाता है तो सह़ीफ़े लपेट दिये जाते हैं।''

(432)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''फ़िरिश्ते मस्जिदों के दरवाज़े पर बैठ जाते हैं और पहले, दूसरे और तीसरे नम्बर पर आने वालों के नाम लिखते हैं जब इमाम ख़ुत़्बे के लिये आता है तो सह़ीफ़े लपेट दिये जाते हैं।'' (مجمع الزوائد، رقم ۳۰۷۹، ج۲، ص۳۹۰)

त़-बरानी शरीफ़ की रिवायत में है रावी बयान करते हैं कि मैं ने पूछा : ''ऐ अबू उमामा ! क्या इमाम के ख़ुत़्बे के शुरूअ़ होने के बा'द आने वालों का जुमुआ़ नहीं होता ?'' फ़रमाया, ''क्यूं नहीं होता लेकिन उन का नाम सह़ीफ़ों में नहीं लिखा जाता।''

(433)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जब जुमुआ़ का दिन आता है तो शयात़ीन लोगों को बाज़ारों में रोके रखते हैं जब कि फ़िरिश्ते मसाजिद के दरवाज़ों पर बैठ कर लोगों के नाम उन के मस्जिद की त़रफ़ जल्दी आने के ए'तिबार से लिखते हैं, यहां तक कि इमाम मिम्बर पर आ जाए तो जो इमाम के क़रीब हो, ख़ामोश रहते हुए तवज्जोह से इमाम का ख़ुत़्बा सुने और कोई लग़्व बात न करे तो उस के लिये सवाब में से दो ह़िस्से हैं और जो इमाम से दूर हो कर ख़ामोश रहे और तवज्जोह से सुने तो उस के लिये सवाब में से एक ह़िस्सा है और जो इमाम के क़रीब हो और लग़्व काम करे और ख़ामोश न रहे और तवज्जोह के साथ न सुने उसे दुगना गुनाह मिलेगा और जो किसी से कहे, ''ख़ामोश रह'' तो उस ने भी कलाम किया और जिस ने कलाम किया उस का जुमुआ़ कामिल नहीं । फिर अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसे ही फ़रमाते हुए सुना ।'' (ابوداؤد، کتاب الصلوۃ، رقم ۱۰۵۱، ج۱، ص۳۹۲)

(434)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने दादा से रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जुमुआ़ के दिन मलाएका को मस्जिद के दरवाज़ों पर भेजा जाता है जो लोगों के आने का वक़्त लिखते हैं । जब इमाम मिम्बर पर आ जाता है तो सह़ीफ़े लपेट दिये जाते हैं और क़लम उठा लिये जाते हैं और मलाएका एक दूसरे से कहते हैं कि फुलां क्यूं नहीं आया ? फिर मलाएका **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करते हैं, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अगर वोह बन्दा रास्ता भटक गया है तो उसे रास्ता दिखा और अगर बीमार है तो उसे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा और अगर वोह तंगदस्त है तो उसे कुशा-दगी अ़त़ा फ़रमा ।'' (ابن خزیمۃ، باب ذکر دعاء الملئکۃ الخ، ج۳، ص۱۳۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ जुमुआ़ के लिये निकला तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने देखा कि तीन शख़्स मस्जिद में पहले से मौजूद हैं तो फ़रमाया, ''मैं चार में से चौथा हूं और चार में से चौथा शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (की रह़मत) से दूर नहीं, बेशक मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''क़ियामत के दिन लोग जुमुए़ के लिये जल्दी आने की तरतीब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बैठेंगे, सब से पहले आने वाला आगे होगा उस के बा'द दूसरा, फिर तीसरा और उस के बा'द चौथा और चार में से चौथा दूर नहीं होगा ।'' (ابن ماجہ، رقم ۱۰۹۴، ج۲، ص۱۴)

(435)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''जुमुआ़ के लिजे जाने में जल्दी किया करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जुमुए़ के दिन अहले जन्नत के लिये काफ़ूर के एक टीले पर तजल्ली फ़रमाया करेगा तो जुमुए़ के लिये जल्दी आने वाले लोग अपने जल्दी आने के ए'तिबार से

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कुरबत पाएंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें ऐसी करामत अ़ता फ़रमाएगा जो उन्हों ने उस से पहले कभी न देखी होगी। फिर वोह अपने अह्ल की त़रफ़ लौटेंगे और **अल्लाह** की अ़ता की हुई करामत अपने अह्ल पर ज़ाहिर करेंगे।''

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिद में दाख़िल हुए तो देखा कि दो शख़्स इन से पहले मस्जिद में नमाज़े जुमुआ़ के लिये ह़ाज़िर हैं तो ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''दो शख़्स मौजूद हैं और मैं तीसरा हूं और अगर **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा तो तीसरे में भी ब-र-कत अ़ता फ़रमाएगा।'' (الطبرانی فی الکبیر، رقم ۹۱۶۹، ج۹، ص۲۳۸)

शैख़ अबू त़ालिब मक्की رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''क़र्ने अव्वल में स-ह़री के वक़्त और फ़ज्र के बा'द रास्ते लोगों से भरे हुए होते थे और लोग चराग़ों की रोशनी में जूक़ दर जूक़ इस त़रह़ जामेअ़ मस्जिद की त़रफ़ जुमुआ़ के लिये जाया करते थे जिस त़रह़ वोह नमाज़े ईद के लिये जाते हैं और कहा गया है कि इस्लाम में जो पहली बिदअ़त राइज हुई वोह जुमुआ़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ सुब्ह़ सवेरे न जाना है।''

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''मुसल्मान यहूदो नसारा से ह़या क्यूं नहीं करते ? क्यूं कि वोह हफ़्ते और इतवार के दिन ख़रीदो फ़रोख़्त और कनीसा की त़रफ़ जाने में जल्दी करते हैं और दुन्या के त़लब गार बाज़ार की त़रफ़ नफ़अ़ और तिजारत के लिये जाने में जल्दी करते हैं तो आख़िरत के त़लब गार उन से सब्क़त क्यूं नहीं ले जाते ?''

जुमुआ़ के दिन सूरए आले इमरान पढ़ने का सवाब

(436)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो जुमुआ़ के दिन वोह सूरत पढ़े जिस में आले इमरान का तज़्किरा किया गया है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ुरूबे आफ़्ताब तक उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाता रहता है और उस के फ़िरिश्ते उस बन्दे के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते रहते हैं।'' (الطبرانی فی الکبیر، رقم ۱۱۰۰۲، ج۱۱، ص۴۰)

जुमुआ़ के दिन सूरए कह्फ़ पढ़ने का सवाब

(437)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो जुमुआ़ के दिन सूरए कह्फ़ पढ़े उस के लिये दो जुमुओं के दरमियान एक नूर रोशन कर दिया जाता है।'' जब कि एक रिवायत में है कि ''जो शबे जुमुआ़ को सूरए कह्फ़ पढ़े उस के और बैतुल अ़तीक़ के दरमियान एक नूर रोशन कर दिया जाता है।'' (شعب الایمان، رقم ۲۴۴۴، ج۲، ص۴۷۴)

शबे जुमुआ में सूरए यासीन पढ़ने का सवाब

(438)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने शबे जुमुआ सूरए यासीन की तिलावत की उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।''

(الترغیب والترہیب،رقم ۴،ج۱،ص۲۹۸)

शबे जुमुआ में सूरए दुख़ान पढ़ने का सवाब

(439)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने शबे जुमुआ में حٰمٓ الدُّخَانِ पढ़ी उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।'' (ترمذی،کتاب فضائل القرآن،رقم۲۸۹۸،ج۴،ص۴۰۷)

(440)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो जुमुआ के दिन या रात में حٰمٓ الدُّخَانِ पढ़ेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के लिये एक घर बनाएगा।'' (المعجم الکبیر،رقم۸۰۲۶،ج۸،ص۲۶۴)

जनाज़े का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ (پ۴، آل عمران:۱۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे मिलेंगे जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वोह मुराद को पहुंचा और दुन्या की ज़िन्दगी तो येही धोके का माल है ।

वसिय्यत कर के मरने का सवाब

(441)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो वसिय्यत कर के दुन्या से रुख़्सत हुवा वोह सीधे रास्ते और सुन्नत पर मरा और तक़्वा और शहादत पर मरा और मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर फ़ौत हुवा ।''

(ابن ماجۃ، کتاب الوصایا، رقم ۲۷۰۱، ج۳، ص۳۰۴)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

अल्लाह तआला से मुलाक़ात को पसन्द करने का सवाब

(442)...... हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलना पसन्द करता है **अल्लाह** उस से मिलना पसन्द फ़रमाता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलना पसन्द नहीं करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मिलना पसन्द नहीं फ़रमाता है।''

(مسلم،کتاب الذکر والدعاء،رقم ۲۶۸۳،ص۱۴۴۱)

(443)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलना पसन्द करता है **अल्लाह** उस से मिलना पसन्द फ़रमाता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलना ना पसन्द करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मिलना ना पसन्द फ़रमाता है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या इस से मुराद मौत को ना पसन्द करना है क्यूं कि हम में से हर एक मौत को ना पसन्द करता है ?''

फ़रमाया, ''ऐसा नहीं बल्कि मोमिन को जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत और उस की रिज़ा और उस की जन्नत की बिशारत दी जाती है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलना पसन्द करता है और **अल्लाह** तआला उस से मिलना पसन्द फ़रमाता है और काफ़िर को जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और उस की ना राज़गी की ख़बर दी जाती है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलना ना पसन्द करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से मिलना ना पसन्द फ़रमाता है।'' (مسلم،کتاب الذکر والدعاء،رقم ۲۶۸۴،ص۱۴۴۱)

(444)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जब मेरा बन्दा मुझ से मिलना पसन्द करता है तो मैं उस से मिलना पसन्द फ़रमाता हूं और जब वोह मुझ से मुलाक़ात को ना पसन्द करता है तो मैं उस से मुलाक़ात को ना पसन्द करता हूं।''

(صحیح البخاری،کتاب التوحید،باب قول اللہ تعالی لایریدون ان یبدلوا..الخ،رقم ۷۵۰۴،ج۴،ص۵۷۴)

(445)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें बताऊं कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोमिनों से सब से पहले क्या फ़रमाएगा और मुअमिनीन **अल्लाह** की बारगाह में सब से पहले क्या अ़र्ज़ करेंगे ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन से फ़रमाएगा

क्या तुम मेरी मुलाक़ात को पसन्द करते थे ?'' तो वोह अ़र्ज़ करेंगे, ''हां ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ !'' वोह पूछेगा, ''क्यूं ?'' मुअमिनीन अ़र्ज़ करेंगे कि ''हम तेरे अ़फ़्व और मग़्फ़िरत की उम्मीद रखा करते थे।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''तुम्हारे लिये मेरी मग़्फ़िरत वाजिब हो गई।''

(مسند احمد، رقم ۲۲۱۳۳، ج۸، ص ۲۴۸)

कलिमा पढ़ कर मरने वाले का सवाब

(446)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस का आख़िरी कलाम لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ होगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।''

(المستدرک، کتاب الدعاء والذکر، رقم ۱۸۸۵، ص ۱۷۵)
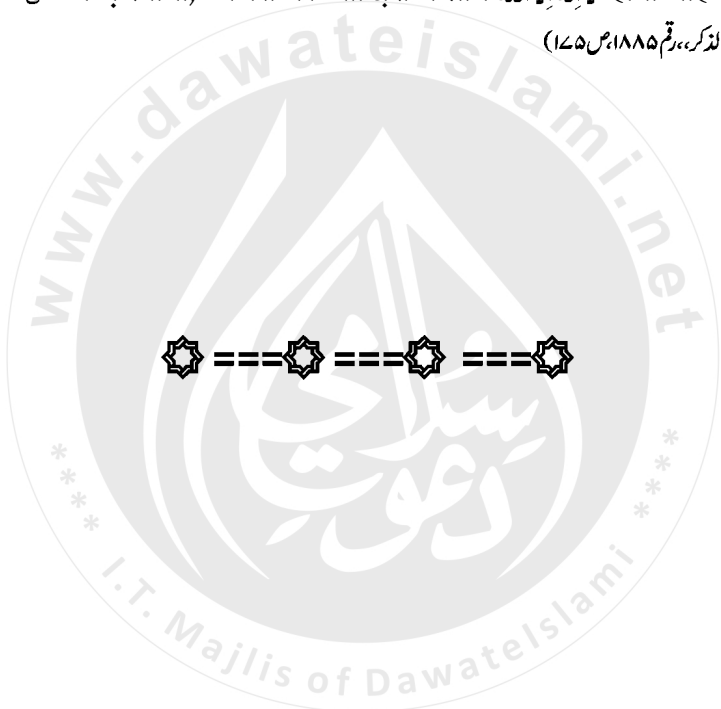
नमाज़ या तदफ़ीन तक जनाज़े में शरीक होने का सवाब

(447)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आज तुम में से किस ने रोज़ा रखा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया ''मैं ने ।'' फिर फ़रमाया, ''तुम में से आज मिस्कीन को किस ने खाना खिलाया ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ ने अ़र्ज़ किया ''मैं ने ।'' फिर फ़रमाया, ''तुम में से आज मरीज़ की इयादत किस ने की ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया ''मैं ने ।'' फिर फ़रमाया, ''आज तुम में से जनाज़े के साथ कौन गया ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया ''मैं ।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स में येह चार ख़स्लतें जम्अ़ हो जाएं वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصیام، رقم ۴۹۴۶، ج ۳، ص ۳۸۳)

(448)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो नमाज़ अदा करने तक जनाज़े में शरीक रहा उस के लिये एक क़ीरात़ सवाब है और जो तदफ़ीन तक शरीक रहा उस के लिये दो क़ीरात़ सवाब है ।'' पूछा गया ''दो क़ीरात़ क्या हैं ?'' फ़रमाया, ''दो अ़ज़ीम पहाड़ों की मिस्ल ।''

जब कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है ''इन में से छोटा पहाड़ ज-बले उहुद जितना है'' और बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है ''जो किसी मुसल्मान के जनाज़े में ईमान और अज्रो सवाब की निय्यत से शरीक हुवा और नमाज़े जनाज़ा अदा करने और तदफ़ीन तक जनाज़े के साथ रहा तो दो क़ीरात़ सवाब ले कर लौटेगा उन में से हर क़ीरात़ उहुद पहाड़ के बराबर होगा और जो नमाज़ पढ़ कर तदफ़ीन से पहले लौट आया तो वोह एक क़ीरात़ सवाब ले कर लौटेगा ।''

(مسلم، کتاب الجنائز، باب فضل الصلوۃ علی الجنازۃ، رقم ۹۴۵، ص ۴۷۱)

(449)...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास बैठा हुवा था कि अचानक साह़िबे मक़्सूरा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''ऐ अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ क्या फ़रमा रहे हैं ?'' वोह कहते हैं कि मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''जो शख़्स मय्यित के साथ उस के घर से निकला और उस पर नमाज़ पढ़ी और तदफ़ीन तक उस के साथ रहा तो उस के लिये दो क़ीरात़ सवाब है और हर क़ीरात़ उहुद पहाड़ के बराबर है और जो नमाज़ पढ़ कर लौट आया उस के लिये उहुद पहाड़ जितना एक क़ीरात़ है ।''

तो ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस क़ौल के बारे में पूछने के लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास भेजा और फ़रमाया, ''मुझे बताना कि उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने क्या जवाब दिया है।''

इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने मस्जिद में पड़े हुए पथ्थरों में से एक पथ्थर को उठाया और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लौटने तक उसे अपने हाथ में घुमाते रहे। फिर जब ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वापस आ कर बताया कि उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सच कहते हैं तो ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अपने हाथ में मौजूद पथ्थर ज़मीन पर मारा और फ़रमाया, ''(अफ़्सोस) हम ने बहुत सारे क़ीरात़ ज़ाएअ़ कर दिये।'' (مسلم،کتاب الجنائز،باب فضل الصلوۃ علی الجنازۃ،رقم ۹۴۵،ص۴۷۲)

(450)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो नमाज़ अदा करने तक जनाज़े के साथ रहा उस के लिये एक क़ीरात़ (अज्र) है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह हमारे क़ीरात़ों जैसा है?'' इर्शाद फ़रमाया, ''नहीं बल्कि उहुद पहाड़ की मिस्ल या उस से भी कहीं बड़ा।''

(مسند احمد،رقم ۴۴۵۳،ج۲،ص۲۰۰)

(451)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दे को अपनी मौत के बा'द सब से पहले जो जज़ा दी जाती है वोह येह है कि उस के जनाज़े में शरीक तमाम अफ़राद की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' (مجمع الزوائد،کتاب الجنائز،باب اتباع الجنازۃ،رقم ۴۱۳۴،ج۳،ص۱۳۲)

=== === ===

नमाजे़ जनाज़ा में सो मुसल्मान या चालीस मुसल्मान या तीन सफ़ें होने की फ़ज़ीलत

(452)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मय्यित पर मुसल्मानों का एक गुरौह नमाज़ पढ़ ले और उस गुरौह की ता'दाद सो को पहुंच चुकी हो और उन में से हर एक मय्यित के लिये इस्तिग़फ़ार करे तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' (مسلم، کتاب الجنائز، رقم ۹۴۷، ص ۴۷۳)

(453)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मय्यित पर सो मुसल्मान नमाज़ पढ़ें, **अल्लाह** तआ़ला उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، رقم ۴۱۸۹، ص ۱۴۵)

(454)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन फ़र्रूख़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि एक जनाज़े पर ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल मलीह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने हमें नमाज़ पढ़ाई। हम ने गुमान किया कि शायद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने तक्बीर कह दी लेकिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने हमारी त़रफ़ रुख़ कर के फ़रमाया, ''अपनी सफ़ें दुरुस्त कर लो और मय्यित के लिये अच्छी सिफ़ारिश करो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मलीह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मुझे उम्मुल मुअमिनीन मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की त़रफ़ से येह ख़बर पहुंची है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मय्यित पर लोगों का एक गुरौह नमाज़ पढ़ ले तो उन लोगों की सिफ़ारिश मय्यित के ह़क़ में क़बूल कर ली जाती है।'' (ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन फ़र्रूख़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि) मैं ने सय्यिदुना अबुल मलीह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से उस गुरौह की ता'दाद के बारे में पूछा तो उन्हों ने फ़रमाया चालीस। (نسائی، کتاب الجنائز، ج ۲، ص ۷۵)

(455)...... ह़ज़रते सय्यिदुना कुरैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के बेटे का इन्तिक़ाल हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने मुझ से फ़रमाया, ''ऐ अबू कुरैब! ज़रा देखो कितने लोग जम्अ़ हुए हैं?'' मैं ने जा कर देखा तो काफ़ी लोग जम्अ़ हो चुके थे। मैं ने उन्हें इस के बारे में बताया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ''तुम्हारा क्या ख़याल है कि वोह चालीस हो जाएंगे?'' मैं ने कहा, ''जी हां।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि ''(अब) मय्यित को ले चलो क्यूं कि मैं ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''जो मुसल्मान मर जाए और उस की मय्यित पर चालीस मुसल्मान नमाज़ पढ़ें तो **अल्लाह** तआ़ला उन की सिफ़ारिश मय्यित के ह़क़ में क़बूल फ़रमाता है।'' (مسلم، کتاب الجنائز، رقم ۹۴۸، ص ۴۷۳)

(456)...... हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन हुबैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो मुसलमान मर जाए और उस पर मुसलमानों की तीन सफ़ें नमाज़ पढ़ें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत वाजिब फ़रमा देता है।'' (ابوداؤد، کتاب الجنائز، رقم ۳۱۶۶، ج۳، ص۲۷۵)

सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का येह मा'मूल था जब जनाज़े के साथ लोग कम होते तो उन्हें इस ह़दीसे पाक की वजह से तीन सफ़ों में तक़्सीम फ़रमा दिया करते थे।

✡ ===✡ ===✡ ===✡

मरने वाले को अच्छे लफ़्ज़ों से याद करने का सवाब

(457)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक जनाज़ा गुज़रा तो उस की अच्छे लफ़्ज़ों से ता'रीफ़ की गई तो सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इस पर वाजिब हो गई, इस पर वाजिब हो गई, इस पर वाजिब हो गई।'' फिर एक जनाज़ा गुज़रा तो उसे बुरे लफ़्ज़ों से याद किया गया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस पर वाजिब हो गई, इस पर वाजिब हो गई, इस पर वाजिब हो गई।''

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! एक जनाज़ा गुज़रा और उसे अच्छे लफ़्ज़ों में याद किया गया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस पर वाजिब हो गई, इस पर वाजिब हो गई, वाजिब हो गई, फिर एक जनाज़ा गुज़रा उसे बुरे लफ़्ज़ों से याद किया गया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया वाजिब हो गई वाजिब हो गई वाजिब हो गई ? (या'नी येह क्या माजरा है ?)'' तो रसूले अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम किसी मय्यित की ता'रीफ़ करते हो तो उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है और जब तुम किसी मय्यित की बुराई बयान करते हो तो उस पर जहन्नम वाजिब हो जाती है, तुम लोग ज़मीन पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के गवाह हो।'' (بخاری، کتاب الجنائز، رقم ۱۳۶۷، ج۱، ص۴۶۰)

(458)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान का इन्तिक़ाल हो जाए और उस के चालीस क़रीबी पड़ोसी गवाही दें कि वोह उस में भलाई के सिवा कुछ नहीं जानते, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''बेशक मैं ने इस शख़्स के बारे में तुम्हारे इ़ल्म को क़बूल कर लिया और इस के जो गुनाह तुम नहीं जानते थे वोह मुआ़फ़ फ़रमा दिये।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، فصل فی الموت، رقم ۳۰۱۵، ج۵، ص۱۲)

(459)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने रब عَزَّوَجَلَّ से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि, ''जिस मुसल्मान की मय्यित पर उस के क़रीबी पड़ोसियों में से तीन घर भलाई की गवाही दें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''बेशक मैं ने अपने बन्दों की उन के इ़ल्म के मुताबिक़ गवाही क़बूल फ़रमा ली और अपने इ़ल्म के मुताबिक़ उस मय्यित की बख़्शिश फ़रमा दी।''

(مسند امام احمد، رقم ۸۹۹۹، ج۳، ص۳۳۰)

(460)...... हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान के लिये चार अफ़राद भलाई की गवाही दें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम ने अ़र्ज़ किया, ''और तीन ?'' फ़रमाया, ''और तीन (भी)।'' फिर हम ने अ़र्ज़ किया, ''और दो ?'' फ़रमाया, ''और दो (भी)।'' फिर हम ने एक के बारे में नहीं पूछा। (صحیح بخاری، کتاب الجنائز، ۸۵باب ثناء الناس علی المیت رقم ۱۳۶۸، ج۱، ص۴۶۱)

(461)...... हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन रबीआ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब बन्दा मर जाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की बुराई को जानता है जब कि लोग (अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़) उस की भलाई बयान करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मलाएका से फ़रमाता है, "बेशक मैं ने अपने बन्दों की गवाही अपने उस बन्दे के ह़क़ में क़बूल फ़रमा ली और उस के जो गुनाह मेरे इ़ल्म में हैं मुआफ़ फ़रमा दिये ।" (مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب الثناء علی المیت، رقم ۳۹۶۰، ج۳، ص۸۴)

ता'ज़ियत करने का सवाब

(462)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करेगा उस के लिये उस मुसीबत ज़दा जितना सवाब है ।" (سنن الترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی اجر من عزی مصابا، رقم ۱۰۷۵، ج۲، ص۳۳۸)

(463)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो बन्दए मोमिन अपने किसी मुसीबत ज़दा भाई की ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे करामत का जोड़ा पहनाएगा ।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عزی مصابا، رقم ۱۶۰۱، ج۲، ص۲۶۸)

(464)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो किसी ऐसी औ़रत से ता'ज़ियत करेगा जिस का बच्चा गुम हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उसे एक चादर पहनाएगा ।"

(جامع الترمذی، کتاب الجنائز، باب اٰخر فی فضل التعزیۃ، رقم ۱۰۷۸، ج۲، ص۳۳۹)

(465)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो किसी ग़मज़दा शख़्स से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का लिबास पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा और जो किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के जोड़ों में से दो ऐसे जोड़े पहनाएगा जिन की क़ीमत (सारी) दुन्या भी नहीं हो सकती ।" (المعجم الاوسط طبرانی، رقم ۹۲۹۲، ج۶، ص۴۲۹)
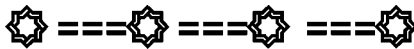
===   ===   ===

मय्यित के घर वालों के लिये तरजीअ़ (या'नी اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ) कहने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया,

اَلَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَصَابَتۡہُمۡ مُّصِیۡبَۃٌ ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓئِکَ عَلَیۡہِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّہِمۡ وَ رَحۡمَۃٌ ۟ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُہۡتَدُوۡنَ ﴿۱۵۷﴾ (پ۲،البقرۃ:۱۵۶،۱۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कि जब उन (सब्र करने वालों) पर कोई मुसीबत पड़े तो कहें हम **अल्लाह** के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना येह लोग हैं जिन पर उन के रब की दुरूदें हैं और रह़मत और येही लोग राह पर हैं।

(466)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا **अल्लाह** तआ़ला के इस क़ौल ''اَلَّذِیۡنَ اِذَاۤ اَصَابَتۡہُمۡ مُّصِیۡبَۃٌ ۙ قَالُوۡۤا اِنَّا لِلّٰہِ وَ اِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ ﴿۱۵۶﴾ اُولٰٓئِکَ عَلَیۡہِمۡ صَلَوٰتٌ مِّنۡ رَّبِّہِمۡ وَ رَحۡمَۃٌ ۟ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُہۡتَدُوۡنَ ﴿۱۵۷﴾ (پ۲،البقرۃ:۱۵۶،۱۵۷)'' की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जब मोमिन मेरे किसी हुक्म के सामने सरे तस्लीम ख़म कर लेता है और जब किसी मुसीबत में मुब्तला हो तो اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ'' (हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माल हैं और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है।)'' पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये तीन अच्छी ख़स्लतें लिखता है, (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दुरूद भेजता है, (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाता है, (3) और उसे हिदायत के रास्ते पर साबित क़-दमी अ़त़ा फ़रमाता है।

और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो मुसीबत के वक़्त اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ'' कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की परेशानी दूर फ़रमा देता है और उस के काम का अन्जाम अच्छा फ़रमाता है और उसे ऐसा बदल अ़त़ा फ़रमाता है जिस पर वोह राज़ी हो जाता है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۱۳۰۲۷، ج۱۲، ص۱۹۷)

(467)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरी उम्मत को एक ऐसी चीज़ अ़त़ा की गई जो पिछली किसी उम्मत को नहीं दी गई और वोह चीज़ मुसीबत के वक़्त ''اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ'' कहना है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۱۲۴۱۱، ج۱۲، ص۳۲)

(468)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा बिन्ते हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا अपने वालिद इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत करती हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे कोई मुसीबत पहुंची और वोह मुसीबत को याद कर के ''اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ'' कहे अगर्चे उस मुसीबत को कितना ही ज़माना गुज़र चुका हो तो **अल्लाह** उस के लिये वोही सवाब लिखेगा जो मुसीबत के दिन लिखा था।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر علی المصیبۃ، رقم ۱۶۰۰، ج۲، ص۲۶۸)

(469)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब किसी आदमी के बच्चे का इन्तिक़ाल हो जाता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाता है क्या तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह क़ब्ज़ कर ली ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''हां।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है ''क्या तुम ने उस के दिल का टुकड़ा छीन लिया ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''हां।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''तो फिर मेरे बन्दे ने क्या कहा ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''उस ने तेरी ह़म्द की और ''اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ा।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''मेरे उस बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बनाओ और उस का नाम **बैतुल ह़म्द** रखो।'' (سنن الترمذی،کتاب الجنائز،باب فضل المصیبۃ اذا احتسب،رقم ۱۰۲۳،ج۲،ص۳۱۳)

(470)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस बन्दे को मुसीबत पहुंचे फिर वोह येह दुआ़ पढ़ ले, ''اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ اَللّٰھُمَّ اَؤْجُرْنِیْ فِیْ مُصِیْبَتِیْ وَاَخْلِفْ لِیْ خَیْرًا مِّنْھَا'' हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ लौटना है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरी मुसीबत में अज्र अ़त़ा फ़रमा और मुझे इस से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमा।''

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मुसीबत का सवाब अ़त़ा फ़रमाता है और उसे उस से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमाता है।

ह़ज़रते उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ''जब ह़ज़रते अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने (दिल में) कहा कि ''अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से बेहतर मुसल्मान कौन होगा ? क्यूं कि उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ सब से पहले हिजरत की।'' फिर मैं ने येह दुआ़ पढ़ी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सूरत में मुझे उन से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमा दिया।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से किसी को मुसीबत पहुंचे तो उसे चाहिये कि येह दुआ़ पढ़े :

''اِنَّالِلّٰہِ وَاِنَّااِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ اَللّٰھُمَّ عِنْدَکَ اَحْتَسِبُ مُصِیْبَتِیْ فَأْجُرْنِیْ بِھَا وَاَبْدِلْنِیْ خَیْرًا مِّنْھَا''

हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी मुसीबत पर तुझ से अज्र की उम्मीद रखता हूं मुझे इस पर अज्र अ़त़ा फ़रमा और इस से बेहतर बदला अ़त़ा फ़रमा।'' (صحیح مسلم،کتاب الجنائز،باب مایقال عند المصیبۃ،رقم ۹۱۸،ص۴۵۷)

۞ === ۞ === ۞ === ۞
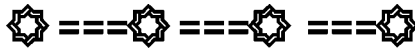
रिज़ाए इलाही عَزَّ وَجَلَّ के लिये मय्यित को गुस्ल देने, कफ़न पहनाने और क़ब्र खोदने का सवाब

(471)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मय्यित को गुस्ल दिया और कफ़न पहनाया और ख़ुश्बू लगाई और उसे कांधा दिया और उस पर नमाज़ पढ़ी और उस का कोई राज़ ज़ाहिर न किया तो वोह गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।'' (ابن ماجہ، کتاب الجنائز، رقم ۱۴۶۲، ص ۲۰۱)

(472)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मय्यित को गुस्ल दिया और इस मुआ़–मले में अमानत को अदा किया और मय्यित के किसी राज़ को इफ़्शा न किया तो वोह गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।'' (مسند امام احمد، رقم ۲۳۹۳۵، ج ۹، ص ۴۳۲)

(473)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मय्यित को गुस्ल दिया फिर उस की पर्दा पोशी की तो **अल्लाह** उस के गुनाहों को धो देगा और अगर उस ने मय्यित को कफ़्नाया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे सुन्दुस (या'नी निहायत बारीक और नफ़ीस कपड़े) का लिबास पहनाएगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۸۰۷۸، ج ۸، ص ۲۸۱)

वज़ाह़त :

मय्यित की पर्दा पोशी से मुराद येह है कि बा'ज़ अवक़ात मय्यित का चेहरा सियाह हो जाता है या उस की शक्ल तब्दील हो जाती है या इस नौइय्यत की कोई दूसरी बुरी चीज़...... तो उसे ज़ाहिर न किया जाए और अगर किसी मय्यित के चेहरे पर नूर या मुस्कुराहट ज़ाहिर हो तो उस का ज़िक्र करना मुस्तह़ब है ख़ुसूसन जब कि मय्यित सालिह़ीन में से हो। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(474)...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मय्यित को गुस्ल दिया और उस की पर्दा पोशी की तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चालीस मरतबा उस की मग़्फ़िरत

फ़रमाएगा और जिस ने किसी मय्यित को कफ़न पहनाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के सुन्दुस और इस्तब्रक़ (निहायत बारीक और नफ़ीस कपड़ों) का लिबास पहनाएगा और जिस ने मय्यित के लिये क़ब्र खोदी फिर उसे क़ब्र में लिटाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे एक ऐसे घर की सूरत में सवाब अ़ता फ़रमाएगा जिस में उसे क़ियामत तक रखेगा।" (المستدرک للحاکم،کتاب الجنائز،رقم ۱۳۸۰،ج۱،ص۶۹۰)

(475)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क़ब्रों की ज़ियारत किया करो कि तुम्हें आख़िरत याद रहेगी और मुर्दों को ग़ुस्ल दिया करो क्यूं कि बे जान जिस्म को छूने से नसीह़त ह़ासिल होती है, और नमाज़े जनाज़ा अदा किया करो कि शायद येह अ़मल तुम्हें ग़मज़दा कर दे और ग़मगीन लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत के साए में हर भलाई लूट लेते हैं।"

(المستدرک للحاکم،کتاب الجنائز،رقم ۱۴۳۵،ج۱،ص۷۱۱)

(476)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने कोई क़ब्र खोदी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा...... और जिस ने किसी मय्यित को ग़ुस्ल दिया अपने गुनाहों से ऐसा पाको साफ़ हो जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था...... और जिस ने किसी मय्यित को कफ़न पहनाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के ह़ुल्ले या'नी जोड़े पहनाएगा...... और जिस ने किसी ग़मज़दा से ता'ज़ियत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तक़्वा का ह़ुल्ला पहनाएगा और रूहों के दरमियान उस की रूह़ पर रह़मत फ़रमाएगा...... और जिस ने किसी मुसीबत ज़दा से ता'ज़ियत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के ह़ुल्लों में से दो ऐसे ह़ुल्ले पहनाएगा जिन की क़ीमत दुन्या भी नहीं बन सकती...... और जो जनाज़े के साथ चला और तदफ़ीन तक साथ रहा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ऐसे तीन क़ीरात़ सवाब लिखेगा जिन में से हर क़ीरात़ ज-बले उह़ुद से बड़ा होगा...... और जिस ने किसी यतीम या मोह़ताज की कफ़ालत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा और उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।" (مجمع الزوائد،کتاب الجنائز،رقم ۴۰۶۶،ج۳،ص۱۱۴)

=== === ===
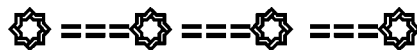
हालते सफ़र में मरने वाले का सवाब

(477)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मदीनए मुनव्वरह में एक ऐसे शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा जो मदीने ही में पैदा हुवा था। जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस का जनाज़ा पढ़ाया, फिर फ़रमाया, ''काश ! येह अपनी पैदाइश गाह के इलावा कहीं और वफ़ात पाता।'' सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह क्यूं ?'' फ़रमाया, ''जब बन्दा ग़रीबुल वतनी में मरता है तो उस की पैदाइश गाह से इन्तिक़ाल की जगह तक के फ़ासिले को नापा जाता है और उस मय्यित को जन्नत में उतनी जगह अता की जाती है।''

(ابن ماجہ، کتاب الجنائز، رقم ۱۶۱۴، ج۲، ص۲۷۶)

(478)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ग़रीबुल वतनी की मौत शहादत है।''

(ابن ماجہ، کتاب الجنائز، رقم ۱۶۱۳، ج۲، ص۲۷۵)

(479)...... हारून बिन **अन्तरह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन फ़रमाया, ''तुम शहीद किसे शुमार करते हो ?'' हम ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उसे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारा जाए।'' फ़रमाया, ''इस तरह तो मेरी उम्मत में शहीद बहुत कम होंगे।'' (फिर फ़रमाया) ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया जाए वोह शहीद है और जो बुलन्दी से गिर कर मरे वोह शहीद है और दर्दे ज़ेह से मर जाने वाली औरत शहीद है और समुन्दर में डूब जाने वाला शहीद है सुल (या'नी फेफड़ों में ज़ख़्म हो जाने) की बीमारी में मुब्तला हो कर मरने वाला शहीद है और जल कर मर जाने वाला शहीद है और ग़रीबुल वतनी में मर जाने वाला शहीद है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، رقم ۹۵۵۴، ج۵، ص۵۴۶)
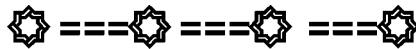
ताऊ़न में मुब्तला हो कर मरने वाले का सवाब

(480)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''ताऊ़न हर मुसल्मान के लिये शहादत है।'' (بخاری، کتاب الطب، رقم ۵۷۳۲، ج۴، ص۳۰)

(481)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ताऊ़न के बारे में सुवाल किया तो फ़रमाया, ''येह एक अ़ज़ाब है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से पिछली उम्मतों पर भेजा करता था फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसे मुअमिनीन के लिये रह़मत बना दिया लिहाज़ा जो बन्दा किसी शहर में हो और वहां ताऊ़न की वबा फैल जाए तो वोह वहीं ठहरा रहे और सब्र करे और सवाब की उम्मीद करते हुए उस शहर से न निकले और येह ज़ेहन नशीन रखे कि जो कुछ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के लिये लिख दिया है, उसे पहुंच कर रहेगा तो उसे एक शहीद का सवाब दिया जाएगा।'' (بخاری، کتاب الطب، باب اجر الصابرین فی الطاعون، رقم ۵۷۳۴، ج۴، ص۳۰)

(482)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरी उम्मत की तबाही ता'न और ताऊ़न से होगी।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ता'न (या'नी नेज़ा बाज़ी) को तो हम ने जान लिया, येह ताऊ़न क्या है?'' फ़रमाया ''येह तुम्हारे दुश्मन जिन्नों के नेज़े हैं और इन दोनों में शहादत है।'' (مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۱۹۵۴۵، ج۷، ص۱۳۱)

(483)...... हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा या'नी मेरे वालिद साहिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सामने ताऊ़न का ज़िक्र किया गया तो फ़रमाया कि हम ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस के बारे में सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''येह तुम्हारे दुश्मन जिन्नों के नेज़े हैं और येह तुम्हारे लिये शहादत है।'' (مستدرک، کتاب الایمان، باب الطاعون شہادۃ، رقم ۱۶۴، ج۴، ص۲۱۹)

(484)......हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''शु-हदा और अपने घरों में मरने वाले,

दोनों **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ताऊ़न में मुब्तला हो कर मरने वालों के बारे में झगड़ेंगे। शु–हदा कहेंगे, ''येह (या'नी ताऊ़न से मरने वाले) भी ऐसे ही क़त्ल किये गए जैसे हमें क़त्ल किया गया जब कि अपने बिस्तरों पर मरने वाले कहेंगे येह भी हमारे भाई हैं और हमारी त़रह़ अपने बिस्तरों पर मरे।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि ''इन के ज़ख़्मों की त़रफ़ देखो अगर वोह मक्तूलीन के ज़ख़्मों की त़रह़ हों तो येह उन्ही में से हैं और उन के साथ हैं।'' जब उन के ज़ख़्मों को देखा जाएगा तो वोह शु–हदा के ज़ख़्मों के मुशाबेह होंगे।'' (سنن نسائی، کتاب الجہاد، ج۳،ص۳۷)

जब कि एक रिवायत में है कि ''जब शु–हदा और ताऊ़न के ज़रीए़ मरने वालों को लाया जाएगा तो ताऊ़न वाले कहेंगे कि ''हम शु–हदा हैं।'' तो उन से कहा जाएगा, ''अगर तुम्हारे ज़ख़्म शु–हदा के ज़ख़्मों की त़रह़ हैं और उन से मुश्क की ख़ुश्बू की मिस्ल ख़ून बह रहा है तो तुम शु–हदा में से हो जब वोह देखेंगे तो अपने ज़ख़्मों को वैसा ही पाएंगे।'' (طبرانی کبیر، رقم ۲۹۲ ج۱۷،ص۱۱۹)

=== === ===
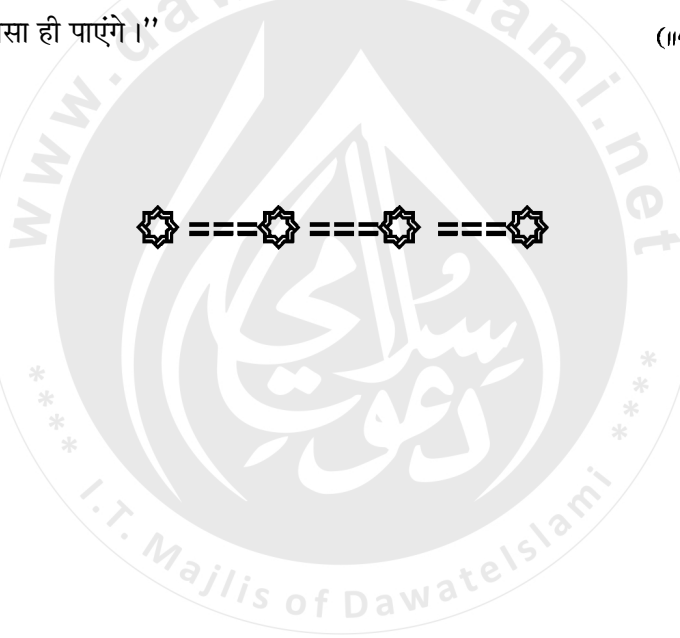
पेट की बीमारी और डूब कर और मल्बे तले दब कर मरने वाले का सवाब

(485)...... हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ **सबीई** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन सुरद ने ख़ालिद बिन उ़र-फ़ता़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा, ''क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए नहीं सुना कि ''जिस का पेट की बीमारी से इन्तिक़ाल हुवा उसे क़ब्र में अ़ज़ाब न होगा ?'' तो उन्हों ने जवाब दिया, ''हां, सुना है ।'' (ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الشھداء من ھم، رقم ۱۰۶۶، ج۲، ص۳۳۴)

(486)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम शु-हदा में किसे शुमार करते हो ?'' सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारा जाए वोह शहीद है तो नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''इस त़रह़ तो मेरी उम्मत में शहीद बहुत कम होंगे ।'' तो सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया ''तो फिर शहीद कौन है या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारा जाए वोह शहीद है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मर जाए वोह शहीद है और जो ता़ऊ़न में मुब्तला हो कर मर जाए वोह भी शहीद है और जो पेट की बीमारी में मुब्तला हो कर मरे वोह भी शहीद है ।''

इब्ने मुक़्सिम ने फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूं कि अबू सालेह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह भी फ़रमाया था कि ''जो समुन्दर में डूब कर मरे वोह भी शहीद है ।'' एक और रिवायत में है कि शु-हदा पांच हैं (1) ता़ऊ़न में मुब्तला हो कर मरने वाला (2) पेट की बीमारी के सबब मरने वाला (3) समुन्दर में डूब कर मरने वाला (4) मल्बे तले दब कर मरने वाला (5) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़त्ल किया जाने वाला । (مسلم، کتاب الامارۃ، باب بیان الشھداء، رقم ۱۹۱۴، ص۱۰۶۰)

(487)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इयादत के लिये तशरीफ़ लाए तो उन्हें नज़्अ़ के आ़लम में पाया फिर उन्हें पुकारा तो उन्हों ने जवाब न दिया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ पढ़ा और फ़रमाया, ''ऐ अबू रबीअ़ ! हम तुझ से पीछे रह गए ।'' तो औ़रतें चीख़ चीख़ कर रोने लगीं । जब हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़तीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

उन औरतों को ख़ामोश कराने लगे तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि ''इन्हें छोड़ दो, जब वाजिब हो तो फिर कोई रोने वाली न रोए।'' सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ की ''वुजूब से क्या मुराद है ?'' फ़रमाया ''मौत।'' उन की बेटी ने कहा, ''ख़ुदा की क़सम ! मैं उम्मीद करती हूं कि तुम शहीद हो क्यूं कि तुम जिहाद की तय्यारी कर चुके थे।''

तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें इन की निय्यत के मुताबिक़ सवाब अ़ता फ़रमा दिया है और तुम शहादत किसे कहते हो ?'' सहाबए किराम ने अ़र्ज़ किया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारे जाने को।'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारे जाने के इलावा भी सात शहादतें हैं,

(1) पेट की बीमारी में मुब्तला हो कर मरने वाला शहीद है (2) समुन्दर में डूब कर मरने वाला शहीद है (3) निमोनिया में मुब्तला हो कर मरने वाला शहीद है (4) और मल्बे तले दब कर मरने वाला शहीद है (5) और मरने वाली ह़ामिला औ़रत शहीद है। (ابوداؤد، کتاب الجنائز، رقم ۳۱۱۱، ج ۳، ص ۲۵۲)

(488)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''पांच लोग शहीद हैं (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारा जाने वाला शहीद है (2) और समुन्दर में डूब कर मरने वाला शहीद है (3) और पेट की बीमारी में मुब्तला हो कर मरने वाला शहीद है (4) और ताऊ़न से मरने वाला शहीद है (5) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में दर्दे ज़ेह से मरने वाली औ़रत भी शहीद है।'' (نسائی، کتاب الجہاد، ج ۳، ص ۳۷)

(489)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि हम अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इयादत के लिये गए तो उन पर ग़शी त़ारी हो गई हम ने कहा, ''**अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, काश ! तुम्हारा इन्तिक़ाल किसी और त़रह़ से हो क्यूं कि हम तुम्हारे लिये शहादत की उम्मीद रखते हैं।'' अभी हम येही गुफ़्त-गू कर रहे थे कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''तुम किस चीज़ को शहादत शुमार करते हो ?''

जब लोग ख़ामोश रहे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बात का जवाब क्यूं नहीं देते ?'' फिर खुद ही बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया ''हम क़त्ल को शहादत समझते हैं।'' तो सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस त़रह़ तो मेरी उम्मत में शु-हदा बहुत कम होंगे, बेशक क़त्ल में शहादत है और त़ाऊ़न में शहादत है और पेट की बीमारी में शहादत है और डूब कर मरने में शहादत है और दर्दे ज़ेह में जिस औ़रत के पेट का बच्चा उसे मार दे इस में भी शहादत है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الجہاد، رقم۹، ج۲، ص۲۱۸)

(490)...... ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे भतीजे जब्र अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की इ़यादत की तो उस के घर वाले उस पर रोने लगे। उन्हें रोता देख कर ह़ज़रते जब्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा, ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी आवाज़ों से ईज़ा न पहुंचाओ।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तक तुम ज़िन्दा हो इन्हें रोने दो और जब मौत आ जाए तो इन्हें चाहिये कि ख़ामोश हो जाएं।'' बा'ज़ लोगों ने जब्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा, ''हम नहीं समझते थे कि तुम्हारी मौत बिस्तर पर होगी बल्कि हमारा तो ख़याल येह था कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करते हुए शहीद किये जाओगे।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या शहादत सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मारे जाने को कहते हैं ? इस त़रह़ तो मेरी उम्मत में शु-हदा बहुत कम होंगे बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में मरना भी शहादत है, पेट की बीमारी में मुब्तला हो कर मरना भी शहादत है और त़ाऊ़न में मुब्तला हो कर मरना भी शहादत है और दर्दे ज़ेह में मुब्तला हो कर मरना भी शहादत है और जल कर मरना भी शहादत और डूब कर मरना भी शहादत है और निमोनिया में मुब्तला हो कर मरना भी शहादत है।''

(طبرانی کبیر، رقم۵۶۰۷، ج۵، ص۶۷)
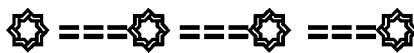
जान व माल और इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त करते हुए मरने का सवाब

(491)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया ''आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या फ़रमाते हैं कि अगर कोई मेरा माल लूटना चाहे ? (तो मैं क्या करूं)'' इर्शाद फ़रमाया, ''उसे अपना माल मत दो ।'' उस ने अर्ज़ किया, ''अगर वोह मेरे साथ क़िताल करे तो ?'' फ़रमाया, ''तुम भी उस के साथ क़िताल करो ।'' उस ने अर्ज़ किया, ''अगर उस ने मुझे क़त्ल कर दिया तो ?'' फ़रमाया, ''तुम शहीद हो ।'' उस ने दोबारा अर्ज़ किया, ''अगर मैं ने उसे क़त्ल कर दिया तो ?'' फ़रमाया, ''तो वोह जहन्नम में है ।'' (مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان من قصد اخذ الخ، رقم ۱۴۰، ص ۸۴)

(492)...... हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अपने माल की हिफ़ाज़त करते हुए मारा जाए वोह शहीद है ।'' एक और रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस का माल बिग़ैर हक़ के लूटा जाए तो उसे चाहिये कि वोह क़िताल करे और अगर उसे क़त्ल कर दिया जाए तो वोह शहीद है ।''

(ترمذی، کتاب الدیات، باب ماجاء فی من قتل دون مالہ الخ، رقم ۱۴۲۴، ج ۳، ص ۱۱۱)

(493)...... हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो अपने माल की हिफ़ाज़त करते हुए मारा गया वोह शहीद है और जो अपनी जान की हिफ़ाज़त करते हुए मारा गया वोह शहीद है और जो अपने दीन की हिफ़ाज़त करते हुए मारा गया वोह शहीद है और जो अपने घर वालों की हिफ़ाज़त करते हुए मारा गया वोह शहीद है ।''

(ترمذی، کتاب الدیات، باب ماجاء فیمن قتل دون مالہ الخ، رقم ۱۴۲۶، ج ۳، ص ۱۱۲)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

तीन बच्चों के इन्तिक़ाल पर सब्र करने का सवाब

(494)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान के तीन बच्चे मर जाएं उसे जहन्नम की आग न छूएगी मगर सिर्फ़ इतनी देर कि **अल्लाह** की क़सम पूरी हो जाए।'' (مسلم،کتاب البر والصلۃ،باب من یموت لہ ولد الخ،رقم ۲۶۳۱،ص۱۴۱۵)

वज़ाहत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : ''وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।'' (پ۱۶،مریم:۷۱)

लिहाज़ा ह़दीसे मुबा-रका का मा'ना येह हुवा कि आग उसे बिल्कुल मा'मूली छूएगी ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम पूरी हो जाए लेकिन उस से इन्सान को कोई तक्लीफ़ महसूस न होगी। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(495)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक औरत अपने बच्चे को ले कर ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, ''ऐ **अल्लाह** के नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे लिये दुआ कीजिये क्यूं कि मैं अपने तीन बच्चों को दफ़्ना चुकी हूं।'' नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तू तीन बच्चों को दफ़्ना चुकी है ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''हां।'' फ़रमाया, ''बेशक तूने अपने लिये आग से ह़िफ़ाज़त के लिये एक मज़्बूत दीवार तय्यार कर ली है।'' (مسلم،کتاب البر والصلۃ،باب من یموت لہ ولد الخ،رقم ۲۶۳۶،ص۱۴۱۶)

(496)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत से उसे और उन बच्चों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' एक रिवायत में है कि ''जिस के तीन बच्चों का इन्तिक़ाल हो जाए वोह जन्नत में दाख़िल होगा।''

(بخاری،کتاب الجنائز،باب ما قیل فی اولاد المسلمین الخ،رقم ۱۳۸۱،ج۱،ص۵۲۵)

(497)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिन मुसल्मान वालिदैन के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन बच्चों पर रह़म करते हुए उन के वालिदैन को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان،کتاب الجنائز،باب ما جاء فی الصبر وثواب الامراض،رقم ۲۹۲۹،ج۴،ص۲۶۰)

(498)...... हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अपने तीन बच्चों को खो बैठे (या'नी जिस के तीन बच्चे मर जाएं), फिर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में उन पर अज्रो सवाब की उम्मीद रखे तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۸۲۹، ج۱۷، ص۳۰۰)

(499)...... हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन अ़ब्दे सु–लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं तो वोह उसे जन्नत के आठों दरवाज़ों पर मिलेंगे और उसे इख़्तियार होगा कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए।'' (ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من اصیب بولدہ، رقم ۱۶۰۴، ج۲، ص۲۸۱)

(500)...... हज़रते सय्यि–दतुना ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास मौजूद थी कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन के घर तशरीफ़ लाए और उन से फ़रमाया, ''जिन मुसल्मान वालिदैन के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले मर जाएं क़ियामत के दिन उन्हें जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा कर के कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ तो वोह कहेंगे कि जब तक हमारे वालिदैन जन्नत में दाख़िल न होंगे हम भी जन्नत में दाख़िल न होंगे फिर उन से कहा जाएगा जाओ ! अपने वालिदैन को साथ ले कर जन्नत में दाख़िल हो जाओ।'' (طبرانی کبیر، رقم ۵۷۱، ج۲۴، ص۲۲۵)

(501)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक औ़रत ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ़–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मर्द हज़रात आप की बारगाह में हाज़िर हो कर आप के इर्शादात सुन लेते हैं, आप हमें भी एक दिन अ़ता फ़रमा दें जिस में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम सिखाएं।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''तुम फ़ुलां दिन फ़ुलां मक़ाम पर जम्अ़ हो जाया करो।''

चुनान्चे वोह औ़रतें जम्अ़ हो गईं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़कामात में से कुछ सिखाया। फिर फ़रमाया, ''तुम में से जो औ़रत अपने तीन बच्चे आगे भेजेगी वोह उस के लिये आग से हिजाब हो जाएंगे।'' एक औ़रत ने अ़र्ज़ किया ''और दो बच्चे ?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''और दो बच्चे (भी)।''

(بخاری، کتاب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، باب تعلیم النبی امتہ من الرجال، رقم ۷۳۱۰، ج۴، ص۵۱۰)

(502)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हस्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अर्ज़ किया कि "मेरे दो बच्चे मर चुके हैं क्या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की कोई ऐसी ह़दीस नहीं सुनाएंगे जो हमें अपने मुर्दों के बारे में मुत्मइन कर दे ?" फ़रमाया "हां ! सुनाता हूं, वोह बच्चे बिला रोक टोक जन्नत में जहां चाहेंगे चले जाया करेंगे। उन में से जब कोई बच्चा अपने वालिद या वालिदैन से मिलेगा तो उन के कपड़े या हाथ को ऐसे पकड़ेगा जैसे मैं ने तुम्हारे कपड़ों के दामन को पकड़ रखा है और उसे उस वक़्त तक न छोड़ेगा जब तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के वालिद को जन्नत में दाख़िल न फ़रमा दे।"

(مسلم، باب فضل من یموت لہ ولد، رقم ۲۶۳۵، ص ۱۴۱۶)

(503)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस के तीन बच्चे मर जाएं फिर वोह उन पर सब्र करे तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" हम ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और दो बच्चे।" फ़रमाया "और दो भी।"

हज़रते सय्यिदुना महमूद बिन लुबैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा "आप का क्या ख़याल है अगर आप एक के बारे में सुवाल करते तो क्या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप की ताईद फ़रमाते ?" तो उन्हों ने फ़रमाया, "मेरा ख़याल है कि ज़रूर फ़रमाते।"

(مسند احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، رقم ۱۴۲۸۹، ج ۵، ص ۳۵)

(504)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे दो बच्चे ह़ालते इस्लाम में इन्तिक़ाल कर गए हैं।" फ़रमाया, "जिस के दो बच्चे इस्लाम की ह़ालत में फ़ौत हो गए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन बच्चों पर अपने फ़ज़्ल और रह़मत की वजह से उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।" रावी कहते हैं कि बा'द में जब मेरी हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मुझ से पूछा "क्या तुम वोही हो जिस ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दो बच्चों के बारे में अर्ज़ किया था ?" मैं ने अर्ज़ किया, "हां !" तो फ़रमाया, "अगर सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह बिशारत मुझे सुनाई होती तो येह मुझे ह़िम्स और फ़िलिस्तीन की ह़ुकूमत से ज़ियादा पसन्द होती।"

(مسند احمد، حدیث ابی ثعلبۃ الاشجعی، رقم ۲۷۲۸۹، ج ۱۰، ص ۳۴۸)
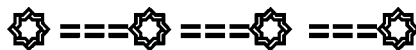
जिस का एक बच्चा मर जाए उस का सवाब

(505)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मै ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि, ''मेरी उम्मत में से जिस के दो बच्चे पेशवाई करने वाले होंगे (या'नी फ़ौत हो चुके होंगे), **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन के सबब उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया, ''और जिस का एक बच्चा पेशवाई के लिये गया हो ?'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''उस का बच्चा भी उस की पेशवाई करेगा।'' आप ने फिर अ़र्ज़ किया, ''आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत में जिस की पेशवाई के लिये कोई न हो तो ?'' फ़रमाया, ''तो मैं उन की पेशवाई करूंगा और वोह मेरे जैसा पेशवा हरगिज़ न पा सकेंगे।''

(جامع الترمذی، باب ماجاء فی ثواب من قدم لہ ولدا، کتاب الجنائز، رقم ۱۰۶۴، ج۲، ص۳۳۳)

(506)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''ख़ूब ! बहुत ख़ूब !'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से उन पांच चीज़ों की त़रफ़ इशारा फ़रमाया जो मीज़ान पर सब से ज़ियादा वज़्न वाली हैं (1) سُبْحٰنَ اللّٰہ (2) اَلْحَمْدُ لِلّٰہ (3) لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ (4) اَللّٰہُ اَکْبَرُ (5) किसी मुसलमान शख़्स का नेक बच्चा मर जाए और वोह उस पर सवाब की उम्मीद रखते हुए सब्र करे।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، رقم ۸۳۰، ج۲، ص۱۰۰)

(507)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स के तीन बच्चे बालिग़ होने से पहले इन्तिक़ाल कर गए वोह उस के लिये जहन्नम की राह में मज़्बूत़ तरीन रुकावट होंगे।'' हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि ''मेरे दो बच्चे आगे पहुंच चुके हैं।'' फ़रमाया ''और दो बच्चे (भी)।'' सय्यिदुल क़ुर्रा हज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया ''मैं अपना एक बच्चा आगे भेज चुका हूं।'' फ़रमाया ''और एक बच्चा (भी)।''

गुज़श्ता सफ़हात में हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़दीस गुज़र चुकी है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब किसी शख़्स का बच्चा इन्तिक़ाल कर जाता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाता है, ''क्या तुम ने मेरे बन्दे के बच्चे की रूह़ क़ब्ज़ कर ली ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''हां।'' तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, ''क्या तुम ने उस के दिल का टुकड़ा छीन लिया ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं ''हां।'' तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, ''तो फिर मेरे बन्दे ने क्या कहा ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''उस ने तेरी ह़म्द की और ''اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ा।'' तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, ''मेरे इस बन्दे के लिये जन्नत में एक घर बनाओ और उस का नाम **बैतुल ह़म्द** रखो।''

(ابن ماجہ، کتاب الجنائز، ماجاء فی ثواب من اصیب بولدہ، ۲، رقم ۱۶۰۶، ص۲۷۲)

(508)...... हज़रते सय्यिदुना **क़ुर्रह बिन अयास** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स अपने बेटे के साथ शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा करता था। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया, ''क्या तू इस से महब्बत करता है ?'' उस ने कहा, ''जी हां या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप के साथ इसी तरह महब्बत करे जैसे मैं इस बच्चे से महब्बत करता हूं।'' फिर कुछ दिन के बा'द रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस बच्चे को न पाया तो उस के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि ''फुलां बिन फुलां के साथ क्या हुवा ?'' सहाबए किराम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उस का तो इन्तिक़ाल हो गया।'' तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस बच्चे के बाप से फ़रमाया, ''क्या तू पसन्द करता है कि जब तू जन्नत के किसी दरवाज़े पर आए तो उसे अपना मुन्तज़िर पाए ?'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या येह सिर्फ़ इन्ही के साथ ख़ास है या हम में से हर एक के लिये है ?'' फ़रमाया, ''तुम में से हर एक के लिये है।'' (سنن نسائی، کتاب الجنائز، باب الامر بالاحتساب والصبر الخ، ج۴، ملخصاً)

एक रिवायत में है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जब किसी जगह तशरीफ़ फ़रमा होते तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का एक गुरोह भी आप के साथ बैठ जाता। उन में एक शख़्स का एक छोटा बच्चा भी था, जो उस के पीछे से आता और उस के सामने आ कर बैठ जाता। जब उस बच्चे का इन्तिक़ाल हो गया तो उस शख़्स ने अपने बच्चे की याद की वजह से उस ह़ल्क़े में आना छोड़ दिया। जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे न पाया तो फ़रमाया कि ''फुलां शख़्स को क्या हुवा ?'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया कि ''उस का जो बच्चा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा था वोह फ़ौत हो गया है।''

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स से मुलाक़ात फ़रमाई और उस के बच्चे के बारे में पूछा तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''उस का इन्तिक़ाल हो गया है।'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से ता'ज़ियत की, फिर इर्शाद फ़रमाया कि ''तुझे इन बातों में से क्या पसन्द है (1) तू अपनी उ़म्र में उस से नफ़्अ़ उठाता (2) या जब भी तू जन्नत के किसी दरवाज़े पर जाए तो वोह तुझ से पहले वहां मौजूद हो और तेरे लिये जन्नत का दरवाज़ा खोले ?'' तो उस ने अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे येह पसन्द है कि वोह जन्नत के दरवाज़े पर मुझ से पहले मौजूद हो और मेरे लिये दरवाज़ा खोले।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''तुम्हारे लिये येही है।'' (مسند احمد، حدیث قرۃ المزنی مسند البصریین، رقم ۲۰۳۸۷، ج۸، ص۳۰۳)

(509)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान जोड़े के तीन बच्चे इन्तिक़ाल कर जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन दोनों मियां बीवी को उन बच्चों पर फ़ज़्लो रह़मत करते हुए जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' सहाबए किराम ने अ़र्ज़ किया, ''और दो बच्चे ?'' फ़रमाया, ''और दो बच्चे।'' सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया ''और एक ?'' फ़रमाया ''और एक'' फिर फ़रमाया, ''उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जिस औ़रत का कच्चा बच्चा फ़ौत हो जाए (या'नी ह़म्ल ज़ाएअ़ हो जाए) और वोह इस पर सब्र करे तो वोह बच्चा अपनी मां को अपनी नाफ़ के ज़रीए खींचता हुवा जन्नत में ले जाएगा।'' (مسند احمد، حدیث معاذ بن جبل مسند الانصار، رقم ۲۲۱۵۱، ج۸، ص۲۵۴)
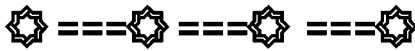
कच्चा बच्चा गिर जाने का सवाब

(510)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कच्चा बच्चा अपने वालिदैन को जहन्नम में दाख़िल करने पर अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से झगड़ा करेगा तो उस से कहा जाएगा ऐ अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से झगड़ा करने वाले कच्चे बच्चे ! अपने वालिदैन को भी जन्नत में ले जा फिर वोह अपने वालिदैन को अपनी नाफ़ के साथ खींचता हुवा जन्नत में ले जाएगा ।'' (ابن ماجہ، ماجاء فیمن اصیب بسقط، کتاب الجنائز، رقم ۱۶۰۸، ج ۲، ص ۲۷۳)

(511)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है जिस औ़रत का कच्चा बच्चा इन्तिक़ाल कर जाए और वोह इस पर सब्र करे तो वोह बच्चा अपनी मां को अपनी नाफ़ के ज़रीए खींचता हुवा जन्नत में ले जाएगा ।''

(ابن ماجہ، ماجاء فیمن اصیب بسقط، کتاب الجنائز، رقم ۱۶۰۹، ج ۲، ص ۲۷۳)

दोस्त या क़रीबी अ़ज़ीज़ के मर जाने पर सब्र करने का सवाब

(512)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि मेरे इस मोमिन बन्दे की जज़ा मेरे नज़्दीक जन्नत के इलावा कुछ नहीं कि अहले दुन्या में से जब मैं ने उस के अ़ज़ीज़ दोस्त की रूह को क़ब्ज़ किया तो इस ने सब्र किया ।''

(بخاری، کتاب الرقائق، باب العمل الذی یبتغی بہ وجہ اللہ، رقم ۶۴۲۴، ج ۴، ص ۲۲۵)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
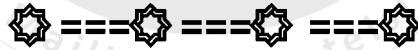
स-दक़ात का सवाब

ज़कात अदा करने का सवाब

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने करीम में कई मक़ामात पर ज़कात की अदाएगी का हुक्म इर्शाद फ़रमाया, चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝ (پ۳، البقرۃ:۲۷۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात दी उन का नेग (या'नी इन्आ़म) उन के रब के पास है और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म।

(2) وَالْمُقِیْمِیْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ سَنُؤْتِیْهِمْ اَجْرًا عَظِیْمًا ۝ (پ۶، النساء:۱۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ क़ाइम रखने वाले और ज़कात देने वाले और **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाने वाले ऐसों को अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

(3) خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّیْهِمْ بِهَا (پ۱۱، التوبۃ:۱۰۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मह़बूब इन के माल में से ज़कात तह़सील करो जिस से तुम इन्हें सुथरा और पाकीज़ा कर दो।

(4) قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَیْرُ مَلُوْمِیْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ (پ۱۸، المؤمنون:۱تا۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं और वोह जो किसी बेहूदा बात की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं करते और वोह कि ज़कात देने का काम करते हैं और वोह जो अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शर-ई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं।

(5) وَالَّذِیْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ وَالَّذِیْنَ هُمْ عَلٰی صَلَوٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ۘ اُولٰٓئِکَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ الَّذِیْنَ یَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ (پ۱۸،المؤمنون:۸تا۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द की रिआ़यत करते हैं और जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे वोह उस में हमेशा रहेंगे।

(6) وَرَحْمَتِیْ وَسِعَتْ کُلَّ شَیْءٍ ؕ فَسَاَکْتُبُهَا لِلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ وَیُؤْتُوْنَ الزَّکٰوةَ وَالَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِنَا یُؤْمِنُوْنَ ۝ (پ۹،الاعراف:۱۵۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे है तो अ़न्क़रीब मैं ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और ज़कात देते हैं और वोह हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं।

(7) وَمَآ اٰتَیْتُمْ مِّنْ زَکٰوةٍ تُرِیْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝ (پ۲۱،الروم:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो तुम ख़ैरात दो **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हुए तो उन्हीं के दूने हैं।

(8) وَالَّذِیْنَ فِیْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۙ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ (پ۲۹،سورۃ المعارج:۲۴،۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जिन के माल में एक मा'लूम ह़क़ है उस के लिये जो मांगे और जो मांग भी न सके तो मह़रूम रहे।

(9) وَمَآ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِیَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ حُنَفَآءَ وَیُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَیُؤْتُوا الزَّکٰوةَ وَذٰلِکَ دِیْنُ الْقَیِّمَةِ ۝ (پ۳۰،البینۃ:۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन लोगों को तो येही हुक्म हुवा कि **अल्लाह** की बन्दगी करें निरे इसी पर अ़क़ीदा लाते एक त़रफ़ के हो कर और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और येह सीधा दीन है।

इस बारे में अह़ादीसे मुबा-रका :

(513)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है (1) इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیْهِ وَسَلَّم) **अल्लाह** के बन्दे और रसूल हैं, (2) नमाज़ क़ाइम करना, (3) ज़कात अदा करना, (4) बैतुल्लाह का ह़ज करना, (5) और र-मज़ान के रोज़े रखना।'' (بخاری، باب دعائکم ایمانکم، کتاب الایمان، رقم ۸، ج۱، ص۱۴)

(514)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में अ़र्ज़ किया कि ''मुझे ऐसे अ़मल के बारे में बताइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।'' तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और नमाज़ अदा करो और ज़कात दिया करो और सिलए रेह़्मी किया करो।''

(بخاری، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، رقم ۱۳۹۶، ج۱، ص۴۷۱)

(515)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि एक आ'राबी सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐसे अ़मल की त़रफ़ मेरी राहनुमाई फ़रमाइये कि जब मैं वोह अ़मल करूं तो जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत इस त़रह़ करो कि किसी को उस का शरीक न ठहराओ और फ़र्ज़ नमाज़ अदा करो और ज़कात अदा किया करो और र-मज़ान के रोज़े रखा करो।'' येह सुन कर आ'राबी ने कहा ''उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है मैं इस पर ज़ियादती न करूंगा।'' फिर जब वोह आ'राबी लौटा तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किसी जन्नती को देखना चाहे वोह इसे देख ले।'' (بخاری، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، رقم ۱۳۹۷، ج۱، ص۴۷۲)

(516)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बनू तमीम में से एक शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं एक मालदार शख़्स हूं और मेरे अहले ख़ाना की ता'दाद भी कसीर है, आप इर्शाद फ़रमाइये कि मैं अपने अहले ख़ाना के साथ कैसा सुलूक करूं और अपना माल किस त़रह़ ख़र्च करूं ?'' तो आप ने फ़रमाया, ''तुम अपने माल में से ज़कात निकाला करो बेशक ज़कात एक ऐसी पाकीज़गी है जो तुम्हें पाक कर देगी और अपने अ़ज़ीज़ों के साथ सिलए रेह़्मी किया करो और मिस्कीन और पड़ोसी और साइल के ह़क़ को पहचानो।''

(مسند احمد، مسند انس بن مالک، رقم ۱۲۳۹۷، ج۴، ص۲۷۳)

(517)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और अबू सई़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन हमें ख़ुत़्बा देते हुए तीन मरतबा फ़रमाया, ''क़सम है उस ज़ात की ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सरे अक़्दस को झुका लिया तो हम में से हर शख़्स ने अपना सर झुका लिया और रोने लगा ह़ालां कि हम नहीं जानते थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ल्फ़ क्यूं उठाया ? फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सरे अन्वर उठाया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेहरे पर ऐसी मुसर्रत थी जो हमें सुर्ख़ ऊंटों से ज़ियादा पसन्द थी फिर इर्शाद फ़रमाया, ''जो शख़्स पांचों नमाज़ें अदा करे और र-मज़ान के रोज़े रखे और अपने माल से

ज़कात निकाले और सात कबीरा गुनाहों से बचता रहे, उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उस से कहा जाता है कि सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ।'' (نسائی، کتاب الزکاۃ، باب وجوب الزکاۃ، ج۳،ص۸)

(518)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसे अ़मल के बारे में बताइये जो मुझे जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक तुम ने एक अ़ज़ीम चीज़ के बारे में सुवाल किया है और येह काम उसी के लिये आसान है जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे आसान करे।'' फिर फ़रमाया, ''तुम **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत इस त़रह़ करो कि किसी को उस का शरीक न ठहराओ और नमाज़ अदा करो और ज़कात अदा करो और र-मज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का ह़ज करो।'' (ترمذی، کتاب الصلوۃ، ماجاء فی حرمۃ الصلاۃ، کتاب الایمان، رقم ۲۶۲۵، ج۴،ص۲۸۰)

(519)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने इर्द गिर्द बैठे हुए सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया, ''तुम मुझे छ चीज़ों की ज़मानत दे दो तो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत दे दूंगा।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह छ चीज़ें कौन सी हैं?'' इर्शाद फ़रमाया, ''नमाज़ अदा करना, ज़कात देना, अमानत लौटाना, शर्मगाह, पेट और ज़बान की ह़िफ़ाज़त करना।''

(مجمع الزوائد، باب فرض الصلاۃ، رقم ۱۶۱۷، ج۲،ص۲۱)

(520)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप का उस शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जिस ने अपने माल में से ज़कात निकाली?'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अपने माल में से ज़कात अदा की तो उस माल का शर उस से दूर हो जाएगा।'' (المعجم الاوسط طبرانی، باب الالف، رقم ۱۵۷۹، ج۱،ص۴۳۱)

इमाम ह़ाकिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इस ह़दीस को मुख़्तसरन यूं रिवायत किया है, ''जब तुम अपने माल की ज़कात अदा कर लोगे तो तुम ने अपने आप से उस माल के शर को दूर कर दिया।''

(مستدرک، کتاب الزکاۃ، باب التغلیظ فی منع الزکاۃ الخ، رقم ۱۴۷۹، ج۲،ص۸)

(521)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम ने अपने माल की ज़कात अदा कर दी तो तुम ने अपनी ज़िम्मादारी पूरी कर दी और जिस ने माले ह़राम जम्अ़ किया फिर उस में से स-दक़ा निकाला तो उसे उस पर कोई सवाब न मिलेगा और उस का गुनाह उस पर बाक़ी रहेगा।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب فی اداء الزکاۃ، رقم ۱۰، ج۱،ص۳۰۱)

(522)...... हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपने अम्वाल को ज़कात के ज़रीए महफ़ूज़ कर लो और अपने अमराज़ का इलाज स-दक़े के ज़रीए करो और दुआ और आहो ज़ारी के ज़रीए बलाओं की यलग़ार का मुक़ाबला करो।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب فی اداء الزکاۃ، رقم ۱۱، ج ۱، ص ۳۰۱)

(523)...... हज़रते सय्यिदुना अल्क़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इर्शाद फ़रमाया, ''बेशक तुम्हारा अपने अम्वाल में से ज़कात निकालना तुम्हारे इस्लाम की तक्मील है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب فی اداء الزکاۃ، رقم ۱۲، ج ۱، ص ۳۰۱)

(524)...... हज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नमाज़ अदा करो और ज़कात अदा करो और हज करो और उम्रह करो और साबित क़दम रहो।'' (طبرانی کبیر، کتاب الصدقات، رقم ۶۸۹۷، ج ۷، ص ۲۱۶)

(525)...... हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन मुर्रह जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि क़ज़ाआ क़बीले से एक शख़्स शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इस बात की गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और आप **अल्लाह** तआला के रसूल हैं और मैं पांच नमाज़ें पढ़ता हूं और र-मज़ान के रोज़े रखता हूं और इस में क़ियाम करता हूं और ज़कात अदा करता हूं।'' तो सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो इन आ'माल पर मरेगा वोह सिद्दीक़ीन और शु-हदा में लिखा जाएगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب فی اداء الزکاۃ، رقم ۱۹، ج ۱، ص ۳۰۲)

(526)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात अदा करे और बैतुल्लाह का हज करे और र-मज़ान के रोज़े रखे और मेहमान की मेहमान नवाज़ी करे जन्नत में दाख़िल होगा।''

(المعجم الکبیر، رقم ۱۲۶۹۲، ج ۱۲، ص ۱۰۶)
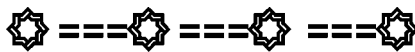
ख़ुशदिली से ज़कात अदा करने का सवाब

(527)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो ईमान के साथ इन पांच चीज़ों को बजा लाया जन्नत में दाख़िल होगा, जिस ने पांच नमाज़ों की उन के वुज़ू और रुकूअ़ और सुजूद और अवक़ात के साथ पाबन्दी की और र-मज़ान के रोज़े रखे और जिस ने इस्तिताअ़त होने पर हज किया और ख़ुशदिली से ज़कात अदा की।'' (مجمع الزوائد، کتاب الایمان، فیمابنی علیہ الاسلام، رقم ۱۳۹، ج۱، ص ۲۰۵)

(528)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुआ़विया अल ग़ाज़िरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने तीन काम किये उस ने ईमान का ज़ाएक़ा चख लिया, (1) जिस ने एक **अल्लाह** की इबादत की और येह यक़ीन रखा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं (2) जिस ने ख़ुशदिली से हर साल अपने माल की ज़कात अदा की (3) जिस ने ज़कात में बूढ़े और बीमार जानवर या बोसीदा कपड़े और घटिया माल की बजाए औसत़ द-रजे का माल दिया क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से तुम्हारा बेहतरीन माल त़लब नहीं करता और न ही घटिया माल देने की इजाज़त देता है।'' (ابوداود، کتاب الزکاۃ، فی زکاۃ السائمۃ، رقم ۱۵۸۲، ج۲، ص ۱۴۷)

(529)...... उ़बैद बिन उ़मैर लैसी अपने वालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़िज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर फ़रमाया, ''बेशक नमाज़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया हैं और वोह जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़र्ज़ कर्दा पांच नमाज़ें क़ाइम कीं और र-मज़ान के रोज़े रखे और उन के ज़रीए सवाब की उम्मीद रखी और ख़ुशदिली से ज़कात अदा की और उन कबीरा गुनाहों से बचता रहा जिन से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ फ़रमाया है।''

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم में से किसी ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! कबीरा गुनाह कितने हैं?'' इर्शाद फ़रमाया, ''नव (9) हैं, इन में सब से बड़ा गुनाह किसी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शरीक ठहराना है और (बक़िय्या गुनाहों में से) किसी मोमिन को नाह़क़ क़त्ल करना, मैदाने जिहाद से फ़िरार होना, पाक दामन औ़रत पर तोहमत लगाना, जादू करना, यतीम का माल खाना, सूद खाना, मुसल्मान वालिदैन की ना फ़रमानी करना और बैतुल ह़राम जो तुम्हारे ज़िन्दों और मुर्दों का क़िब्ला है, को ह़लाल समझना (या'नी उस की हु़रमत को पामाल करना) लिहाज़ा! जो शख़्स इन कबीरा गुनाहों से बचता रहे और नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात अदा करे फिर मर जाए तो वोह, जन्नती मह़ल में मुह़म्मद (صَلَّی اللہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّم)का रफ़ीक़ होगा जिस के दरवाज़े सोने के होंगे।'' (المعجم الکبیر، رقم ۱۰۱، ج ۱۵-۱۷، ص ۴۸)
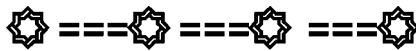
अमानत दार आमिले ज़कात और ख़ज़ान्ची का सवाब

(530)...... हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये हक़ के साथ ज़कात वुसूल करने वाला अपने घर लौटने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह के ग़ाज़ी की त़रह़ है।'' (مسند احمد، مسند المکیین، رقم ۱۵۸۲۶، ج۵، ص۳۶۶)

(531)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब किसी को ज़कात वुसूल करने के लिये आ़मिल मुक़र्रर किया जाए फिर वोह दियानत दारी के साथ ज़कात वुसूल करे और उसे ह़क़दार तक पहुंचाए तो वोह अपने घर लौटने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले मुजाहिद की त़रह़ है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب العمال علی الصدقۃ، رقم ۴۳۵۰، ج۳، ص۲۳۶)

(532)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक वोह अमानत दार और मुसल्मान ख़ज़ान्ची जिसे कोई माल कहीं मुन्तक़िल करने का हुक्म दिया जाए फिर वोह पूरा माल ख़ुशदिली से अदा कर दे और उसे जिस के बारे में हुक्म दिया गया हो उस तक पहुंचा दे तो वोह भी स-दक़ा देने वालों में से एक शुमार होगा।'' (بخاری، کتاب الزکاۃ، باب اجر الخادم اذا تصدق الخ، رقم ۱۴۳۸، ج۱، ص۴۸۴)

(533)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेहतरीन कमाई आ़मिल (या'नी ज़कात वुसूल करने वाले) की कमाई है जब कि वोह ख़ैर ख़्वाह हो।'' (مسند احمد، رقم ۸۴۲۰، ج۳، ص۲۳۲)

===

स-दके के फ़ज़ाइल और सवाब

स-दके की फ़ज़ीलत के बारे में कई आयाते कुरआनिया मौजूद हैं जिन में स-दके की फ़ज़ीलत बयान की गई है, चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) مَنْ ذَاالَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًافَیُضٰعِفَہٗ لَہٗ اَضْعَافًا کَثِیْرَۃً (پ۲،البقرۃ:۲۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : है कोई जो **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दे तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे।

(2) وَالْمُتَصَدِّقِیْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِیْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَہُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰکِرِیْنَ اللّٰہَ کَثِیْرًاوَّالذّٰکِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰہُ لَہُمْ مَّغْفِرَۃً وَّاَجْرًا عَظِیْمًا0 (پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां उन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

(3) کَانُوْاقَلِیْلًا مِّنَ الَّیْلِ مَایَہْجَعُوْنَ 0 وَبِالْاَسْحَارِہُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ 0 وَفِیْ اَمْوَالِہِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ 0 (پ۲٦،الذریت:۱۷تا۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते और उन के मालों में ह़क़ था मंगता और बे नसीब का।

(4) اِنَّ الْمُصَّدِّقِیْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوااللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا یُّضٰعَفُ لَہُمْ وَلَہُمْ اَجْرٌ کَرِیْمٌ0 (پ۲۷،الحدید:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक स-दक़ा देने वाले मर्द और स-दक़ा देने वाली औ़रतें और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दिया उन के दूने हैं और उन के लिये इ़ज़्ज़त का सवाब है।

(5) اِنْ تُقْرِضُوااللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا یُّضٰعِفْہُ لَکُمْ وَیَغْفِرْلَکُمْ ط وَاللّٰہُ شَکُوْرٌ حَلِیْمٌ0 (پ۲۸،التغابن:۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम **अल्लाह** को अच्छा क़र्ज़ दोगे वोह तुम्हारे लिये उस के दूने कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और **अल्लाह** क़द्र फ़रमाने वाला ह़िल्म वाला है।

(6) وَمَاتُقَدِّمُوْالِاَنْفُسِکُمْ مِّنْ خَیْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَاللّٰهِ هُوَخَیْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا (پ۲۹،المزمل:۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे।

(7) وَسَیُجَنَّبُهَا الْاَتْقَی ۙ الَّذِیْ یُؤْتِیْ مَالَهٗ یَتَزَکّٰی ۙ وَمَالِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤی ۙ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰی ۙ وَلَسَوْفَ یَرْضٰی ۙ (پ۳۰،الیل:۱۷تا۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बहुत उस से दूर रखा जाएगा जो सब से बड़ा परहेज़ गार जो अपना माल देता है कि सुथरा हो और किसी का उस पर कुछ एह़सान नहीं जिस का बदला दिया जाए सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा चाहता है जो सब से बुलन्द है और बेशक क़रीब है कि वोह राज़ी होगा।

इस बारे में अह़ादीसे मुक़द्दसा :

(534)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''स-दक़ा माल में कमी नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे के अफ़्वो दर गुज़र के सबब उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाता है।'' (مسلم،کتاب البروالصلة،باب استحباب العفو والتواضع،رقم۲۵۸۸،ص۱۳۹۷)

(535)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कब्शा अन्मारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''तीन चीज़ों पर मैं क़सम उठाता हूं और मैं तुम्हें बताता हूं, तुम इसे याद कर लो कि स-दक़ा माल में कुछ कमी नहीं करता और जो मज़्लूम, ज़ुल्म पर सब्र करता है **अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है और जो बन्दा सुवाल का दरवाज़ा खोलता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देता है।''

एक रिवायत में है कि ''मैं तुम्हें एक बात बताता हूं तुम इसे याद कर लो, ''दुन्या चार त़रह़ के लोगों के लिये है, (1) वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने माल और इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और वोह इस मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता है और सिलए रेह़्मी करता है और अपने माल में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ तस्लीम करता है तो येह बन्दा सब से अफ़्ज़ल मक़ाम में है, (2) जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने इ़ल्म अ़ता फ़रमाया, माल अ़ता नहीं फ़रमाया मगर उस की निय्यत सच्ची है और वोह कहता है अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे माल अ़ता फ़रमाता तो मैं फ़ुलां की त़रह़ अ़मल करता तो उसे उस की निय्यत के मुत़ाबिक़ सवाब दिया जाएगा और उन दोनों का सवाब बराबर है, (3) वोह बन्दा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़ता फ़रमाया और इ़ल्म अ़ता न फ़रमाया और वोह इ़ल्म के

बिग़ैर ख़र्च करता है और इस मुआ-मले में अपने रब عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता और न सिलए रेहूमी करता है और न ही अपने माल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ तस्लीम करता है तो वोह ख़बीस तरीन द-रजे में है, (4) वोह शख़्स जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने न तो माल अ़ता फ़रमाया और न ही इ़ल्म अ़ता फ़रमाया और वोह कहता है अगर मेरे पास माल होता तो मैं फ़ुलां की त़रह़ अ़मल करता तो उन दोनों का गुनाह बराबर है।"

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء مثل الدنیا مثل اربعۃ نفر، رقم ۲۳۳۲، ج۴، ص۱۴۵)

(536)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि "स-दक़ा माल में कमी नहीं करता और बन्दा स-दक़ा देने के लिये जब अपना हाथ बढ़ाता है तो वोह साइल के हाथ में जाने से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दस्ते क़ुदरत में आ जाता है और जो बन्दा बिला ज़रूरत सुवाल का दरवाज़ा खोलता है, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देता है।"

(المعجم الکبیر، رقم ۱۲۱۵۰، ج۱۱، ص۳۲۰)

(537)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया, "ऐ लोगो! मरने से पहले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर लो और मश्ग़ूलियत से पहले नेक आ'माल करने में जल्दी कर लो और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कसरत से ज़िक्र करने और पोशीदा और ज़ाहिरी तौर पर कसरत से स-दक़े के ज़रीए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अपना राबित़ा जोड़ लो तो तुम्हें रिज़्क़ दिया जाएगा और तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी मुसीबतें दूर की जाएंगी।"

(ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، فی فرض الجمعۃ، رقم ۱، ج۲، ص۵)

(538)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "एक शख़्स किसी वीरान जगह से गुज़र रहा था तो उस ने बादल में से एक आवाज़ सुनी कि फ़ुलां के बाग़ को सैराब करो तो वोह बादल झुक गया और उस ने अपना पानी एक पथरीली ज़मीन में बरसा दिया तो वहां के नालों में से एक नाले में वोह सारा पानी जम्अ़ हो गया और एक सम्त बहने लगा तो वोह शख़्स उस नाली के साथ चल दिया तो उस ने देखा कि वोह पानी एक बाग़ में दाख़िल हुवा जहां एक किसान खड़ा था तो उस ने उस किसान से पूछा "ऐ अल्लाह तआ़ला के बन्दे! तेरा नाम क्या है?" उस ने कहा, "फ़ुलां" येह वोही नाम था जो उस ने बादल से आने वाली आवाज़ से सुना था। उस किसान ने कहा, "ऐ अल्लाह के बन्दे! तूने मेरा नाम क्यूं पूछा?" तो उस शख़्स ने कहा, "जिस बादल से येह बारिश बरस रही है तेरा नाम मैं ने उस से सुना है, येह बादल कह रहा था कि फ़ुलां के बाग़ को सैराब करो, तू अपने खेत में ऐसा क्या करता है (कि तेरी ज़मीन को बादल ने सैराब किया)?" तो उस ने जवाब में कहा, "जब तूने येह बात पूछ ही ली है तो सुन ले कि जो कुछ मेरे इस बाग़ से निकलता है तो मैं उस के तीन हिस्से कर

लेता हूं एक हिस्सा स-दक़ा कर देता हूं और एक हिस्सा ख़ुद खाता हूं और अपने इयाल को खिलाता हूं और तीसरे हिस्से को इसी ज़मीन में काश्त कर लेता हूं।'' (مسلم، کتاب الزھد والرقائق، الصدقۃ فی المساکین، رقم ۲۹۸۴، ص۱۵۹۳)

(539)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने स-दक़ा देने वाले और बख़ील की मिसाल को बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया, ''उन दोनों की मिसाल उन दो शख़्सों की तरह है जिन्हों ने लोहे की दो ज़िरहें पहन रखी हों जो उन के सीने से हंसली की हड्डी तक हों। तो स-दक़ा देने वाला जब स-दक़ा देने का इरादा करता है तो उस की ज़िरह खुल जाती है और वोह अपनी ख़्वाहिश पूरी कर लेता है और बख़ील जब स-दक़ा देने का इरादा करता है तो उस की ज़िरह सुकड़ कर उस को चिमट जाती है और हर कड़ी अपनी जगह पैवस्त हो जाती है।'' हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी उंगलियां अपने गिरीबान में डाल कर गिरीबान को कुशादा करते हुए देखा मगर वोह कुशादा न हुवा, फ़रमाया : ''इस तरह।''

(بخاری، کتاب اللباس، جیب القمیص من عند الصدر، رقم ۵۷۹۷، ج۴، ص۴۹)

(540)...... हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबी हबीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, कि हज़रते सय्यिदुना मरसद बिन अब्दुल्लाह मुज़्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अहले मिस्र में सब से पहले मस्जिद की तरफ़ चला करते थे और मैं ने उन को कभी मस्जिद में स-दक़ा दिये बिग़ैर दाख़िल होते नहीं देखा या तो उन की आस्तीन में सिक्के होते या रोटी या फिर गन्दुम के दाने यहां तक कि बसा अवक़ात मैं ने उन को पियाज़ उठाए हुए भी देखा तो मैं ने उन से कहा, ''ऐ अबुल ख़ैर ! येह पियाज़ तो तुम्हारे कपड़ों को बदबूदार कर देगा।'' तो उन्हों ने फ़रमाया, ''ऐ इब्ने अबी हबीब ! मैं ने इस के इलावा कोई शै स-दक़ा करने के लिये अपने घर में न पाई, मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक शख़्स ने बताया है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि ''क़ियामत के दिन मोमिन का स-दक़ा उस के लिये साया होगा।'' (ابن خزیمہ، کتاب الزکاۃ، باب اظلال الصدقۃ صاحبہا، رقم ۲۴۳۲، ج۴، ص۹۵)

(541)...... हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि, ''क़ियामत के दिन लोगों के दरमियान फ़ैसला होने तक हर शख़्स अपने स-दक़े के साए में होगा।'' हज़रते सय्यिदुना यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''हज़रते सय्यिदुना मरसद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का कोई दिन ऐसा न गुज़रता जिस में वोह कोई स-दक़ा न करते हों अगर्चे केक (एक क़िस्म की रोटी) या पियाज़ हो।''

(مستدرک، کتاب الزکاۃ، کل امری فی ظل صدقتہ حتی یفصل، رقم ۱۵۵۷، ج۲، ص۴۳)

(542)...... हज़रते सय्यिदुना उक़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक किसी शख़्स का स-दक़ा उस की क़ब्र से गरमी को दूर कर देता है और क़ियामत के दिन मोमिन अपने स-दक़े के साए में होगा।''

(المعجم الکبیر، عن عقبہ، رقم ۷۸۸، ج۱۷، ص۲۸۶)

(543)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''मुझे बताया गया है कि आ'माल एक दूसरे पर फ़ख़्र करते हैं तो स-दक़ा कहता है कि मैं तुम सब से अफ़्ज़ल हूं।''

(ابن خزیمہ، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ علی غیرھا الخ، رقم ۲۴۳۳، ج۴، ص۹۵)

(544)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अन्सार में सब से ज़ियादा मालदार थे और उन का सब से पसन्दीदा माल बैरुह़ा के नाम का एक खजूर का बाग़ था जो कि मस्जिदे न-बवी शरीफ़ के सामने ही था और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस में दाख़िल होते और साफ़ पानी नोश फ़रमाते थे। जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ0 (پ۴، اٰل عمران:۹۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला फ़रमाता है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰی تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ0 (پ۴، اٰل عمران:۹۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।

और बेशक मेरा सब से ज़ियादा मह़बूब तरीन माल बैरुह़ा है और मैं उसे स-दक़ा करता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस के अज्रो सवाब का उम्मीद वार हूं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उसे वहां ख़र्च कर दीजिये जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाए तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बहुत ख़ूब येह एक नफ़्अ़ बख़्श माल है, बहुत ख़ूब येह एक नफ़्अ़ बख़्श माल है।''

(بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الزکاۃ علی الاقارب، رقم ۱۴۶۱، ج۱، ص۴۹۳)

(545)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक शख़्स ने कहा कि ''मैं ज़रूर स-दक़ा करूंगा।'' फिर वोह अपना स-दक़ा ले कर घर से निकला और उसे एक चोर को दे बैठा। सुब्ह़ के वक़्त लोगों में बातें होने लगीं कि गुज़श्ता रात एक चोर को स-दक़ा दे दिया गया। येह सुन कर उस ने कहा ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! चोर को स-दक़ा देने पर भी तेरा शुक्र है।'' फिर उस ने कहा कि मैं ज़रूर स-दक़ा दूंगा और रात के वक़्त स-दक़ा ले कर निकला और उसे एक ज़ानिया के हाथ पर रख दिया। फिर सुब्ह़ लोग बातें करने लगे कि गुज़श्ता रात एक ज़ानिया को स-दक़ा दे दिया गया। उस ने कहा, ''ऐ **अल्लाह** तआ़ला ! ज़ानिया को स-दक़ा देने पर भी तेरा शुक्र है।'' उस ने फिर कहा कि मैं स-दक़ा दूंगा और अपना स-दक़ा ले कर निकला और एक ग़नी के हाथ पर रख आया। फिर सुब्ह़ को कहा जाने लगा कि गुज़श्ता रात एक ग़नी को स-दक़ा दे दिया गया। तो उस ने कहा

''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ग़नी, चोर और ज़ानिया को स-दक़ा देने पर तेरा शुक्र है।'' फिर उस के पास एक आने वाला आया और उस से कहा, ''जो स-दक़ा तुम ने चोर को दिया शायद इस की वजह से वोह चोरी से बाज़ आ जाए और जो स-दक़ा तुम ने ज़ानिया को दिया शायद इस की वजह से वोह अपने ज़िना से बाज़ आ जाए और जो स-दक़ा तुम ने ग़नी को दिया शायद वोह इस से इब्रत पकड़े और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ता किये हुए माल से ख़र्च करने लगे।'' और एक रिवायत में है कि उस से कहा गया कि तेरा स-दक़ा क़बूल हो गया। (بخاری، کتاب الزکاۃ، باب اذا تصدق علی غنی، رقم ۱۴۲۱، ج۱، ص۴۷۹)

(546)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से कौन है जिसे अपने वारिस का माल अपने माल से ज़ियादा पसन्द है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक को अपना माल ज़ियादा पसन्द है।'' फ़रमाया, ''तुम्हारा माल तो वोह है जिसे तुम आगे भेज चुके (या'नी स-दक़ा कर चुके) और जो तुम ने छोड़ा वोह तो वारिस का माल है।'' (بخاری، کتاب الرقاق، باب ماقدم من مالہ فھولہ، رقم ۶۴۴۲، ج۴، ص۲۳۰)

(547)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने एक खजूर की मिक़्दार अपने ह़लाल माल से स-दक़ा किया (क्यूं कि **अल्लाह** तआ़ला सिर्फ़ ह़लाल को क़बूल फ़रमाता है) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने दस्ते क़ुदरत से क़बूल फ़रमा लेगा, फिर उस के मालिक के लिये उस में इज़ाफ़ा फ़रमाता रहेगा जिस त़रह़ तुम में से कोई अपने बछड़े की परवरिश करता है यहां तक कि एक लुक़्मा उहुद पहाड़ जितना हो जाएगा और मेरी इस बात की तस्दीक़ क़ुरआने पाक में इस त़रह़ की गई है

هُوَ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَیَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ (پ۱۱، توبہ:۱۰۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता और स-दक़े ख़ुद अपने दस्ते क़ुदरत में लेता है।

और **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है

یَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَیُرْبِی الصَّدَقٰتِ (پ۳، البقرہ:۲۷۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हलाक करता है सूद को और बढ़ाता है ख़ैरात को।

और एक रिवायत में है कि ''जब बन्दा अपने ह़लाल माल से स-दक़ा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़बूल फ़रमाता है और अपने दस्ते क़ुदरत में ले लेता है। फिर उस की इस त़रह़ परवरिश फ़रमाता है जैसे तुम में से कोई अपने बछड़े की परवरिश करता है यहां तक कि वोह स-दक़ा उहुद पहाड़ जितना हो जाता है।'' (بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الصدقۃ من کسب طیب، رقم ۱۴۱۰، ج۱، ص۴۷۶)

(548)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन,

सिराजुस्सालिकीन, मह्बूबे रब्बुल आ–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे फलों और खाने में इज़ाफ़ा करता रहता है जैसे तुम में से कोई अपने बछड़े या ऊंटनी के बच्चे की परवरिश करता है यहां तक कि वोह माल (बारगाहे खुदा वन्दी) में उहुद पहाड़ जितना हो जाता है।'' (طبرانی المعجم الاوسط،عن عائشۃ،رقم ۴۲۲۸،ج ۳،ص ۱۷۳)

(549)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़्–मतो शराफ़त, मह्बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दा जब अपने बचे हुए खाने में से स–दक़ा करता है तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस में इज़ाफ़ा फ़रमाता रहता है यहां तक कि वोह उहुद पहाड़ की मिस्ल हो जाता है।''

(مجمع الزوائد،کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،رقم ۴۶۱۵،ج ۳،ص ۲۸۶)

(550)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ रोटी के एक लुक़्मे और खजूरों के एक खोशे और मसाकीन के लिये नफ़्अ़ बख़्श दीगर अश्या की वजह से तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, (1) घर के मालिक को जिस ने स–दक़े का हुक्म दिया (2) उस की ज़ौजा को जिस ने उसे दुरुस्त कर के ख़ादिम के ह़वाले किया (3) उस ख़ादिम को जिस ने मिस्कीन तक वोह स–दक़ा पहुंचाया।'' (مجمع الزوائد،کتاب الزکاۃ،باب اجر الصدقۃ،رقم ۴۶۲۲،ج ۳،ص ۲۸۸)

(551)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''अ़न्क़रीब तुम में से हर एक के साथ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इस त़रह़ कलाम फ़रमाएगा कि दोनों के दरमियान कोई तरजुमान न होगा तो वोह बन्दा अपनी दाईं जानिब देखेगा तो जो कुछ उस ने आगे भेजा वोह उसे नज़र आएगा, जब वोह अपने बाईं जानिब देखेगा तो उसे वोही नज़र आएगा जो उस ने आगे भेजा, अपने सामने देखेगा तो उसे आग नज़र आएगी तो उस आग से बचो अगर्चे एक खजूर के ज़रीए़ हो।'' और एक रिवायत में है ''तुम में से जो आग से बच सके अगर्चे एक ही खजूर के ज़रीए़ तो उसे चाहिये कि ज़रूर बचे।'' (مسلم،کتاب الزکاۃ،باب الحث علی الصدقۃ ولو بشق تمرۃ،رقم ۱۰۱۶،ص ۵۰۷)

(552)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह्बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से हर एक को चाहिये कि वोह अपने चेहरे को आग से बचाए अगर्चे एक ही खजूर के ज़रीए़ हो।'' (مجمع الزوائد،باب الحث علی الصدقۃ،رقم ۴۵۸۰،ج ۳،ص ۲۷۵)

(553)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ आइशा ! अपने आप को आग से बचाओ अगर्चे एक ही खजूर के ज़रीए से और येह भूके पेट में इतनी जगह घेरती है जितनी कि शिकम सैर के।'' (مجمع الزوائد، باب الحث علی صدقۃ، رقم ۴۵۸۲، ج۳، ص۲۷۶)

(554)...... हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''स-दक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़ों को बन्द कर देता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، رقم ۴۶۰۴، ج۳، ص۲۸۳)

(555)...... हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर की सीढ़ियों पर फ़रमाते हुए सुना, ''आग से बचो ! अगर्चे एक ही खजूर के ज़रीए से हो बेशक येह टेढ़े पन को सीधा करती और बुरी मौत से बचाती है और भूके पेट में इतनी जगह घेरती है जितनी शिकम सैर के पेट में घेरती है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی صدقۃ، رقم ۴۵۸۳، ج۳، ص۲۷۶)

(556)...... हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक मुसल्मान का स-दक़ा उम्र में इज़ाफ़ा करता है और बुरी मौत को दूर करता है और अल्लाह तआला इस के ज़रीए से तकब्बुर और फ़ख़्र को दूर करता है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، رقم ۴۶۰۹، ج۳، ص۲۸۴)

(557)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''स-दक़ा देने में जल्दी करो क्यूं कि बला स-दक़े से आगे नहीं बढ़ सकती।'' और एक रिवायत में है, ''स-दक़ा दिया करो क्यूं कि येह आग से बचाता है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی صدقۃ، رقم ۴۵۹۰، ج۳، ص۲۷۷)

(558)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''स-दक़ा देने में जल्दी किया करो क्यूं कि बला स-दक़े से आगे नहीं बढ़ सकती।''

(مجمع الزوائد، باب فضل صدقۃ الزکاۃ، رقم ۴۶۱۰، ج۳، ص۲۸۴)

(559)...... हज़रते सय्यिदुना हारिस अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन ज़-करिय्या عَلَیْہِمَا السَّلَام की तरफ़ पांच बातें वह्य फ़रमाईं और उन पर अमल करने और बनी इस्राईल को उन पर अमल की तरग़ीब दिलाने का हुक्म दिया। उन में से एक येह भी है कि मैं तुम्हें स-दक़ा देने का हुक्म देता हूं और स-दक़े की मिसाल उस शख़्स की तरह है जिसे दुश्मनों ने क़ैद कर लिया फिर उस के हाथ उस की गरदन पर बांध दिये और उसे क़त्ल करने के लिये उस के क़रीब

आए तो वोह कहने लगा कि मैं अपनी जान का फ़िदया देने के लिये तय्यार हूं और क़लील व कसीर माल उन्हें देने लगा यहां तक कि उस ने अपनी जान को आज़ाद करा लिया।''

(المستدرک، کتاب الصوم، باب وان ریح الصوم ریح المسک، رقم ۱۵۷۴، ج۲، ص۵۱)

(560)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाते हुए सुना, ''ऐ का'ब ! नमाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुरबत का ज़रीआ़ है, रोज़े ढाल हैं, स-दक़ा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है।'' फिर फ़रमाया, ''ऐ का'ब ! लोग दो ह़ालतों में सुब्ह़ करते हैं, एक अपनी जान को बेच कर हलाकत में डाल देता है और दूसरा अपनी जान को आज़ाद कराने के लिये उसे ख़रीद लेता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب جامع فی المواعظ، رقم ۱۷۷۱۰، ج۱۰، ص۳۹۸)

(561)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ का'ब ! जो गोश्त ह़राम माल से पला बढ़ा हो तो वोह जहन्नम का ज़ियादा ह़क़दार है।'' फिर फ़रमाया, ''ऐ का'ब बिन उ़ज्रह ! लोग दो ह़ालतों में सुब्ह़ करते हैं, एक अपनी जान आज़ाद कराने की कोशिश करता है और उसे आज़ाद करा लेता है और एक उसे हलाकत में मुब्तला कर देता है।'' फिर फ़रमाया ''ऐ का'ब ! नमाज़ क़ुरबानी है रोज़ा ढाल है और स-दक़ा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ बर्फ़ चट्टान से पिघल जाती है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب جامع فی المواعظ، رقم ۱۷۷۱۱، ج۱۰، ص۳۹۸)

(562)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''क्या मैं भलाई के दरवाज़ों की त़रफ़ तुम्हारी रहनुमाई न करूं ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''रोज़ा ढाल है और स-दक़ा गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ पानी आग को बुझा देता है।''

(ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمۃ الصلاۃ، رقم ۲۶۲۵، ج۴، ص۲۸۰)

(563)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक स-दक़ा रब عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझा देता है और बुरी मौत से बचाता है।''

(ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی فضل الصدقۃ، رقم ۶۶۴، ج۲، ص۱۴۶)

(564)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना बिन्ते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें स-दक़े के बारे में बताइये।'' फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अज्रो सवाब की उम्मीद पर स-दक़ा देता है तो येह स-दक़ा उस के लिये जहन्नम से ह़िजाब हो जाता है।'' (طبرانی کبیر،رقم ۶۲،ج۲۵،ص۳۵)

(565)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अबुल ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, **अल्लाह** तआला फ़रमाता है : ''ऐ इब्ने आदम ! अपने माल में से कुछ हिस्सा मेरे पास भेज, न येह जलेगा न ग़र्क़ होगा और न ही चोरी होगा। मैं तुझे इस में से तेरी ह़ाजत के मुताबिक़ अ़ता करूंगा।'' (بیہقی،شعب الایمان،باب فی الزکاۃ/التحریض علی صدقۃ التطوع،رقم ۳۳۴۲،ج۳،ص۲۱۱)

(566)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास किसी चीज़ को अमानत के तौ़र पर रखा जाता है तो वोह उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है।''

(بیہقی،شعب الایمان،باب فی الزکاۃ،رقم ۳۳۴۳،ج۳،ص۲۱۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''नमाज़ तुझे आधे रास्ते तक पहुंचाती है और रोज़ा तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े तक पहुंचा देता है और स-दक़ा तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर कर देता है।''

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''मैं स-दक़े के दाने के इ़लावा किसी दाने को नहीं जानता जो दुन्या के पहाड़ों से ज़ियादा वज़्नी हो।''

✡ ===✡ ===✡ ===✡

तंगदस्त के ब क़दे ताक़त स-दक़ा करने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ﱞ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (پ۲۸،الحشر:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोहताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही काम्याब हैं।

(567)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक दिरहम एक लाख दराहिम पर सब्क़त ले गया।'' तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''एक शख़्स के पास कसीर माल हो और वोह अपने माल में से एक लाख दिरहम उठाए और उन्हें स-दक़ा कर दे जब कि दूसरे शख़्स के पास सिर्फ़ दो दिरहम हों, फिर वोह उन में से एक दिरहम उठाए और उसे स-दक़ा कर दे।''

(نسائی، کتاب الزکاۃ، باب جھد المقل، ج۳،ص۵۹)

(568)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''वोह स-दक़ा जो कोई तंगदस्त ब क़दरे ताक़त करे और येह कि तुम अपने इयाल की कफ़ालत करो।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی امامۃ، رقم ۲۲۳۵۱، ج۸، ص۳۰۲ روا ہ عن ابی امامہ)

(569)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई, या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया, ''तंगदस्त का ब क़दरे ताक़त स-दक़ा देना और वोह स-दक़ा जो फ़क़ीर को पोशीदा तौर पर दिया जाए।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب فی الرخصۃ فی ذالک، رقم ۱۶۷۷، ج۲، ص۱۷۹)

इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी मुअत्ता में नक़्ल फ़रमाते हैं कि एक मिस्कीन ने उम्मुल मुअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से खाने का सुवाल किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सामने कुछ अंगूर रखे हुए थे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने किसी से फ़रमाया कि ''उन में से एक दाना उठा कर उसे दे दो।'' वोह तअ़ज्जुब के साथ आप की त़रफ़ देखने लगा तो ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया, ''तुम हैरान क्यूं हो रहे हो येह तो देखो कि उस दाने में कितने (मिस्क़ाल) ज़र्रात हैं ?''

(الموطا الامام مالک، کتاب الصلاۃ، باب الترغیب فی الصدقۃ، رقم ۱۹۳۰، ج۲، ص۴۷۳)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''एक राहिब अपनी इबादत गाह में साठ साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता रहा। फिर एक औ़रत उस के पास आई तो वोह उस के पास नीचे उतर आया और छ रातें उस के साथ ज़िना करता रहा जब उसे अपने इस अ़मल पर नदामत हुई तो वोह दौड़ता हुवा मस्जिद की त़रफ़ आया। वहां उस ने देखा कि तीन भूके शख़्स मस्जिद में पनाह गुज़ीन हैं, चुनान्चे वोह एक रोटी लाया और उसे तोड़ कर आधी दाईं त़रफ़ वाले और आधी बाईं त़रफ़ वाले को दे दी। इस के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने म-लकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को भेजा जिन्हों ने उस राहिब की रूह़ क़ब्ज़ कर ली। जब उस की मीज़ान के एक पलड़े में साठ साल की इबादत रखी गई और दूसरे पलड़े में छ दिन के गुनाह तो वोह गुनाह इबादत पर ग़ालिब आ गए लेकिन जब रोटी रखी गई तो वोह उन गुनाहों पर ग़ालिब आ गई।'' (شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی ماجاء فی الایثار، رقم ۳۴۸۸، ج۳، ص ۲۶۲)

छुपा कर स-दक़ा देने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَیْرٌ لَّكُمْ وَیُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَیِّاٰتِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِیْرٌ۝ (پ۳،البقرۃ:۲۷۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर ख़ैरात अ़लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है और अगर छुपा कर फ़क़ीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है और इस में तुम्हारे कुछ गुनाह घटेंगे और **अल्लाह** को तुम्हारे कामों की ख़बर है।

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया,

اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ۝ (پ۳،البقرۃ:۲۷۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग (इन्आ़म) है उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

मन्क़ूल है कि येह आयत अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़क़ में नाज़िल हुई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास सिर्फ़ चार दिरहम थे एक दिरहम आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रात को स-दक़ा कर दिया और एक दिन को, एक दिरहम छुपा कर स-दक़ा किया और एक दिरहम ए'लानिया स-दक़ा किया। (الدرالمنثور،البقرۃ:۲۷۴،ج۲،ص۱۰۰)

(570)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "सात अफ़राद ऐसे हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने अ़र्श के साए में उस दिन जगह देगा जिस दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए के इलावा कोई साया न होगा, (1) आ़दिल हुक्मरान (2) वोह नौ जवान जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दी (3) वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद में लगा रहे (4) वोह दो शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिए मह़ब्बत करते हुए जम्अ़ हुए और मह़ब्बत करते हुए जुदा हो गए (5) वोह शख़्स जिसे कोई साहि़बे मालो जमाल औ़रत गुनाह के लिये बुलाए और वोह कहे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं (6) वोह शख़्स जो इस त़रह़ छुपा कर स-दक़ा दे कि उस के दाएं हाथ ने जो स-दक़ा दिया बाएं हाथ को इस का पता न चले (7) वोह शख़्स जिस की आंखें तन्हाई में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुए बह पड़ें।

(بخاری،کتاب الاذان،باب من جلس فی المسجد ینتظر صلوۃ،رقم ۶۶۰،ج۱،ص۲۳۶)

(571)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नेकियां बुराई के दरवाज़ों से बचाती हैं और पोशीदा स-दक़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से बचाता है और सिलए रेह़मी उ़म्र में इज़ाफ़ा कर देती है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۸۰۱۴، ج۸، ص۲۶۱)

(572)...... हज़रते सय्यिदुना उम्मे स-लमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नेकियां बुराई के दरवाज़ों से बचाती हैं पोशीदा स-दक़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से बचाता है और सिलए रेह़मी उ़म्र में इज़ाफ़ा कर देती है और हर नेक अ़मल स-दक़ा है और जो लोग दुन्या में नेकूकार हैं वोही आख़िरत में भी नेकूकार होंगे और जो लोग दुन्या में गुनहगार हैं आख़िरत में भी गुनहगार होंगे और नेकूकार लोग सब से पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।'' (طبرانی کبیر، رقم ۸۰۱۵، ج۸، ص۲۶۱)

(573)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन हैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''छुपा कर स-दक़ा देना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۸۰۱۴، ج۸، ص۲۶۱)

(574)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! स-दक़े की जज़ा क्या है ?'' फ़रमाया, ''दो गुना चार गुना और **अल्लाह** के नज़्दीक इस से भी ज़ियादा।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَہٗ لَہٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةً (پ۲، البقرۃ:۲۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : है कोई जो **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दे तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे।

अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''जो फ़क़ीर को पोशीदा तौ़र पर दिया जाए और तंगदस्त का ब क़दरे त़ाक़त स-दक़ा करना।'' फिर आप ने आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِیَ (پ۳، البقرۃ:۲۷۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर ख़ैरात ए'लानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है।

(طبرانی کبیر، رقم ۷۸۹۱، ج۸، ص۲۲۶)

(575)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तीन आदमियों से मह़ब्बत फ़रमाता है और तीन

को ना पसन्द फ़रमाता है। जिन लोगों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ महब्बत फ़रमाता है, उन में से एक शख़्स तो वोह है कि किसी क़ौम के पास कोई शख़्स आया और अपनी रिश्तेदारी के बजाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर उन से सुवाल किया लेकिन उन्हों ने उसे देने से मन्अ् कर दिया, इस के बा'द उस के पीछे येह शख़्स आया और छुपा कर उसे कुछ अ़ता कर दिया और उस के अ़तिय्ये को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस देने वाले के सिवा कोई नहीं जानता और एक क़ौम रात को सफ़र पर निकली यहां तक जब नींद उन पर ग़ालिब आ गई और वोह सो गए तो उन में से एक शख़्स खड़ा हुवा और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में गिड़गिड़ाने लगा और मेरी (या'नी कलामुल्लाह की) आयतें तिलावत करने लगा, तीसरा वोह शख़्स जिस ने जंग के दौरान दुश्मन का सामना किया फिर उन्हें शिकस्त हुई मगर येह शख़्स शहीद होने या फ़त्ह पाने तक पीछे न हटा और अल्लाह तआ़ला के तीन ना पसन्दीदा शख़्स येह हैं, बूढ़ा ज़ानी, मु-तकब्बिर फ़क़ीर, और ज़ालिम मालदार।" (ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، رقم ۲۵۷۷، ج۴، ص۲۵۶)

(576)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वोह कांपने लगी और उलट पलट होने लगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने पहाड़ों की मीख़ें उस में गाड़ दीं तो वोह साकिन हो गई। येह देख कर मलाएका को पहाड़ों की त़ाक़त पर तअ़ज्जुब हुवा और उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तूने पहाड़ों से ज़ियादा त़ाक़त वर कोई चीज़ पैदा फ़रमाई है ?" अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, "हां ! वोह लोहा है।" फिर फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया, "क्या लोहे से क़वी चीज़ भी पैदा फ़रमाई है ?" फ़रमाया, "हां ! वोह आग है।" फिर मलाएका ने अ़र्ज़ किया, "आग से भी त़ाक़त वर चीज़ पैदा फ़रमाई है ?" फ़रमाया, "हां ! वोह पानी है।" फिर मलाएका ने अ़र्ज़ किया, "क्या पानी से क़वी चीज़ भी पैदा फ़रमाई है ?" फ़रमाया, "हां वोह हवा है।" फ़िरिश्तों ने फिर अ़र्ज़ किया, "क्या हवा से क़वी चीज़ भी पैदा फ़रमाई है ?" फ़रमाया, "(हां) इब्ने आदम जब अपने दाएं हाथ से स-दक़ा दे और बाएं हाथ को ख़बर न हो।" (ترمذی، کتاب التفسیر، باب ۹۵، رقم ۳۳۸۰، ج۵، ص۲۴۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी रव्वाद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि (सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के दौर में) तीन चीज़ों को जन्नत के ख़ज़ाने कहा जाता था, (1) मरज़ को छुपाना (2) मुसीबत या परेशानी को छुपाना (3) स-दक़े को छुपाना।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी जा'द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, "बेशक स-दक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़ों को बन्द कर देता है और पोशीदा स-दक़ा ए'लानिया स-दक़े से सत्तर गुना अफ़्ज़ल है।"

✡ ===✡ ===✡ ===✡

क़नाअ़त, सब्र और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर तवक्कुल का सवाब

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِی الْاَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ لَا يَسْئَلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ (پ۳،بقرۃ:۲۷۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन फ़क़ीरों के लिये जो राहे खुदा में रोके गए ज़मीन में चल नहीं सकते नादान उन्हें तवंगर समझे बचने के सबब तो उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ाना पड़े और तुम जो खै़रात करो अल्लाह उसे जानता है।

और अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً (پ۱۴،النحل:۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो ज़रूर हम उसे अच्छी ज़िन्दगी जिलाएंगे।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, "इस आयते करीमा में حَيٰوةً طَيِّبَةً से मुराद क़नाअ़त है।"

(577)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो इस्लाम लाया और उसे ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उसे क़नाअ़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई तो वोह फ़लाह़ पा गया।"

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیہ، رقم ۲۳۵۵، ج۴، ص۱۵۶)

(578)...... हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिसे इस्लाम की हिदायत दी गई और ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और उस ने उसी पर क़नाअ़त इख़्तियार की उस के लिये खुश ख़बरी है।"

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیہ، رقم ۲۳۵۶، ج۴، ص۱۵۶)

(579)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क़नाअ़त ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं होता।" (کتاب الزھد للبیھقی، رقم ۱۰۴، ص۸۸)

(580)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे साथ एक वा'दा फ़रमाया था। जब क़रीज़ा फ़त्ह़ हुवा और मैं सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा ताकि वोह मुझे अपने वा'दे के मुताबिक़ कुछ अ़ता फ़रमाएं तो मैं ने उन्हें फ़रमाते हुए सुना कि "जो लोगों से बे नियाज़ी इख़्तियार करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ग़नी कर देगा, और जो क़नाअ़त इख़्तियार करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे राज़ी कर देगा।" तो मैं ने अपने दिल में कहा कि

''अब तो मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कुछ नहीं मांगूंगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی السوال، رقم ۴۵۱۳، ج۳، ص۲۵۴)

(581)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जितना चाहें ज़िन्दा रहें बिल आख़िर मौत आनी है और जो चाहे अ़मल करें बिल आख़िर ह़िसाब किताब होना है और जिस से चाहें मह़ब्बत करें बिल आख़िर उस से जुदा होना है और जान लें कि मोमिन का कमाल रात को क़ियाम करने में है और उस की इ़ज़्ज़त लोगों से बे नियाज़ होने में है।''

(طبرانی اوسط، باب العین، رقم ۴۲۷۸، ج۳، ص۱۸۷)

(582)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ग़नी वोह नहीं जिस के पास कसीर माल हो बल्कि ग़नी तो वोह है जिस का नफ़्स ग़नी हो।'' (مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لیس الغنی عن کثرۃ العرض، رقم ۱۰۵۱، ص۵۲۲)

(583)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''ऐ अबू ज़र ! क्या तुम कस्रते माल ही को ग़ना समझते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''क्या तुम क़िल्लते माल ही को फ़क़्र समझते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''अस्ल ग़ना तो दिल की ग़ना है और अस्ल फ़क़्र तो दिल का फ़क़्र है।'' (صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الفقر والزھد والقناعۃ، رقم ۶۸۴، ج۲، ص۳۷)

(584)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला नर्म दिल, पाक दामन ग़नी को पसन्द फ़रमाता है और संगदिल, बद किरदार साइल को ना पसन्द फ़रमाता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب فی الجعول والبذی والفاجر، رقم ۱۳۰۲۷، ج۸، ص۱۴۵)

(585)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बर पर बैठ कर स-दक़ा देने और सुवाल न करने का तज़्किरा करते हुए फ़रमाया, ''ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है क्यूं कि ऊपर वाला हाथ सुवाल नहीं करता जब कि नीचे वाला हाथ सुवाली है।''

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب بیان ان الید العلیا خیر من الید السفلی، رقم ۱۰۳۳، ص۵۱۵)

(586)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है, स-दक़ा की इब्तिदा अपने ज़ेरे कफ़ालत लोगों से करो और बेहतर स-दक़ा ग़ना की ह़ालत में दिया जाने वाला स-दक़ा है और जो पाक दामनी चाहेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे

पाक दामन बना देगा और जो ग़नी होना चाहेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ग़नी बना देगा।''

(بخاری، کتاب الزکاۃ، باب لاصدقۃ الاعن ظہر غنی، رقم ۱۴۲۷، ج۱، ص ۴۸۲)

(587)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अन्सार के कुछ लोगों ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अ़ता फ़रमाया उन्हों ने फिर सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें फिर अ़ता फ़रमाया उन्हों ने फिर सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें फिर अ़ता फ़रमाया यहां तक कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास उस वक़्त जो कुछ मौजूद था ख़त्म हो गया तो आप ने फ़रमाया, ''मेरे पास जो भलाई होगी मैं उसे तुम से न छुपाऊंगा, जो पाक दामनी चाहेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे पाक दामन फ़रमाएगा और जो लोगों से बे परवाह होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ग़नी कर देगा और जो सब्र को अपनाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ह़क़ीक़ी सब्र अ़ता फ़रमाएगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब्र से ज़ियादा वुस्अ़त वाली कोई भलाई किसी को अ़ता न फ़रमाई।''

(بخاری، کتاب الزکاۃ، باب الاستعفاف عن المسالۃ، رقم ۱۴۶۹، ج۱، ص ۴۹۶)

(588)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुझ पर जन्नत में सब से पहले दाख़िल होने वाले तीन शख़्स और सब से पहले जहन्नम में दाख़िल होने वाले तीन शख़्स पेश किये गए, सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वालों में एक तो शहीद है और दूसरा वोह ग़ुलाम जिस ने अपने रब की इ़बादत की और अपने आक़ा की ख़िदमत में कोई कमी न छोड़ी और तीसरा वोह इयाल दार जो पाक दामन हो और जहन्नम में दाख़िल होने वाले पहले तीन शख़्स येह हैं, (1) ज़बर दस्ती बादशाह बन जाने वाला (2) वोह मालदार शख़्स जो अपने माल में से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ह़क़ अदा नहीं करता (3) मु-तकब्बिर फ़क़ीर।''

(الترغیب والترہیب، کتاب النکاح، باب الترغیب فی النفقۃ علی الزوجۃ والعیال، رقم ۳، ج۳، ص ۴۱)

(589)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुझे इस बात की ज़मानत दे कि किसी से सुवाल न करेगा तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया कि ''मैं ज़मानत देता हूं।'' लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ किसी से कुछ न मांगा करते थे और एक रिवायत में है कि अगर ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ घोड़े पर सुवार होते और आप का कोड़ा नीचे गिर जाता तो किसी से उठाने के लिये न कहते बल्कि घोड़े से नीचे उतर कर ख़ुद ही कोड़ा उठाते थे।''

(ابن ماجہ، کتاب الزکاۃ، باب کراھیۃ المسئلۃ، رقم ۱۸۳۷، ج۲، ص ۴۰۱)

(590)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क्या तुम मेरी बैअ़त करोगे तुम्हें जन्नत दी जाएगी।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "हां।" फिर मैं ने अपना हाथ बढ़ा दिया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शर्त़ लगाते हुए इर्शाद फ़रमाया, "क्या तुम इस चीज़ पर बैअ़त करते हो कि लोगों से कुछ न मांगोगे।" मैं ने अ़र्ज़ की, "जी हां।" इर्शाद फ़रमाया, "और अगर तुम्हारा कोड़ा भी नीचे गिर जाए तो उतर कर खु़द ही उठाओगे।" मैं ने अ़र्ज़ की, "जी हां।"

(مسند احمد بن حنبل، رقم ۲۱۵۶، ج۸، ص۱۱۹)

(591)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मेरी बैअ़त कौन करेगा ?" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम से बैअ़त ले लीजिये।" इर्शाद फ़रमाया, "इस बात की कि किसी से कुछ न मांगोगे।" ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ किया "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो येह बैअ़त कर ले उसे क्या मिलेगा ?" फ़रमाया, "जन्नत" तो ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने बैअ़त कर ली। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, "मैं ने उन्हें मक्के में लोगों के एक बहुत बड़े इज्तिमाअ़ में देखा कि उन का कोड़ा नीचे गिर गया और वोह घोड़े पर सुवार थे, वोह कोड़ा एक शख़्स के कन्धे पर गिरा उस शख़्स ने वोह कोड़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को पेश किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने न लिया बल्कि घोड़े से उतरे फिर वोह कोड़ा पकड़ा।"

(طبرانی کبیر، رقم ۷۸۳۲، ج۸، ص۲۰۶)

अपना लिबास फ़क़ीर पर स-दक़ा करने का सवाब

(592)...... हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि ''सब से अफ़्ज़ल अ़मल मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करना है ख़्वाह उस की सित्र पोशी कर के हो या उसे शिकम सैर कर के या उस की ह़ाजत पूरी करने के ज़रीए़ हो।''

(الترغیب والترہیب، کتاب اللباس والزینۃ، باب الترغیب فی الصدقۃ علی الفقیر، رقم ۳، ج ۳، ص ۸۵)

(593)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसल्मान अपने मुसल्मान भाई के सित्र को ढांपेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत का सब्ज़ लिबास पहनाएगा और जो किसी भूके मुसल्मान को खाना खिलाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जो किसी प्यासे मुसल्मान को सैराब करेगा **अल्लाह** उसे जन्नत की पाकीज़ा शराब पिलाएगा।''

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۱۸، رقم ۲۴۵۷، ج ۴، ص ۲۰۴)

(594)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो मुसल्मान किसी मुसल्मान को कपड़े पहनाएगा, जब तक उस में से एक चीथड़ा भी बाक़ी रहेगा, वोह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हि़फ़ाज़त में रहेगा।''

एक और रिवायत में है ''जो किसी मुसल्मान को कपड़े पहनाएगा जब तक उस में से एक धागा भी बाक़ी रहे तो वोह शख़्स **अल्लाह** की हि़फ़ाज़त में रहेगा।'' (ترمذی، کتاب صفۃ القیامہ، باب ۴۱، رقم ۲۴۹۲، ج ۴، ص ۲۱۸)

(595)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नए कपड़े पहने तो येह दुआ़ मांगी ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِہٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِہٖ فِیْ حَیَاتِیْ'' तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने मुझे ऐसा लिबास अ़ता फ़रमाया जिस के ज़रीए़ मैं अपनी सित्र पोशी करता हूं और अपनी ज़िन्दगी में इस से ज़ीनत करता हूं।''

फिर फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने नए कपड़े पहने फिर कहा اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِہٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِہٖ فِیْ حَیَاتِیْ फिर अपने कपड़े उतार कर स-दक़ा कर दिये तो वोह ज़िन्दगी में और मौत के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हि़फ़ाज़त में रहेगा।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۱۰۷، رقم ۳۵۷۱، ج ۵، ص ۳۲۸)
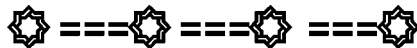
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये खाना खिलाने का सवाब

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है,

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝ اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝ وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ۝ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا ۝ قَوَارِيْرَاۡ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ۝ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ وَّحُلُّوْا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ وَّسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ (پ۲۹،الدھر:۸تا۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है तो उन्हें **अल्लाह** ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी और उन के सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये जन्नत में तख़्तों पर तक्या लगाए होंगे न उस में धूप देखेंगे न ठिटर (सख़्त सर्दी) और उस के साए उन पर झुके होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे और उन पर चांदी के बरतनों और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे कैसे शीशे चांदी के साक़ियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़े पर रखा होगा और उस में वोह जाम पिलाए जाएंगे जिस की मिलौनी अदरक होगी वोह अदरक क्या है जन्नत में एक चश्मा है जिसे सल-सबील कहते हैं और उन के आस पास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के जब तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखेरे हुए और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे और बड़ी सल्तनत उन के बदन पर हैं क़ुरैब के सब्ज़ कपड़े और क़नादीज़ के और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए गए और उन्हें उन के रब ने सुथरी शराब पिलाई उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेह़नत ठिकाने लगी।

(596)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा, ''इस्लाम का सब से बेहतरीन अमल कौन सा है ?'' फ़रमाया, ''खाना खिलाना और हर मुसल्मान को सलाम करना ख़्वाह तुम उसे जानते हो या न जानते हो ।''

(بخاری، کتاب الایمان، باب اطعام الطعام من الاسلام، رقم ۱۲، ج۱، ص۱۶)

(597)......हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रह़मान عَزَّ وَجَلَّ की इबादत करो और खाना खिलाया करो और सलाम को आम करो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।''

(ترمذی، کتاب الاطعمۃ، باب ماجاء فی فضل اطعام الطعام، رقم ۱۸۶۲، ج۳، ص۳۳۸)

(598)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक जन्नत में कुछ ऐसे मह़ल्लात हैं जिन में आर पार नज़र आता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने वोह मह़ल्लात उन लोगों के लिये तय्यार किये हैं जो मोह़ताजों को खाना खिलाते हैं, सलाम को आम करते हैं और रात में जब लोग सो जाएं तो नमाज़ पढ़ते हैं ।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام الخ، رقم ۵۰۹، ج۱، ص۳۶۳)

(599)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसे अमल के बारे में बताइये जिसे कर के मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊं ।'' इर्शाद फ़रमाया, ''खाना खिलाया करो और सलाम को आम करो और सिलए रेह़मी करो और रात को जब लोग सो जाएं तो नमाज़ पढ़ा करो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام الخ، رقم ۵۰۸، ج۱، ص۳۶۳)

(600)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''खाना खिलाना और सलाम को आम करना और रात को जब लोग सो जाएं तो नमाज़ पढ़ना गुनाहों के कफ़्फ़ारे हैं ।''

(مستدرک، کتاب الاطعام، باب فضیلۃ اطعام اطعام، رقم ۷۲۵۵، ج۵، ص۱۷۸)

(601)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा भूकी जान को शिकम सैर करना है ।''

(شعب الایمان، فصل فی الطعام، باب فی الزکاۃ، رقم ۳۳۶۷، جلد۳، ص۲۱۷)

(602)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने किसी भूके मोमिन को पेट भर कर खाना खिलाया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े से दाख़िल फ़रमाएगा जिस से उसी जैसे लोग दाख़िल होंगे।'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۶۲، جلد ۲۰، ص ۸۵)

(603)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''भूके मुसल्मान को खाना खिलाना जन्नत को वाजिब करने वाले आ'माल में से है।'' एक और रिवायत में है कि, ''भूके मुसल्मान को खाना खिलाना रह़मत को वाजिब करने वाले आ'माल में से है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب الترغیب فی اطعام وسقی الماء، رقم ۹، ج ۲، ص ۳۵)

(604)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल सिखाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।'' तो फ़रमाया, ''तुम ने छोटे सुवाल से बहुत बड़ा मस्अला पूछ लिया, ग़ुलाम आज़ाद करो अगर इस की इस्तित़ाअ़त न हो तो भूके को खाना खिला दिया करो और प्यासे को पानी पिला दिया करो।'' (شعب الایمان، باب فی العتق ووجہ التقرب الی اللہ عزوجل، رقم ۴۳۳۵، ج ۴، ص ۶۵)

(605)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम में से किसी के लिये खजूर या लुक़्मे की इस त़रह़ निगह दाश्त फ़रमाता है जिस त़रह़ कि तुम अपने मवेशी या ऊंटनी के बच्चे की परवरिश करते हो, यहां तक कि वोह खजूर या लुक़्मा उह़ुद पहाड़ जितना हो जाता है।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان کتاب الزکاۃ، باب صدقۃ التطوع، رقم ۳۳۰۶، ج ۴، ص ۱۳۴)

(606)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ रोटी के एक लुक़्मे और खजूरों के एक खोशे और मसाकीन के लिये नफ़्अ़ बख़्श अश्या की वजह से तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा (1) घर के मालिक को जिस ने स-दक़े का हुक्म दिया (2) उस की ज़ौजा को जिस ने वोह चीज़ दुरुस्त कर के दी (3) उस

ख़ादिम को जिस ने मिस्कीन तक वोह स–दक़ा पहुंचाया।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द है जो हमारे ख़ादिमों को नहीं भूला।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب اجر الصدقۃ، رقم ۴۶۲۲، ج ۳، ص ۲۸۸)

(607)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बनी इस्राईल के एक आ़बिद ने अपनी इ़बादत गाह में साठ साल तक इ़बादत की। फिर बारिश हुई और ज़मीन सब्ज़ हो गई तो राहिब अपने सौमआ़ (या'नी इ़बादत गाह) से निकला और कहने लगा कि अगर मैं नीचे उतर कर जाऊं तो शायद मुझे ज़ियादा भलाई ह़ासिल हो। फिर वोह नीचे उतरा तो अपने साथ एक या दो रोटी के टुकड़े भी रख लिये। एक जगह उस की मुलाक़ात एक औ़रत से हुई वोह उस के साथ बातें करने लगा यहां तक कि ज़िना कर बैठा और उस पर बेहोशी त़ारी हो गई। फिर वोह नहाने के लिये नह्‌र के पास आया तो एक साइल उस के पास आया तो उस ने उसे दोनों रोटियां उठा लेने का इशारा किया। फिर उस आ़बिद का इन्तिक़ाल हो गया तो उस की साठ सालों की इ़बादत और ज़िना का वज़्न किया गया तो वोह ज़िना उस इ़बादत पर ग़ालिब आ गया फिर वोह दो रोटियां उस की नेकियों के साथ रखी गईं तो वोह रोटियां ग़ालिब आ गईं और उसे बख़्श दिया गया।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، ذکر الخبر الدال علی ان الحسنۃ الواحدۃ قد جی بھا، رقم ۳۷۹، ج ۱، ص ۲۹۸)

(608)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मोमिन किसी भूके मुसल्मान को खाना खिलाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे जन्नत के फल खिलाएगा और जो किसी प्यासे मुसल्मान को सैराब करेगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे पाकीज़ा शराब पिलाएगा और जो किसी बे लिबास मुसल्मान को कपड़े पहनाएगा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे जन्नती लिबास पहनाएगा।'' (ابوداود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، رقم ۱۶۸۲، ج ۲، ص ۱۸۰)

(609)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीन ख़स्लतें जिस में होंगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर अपनी रह़मत फ़रमाएगा और उसे अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा (1) कमज़ोर पर नर्मी करना (2) वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करना (3) गुलामों के साथ भलाई का सुलूक करना और तीन ख़स्लतें जिस में होंगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस दिन अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन कोई और साया न होगा (1) मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना (2) अंधेरी रात में मस्जिद की त़रफ़ चलना (3) भूके को खाना खिलाना।'' (ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم ۲۵۰۲، ج ۴، ص ۲۲۲)

(610)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''आज तुम में किस ने रोज़ा रखा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं ने।'' फिर फ़रमाया, ''तुम में से आज मिस्कीन को किस ने खाना खिलाया ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं ने।'' फिर फ़रमाया, ''तुम में से आज मरीज़ कि इ़यादत किस ने की ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं ने।'' फिर फ़रमाया, ''आज तुम में से जनाज़े के साथ कौन गया ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं गया था।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स में येह चार ख़स्लतें जम्अ़ हो जाएं वोह जन्नत में दाख़िल होगा।''

(مسلم، کتاب فضائل صحابہ رضی اللہ عنہ، باب من فضائل ابی بکر صدیق رضی اللہ عنہ، رقم ۱۰۲۸، ص ۱۳۰۱)

(611)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन फ़रमाएगा, ''ऐ इब्ने आदम ! मैं बीमार हुवा तो तूने मेरी इ़यादत क्यूं न की ?'' बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी इ़यादत कैसे करता तू तो रब्बुल आ़-लमीन है।'' **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा, ''क्या तू न जानता था कि मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार है फिर तूने उस की इ़यादत नहीं की ? क्या तू न जानता था कि अगर तू उस की इ़यादत करने के लिये जाता तो मुझे उस के पास पाता ?'' फिर फ़रमाएगा, ''ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से खाना मांगा तो तूने मुझे खाना क्यूं न खिलाया ?'' बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे खाना कैसे खिलाता तू तो रब्बुल आ़-लमीन है।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''क्या तू न जानता था कि मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से खाना मांगा था और तूने उस को खाना न खिलाया, क्या तू नहीं जानता था कि अगर तू उसे खाना खिला देता तो उस का सवाब मेरे पास ज़रूर पा लेता।''

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''ऐ इब्ने आदम मैं ने तुझ से पानी मांगा तूने मुझे क्यूं न दिया ?'' बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे पानी कैसे पिलाता तू तो रब्बुल आ़-लमीन है।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से पानी मांगा तो तूने उसे पानी न पिलाया क्या तू नहीं जानता कि अगर तू उसे पानी पिला देता तो मेरे पास उस का सवाब पाता।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل عیادۃ المریض، رقم ۲۵۶۹، ص ۱۳۸۹)

(612)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा आ'माल येह हैं कि तू किसी मुसल्मान के दिल में ख़ुशी दाख़िल कर दे या उस की एक परेशानी दूर करे या उस की भूक मिटा दे या उस का क़र्ज़ अदा कर दे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب البر والصلۃ، باب، الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین، رقم ۱۹، ج ۳، ص ۲۶۵)

(613)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र अ़ब्दी और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाएका के सामने अपने उन बन्दों पर फ़ख़्र करता है जो लोगों को खाना खिलाते हैं।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب الترغیب فی اطعام الطعام الخ، رقم ۲۱، ج ۲، ص ۳۸)

(614)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अपने भाई को पेट भर कर खाना खिलाया और उसे पानी से सैराब किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से सात ख़न्दक़ें दूर कर देगा और उन में से दो ख़न्दक़ों के दरमियान पांच सो बरस का फ़ासिला होगा।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''मैं एक या दो साअ़ खाने पर अपने भाइयों को जम्अ़ करूं येह मुझे बाज़ार में जा कर एक गुलाम ख़रीद कर उसे आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है।'' और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने किसी मुसल्मान भाई को एक लुक़्मा खिलाऊं येह मेरे नज़्दीक किसी मिस्कीन पर एक दिरहम स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्दीदा है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فیمن اطعم مسلما اوسقاہ، رقم ۴۷۲۰، ج ۳، ص ۳۲۰)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
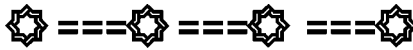
किसी इन्सान या जानवर को पानी पिलाने या कूंआं खुदवाने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ۝ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝ (پ۳۰،الزلزال:۷،۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा ।

(615)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक शख़्स किसी रास्ते से गुज़र रहा था कि उसे शदीद प्यास मह़सूस हुई तो उस ने क़रीब ही एक कूंआं पाया वोह उस में उतरा और पानी पी कर निकल आया । उस ने वहां एक कुत्ते को देखा जो हांप रहा था और प्यास की वजह से कीचड़ खा रहा था । उस ने सोचा कि इसे भी इतनी ही प्यास लगी होगी जितनी मुझे लगी थी । फिर वोह कूंएं में उतरा और अपने मोज़े में पानी भर कर उसे अपने मुंह में दबाया और ऊपर आया और वोह पानी कुत्ते को पिला दिया । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को उस का येह अ़मल पसन्द आया और उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी ।'' सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हमारे लिये चौपायों में भी सवाब है ?'' फ़रमाया, ''हर जान वाली चीज़ में सवाब है ।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، رقم ۵۴۵، ج۱، ص ۳۷۸)

(616)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मह़मूद बिन रबीअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन जु'शुम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कोई गुमशुदा जानवर मेरे ह़ौज़ पर आ जाए तो अगर मैं उसे पानी पिला दूं तो क्या इस में मेरे लिये सवाब है ?'' फ़रमाया, ''उसे पानी पिला दिया करो क्यूं कि हर जानदार में सवाब है ।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، رقم ۵۴۳، ج۱، ص ۳۷۷)

(617)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''जब मैं अपने ऊंटों को पानी पिलाने के लिये अपना ह़ौज़ भरता हूं तो दूसरों के ऊंट भी पानी पीने के लिये आ जाते हैं तो मैं उन्हें भी पानी पिला देता हूं, क्या इस में मेरे लिये सवाब है ?'' फ़रमाया, ''हर जान वाली चीज़ में सवाब है ।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب الترغیب فی اطعام الطعام وسقی الماء، رقم ۲۹، ج۲، ص ۴۰)

(618)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे

परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, "कौन सा ऐसा अ़मल है जिसे कर के मैं जन्नत में दाख़िल हो सकता हूं ?" फ़रमाया, "क्या तू किसी ऐसे शहर में रहता है जहां पानी जम्अ़ कर लिया जाता है ?" उस ने अ़र्ज़ किया, "हां ।" फ़रमाया, "फिर तुम एक नई मश्क ख़रीदो फिर उसे भर लो और उस के फटने तक लोगों को पानी पिलाते रहो इस त़रह़ उस के फटने से पहले ही तुम जन्नतियों के अ़मल तक पहुंच जाओगे ।" (الترغیب والترہیب، کتاب الصدقات، باب الترغیب فی اطعام الطعام وسقی الماء، رقم ۲۸، ج۲، ص۴۰)

(619)...... ह़ज़रते सय्यिदुना कुदैर ज़ब्बी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, "मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे ।" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क्या येह दोनों बातें तुम्हें अ़मल पर उभारती हैं ?" उस ने कहा, "जी हां ।" फ़रमाया, "ह़क़ बात कहो और जो ज़ाइद चीज़ तुम्हारे पास हो वोह किसी को अ़त़ा कर दिया करो ।" उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया, "ख़ुदा की क़सम ! मैं हर वक़्त ह़क़ बोलने की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता और न ही ज़ाइद चीज़ अ़त़ा कर देने की त़ाक़त रखता हूं ।" फ़रमाया, "तो मोह़ताजों को खाना खिला दिया करो और सलाम को आ़म करो ।"

उस ने अ़र्ज़ किया, "येह भी मुश्किल है ।" इर्शाद फ़रमाया, "क्या तुम्हारे पास ऊंट है ?" उस ने अ़र्ज़ किया, "जी हां ।" फ़रमाया, "अपने ऊंटों में से कोई जवान ऊंट और पानी का मश्कीज़ा साथ लो और फिर ऐसा घराना देखो जो एक दिन छोड़ कर दूसरे दिन पानी पीता हो फिर उसे पानी पिलाओ तो न तेरा ऊंट हलाक होगा और न तेरा मश्कीज़ा फटेगा और तेरे लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी ।" फिर वोह आ'राबी तक्बीर पढ़ते हुए चला गया तो उस के ऊंट के हलाक होने और मश्कीज़ा फटने से पहले ही उसे शहीद कर दिया गया ।" (طبرانی کبیر، کدیر الضبی، رقم ۴۲۲، ج۱۹، ص۱۸۷)

(620)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि "दो शख़्स एक सह़रा से गुज़र रहे थे । उन में से एक शख़्स इबादत गुज़ार था जब कि दूसरा बदकार था । एक मरतबा इबादत गुज़ार शख़्स को इतनी शदीद प्यास लगी कि वोह शिद्दते प्यास से ग़श खा कर गिर गया । जब उस के साथी ने उसे गिरते हुए देखा तो उस ने कहा, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर येह नेक बन्दा प्यासा मर गया ह़ालां कि मेरे पास पानी मौजूद है तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से कभी कोई भलाई न पा सकूंगा और अगर मैं इसे अपना पानी पिला दूं तो मैं ज़रूर प्यास की वजह से मर जाऊंगा ।" फिर उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा करते हुए अपने साथी को पानी पिलाने का पुख़्ता इरादा किया । चुनान्चे उस ने उस पर अपना पानी छिड़का और बाक़ी मांदा पानी उसे पिला दिया । फिर वोह उठा और सह़रा पार कर गया ।"

(फिर प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया), ''जब उस बदकार को हि़साब के लिये रोका जाएगा और उसे जहन्नम का हुक्म दे दिया जाएगा तो मलाएका उसे हांकते हुए ले जा रहे होंगे कि वोह उस आ़बिद को देखेगा तो उस से कहेगा, ''ऐ फुलां ! क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?'' वोह पूछेगा, ''तू कौन है ?'' तो येह जवाब देगा, ''मैं वोही हूं जिस ने सह़रा में अपनी जान के मुक़ाबले में तुझे तरजीह़ दी थी।'' येह सुन कर वोह आ़बिद कहेगा, ''क्यूं नहीं मैं तुझे पहचानता हूं।'' फिर वोह फ़िरिश्तों से कहेगा, ''रुक जाओ।'' तो वोह रुक जाएंगे। फिर येह अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उसे पुकारेगा और कहेगा, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! तू इस की नेकी को जानता है कि इस ने किस त़रह़ मुझे अपने आप पर तरजीह़ दी थी, या रब عَزَّوَجَلَّ ! इसे मेरे ह़वाले कर दे।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''वोह तेरे ह़वाले है।'' तो वोह आ़बिद अपने भाई के पास आएगा और उस का हाथ थाम कर उसे जन्नत में दाख़िल कर देगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب البعث، باب شفاعۃ الصالحین، رقم ۱۸۵۴۹، ج۱۰، ص۶۹۴، بتغیر قلیل)

(621)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अहले जन्नत में से एक शख़्स क़ियामत के दिन अहले जहन्नम को ऊपर से झांक कर देखेगा तो जहन्नमियों में से एक शख़्स उसे पुकार कर कहेगा, ''ऐ फुलां ! क्या तूने मुझे पहचाना ?'' वोह जन्नती शख़्स कहेगा, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने तुझे नहीं पहचाना तू कौन है ?'' तो वोह कहेगा, ''मैं वोही हूं कि जब तू दुन्या में मेरे पास से गुज़रा था तो तूने मुझ से पानी मांगा था और मैं ने तुझे पानी पिलाया था।'' तो वोह जन्नती कहेगा, ''मैं ने तुझे पहचान लिया।'' तो वोह कहेगा कि ''मेरे लिये उस नेकी की वजह से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शफ़ाअ़त करो।''

चुनान्चे वोह शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस का तज़्किरा कर के सुवाल करेगा और कहेगा मैं ने जहन्नम में झांका तो मुझे उन में से एक शख़्स ने पुकार कर कहा, ''क्या तूने मुझे पहचाना ?'' तो मैं ने कहा, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने नहीं पहचाना कि तू कौन है ?'' तो उस ने कहा कि ''मैं वोही हूं कि जब तू दुन्या में मेरे क़रीब से गुज़रा था तो तू ने मुझ से पानी का एक घूंट मांगा था तो मैं ने तुझे पानी पिलाया था, लिहाज़ा तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरी शफ़ाअ़त कर, तो या रब عَزَّوَجَلَّ ! मेरी शफ़ाअ़त उस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा ले।'' फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से निकालने का हुक्म देगा तो उसे जहन्नम से निकाल दिया जाएगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب البعث، باب شفاعۃ الصالحین، رقم ۱۸۵۵۰، ج۱۰، ص۶۹۵)

(622)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी मां फ़ौत हो गई है और उस ने कोई वसिय्यत नहीं की अब अगर मैं उस की त़रफ़ से कोई स-दक़ा करूं तो क्या उसे नफ़्अ़ पहुंचेगा ?'' फ़रमाया, ''हां और तुझ पर लाज़िम है कि तू पानी स-दक़ा कर।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب الصدقۃ عن المیت، رقم ۴۷۶۷، ج۳، ص۳۳۵)

(623)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''पानी से बढ़ कर कोई स-दक़ा ज़ियादा सवाब वाला नहीं ।''

(شعب الایمان، باب فی الزکاۃ، فصل فی اطعام الطعام وسقی الماء، رقم ۳۳۷۸، ج۳، ص۲۲۲)

(624)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मोमिन के इन्तिक़ाल के बा'द उस के अ़मल और नेकियों में से जो कुछ उसे मिलता रहेगा, वोह येह है (1) उस का वोह इ़ल्म जिसे उस ने सिखाया और फैलाया और (2) नेक बेटा जिसे उस ने छोड़ा, या (3) वोह कु़रआने पाक जिसे विरसे में छोड़ा, या (4) वोह मस्जिद जिसे उस ने बनाया, या (5) मुसाफ़िर ख़ाना बनाया, या (6) किसी नहर को जारी किया, या (7) वोह स-द-क़ए जारिया जिसे उस ने ह़ालते सिह़्ह़त और ज़िन्दगी में अपने माल से दिया, इन का सवाब उसे मौत के बा'द भी मिलता रहेगा ।'' (ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب ثواب معلم الناس الخیر، رقم ۲۴۲، ج۱، ص۱۵۸)

(625)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, ''सात चीज़ें आदमी को उस की मौत के बा'द उस की क़ब्र में भी मिलती रहती हैं, उस ने जो इ़ल्म सिखाया, या नहर जारी करवाई या कूंआं खुदवाया, या दरख़्त उगाया, या मस्जिद बनवाई या विरसे में मुस्ह़फ़ छोड़ा, या ऐसा बच्चा छोड़ कर मरा जो उस के मरने के बा'द उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करे ।''

(مجمع الزوائد، کتاب العلم، باب فی من سن خیرا او غیرہ او دعا، رقم ۷۶۹، ج۱، ص۴۰۸)

(626)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई, (उन के लिये) कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''पानी ।'' तो मैं ने एक कूंआं खुदवाया और कहा ''येह उम्मे सा'द के लिये है ।'' (سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، رقم ۱۶۸۱، جلد۲، ص۱۸۰)

(627)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने कूंआं खोदा तो उस में से जिन्नो इन्स और परिन्दों में से जो जानदार भी पानी पियेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन उस का सवाब अ़ता फ़रमाएगा ।'' (الترغیب والترہیب، باب الترغیب فی اطعام الطعام وسقی الماء، رقم ۳۶، ج۲، ص۴۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन ह़सन बिन शक़ीक़ عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से एक शख़्स ने कहा ''ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! सात साल होने को आए मेरे घुटने पर एक फोड़ा निकला है मैं ने मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से इस का इ़लाज कराया और बहुत से त़बीबों से इस के बारे में पूछा मगर मुझे कोई फ़ाएदा नहीं हुवा ।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस से फ़रमाया, ''जाओ ! कोई ऐसी जगह तलाश करो जहां लोग पानी के मोह़ताज हों और वहां एक कूंआं खुदवाओ, मुझे उम्मीद है कि वहां पानी निकलते ही तेरा ख़ून बहना बन्द हो जाएगा ।'' तो उस शख़्स ने ऐसा ही किया और शिफ़ायाब हो गया ।

अच्छी निय्यत से खेती या फलदार दरख़्त उगाने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَیْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْم (پ۲،البقرۃ:۲۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो भलाई करो बेशक **अल्लाह** उसे जानता है।

एक जगह इर्शाद फ़रमाया,

وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَیْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَیْرًا وَّ اَعْظَمَ اَجْرًا (پ۲۹،المزمل:۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे।

जब कि एक मक़ाम पर है,

فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ ۝ وَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا یَّرَهٗ ۝ (پ۳۰،الزلزال:۷،۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(628)...... हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसलमान दरख़्त लगाए या फ़स्ल बोए फिर उस में से जो परिन्दा या इन्सान खाए तो वोह उस की तरफ़ से स-दक़ा शुमार होगा।''

(مسلم،کتاب المساقات والمزارعۃ،باب فضل الغرس والزرع،رقم ۱۵۵۳،ص۸۴۰)

(629)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़िए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसलमान दरख़्त लगाए और फ़स्ल बोए फिर उस में से जो कुछ इन्सान और परिन्दा वग़ैरा खाए तो उसे उस का सवाब मिलेगा।''

(مجمع الزوائد،کتاب الزکاۃ،باب فی من غرس غرسا او بنی بنیانا،رقم ۴۷۴۰،ج۳،ص۳۲۶)

(630)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसलमान दरख़्त लगाए तो उस में से जो कुछ खाया जाएगा वोह उस के लिये स-दक़ा है और जो कुछ इस में से चोरी होगा वोह इस के लिये स-दक़ा है और जो कोई उसे नुक़्सान पहुंचाएगा वोह भी इस के लिये क़ियामत तक स-दक़ा है।''

एक रिवायत में है कि "जो मुसलमान दरख़्त लगाए या खेती बोए फिर उस में से किसी इन्सान या जानवर या परिन्दे ने खाया तो वोह उस के लिये स-दक़ा है।"

जब कि दूसरी रिवायत में है कि "मुसल्मान जो कुछ उगाए फिर उस में से कोई इन्सान या जानवर या परिन्दा खाए तो वोह उस के लिये क़ियामत तक स-दक़ा होगा।"

(مسلم، کتاب المساقاۃ والمزارعۃ، باب فضل الغرس والزرع، رقم ۱۵۵۲، ص ۸۳۹)

(631)...... ह़ज़रते सय्यिदुना साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने खेती बोई फिर उस में से परिन्दे या किसी भूके जानवर ने खाया तो वोह उस के लिये स-दक़ा है।" (مسند احمد، رقم ۱۶۵۵۸، ج ۵، ص ۵۱۴)

(632)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने किसी ज़ुल्म व ज़ियादती के बिग़ैर कोई घर बनाया या ज़ुल्म व ज़ियादती के बिग़ैर कोई फ़स्ल बोई, जब तक **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला की मख़्लूक़ में से कोई एक भी उस से नफ़्अ़ उठाता रहेगा उसे सवाब मिलता रहेगा।" (مسند احمد، رقم ۱۵۶۱۶، ج ۵، ص ۳۰۹)

(633)...... इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस ने कोई दरख़्त लगाया और उस की ह़िफ़ाज़त और देखभाल पर सब्र किया यहां तक कि वोह फल देने लगा तो उस में से खाया जाने वाला हर फल **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक उस के लिये स-दक़ा है।" (مسند احمد، رقم ۱۶۵۸۶، ج ۵، ص ۵۷۴)

(634)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं दिमिश्क़ में एक जगह खेती बो रहा था कि एक शख़्स मेरे क़रीब से गुज़रा तो उस ने मुझ से कहा कि "आप सह़ाबिये रसूल होने के बा वुजूद येह काम कर रहे हैं ?" तो मैं ने उस से कहा मेरे बारे में राय क़ाइम करने में जल्द बाज़ी मत करो क्यूं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है, "जिस ने फ़स्ल बोई तो उस फ़स्ल में से आदमी या मख़्लूक़ में से जो भी खाएगा वोह उस के लिये स-दक़ा शुमार होगा।"

(مسند احمد، رقم ۲۷۵۷۶، ج ۱۰، ص ۴۲۱)

(635)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो शख़्स खेती बोएगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस से निकलने वाली फ़स्ल की मिक़्दार के बराबर उस के लिये सवाब लिखेगा।"

गुज़श्ता सफ़्हात में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की येह रिवायत गुज़र चुकी है कि ''सात चीज़ें बन्दे की मौत के बा'द भी जारी रहती हैं ह़ालां कि वोह बन्दा अपनी क़ब्र में होता है, (1) उस ने जो इल्म सिखाया, या (2) नह्र बनवाई, या (3) कूंआं खुदवाया, या (4) दरख़्त उगाया, या (5) मस्जिद बनवाई, या (6) विरसे में मुस्ह़फ़ छोड़ा, या (7) ऐसा बच्चा छोड़ कर मरा जो उस के मरने के बा'द उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करे।'' (مسند احمد، رقم ۳۳۵۷۹، ج۹، ص۱۳۶)

(636)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बनी अ़म्र बिन औ़फ़ के हां तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया, ''ऐ अन्सार के गुरौह!'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''लब्बैक या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم!'' तो आप ने फ़रमाया, ''दौरे जाहिलिय्यत में जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत नहीं करते थे तो कमज़ोरों का बोझ उठाया करते थे और अपने अम्वाल से अच्छे काम किया करते थे और मुसाफ़िरों के साथ अच्छा सुलूक करते थे यहां तक कि जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम और अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए तुम पे एह़सान फ़रमाया तो तुम अपने अम्वाल को मह़फ़ूज़ करने लगे, सुन लो! जिस चीज़ में से कोई आदमी खाता है उस में सवाब है और जिस में से कोई दरिन्दा या परिन्दा खाता है उस में भी सवाब है।''

रावी कहते हैं कि येह लोग जब वापस लौटे तो उन में से हर एक ने अपने अपने बाग़ में से तीस तीस दरवाज़े निकाल लिये। (المستدرک، کتاب الاطعمۃ، باب النھی الواضح عن تحصین الحیطان الخ، رقم ۷۲۶۵، ج۵، ص۱۸۳)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

भलाई के कामों में ख़र्च करने का सवाब

कुरआने ह़कीम फुरक़ाने मजीद में कई मक़ामात पर स-दक़ा करने की तरग़ीब दी गई है चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) الٓمّٓ ۚ ذٰلِکَ الْکِتٰبُ لَا رَیْبَ ۚۖۛ فِیْهِ ۚۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِیْنَ ۙ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۙ وَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْکَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِکَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ ؕ اُولٰٓئِکَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (پ۱، البقرۃ:۱تا۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह बुलन्द रुत्बा किताब कोई शक की जगह नहीं इस में हिदायत है डर वालों को वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ मह़बूब तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा और आख़िरत पर यक़ीन रखें वोही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और वोही मुराद को पहुंचने वाले ।

(2) اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّیْلِ وَ النَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ (پ۳، البقرۃ:۲۷۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उन के लिये उन का नेग (इन्आ़म) है उन के रब के पास उन को न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म ।

(3) وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَیْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ؕ وَ مَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَیْرٍ یُّوَفَّ اِلَیْكُمْ وَ اَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ (پ۳، البقرۃ:۲۷۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और तुम जो अच्छी चीज़ दो तो तुम्हारा ही भला है और तुम्हें ख़र्च करना मुनासिब नहीं मगर **अल्लाह** की मरज़ी चाहने के लिये और जो माल दो तुम्हें पूरा मिलेगा और नुक़्सान न दिये जाओगे ।

(4) الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ؕ اُولٰٓئِکَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌ (پ۹، الانفال:۳،۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये द-रजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी ।

(5) وَالَّذِیْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً وَّیَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ اُولٰٓئِکَ لَهُمْ عُقْبَی الدَّارِ O (پ۱۳، الرعد:۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जिन्हों ने सब्र किया अपने रब की रिज़ा चाहने को और नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया और बुराई के बदले भलाई कर के टालते हैं उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है।

(6) وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗ وَهُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ O (پ۲۲، سبا:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो चीज़ तुम **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो वोह उस के बदले और देगा और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला।

(7) اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ کِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً یَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ O لِیُوَفِّیَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَیَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَکُوْرٌ O (پ۲۲، الفاطر:۲۹،۳۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो **अल्लाह** की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं ताकि उन के सवाब उन्हें भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे बेशक वोह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है।

(8) اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَکُمْ مُّسْتَخْلَفِیْنَ فِیْهِ ؕ فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْکُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ کَبِیْرٌ O (پ۲۷، الحدید:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उस की राह में कुछ वोह ख़र्च करो जिस में तुम्हें औरों का जा नशीन किया तो जो तुम में ईमान लाए और उस की राह में ख़र्च किया उन के लिये बड़ा सवाब है।

स-दक़े के बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(637)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर रोज़ दो फ़िरिश्ते उतरते हैं, उन में से एक कहता है ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ख़र्च करने वाले को जज़ा अ़ता फ़रमा।'' और दूसरा कहता है, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपना माल रोक कर रखने वाले का माल ज़ाएअ़ फ़रमा। (مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فی المنفق والممسک، رقم ۱۰۱۰، ص۵۰۴)

(638)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक आस्मान के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता कहता है, ''जो आज क़र्ज़ देगा कल उसे बदला दिया जाएगा।'' और दूसरे दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता कहता है, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ख़र्च करने वाले को बदला अ़ता फ़रमा और अपने माल को रोक रखने वाले का माल ज़ाएअ़ फ़रमा।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الزکاۃ، صدقۃ التطوع، رقم ۳۳۲۳، ج۴، ص۱۴۰)

(639)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब भी सूरज तुलूअ़ होता है तो उस के दोनों पहलूओं में दो फ़िरिश्ते निदा करते हैं, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो ख़र्च करे उसे जज़ा अ़ता फ़रमा और जो अपने माल को रोक कर रखे उस का माल ज़ाएअ़ फ़रमा।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الفقر والزھد والتقلیۃ، رقم ۶۸۵، ج۲، ص۳۷)

(640)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है तू ख़र्च कर मैं तुझ पर ख़र्च करूंगा।'' और फ़रमाया कि, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ाने भरे हुए हैं, दिन रात मुसल्सल ख़र्च करने से भी उन में कोई कमी नहीं आती, क्या तुम नहीं देखते कि जब से उस ने ज़मीनो आस्मानों को पैदा फ़रमाया है ख़र्च कर रहा है, बेशक इस से उस के ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं हुई, उस का अ़र्श पानी पर था और मीज़ान उसी के दस्ते क़ुदरत में है जिसे वोह झुकाता और बुलन्द करता है।''

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی النفقۃ، رقم ۹۹۳، ص۴۹۸)

(641)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बख़ील और सख़ी की मिसाल उन दो आदमियों की मिसाल की त़रह़ है जिन पर सीने से पसली की हड्डी तक लोहे की ज़िरह है, तो सख़ी जब ख़र्च करने लगता है तो वोह ज़िरह उस के पूरे जिस्म पर कुशादा हो जाती है यहां तक कि उस की उंग्लियों के पोरों को छुपा लेती है और वोह अपनी उंग्लियों से उस के असर को मिटा देता है जब कि बख़ील जब ख़र्च करने का इरादा करता है तो कड़ी का हर ह़ल्क़ा अपनी जगह पैवस्त हो जाता है और वोह उसे कुशादा करना चाहता है मगर वोह कुशादा नहीं होता।''

(بخاری، کتاب الزکاۃ، باب مثل المتصدق والبخل، رقم ۱۴۴۳، ج۱، ص۴۸۶)

(642)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दोस्त तीन हैं, एक दोस्त कहता है ''मैं तेरी क़ब्र में जाने तक तेरे साथ हूं।'' येह अह़बाब व रिश्तेदार हैं और दूसरा दोस्त कहता

है, ''जो कुछ तूने दे दिया वोह तेरा है और जो रोक लिया वोह तेरा नहीं।'' येह तेरा माल है और एक दोस्त कहता है कि, ''तू जहां दाख़िल होगा या जहां से निकलेगा मैं तेरे साथ रहूंगा।'' येह तेरा अ़मल है तो वोह बन्दा कहेगा कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तू इन तीनों में से मेरे लिये सब से आसान था।''

(مستدرک للحاکم، کتاب الایمان، باب الاخلاء ثلاثۃ، رقم ۲۵۶، ج۱، ص ۲۵۴)

(643)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त का'बे के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो फ़रमाया, ''रब्बे का'बा की क़सम ! वोही लोग ख़सारे में हैं।'' मैं आप की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर बैठ गया लेकिन मैं अभी ठीक से बैठ न पाया था कि उठ खड़ा हुवा और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! कौन से लोग ख़सारे में हैं ?'' फ़रमाया, ''वोह जो बहुत मालदार हों सिवाए उस शख़्स के जो अपने सामने, आगे और पीछे दिल खोल कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करे, मगर ऐसे लोग बहुत ही कम हैं।''

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب تغلیظ عقوبۃ من لا یودی الزکاۃ، رقم ۹۹۰، ص ۴۹۵)

(644)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हम वोही आख़िरी लोग हैं जो क़ियामत के दिन सब से पहले आएंगे और बेशक कसीर माल वाले ही क़ियामत के दिन सब से पीछे होंगे सिवाए उन लोगों के जो अपने आगे पीछे और दाएं बाएं, दिल खोल कर ख़र्च करें।'' येह बात इर्शाद फ़रमाते हुए रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपना दामने अक़्दस झाड़ कर ख़र्च करने की कैफ़िय्यत की मिसाल दे रहे थे।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الزکاۃ، باب جمع المال، رقم ۳۳۰۷، ج۵، ص ۹۰)

(645)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़सद (रवा) नहीं मगर दो आदमियों के मुआ़-मले में, पहला शख़्स वोह है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन अ़ता फ़रमाया और वोह दिन रात उस में मश्ग़ूल रहे और दूसरा वोह जिसे अल्लाह तआ़ला ने माल अ़ता फ़रमाया और वोह दिन रात उसे (राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में) ख़र्च करता रहे।''

(مسلم، کتاب صلوۃ المسافرین، باب فضل من یقوم بالقرآن ویعلمہ، رقم ۸۱۵، ص ۴۰۷)

वज़ाहत :

इस ह़दीस में ह़सद से मुराद गिब्त़ा या'नी रश्क है और दूसरे की ने'मत की अपने लिये तमन्ना करना गिब्त़ा कहलाता है जब कि उस की ने'मत के ज़वाल की तमन्ना न की जाए।

(646)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन दो बन्दों को ज़िन्दा फ़रमएगा, जिन को दुन्या में कसीर माल और औलाद से नवाज़ा था, फिर एक से इर्शाद फ़रमाएगा, ''ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां !'' वोह अ़र्ज़ करेगा, ''लब्बैक मेरे रब ! मैं ह़ाज़िर हूं।'' अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, ''क्या मैं ने तुझे माल और कसीर औलाद अ़त़ा न फ़रमाई थी ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा, ''क्यूं नहीं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''तूने मेरे अ़त़ा कर्दा माल का क्या किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा, ''मैं ने उसे मोह़ताजी के ख़ौफ़ से अपने बच्चों के लिये छोड़ दिया।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''अगर तू ह़क़ीक़त जान लेता तो हंसता कम और रोता ज़ियादा, क्यूं कि जिस चीज़ का तुझे अपने बच्चों पर ख़ौफ़ था मैं ने उन्हें उसी में मुब्तला कर दिया।''

फिर दूसरे बन्दे से फ़रमाएगा, ''ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां !'' वोह अ़र्ज़ करेगा, ''لبیك ای رب وسعدیك ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ह़ाज़िर हूं।'' अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, ''क्या मैं ने तुझे कसरत से माल और औलाद अ़त़ा नहीं फ़रमाई थी ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! क्यूं नहीं ?'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''तूने मेरे अ़त़ा कर्दा माल के साथ क्या किया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने उसे तेरी त़ाअ़त में ख़र्च किया और मौत के बा'द अपने बच्चों के लिये तेरी अ़त़ा पर भरोसा किया।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''अगर तू ह़क़ीक़त जान लेता तो रोता कम और हंसता ज़ियादा, तूने जो भरोसा किया था मैं ने तेरी औलाद के साथ वोही मुआ-मला किया।''

(المعجم الاوسط، باب العین، رقم ۴۳۸۳، ج۳، ص۲۱۷)

(647)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ इब्ने आदम ! अगर तुम अपना ज़रूरत से ज़ाइद माल ख़र्च कर दो तो येह तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम इसे रोके रखोगे तो येह तुम्हारे ह़क़ में बुरा है और तुम्हें इतने माल पर मलामत न की जाएगी जो तुम्हें क़नाअ़त की सूरत में लोगों की मोह़ताजी से मह़फ़ूज़ रखे और अपने ख़र्च की इब्तिदा अपने ज़ेरे कफ़ालत लोगों से करो, ऊपर वाला हाथ नीचे वाले हाथ से बेहतर है।''

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب بیان فضل الصدقۃ، بیان ان الید العلیا خیر من الید السفلی، رقم ۱۰۳۶، ص۵۱۶)

(648)...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सलअ़ अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरे भाइयों ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मेरी शिकायत की, कि ''येह अपना माल बे तह़ाशा ख़र्च करते हैं और इस मुआ़-मले में इन का हाथ बहुत खुला है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं फलों में से अपना ह़िस्सा ले कर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में और अपने साथियों पर ख़र्च कर देता हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर दस्ते अक़्दस मार कर तीन मरतबा फ़रमाया, ''ख़र्च कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर ख़र्च करेगा।'' उस दिन के बा'द जब मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में निकलता तो मेरे साथ एक क़ाफ़िला होता और आज मैं अपने घर वालों में सब से ज़ियादा मालदार और ख़ुशह़ाल हूं।''

(المعجم الاوسط، رقم ۸۵۳۶، ج۶، ص۲۱۰)

(649)...... ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ बिलाल! ह़ालते फ़क़्र में मरना और मालदार हो कर न मरना।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं ऐसा किस त़रह़ कर सकता हूं?'' इर्शाद फ़रमाया, ''जो रिज़्क़ तुझे ह़ासिल हो उसे मत छुपा और अगर तुझ से सुवाल किया जाए तो मन्अ़ न कर।'' तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ऐसा क्यूंकर कर सकता हूं?'' फ़रमाया, ''या येह कर लो या जहन्नम ले लो।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فی الادخار، رقم ۴۷۹۱، جلد۳، ص۳۱۱)

शोहर का माल बा'दे इजाज़त स-दक़ा करने वाली औरत का सवाब

(650)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब अपने वालिद और वोह इन के दादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब औ़रत अपने शोहर के घर से स-दक़ा करती है तो उसे सवाब मिलता है और उस के शोहर को भी उतना ही सवाब मिलता है और उन में से एक का सवाब दूसरे के सवाब में कुछ कमी नहीं करता, शोहर को कमाने का और औ़रत को स-दक़ा करने का सवाब मिलता है।'' (ترمذی، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی نفقۃ المراۃ من بیت زوجھا، رقم ۶۷۱، جلد۲، ص۱۵۰)

(651)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब औ़रत अपने शोहर के घर के अनाज में से झगड़ा किये बिग़ैर कुछ ख़र्च करती है तो उस ने जो कुछ ख़र्च किया, उसे उस का सवाब मिलेगा और उस के शोहर को कमाने का सवाब मिलेगा और ख़ज़ान्ची को भी उतना ही सवाब मिलेगा और इन से कोई भी दूसरे के सवाब में कुछ कमी न करेगा।'' (مسلم، کتاب الزکاۃ باب اجر الخازن الامین، رقم ۱۰۲۴، ص۵۱۱)

तंगदस्त को मोहलत देने या उस के क़र्ज़ में कुछ कमी करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है,

وَاِنۡ كَانَ ذُوۡعُسۡرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيۡسَرَةٍ ؕ وَاَنۡ تَصَدَّقُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ اِنۡ كُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ0

(پ۳،البقرۃ:۲۸۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर क़र्ज़दार तंगी वाला है तो उसे मोहलत दो आसानी तक और क़र्ज़ उस पर बिल्कुल छोड़ देना तुम्हारे लिये और भला है अगर जानो।

(652)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मोमिन की दुन्यावी परेशानियों में से एक परेशानी दूर की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा,...... जो दुन्या में तंगदस्त को आसानी फ़राहम करेगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस के लिये आसानियां पैदा फ़रमाएगा,...... जो दुन्या में किसी मुसलमान की पर्दापोशी करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दापोशी फ़रमाएगा,..... और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस वक़्त तक बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है।''

(مسلم، کتاب الذکر والدعا، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القران، رقم ۲۶۹۹، ص۱۴۴۷)

(653)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कमी की, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन अपने अ़र्श के साए में जगह देगा जिस दिन उस साए के इलावा कोई साया न होगा।''

(ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی انظار المعسر، رقم ۱۳۱۰، ج۳، ص۵۲)

(654)...... हज़रते सय्यिदुना अबू यसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी आंखों पर हाथ रख कर फ़रमाया कि मेरी इन आंखों ने देखा फिर अपने कानों पर हाथ रख कर फ़रमाया कि मेरे कानों ने सुना फिर अपने दिल की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि मेरे दिल ने इसे याद कर लिया कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कुछ कमी की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने (अ़र्श के) साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा।''

(المستدرک، کتاب البیوع، باب من انظر معسر االخ، رقم ۲۲۷۱، ج۲، ص۳۲۶)

(655)...... हज़रते सय्यिदुना अबू यसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''बेशक क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में सब से पहले जगह पाने वाला वोह शख़्स होगा जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी ताकि वोह क़र्ज़ की अदाएगी के लिये कुछ पा ले या अपना क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया और कहा कि मेरा माल तुम पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये स-दक़ा है और उस क़र्ज़ की रसीद को फाड़ दे।''

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من فرج من معسر، رقم ۶۶۷۰، ج۴، ص۲۴۱)

(656)...... हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी तो उस के लिये हर रोज़ उस क़र्ज़ की मिस्ल स-दक़ा करने का सवाब है।" फिर मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी तो उसे रोज़ाना उतना ही माल दो मरतबा स-दक़ा करने का सवाब मिलेगा।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! पहले तो मैं ने आप को येह फ़रमाते हुए सुना था कि जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी उस के लिये हर रोज़ उस क़र्ज़ की मिस्ल स-दक़ा करने का सवाब है, फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह फ़रमाया कि जिस ने किसी तंगदस्त को मोहलत दी उस के लिये हर रोज़ उस क़र्ज़ से दो गुना स-दक़ा करने का सवाब है?" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "उसे रोज़ाना क़र्ज़ की मिक्दार के बराबर माल स-दक़ा करने का सवाब तो क़र्ज़ की अदाएगी का वक़्त आने से पहले मिलेगा, और जब अदाएगी का वक़्त हो गया फिर उस ने क़र्ज़दार को मोहलत दी तो उसे रोज़ाना उतना माल दो मर्तबा स-दक़ा करने का सवाब मिलेगा।"

एक रिवायत में है कि "जिस ने क़र्ज़ की अदाएगी के वक़्त से पहले तंगदस्त को मोहलत दी उसे रोज़ाना उतना माल स-दक़ा करने का सवाब मिलेगा और जिस ने वक़्ते अदाएगी के बा'द मोहलत दी उसे रोज़ाना इस से दुगना माल स-दक़ा करने का सवाब मिलेगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من فرج عن معسر، رقم ۶۶۷۲، ج۴، ص۲۴۲)

(657)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो इस बात को पसन्द करता है कि उस की दुआ़एं क़बूल हों और परेशानियां दूर हों तो उसे चाहिये कि तंगदस्त को मोहलत दिया करे।" (مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من فرج عن معسر، رقم ۶۶۶۴، ج۴، ص۲۳۹)

(658)...... हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो ज़मीन की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमा रहे थे, "जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कमी की अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जहन्नम की गर्मी से बचाएगा।" (مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من فرج عن معسر، رقم ۶۶۶۶، جلد۴، ص۲۴۰)

एक रिवायत में है कि "रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में येह कहते हुए दाख़िल हुए कि "तुम में से कौन इस बात को पसन्द करता है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जहन्नम की गर्मी से बचाए?" हम ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम सब इसे पसन्द करते हैं।" तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, "जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या उस के क़र्ज़ में कमी की अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जहन्नम की गरमी से बचाएगा।"

(659)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने तंगदस्त को उस की कुशा-दगी तक मोहलत दी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपने गुनाह से तौबा करने तक की मोहलत अ़ता फ़रमाएगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، رقم ۶۶۷۵، ج۴، ص۲۴۲)

(660)...... हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने तंगदस्त को मोहलत दी या अपना क़र्ज़ उस पर स-दक़ा कर दिया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे (अपने अ़र्श) के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من فرج عن معسر، رقم ۶۶۷۱، ج۴، ص۲۴۱)

(661)...... हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने एक क़र्ज़दार को बुलाया तो वोह छुप गया। फिर जब आप की उस से मुलाक़ात हुई तो वोह कहने लगा, ''मैं तंगदस्त हूं।'' तो आप ने पूछा, ''क्या तुम इस बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा सकते हो ?'' उस ने कहा, ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खाता हूं।'' येह सुन कर आप ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिसे येह पसन्द हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत की परेशानियों से नजात अ़ता फ़रमाए तो उसे चाहिये कि तंगदस्त की परेशानी दूर करे या उस के क़र्ज़ में कमी कर दे।''

(مسلم، کتاب المساقاۃ، باب فضل انظار المعسر، رقم ۱۵۶۳، ص۸۴۶)

(662)...... हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में एक ऐसे बन्दे को पेश किया जाएगा जिसे (दुन्या में) कसीर माल से नवाज़ा गया था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से दरयाफ़्त फ़रमाएगा, ''तूने दुन्या में क्या किया ?'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا۠ (پ۵، النساء:۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई बात **अल्लाह** से न छुपा सकेंगे।

(फिर फ़रमाया), ''तो वोह अ़र्ज़ करेगा, ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तूने दुन्या में मुझे माल अ़ता फ़रमाया था और मैं लोगों के साथ ख़रीदो फ़रोख़्त किया करता था, लोगों से नर्मी बरत्ना मेरी आ़दत थी लिहाज़ा मैं मालदार के लिये आसानी करता और तंगदस्त को मोहलत दिया करता था।'' तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा, ''मैं इस बात (या'नी नर्मी) का तुझ से ज़ियादा ह़क़दार हूं।'' फिर फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा, ''मेरे इस बन्दे से चश्म पोशी करो।'' हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर और अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के द-हने अक़्दस से इसी त़रह़ सुना है।

(مسلم، کتاب المساقاۃ، باب فضل انظار المعسر، رقم ۱۵۶۰، ص۸۴۴)

(663)...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम से पहली उम्मतों के एक शख़्स की रूह़ से फ़िरिश्तों की मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने उस से पूछा, ''क्या तूने कोई अच्छा काम किया है ?'' उस ने जवाब दिया, ''नहीं ।'' फ़िरिश्तों ने कहा, ''याद करो ।'' उस ने कहा, ''मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और अपने ख़ादिम से कह दिया करता था कि तंगदस्त को मोहलत दिया करो और मालदार से चश्म पोशी करो ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, ''इसे मुआफ़ कर दो ।''

एक रिवायत में है कि एक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया । उस से पूछा गया, ''तू क्या अ़मल करता था ?'' तो उस ने याद किया या उसे याद दिलाया गया तो उस ने कहा, ''मैं लोगों के साथ ख़रीदो फ़रोख़्त किया करता तो तंगदस्त को मोहलत देता और दिरहमो दीनार या नक़्दी में नर्मी किया करता था ।'' (مسلم، کتاب المساقاۃ، باب فضل انظار المعسر، رقم ۱۵۶۰، ص۸۴۴)

(664)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और अपने ख़ादिम से कहता कि जब तुम किसी तंगदस्त के पास जाओ तो उस से चश्म पोशी किया करो शायद कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मुआफ़ फ़रमा दे तो जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे मुआफ़ फ़रमा दिया ।''

एक रिवायत में है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक शख़्स जिस ने कभी कोई अच्छा अ़मल न किया था, लोगों को क़र्ज़ दिया करता तो अपने क़ासिद से कहा करता ''क़र्ज़दार जो कुछ आसानी से दे उसे लिया करो और जिस में क़र्ज़दार को दुश्वारी हो उसे छोड़ दिया करो और चश्म पोशी करो शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मुआफ़ फ़रमा दे ।'' जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से फ़रमाया, ''क्या तूने कभी कोई अच्छा अ़मल किया ?'' तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''नहीं, मगर मेरा एक गुलाम था और मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था, जब मैं उसे क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने के लिये भेजता तो उसे कहता जो आसानी से मिले वोह ले लो और जिस में क़र्ज़दार को दुश्वारी हो उसे छोड़ दो और चश्म पोशी करो, शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से चश्म पोशी फ़रमाए ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस से फ़रमाया, ''बेशक मैं ने तुझे मुआफ़ कर दिया ।''

(سنن النسائی، کتاب البیوع، باب حسن المعاملۃ والرفق فی المطالبۃ، ج۷، رقم ۱۵۶۲، ص۸۴۵)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
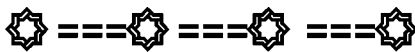
क़र्ज़ देने का सवाब

(665)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किसी मुसल्मान को दो मरतबा क़र्ज़ देता है उसे दोनों मरतबा दिये जाने वाले क़र्ज़ के इ़वज़ इतनी ही रक़म एक मरतबा स-दक़ा करने का सवाब मिलता है।''

(ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب القرض، رقم ۲۴۳۰، ج۳، ص۱۵۳)

एक रिवायत में है कि ''हर क़र्ज़ स-दक़ा है।''

(666)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मे'राज की रात मैं ने जन्नत के दरवाज़े पर लिखा देखा कि स-दक़े का सवाब दस गुना है और क़र्ज़ का अठ्ठारह गुना।''

(ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب القرض، رقم ۲۴۳۱، ج۳، ص۱۵۴)

(667)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''एक शख़्स जन्नत में दाख़िल हुवा तो उस ने जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुवा देखा कि स-दक़े का सवाब दस गुना है और क़र्ज़ का अठ्ठारह गुना।'' (المعجم الکبیر، رقم ۷۹۷۶، ج۸، ص۲۴۹)

(668)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो चांदी (रुपै वग़ैरा) क़र्ज़ दे या दूध का जानवर आ़रियतन दे या किसी को रास्ता बताए उसे एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب العاریۃ، باب ذکر تفضّل اللہ جل وعلا...الخ، رقم ۵۰۷۴، ج۷، ص۲۷۸)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
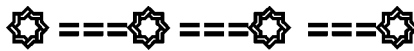
अदा करने की निय्यत से क़र्ज़ लेने का सवाब

(669)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने लोगों से माल लिया और उसे अदा करने का इरादा रखता हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ से अदा फ़रमा देगा और जिस ने लोगों से माल लिया और वोह उसे अदा करने का इरादा नहीं रखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़ाएअ़ कर देगा।''

(بخاری، کتاب الاستقراض، باب من اخذ اموال الناس، رقم ۲۳۸۷، ج۲، ص۱۰۵)

(670)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मुल मुअमिनीन मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا कसरत से क़र्ज़ लिया करती थीं। उन के घर वालों ने उन्हें इस मुआ-मले में मलामत की और उन पर नाराज़ हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने फ़रमाया,''मैं क़र्ज़ लेना हरगिज़ न छोड़ूंगी क्यूं कि मैं ने अपने ख़लील और मुख़्लिस रफ़ीक़ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि, ''जो किसी से क़र्ज़ लेता है और दिल में वोह क़र्ज़ अदा करने का इरादा रखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ से दुन्या ही में क़र्ज़ अदा फ़रमा देगा।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البیوع، باب الدیوف، رقم ۵۰۱۹، ج۷، ص۲۴۹)

(671)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا कसरत से क़र्ज़ लिया करती थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से कहा गया ''आप क़र्ज़ किस लिये लेती हैं ह़ालां कि आप को इस की ज़रूरत नहीं ?'' आप ने फ़रमाया, ''मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो अदाए क़र्ज़ की निय्यत रखता हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस की मदद की जाती है।'' तो मैं उस मदद की त़लबगार हूं।''

एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस की मदद की जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे के लिये रिज़्क़ का सबब पैदा फ़रमा देता है।'' (مسند احمد، رقم ۲۴۴۹۳، ج۹، ص۳۴۶)

(672)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़र्ज़ की अदाएगी तक क़र्ज़ लेने वाले के साथ होता है जब तक वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न करे।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا अपने ख़ाज़िन से फ़रमाया करते कि ''जाओ मेरे लिये क़र्ज़ ले कर आओ क्यूं कि जब से मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह ह़दीस सुनी है मैं पसन्द करता हूं कि मैं इस ह़ाल में रात गुज़ारूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे साथ हो।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب من ادان دینا وھو ینوعا، رقم ۲۴۰۹، ج۳، ص۱۴۳)

(673)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''मेरी उम्मत में से जिस ने क़र्ज़ लिया फिर उस की अदाएगी के लिये कोशिश की फिर उसे अदा करने से पहले ही मर गया तो मैं उस का वली हूं।'' (مسند احمد، رقم ۲۴۵۰۹، ج۹، ص ۳۵۰)

(674)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के गुलाम ह़ज़रते क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने क़र्ज़ लिया और वोह उसे अदा करने का इरादा रखता है बल्कि उसे अदा करने के मुआ़-मले में ह़रीस है फिर वोह उसे अदा किये बिग़ैर मर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि उस के क़र्ज़ ख़्वाह को अपने पसन्दीदा इन्आ़मात के ज़रीए राज़ी कर दे और मरने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा दे और जिस ने क़र्ज़ लिया और वोह उसे अदा करने का इरादा नहीं रखता है फिर वोह उसे अदा किये बिग़ैर मर गया तो उस से पूछा जाएगा, क्या तू येह गुमान करता था कि हम फ़ुलां को तुझ से उस का पूरा ह़क़ ले कर न देंगे ? फिर उस की नेकियों में से कुछ नेकियां ले ली जाएंगी और क़र्ज़ ख़्वाह की नेकियों में क़र्ज़ के बदले के तौ़र पर डाल दी जाएंगी और अगर उस के पास नेकियां न हुईं तो क़र्ज़ ख़्वाह के गुनाह उस के नामए आ'माल में डाल दिये जाएंगे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب البیوع، باب الترہیب من الدین، رقم ۱۲، ج۲، ص ۳۷۲)

(675)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो इस ह़ालत में मर गया कि उस पर एक दीनार या एक दिरहम का क़र्ज़ हो तो वोह क़र्ज़ उस की नेकियों में से वुसूल किया जाएगा क्यूं कि क़ियामत के दिन दिरहमो दीनार नहीं होंगे।'' (ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب التشدید فی الدین، رقم ۲۴۱۴، ج۳، ص ۱۴۵)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़र्ज़दार दो त़रह़ के हैं, पहला वोह जो मर गया लेकिन अदाए क़र्ज़ की निय्यत रखता था तो उस का वली मैं हूं, दूसरा वोह जो मर गया लेकिन क़र्ज़ अदा करने की निय्यत नहीं रखता था तो येह वोही शख़्स है जिस की नेकियां ले ली जाएंगी क्यूं कि उस दिन दिरहमो दीनार नहीं होंगे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب البیوع، باب الترہیب من الدین الخ، رقم ۱۳، ج۲، ص ۳۷۳)

(676)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि ''जिस ने क़र्ज़ लिया और दिल में उसे अदा करने की निय्यत रखता हो फिर वोह मर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मुआ़फ़ फ़रमा देगा और उस के क़र्ज़ ख़्वाह को उस की मरज़ी के मुत़ाबिक़ कुछ दे कर राज़ी कर देगा और जिस ने क़र्ज़

लिया और उस के दिल में उसे अदा करने का इरादा नहीं है फिर वोह मर गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के क़र्ज़ ख़्वाह के लिये उस से तक़ाज़ा करेगा।" (المعجم الكبير، رقم ٧٩٣٧، ج٨، ص٢٤٠)

(677)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़र्ज़दार को अपनी बारगाह में खड़ा कर के पूछेगा, "ऐ इब्ने आदम ! तूने येह क़र्ज़ क्यूं लिया और लोगों के हुक़ूक़ क्यूं ज़ाएअ़ किये ?" तो वोह अ़र्ज़ करेगा, "ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने जब येह माल लिया तो न इसे खाया न ही इस के ज़रीए पिया और न इसे पहना और न ही इसे ज़ाएअ़ किया मगर मेरा माल जल गया या चोरी हो गया या उस की क़ीमत में कमी हो गई।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, "मेरे बन्दे ने सच कहा, मैं इस बात का ह़क़दार हूं कि इस की त़रफ़ से क़र्ज़ अदा करूं।" फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई चीज़ मंगवा कर उस की मीज़ान के एक पलड़े में रख देगा तो उस की नेकियां उस के गुनाहों पर ग़ालिब आ जाएंगी और वोह शख़्स रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ से जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب فی من نوی قضی دینہ واھتم بہ، رقم ٦٦٦٢، ج٤، ص٢٣٨)

(678)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनी इस्राईल के एक शख़्स का तज़्किरा कर के फ़रमाया कि "उस ने बनी इस्राईल के किसी शख़्स से एक हज़ार दीनार बत़ौरे क़र्ज़ मांगे तो उस शख़्स ने मुत़ा-लबा किया, "मेरे पास कोई गवाह लाओ ताकि मैं उन्हें गवाह बना लूं।" तो क़र्ज़दार ने कहा, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की गवाही काफ़ी है।" क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा, "कोई ज़ामिन ले कर आओ।" क़र्ज़दार ने कहा, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत काफ़ी है।" क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा, "तुम सच कहते हो।" फिर उस ने एक मुक़र्ररा मुद्दत तक के लिये उस शख़्स को एक हज़ार दीनार दे दिये।

फिर येह शख़्स समुन्दरी सफ़र पर रवाना हो गया और अपना काम पूरा कर के किसी कश्ती को तलाश करने लगा ताकि उस पर सुवार हो कर मुक़र्ररा मुद्दत पूरी होने तक क़र्ज़ की अदाएगी के लिये उस शख़्स के पास जाए मगर उसे कोई कश्ती न मिली। (बिल आख़िर) उस ने एक लकड़ी ली और उस में सूराख़ कर के एक हज़ार दीनार और क़र्ज़ ख़्वाह के नाम एक ख़त़ उस सूराख़ में डाले और उसे बन्द कर दिया। फिर वोह लकड़ी ले कर समुन्दर के किनारे आया और येह दुआ मांगी, "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि जब मैं ने फ़ुलां शख़्स से एक हज़ार दीनार क़र्ज़ मांगा तो उस ने मुझ से गवाह मांगा था तो

मैं ने कहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की गवाही काफ़ी है तो वोह तेरे गवाह होने पर राज़ी हो गया था फिर उस ने मुझ से ज़ामिन तृलब किया तो मैं ने कहा था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत काफ़ी है तो वोह तेरी ज़मानत पर राज़ी हो गया और तू येह भी जानता है कि मैं ने कश्ती के हुसूल के लिये कोशिश की ताकि येह माल इस के मालिक तक पहुंचा सकूं मगर मैं इस में काम्याब न हो सका, लिहाज़ा ! अब मैं इस अमानत को तेरे सिपुर्द कर रहा हूं।''

येह कह कर उस ने लकड़ी को समुन्दर में फेंक दिया और अपने शहर जाने के लिये कश्ती की तलाश में दोबारा निकल खड़ा हुवा। दूसरी जानिब वोह शख़्स जिस ने उसे क़र्ज़ दिया था, दूसरे किनारे पर आया कि शायद कोई सफ़ीना उस के माल को ले कर आए। अचानक उस ने उसी लकड़ी को देखा जिस में क़र्ज़दार ने माल छुपाया था। उस ने वोह लकड़ी उठा ली ताकि घर में ईंधन के तौर पर इस्ति'माल कर सके। जब उस ने लकड़ी को काटा तो उस में से माल और (उस के नाम लिखी गई) तहरीर बरआमद हुई। इस के बा'द क़र्ज़दार एक हज़ार दीनार ले कर आया और कहने लगा, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तेरा माल वापस करने तेरे पास आने के लिये मुसल्सल कश्ती की तलाश में था मगर मुझे आने के लिये कोई कश्ती न मिल सकी।'' येह सुन कर क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा, ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरी तृरफ़ से वोह माल अदा कर दिया है जो तूने लकड़ी में डाल कर भेजा था।'' येह सुन कर वोह अपने एक हज़ार दीनार ले कर ख़ुशी ख़ुशी लौट गया।'' (بخاری، کتاب الکفالۃ، باب الکفالۃ فی القرض، رقم۲۲۹۱، ج۲، ص۷۳)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

रोज़े का सवाब

रोज़ा रखने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

وَالصّٰٓئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا۝ (پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया,

كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ الْخَالِیَةِ۝ (پ۲۹،الحاقۃ:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

हज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं, ''गुज़रे हुए दिनों'' से मुराद रोज़ों के दिन हैं कि लोग इन में खाना पीना छोड़ देते हैं।''

(679)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक जन्नत में एक दरवाज़ा है जिस का नाम रय्यान है, उस दरवाज़े से सिर्फ़ रोज़ादार दाख़िल होंगे उन के सिवा कोई दाख़िल न हो सकेगा, जब दूसरे लोग उस में दाख़िल होने की कोशिश करेंगे तो येह दरवाज़ा बन्द हो जाएगा और वोह उस में दाख़िल न हो सकेंगे।''

एक रिवायत में है कि ''जब आख़िरी रोज़ादार उस में दाख़िल हो जाएगा तो उस दरवाज़े को बन्द कर दिया जाएगा फिर उन्हें पाकीज़ा शराब पिलाई जाएगी और जिसे (पाकीज़ा) शराब पिलाई जाएगी उसे कभी प्यास न लगेगी।'' (مسلم،کتاب الصیام،باب فضل الصیام،رقم ۱۱۵۲،ص۵۸۱)

(680)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि बन्दे का हर अमल अपने लिये है मगर रोज़ा मेरे लिये है और उस की जज़ा मैं खुद दूंगा और रोज़ा ढाल है लिहाज़ा जब तुम में से कोई रोज़ा रखे तो हरगिज़ फ़ोहूश गोई न करे और न ही शोर मचाए और अगर कोई उसे गाली दे या उस के साथ झगड़ा करे तो उस से कह दे कि मैं

रोज़ादार हूं, उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है ! रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से ज़ियादा पाकीज़ा है, रोज़ादार को दो ख़ुशियां ह़ासिल होती हैं, पहली उस वक़्त जब वोह इफ़्त़ारी करता है और दूसरी उस वक़्त जब वोह अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करेगा तो अपने रोज़े पर ख़ुश होगा।'' (مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، رقم۱۱۵۱، ص۵۸۰)

एक रिवायत में है कि ''इब्ने आदम के हर अ़मल पर नेकियों में से दस से सात सो गुना इज़ाफ़ा किया जाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है मगर रोज़ा मेरे लिये है और उस की जज़ा मैं ख़ुद दूंगा क्यूं कि बन्दा मेरे लिये अपनी ख़्वाहिशात और खाने को छोड़ देता है रोज़ादार के लिये दो ख़ुशियां हैं एक इफ़्त़ारी के वक़्त दूसरी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त और रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है।'' (مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، رقم۱۱۵۱، ص۵۸۰)

जब कि एक रिवायत में है कि बेशक तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''हर नेकी का सवाब दस से सात सो गुना है और रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा दूंगा।'' (फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया), ''रोज़ा जहन्नम से ढाल है और रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी ज़ियादा पाकीज़ा है। अगर तुम में से किसी रोज़ादार के साथ कोई शख़्स जहालत का मुआ़-मला करे तो उसे चाहिये कि वोह उस जाहिल से कह दे कि मैं रोज़ादार हूं।''

एक और रिवायत में है कि ''इब्ने आदम के अ़मल पर दस से सात सो गुना नेकियां हैं मगर रोज़े मेरे लिये हैं और इन की जज़ा मैं ख़ुद ही दूंगा कि मेरा बन्दा मेरे लिये अपने खाने, पीने, लज़्ज़तों और बीवी को छोड़ता है।'' (फिर सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया), ''रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से ज़ियादा पाकीज़ा है और रोज़ादार के लिये दो ख़ुशियां हैं, एक इफ़्त़ारी के वक़्त और दूसरी अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त।'' (المرجع السابق)

(681)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आ'माल की ता'दाद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सात है, उन में से दो अ़मल वाजिब करने वाले हैं, दो अ़मल ऐसे हैं जिन का सवाब एक गुना है और एक अ़मल ऐसा है जिस का सवाब दस गुना है और एक अ़मल ऐसा है जिस का सवाब सात सो गुना है और एक अ़मल ऐसा है जिस का सवाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता, वाजिब करने वाले दो अ़मल येह हैं, पहला वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिले कि इस त़रह़ इख़्लास के साथ उस की इबादत करता हो कि किसी को उस का शरीक न ठहराता हो तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है और दूसरा वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिले कि उस के साथ किसी को शरीक ठहराता हो तो उस के लिये जहन्नम वाजिब हो जाती है और जो बुरा अ़मल करे उस के लिये बुरी जज़ा है और जो नेक अ़मल का इरादा करे फिर उसे न कर सके तो उसे उस का सवाब

दिया जाएगा और जो एक नेकी करे उसे दस नेकियों का सवाब दिया जाएगा और जो अपना माल राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करेगा उस के ख़र्च से सवाब को बढ़ा दिया जाएगा, एक दिरहम का सात सो गुना और एक दीनार का सात सो गुना सवाब दिया जाएगा और रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये है और रोज़ादार के सवाब को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं जानता।" (شعب الایمان، باب فی الصیام، رقم ۳۵۸۹، ج۳، ص ۲۹۸)

(682)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई अ़मल बताइये।" इर्शाद फ़रमाया, "रोज़े रखा करो क्यूं कि इस जैसा अ़मल कोई नहीं।" मैं ने फिर अ़र्ज़ किया, "मुझे कोई अ़मल बताइये।" फ़रमाया, "रोज़े रखा करो क्यूं कि इस जैसा कोई अ़मल नहीं।" मैं ने फिर अ़र्ज़ किया, "मुझे कोई अ़मल बताइये।" फ़रमाया, "रोज़े रखा करो क्यूं कि इस का कोई मिस्ल नहीं।" (نسائی، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، ج۴، ص ۱۲۶)

एक रिवायत में है कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे किसी ऐसे काम का हुक्म दीजिये जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे नफ़्अ़ दे।" फ़रमाया, "रोज़े को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि इस का कोई मिस्ल नहीं।" (نسائی، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، ج۴، ص ۱۲۶)

जब कि एक रिवायत में है कि मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के सबब जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" फ़रमाया, "रोज़े को खुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि इस के मिस्ल कोई अ़मल नहीं।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصوم، باب فضل صوم، رقم ۳۴۱۶، ج۵، ص ۱۷۹)

रावी कहते हैं कि "हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घर दिन के वक़्त मेहमान की आमद के इलावा कभी धुवां न देखा गया।"

(683)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिहाद किया करो खुद कफ़ील हो जाओगे, रोज़े रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे और सफ़र किया करो ग़नी हो जाओगे।"

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فی فضل الصیام، رقم ۵۰۷، ج۳، ص ۴۱۶)

(684)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "हर चीज़ की ज़कात है और जिस्म की ज़कात रोज़ा है और रोज़ा आधा सब्र है।" (ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب فی الصوم زکوۃ الجسد، رقم ۱۷۴۵، جلد۲، ص ۳۴۶)

(685)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन,

रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रोज़ा ढाल है और जहन्नम से बचाव के लिये मज़्बूत क़ल्आ है।'' (مسند احمد، رقم ۹۲۳۶، ج۳،ص۳۶۷)

(686)...... हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबू आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है इसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और हर माह तीन दिन रोज़े रखना बेहतरीन रोज़े हैं।'' (ابن خزیمہ، کتاب الصوم، رقم ۲۱۲۵، ج۳،ص۳۰۱)

(687)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रोज़ा एक ऐसी ढाल है जो बन्दे को जहन्नम से बचाती है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فی فضل صوم، رقم ۵۰۷۷، ج۳،ص۴۱۸)

(688)...... हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ का'ब बिन उ़ज्रह ! जाने वाले दो त़रह़ के होते हैं, एक वोह जो अपनी जान को आज़ाद कराने के लिये जाता है और उसे आज़ाद करा लेता है और दूसरा वोह, जो जाता है तो अपनी जान को हलाकत में डाल देता है।'' फिर फ़रमाया, ''ऐ का'ब बिन उ़ज्रह ! नमाज़ क़ुर्ब का ज़रीआ़ है और रोज़ा ढाल है और स-दक़ा ख़त़ाओं को इस त़रह़ मिटा देता है जैसे चट्टान से बर्फ़ फिसल जाती है।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب السیر، رقم ۴۴۹۷، ج۷،ص۲۴)

(689)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रोज़े और क़ुरआन क़ियामत के दिन बन्दे के लिये शफ़ाअ़त करेंगे, रोज़ा कहेगा, ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने इसे खाने और ख़्वाहिशात पूरी करने से रोके रखा लिहाज़ा मेरी शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा।'' और क़ुरआन कहेगा, ''मैं ने इसे रात में सोने से बाज़ रखा लिहाज़ा इस के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा।'' तो उन दोनों की शफ़ाअ़त क़बूल कर ली जाएगी।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فی فضل الصوم، رقم ۵۰۸۱، ج۳،ص۴۱۹)

(690)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर कोई शख़्स एक दिन नफ़्ली रोज़ा रखे फिर उसे ज़मीन भर सोना भी

दे दिया जाए तब भी उस का सवाब क़ियामत के दिन ही पूरा होगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فی فضل الصوم، رقم ۵۰۹۲، ج۳، ص۴۲۳)

(691)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दिन रोज़ा रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देता है जितना फ़ासिला एक कव्वा बचपन से बूढ़ा हो कर मरने तक मुसल्सल उड़ते हुए तै कर सकता है।''

(مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۱۰۸۱۰، ج۳، ص۶۱۹)

(692)...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने से टेक लगाई और इर्शाद फ़रमाया, ''जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा और इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहते हुए किसी दिन रोज़ा रखे फिर इसी पर उस का ख़ातिमा हो जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये स-दक़ा करे और इसी पर उस का ख़ातिमा हो तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।''

(مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۲۳۳۷۴، ج۹، ص۹۰)

(693)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक समुन्दरी जिहाद में भेजा। एक अंधेरी रात में जब कश्ती के बादबान उठा दिये गए तो हातिफ़े ग़ैब से एक आवाज़ आई, ''ऐ सफ़ीने वालो! रुको मैं तुम्हें बताऊं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर क्या लिया है?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जवाब दिया, ''अगर तुम बता सकते हो तो ज़रूर बताओ।'' उस ने कहा, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया है कि जो शदीद गर्मी के दिन अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये प्यासा रखेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सख़्त प्यास वाले दिन (या'नी क़ियामत) में सैराब करेगा।''

इमाम अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह अल मा'रूफ़ इब्ने अबिद्दुन्या ''किताबुल जूअ़'' में फ़रमाते हैं कि उस दिन के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ास ऐसे शदीद गर्मी वाले दिन भी रोज़ा रखा करते कि इतनी गरमी होती कि इन्सान अपने फ़ाज़िल कपड़े भी गरमी की वजह से उतारने पर मजबूर हो जाए।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی الصوم مطلقا، رقم ۱۸، ج۲، ص۵۱)

===   ===   ===

र-मज़ान में रोज़ा रखने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَۙ (پ۲،البقرہ:۱۸۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़ गारी मिले।

(694)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो ईमान और निय्यते सवाब के साथ र-मज़ान के रोज़े रखेगा उस के पिछले गुनाह मिटा दिये जाएंगे।''

(صحیح مسلم،کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا،باب الترغیب فی قیام رمضان الخ،رقم ۷۶۰،ص ۳۸۲)

(695)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने र-मज़ान के रोज़े रखे और उस के हुक़ूक़ को पहचाना और उन की हिफ़ाज़त की तो उस के पिछले गुनाह मिटा दिये जाएंगे।'' (الترغیب والترہیب،کتاب الصیام،باب الترغیب فی صیام رمضان احتسابا،رقم ۴،ج ۲،ص ۵۵)

(696)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''पांचों नमाज़ें और जुमुआ अगले जुमुआ तक और र-मज़ान अगले र-मज़ान तक के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है जब कि बन्दा कबीरा गुनाहों का इरतिकाब न करे।'' (صحیح مسلم،کتاب الطھارۃ،باب الصلوات الخمس الخ،رقم ۲۳۳،ص ۱۴۴)

(697)...... हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन मुर्रह जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि क़ुज़ाआ क़बीले के एक शख़्स ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ''मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और पांचों नमाज़ें पढ़ता हूं और र-मज़ान के रोज़े रखता हूं और इस में क़ियाम करता हूं और ज़कात अदा करता हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो येह काम करते हुए मरेगा वोह सिद्दीक़ीन और शु-हदा के साथ होगा।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان ،کتاب الصیام،باب فضل الصیام رقم ۳۴۲۹،ج ۵،ص ۱۸۴)

गुज़श्ता सफ़्हात में हज़रते सय्यिदुना उमैर लैसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत गुज़र चुकी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिज्जतुल वदाअ के मौक़ए पर इर्शाद फ़रमाया कि ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दोस्त वोही हैं जो नमाज़ पढ़ें, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़र्ज़ कर्दा पांचों नमाज़ें क़ाइम करें, हुसूले सवाब के लिये र-मज़ान के रोज़े रखें और ज़कात अदा करें।''

(698)...... हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मिम्बर के क़रीब आ जाओ।'' चुनान्चे हम वहां हाज़िर हो गए। जब आप ने पहले ज़ीने पर क़दम रखा तो फ़रमाया ''आमीन'' और जब दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो फ़रमाया ''आमीन'' और जब तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो फ़रमाया ''आमीन।'' जब आप ने मिम्बर से नुज़ूल फ़रमाया तो हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आज हम ने आप से वोह बात सुनी है जो पहले कभी न सुनी थी।'' इर्शाद फ़रमाया, ''जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام मेरे सामने हाज़िर हुए और कहा कि जिस ने र-मज़ान का महीना पाया फिर उस की मग्फ़िरत न हुई वोह रहमत से महरूम हो, तो मैं ने आमीन कहा, जब मैं ने दूसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा जिस के सामने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र हो और वोह दुरूदे पाक न पढ़े वोह रहमत से महरूम हो तो मैं ने आमीन कहा फिर जब मैं ने तीसरे ज़ीने पर क़दम रखा तो जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा जिस के पास उस के वालिदैन या उन में से एक बुढ़ापे को पहुंचा और उन्हों ने उसे जन्नत में दाखि़ल न कराया तो वोह रहमत से महरूम है, तो मैं ने कहा, ''आमीन।''

(مستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب لعن اللہ العاق لوالدیہ الخ، رقم ۷۳۳۸، ج۵، ص۲۱۲)

(699)...... इसी रिवायत को इब्ने खु़ज़ैमा और इब्ने हब्बान رَحِمَهُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی ने हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया है।

(700)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारे पास ब-र-कतों वाला महीना माहे र-मज़ान आ गया जिस के रोज़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम पर फ़र्ज़ किये हैं, इस महीने में आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और इस महीने में सरकश शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है, इस महीने में एक ऐसी रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है जो उस रात की भलाई से महरूम रहा वोह हर भलाई से महरूम रहा।''

(سنن نسائی، کتاب الصیام، باب فضل شہر رمضان، جلد۴، ص۱۲۹)

(701)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब र-मज़ान आया तो शहन्शाहे खु़श खि़साल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक येह महीना तुम्हारे पास आ गया है, इस में एक रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है जो उस की खै़र से महरूम रहा वोह हर भलाई से महरूम रहा और उस की भलाई से बद नसीब ही महरूम रहता है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب ماجاء فی فضل شہر رمضان، رقم ۱۶۴۴، ج۲، ص۲۹۸)

(702)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''येह र-मज़ान

तुम्हारे पास आ गया है, इस में जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को क़ैद कर दिया जाता है, महरूम है वोह शख़्स जिस ने र-मज़ान को पाया और उस की मग़्फ़िरत न हुई कि जब उस की र-मज़ान में मग़्फ़िरत न हुई तो फिर कब होगी ?''

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام باب فی شھور البرکۃ وفضل شھر رمضان، رقم ۴۷۸۸، ج۳،ص۳۴۵)

(703)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने र-मज़ान की आमद के बा'द एक दिन फ़रमाया, ''तुम्हारे पास ब-र-कतों वाला महीना र-मज़ान आ गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस महीने में तुम्हें ढांप देता है फिर रह़मत नाज़िल फ़रमाता है और गुनाहों को मिटा देता है और इस महीने में दुआ़ क़बूल फ़रमाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी नेकियों की त़रफ़ देखता है और तुम पर फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र फ़रमाता है, लिहाज़ा ! इस महीने में अपनी जानिब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को भलाई दिखाओ क्यूं कि बद बख़्त वोही है जो इस महीने में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से महरूम रहा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام باب فی شھور البرکۃ وفضل شھر رمضان، رقم ۴۷۸۳، ج۳،ص۳۴۴)

(704)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब र-मज़ान की पहली रात आती है तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और आख़िरी रात तक उन में से कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और जो बन्दा इस महीने की किसी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर सज्दे के इ़वज़ पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये जन्नत में सुर्ख़ याक़ूत का एक घर बना दिया जाता है जिस के साठ हज़ार दरवाज़े होते हैं और हर दरवाज़े पर सोने की मुलम्मअ़ कारी होगी और उस पर सुर्ख़ याक़ूत जड़े होंगे, जब बन्दा र-मज़ान के पहले दिन का रोज़ा रखता है तो उस के पिछले र-मज़ान के पहले दिन के रोज़े तक के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और उस के लिये रोज़ाना सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते फ़ज्र की नमाज़ से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक इस्तिग़फ़ार करते हैं और उसे र-मज़ान के हर दिन और हर रात में सज्दा करने पर जन्नत में एक ऐसा दरख़्त अ़त़ा किया जाता है जिस के साए में कोई सुवार पांच सो साल तक चलता रहे।''

(شعب الایمان، فضائل شھر رمضان، باب فی الصیام، رقم ۳۶۳۵، ج۳،ص۳۱۴)

(705)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह महीना तुम्हारे क़रीब आ गया, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुसल्मानों पर कोई महीना ऐसा नहीं गुज़रा जो इन के लिये इस महीने से बेहतर हो और मुनाफ़िक़ीन पर कोई ऐसा महीना नहीं गुज़रा जो इन के लिये इस महीने से बदतर हो, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस महीने का सवाब और नवाफ़िल इस की आमद से पहले ही लिख देता है और इस महीने का गुनाह और महरूमी इस

महीने की आमद से पहले ही लिख देता है और इसी वजह से मोमिन इस महीने में इबादत में इज़ाफ़ा कर देता है और मुनाफ़िक़ इस महीने में मुअमिनीन को ग़फ़्लत में डालने और इन के राज़ ज़ाहिर करने में इज़ाफ़ा कर देता है।"

(ابن خزیمہ، کتاب الصیام، باب فی فضل شہر رمضان، رقم ۱۸۸۴، ج ۳، ص ۱۸۸)

(706)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब र-मज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को बेड़ियों में जकड़ लिया जाता है।"

एक रिवायत में है कि "रह़मत (या'नी जन्नत) के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन को ज़न्जीरों में जकड़ दिया जाता है।"

(مسلم، کتاب الصیام، باب فضل شہر رمضان، رقم ۱۰۷۹، ص ۵۴۳)

(707)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब र-मज़ान की पहली रात आती है तो शयातीन और शरीर जिन्नात को बेड़ियों में जकड़ दिया जाता है और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर उन में से कोई दरवाज़ा नहीं खोला जाता और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं फिर कोई दरवाज़ा बन्द नहीं किया जाता और मुनादी निदा करता है, "ऐ भलाई के त़लब गार! मु-तवज्जेह हो जा और ऐ शर के त़लब गार! शर से बाज़ आ, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जहन्नम से बे शुमार लोगों को आज़ादी अ़ता फ़रमाता है और ऐसा हर रात में होता है।"

(ابن خزیمہ، کتاب الصیام، رقم ۱۸۸۳، ج ۳، ص ۱۸۸)

(708)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब र-मज़ान की पहली रात आती है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और पूरा महीना उन में से एक दरवाज़ा भी बन्द नहीं किया जाता और जहन्नम के तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और पूरा महीना उन में से एक दरवाज़ा भी नहीं खोला जाता और शरीर जिन्नात को बांध दिया जाता है और रोज़ाना रात को आस्मान से एक मुनादी तुलूए फ़ज्र तक निदा करता है, "ऐ ख़ैर के त़लब गार! मु-तवज्जेह हो जा और ख़ुश ख़बरी ले ले और ऐ शर के त़लब गार! शर से बाज़ आ और अपनी आंखें खोल, है कोई मग़्फ़िरत चाहने वाला ताकि उस की मग़्फ़िरत की जाए, है कोई तौबा करने वाला ताकि हम उस की तौबा क़बूल फ़रमाएं, है कोई दुआ़ मांगने वाला ताकि हम उस की दुआ़ क़बूल फ़रमाएं, है कोई हम से मांगने वाला ताकि हम उसे उस की मुराद अ़ता फ़रमाएं, और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ र-मज़ान की हर रात में इफ़्त़ारी के वक़्त साठ हज़ार अफ़्राद को जहन्नम से नजात अ़ता फ़रमाता है और जब ईदुल फ़ित्र का दिन आता है तो जितने अफ़्राद को पूरे र-मज़ान में जहन्नम से आज़ाद किया गया उन की ता'दाद के बराबर अफ़्राद को जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाता है।"

(شعب الایمان، باب فی الصیام، رقم ۳۶۰۶، ج ۳، ص ۳۰۴)

(709)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** तआला रोज़ाना इफ़्तारी के वक़्त एक ता'दाद को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है।"

(المعجم الکبیر، رقم ۸۰۸۹، ج۸، ص۲۸۴)

(710)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ र-मज़ान के हर दिन और हर रात में एक ता'दाद को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और र-मज़ान के हर दिन और रात में मुसल्मान की दुआ क़बूल की जाती हैं।" (الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صیام رمضان الخ، رقم ۲۷، ج۲، ص۶۳)

(711)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत को र-मज़ान में पांच ऐसी चीज़ें अ़ता की गईं जो मुझ से पहले किसी नबी को अ़ता नहीं की गईं, पहली : येह कि जब र-मज़ान की पहली रात आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाता है और जिस की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए उसे कभी अ़ज़ाब नहीं देगा, दूसरी : येह कि शाम के वक़्त उन के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से भी ज़ियादा पाकीज़ा होती है, तीसरी : येह कि मलाएका हर दिन और रात में उन के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं, चौथी : येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी जन्नत को हुक्म देता है कि तय्यार हो जा और मेरे बन्दों के लिये संवर जा, क़रीब है कि वोह दुन्या की थकन मिटाने के लिये मेरे घर और मेरी करीमी के साए में आराम करें, पांचवीं : येह कि जब र-मज़ान की आख़िरी रात होती है तो उन सब की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।" किसी ने अ़र्ज़ किया, "क्या आख़िरी रात से मुराद लय-लतुल क़द्र है ?" फ़रमाया, "नहीं ! क्या तुम नहीं जानते कि मज़दूर जब काम मुकम्मल कर के फ़ारिग़ हो जाता है तो उसे पूरा बदला दिया जाता है।"

(شعب الایمان، باب الصیام، فصل فضائل شہر رمضان، رقم ۳۶۰۳، ج۳، ص۳۰۳)

(712)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत को र-मज़ान में पांच ऐसी ख़स्लतें अ़ता की गई हैं जो इन से पहले किसी उम्मत को अ़ता नहीं की गईं, रोज़ेदार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मुश्क की ख़ुश्बू से ज़ियादा पाकीज़ा है और उन के इफ़्त़ार करने तक मछलियां उन के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोज़ाना अपनी जन्नत को सजाता है और फ़रमाता है कि "अन्क़रीब मेरे नेक बन्दों से तक्लीफ़ उठा ली जाएगी और वोह तेरी त़रफ़ आएंगे।" और इस में सरकश शयात़ीन को क़ैद कर दिया जाता है और वोह र-मज़ान में इस काम के लिये हरगिज़ कोई राह नहीं पाते जिस में वोह र-मज़ान के इलावा मसरूफ़ होते थे और र-मज़ान की आख़िरी रात में सारी उम्मत की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।" अ़र्ज़ किया गया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह आख़िरी रात शबे क़द्र है ?" फ़रमाया, "नहीं, मज़दूर को पूरी मज़दूरी उसी वक़्त दी जाती है जब वोह अपना काम पूरा कर लेता है।" (مسند احمد، رقم ۷۹۲۲، ج۳، ص۱۴۴)

(713)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने शा'बान के आख़िरी दिन हमें ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया, ''ऐ लोगो ! एक अ़-ज़्-मतो ब-र-कत वाला महीना तुम्हारे पास आ गया है, इस में एक रात ऐसी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है, इस के रोज़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़र्ज़ फ़रमाए हैं, इस की रात में क़ियाम करना नफ़्ल है, जो इस में कोई नेकी का काम करेगा गोया उस ने र-मज़ान के इ़लावा किसी और महीने में कोई फ़र्ज़ अदा किया और जो इस महीने में फ़र्ज़ अदा करेगा गोया उस ने र-मज़ान के इ़लावा किसी और महीने में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये, येह सब्र का महीना है और सब्र का सवाब जन्नत है, येह रह़्म का महीना है, येह ऐसा महीना है जिस में मोमिन के रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है, जिस ने रोज़ादार को रोज़ा इफ़्त़ार करवाया उस के गुनाहों की मग़्फ़िरत हो जाती है और उसे जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाता है और उसे रोज़ेदार का सवाब दिया जाता है और रोज़ेदार के सवाब में भी कोई कमी नहीं की जाती।''

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक रोज़ेदार को इफ़्त़ार कराने की त़ाक़त नहीं रखता।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह सवाब तो उस शख़्स को भी अ़त़ा फ़रमाएगा जो किसी रोज़ेदार को एक खजूर या एक घूंट पानी या दूध की लस्सी के ज़रीए इफ़्त़ार कराएगा।'' फिर फ़रमाया, ''इस महीने का पहला अ़-शरा रह़मत, दूसरा मग़्फ़िरत और तीसरा जहन्नम से आज़ादी का है, जो इस महीने में अपने गुलामों के काम में तख़्फ़ीफ़ करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा और उसे जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा, इस महीने में चार काम कसरत से किया करो, इन में से दो ख़स्लतें तो वोह हैं जिन के ज़रीए तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर सकते हो और दो ख़स्लतें वोह हैं जिन से तुम बे नियाज़ नहीं हो सकते, वोह दो ख़स्लतें जिन के ज़रीए तुम अपने रब عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर सकते हो, वोह येह हैं (1) इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़लावा कोई मा'बूद नहीं (2) और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार करना और वोह दो ख़स्लतें जिन से तुम बे नियाज़ नहीं हो सकते, वोह येह हैं (1) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का सुवाल करना और (2) जहन्नम से पनाह त़लब करना, और जो किसी रोज़ादार को पानी पिलाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मेरे ह़ौज़ से ऐसा घूंट पिलाएगा जिस के बाद उसे प्यास नहीं लगेगी यहां तक कि वोह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा।''

(ابن خزیمہ، کتاب الصیام، باب فضائل شھر رمضان، رقم ۱۸۸۷، ج ۳، ص ۱۹۱)

(714)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक दिन र-मज़ान का चांद नज़र आने के बा'द शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''अगर बन्दे जान लें कि र-मज़ान में क्या है तो मेरी उम्मत ज़रूर येह तमन्ना करती कि पूरा साल र-मज़ान हो।'' बनू ख़ुज़ाआ के एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या नबिय्यल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें कुछ बताइये।'' इर्शाद फ़रमाया,

''बेशक साल की इब्तिदा से ले कर आखि़र तक जन्नत को र-मज़ान के लिये सजाया जाता है, जब र-मज़ान का पहला दिन आता है तो अ़र्श के नीचे से एक हवा चलती है और जन्नत के दरख़्तों के पत्ते हिलना शुरूअ़ हो जाते हैं तो हूरे ईन उन की त़रफ़ देख कर अ़र्ज़ करती हैं , ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! हमारे लिये इस महीने में अपने बन्दों में से कुछ शोहर बना दे जिन से हमारी आंखें ठन्डी हों और उन की आंखें हम से ठन्डी हों।'' फिर फ़रमाया, ''जो बन्दा र-मज़ान के एक दिन का रोज़ा रखता है मोतियों के एक ख़ैमे में उस का निकाह़ हूरे ईन में से एक हूर के साथ कर दिया जाता है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِی الْخِیَامِ ۝ (پ۲۷،الرحمٰن:۷۲) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हूरें हैं ख़ैमों में पर्दा नशीन।

उन में से हर हूर पर सत्तर हुल्ले होते हैं जिन में हर एक का रंग दूसरे से मुख़्तलिफ़ होता है और उन्हें सत्तर रंगों की ख़ुश्बू अ़ता की जाती है और हर ख़ुश्बू का रंग दूसरी से मुख़्तलिफ़ होता है और उन में से हर औ़रत के साथ सत्तर हज़ार कनीज़ें कामकाज के लिये होती हैं और उन के साथ सत्तर हज़ार ग़िल्मान (या'नी ग़ुलाम) होते हैं और हर ग़िल्मान के पास सोने का एक बरतन होता है जिन में एक क़िस्म का खाना होता है जिस के हर लुक़्मे का ज़ाएक़ा दूसरे से जुदा होता है और उन में से हर औ़रत के लिये सुर्ख़ याक़ूत के सत्तर तख़्त होते हैं और हर तख़्त पर सत्तर क़ालीन होते हैं जिन का अन्दरूनी हि़स्सा इस्तबरक़ (या'नी सब्ज़ रेशम) का होता है और हर क़ालीन पर सत्तर तक्ये होते हैं और उन के शोहर को इतने ही मोतियों से मुज़य्यन सुर्ख़ याक़ूत के तख़्त अ़ता किये जाते हैं और सोने के दो कंगन पहनाए जाते हैं और येह फ़ज़ीलत उसे र-मज़ान का हर रोज़ा रखने पर अ़ता की जाती है जब कि दीगर नेकियों का सवाब इस के इ़लावा है।''

(ابن خزیمہ،کتاب الصیام،باب ذکر تزیین الجنۃ شہر رمضان،رقم۱۸۸۶،ج۳،ص۱۹۰)

(715)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक जन्नत को एक साल की इब्तिदा से दूसरे साल तक र-मज़ान की आमद के लिये ''बुख़ूर'' की धूनी दी जाती है और सजाया जाता है फिर जब र-मज़ान की पहली रात आती है तो अ़र्श के नीचे से एक हवा चलती है जिसे ''मुसीरह'' कहा जाता है तो जन्नत के पत्ते और दरवाज़ों के पट हिलने लगते हैं और उस से ऐसी दिलकश आवाज़ पैदा होती है कि उस जैसी आवाज़ किसी ने न सुनी होगी तो हूरे ईन बाहर निकलती हैं और जन्नत की बालकूनियों पर खड़ी हो कर निदा करती हैं, ''कोई है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पुकारने वाला ताकि वोह उस की शादी कराए ?'' फिर वोह पूछती हैं, ''ऐ रिज़वाने जन्नत ! येह कौन सी रात है ?'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना रिज़वान عَلَیْہِ السَّلَام उन की निदा पर लब्बैक कहते हुए जवाब देते हैं, ''येह र-मज़ान की पहली रात है, उम्मते मुह़म्मदी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रोज़ादारों के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये गए हैं।''

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, "ऐ रिज़्वान ! जन्नत के दरवाज़े खोल दो, ऐ मालिक عَلَيْهِ السَّلَام ! जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दो, ऐ जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ! ज़मीन पर जाओ और सरकश शयातीन को ज़न्जीरों से बांध कर समुन्दर में डाल दो ताकि वोह मेरे ह़बीब मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के रोज़ों में फ़साद न डालें। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ र-मज़ान की हर रात में एक मुनादी को तीन मरतबा येह निदा करने का हुक्म इर्शाद फ़रमाता है, "कोई है मांगने वाला जिसे मैं उस की मुराद अ़त़ा करूं, कोई है तौबा करने वाला जिस की तौबा क़बूल करूं, कोई है मग़्फ़िरत चाहने वाला जिसे मैं बख़्श दूं, कौन है जो ऐसे ग़नी को क़र्ज़ दे जो मोह़ताज नहीं और ऐसा अ़त़ा फ़रमाने वाला कि ज़र्रा भर कमी न करे......

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ र-मज़ान के हर दिन में इफ़्त़ारी के वक़्त दस लाख ऐसे बन्दों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी होती है फिर जब र-मज़ान का आख़िरी दिन आता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ र-मज़ान के पहले दिन से आख़िरी दिन तक आज़ाद किये गए बन्दों के बराबर लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और जब शबे क़द्र आती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म देता है तो वोह मलाएका की एक जमाअ़त के साथ ज़मीन पर उतरते हैं और उन के साथ एक सब्ज़ झन्डा होता है जिसे वोह का'बे की छत पे गाड़ देते हैं, जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के सो पर हैं उन में से दो पर ऐसे हैं जिन्हें वोह सिर्फ़ उसी रात में फैलाते हैं और वोह मशरिक़ो मग़रिब को ढांप लेते हैं, जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام फ़िरिश्तों को इस रात में त़ुलूए फ़ज्र तक हर खड़े और बैठे हुए और नमाज़ पढ़ने वाले और ज़िक्र करने वाले को सलाम करने और उन के साथ मुसा-फ़ह़ा करने और उन की दुआ़ओं पर आमीन कहने की तरग़ीब देते हैं।

जब फ़ज्र त़ुलूअ़ हो जाती है तो जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام निदा फ़रमाते हैं, "ऐ फ़िरिश्तो ! वापस चलो, वापस चलो।" तो वोह अ़र्ज़ करते हैं, "ऐ जिब्राईल ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मते अह़मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुअमिनीन की ह़ाजतों के बारे में क्या फ़ैसला किया ?" तो जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام कहते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस रात में उन पर नज़रे रह़मत फ़रमाई और चार शख़्सों के सिवा सब की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।" रावी कहते हैं कि हम ने अ़र्ज़ किया "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह चार शख़्स कौन हैं ?" फ़रमाया, "शराब का आ़दी, वालिदैन का ना फ़रमान, क़त़ए रेह़मी करने वाला और मुशाह़िन।" हम ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुशाह़िन कौन है ?" फ़रमाया : "अपने भाई से बुग़्ज़ रखने वाला।"

फिर ई़दुल फ़ित्र की रात आ जाती है जिसे लय-लतुल जाइज़ा (या'नी इन्आ़म की रात) कहा जाता है और जब ई़दुल फ़ित्र का दिन आता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाएका को हर शहर में भेजता है तो वोह ज़मीन पर उतर कर रास्तों के किनारों पर खड़े हो कर निदा करते हैं और उन की आवाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

मख़्लूक़ में से जिन्नो इन्स के इलावा सब सुनते हैं, वोह कहते हैं कि ''ऐ उम्मते मुहम्मदिय्यह ! रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निकलो जो बड़े गुनाहों को मुआफ़ फ़रमाने वाला है।'' जब वोह ईदगाह की त़रफ़ निकलते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाएका से फ़रमाता है कि ''मज़दूर जब अपना काम पूरा कर ले तो उस की जज़ा क्या है ?'' मलाएका अ़र्ज़ करते हैं, ''ऐ हमारे मा'बूद और हमारे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! उस की जज़ा येह है कि तू उसे पूरी उजरत अ़ता फ़रमाए।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपनी रिज़ा और मग़्फ़िरत को इन के र-मज़ान में रोज़े रखने और क़ियाम करने का सवाब बना दिया।'' फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है, ''ऐ मेरे बन्दो ! मुझ से मांगो, मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! तुम इकठ्ठे हो कर अपनी आख़िरत के लिये मुझ से जो कुछ भी मांगोगे मैं तुम्हें ज़रूर अ़ता फ़रमाऊंगा और अपनी दुन्या के लिये जो कुछ मांगोगे तो उस में से जो तुम्हारे लिये बेहतर होगा वोह तुम्हें अ़ता फ़रमाऊंगा और मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तुम्हारे ऐ़बों पर पर्दा डालूंगा, मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तुम्हें ह़क़दारों के सामने हरगिज़ रुस्वा और ज़लील नहीं करूंगा, मग़्फ़िरत याफ़्ता लौट जाओ तुम ने मुझे राज़ी कर लिया और मैं तुम से राज़ी हो गया।'' फिर फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस उम्मत के लिये उन के र-मज़ान के बा'द इफ़्त़ार करने पर की जाने वाली अ़ता पर ख़ुशियां मनाते हैं।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صیام رمضان احتسابا، رقم ۲۳، ج۲، ص۶۰ بتغیر قلیل)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
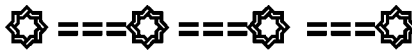
र-मज़ान की रातों में त़-लबे सवाब की निय्यत से क़ियाम करने वाले का सवाब

(716)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को हुक्म देने की बजाए र-मज़ान की रातों में क़ियाम करने की तरग़ीब दिलाते हुए फ़रमाया करते कि ''जो र-मज़ान में ईमान और निय्यते सवाब के साथ क़ियाम करेगा उस के पिछले तमाम गुनाह मिटा दिये जाएंगे।''

(صحیح البخاری، کتاب صلاۃ التراویح، رقم ۲۰۰۸،۲۰۰۹، ج۱، ص ۶۵۸)

(717)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने र-मज़ान को दूसरे महीनों पर फ़ज़ीलत देते हुए इर्शाद फ़रमाया, ''जो र-मज़ान में ईमान और निय्यते सवाब के साथ क़ियाम करेगा (या'नी इ़बादत करेगा) गुनाहों से ऐसे निकल जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने र-मज़ान के रोज़े फ़र्ज़ किये हैं और मैं ने इस में क़ियाम करने को तुम्हारे लिये सुन्नत बनाया और जिस ने र-मज़ान में ईमान और निय्यते सवाब के साथ क़ियाम किया तो गुनाहों से ऐसे निकल जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।'' (سنن نسائی، کتاب الصیام، ج۴، ص ۱۵۸)

गुज़श्ता सफ़ह़ात में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की रिवायत गुज़र चुकी है, ''जो बन्दए मोमिन र-मज़ान की किसी रात में नमाज़ पढ़ता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर सज्दे के इ़वज़ उस के लिये पन्दरह सो नेकियां लिखता है और उस के लिये सुर्ख़ याक़ूत का एक मह़ल बनाता है जिस के साठ हज़ार दरवाज़े होते हैं और हर दरवाज़े पर सोने की मुलम्मअ़ कारी होगी और उस पर सुर्ख़ याक़ूत जड़े होंगे।''

✡ ===✡ ===✡ ===✡

शबे क़द्र में क़ियाम करने वाले का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है,

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِیْنَ 0

(پ۲۵،الدخان:۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक हम ने इसे ब-र-कत वाली रात में उतारा बेशक हम डर सुनाने वाले हैं।

एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया,

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ 0 وَمَآ اَدْرٰكَ مَا لَیْلَةُ الْقَدْرِ 0 لَیْلَةُ الْقَدْرِ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ 0 تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِیْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ سَلٰمٌ 0 هِیَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ 0

(پ۳۰،القدر:۱،۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना शबे क़द्र शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर इस में फ़िरिश्ते और जिब्रईल उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये वोह सलामती है सुब्ह चमक्ने तक।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(718)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने शबे क़द्र में ईमान और निय्यते सवाब के साथ क़ियाम किया उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।'' (صحیح البخاری،کتاب فضل لیلۃ القدر،باب فضل لیلۃ القدر،رقم ۲۰۱۴،ج۱،ص۶۶۰)

एक और रिवायत में है, ''उस के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।''

(الترغیب والترہیب،کتاب الصوم،رقم ۲،ج۲،ص۵۴)

(719)...... हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें शबे क़द्र के बारे में ख़बर देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ''येह र-मज़ान के आख़िरी अ-शरे में इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं, उन्तीसवीं या र-मज़ान की आख़िरी रात है, जो इस में सवाब की निय्यत के साथ क़ियाम करेगा तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।''

(مسند احمد،رقم ۲۲۸۰۵،ج۸،ص۴۰۸)
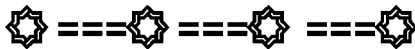
स-ह़री करने का सवाब

(720)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''स-ह़री किया करो क्यूं कि स-ह़री में ब-र-कत है।'' (صحیح البخاری،کتاب الصوم،باب برکۃ السحور،رقم ۱۹۲۳،ج۱،ص۶۳۳)

(721)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते स-ह़री करने वालों पर ब-र-कत नाज़िल करते हैं।'' (مجمع الزوائد،رقم ۴۸۴۲،ج۳،ص۳۵۹)

(722)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''स-ह़री से दिन के रोज़ों पर मदद ह़ासिल करो और दिन के क़ैलूला (या'नी आराम) से रात के क़ियाम पर मदद ह़ासिल करो।'' (ابن خزیمہ،کتاب الصیام،باب الامر بالاستعانۃ علی الصوم بالسحور،رقم ۱۹۳۹،ج۳،ص۲۱۴)

(723)...... एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप स-ह़री तनावुल फ़रमा रहे थे। आप ने इर्शाद फ़रमाया कि ''बेशक येह ब-र-कत है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें अ़त़ा फ़रमाई है लिहाज़ा! इसे न छोड़ा करो।'' (نسائی،کتاب الصوم،باب فضل السحور،ج۴،ص۱۴۵)

(724)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''स-ह़री सारी की सारी ब-र-कत है लिहाज़ा! इसे न छोड़ा करो अगर्चे तुम में से कोई पानी का एक घूंट ही पी लिया करे क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते स-ह़री करने वालों पर रह़मत नाज़िल करते हैं।'' (مسند احمد،رقم ۱۱۰۸۶،ج۴،ص۲۶)

(725)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे र-मज़ान में स-ह़री करने के लिये बुलाया और इर्शाद फ़रमाया, ''मुबारक नाश्ते की त़रफ़ आओ।''

(ابن خزیمہ،کتاب الصیام،باب ذکر اللیل،رقم ۱۹۳۸،ج۳،ص۲۱۴)

(726)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ब-र-कत तीन चीज़ों में है जमाअ़त, सरीद और स-ह़री में।'' (الترغیب والترہیب،کتاب الصوم،رقم ۳،ج۲،ص۸۹)

(727)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश खिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीन शख़्स ऐसे हैं अगर अल्लाह तआला ने चाहा तो उन पर खाने का हिसाब नहीं होगा जब कि खाना हलाल हो, रोज़ादार स-हरी करने वाला और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाला।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی السحور، رقم ۹، ج۲، ص۹۰)

(728)...... हज़रते सय्यिदुना साइब बिन यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिको अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''खजूर बेहतरीन स-हरी है।'' और फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ स-हरी करने वालों पर रहम फ़रमाता है।''

(طبرانی کبیر، رقم ۶۶۸۹، ج۷، ص۱۵۹)

✡ === ✡ === ✡ === ✡
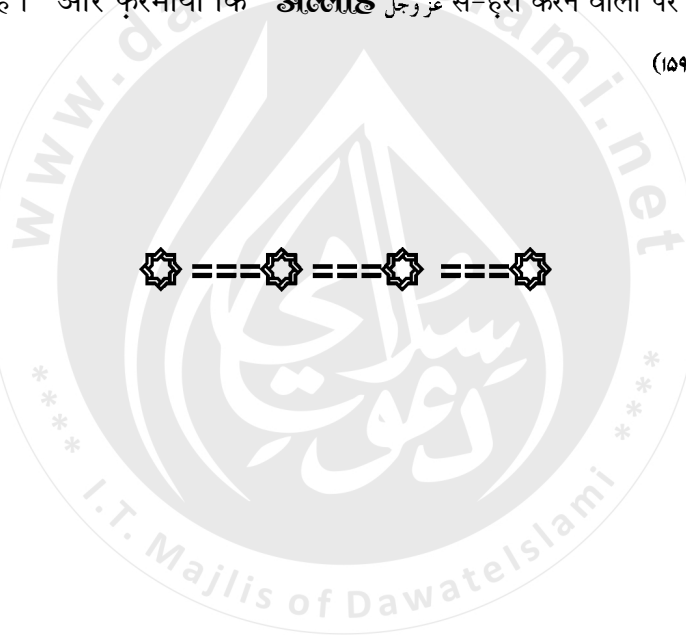
इफ़्तार में जल्दी करने का सवाब

(729)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि बेशक मुझे अपने बन्दों में से इफ़्त़ारी में जल्दी करने वाले पसन्द हैं।''

(ابن خزیمہ، جماع ابواب وقت الافطار باب ذکر حب اللہ عزوجل المعجلین للافطار، رقم ۲۰۶۲، ج۳، ص۲۷۶)

(730)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरी उम्मत उस वक़्त तक मेरी सुन्नत पर क़ाइम रहेगी जब तक इफ़्त़ारी करने के लिये सितारों के निकलने का इन्तिज़ार न करे।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الصوم، باب الافطار وتعجیلہ، رقم ۳۵۰۱، ج۵، ص۲۰۹)

(731)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तक लोग इफ़्त़ारी में जल्दी करते रहेंगे, ख़ैर पर क़ाइम रहेंगे।''

(صحیح البخاری، کتاب الصیام، باب تعجیل الافطار، رقم ۱۹۵۷، ج۱، ص۶۴۵)

(732)...... ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीन काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है, इफ़्त़ारी में जल्दी करना, स-ह़री में ताख़ीर करना और नमाज़ में एक हाथ को दूसरे हाथ पर रखना।''

(المعجم الکبیر، رقم ۶۷۶، ج۲۲، ص۲۶۳)

=== === ===

रोज़ेदार को इफ़्तारी कराने का सवाब

गुज़श्ता सफ़हात में हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की हदीस गुज़र चुकी, जिस में येह भी बयान किया गया था कि ''जिस ने र-मज़ान में किसी रोज़ेदार को इफ़्तारी कराई, उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं, उसे जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाता है और उसे रोज़ेदार का सवाब दिया जाता है जब कि रोज़ेदार के सवाब में भी कमी नहीं की जाती।'' सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! हम में से हर एक रोज़ेदार को इफ़्तारी कराने की ताक़त नहीं रखता।'' तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ येह सवाब उसे भी अ़ता फ़रमाएगा जो किसी रोज़ेदार को एक खजूर या एक घूंट पानी या दूध की लस्सी के ज़रीए इफ़्तारी कराएगा।''

(الترغيب والترهيب، كتاب الصوم، باب الترغيب في صيام الرمضان، رقم ١٣، ج٢، ص٥٧)

(733)...... हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने रोज़ेदार को हलाल खाने या पानी से इफ़्तारी कराई तो मलाएका र-मज़ान की साअ़तों में उस पर रहमत की दुआ़ करते हैं और जिब्राईल عَلَیْهِ السَّلَام शबे क़द्र में उस के लिये दुआ़ए रहमत करते हैं।'' (المعجم الكبير، رقم ٦١٦٢، ج٦، ص٢٦١)

(734)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किसी रोज़ेदार को इफ़्तारी कराएगा उसे रोज़ादार का सवाब दिया जाएगा और रोज़ेदार के सवाब में भी कुछ कमी न की जाएगी।''

(سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب في ثواب من افطر صائما، رقم ١٧٤٦، ج٢، ص٣٤٧)

(735)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने ग़ाज़ी को सामाने जिहाद फ़राहम किया और हाजी को ज़ादे राह दिया या उस के अहले ख़ाना की देखभाल की या किसी रोज़ादार को इफ़्तारी कराई तो उसे उन की मिस्ल सवाब दिया जाएगा और उन के सवाब में भी कुछ कमी न होगी।'' (ابن خزيمه، جماع وقت الافطار، باب اعطاء مفطر الصائم، رقم ٢٠٦٤، ج٣، ص٢٧٧)

(736)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया, ''कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है?'' तो फ़रमाया, ''र-मज़ान में स-दक़ा करना।'' (ترمذی، كتاب الزكاة، باب في فضل الصدقة، رقم ٦٦٣، ج٢، ص١٤٦)

दूसरों को खाता देख कर सब्र करने वाले रोज़ादार का सवाब

(737)...... ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा अन्सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खाना पेश किया तो इर्शाद फ़रमाया, ''तुम भी खाओ।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं रोज़े से हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है फ़िरिश्ते उस रोज़ेदार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं।''

एक रिवायत में है कि ''खाने वाला जब तक पेट भर ले।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الصوم، باب فضل الصوم، رقم ۳۴۲۱، ج۵، ص۱۸۱)

(738)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, ''ऐ बिलाल! आओ नाश्ता करें।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं रोज़े से हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّى الله تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है।'' फिर फ़रमाया, ''ऐ बिलाल! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है तो उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं और मलाएका उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं।''

(ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب فی الصائم اذا اکل عندہ، رقم ۱۷۴۹، ج۲، ص۳۴۸)

===

स-द-क़ए फ़ित्र का सवाब

(739)...... ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़्नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद और अपने दादा से रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस आयते करीमा के बारे में सुवाल किया गया,

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى 0 وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى 0 (پ۳۰،الاعلیٰ:۱۴،۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचा जो सुथरा हुवा और अपने रब का नाम ले कर नमाज़ पढ़ी।

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह आयत स-द-क़ए फ़ित्र के बारे में नाज़िल हुई।'' (ابن خزیمہ، جماع ابواب قسم الصدقات، باب ذکر ثناء اللہ عزوجل علی مودی صدقۃ الفطر، رقم ۲۴۲۷، ج۴، ص۹۰)

(740)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सा'लबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर छोटे या बड़े, आज़ाद या ग़ुलाम, मर्द या औ़रत, ग़नी या फ़क़ीर में से हर एक पर निस्फ़ साअ़ गन्दुम या जव (स-द-क़ए फ़ित्र) है, ग़नी को तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत अ़त़ा फ़रमाएगा जब कि फ़क़ीर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाएगा जो कुछ उस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दिया।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الزکاۃ، باب من روی نصف صاع من قمح، رقم ۱۶۱۹، ج۲، ص۱۶۱)

(741)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोज़ादार की लग़्व और बद कलामी के कफ़्फ़ारे और मसाकीन को खिलाने के लिये स-द-क़ए फ़ित्र को फ़र्ज़ फ़रमाया है, इस लिये अगर इसे नमाज़े ईद से पहले अदा किया जाए तो येह एक मक़्बूल स-दक़ा है और नमाज़े ईद के बा'द अदा किया जाए तो येह आ़म स-दक़ों में से एक स-दक़ा है।'' (ابن ماجہ، کتاب الزکاۃ، باب صدقۃ الفطر، رقم ۱۸۲۷، ج۲، ص۳۹۵)
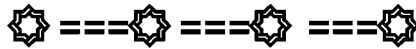
ईदैन की रातों में इबादत करने का सवाब

(742)...... हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा की रात इबादत की तो उस का दिल उस दिन न मरेगा जिस दिन दिल मर जाएंगे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب احیاء لیلتی العید، رقم ۳۲۰۳، ج۲، ص۴۳۰۷)

(743)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने ईदैन की रातों में सवाब की उम्मीद पर क़ियाम (या'नी इबादत) किया उस का दिल उस दिन न मरेगा जिस दिन दिल मर जाएंगे।''
(ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب فیمن قام فی لیلتی العیدین، رقم ۱۷۸۲، ج۲، ص۳۶۵)

(744)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने पांच रातों को ज़िन्दा किया उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है, तरवियह, अ़-रफ़ा और कुरबानी की रात (या'नी आठवीं, नवीं और दसवीं जुल हज) और ईदुल फ़ित्र और निस्फ़े शा'बान की रात।''
(الترغیب والترہیب، کتاب العیدین والاضحیہ، الترغیب فی احیاء لیلتی العیدین، رقم ۳، ج۲، ص۹۸)

ए'तिकाफ़ करने का सवाब

(745)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दे का अपने भाई की ह़ाजत रवाई के लिये चलना उस के लिये दस साल ए'तिकाफ़ करने से बेहतर है और जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दिन ए'तिकाफ़ करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दकें बना देता है और उन में से दो ख़न्दकों का दरमियानी फ़ासिला मशरिक़ो मग़रिब के फ़ासिले से ज़ियादा है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی الاعتکاف، رقم ۲، ج۲، ص۹۶)

(746)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन अपने वालिद सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने र-मज़ान में दस दिन ए'तिकाफ़ किया तो येह उस के लिये दो हज और दो उ़म्रे करने की त़रह है।''
(شعب الایمان، باب فی الاعتکاف، رقم ۳۹۶۶، ج۳، ص۴۲۵)

शव्वाल के छ रोज़े रखने का सवाब

(747)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने र-मज़ान के रोज़े रखे फिर उस के बा'द शव्वाल के छ रोज़े रखे तो येह उस के लिये सारी ज़िन्दगी रोज़े रखने के बराबर है।'' (مسلم،کتاب الصیام،باب استحباب صوم ستۃ ایام من شوال،رقم ۱۱۶۴،ص ۵۹۲)

(748)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक नेकी को दस गुना कर दिया लिहाज़ा र-मज़ान का महीना दस महीनों के बराबर है और ईदुल फ़ित्र के बा'द छ दिन पूरे साल के बराबर हैं।''

और एक रिवायत में है कि ''र-मज़ान के रोज़े दस महीनों के रोज़ों के बराबर हैं और उस के बा'द छ दिन के रोज़े दो महीनों के बराबर हैं तो येह पूरे साल के रोज़े हो गए।''

(الترغیب والترہیب،کتاب الصوم،باب الترغیب فی صوم ست من شوال،رقم ۲،ج ۲،ص ۶۷)

(749)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने र-मज़ान के रोज़े रखे फिर उस के बा'द शव्वाल के छ रोज़े रखे तो वोह गुनाहों से ऐसे निकल जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।''

(مجمع الزوائد،کتاب الصیام،باب فی من صام رمضان وستۃ ایام من شوال،رقم ۵۱۰۲،ج ۳،ص ۴۲۵)

अ-रफ़ा के दिन रोज़ा रखने का सवाब

(750)...... हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ-रफ़ा (या'नी नव ज़ुल हिज्जा) के दिन के बारे में सुवाल किया गया तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह रोज़ा अगले पिछले एक एक साल के गुनाहों को मिटा देता है।''

जब कि एक रिवायत में है कि ''मुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से उम्मीद है कि अ-रफ़ा का रोज़ा अगले और पिछले एक एक साल के गुनाहों को मिटा देता है।'' (مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صیام ثلاثۃ الخ، رقم ۱۱۶۲، ص ۵۹۰)

(751)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अ-रफ़ा के दिन रोज़ा रखता है उस के पै दर पै दो सालों के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صیام یوم عرفۃ، رقم ۴، ج ۲، ص ۶۸)

(752)...... हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जबीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अ-रफ़ा के दिन रोज़ा रखने के बारे में सुवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''हम येह रोज़ा रखा करते थे और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में हम इसे दो साल के रोज़ों के बराबर समझते थे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صیام یوم عرفۃ، رقم ۸، ج ۲، ص ۶۹)

(753)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अ-रफ़ा के दिन रोज़ा रखा, उस के एक अगले और एक पिछले साल के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं और जिस ने आ़शूरा का रोज़ा रखा उस के एक साल के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب صیام یوم عرفۃ، رقم ۵۱۴۲، ج ۳، ص ۴۳۶)

(754)...... हज़रते मसरूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ-रफ़ा के दिन उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि ''मुझे पीने के लिये कुछ दीजिये।'' तो उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया, ''ऐ लड़के! इसे शहद पिलाओ।'' फिर दरयाफ़्त फ़रमाया, ''ऐ मसरूक़! तुम ने रोज़ा नहीं रखा?'' तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''नहीं! मुझे ख़ौफ़ हुवा कि कहीं आज ईदुल अज़्हा का दिन न हो।'' तो उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया, ''अ-रफ़ा तो वोह दिन है जिस दिन ह़ाकिमे इस्लाम किसी को अमीरे ह़ज मुक़र्रर करे और क़ुरबानी का दिन वोह है जिस दिन ह़ाकिमे इस्लाम क़ुरबानी करे।'' फिर फ़रमाया, ''ऐ

मसरूक़ ! क्या तुम ने नहीं सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़-रफ़ा के रोजे़ को एक हज़ार दिन के बराबर समझते थे ।''
(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب صیام یوم عرفۃ، رقم ۵۱۴۳، ج۳، ص۴۳۶)

एक और रिवायत में है कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया कि ''शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि ''अ़-रफ़ा का रोज़ा एक हज़ार दिन के रोज़ों के बराबर है ।''
(شعب الایمان، باب فی الصیام تخصیص یوم عرفۃ، رقم ۳۷۶۴، ج۳، ص۳۵۷)

मुह़र्रम में रोज़ा रखने का सवाब

(755)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''र-मज़ान के बा'द सब से अफ़्ज़ल रोजे़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महीने मुह़र्रम के हैं और फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द सब से अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है ।''
(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب صوم المحرم، رقم ۱۱۶۳، ص۵۹۱)

(756)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन सुफ़्यान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे, ''फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द सब से अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है और र-मज़ान के बा'द सब से अफ़्ज़ल रोजे़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के उस महीने के हैं जिसे तुम मुह़र्रम कहते हो ।''
(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب الصیام فی شھر اللہ المحرم، رقم ۵۱۵۰، ج۳، ص۴۳۷)

(757)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अ़-रफ़ा के दिन का रोज़ा रखा तो येह उस के लिये दो सालों (के गुनाहों) का कफ़्फ़ारा है और जिस ने मुह़र्रम के एक दिन का रोज़ा रखा तो उस के हर दिन का रोज़ा तीस दिनों (के गुनाहों) का कफ़्फ़ारा है ।''
(طبرانی کبیر، رقم ۱۱۰۸۱، ج۱۱، ص۶۰)

यौमे आ़शूरा के रोजे़ का सवाब

(758)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से आ़शूरा के रोज़े के बारे में सुवाल किया गया तो इर्शाद फ़रमाया, ''येह रोज़ा पिछले एक साल के गुनाहों को मिटा देता है।'' (صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صیام ثلاثۃ، رقم ۱۱۶۲، ص ۵۹۰)

(759)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''माहे र-मज़ान और यौमे आ़शूरा के इलावा किसी दिन के रोज़े को दूसरे दिन के रोज़े पर कोई फ़ज़ीलत ह़ासिल नहीं।'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۱۲۵۳، ج ۱۱، ص ۱۰۳)

(760)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से आ़शूरा के रोज़े के बारे में सुवाल किया गया तो फ़रमाया, ''मुझे मा'लूम नहीं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने यौमे आ़शूरा और माहे र-मज़ान के इलावा किसी दिन या महीने का रोज़ा उस की दूसरे दिनों या महीनों पर फ़ज़ीलत की वजह से रखा हो।'' (مسلم، کتاب الصیام، باب صوم یوم عاشوراء، رقم ۱۱۳۲، ص ۱۷۲)

शा'बान और शबे बराअत की फ़ज़ीलत

(761)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी महीने में इतने रोज़े रखते नहीं देखा जितने रोज़े आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शा'बान में रखते हैं?'' इर्शाद फ़रमाया, ''येह रजब और र-मज़ान के बीच का महीना है और लोग इस से ग़ाफ़िल हैं, इस महीने में रब्बुल आ़-लमीन की त़रफ़ आ'माल उठाए जाते हैं, मैं पसन्द करता हूं कि मेरे आ'माल इस ह़ाल में उठाए जाएं कि मैं रोज़े से होऊं।'' (سنن نسائی، کتاب الصیام، باب صوم النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ج ۴، ص ۲۰۱)

(762)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पूरे शा'बान के रोज़े रखा करते थे, मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप को तमाम महीनों में से शा'बान के रोज़े ज़ियादा पसन्द हैं?'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस महीने में पूरे साल में मरने वालों के नाम लिखता है और मैं येह पसन्द करता हूं कि मुझे इस ह़ाल में मौत आए कि मैं रोज़ादार होउं।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صوم شعبان، رقم ۴، ج ۲، ص ۷۲)

(763)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया कि ''र-मज़ान के बा'द कौन सा रोज़ा अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''र-मज़ान की ता'ज़ीम के लिये शा'बान का रोज़ा रखना।'' फिर पूछा गया, ''सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा कौन सा है ?'' फ़रमाया, ''र-मज़ान में स-दक़ा करना।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صوم شعبان، رقم ۳، ج۲، ص۷۲)

(764)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ निस्फ़ शा'बान की रात अपनी तमाम मख़्लूक़ पर तजल्ली फ़रमाता है, फिर मुशिरक और बुग़्ज़ रखने वाले के इलावा अपनी सारी मख़्लूक़ की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الادب ماجاء فی السماء، رقم ۱۲۹۶۰، ج۸، ص۱۲۶)

(765)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ निस्फ़ शा'बान की रात अपनी तमाम मख़्लूक़ पर नज़र फ़रमाता है, फिर मुशिरक और बुग़्ज़ रखने वाले के इलावा अपनी सारी मख़्लूक़ की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، رقم ۱۳۹۰، ج۲، ص۱۶۲)

(766)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ निस्फ़ शा'बान की रात अपनी तमाम मख़्लूक़ पर नज़र फ़रमाता है, फिर बुग़्ज़ रखने वाले और किसी को क़त्ल करने वाले के इलावा अपने सब बन्दों की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صوم شعبان، رقم ۱۲، ج۲، ص۷۳)

(767)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब निस्फ़ शा'बान की रात आए तो उस की रात में क़ियाम किया करो और उस के दिन में रोज़ा रखा करो कि अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला गुरूबे आफ़्ताब से आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता और कहता है : ''है कोई मग़्फ़िरत चाहने वाला कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमाऊं, है कोई रिज़्क़ का त़लब गार कि उसे रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाऊं, है कोई मुसीबत ज़दा कि उसे आ़फ़िय्यत दूं, है कोई ऐसा ! है कोई ऐसा...'' यहां तक कि फ़ज्र तुलूअ़ कर आती है। (سنن ابن ماجہ، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، رقم ۱۳۸۸، ج۲، ص۱۶۰)

(768)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरे पास जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام आए और अ़र्ज़ किया कि येह निस्फ़ शा'बान की रात है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इस रात में बनी कल्ब की बकरियों के बालों के बराबर लोगों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इस रात में मुशिरक, बुग़्ज़ रखने वाले और क़त्ए़ रेह़मी करने वाले और तकब्बुर की वजह से अपने तहबन्द को लटकाने वाले और वालिदैन के ना फ़रमान और शराब के आ़दी की त़रफ़ नज़रे रह़मत नहीं फ़रमाता।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الصوم، باب الترغیب فی صوم شعبان، رقم ۱۱، ج۲، ص۷۳)

वज़ाहत :

बनू कल्ब अ़रब का एक बहुत बड़ा क़बीला था और सब से ज़ियादा मवेशी पालता था।

(769)...... ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''निस्फ़ शा'बान की रात में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुश्रिक और बुग़्ज़ रखने वाले के इलावा तमाम अहले ज़मीन की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।''

(شعب الایمان، باب فی الصیام ماجاء فی لیلۃ النصف من شعبان، رقم ۳۸۳۸، ج ۳، ص ۳۸۵)

अय्यामे बीज़ में रोज़ा रखने का सवाब

(770)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक बिन क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें अय्यामे बीज़ या'नी तेरह चौदह और पन्दरह तारीख़ के रोज़े रखने का हुक्म दिया करते थे और फ़रमाते कि ''येह पूरी ज़िन्दगी के रोज़ों की त़रह़ हैं।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الصوم، باب فی صوم الثلاث من کل شھر، رقم ۲۴۴۹، ج ۲، ص ۴۸۲)

एक और रिवायत में है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें अय्यामे बीज़ के तीन रोज़े रखने का हुक्म दिया करते और फ़रमाया करते, ''येह एक महीने के रोज़ों के बराबर है।''

(سنن انسائی، کتاب الصیام، باب کیف یصوم ثلاثۃ ایام من کل شھر، ج ۴، ص ۲۲۴)

(771)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर महीने में तीन दिन के रोज़े या'नी तेरहवीं, चौदहवीं और पन्दरहवीं तारीख़ के रोज़े सारी ज़िन्दगी के रोज़ों के बराबर हैं।'' (سنن نسائی، کتاب الصیام، باب کیف یصوم ثلاثۃ ایام من کل شھر، ج ۴، ص ۲۲۱)
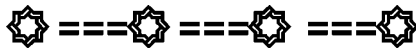
हर माह तीन रोज़े रखने का सवाब

(772)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर महीने तीन दिन रोज़े रखना पूरी ज़िन्दगी रोज़े रखने की त़रह़ है।''

(صحیح بخاری، کتاب الصوم، باب حق الجسم فی الصوم، رقم ۱۹۷۵، ج۱، ص ۶۴۹)

(773)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर महीने तीन दिन के रोज़े और एक र-मज़ान के रोज़े अगले र-मज़ान तक पूरी ज़िन्दगी के रोज़ों के बराबर हैं।''

(مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صیام ثلاثۃ ایام من کل شھر، رقم ۱۱۶۲، ص ۵۹۰)

(774)...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुर्रह बिन इयास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर माह तीन दिन के रोज़े पूरी ज़िन्दगी रोज़ा रखने और इफ़्त़ार के बराबर है।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الصوم، باب صوم التطوع، رقم ۳۶۴۵، ج۵، ص ۲۶۴ رواہ عن معاویہ بن قرہ)

(775)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने हर माह तीन दिन के रोज़े रखे तो येह पूरे साल के रोज़े हैं, इस बात की तस्दीक़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की किताब में यूं की गई है,

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا

(پ۸، الانعام:۱۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो एक नेकी लाए तो उस के लिये उस जैसी दस हैं।

(جامع الترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی صوم ثلاثۃ (ایام) من کل شھر، رقم ۷۶۲، ج۲، ص ۱۹۴)

(776)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्ह़ा के इलावा पूरा साल रोज़ा रखते थे और सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام निस्फ़ साल रोज़ा रखा करते थे और इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام हर माह तीन रोज़े रखा करते और उन्हें पूरा साल रोज़ा रखने और इफ़्त़ारी करने का सवाब मिलता था।''

(مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب صیام ثلاثۃ ایام من کل شھر، رقم ۵۱۸۰، ج۳، ص ۴۴۶)

(777)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुरह़बील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स का तज़्किरा किया गया कि वोह हमेशा रोज़े

रखता है, तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह कभी कुछ न खाता तो येह उस के लिये अच्छा था (या'नी हमेशा रोज़े रखने की सूरत में रात में भी खाने की क्या ज़रूरत है) ।'' सहाबए किराम رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھُم ने अ़र्ज़ किया, ''अगर दो दिन रोज़ा रखे और एक दिन नाग़ा करे (या'नी न रखे) तो ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''येह भी ज़ियादा है ।'' फिर अ़र्ज़ किया गया कि ''एक रोज़ा रखे और एक दिन इफ़्तार करे तो ?'' फ़रमाया, ''येह भी ज़ियादा है ।'' फिर फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि सीने की कदूरतों को कौन सी चीज़ दूर करती है ?'' (वोह), ''हर माह तीन दिन रोज़ा रखना ।''

(سنن نسائی، کتاب الصیام، باب صوم ثلثی الدھر، ج۴، ص۲۰۸)

(778)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब्र के महीने (या'नी र-मज़ान) के रोज़े और हर माह तीन दिन रोज़े रखना सीने की बीमारियों (या'नी बात़िनी बीमारियों) को दूर करते हैं ।'' (مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب صیام ثلاثۃ ایام من کل شھر، رقم ۵۱۸۸، ج۳، ص۴۴۸)

(779)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना बिन्ते सा'द رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें रोज़ों के बारे में बताइये ।'' फ़रमाया, ''जो हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखने की इस्तित़ाअ़त रखता हो तो वोह ज़रूर रखे कि हर दिन का रोज़ा दस गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और रोज़ादार शख़्स गुनाहों से ऐसा पाक हो जाएगा जैसे कपड़ा पानी से पाक हो जाता है ।'' (طبرانی کبیر، رقم ۶۰، ج۲۵، ص۳۵)

(780)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मेरे बारे में बताया गया कि मैं कहता हूं कि ''जब तक ज़िन्दा रहूंगा दिन में रोज़ा रखूंगा और रात में इ़बादत किया करूंगा ।'' तो आप ने मुझ से फ़रमाया, ''क्या येह बात तुम ने ही कही है ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! मैं ने ही कही है ।'' तो आप ने फ़रमाया, ''तुम इस की त़ाक़त न रख सकोगे लिहाज़ा ! रोज़ा भी रखो और इफ़्तार भी करो, आराम भी करो और क़ियाम भी करो, हर महीने तीन रोज़े

रख लिया करो क्यूं कि एक नेकी दस के बराबर है लिहाज़ा येह सारी ज़िन्दगी के रोज़ों के बराबर होंगे।''

मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं इस से भी ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।'' इर्शाद फ़रमाया, ''दो दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखो।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ किया, ''मैं इस से भी ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।'' इर्शाद फ़रमाया, ''एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखो, येह सियामे दावूदी हैं और येह सब से बेहतर रोज़े हैं।'' मैं ने फिर अ़र्ज़ किया, ''मैं इस से भी ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''इन रोज़ों से अफ़्ज़ल कोई नहीं।'' ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अगर मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तीन रोज़ों वाला फ़रमाने आ़लीशान क़बूल कर लेता तो येह मुझे अपने अह्ल और माल से ज़ियादा पसन्दीदा होता।''

जब कि एक रिवायत में है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुझे ख़बर मिली है कि तुम रात को क़ियाम करते हो और दिन में रोज़ा रखते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं नेकी ही के इरादे से ऐसा करता हूं।'' फ़रमाया ''जो हमेशा रोज़ा रखे उस का कोई रोज़ा नहीं मगर मैं तुम्हें सौमे दह्र के बारे में बताता हूं, (वोह येह हैं कि) हर महीने में तीन दिन के रोज़े रखा करो।'' (صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النھی عن صوم الدھر ......الخ، رقم ۱۱۵۹، ص ۵۸۴)

पीर और जुमा'रात का रोज़ा रखने की फ़ज़ीलत

(781)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''पीर और जुमा'रात के दिन आ'माल पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मैं पसन्द करता हूं कि जब मेरा अ़मल पेश किया जाए तो मैं रोज़ादार होउं।'' (ترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی صوم یوم الاثنین والخمیس، رقم ۷۴۷، ج۲، ص۱۸۷)

(782)...... हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब आप रोज़े रखते हैं तो ऐसा लगता है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इफ़्तार न करेंगे (या'नी मुसल्सल रोज़े रखेंगे) और जब आप रोज़े नहीं रखते हैं तो ऐसा लगता है कि सिवाए दो दिन के कभी रोज़े न रखेंगे, और दो दिन ऐसे हैं कि अगर आप के रोज़ों में आ जाएं तो ठीक वरना आप इन दिनों का रोज़ा ज़रूर रखते हैं।'' दरयाफ़्त फ़रमाया, ''वोह कौन से दिन हैं ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''पीर और जुमा'रात।'' फ़रमाया, ''येह वोह दिन हैं जिन में रब्बुल आ़-लमीन की बारगाह में आ'माल पेश किये जाते हैं लिहाज़ा मैं पसन्द करता हूं कि मेरे आ'माल रोज़े की हालत में पेश किये जाएं।'' (سنن نسائی، کتاب الصیام، باب صوم النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ج۴، ص۲۰۲)

(783)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर पीर और जुमा'रात के दिन आ'माल पेश किये जाते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन में मुश्रिक के इलावा हर शख़्स की बख़्शिश फ़रमा देता है मा सिवाए उस शख़्स के जो अपने भाई से बुग़्ज़ रखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जब तक येह दोनों सुल्ह़ न कर लें इन्हें छोड़ दो।''

एक और रिवायत में है कि ''पीर और जुमा'रात के दिन जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं तो हर उस बन्दे की मग़्फ़िरत कर दी जाती है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता मा सिवाए उस शख़्स के जो अपने किसी भाई के साथ क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करता है तो कहा जाता है कि जब तक येह सुल्ह़ न कर लें इन्हें छोड़ दो जब तक येह सुल्ह़ न कर लें इन्हें छोड़ दो, जब तक येह सुल्ह़ न कर लें इन्हें छोड़ दो।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب النھی عن الشحناء والتھاجر، رقم ۲۵۶۵، ص۱۳۸۷)

एक रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर पीर और जुमा'रात का रोज़ा रखते थे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप हर पीर और जुमा'रात का रोज़ा रखते हैं।'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पीर और जुमा'रात के दिन हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है मगर आपस में जुदाई रखने वालों के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि इन दोनों को छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह़ कर लें।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب صیام یوم الاثنین والخمیس، رقم ۱۷۴۰، ج۲، ص۳۴۴)

(784)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''पीर और जुमा'रात के दिन आ'माल पेश किये जाते हैं तो मग़्फ़िरत चाहने वाले की मग़्फ़िरत कर दी जाती है और तौबा करने वाले की तौबा क़बूल की जाती है जब कि आपस में कीना रखने वालों को तौबा करने तक मग़्फ़िरत से मह़रूम कर दिया जाता है।''

(المعجم الاوسط،من اسمہ محمد،رقم ۷۴۱۹،ج۵،ص۳۰۵)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ का रोज़ा रखने का सवाब

(785)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम कुरशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सारी ज़िन्दगी रोज़े रखने के बारे में सुवाल किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नहीं, तुम्हारे अहले ख़ाना का भी तुम पर ह़क़ है, र-मज़ान का रोज़ा रखो और इस के बा'द वाले महीने में रोज़े और हर बुध और जुमा'रात के रोज़े रखा करो तो गोया तुम ने सारी ज़िन्दगी रोज़े भी रखे और इफ़्तार भी किया।''

(جامع الترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی صوم الاربعاء والخمیس، رقم ۷۴۸، ج۲، ص۱۸۷)

(786)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ का रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत में मोती, याकूत और ज़बर जद का एक मह़ल बनाएगा और उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाएगी।''

(المعجم الاوسط، من اسمہ احمد، رقم ۲۵۴، ج۱، ص۸۷)

(787)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ का रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक ऐसा मह़ल बनाएगा जिस का बाहर अन्दर से और अन्दरूनी ह़िस्सा बाहर से नज़र आएगा।'' (المعجم الاوسط، من اسمہ احمد، رقم ۲۵۴، ج۱، ص۸۷)

(788)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ का रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक ऐसा मह़ल बनाएगा जिस का बाहर अन्दर से और अन्दरूनी ह़िस्सा बाहर से नज़र आएगा।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۹۸۱، ج۸، ص۲۵۰)

(789)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ का रोज़ा रखा उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाएगी।'' (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند عبداللہ بن عمر، رقم ۵۶۱۰، ج۵، ص۱۱۵)

(790)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ के दिन रोज़ा रखा फिर जुमुआ़ के दिन थोड़ा या ज़ियादा स-दक़ा दिया तो उस का हर गुनाह मुआफ़ कर दिया जाएगा, यहां तक कि वोह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाएगा जैसा उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।''

(شعب الایمان، باب فی الصیام، رقم ۳۸۷۲، ج۳، ص۳۹۷)

हर दूसरे दिन रोज़ा रखने का सवाब

(791)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि, ''मुझे ख़बर मिली है कि तुम दिन में रोज़ा रखते हो और रात में क़ियाम करते हो, ऐसा मत करो क्यूं कि तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर ह़क़ है और तुम्हारी आंखों का तुम पर ह़क़ है और तुम्हारी बीवी का तुम पर ह़क़ है, रोज़ा रखो और इफ़्तार भी करो और हर महीने में तीन रोज़े रखो येह सारी ज़िन्दगी रोज़ा रखने के बराबर है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझ में इस से ज़ियादा की त़ाक़त है।'' फ़रमाया, ''तो फिर ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام के रोज़े रखो कि एक दिन रोज़ा रखो एक दिन इफ़्त़ारी करो (या'नी न रखो)।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا कहा करते थे कि ''काश ! मैं रुख़्सत इख़्तियार कर लेता।''

और एक रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام के रोज़े से बढ़ कर कोई रोज़ा नहीं, आधी ज़िन्दगी रोज़ा रखो या'नी एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन इफ़्त़ार करो।''

जब कि एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''एक दिन रोज़ा रखो तुम्हें बाक़ी दिनों का सवाब भी मिलेगा।'' तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं इस से ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।'' फ़रमाया, ''दो दिन रोज़ा रखो तुम्हें बाक़ी दिनों का सवाब भी मिलेगा।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं इस से ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।'' फ़रमाया, ''तीन दिन रोज़े रखो तुम्हें बाक़ी दिनों का सवाब भी मिलेगा।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं इस से ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।'' फ़रमाया, ''चार दिन रोज़े रखो तुम्हें बाक़ी दिनों का सवाब भी मिलेगा।'' तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मैं इस से ज़ियादा की त़ाक़त रखता हूं।'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सब से पसन्दीदा रोज़े रखो जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام के रोज़े हैं, आप عَلَیْہِ السَّلَام एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्त़ार किया करते थे।''

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النھی عن صوم الدھر لمن تضرر بہ، رقم ۱۱۵۹، ص ۵۸۸)

और एक रिवायत में है कि ''एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन इफ़्तारी करो और येह सब से अफ़्ज़ल रोज़े हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام के रोज़े हैं।'' तो मैं ने अ़र्ज़ किया कि ''मैं इस से ज़ियादा रोज़ों की त़ाक़त रखता हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इस से अफ़्ज़ल कुछ नहीं।''

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النھی عن صوم الدھر......الخ، رقم ۱۱۵۹، ص ۵۸۴)

(792)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा रोज़े ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام के रोज़े हैं और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा नमाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام की नमाज़ है, आप عَلَیْہِ السَّلَام आधी रात आराम फ़रमाते और तिहाई रात नमाज़ पढ़ते और रात के छटे ह़िस्से में आराम फ़रमाते और एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्त़ार करते थे।''

(صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النھی عن صوم الدھر لمن تضرربہ......الخ، رقم ۱۱۵۹، ص ۵۸۷)

✡===✡===✡ ===✡

हज का सवाब

अल्लाह तआला फ़रमाता है,

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا (پ۴،اٰل عمران:۹۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और **अल्लाह** के लिये लोगों पर इस घर का हज करना है जो इस तक चल सके।

जब कि एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया,

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّى ؕ (پ۱،البقرۃ:۱۲۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और (याद करो) जब हम ने इस घर को लोगों के लिये मरजअ़ और अमान बनाया और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ।

(793)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने हज किया और कोई झगड़ा या गुनाह न किया तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाएगा जैसा उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।'' (بخاری،کتاب الحج،باب فضل حج المبرور،رقم۱۵۲۱،ج۱،ص۵۱۲)

(794)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया गया, ''सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है ?'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल पर ईमान लाना।'' अ़र्ज़ किया गया, ''इस के बा'द ?'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना।'' अ़र्ज़ किया गया, ''फिर कौन सा ?'' फ़रमाया ''ह़ज्जे मबरूर करना।'' (بخاری،کتاب الحج،باب فضل حج المبرور،رقم۱۵۱۹،ج۱،ص۵۱۲)

(795)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक उ़म्रह अगले उ़म्रह के दरमियान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और ह़ज्जे मबरूर की जज़ा जन्नत ही है।'' (بخاری،کتاب العمرۃ،باب وجوب العمرۃ،رقم۱۷۷۳،ج۱،ص۵۸۶)

(796)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने शिमासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर नज़्अ़ का आ़लम त़ारी था। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ देर तक रोते रहे फिर फ़रमाया कि ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल में इस्लाम के लिये जगह बनाई तो मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया,

''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपना दायां हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आप की बैअ़त कर लूं।'' जब आप ने अपना दस्ते अक़्दस बढ़ाया तो मैं ने अपना हाथ रोक लिया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अ़म्र ! क्या हुवा ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''हुज़ूर ! मेरा इरादा है कि मैं एक शर्त़ लगा लूं।'' फ़रमाया, ''कौन सी शर्त़ लगाना चाहते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मेरी शर्त़ येह है कि मेरी मग़्फ़िरत हो जाए।'' रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अ़म्र क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम पिछले गुनाहों को मिटा देता है और हिजरत पिछले गुनाहों को मिटा देती है और ह़ज पिछले गुनाहों को मिटा देता है।'' (مسلم، کتاب الایمان، باب کون الاسلام یھدم ما قبلہ، رقم ۱۲۱، ص ۷۴)

(797)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़बसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस्लाम क्या है ?'' फ़रमाया, ''(इस्लाम येह है कि) तेरा दिल झुक जाए और मुसल्मान तेरी ज़बान और हाथों से मह़फ़ूज़ रहें।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''कौन सा इस्लाम अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''ईमान।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''ईमान क्या है ?'' फ़रमाया, ''तू **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के मलाएका और उस की किताबों और उस के रसूलों और मौत के बा'द उठने पर यक़ीन रखे।''

उस ने अ़र्ज़ किया, ''कौन सा ईमान अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''हिजरत।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''हिजरत क्या है ?'' फ़रमाया, ''येह कि तू बुराई को छोड़ दे।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''कौन सी हिजरत अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''जिहाद।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''जिहाद क्या है ?'' फ़रमाया, ''जब कुफ़्फ़ार से जंग हो तो उन से क़िताल करो।'' फिर उस ने अ़र्ज़ किया, ''कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''जिस में मुजाहिद की टांग काट दी जाए और ख़ून बहा दिया जाए।'' फिर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''और यहां दो अ़मल हैं जो दीगर तमाम आ'माल से अफ़्ज़ल हैं सिवाए उस के जो इन की मिस्ल अ़मल करे। (1) ह़ज्जे मबरूर (2) मबरूर उ़म्रह।''

(مسند احمد، حدیث زید بن خالد الجہنی، رقم ۱۷۰۲۴، ج ۶، ص ۵۸)

(798)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से अफ़्ज़ल अ़मल वोह ईमान है जिस में शक न हो, और वोह जंग है जिस में ख़ियानत न हो और ह़ज्जे मबरूर।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, ''एक मबरूर ह़ज एक साल के गुनाहों को मिटा देता है।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجہاد، رقم ۴۵۷۸، ج ۷، ص ۵۹)

(799)...... ह़ज़रते सय्यिदुना माइज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया कि ''सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है ?'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''एक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर ईमान लाना फिर ह़ज्जे मबरूर करना तमाम आ'माल पर ऐसी फ़ज़ीलत रखते हैं जैसे सूरज तुलूअ़ होने और ग़ुरूब के दरमियान होता है।''

(مسند احمد، حدیث ماعز رضی اللہ عنہ، رقم ۱۹۰۳۲، ج ۷، ص ۲۳)

(800)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज और उ़म्रह यके बा'द दीगरे करो क्यूं कि येह दोनों आ'माल फ़क्र और गुनाहों को ऐसे दूर कर देते हैं जैसे भट्टी लोहे, सोने और चांदी के ज़ंग को दूर कर देती है और ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत के सिवा कुछ नहीं।''

(سنن ترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی ثواب الحج والعمرۃ، رقم ۸۱۰، ج۲، ص۲۱۸)

(801)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज्जे मबरूर का सवाब जन्नत से कम कुछ नहीं।'' अ़र्ज़ किया गया, ''मबरूर से क्या मुराद है ?'' फ़रमाया, ''ऐसा ह़ज जिस में खाना खिलाया जाए और अच्छी गुफ़्त-गू की जाए।'' (المعجم الاوسط، من اسمہ موسی، رقم ۸۴۰۵، ج۶، ص۱۷۳)

एक रिवायत में है कि फ़रमाया, ''जिस में खाना खिलाया जाए और सलाम आ़म किया जाए।''

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۱۴۵۸۸، ج۵، ص۹۰)

(802)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जराद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज किया करो क्यूं कि ह़ज गुनाहों को इस त़रह़ धो देता है जैसे पानी मैल को धो देता है।''

(المعجم الاوسط، من اسمہ قیس، رقم ۴۹۹۷، ج۳، ص۳۱۶)

(803)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''ह़ाजी के ऊंट के हर क़दम चलने और हाथ रखने के बदले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ाजी के लिये एक नेकी लिखता है या उस का एक गुनाह मिटाता या एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है।'' (شعب الایمان، کتاب المناسک فضل الحج والعمرۃ، رقم ۴۱۱۶، ج۳، ص۴۷۹)

(804)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो बैतुल ह़राम का क़स्द करे फिर अपनी सुवारी पर सुवार हो तो उस की सुवारी के हर क़दम के बदले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखेगा और एक गुनाह मिटा देगा और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा फिर जब वोह बैतुल ह़राम पहुंचे और उस का त़वाफ़ करे और सफ़ा व मर्वह के दरमियान सअ़्य करे फिर ह़ल्क़ या तक़्सीर कराए तो अपने गुनाहों से इस त़रह़ निकल जाएगा जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था लिहाज़ा ! अब वोह अपने आ'माल की इब्तिदा नए सिरे से करे।''

(شعب الایمان، باب فی المناسک فضل الحج والعمرۃ، رقم ۴۱۱۵، ج۳، ص۴۷۸)

(805)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हाजी अपने अहले ख़ाना के चार सो अफ़राद की शफ़ाअत करेगा।"

एक रिवायत में है कि "अपने अहले ख़ाना से चार सो अफ़राद की शफ़ाअत करेगा और अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाएगा जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।" (مسند بزار،رقم۳۱۹۶،ج۸،ص۱۶۹)

(806)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "हाजी और जिस के लिये हाजी दुआए मग़फ़िरत करे उस की मग़फ़िरत कर दी जाती है।"

(الترغیب والترہیب،کتاب الحج،باب الترغیب فی الحج والعمرۃ،رقم ۲۳،ج۲،ص۱۰۸)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हाजी और जिस के लिये हाजी इस्तिग़फ़ार करे दोनों की मग़फ़िरत फ़रमा दे।"

(ابن خزیمہ،کتاب المناسک،باب استحباب دعاء الحاج،رقم ۲۵۱۶،ج۴،ص۱۳۲)

(807)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "हज और उम्रह करने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेहमान हैं अगर दुआ करें तो उन की दुआ क़बूल फ़रमाए और अगर मग़फ़िरत तलब करें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की मग़फ़िरत फ़रमाए।" (ابن ماجہ،کتاب المناسک،باب فضل دعاء الحاج،رقم ۲۸۹۲،ج۳،ص۴۱۰)

(808)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "हुज्जाज और उम्रह करने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेहमान हैं अगर दुआ करें तो उन की दुआ क़बूल फ़रमाए और अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कुछ मांगें तो वोह उन्हें अता फ़रमाए।"

(الترغیب والترہیب،کتاب الحج،باب الترغیب فی الحج والعمرۃ،رقم ۲۰،ج۲،ص۱۰۷)

(809)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام ने अर्ज़ किया, "या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! तेरे पास अपने उन बन्दों के लिये क्या है जो तेरे घर की ज़ियारत करने आते हैं ?" फ़रमाया, "हर मेहमान का मेज़बान पर हक़ होता है और ऐ दावूद ! मेरे मेहमान का मुझ पर हक़ है कि मैं दुन्या में उन्हें आफ़िय्यत अता फ़रमाऊं और जब आख़िरत में उन से मिलूं तो इन की मग़फ़िरत फ़रमा दूं।" (المعجم الاوسط للطبرانی،من اسمہ محمد،رقم ۶۰۳۷،ج۴،ص۲۹۷)

(810)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कलिमए त़य्यिबा का विर्द करते हुए या तल्बिया कहते हुए जिहाद करने या ह़ज करने के लिये चले तो सूरज ग़ुरूब होते वक़्त उस के गुनाहों को अपने साथ ले जाएगा वोह गुनाहों से पाक हो जाएगा।'' (المعجم الاوسط، من اسمہ محمد، رقم ۶۱۶۵، ج۴، ص ۳۳۷)

(811)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप से कुछ बातें दरयाफ़्त करना चाहता हूं।'' आप ने फ़रमाया, ''बैठो।'' फिर क़बीलए सक़ीफ़ से एक शख़्स आया और अ़र्ज़ किया, ''हुज़ूर ! मैं आप से कुछ बातें दरयाफ़्त करना चाहता हूं।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''अन्सारी तुझ से पहले आया है।'' अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''हुज़ूर ! येह एक मुसाफ़िर है और मुसाफ़िर का ह़क़ ज़ियादा होता है लिहाज़ा आप पहले इस के सुवालों के जवाबात इर्शाद फ़रमा दीजिये।''

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस स-क़फ़ी की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया, ''अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें बताऊं कि तुम मुझ से क्या पूछने आए हो और अगर चाहो तो सुवालात करो मैं तुम्हें उन के जवाबात दूंगा।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं जिन सुवालात के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं मुझे उन के जवाबात इर्शाद फ़रमा दीजिये।'' फ़रमाया, ''तुम मुझ से रुकूअ़, सुजूद, नमाज़ और रोज़े के बारे में सुवालात करने आए हो।'' उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''उस ज़ाते मुक़द्दसा की क़सम जिस ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है ! आप ने मेरे दिल की बात बताने में ज़रा सी भी ख़त़ा नहीं की।''

आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''जब तुम रुकूअ़ करने लगो तो अपनी हथेलियां अपने घुटनों पर रखा करो और अपनी उंगलियां कुशादा कर लिया करो फिर सुकून से खड़े रहो ताकि जिस्म का हर ह़िस्सा सीधा हो जाए और जब सज्दा करने लगो तो अपनी पेशानी ख़ूब जमाओ और ठोंगे न मारो और दिन की इब्तिदा और इन्तिहा के वक़्त नमाज़ पढ़ा करो।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मैं इन दोनों अवक़ात के दरमियान नमाज़ पढ़ूं तो ?'' फ़रमाया, ''फिर तो तुम नमाज़ी हो और हर महीने की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ का रोज़ा रखा करो।'' फिर वोह स-क़फ़ी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उठ कर चले गए।

इस के बा'द नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और उन से फ़रमाया, ''अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें भी बता दूं तुम मुझ से क्या सुवाल करने के लिये आए हो और अगर चाहो तो मुझ से सुवाल करो मैं तुम्हें उन का जवाब दूंगा।'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया,

''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! नहीं आप खुद ही बता दीजिये कि मैं आप से क्या पूछने के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''तुम मुझ से येह पूछने आए हो कि जब ह़ाजी अपने घर से निकलता है तो उस के लिये क्या सवाब है ? और जब अ़-रफ़ात में खड़ा होता है तो उस के लिए क्या सवाब है ? और जब वोह जिमार की रमी करता है तो उस के लिये क्या सवाब है ? और जब वोह अपना सर मुंडवाता है तो उस के लिये क्या सवाब है ? और जब वोह ह़ज का आख़िरी त़वाफ़ पूरा कर लेता है तो उसे क्या सवाब मिलता है ?''

उस अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या नबिय्यल्लाह ! उस ज़ाते मुक़द्दसा की क़सम ! जिस ने आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! आप ने मेरे दिल की बात बताने में कोई ख़त़ा नहीं की ।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''जब ह़ाजी अपने घर से निकलता है तो उस की सुवारी से हर क़दम के बदले उस के लिये एक नेकी लिखी जाती है या उस का एक गुनाह मुआ़फ़ कर दिया जाता है और जब वोह अ़-रफ़ा में वुक़ूफ़ करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ (अपनी शान के लाइक़) आस्माने दुन्या पर नुज़ूल फ़रमाता है और इर्शाद फ़रमाता है कि ''मेरे इन बन्दों को देखो कि बिखरे हुए बाल परागन्दा सर हैं, (ऐ फ़िरिश्तो !) गवाह हो जाओ कि मैं ने इन के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये अगर्चे बारिश के क़त़रात और रैत के ज़र्रों के बराबर हों, और जब वोह जिमार की रमी करता है तो क़ियामत तक उस के सवाब को कोई नहीं जान सकता, और जब वोह अपना सर मुंडवाता है तो उस के सर से हर गिरने वाले बाल के बदले क़ियामत के दिन नूर होगा और जब वोह बैतुल्लाह का आख़िरी त़वाफ़ करता है तो गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना ।''

(صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب وصف بعض الصلاۃ، رقم ۱۸۸۴، ج ۳، ص ۱۸۱)

मक्का से पैदल चल कर ह़ज करने का सवाब

(812)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाज़ान رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि, ''ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا शदीद बीमार हुए तो उन्हों ने अपने बेटों को बुलाया और जम्अ़ कर के फ़रमाया कि मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो मक्का से ह़ज के लिये पैदल चल कर जाए और मक्का लौटने तक पैदल ही चले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के हर क़दम के इ़वज़ सात सो नेकियां लिखता है और उन में हर नेकी ह़रम में की गई नेकियों की त़रह़ है ।'' उन से पूछा गया, ''ह़रम की नेकियां क्या हैं ?'' फ़रमाया, ''उन में से हर नेकी एक लाख नेकियों के बराबर है ।''

(المستدرک، کتاب المناسک، باب فضیلۃ الحج ماشیا، رقم ۱۷۳۵، ج ۲، ص ۱۱۴)

(813)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام हिन्द से एक हज़ार मरतबा बैतुल्लाह शरीफ़ पैदल तशरीफ़ लाए और एक मरतबा भी सुवारी पर सुवार न हुए ।''

(صحیح ابن خزیمہ، کتاب المناسک، باب عدد حج آدم صلوات اللہ علیہ، رقم ۲۷۹۲، ج ۴، ص ۲۴۵)

=== === ===
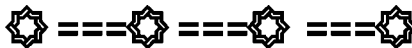
उ़म्रह करने का सवाब

(814)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक उ़म्रह अगले उ़म्रह के दरमियान के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।'' (بخاری، کتاب العمرۃ، باب العمرۃ وجوب العمرۃ وفضلھا، رقم ۱۷۷۳، ج۱، ص۵۸۶)

(815)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज और उ़म्रह पै दर पै अदा कर लिया करो क्यूं कि येह फ़क़्र और गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देते हैं जैसे भट्टी सोने चांदी और लोहे का ज़ंग दूर कर देती है।'' (ترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی ثواب الحج والعمرۃ، رقم ۸۱۰، ج۲، ص۲۱۸)

(816)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज व उ़म्रह में मुता-ब-अ़त करो क्यूं कि इन की मुता-ब-अ़त उ़म्र में इज़ाफ़ा करती है और तंगदस्ती और गुनाहों को इस त़रह़ मिटा देती है जैसे भट्टी ज़ंग को ख़त्म कर देती है।''

(سنن نسائی، کتاب مناسک الحج، باب فضل المتابعۃ بین الحج والعمرۃ، ج۵، ص۱۱۵)

(817)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बूढ़े, कमज़ोरों और औ़रतों का जिहाद ह़ज व उ़म्रह है।'' (سنن نسائی، کتاب مناسک الحج، باب فضل الحج، ج۵، ص۱۱۴)

पिछले सफ़ह़ात में एक रिवायत गुज़र चुकी जिस में येह मज़्मून भी था कि ''दो अ़मल तमाम आ'माल से अफ़्ज़ल हैं मगर जो इन की मिस्ल करे (1) ह़ज्जे मबरूर (2) मबरूर उ़म्रह।''

(مسند احمد، حدیث زید بن خالد الجھنی، رقم ۱۷۰۲۳، ج۶، ص۵۸)

(818)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह का ग़ाज़ी, ह़ाजी और उ़म्रह करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मेहमान हैं, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बुलाता है तो वोह लब्बैक कहते हैं और जब वोह उस से कुछ मांगते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़त़ा फ़रमाता है।''

(ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب فضل دعاالحاج، رقم ۲۸۹۳، ج۳، ص۴۱۰)
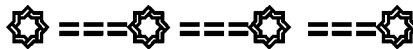
र-मज़ान में उ़म्रह करने का सवाब

(819)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''र-मज़ान में उ़म्रह करना एक ह़ज या मेरे साथ एक ह़ज करने के बराबर है।''

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل العمرۃ فی رمضان، رقم ۱۲۵۶، ص ۶۵۶)

एक रिवायत में है कि जब सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज करने का इरादा फ़रमाया तो एक सह़ाबी की ज़ौजा ने उन से कहा कि ''मुझे भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज अदा कराओ।'' उन्हों ने जवाब दिया, ''मेरे पास इतनी इस्तित़ाअ़त नहीं कि तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज करा सकूं।'' तो ज़ौजा ने कहा, ''अपने फ़ुलां ऊंट पर ह़ज करा दो।'' उस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा, ''वोह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में वक़्फ़ है।''

फिर वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी ज़ौजा ने आप की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया है और आप पर रह़मते ख़ुदा वन्दी के लिये दुआ़ गो है, वोह मुझ से तक़ाज़ा करती रही कि मैं उसे आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज कराऊं, मगर मैं ने उसे जवाब दिया कि मेरे पास इतनी इस्तित़ाअ़त नहीं कि तुम्हें ह़ज कराऊं तो उस ने कहा कि अपने फ़ुलां ऊंट पर ह़ज करा दो तो मैं ने कहा कि वोह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में वक़्फ़ है।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर तुम उसे उस ऊंट पर ह़ज करा देते तो भी वोह **अल्लाह** की राह ही में होता।'' फिर उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''उस ने मुझे कहा है कि मैं आप से पूछूं कि क्या शै आप के साथ ह़ज करने के बराबर है?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरी त़रफ़ से उसे सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व ब-र-कत की दुआ़ पहुंचा देना और उसे बताना कि र-मज़ान में उ़म्रह करना मेरे साथ ह़ज करने के बराबर है।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب المناسک، باب العمرۃ، رقم ۱۹۹۰، ج ۲، ص ۲۹۷)

(820)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मा'क़िल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं एक बूढ़ी और बीमार औ़रत हूं क्या कोई ऐसा अ़मल है जो मेरे ह़ज का बदल हो जाए?'' इर्शाद फ़रमाया, ''र-मज़ान में एक उ़म्रह करना एक ह़ज के बराबर है।''

(ابوداوٗد، کتاب المناسک، باب العمرۃ، رقم ۱۹۸۸، ج ۲، ص ۲۹۶)

(821)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़लीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में अ़र्ज़ किया, ''कौन सा अ़मल आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ज करने के बराबर है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''र-मज़ान में उ़म्रह करना।'' (طبرانی کبیر، رقم۸۱۶، ج۲۲،ص۳۲۴)

(822)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''अबू त़ल्ह़ा और उस के बेटे ह़ज के लिये चले गए और मुझे घर छोड़ गए हैं।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ उम्मे सुलैम ! र-मज़ान में उ़म्रह करना मेरे साथ ह़ज करने के बराबर है।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الحج، باب فضل الحج والعمرۃ، رقم۳۶۹۱، ج۲، ص۵)

हज और उम्रह के लिये निकलने वाले के फ़ौत हो जाने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (پ۵،النسآء:۱۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने घर से निकला **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का सवाब **अल्लाह** के ज़िम्मे पर हो गया और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

(823)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ खड़ा था कि अचानक सुवारी से गिर कर उस की गरदन टूट गई। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इसे पानी और बेरी के पत्तों के साथ गुस्ल दो और इसे इन्ही कपड़ों में कफ़नाओ और इस के सर को मत ढांपो और ख़ुश्बू न लगाओ क्यूं कि येह क़ियामत के दिन तल्बिया पढ़ता हुवा उठेगा।''

एक रिवायत में है कि एक शख़्स सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ह़ालते एह़राम में था। उस की ऊंटनी ने उसे गिरा कर उस की गरदन तोड़ दी और वोह मर गया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इसे पानी और बेरी के पत्तों से गुस्ल दो।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को हुक्म फ़रमाया, ''इसे पानी और बेरी के पत्तों के साथ गुस्ल दे कर इस का चेहरा (या फ़रमाया) इस का सर खोल दो क्यूं कि येह क़ियामत के दिन बुलन्द आवाज़ के साथ तल्बिया पढ़ते हुए उठेगा।''

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب ما یفعل بالمحرم اذا مات، رقم۱۲۰۶، ص۶۲۰،۶۲۲)

(824)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो ह़ज के इरादे से निकले और मर जाए उस के लिये क़ियामत तक ह़ज करने वाले का सवाब लिखा जाता रहेगा और जो उ़म्रह के इरादे से निकला और मर गया उस के लिये क़ियामत तक के लिये उ़म्रह करने वाले का सवाब लिखा जाता रहेगा और जो जिहाद के इरादे से निकला फिर मर गया तो उस के लिये क़ियामत तक जिहाद करने वाले का सवाब लिखा जाएगा।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی الحج والعمرۃ، رقم ۳۴، ج۲، ص۱۱۱)

(825)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो ह़ज के लिये मक्का के रास्ते में आते या जाते हुए मर गया उस से न तो कोई सुवाल होगा और न ही उस से ह़िसाब लिया जाएगा और उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب فی الحج والعمرۃ ماجاء فیمن خرج یقصد ھما فمات، رقم ۳۷، ج۲، ص۱۱۲)

(826)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह घर इस्लाम के अरकान में से एक रुक्न है तो जिस ने इस घर का ह़ज या उ़म्रह किया वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है अगर मर जाए तो उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और अगर अपने घर की त़रफ़ वापस हो तो सवाब व ग़नीमत ले कर लौटेगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب فضل الحج والعمرۃ، رقم ۵۲۷۵، ج۳، ص۴۷۹)

(827)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो उस सम्त ह़ज या उ़म्रह करने निकला फिर रास्ते में ही मर गया तो उस से कोई सुवाल न किया जाएगा और न ही उस का ह़िसाब होगा और उस से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जा।''

(المعجم الاوسط، رقم ۵۳۸۸، ج۴، ص۱۱۱)

हज और उम्रह के लिये खर्च करने का सवाब

(828)...... हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज के दौरान ख़र्च करने का सवाब राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में ख़र्च करने की त़रह सात सो गुना ज़ियादा मिलता है।''

(مسند احمد، حدیث بریدہ اسلمی، رقم ۲۳۰۶۱، ج۹، ص۲۱)

(829)...... हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज के दौरान ख़र्च करने का सवाब राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में ख़र्च करने की त़रह है एक दिरहम सात सो के बराबर है।'' (المعجم الاوسط، رقم ۵۲۷۴، ج۴، ص۷۸)

(830)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्रह के दौरान मुझ से फ़रमाया, ''तुझे तेरी थकावट और ख़र्च के मुत़ाबिक़ सवाब दिया जाएगा।''

(المستدرک، کتاب المناسک، باب الاجر علی قدر النفقۃ والتعب، رقم ۱۷۷۶، ج۲، ص۱۳۰)

(831)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज करने वाला कभी मो'मिर (मोहताज) नहीं हुवा।'' हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा गया, ''इम्आ़र (या'नी मो'मिर होना) क्या है ?'' फ़रमाया, ''फ़क़्रो तंगदस्ती।'' (المعجم الاوسط، رقم ۵۲۱۳، ج۴، ص۶۱)

(832)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज और उ़म्रह करने वाले **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मेहमान हैं अगर कुछ सुवाल करें तो उन्हें अ़ता किया जाता है और अगर दुआ़ करें तो क़बूल की जाती है और अगर एक दिरहम ख़र्च करें तो उन्हें इस का बदला एक दिरहम के दस लाख की सूरत में दिया जाता है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی النفقۃ فی الحج والعمرۃ، رقم ۵، ج۲، ص۱۱۳)

(833)...... हज़रते सय्यिदुना शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोजे़ शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज और उ़म्रह करने वाले **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के

मेहमान हैं कि अगर सुवाल करें तो उन्हें अ़ता किया जाए और अगर दुआ़ करें तो क़बूल की जाए और अगर ख़र्च करें तो उन्हें बदला दिया जाए, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में अबुल क़ासिम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है जब कोई मुकब्बिर किसी टीले पर **अल्लाहु अक्बर** कहता है या कोई शख़्स बुलन्द आवाज़ से तल्बिया पढ़ता है तो उस के सामने और जहां तक उस की निगाह जाती है वहां की हर शै भी तल्बिया पढ़ती और तक्बीर कहती है। (الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی النفقۃ فی الحج والعمرۃ، رقم ۴، ج۲، ص۱۱۳)

(834)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब कोई ह़ाजी ह़लाल माल के साथ ह़ज करने के लिये निकलता है और अपनी सुवारी की रिकाब में पाउं रख कर लब्बैक कहता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है لَبَّیْکَ وسَعْدَیْکَ तेरा ज़ादे राह ह़लाल है और तेरी सुवारी ह़लाल है और तेरा ह़ज मबरूर और गुनाहों से पाक है और जब कोई ह़ाजी ह़राम माल के साथ ह़ज करने के लिये निकलता है और अपना क़दम रिकाब में डाल कर لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْک कहता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है لَا لَبَّیْکَ وَلاسَعْدَیْکَ तेरा ज़ादे राह ह़राम है और नफ़क़ा ह़राम है और तेरा ह़ज गुनाहों से भरपूर है, मबरूर नहीं है ।'' (المعجم الاوسط، رقم ۵۲۲۸، ج۴، ص۶۵)

===۞===۞===۞===
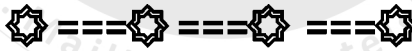
तल्बिया पढ़ने का सवाब

(835)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब कोई शख़्स तल्बिया पढ़ता है तो उस के दाएं बाएं दोनों त़रफ़ ज़मीन की इन्तिहा तक मौजूद दरख़्त और पथ्थर और मिट्टी उस के साथ तल्बिया पढ़ते हैं।'' (ترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی فضل التلبیہ والنحر، رقم ۸۲۹، ج۲، ص۲۲۶)

(836)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मोह़रिम (या'नी एह़राम बांधने वाला) दिन की इब्तिदा से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक तल्बिया पढ़ता है तो सूरज ग़ुरूब होते वक़्त उस के गुनाहों को साथ ले जाता है और वोह शख़्स गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसा उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।'' (ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب الظلال للمحرم، رقم ۲۹۲۵، ج۳، ص۴۴۴)

(837)...... इमाम त़-बरानी عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से इसी त़रह़ की एक रिवायत नक़्ल की है।

(838)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मेरे पास जिब्राईले अमीन عَلَیۡہِ السَّلَام ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि अपने सह़ाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان को हुक्म दीजिये कि तल्बिया पढ़ते वक़्त अपनी आवाज़ों को बुलन्द किया करें क्यूं कि बुलन्द आवाज़ से तल्बिया पढ़ना ह़ज के शिआ़र में से है।'' (ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب رفع الصوت بالتلبیہ، رقم ۲۹۲۳، ج۳، ص۴۴۳)

(839)...... इस रिवायत को अबू दावूद ने और तिरमिज़ी ने इसे सह़ीह़ क़रार दे कर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ल्लाद बिन साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से और उन्हों ने अपने वालिद से रिवायत किया।

(جامع الترمذی، کتاب الحج، باب، ماجاء فی رفع الصوات بالتلبیۃ، رقم ۸۳۰، ج۲، ص۲۲۷)

(840)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसल्मान अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करते हुए या ह़ज करने के लिये तह्लील या तल्बिया पढ़ते हुए चले तो सूरज उस के गुनाहों को ग़ुरूब होते वक़्त साथ ले जाता है और वोह मुसल्मान गुनाहों से पाक हो जाता है।'' (طبرانی اوسط، رقم ۶۱۶۵، ج۴، ص۳۳۷)

(841)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स बुलन्द आवाज़ के साथ तल्बिया पढ़ता है सूरज उस के गुनाहों को साथ ले कर ग़ुरूब होता है।''

(شعب الایمان، باب فی المناسک فصل فی الاحرام والتلبیۃ، رقم ۴۰۲۹، ج۳، ص۴۴۹)

(842)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''लब्बैक कहने वाला जब बुलन्द आवाज़ के साथ लब्बैक कहता है तो उसे बिशारत दी जाती है।'' अ़र्ज़ की गई, ''जन्नत की बिशारत दी जाती है ?'' फ़रमाया, ''हां।'' (طبرانی اوسط، رقم ۷۷۷۹، ج ۵، ص ۴۱۱)

(843)...... हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में अ़र्ज़ किया गया कि कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया, ''बुलन्द आवाज़ से तल्बिया पढ़ना और कुरबानी करना।'' (ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب رفع الصوت بالتلبیہ، رقم ۲۹۲۴، ج ۳، ص ۴۲۳)

मस्जिदे अक़्सा से एहराम बांधने वाले का सवाब

(844)...... हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो हज या उ़म्रह के लिये मस्जिदे अक़्सा से मस्जिदे हराम तक बुलन्द आवाज़ के साथ तल्बिया पढ़ता है उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं या उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।'' (यहां रावी को शक है कि गुनाहों की मग़्फ़िरत या जन्नत की बिशारत में से कौन सी बात इर्शाद फ़रमाई थी)

(سنن ابی داؤد، کتاب المناسک، باب فی المواقیت، رقم ۱۷۴۱، ج ۲، ص ۲۰۱)

एक रिवायत में है कि ''जो उ़म्रे के लिये बैतुल मुक़द्दस से एहराम बांध कर तल्बिया पढ़े उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب من اھل بعمرۃ من بیت المقدس، رقم ۳۰۰۱، ج ۳، ص ۴۶۱)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने मस्जिदे अक़्सा से उ़म्रह के लिये एहराम बांधते वक़्त तल्बिया पढ़ी उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।''

रावी कहते हैं कि हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे हकीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا बैतुल मुक़द्दस गईं और वहां से उ़म्रह के लिये तल्बिया पढ़ी। (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الحج، باب فضل الحج والعمرۃ، رقم ۳۶۹۳، ج ۶، ص ۵)

एक रिवायत में है कि जिस ने उ़म्रह के लिये बैतुल मुक़द्दस से तल्बिया पढ़ी तो उस का येह अ़मल उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा।

(سنن ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب من اھل بعمرۃ من بیت المقدس، رقم ۳۰۰۲، ج ۳، ص ۴۶۱)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने हज या उ़म्रह के लिये मस्जिदे अक़्सा से मस्जिदे हराम तक तल्बिया पढ़ी तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।'' (شعب الایمان، باب فی المناسک فصل فی الاحرام والتلبیہ، رقم ۴۰۲۶، ج ۳، ص ۴۴۸)

का'बतुल्लाह का त़वाफ़ और दोनों रुक्नों का इस्तिलाम करने का सवाब

(845)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्‌मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बैतुल्लाह के गिर्द त़वाफ़ करना नमाज़ ही है लेकिन तुम इस में कलाम कर सकते हो लिहाज़ा जो त़वाफ़ के दौरान गुफ़्त-गू करना चाहे तो वोह अच्छी बात ही कहे।'' (جامع الترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی الکلام فی الطواف، رقم ۹۶۲، ج۲، ص۲۸۶)

(846)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने पचास मरतबा बैतुल्लाह का त़वाफ़ किया वोह अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो गया जैसा उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।''

(ترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی فضل الطواف، رقم ۸۶۷، ج۲، ص۲۴۴)

(847)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिद साहिब को ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से येह कहते हुए सुना, ''क्या बात है कि मैं तुम्हें सिर्फ़ इन दो[2] रुक्नों ह़-जरे अस्वद और रुक्ने यमानी का ही इस्तिलाम करते देखता हूं ? तो सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने जवाब दिया, ''मैं ऐसा क्यूं न करूं ? मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''इन दोनों रुक्नों का इस्तिलाम करना गुनाहों को मिटा देता है।'' और मैं ने येह भी सुना कि ''जिस ने गिन कर सात मरतबा त़वाफ़ किया और फिर दो रक्अ़तें अदा कीं तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।'' और येह भी सुना कि ''त़वाफ़ करते हुए आदमी के हर क़दम के बदले उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के दस गुनाह मिटा दिये जाते हैं और दस द-रजात बुलन्द कर दिये जाते हैं।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمر بن الخطاب، رقم ۴۴۶۲، ج۲، ص۲۰۲)

एक रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''इन दोनों रुक्नों को छूना गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।'' और येह भी सुना कि ''बन्दे के एक क़दम रखने और दूसरा क़दम उठाने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मिटाता है और उस के लिये एक नेकी लिखता है।''

(جامع الترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی استلام الرکنین، رقم ۹۶۱، ج۲، ص۲۸۵)

एक रिवायत में है कि मैं ऐसा क्यूं न करूं ? मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''इन दो रुक्नों को छूना गुनाहों को मिटा देता है।'' और येह भी सुना कि ''जो

बैतुल्लाह का त़वाफ़ करते हुए कोई क़दम उठाए या रखे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखता है और उस का एक गुनाह मिटाता है और उस के लिये एक द-रजा लिखा जाता है।'' और मैं ने येह भी फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने गिन कर त़वाफ़ के सात चक्कर लगाए तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।'' (ابن خزیمہ، جماع ابواب ذکر افعال اختلف الناس، باب فضل الطواف بالبیت، رقم ۲۷۵۳، ج۴، ص۲۲۷)

(848)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने बैतुल्लाह का त़वाफ़ किया और दो रक्अ़तें अदा कीं तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।'' (ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب فضل الطواف، رقم ۲۹۵۶، ج۳، ص۴۳۹)

(849)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सात मरतबा बैतुल्लाह का त़वाफ़ किया और इस दौरान कोई लग्व काम न किया तो येह एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۸۴۵، ج۲۰، ص۳۶۰)

(850)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बैतुल ह़राम का ह़ज करने वालों पर रोज़ाना एक सो बीस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से साठ त़वाफ़ करने वालों के लिये चालीस नमाज़ियों के लिये और बीस देखने वालों के लिये हैं।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی الطواف الخ، رقم ۶، ج۲، ص۱۲۳)

(851)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुमैद बिन अबू सविय्या رَضِیَ اللہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने इब्ने हिशाम को बैतुल्लाह के त़वाफ़ के दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबी रियाह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रुक्ने यमानी के बारे में सुवाल करते हुए सुना, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझे येह ह़दीस बयान की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''(इस रुक्ने यमानी पर) सत्तर फ़िरिश्ते मुवक्कल (मुक़र्रर) हैं जब कोई शख़्स येह दुआ़ मांगता है तो वोह फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَۃَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

तरजमा : ऐ अल्लाह मैं तुझ से दुन्या और आख़िरत में अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं ऐ हमारे रब हमें दुन्या में भलाई अ़त़ा फ़रमा और आख़िरत में भलाई अ़त़ा फ़रमा और हमें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ त़वाफ़ करते हुए रुक्ने अस्वद पर पहुंचे तो इब्ने हिशाम ने अ़र्ज़ किया, ''ऐ अबू मुह़म्मद! तुम्हें इस रुक्ने अस्वद के मु-तअ़ल्लिक़ कौन सी रिवायत पहुंची है?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबी रबाह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''ह़ज़रते सय्यिदुना अबू

हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने रुक्ने अस्वद को पकड़ा गोया उस ने रहमान عَزَّوَجَلَّ का दस्ते कुदरत थाम लिया।'' फिर इब्ने हिशाम ने कहा, ''ऐ अबू मुहम्मद ! और तवाफ़ के बारे में ?'' तो हज़रते सय्यिदुना अता رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''मुझे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बताया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने सात मरतबा बैतुल्लाह का तवाफ़ किया और ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ'' पढ़ने के इलावा कोई बात न की तो उस के दस गुनाह मिटा दिये जाएंगे, उस के लिये दस नेकियां लिखी जाएंगी और उस के दस द-रजात बुलन्द किये जाएंगे और जिस ने तवाफ़ के दौरान बातें कीं तो उस ने इस हाल में रहमते इलाही عَزَّوَجَلَّ में अपने पाउं डुबोए जैसे पानी में दाखिल होने वाला अपने पाउं डुबोता है।''

(ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب فضل الطواف، رقم ۲۹۵۷، ج۳، ص ۴۳۹)

(852)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, ''जिस ने कामिल वुज़ू किया फिर रुक्न का इस्तिलाम करने आया तो वोह रहमत में डूब गया और जब वोह इस्तिलाम कर ले और येह पढ़े तो उसे रहमत ढांप लेती है :

''بِسْمِ اللّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ'' तरजमा : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ और **अल्लाह** सब से बड़ा है मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं और गवाही देता हूं कि हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।''

जब वोह बैतुल्लाह का तवाफ़ करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के हर क़दम पर उस के लिये सत्तर हज़ार नेकियां लिखता है और उस के सत्तर हज़ार गुनाह मिटाता है और उस के सत्तर हज़ार द-रजात बुलन्द फ़रमाता है और उस की अपने सत्तर रिश्तेदारों के हक़ में शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी फिर जब वोह मक़ामे इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام पर आ कर ईमान और निय्यते सवाब के साथ दो रक्अ़तें अदा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام में से चार गुलाम आज़ाद करने का सवाब लिखता है और वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی الطواف واستلام الحجر الاسود، رقم ۱۱، ج۲، ص ۱۲۴)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत गुज़र चुकी है कि, ''हाजी जब बैतुल्लाह के तवाफ़ का आख़िरी चक्कर मुकम्मल कर लेता है तो अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।''

(853)...... हज़रते सय्यिदुना अबू इक़ाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ने बारिश के दौरान हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया। जब हम तवाफ़ मुकम्मल करने के बा'द मक़ामे इब्राहीम पर हाज़िर हुए और दो रक्अ़तें अदा कीं तो

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हम से फ़रमाया कि ''नए सिरे से अ़मल शुरूअ़ करो क्यूं कि तुम्हारी मग़्फ़िरत हो चुकी है।'' फिर फ़रमाया कि जब हम ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बारिश के दौरान त़वाफ़ किया था तो आप صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से इसी त़रह फ़रमाया था।'' (ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب الطّواف فی مطر، رقم ۳۱۱۸، ج۳، ص۵۲۴)

(854)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ियामत के दिन रुक्ने अस्वद, ज-बले अबू कुबैस से बड़ा हो कर आएगा और उस की दो ज़बानें और होंट होंगे।''

(مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن عاص، رقم ۶۹۹۷، ج۲، ص۶۶۵)

(855)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़-जरे अस्वद के बारे में फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! रब तआ़ला क़ियामत के दिन इसे दो देखने वाली आंखों और बोलने वाली ज़बान के साथ उठाएगा फिर येह हक़ के साथ इस्तिलाम करने वालों के बारे में गवाही देगा।''

(جامع الترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی الحجر الاسود، رقم ۹۶۳، ج۲، ص۲۸۶)

एक रिवायत में है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन ह़-जरे अस्वद और रुक्ने यमानी को उठाएगा, उन में से हर एक की दो आंखें, दो ज़बानें और दो होंट होंगे जिन के ज़रीए़ येह अपना सह़ीह़ त़रीक़े से इस्तिलाम करने वालों के ह़क़ में गवाही देंगे।'' (المعجم الکبیر، رقم ۱۱۴۳۲، ج۱۱، ص۱۴۶)

(856)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़-जरे अस्वद जन्नत के याक़ूतों में से एक सफ़ेद याक़ूत है और इसे मुश्रिकीन के गुनाह ने सियाह कर दिया, क़ियामत के दिन इसे उहुद पहाड़ की मिस्ल बना दिया जाएगा तो येह दुन्या वालों में से अपना इस्तिलाम करने वालों और बोसा देने वालों के ह़क़ में गवाही देगा।'' (صحیح ابن خزیمہ، کتاب المناسک، رقم ۲۷۳۴، ج۴، ص۲۲۰)

एक रिवायत में है कि ''ह़-जरे अस्वद जन्नत से उतारा गया है येह दूध से ज़ियादा सफ़ेद था फिर इसे इन्सानों के गुनाहों ने सियाह कर दिया।''

(جامع الترمذی، کتاب الحج، باب ماجاء فی فضل الحجر الاسود والرکن، رقم ۸۷۸، ج۲، ص۲۴۸)

(857)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस ह़-जरे अस्वद को अपने अच्छे आ'माल का गवाह बनाओ क्यूं कि येह क़ियामत के दिन शफ़ाअ़त करेगा इस की शफ़ाअ़त क़बूल की

जाएगी, इस की दो ज़बानें, और दो होंट होंगे जिन के ज़रीए़ येह अपना इस्तिलाम करने वालों के ह़क़ में गवाही देगा।''
(المعجم الاوسط،رقم۲۹۷۱،ج۲،ص۱۸۸)

(858)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को का'बतुल्लाह शरीफ़ से टेक लगा कर फ़रमाते हुए सुना, ''रुक्न (अस्वद) और मक़ामे इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام जन्नत के याक़ूतों में से दो याक़ूत हैं, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन दोनों का नूर मिटा न देता तो येह मशरिक़ो मग़रिब की हर चीज़ को रोशन कर देते।''
(جامع الترمذی،کتاب الحج،باب ماجاء فی فضل الحجر والاسود والرکن،رقم۸۷۹،ج۲،ص۲۴۸)

एक रिवायत में है कि ''बेशक रुक्न (अस्वद) और मक़ामे इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام जन्नत के याक़ूतों में से हैं अगर येह अपने अन्दर आदमियों की ख़ताएं जज़्ब न करते तो मशरिक़ो मग़रिब की हर चीज़ को रोशन कर देते और जो बीमार या मुसीबत ज़दा इन्हें छू ले उसे शिफ़ा दे दी जाती है।''
(شعب الایمان،باب فی المناسک،فضل فضیلۃ الحجر الاسود والمقام،رقم۴۰۳۱،ج۳،ص۴۴۹)

✡===✡===✡ ===✡

बैतुल्लाह में दाखि़ल होने का सवाब

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है,

اِنَّ اَوَّلَ بَیۡتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیۡ بِبَکَّۃَ مُبٰرَکًا وَّہُدًی لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ۚ فِیۡہِ اٰیٰتٌۢ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبۡرٰہِیۡمَ ۬ۚ وَمَنۡ دَخَلَہٗ کَانَ اٰمِنًا ؕ (پ۴،آل عمران:۹۶۔۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक सब में पहला घर जो लोगों की इ़बादत को मुक़र्रर हुवा वोह है जो मक्का में है ब-र-कत वाला और सारे जहान का राहनुमा इस में खुली निशानियां हैं इब्राहीम के खड़े होने की जगह और जो इस में आए अमान में हो ।

(859)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बैतुल्लाह में दाखि़ल हुवा वोह भलाई में दाखि़ल हो गया और बुराई से पाक हो कर मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर निकला ।'' (صحیح ابن خزیمہ، کتاب المناسک، باب استحباب دخول الکعبۃ، رقم ۳۰۱۳، ج۴، ص۳۳۳)

हज के अ-शरे में अमल करने का सवाब

(860)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज के दस दिनों में किया गया अमल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को बक़िय्या दिनों में किये जाने वाले अमल से ज़ियादा महबूब है।'' सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करना भी ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''हां ! राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करना भी, सिवाए उस शख़्स के जो अपनी जानो माल के साथ निकले और इन दोनों में से कुछ भी वापस न लाए।'' (بخاری، کتاب العیدین، باب فضل العمل......الخ، رقم ۹۶۹، ج۱، ص ۳۳۳)

एक रिवायत में है, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कोई नेक अमल कुरबानी के दस दिनों में किये जाने वाले अमल से ज़ियादा पाकीज़ा और सवाब वाला नहीं।''

(کنز العمال، کتاب الفضائل، باب الاکمال، رقم ۳۵۱۸۲، ج۱۲، ص ۱۴۱)

(861)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कोई दिन, अ-श-रए हज से अफ़्ज़ल नहीं।'' तो एक शख़्स ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह दस दिन अफ़्ज़ल हैं या राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के दस दिन ?'' फ़रमाया, ''येह दस दिन राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के दस दिनों से अफ़्ज़ल हैं सिवाए उस शख़्स के जिस का चेहरा ख़ाक आलूद हो गया हो।''

एक रिवायत में है कि फ़रमाया ''अय्यामे दुन्या में से अफ़्ज़ल दिन हज के दस दिन हैं।'' अर्ज़ किया गया, ''क्या राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने के दस दिन भी नहीं ?'' फ़रमाया, ''राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के दस दिन भी नहीं मगर वोह शख़्स कि जिस का चेहरा ख़ाक आलूद हो गया हो।''

(ابویعلی الموصلی مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۲۰۸۶، ج۲، ص ۲۹۹)

(862)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक हज के इन दस दिनों से अफ़्ज़ल और पसन्दीदा कोई दिन नहीं लिहाज़ा इन दिनों में اَللّٰہُ اَکْبَرُ और سُبْحَانَ اللّٰہِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ، لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ की कसरत किया करो।''

एक रिवायत में है कि ''इन दिनों में سُبْحَانَ اللّٰہِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ، لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ और ज़िक्रुल्लाह की कसरत किया करो और इन में से एक दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर है और इन दिनों में अमल को सात सो गुना बढ़ा दिया जाता है।'' (شعب الایمان، باب فی الصیام، فصل تخصیص ایام العشر......الخ، رقم ۳۷۵۸، ج۳، ص ۳۵۶)

(863)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज के दस अय्याम में

अल्लाह की इबादत उस के नज़्दीक दीगर अय्याम की निस्बत ज़ियादा महबूब है और इन में से हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों के बराबर है और इन में से हर रात का क़ियाम शबे क़द्र में क़ियाम के बराबर है।''

(ترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی العمل فی ایام العشر، رقم ۷۵۸، ج۲، ص۱۹۲)

(864)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''ह़ज के दस दिनों में से हर दिन को हज़ार दिनों के बराबर और अ़-रफ़ा के दिन को दस हज़ार दिनों के बराबर समझा जाता था।''

(شعب الایمان، باب فی الصیام، تخصیص یوم عرفۃ بالذکر، رقم ۳۷۶۴، ج۳، ص۳۵۸)

(865)...... इमाम औज़ाई عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ बनी मख़्ज़ूम के एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इन दस दिनों में अ़मल करना राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में दिन में रोज़ा रखने और रात में हिफ़ाज़त करते हुए जिहाद करने के बराबर है सिवाए उस शख़्स के जिसे रुत्बए शहादत मिल जाए।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب فی الموقوف بعرفۃ وفضل یوم عرفۃ، رقم ۸، ج۲، ص۱۲۸)

ह़ज के लिये वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा करने वाले का सवाब

(866)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मिना की मस्जिद में बैठा हुवा था कि आप की ख़िदमत में एक अन्सारी और एक स-क़फ़ी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ह़ाज़िर हुए और सलाम अ़र्ज़ करने के बा'द अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम आप से सुवाल पूछने के लिये ह़ाज़िर हुए हैं।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''अगर तुम चाहो तो मैं तुम दोनों को बता दूं कि तुम क्या सुवाल पूछने आए हो और अगर चाहो तो मैं रुक जाऊं और तुम मुझ से सुवाल करो?'' उन दोनों ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ख़ुद ही बता दें।'' तो स-क़फ़ी सह़ाबी ने अन्सारी सह़ाबी से कहा तुम सुवाल करो तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ख़ुद ही इर्शाद फ़रमा दीजिये।''

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम मुझ से घर से बैतुल ह़राम की निय्यत से निकलने और उस के सवाब और त़वाफ़ के बा'द की दो रक्अ़तों और उन के सवाब और सफ़ा व मर्वह की सअ्य और उस के सवाब और अ़-रफ़ा में वुक़ूफ़ और उस के सवाब और रम्ये जिमार और उस के सवाब और अपनी क़ुरबानी और अ़-रफ़ा से वापसी के सवाब के बारे में सुवाल करने आए हो।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस ने आप को ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया ! मैं सिर्फ़ येही सुवाल करने आया हूं।'' आप ने फ़रमाया, ''जब तू अपने घर से बैतुल ह़राम का क़स्द कर के निकला था तो तेरी ऊंटनी के हर क़दम के बदले तेरे लिये एक नेकी लिखी गई और तेरा एक गुनाह मिटा दिया गया और तेरा त़वाफ़ के बा'द दो रक्अ़तें अदा करना औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام में से एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है और तेरा सफ़ा व मर्वह की सअ्य करना सत्तर ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है और रहा तेरा

अ़-रफ़ा की रात में वुकूफ़ करना तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस रात में आस्माने दुन्या पर (अपनी शान के लाइक़) नुज़ूल फ़रमा कर मलाएका के सामने तुम पर फ़ख़्र करते हुए फ़रमाता है कि "मेरे बन्दे गर्द आलूद हो कर हर घाटी से मेरी जन्नत की उम्मीद रखते हुए मेरे पास आए हैं, अगर इन के गुनाह रैत के ज़र्रों या बारिश के क़तरों या समुन्दर की झाग के बराबर भी हुए तो मैं ज़रूर उन गुनाहों को मिटा दूंगा, फिर फ़रमाता है कि तुम और जिन की तुम ने सिफ़ारिश की सब मग़िफ़रत याफ़्ता हो कर लौट जाओ।" और तुम्हारा जमरात की रमी करना तो तुम्हारी फेंकी हुई हर कंकरी हलाकत ख़ेज़ गुनाहे कबीरा में से एक गुनाह का कफ़्फ़ारा है और तुम्हारी क़ुरबानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास तुम्हारे लिये ज़ख़ीरा है और तुम्हारे सर मुंडाने में हर बाल के इवज़ तुम्हारे लिये एक नेकी है और इस के इवज़ तुम्हारा एक गुनाह मिटा दिया जाता है और इस के बा'द तुम बैतुल्लाह का त़वाफ़ करो तो तुम्हारा कोई गुनाह बाक़ी न रहेगा और एक फ़िरिश्ता आ कर अपने हाथ तुम्हारे कन्धों पर रख कर कहेगा कि नए सिरे से अ़मल शुरूअ़ करो क्यूं कि तुम्हारे पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये गए हैं।"

(مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب فضل الحج، رقم ۵۲۴۸، ج۳، ص۵۹۹)

(867)...... इमाम त़-बरानी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से येही ह़दीस रिवायत करते हैं लेकिन इस में येह अल्फ़ाज़ हैं कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "और जब तुम बैते अ़तीक़ की निय्यत से खड़े हो तो तुम्हारे और तुम्हारी सुवारी के हर क़दम के बदले तुम्हारे लिये एक नेकी लिखी जाती है और एक द-रजा बुलन्द कर दिया जाता है और जब तुम अ़-रफ़ा में वुक़ूफ़ करते हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मलाएका से फ़रमाता है, "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे किस लिये आए हैं ?" फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, "तेरी रिज़ा और जन्नत की त़लब में आए हैं।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, "मैं अपने आप को और अपनी मख़्लूक़ को गवाह बनाता हूं कि मैं ने इन की मग़िफ़रत फ़रमा दी अगर्चे इन के गुनाह ज़माने के दिनों या टीलों की रैत के ज़र्रों के बराबर हों।" और रहा तुम्हारा जिमार की रमी करना तो अल्लाह फ़रमाता है,

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ (پ۲۱، السجدۃ:۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

और अपने सर को मुंडवाने में ज़मीन पर गिरने वाला हर बाल क़ियामत के दिन तुम्हारे लिये नूर होगा और रुख़्सत होते वक़्त बैतुल्लाह का त़वाफ़ करने की वजह से तुम गुनाहों से इस त़रह़ निकल जाते हो जिस त़रह़ उस दिन थे जब तुम्हारी मां ने तुम्हें जना था।"

(طبرانی اوسط، مسند عبادۃ بن صامت، رقم ۲۳۲۰، ج۲، ص۱۳)

(868)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आस्मान वालों के सामने वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा करने वालों पर फ़ख़्र फ़रमाता है और उन से फ़रमाता है कि मेरे बन्दों को देखो मेरे पास परागन्दा सर, गुबार आलूद हो कर ह़ाज़िर हुए हैं।"

(المستدرک، کتاب المناسک، باب ان اللہ یباھی باھل عرفات الخ، رقم ۱۷۵۱، ج۲، ص۱۲۰)

(869)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़-रफ़ा की रात अपने मलाएका के सामने अ़-रफ़ात वालों पर फ़ख़्र फ़रमाता है और उन से फ़रमाता है कि मेरे ख़ाक आलूद परागन्दा सर बन्दों की त़रफ़ देखो।''

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۷۱۱۱، ج۲، ص۶۹۲)

(870)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़-रफ़ा के दिन तमाम दिनों से ज़ियादा बन्दों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमाता है और उन पर क़रीब से तजल्ली फ़रमाता है फिर उन बन्दों पर फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़्र करते हुए इर्शाद फ़रमाता है कि येह क्या चाहते हैं ?......اِلخ'' (صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل الحج والعمرۃ، رقم ۱۳۴۸، ص۷۰۳)

(871)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''अगर येह जम्अ़ होने वाले लोग जानते कि किस ह़ाल में एह़राम से निकले हैं तो मग़्फ़िरत के बा'द फ़ज़्ल मिलने पर ख़ुश हो जाते।'' (طبرانی کبیر، مسند ابن عباس، رقم ۱۱۰۲۲، ج۱۱، ص۴۵)

(872)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ज़ुल ह़िज्जा के दस दिनों से कोई दिन अफ़्ज़ल नहीं।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह दस दिन अफ़्ज़ल हैं... या... राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में इतने ही दिन जिहाद करना ?'' फ़रमाया, ''येह दिन राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दस दिन जिहाद करने से अफ़्ज़ल हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कोई दिन अ़-रफ़ा के दिन से अफ़्ज़ल नहीं, इस दिन अल्लाह तआ़ला आस्माने दुन्या पर (अपनी शान के लाइक़) नुज़ूल फ़रमाता है और आस्मान वालों के सामने ज़मीन वालों पर फ़ख़्र करते हुए फ़रमाता है कि ''मेरे इन बन्दों की त़रफ़ देखो परागन्दा सर ग़ुबार आलूद हो कर सूरज की तपिश बरदाश्त करते हुए, हर वादी से सफ़र करते हुए मेरे पास रह़मत की उम्मीद ले कर आए हैं ह़ालां कि इन्हों ने मेरा अ़ज़ाब नहीं देखा।'' फिर अ़-रफ़ा के दिन से ज़ियादा बन्दे किसी और दिन में जहन्नम से आज़ाद नहीं किये जाते।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الحج، باب الوقوف بعرفۃ والمزدلفۃ، رقم ۳۸۴۲، ج۶، ص۶۲)

एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने इन की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।'' तो मलाएका अ़र्ज़ करते हैं, ''इन में फ़ुलां फ़ुलां बदकार बन्दे भी हैं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''मैं ने उन्हें भी बख़्श दिया।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی وقوف العرفۃ، رقم ۱، ج۲، ص۱۲۸)

(873)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन मिरदास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल

मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़-रफ़ा की रात अपनी उम्मत के लिये दुआ़ मांगी तो जवाब दिया गया कि "मैं ने ज़ालिम के इ़लावा सब की मग़्फ़िरत फ़रमा दी क्यूं कि मैं मज़्लूम का ह़क़ लेने के लिये ज़ालिम की पकड़ ज़रूर फ़रमाऊंगा।" तो मुअमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी में अ़र्ज़ किया, "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू चाहे तो मज़्लूम को जन्नत अ़ता फ़रमा दे और ज़ालिम को बख़्श दे।" तो अ़-रफ़ा की रात इस का जवाब नहीं दिया गया।

सुब्ह़ जब मुज़्दलिफ़ा पहुंचे तो दोबारा येही दुआ़ मांगी तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की येह दुआ़ क़बूल फ़रमा ली गई। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराने लगे तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! येह तो वोह वक़्त है जिस में आप मुस्कुराया नहीं करते, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को हमेशा मुस्कुराता रखे, आप क्यूं मुस्कुरा रहे हैं ?" फ़रमाया, "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन इब्लीस को पता चला कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी दुआ़ क़बूल फ़रमा कर मेरी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा दी है तो वोह अपने सर पर ख़ाक डालने लगा और आहो फ़ुग़ां करने लगा तो मैं उस की परेशानी को देख कर मुस्कुरा दिया।"

(ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب الدعاء بعرفۃ، رقم ۳۰۱۳، ج۳،ص ۴۶۶)

(मुअल्लिफ़ फ़रमाते हैं कि) अ़ल्लामा बैहक़ी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं इस ह़दीस के बहुत से शवाहिद हैं जिन्हें हम ने "किताबुल बा'स" में ज़िक्र किया है। अगर इस ह़दीसे पाक को शवाहिद की बिना पर सहीह़ तस्लीम कर लिया जाए तो इस में ह़ुज्जत है वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान ही इस ह़दीस की ताईद के लिये काफ़ी है,

وَيَغْفِرُ مَادُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ (پ۵،النساء:۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कुफ़्र से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआ़फ़ फ़रमा देता है।

(874)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़-रफ़ात में वुक़ूफ़ फ़रमाया तो सूरज ग़ुरूब होने वाला था। आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, "ऐ बिलाल ! लोगों को मेरे लिये ख़ामोश कराओ।" ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ खड़े हुए और लोगों से कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ख़ामोश हो जाओ तो लोग ख़ामोश हो गए। फिर आप ने फ़रमाया, "ऐ लोगो ! अभी जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلام मेरे पास आए थे और मुझे रब عَزَّوَجَلَّ का सलाम पेश कर के कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अ़-रफ़ात और मुश्इ़रे ह़राम वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा दी और उन के आपस में एक

दूसरे पर किये जाने वाले मज़ालिम को उन से उठा लिया।'' ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या येह हमारे लिये ख़ास है ?'' फ़रमाया, ''येह तुम्हारे और तुम्हारे बा'द क़ियामत तक आने वालों के लिये है।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत ज़ियादा और बहुत पाकीज़ा है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب الترغیب فی الوقوف بعرفۃ والمزدلفۃ، رقم ۷، ج ۳، ص ۱۳۰)

एक रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़-रफ़ात वालों पर फ़ज़्ल फ़रमाते हुए मलाएका के सामने फ़ख़्र फ़रमाता है और फ़रमाता है, ''ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे ग़ुबार आलूद, परागन्दा सर बन्दों को देखो जो हर वादी से सफ़र करते हुए मेरे पास ह़ाज़िर हुए हैं, मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने इन की दुआएं क़बूल कीं और इन की मरग़ूब चीज़ के बारे में इन की सिफ़ारिश क़बूल की, इन में से बुरे लोगों को अच्छों की वजह से अ़त़ा किया और अच्छों को सिवाए इन के आपस के लैन दैन के जो कुछ इन्हों ने मांगा, अ़त़ा फ़रमा दिया।''

जब लोग वुक़ूफ़ करते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रग़बत व मुत़ा-लबा दोहराते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे बन्दे ठहरे रहे और रग़बत व मुत़ा-लबा करते रहे मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने इन की दुआएं क़बूल फ़रमा लीं और इन की मरग़ूब चीज़ के बारे में इन की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा ली और इन में से बुरे लोगों को अच्छों की वजह से अ़त़ा फ़रमा दिया और इन के आपस के मज़ालिम का ज़ामिन हो गया।'' (مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب فضیلۃ الوقوف الخ، رقم ۵۵۲۹، ج ۳، ص ۵۱۹)

(875)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसल्मान अ़-रफ़ा की रात मौक़िफ़ में वुक़ूफ़ करे फिर क़िब्ला की त़रफ़ रुख़ कर के सो मरतबा لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَعَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ पढ़े फिर सो मरतबा قُلْ ھُوَاللّٰہُ اَحَدٌ पढ़े फिर सो मरतबा येह पढ़े ''اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ وَعَلَیْنَا مَعَھُمْ'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! मेरे इस बन्दे की जज़ा क्या है ? इस ने मेरी पाकी बयान की और मुझे अपना ख़ुदाए वाह़िद तस्लीम किया और मेरी अ़-ज़्-मतो बड़ाई बयान की और मुझे पहचान लिया और मेरी ता'रीफ़ बयान की और मेरे नबी पर दुरूद भेजा, ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ कि मैं ने इसे बख़्श दिया और इस की शफ़ाअ़त इस के ह़क़ में क़बूल फ़रमा ली, अगर मेरा येह बन्दा मुझ से सुवाल करे तो मैं मौक़िफ़ वालों के ह़क़ में इस की शफ़ाअ़त ज़रूर क़बूल फ़रमाऊंगा।''

(شعب الایمان، باب المناسک، فصل فضل الوقوف لعرفات، رقم ۴۰۷۴، ج ۳، ص ۴۶۳)

अ-रफ़ा के दिन अपनी समाअ़त और नज़र की हि़फ़ाज़त करने का सवाब

(876)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि फुलां शख़्स अ़-रफ़ा के दिन हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का रदीफ़ था (या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुवारी पर सुवार था) वोह नौ जवान औ़रतों को देखने लगा और औ़रतों ने भी उस की त़रफ़ देखा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ नौ जवान ! येह वोह दिन है कि जो शख़्स इस में अपनी समाअ़त, बसारत और ज़बान पर क़ाबू पा ले उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' (ابن خزیمہ، کتاب الحج، باب فضل حفظ البصر والسمع الخ، رقم ۲۸۳۲، ج۴، ص۲۶۱)

(877)...... ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अ़-रफ़ा के दिन अपनी ज़बान, समाअ़त और बसारत की हि़फ़ाज़त करे उस के इस साल से अगले साल तक के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।''

(شعب الایمان، باب فی الصیام، فصل تخصیص یوم عرفۃ بالذکر، رقم ۳۷۶۸، ج۳، ص۳۵۸)

शैतान को कंकरियां मारने का सवाब

(878)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी वैसी ही रिवायत मन्क़ूल है जैसी रिवायत पिछले सफ़ह़ात में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के ह़वाले से गुज़री, लेकिन उस में येह अल्फ़ाज़ हैं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''और जहां तक तुम्हारे अ़-रफ़ात में वुक़ूफ़ करने की बात है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अ़-रफ़ात वालों पर तजल्ली फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाता है, ''मेरे बन्दे ग़ुबार आलूद परागन्दा सर हो कर मेरे पास हर वादी से सफ़र कर के आए हैं।'' फिर मलाएका के सामने उन पर फ़ख़्र फ़रमाता है, लिहाज़ा ! अगर तुम्हारे गुनाह रैत के ज़र्रात, आस्मान के सितारों और समुन्दर और बारिश के क़त़रों के बराबर भी हों तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा देगा और तुम्हारा जिमार की रमी करना तो वोह तुम्हारे लिये अपने रब عَزَّ وَجَلَّ के पास तुम्हारे मोह़ताजी के वक़्त के लिये ज़ख़ीरा है और सर मुंडवाने में तुम्हारे सर से गिरने वाले हर बाल के इवज़ क़ियामत के दिन एक नूर होगा और रहा, बैतुल्लाह का त़वाफ़ करना तो जब तुम त़वाफ़ कर के वापस लौटोगे तो तुम अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाओगे जैसे उस दिन थे जिस दिन तुम्हारी मां ने तुम्हें जना था।''

(879)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि ''शैत़ान को कंकरियां मारने में हमारे लिये क्या सवाब है ?'' तो आप ने फ़रमाया, ''इसे (या'नी कंकरियों को) तुम इन्तिहाई ज़रूरत के वक़्त अपने रब عَزَّ وَجَلَّ के पास पाओगे।'' (طبرانی کبیر، مسند ابن عمر، رقم ۱۳۳۷۹، ج ۱۲، ص ۳۰۶)

(880)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारा शैत़ान को कंकरियां मारना क़ियामत के दिन तुम्हारे लिये नूर होगा।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب فی رمی الجمار، رقم ۴، ج ۲، ص ۱۳۴)

(881)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام मनासिके ह़ज की अदाएगी के लिये आए तो जमरए अ़-क़बा के पास आप के सामने शैत़ान आ गया। आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उसे सात पथ्थर मारे यहां तक कि वोह ज़मीन में धंस गया, फिर जमरए सानिया के पास आप عَلَیْہِ السَّلَام का उस से सामना हुवा तो आप ने उसे सात पथ्थर मारे यहां तक कि वोह ज़मीन में धंस गया, फिर जमरए सालिसा के पास आप عَلَیْہِ السَّلَام का उस से सामना हुवा तो आप ने उसे सात पथ्थर मारे तो वोह ज़मीन में धंस गया।'' इस के बा'द म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''और येह तुम्हारे बाप इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का त़रीक़ा है जिस की तुम पैरवी करते हो।''

(المستدرک، کتاب المناسک، باب رمی الجمار، رقم ۱۷۵۶، ج ۲، ص ۱۲۲)

हज में सर मुंडाने का सवाब

इस से पहले हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत गुज़र चुकी है जिस में येह मज़्मून भी था कि "सर मुंडवाते हुए तुम्हारे सर से गिरने वाला हर बाल क़ियामत के दिन तुम्हारे लिये नूर होगा।" और इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत में येह मज़्मून था कि "जहां तक तुम्हारा सर मुंडवाने की बात है तो तुम्हारे सर से गिरने वाले हर बाल के इवज़ तुम्हारे लिये एक नेकी लिखी जाती है। और तुम्हारा एक गुनाह मिटा दिया जाता है।"

(882)...... हज़रते सय्यि-दतुना उम्मुल हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हिज्जतुल वदाअ़ के मौक़अ़ पर सर मुंडाने वालों के लिये तीन मरतबा और तक़्सीर कराने (या'नी बाल कटवाने) वालों के लिये एक मरतबा दुआ़ करते हुए सुना।

(صحیح مسلم، کتاب المناسک، باب تفضیل الحلق علی التقصیر، رقم ۱۳۰۳، ص ۶۷۷)

(883)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हल्क़ कराने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और तक़्सीर कराने वालों की भी ?" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर दुआ़ फ़रमाई, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! सर मुंडवाने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और तक़्सीर कराने वालों की भी ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर दुआ़ फ़रमाई, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! सर मुंडवाने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और तक़्सीर कराने वालों की भी ?" फ़रमाया, "और तक़्सीर कराने वालों की भी।"

(صحیح بخاری، کتاب الحج، باب الحلق والتقصیر عند الاحلال، رقم ۱۷۲۸، ج ۱، ص ۵۷۴)

कुरबानी करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है,

وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَامِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ (پ۱۷،الحج:۳۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और जो **अल्लाह** के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह दिलों की परहेज़ गारी से है।

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं ''وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ'' से कुरबानी के जानवरों की ता'ज़ीम और उन्हें फ़रबा करना मुराद है। (الدرالمنثور،الحج:۳۲،ج۶،ص۴۶)

(884)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कुरबानी के दिन आदमी का कोई अमल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ख़ून बहाने से ज़ियादा महबूब नहीं है और वोह जानवर क़ियामत के दिन अपने सींगों, बालों और खुरों के साथ आएगा और कुरबानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंच जाता है लिहाज़ा ख़ुशदिली से कुरबानी किया करो।'' (ترمذی،کتاب الاضاحی،باب فی فضل الاضحیہ،رقم ۱۴۹۸،ج۳،ص۱۶۲)

(885)...... हज़रते सय्यिदुना अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ फ़ातिमा ! उठो और अपनी कुरबानी का जानवर ले कर आओ क्यूं कि इस के ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही तुम्हारे तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे और क़ियामत के दिन इस का ख़ून और इस का गोश्त सत्तर गुना इज़ाफ़े के साथ तुम्हारी मीज़ान में रखा जाएगा।'' हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह बिशारत सिर्फ़ आले मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ख़ास है क्यूं कि येह हर ख़ैर के साथ ख़ास किये जाने के अहल हैं या येह बिशारत आले मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये ख़ुसूसन और दीगर मुसल्मानों के लिये उमूमन है ?'' फ़रमाया, ''आले मुहम्मद के लिये बिल ख़ुसूस और दीगर मुसल्मानों के लिये उमूमी तौर पर है।'' (الترغیب والترھیب،کتاب الاضحیہ،رقم ۳،ج۲،ص۱۰۰)

(886)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ फ़ातिमा ! उठो और अपनी कुरबानी का जानवर लाओ क्यूं कि तुम्हारे लिये इस के ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही पिछले गुनाहों की मग़फ़िरत कर दी जाती है।'' हज़रते सय्यि-दतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह बिशारत सिर्फ़ हमारे (या'नी अहले बैत के) लिये ख़ास है या दीगर मुसल्मानों के लिये भी है ?'' फ़रमाया, ''बल्कि हमारे और दीगर मुसल्मानों सब के लिये है।''

(المستدرک،کتاب الاضاحی،باب یغفر لمن یضحی عند اول قطرۃ تقطر من الدم،رقم ۷۶۰۰،ج۵،ص۳۱۴)

(887)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''लोगो ! कुरबानी करो और इन के ख़ून पर सवाब की उम्मीद करते हुए सब्र करो क्यूं कि ख़ून अगर ज़मीन पर गिरे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हिफ़ाज़त में गिरता है।'' (طبرانی اوسط، رقم ۸۳۱۹، ج ۶، ص ۱۴۸)

(888)...... हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सवाब की उम्मीद पर ख़ुशदिली से कुरबानी करे तो वोह कुरबानी उस के लिये जहन्नम से हिजाब होगी।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاضاحی، باب فضل الاضحیہ، رقم ۵۹۳۷، ج ۴، ص ۹)

(889)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ईद के दिन कुरबानी में ख़र्च करना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को सब से ज़ियादा महबूब है।'' (معجم کبیر، مسند ابن عباس، رقم ۱۰۸۹۴، ج ۱۱، ص ۱۵)

(890)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कुरबानियां क्या हैं ?'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''तुम्हारे बाप इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की सुन्नत हैं।'' सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इन में हमारे लिये क्या सवाब है ?'' फ़रमाया, ''हर बाल के बदले एक नेकी है।'' अ़र्ज़ किया, ''और ऊन में ?'' फ़रमाया, ''इस के हर बाल के बदले भी एक नेकी है।''

(ابن ماجہ، کتاب الاضاحی، باب ثواب الاضحیہ، رقم ۳۱۲۷، ج ۳، ص ۵۳۱)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
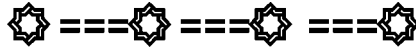
आबे ज़मज़म पीने का सवाब

(891)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आबे ज़मज़म उसी मक़्सद के लिये है जिस के लिये इसे पिया जाए, अगर तू इसे शिफ़ा की ग़रज़ से पियेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे शिफ़ा देगा और अगर तू शिकम सैरी के लिये पियेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे शिकम सैर फ़रमा देगा और अगर तू इसे अपनी प्यास बुझाने के लिये पियेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी प्यास बुझा देगा और अगर तू इसे पनाह हासिल करने के लिये पियेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे पनाह अता फ़रमाएगा।''

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब आबे ज़मज़म पीते तो येह दुआ मांगते ''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ عِلْمًا نَافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَاءً مِّنْ کُلِّ دَاءٍ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से नफ़्अ देने वाला इल्म, वसीअ रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा का सुवाल करता हूं।''

(المستدرک، کتاب المناسک، باب ماء زمزم لما شرب لہ، رقم ۱۷۸۲، ج۲، ص۱۳۲ بتغیر قلیل)

(892)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''आबे ज़मज़म उसी मक़्सद के लिये है जिस के लिये इसे पिया जाए।'' (ابن ماجہ، کتاب المناسک، باب الشرب من زمزم، رقم ۳۰۶۲، ج۳، ص۴۹۰)

(893)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللہُ عَنْہُ के गुलाम हज़रते सय्यिदुना हसन बिन ईसा رَضِیَ اللہُ عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِیَ اللہُ عَنْہُ को ज़मज़म के कूंएं पर आते देखा। आप ने एक डोल पानी पिया और क़िब्ला रुख़ हो कर दुआ मांगी, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अब्दुल्लाह बिन मुअम्मिल ने अबू ज़ुबैर से उन्हों ने जाबिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत करते हुए येह ह़दीस बयान की है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आबे ज़मज़म उसी के लिये है जिस के लिये इसे पिया जाए।'' लिहाज़ा मैं क़ियामत की प्यास से तहफ़्फ़ुज़ के लिये इसे पी रहा हूं। (شعب الایمان، باب فی المناسک، فضل الحج، رقم ۴۲۱۸، ج۳، ص۴۸۱)

(894)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सत़्हे ज़मीन पर सब से बेहतर पानी आबे ज़मज़म है कि येह एक क़िस्म का खाना भी है और बीमारी से शिफ़ा भी है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب فی زمزم، رقم ۵۷۱۲، ج۳، ص۶۲۱)

मदीनए मुनव्वरह में रिहाइश का सवाब

(895)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर लोग जानते कि मदीनए मुनव्वरह इन के लिये बेहतर है और जो इस शह्‌र से मुंह फैर कर इसे छोड़ देगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से बेहतर लोगों को इस शह्‌र में बसा देगा और जो इस में तंगदस्ती और यहां की तकालीफ़ पर साबित क़दम रहेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या गवाही दूंगा।''

(مسلم، کتاب الحج، باب فضل المدینۃ، رقم ۱۳۶۳، ص ۷۰۹)

(896)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मेरी उम्मत में से मदीने में तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र करेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के लिये गवाही दूंगा।'' (مسلم، کتاب الحج، باب الترغیب فی سکنی المدینۃ، رقم ۱۳۷۸، ص ۷۱۶)

(897)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मदीनए मुनव्वरह में चीज़ों के निर्ख़ बढ़ गए और ह़ालात सख़्त हो गए तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब्र करो और खुश हो जाओ कि मैं ने तुम्हारे साअ़ और मुद को बा ब-र-कत कर दिया और इकठ्ठे हो कर खाया करो क्यूं कि एक का खाना दो को किफ़ायत करता है और दो का खाना चार को किफ़ायत करता है और चार का खाना पांच और छ को किफ़ायत करता है और बेशक ब-र-कत जमाअ़त में है तो जिस ने मदीने की तंगदस्ती और सख़्ती पर सब्र किया मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के ह़क़ में गवाही दूंगा और जो इस के ह़ालात से मुंह फैर कर मदीने से निकला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बेहतर लोगों को इस में बसा देगा और जिस ने मदीने से बुराई करने का इरादा किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस त़रह़ पिघला देगा जैसे नमक पानी में पिघल जाता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب الصبر علی جھد المدینۃ، رقم ۵۸۱۹، ج ۳، ص ۶۵۷)

(898)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अफ़्लह़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन साबित और सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا के क़रीब से गुज़रा। येह दोनों ''मस्जिदे जनाइज़'' के पास बैठे हुए थे। उन में से एक ने दूसरे से पूछा, ''क्या तुम्हें वोह बात याद है जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें इसी मस्जिद में बयान फ़रमाई थी?'' तो दूसरे ने कहा, ''हां मदीने शरीफ़ के बारे में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़याल था कि अ़न्क़रीब लोगों पर एक ज़माना आएगा जिस में ज़मीन की फ़ुतूहात खोल दी जाएंगी और लोग उस की त़रफ़ निकल खड़े होंगे तो वोह खुशह़ाली और ऐशो इ़श्रत और लज़ीज़ खाने पाएंगे फिर अपने ह़ज या उ़म्रह करने वाले भाइयों के पास से

गुज़रेंगे तो उन से कहेंगे तुम तंगदस्ती और सख़्त भूक की ज़िन्दगी क्यूं गुज़ार रहे हो ? रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कई मरतबा येह जुम्ला दोहराया कि "जाने वाला और रह जाने वाला" और मदीना उन के लिये बेहतर है जो इस में ठहरा रहे और मरने तक तंगदस्ती व सख़्ती पर सब्र करे मैं उस की गवाही दूंगा या शफ़ाअ़त करूंगा।" (المعجم الكبير للطبرانی، رقم ۳۹۸۵، ج۴، ص ۱۵۳)

(899)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मेरी इस मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मस्जिदे ह़राम के इ़लावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़्ज़ल है और मेरी इस मस्जिद में एक जुमुआ़ अदा करना मस्जिदे ह़राम के इ़लावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार जुमुआ़ अदा करने से अफ़्ज़ल है और मेरी इस मस्जिद में र-मज़ान का एक महीना गुज़ारना मस्जिदे ह़राम के इ़लावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार माहे र-मज़ान गुज़ारने से अफ़्ज़ल है।"

(شعب الایمان، باب فی المناسک فضل الحج والعمرة، رقم ۴۱۴۷، ج۳، ص ۴۸۶)

(900)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मदीनए मुनव्वरह में र-मज़ान का एक महीना गुज़ारना दीगर शहरों में र-मज़ान के एक हज़ार महीने गुज़ारने से बेहतर है और मदीनए मुनव्वरह में एक जुमुआ़ अदा करना दीगर शहरों में एक हज़ार जुमुए़ अदा करने से बेहतर है।" (طبرانی کبیر، رقم ۱۱۴۴، ج۱، ص ۳۷۲)

(901)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने जो ब-र-कत मक्का में रखी है मदीने को उस से दुगनी ब-र-कत अ़ता फ़रमा।" (بخاری، کتاب فضائل المدینہ، رقم ۱۸۸۵، ج۱، ص ۶۲۰)

(902)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी, "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे बन्दे और ख़लील ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने तुझ से मक्का वालों के लिये ब-र-कत की दुआ़ की और मैं मुह़म्मद तेरा बन्दा और रसूल हूं और मैं मदीना वालों के लिये ब-र-कत की दुआ़ करता हूं कि तू इन के साअ़ और मुद (येह दोनों पैमाने हैं) में वैसी ब-र-कत अ़ता फ़रमा जैसी ब-र-कत तूने मक्का वालों के लिये अ़ता फ़रमाई और इस ब-र-कत के साथ दो ब-र-कतें और अ़ता फ़रमा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الحج، باب جامع فی الدعالها، رقم ۵۸۱۵، ج۳، ص ۶۵۶)

=== === ===

मदीनए मुनव्वरह या मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में मरने और रौज़ए अन्वर की ज़ियारत का सवाब

पिछले सफ़हात में येह ह़दीस गुज़र चुकी है कि "जो मदीने में साबित क़दम रहे और मरने तक इस की तंगी और सख़्ती पर सब्र करे क़ियामत के दिन मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के ह़क़ में गवाही दूंगा।"

(903)......बनू लैस की एक ख़ातून ह़ज़रते सय्यि-दतुना अ़मीता رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "तुम में से जो मदीने में मरने की इस्तित़ाअ़त रखे वोह मदीने में ही मरे क्यूं कि जो मदीने में मरेगा उस की शफ़ाअ़त की जाएगी या उस के ह़क़ में गवाही दी जाएगी।"

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الحج، باب فضل المدینۃ، رقم ۳۷۴۳، ج۶، ص۲۱)

एक रिवायत में है कि "जो मदीने में मरने की इस्तित़ाअ़त रखता हो वोह मदीने में ही मरे क्यूं कि जो मदीने में मरेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा और उस के ह़क़ में गवाही दूंगा।"

(شعب الایمان، باب فی المناسک فضل الحج والعمرۃ، رقم ۴۱۸۲، ج۳، ص۴۹۷)

(904)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो मदीने में मरने की इस्तित़ाअ़त रखता हो वोह मदीने में ही मरे क्यूं कि जो मदीने में मरेगा मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा।"

(ترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینۃ، رقم ۳۹۴۳، ج۵، ص۴۸۳)

(905)...... शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तुम में से जिस से हो सके वोह मदीने ही में मरे क्यूं कि जो मदीने में मरेगा मैं क़ियामत के दिन उस की गवाही दूंगा या उस की शफ़ाअ़त करूंगा।"

(طبرانی کبیر مسند، رقم ۷۴۷، ج۲۴، ص۲۹۴)

(906)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो शख़्स दो ह़-रमों (या'नी मदीनए मुनव्वरह और मक्कए मुअ़ज़्ज़मा) में से किसी एक में मरेगा क़ियामत के दिन अम्न वालों में उठाया जाएगा और जो सवाब की निय्यत से मदीने में मेरी ज़ियारत करने आएगा वोह क़ियामत के दिन मेरे पड़ोस में होगा।"

(شعب الایمان، باب فی مناسک فضل الحج والعمرۃ، رقم ۴۱۵۸، ج۳، ص۴۹۰)

(907)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की,'' या येह फ़रमाया, ''जिस ने मेरी ज़ियारत की क़ियामत के दिन मैं उस की शफ़ाअ़त करूंगा या उस के ह़क़ में गवाही दूंगा और जो दो ह़-रमों में से किसी एक में मरेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन अम्न वालों में उठाएगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الحج، باب فی سکنی المدینۃ وفضل احد وو ادی العقیق، رقم ۱۶، ج۲، ص ۱۴۷)

(908)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मेरे विसाल (ज़ाहिरी) के बा'द मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की और जो दो ह़-रमों (मक्कए मुकर्रमा और मदीनए मुनव्वरह) में से किसी एक में मरेगा क़ियामत के दिन अम्न वालों में से उठाया जाएगा।''

(سنن الدارقطنی، کتاب الحج، رقم ۲۶۶۸، ج۲، ص ۳۵۱)

(909)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।''

(سنن الدارقطنی، کتاب الحج، رقم ۲۶۶۹، ج۲، ص ۳۵۱)

(910)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुझ पर सलाम भेजता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरी रूह़ मेरी त़रफ़ लौटा देता है ताकि मैं उसे सलाम का जवाब दे सकूं।''

(ابوداؤد، کتاب المناسک، باب زیارۃ القبور، رقم ۲۰۴۱، ج۲، ص ۳۱۵)

=== === ===

जिहाद का सवाब

सच्चे दिल से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से त-लबे शहादत का सवाब

(911)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सच्चे दिल से शहादत त़लब करे उसे शहादत अ़त़ा कर दी जाती है अगर्चे वोह (ब ज़ाहिर) उसे न पा सके।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب استحباب طلب الشھادۃ، رقم ۱۹۰۸، ص ۱۰۵۷)

(912)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सच्चे दिल से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से शहादत का सुवाल करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे शु-हदा की मन्ज़िल में पहुंचा देगा अगर्चे उस का इन्तिक़ाल अपने बिस्तर पर हुवा हो।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب استحباب طلب الشھادۃ، رقم ۱۹۰۹، ص ۱۰۵۷)

(913)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हें कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने ऊंटनी को दो मरतबा दोहने के दरमियानी वक़्त तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद किया, उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है और जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से सच्चे दिल से शहादत का सुवाल किया फिर वोह मर गया या उसे क़त्ल कर दिया गया तो उस के लिये शहीद का सवाब है।'' (ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب فیمن سال اللہ تعالی الشھادۃ، رقم ۲۵۴۱، ج ۳، ص ۳۰)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से सच्चे दिल से शहादत का सुवाल किया, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे शहीद का सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा अगर्चे उस का इन्तिक़ाल अपने बिस्तर पर हुवा हो।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب استحباب طلب الشھادۃ، رقم ۱۹۰۹، ج ۳، ص ۱۰۵۷)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍؕ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ O (پ۳،البقرۃ: ۲۶۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन की कहावत जो अपने माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं उस दाने की त़रह़ जिस ने उगाईं सात बालें हर बाल में सो दाने और अल्लाह इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे और अल्लाह वुस्अ़त वाला इल्म वाला है।

एक मक़ाम पर फ़रमाया,

مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍؕ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ O (پ۳،البقرۃ: ۲۶۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ ख़र्च करते हैं छोटा या बड़ा और जो नाला तै करते हैं सब उन के लिये लिखा जाता है ताकि अल्लाह उन के सब से बेहतर कामों का उन्हें सिला दे।

(914)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई, ''مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍؕ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌO

तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ मेरे अल्लाह मेरी उम्मत में इज़ाफ़ा फ़रमा।'' तो येह आयते करीमा नाज़िल हुई اِنَّمَا یُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍO तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती। (پ۲۳،الزمر:۱۰)

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل النفقۃ فی سبیل اللہ، رقم ۴۶۲۹، ج۷، ص۸۰)

(915)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुरैम बिन फ़ातिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में कुछ ख़र्च करे उस के लिये सात सो गुना सवाब लिखा जाता है।''

(ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل النفقۃ فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۳۱، ج۳، ص۲۳۳)

(916)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मस्ऊ़द अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में नकील वाली ऊंटनी ले कर ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की

राह में वक़्फ़ है।" तो आप ने फ़रमाया, "तुझे इस के बदले क़ियामत के दिन सात सो ऊंटनियां मिलेंगी जिन में से हर एक नकील वाली होगी।" (مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الصدقۃ فی سبیل اللہ، رقم ۱۸۹۲، ص۱۰۴۹)

(917)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में माल भेजा ह़ालां कि ख़ुद अपने घर में ही ठहरा रहा उस के लिये हर दिरहम के बदले सात सो दराहिम हैं और जिस ने ब ज़ाते ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद किया और अपना माल उस जंग में ख़र्च किया तो उस के लिये हर दिरहम के बदले सात लाख दराहिम हैं फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई, "وَاللّٰہُ یُضٰعِفُ لِمَنْ یَّشَآءُ" तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** इस से भी ज़ियादा बढ़ाए जिस के लिये चाहे।" (پ۳، البقرۃ:۲۶۱) (ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل النفقۃ فی سبیل اللہ، رقم ۲۷۶۱، ج۳، ص۳۳۹)

(918)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करते हुए ज़िक्रुल्लाह की कसरत करे तो उस के लिये हर कलिमे के इ़वज़ सत्तर हज़ार नेकियां हैं और उन में से हर नेकी दस गुना है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास इस से भी ज़ियादा है।" अ़र्ज़ किया गया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करना ?" फ़रमाया, "ख़र्च करना भी इसी त़रह़ है।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा, "क्या ख़र्च करना सात सो गुना है ?" ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, "तुम्हारा फ़ह्म कमज़ोर है, येह तो उस वक़्त है जब लोग घर पर रहते हुए जिहाद किये बिग़ैर ख़र्च करें और जब वोह जिहाद करते हुए अपने माल में से ख़र्च करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रह़मत के उन ख़ज़ानों को बन्दों पर खोल देता है जो इन के इ़ल्म से पोशीदा हैं और उन लोगों का वस्फ़ इस त़रह़ से बयान किया गया है, "येह **अल्लाह** की जमाअ़त है और **अल्लाह** ही की जमाअ़त ग़ालिब है।" (طبرانی کبیر، رقم ۱۴۳، ج۲۰، ص۷۷)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
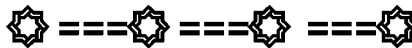
ग़ाज़ी की मदद करने का सवाब

(919)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले को सामान मुहय्या किया तो उस ने भी जिहाद किया और जिस ने ग़ाज़ी के जिहाद पर जाने के बा'द उस के अहले ख़ाना के साथ अच्छा बरताव किया तो उस ने भी जिहाद किया।''

(بخاری، کتاب الجہاد، باب فضل من جھز غازیا......الخ، رقم ۲۸۴۳، ج۲، ص۲۶۷)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले को सामान मुहय्या किया या मुजाहिद के अहले ख़ाना की देखभाल की तो उस के लिये मुजाहिद के सवाब की मिस्ल सवाब लिखा जाएगा और मुजाहिद के सवाब में भी कमी नहीं आएगी।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجہاد، رقم ۴۶۱۱، ج۷، ص۷۱)

(920)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की मदद की या मक़्रूज़ की उस के अहले ख़ाना के मुआ-मले में मदद की या मुकातब (वोह ग़ुलाम जो अपने आक़ा को माल दे कर आज़ाद होना चाहता हो) को आज़ादी में मदद दी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दिन उसे अपने अ़र्श के साए में जगह देगा जिस दिन अ़र्श के सिवा कोई साया न होगा।''

(مسند احمد، حدیث سھل بن حنیف عن ابیہ، رقم ۱۵۹۸۶، ج۵، ص۴۱۲)

(921)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने मुजाहिद के सर पर साया किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन साया अ़ता फ़रमाएगा, और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले मुजाहिद की मदद की उस के लिये मुजाहिद के अज्र की मिस्ल सवाब है, और जिस ने ऐसी मस्जिद बनाई जिस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया जाए **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक घर बनाएगा।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجہاد، رقم ۴۶۰۹، ج۷، ص۸۰)

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले को सामान मुहय्या किया और वोह इस पर क़ुदरत भी रखता हो तो उस के लिये उस मुजाहिद के शहीद हो जाने या लौटने तक उतना ही सवाब है जितना उस मुजाहिद का है।''

(ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب من جھز غازیاً، رقم ۲۷۵۸، ج۳، ص۳۳۸)

(922)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बनी लहयान की त़रफ़ एक क़ासिद भेजा कि ''हर दो मर्दों में से एक जिहाद के लिये निकले।'' फिर जिहाद से रह जाने वालों से फ़रमाया, ''तुम में से जो मुजाहिदीन के अहले ख़ाना की ख़बर गीरी करे उस के लिये मुजाहिद की मिस्ल सवाब है।''

(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل اعانۃ الغازی فی سبیل اللہ الخ، رقم ۱۸۹۶، ص ۱۰۵۱)

(923)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की मदद की उसे भी जिहाद का सवाब मिलेगा और जिस ने मुजाहिद के घर वालों के साथ अच्छा बरताव किया और उस के अहले ख़ाना पर ख़र्च किया उस के लिये मुजाहिद की मिस्ल सवाब है।'' (المعجم الکبیر طبرانی، رقم ۵۲۳۴، ج۵، ص ۲۴۶)

(924)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह के मुजाहिद को रुख़्सत करना और उसे सुब्ह या शाम में सुवारी पर सुवार होने में मदद देना मुझे दुन्या व मा फ़ीहा से ज़ियादा पसन्द है।''

(ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب تشییع الغزاۃ ووداعھم، رقم ۲۸۲۴، ج۳، ص ۳۷۲)

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सुब्ह व शाम गुज़ारने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया,

وَلَا یُنۡفِقُوۡنَ نَفَقَۃً صَغِیۡرَۃً وَّلَا کَبِیۡرَۃً وَّلَا یَقۡطَعُوۡنَ وَادِیًا اِلَّا کُتِبَ لَہُمۡ لِیَجۡزِیَہُمُ اللّٰہُ اَحۡسَنَ مَا کَانُوۡا یَعۡمَلُوۡنَ۝

(پ۱۱، التوبۃ: ۱۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ ख़र्च करते हैं छोटा या बड़ा और जो नाला तै करते हैं सब उन के लिये लिखा जाता है ताकि अल्लाह उन के सब से बेहतर कामों का उन्हें सिला दे।

(925)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन सरहद की निगहबानी करना दुन्या और उस की हर चीज़ से बेहतर है और जन्नत में तुम में से किसी के कोड़ा रखने की जगह दुन्या और उस की हर चीज़ से बेहतर है और बन्दे का राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करना या उस से वापस लौटना दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर है।''

(صحیح البخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب فضل رباط یوم فی سبیل اللہ، رقم ۲۸۹۲، ج۲، ص ۲۷۹)

(926)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में सफ़र करना या उस से वापस लौटना दुन्या और उस की हर चीज़ से बेहतर है जन्नत में तुम में से किसी की कमान रखने या कोड़ा रखने की जगह दुन्या और उस की हर चीज़ से बेहतर है और अगर जन्नत की कोई हूर अहले ज़मीन पर ज़ाहिर हो जाए तो ज़मीनो आस्मान के दरमियान की हर चीज़ रोशन कर दे और उस को ख़ुश्बू से भर दे और हूरे ईन के सर की ओढ़नी दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर है।" (بخاری، کتاب الجہاد، باب الحور العین الخ، رقم ۲۷۹۶، ج۲،ص۲۵۲)

(927)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपनी राह में निकलने वालों को ज़मानत देता है कि जिस बन्दे को सिर्फ़ मेरी राह में जज़्बए जिहाद, ईमान और मेरे रसूलों की तस्दीक़ ने घर से निकाला है तो अब वोह मेरी कफ़ालत में है मैं उसे जन्नत में दाख़िल करूं या उसे सवाब और ग़नीमत अ़ता फ़रमाने के बा'द उसे वापस उस के घर तक पहुंचाऊं।"

(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجہاد والخروج فی سبیل اللہ، رقم ۱۸۷۶، ص۱۰۴۲)

(928)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करते हुए या ह़ज के लिये या لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ या तल्बिया पढ़ते हुए सफ़र करता है तो सूरज उस के गुनाहों को ले कर ग़ुरूब होता है।" (المعجم الاوسط طبرانی، رقم ۶۱۶۵، ج۴، ص ۳۳۷)

(929)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि "सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमारे साथ पांच चीज़ों का वा'दा फ़रमाया है, "जो शख़्स इन में से एक पर भी अ़मल करेगा वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम में होगा, (1) जो मरीज़ की इयादत करे, या (2) जनाज़े के साथ चले, या (3) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद के लिये निकले, या (4) ह़ाकिमे इस्लाम के पास आए और नेक और जाइज़ बातों में उस की इत़ाअ़त करे, या (5) अपने घर में इस लिये बैठा रहे कि वोह लोगों के और लोग इस के शर से मह़फ़ूज़ रहें।"

(مسند احمد، مسند الانصار، حدیث معاذ بن جبل، رقم ۲۲۱۵۴، ج۸، ص۲۵۵)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पैदल चलने और पाउं गर्द आलूद होने का सवाब

(930)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबिल मुसब्बिह़ अल मुक़्राई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम रूम की सर ज़मीन पर मह़्वे सफ़र थे । ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अ़ब्दुल्लाह ख़सूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लश्कर के सालार थे । जब ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़रीब से गुज़रे जो अपने ख़च्चर की लगाम थामे आगे जा रहे थे तो ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से कहा, ''ऐ बन्दे ! अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें सुवारी दी है इस पर सुवार हो जाओ ।'' तो ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''मैं अपनी सुवारी को सधा रहा हूं और अपनी क़ौम से बे परवाह हूं और मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस के क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देता है ।''

उन की बात ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पसन्द आई फिर वोह आगे बढ़ गए यहां तक कि एक ऐसे मक़ाम पर पहुंचे जहां ख़ामोशी थी । किसी ने बुलन्द आवाज़ से कहा, ''ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें सुवारी अ़ता फ़रमाई है लिहाज़ा इस पर सुवार हो जाओ ।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुनादी का मक़्सद समझ गए, चुनान्चे फ़रमाया, ''मैं अपनी सुवारी सधा रहा हूं और अपनी क़ौम से बे परवाह हूं और मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस के क़दम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देता है ।'' येह सुन कर लोग अपनी सुवारियों से उतर पड़े । रावी फ़रमाते हैं कि मैं ने उस दिन उन से ज़ियादा पैदल चलने वाला नहीं देखा ।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر ، باب فضل الجہاد، رقم ۴۵۸۵، ج۷، ص۷۱)

(931)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन जब्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस बन्दे के पाउं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हुए उन्हें जहन्नम की आग न छूएगी ।''

(بخاری، کتاب الجہاد والسیر ، باب من اغبرت قدماہ......الخ، رقم ۲۸۱۱، ج۲، ص۲۵۷)

एक रिवायत में है, ''जो पाउं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं वोह जहन्नम की आग पर ह़राम हैं ।''

(جامع الترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل من اغبرت قدماہ فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۳۸، ج۳، ص۲۳۵)

(932)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स का चेहरा राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन जहन्नम के धुवें से अमान अ़ता फ़रमाएगा और जिस शख़्स के क़दम राहे

खुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के क़दमों को क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से महफ़ूज़ फ़रमा देगा।" (المعجم الکبیر،رقم ۷۴۸۲،ج۸،ص۹۶)

(933)...... हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन क़ैस कन्दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़मतुल्लिल आ–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस के क़दम राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पूरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा।" (المعجم الاوسط،من اسمہ محمد،رقم ۵۵۳۳،ج۴،ص۱۵۱)

(934)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ–ज़–मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "वोह शख़्स जहन्नम में दाख़िल न होगा जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए यहां तक कि दूध थनों में वापस चला जाए और मुसल्मान के नथनों में राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ का गुबार और जहन्नम का धुवां कभी इकठ्ठा न होगा।" (سنن النسائی،کتاب الجہاد،باب فضل من عمل فی سبیل اللہ علی قدمہ،ج۶،ص۱۲)

(935)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे के पेट में राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ का गुबार और जहन्नम का धुवां जम्अ़ नहीं फ़रमाएगा और जिस के क़दम राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में गर्द आलूद हो जाएं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पूरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा और जिस ने राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में एक दिन रोज़ा रखा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से जहन्नम को तेज़ रफ़्तार सुवार की एक हज़ार साल की मसाफ़त तक दूर फ़रमा देगा और जिसे राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में एक ज़ख़्म लगेगा उस पर शु–हदा की मोहर लगा दी जाएगी जो क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगी, उस का रंग ज़ा'फ़रान की त़रह़ और खुश्बू मुश्क की त़रह़ होगी, उसे उस मोहर की वजह से अव्वलीन व आख़िरीन पहचान लेंगे और कहेंगे फ़ुलां पर शहीदों की मोहर लगी हुई है और जो ऊंटनी को दो मरतबा दोहने के दरमियान के वक़्त तक राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करे उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है।" (مسند احمد مسند ابی الدرداء،رقم ۲۷۵۷۳،ج۱۰،ص۴۲۰)

राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के लिए निकलने और शहीद हो जाने का सवाब

अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَوْمُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ خَیْرٌ مِّمَّا یَجْمَعُوْنَ ۝ (پ۴، اٰل عمران:۱۵۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक अगर तुम **अल्लाह** की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो **अल्लाह** की बख़्शिश और रहमत उन के सारे धन दौलत से बेहतर है।

और इर्शाद फ़रमाया,

وَمَنْ یَّخْرُجْ مِنْۢ بَیْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَی اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ یُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ اَجْرُهٗ عَلَی اللّٰهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۝ (پ۵، النساء:۱۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने घर से निकला **अल्लाह** व रसूल की त़रफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का सवाब **अल्लाह** के ज़िम्मे पर हो गया और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया,

وَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ قُتِلُوْۤا اَوْ مَاتُوْا لَیَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ۝ لَیُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا یَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَلِیْمٌ حَلِیْمٌ ۝ (پ۱۷، الحج:۵۸،۵۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** की राह में अपने घरबार छोड़े फिर मारे गए या मर गए तो **अल्लाह** ज़रूर उन्हें अच्छी रोज़ी देगा और बेशक **अल्लाह** की रोज़ी सब से बेहतर है ज़रूर उन्हें ऐसी जगह ले जाएगा जिसे वोह पसन्द करेंगे और बेशक **अल्लाह** इल्म और ह़िल्म वाला है।

(936)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलिमात की तस्दीक़ की ग़रज़ से निकले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी जन्नत में दाख़िल करने या सवाब या ग़नीमत के साथ वापस घर पहुंचाने की ज़मानत देता है।'' (بخاری، کتاب التوحید، رقم ۷۴۶۳، ج۴، ص۵۶۳)

(937)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाला रात भर इबादत और दिन भर रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है जो न तो कोई रोज़ा छोड़ता है और न कोई नमाज़, यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस के अह्ल की त़रफ़ सवाब या ग़नीमत के साथ लौटाए या उस को शहादत से सरफ़राज़ फ़रमा कर जन्नत में दाख़िल फ़रमाए।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجهاد، رقم ۴۶۰۳، ج۷، ص۶۸)

(938)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''तुम किस को शु–हदा में शुमार करते हो ?'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''जो **अल्लाह** की राह में मारा जाए वोह शहीद है।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''इस त़रह़ तो मेरी उम्मत में शहीद बहुत कम होंगे।'' तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! तो फिर शहीद कौन है ?'' फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** की राह में मारा जाए वोह शहीद है, जो **अल्लाह** की राह में मर जाए वोह शहीद है और जो ताऊ़न में मुब्तला हो कर मर जाए वोह भी शहीद है।'' (مسلم، کتاب الامارۃ، باب بیان الشھداء، رقم ۱۹۱۴، ص ۱۰۶۰)

(939)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में निकले फिर मर जाए या क़त्ल कर दिया जाए तो वोह शहीद है और अगर उस का घोड़ा या ऊंट उसे गिरा कर मार दे या कोई सांप काट ले या अपने बिस्तर पर मर जाए अल ग़रज़ जिस त़रह़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चाहे उसी त़रीक़े से उस की मौत वाक़ेअ़ हो तो वोह शहीद है और उस के लिये जन्नत है।'' (ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب فیمن مات غازیا، رقم ۲۴۹۹، ج ۳، ص ۱۴)

(940)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो ह़ज के लिये निकला और इसी दौरान उस का इन्तिक़ाल हो गया क़ियामत तक उस के लिये ह़ज करने वाले का सवाब लिखा जाता रहेगा और जो उ़म्रह करने के लिये निकला और इसी ह़ालत में उस का इन्तिक़ाल हो गया तो बरोज़े क़ियामत तक उस के लिये उ़म्रह करने वाले का सवाब लिखा जाएगा और जो जिहाद करने निकला और उस का इन्तिक़ाल हो गया क़ियामत तक उस के लिये जिहाद का सवाब लिखा जाता रहेगा।'' (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند ابی ہریرۃ، رقم ۶۳۲۷، ج ۵، ص ۴۴۱)

(941)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रब तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है कि मेरा जो बन्दा मेरी रिज़ा चाहते हुए मेरी राह में जिहाद के लिये निकलेगा मैं उसे ज़मानत देता हूं कि अगर मैं ने उसे वापस लौटाया तो सवाब या ग़नीमत के साथ लौटाऊंगा और अगर उस की रूह़ क़ब्ज़ की तो उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दूंगा।'' (سنن النسائی، کتاب الجہاد، باب ثواب السریۃ......الخ، ج ۶، ص ۱۸)

(942)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सब्रह बिन फ़ाकिह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक शैत़ान आदमी के इस्लाम की राह में

बैठता है और कहता है, ''तू इस्लाम क़बूल कर रहा है और अपना और अपने आबाओ अज्दाद का दीन छोड़ रहा है ?'' फिर अगर वोह आदमी शैत़ान की बात न माने और मुसल्मान हो जाए तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है। फिर शैत़ान उस की हिजरत में रुकावट डालता है और कहता है, ''तू हिजरत कर रहा है और अपने घरबार, अपनी छत और सर ज़मीन को छोड़ रहा है ?'' फिर अगर वोह शैत़ान की बात न माने और हिजरत कर ले तो शैत़ान बन्दे के जिहाद में रुकावट डालता है और कहता है, ''तू जिहाद कर रहा है ह़ालां कि जिहाद तो जान और माल के लिये होता है कि तू जिहाद कर के किसी औ़रत से निकाह़ करेगा और माले ग़नीमत ह़ासिल करेगा।'' फिर अगर वोह उस की बात न माने और जिहाद करे तो जो ऐसा करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए या उसे उस की सुवारी गिरा कर मार दे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر ،باب فضل الجہاد، رقم ۴۵۷۴، ج۷، ص۵۷)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
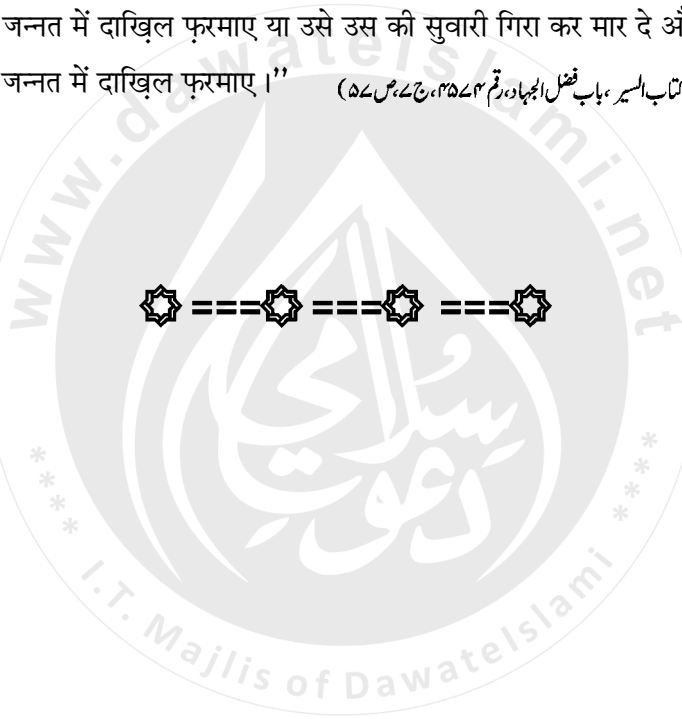
समुन्दरी जिहाद का सवाब

(943)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने ह़ज नहीं किया उस का ह़ज करना दस ग़ज़वात में शरीक होने से बेहतर है और जिस ने ह़ज अदा कर लिया उस का ग़ज़्वे में शरीक होना दस ह़ज अदा करने से बेहतर है और समुन्दर में जिहाद करना ख़ुश्की में दस मरतबा जिहाद करने से बेहतर है और जिस ने समुन्दर को पार कर लिया गोया उस ने तमाम वादियां पार कर लीं और समुन्दर में चकरा कर गिरने वाला अपने ख़ून से लिथड़े हुए शख़्स की त़रह़ है।"

(شعب الایمان، باب فی الجہاد، رقم ۴۲۲۱، ج۴، ص۱۱)

(944)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "समुन्दर में जिहाद करना ख़ुश्की में दस मरतबा जिहाद करने की त़रह़ है, समुन्दर में बीमार होने वाला राहे ख़ुदा में अपने ख़ून से लिथड़े हुए शख़्स की त़रह़ है।" (ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل غزو البحر، رقم ۲۷۷۷، ج۳، ص۳۴۸)

(945)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़राम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "समुन्दर में चकरा कर क़ै करने वाले के लिये एक शहीद का सवाब है और समुन्दर में डूब कर मरने वाले के लिये एक शहीद का सवाब है।"

(ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب فضل الغزو فی البحر، رقم ۲۴۹۳، ج۳، ص۱۱)

(946)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि "ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़राम बिन्ते मलह़ान رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا के पास तशरीफ़ लाते तो वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खाना पेश करतीं। आप ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजा थीं। एक मरतबा जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने आप की ख़िदमत में खाना पेश किया फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सरे अक़्दस देखने लगीं तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सो गए फिर जब बेदार हुए तो मुस्कुराने लगे। ह़ज़रते उम्मे ह़राम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप किस बात पर हंस रहे हैं ?" फ़रमाया, "मेरी उम्मत के कुछ लोग राहे ख़ुदा में जिहाद करते हुए मेरे सामने पेश किये गए जो तख़्त नशीन बादशाहों की त़रह़ उस समुन्दर के बीच में सुवार होंगे।" तो ह़ज़रते उम्मे ह़राम رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे उन लोगों में शामिल फ़रमा दे।"

आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन के लिये दुआ फ़रमाई इस के बा'द फिर हुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरे अक़्दस रखा और सो गए। फिर हंसते हुए बेदार हुए, मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस चीज़ ने आप को हंसाया ?" फ़रमाया, "मेरी उम्मत के राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने वाले कुछ लोग मेरे सामने लाए गए (जैसा कि पहली मरतबा फ़रमाया था), उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये दुआ कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उन में शामिल फ़रमा दे।" फ़रमाया, "तुम पहले वालों में से हो" फिर सय्यि-दतुना उम्मे ह़राम رَضِیَ اللهُ عَنْهَا ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़माने में समुन्दर के सफ़र पर सुवार हो कर निकलीं और समुन्दर से निकलते वक़्त अपनी सुवारी से गिर कर इन्तिक़ाल कर गईं।" (صحیح بخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب الدعاء بالجہاد والشھادۃ للرجال والنساء، رقم ۲۷۸۸، ج۲، ص۲۵۰)

(947)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हु़सैन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में समुन्दर में एक मरतबा जिहाद किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जानता है कि कौन उस की राह में जिहाद करता है तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त का ह़क़ अदा कर दिया और जन्नत की भरपूर त़लब की और जहन्नम से हर त़रह़ से दूर हो गया।" (المعجم الاوسط، من اسمہ ابراھیم، رقم ۲۹۶۴، ج۲، ص۸۵)

(948)...... ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो मेरे साथ जिहाद करने से रह गया उसे चाहिये कि समुन्दर में जिहाद करे।" (المعجم الاوسط، من اسمہ موسی، رقم ۸۳۵۲، ج۶، ص۱۵۸)

(949)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "समुन्दर में शहीद होने वाला ख़ुश्की के दो शहीदों की मिस्ल है और समुन्दर में चकरा कर गिरने वाला ख़ुश्की में अपने ख़ून से लिथड़े हुए शख़्स की त़रह़ है और मौजों के दरमियान जिहाद करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में पूरी दुन्या तै़ करने वाले की त़रह़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने म-लकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام को रूहें क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर किया है मगर समुन्दर में शहीद होने वालों की रूहें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ुद क़ब्ज़ फ़रमाता है और ख़ुश्की में शहीद होने वाले के क़र्ज़ के इ़लावा तमाम गुनाह मुआ़फ़ हो जाते हैं जब कि समुन्दर में शहीद होने वाले के क़र्ज़ समेत तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।" (ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل غزو البحر، رقم ۲۷۷۸، ج۳، ص۳۴۸)

राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में सरहद पर पहरा देने का सवाब

(950)...... हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में एक दिन सरहद की निगहबानी करना दीगर जगहों पर एक हज़ार दिन गुज़ारने से बेहतर है।" (جامع الترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل المرابط، رقم ۱۶۷۳، ج۳، ص۲۵۲)

एक रिवायत में है कि मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, कि "जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में एक रात पहरा दिया तो उसे एक हज़ार दिनों और हज़ार रातों के क़ियाम का सवाब मिलेगा।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الرباط فی سبیل اللہ، رقم ۲۷۶۶، ج۳، ص۳۳۱)

(951)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सरहद पर पहरा देने के सवाब के बारे में सुवाल हुवा तो फ़रमाया, "जिस ने जिहाद के दौरान एक रात मुसल्मानों की हिफ़ाज़त के लिये पहरा दिया तो उस के लिये पीछे रह जाने वाले रोज़ादारों और नमाज़ियों का सवाब है।" (المعجم الاوسط طبرانی، رقم ۸۰۵۹، ج۶، ص۷۷)

(952)...... हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में एक दिन पहरा देना, दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर है।"
(بخاری، کتاب الجہاد، باب فضل رباط یوم، رقم ۲۸۹۲، ج۲، ص۲۷۹)

(953)...... हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "एक दिन और एक रात सरहद पर पहरा देना एक महीने के रोज़ों और क़ियाम से बेहतर है और अगर उस का इसी दौरान इन्तिक़ाल हो गया तो उस का वोह अ़मल जारी रहेगा जिसे वोह ज़िन्दगी में किया करता था और उस का रिज़्क़ जारी किया जाएगा और वोह मुन्कर नकीर से अम्न में रहेगा।" (مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الرباط، رقم ۱۹۱۳، ص۱۰۵۹)

(954)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह्मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "एक महीना सरहद पर पहरा देना पूरी ज़िन्दगी रोज़े रखने से बेहतर है।" (مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب الرباط، رقم ۹۵۰۴، ج۵، ص۵۲۸)

(955)...... हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "र-मज़ान के इलावा एक दिन अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में सवाब की उम्मीद रखते हुए सरहद पर पहरा देना एक साल के रोज़े

और रात भर इबादत से ज़ियादा बाइसे सवाब है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में सवाब की उम्मीद रखते हुए मुसल्मानों की हिफ़ाज़त के लिये र-मज़ान में एक दिन पहरा देना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक अफ़्ज़ल और बड़े सवाब वाला है, (रावी कहते हैं कि मेरा गुमान है कि येह भी इर्शाद फ़रमाया कि एक हज़ार साल के रोज़ों और इबादत से अफ़्ज़ल है) फिर अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस मुजाहिद को सलामती के साथ अहले ख़ाना की त़रफ़ लौटा दे तो एक हज़ार साल तक उस की कोई ख़त़ा नहीं लिखी जाएगी और उस के लिये नेकियां लिखी जाएंगी और क़ियामत तक उसे पहरा देने का सवाब मिलता रहेगा।''

(ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الرباط، رقم ۲۷۶۸، ج۳، ص ۳۴۳)

(956)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन पहरा देगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान सात ख़न्दक़ें खुदवा देगा और हर ख़न्दक़ सात ज़मीन और सात आस्मानों जितनी होगी।'' (المعجم الاوسط، من اسمہ عبدالملک، رقم ۴۸۲۵، ج۳، ص ۳۵۳)

(957)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक मुजाहिद की नमाज़ पांच सो नमाज़ों के बराबर है और उस का एक दिरहम और दीनार ख़र्च करना दूसरों के सात सो दीनार ख़र्च करने से अफ़्ज़ल है।''

(شعب الایمان، باب فی المرابط فی سبیل اللہ عزوجل، رقم ۴۲۹۵، ج۴، ص ۴۳)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
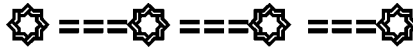
जिहाद में शहीद होने का सवाब

गुज़श्ता सफ़हात में ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी सहीह़ ह़दीस गुज़र चुकी कि ''एक दिन और रात मोरचा बन्दी करना एक महीने के रोज़े रखने और रात को क़ियाम करने से बेहतर है और अगर इसी दौरान उस का इन्तिक़ाल हो गया तब भी उस का येह अ़मल जारी रहेगा जिसे वोह ज़िन्दगी में किया करता था और उस का रिज़्क़ जारी किया जाएगा और वोह मुन्कर नकीर से अम्न में रहेगा।''

(صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الرباط فی سبیل اللہ، رقم ۱۹۱۳، ص ۱۰۵۹)

(958)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर शख़्स का अ़मल मरने के बा'द मुन्क़ते़अ़ हो जाता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले के अ़मल में इज़ाफ़ा होता रहता है और उसे क़ियामत तक उस का रिज़्क़ दिया जाता है।'' (الکامل فی ضعفاء الرجال، ج ۸، ص ۱۴۳)

(959)...... ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर शख़्स का अ़मल मौत पर ख़त्म हो जाता है मगर पहरा देने वाले के अ़मल में क़ियामत तक इज़ाफ़ा होता रहता है और वोह क़ब्र के इम्तिहान से मह़फ़ूज़ रहता है।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الجہاد، باب فی فضل الرباط، رقم ۲۵۰۰، ج ۳، ص ۱۴)

(960)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक महीना जिहाद करना पूरी ज़िन्दगी रोज़े रखने से बेहतर है और जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करते हुए मर जाए वोह बड़ी घबराहट (क़ियामत की दहशत) से मह़फ़ूज़ रहेगा और उस तक उस का रिज़्क़ और जन्नत की ख़ुश्बू पहुंचती रहेगी और क़ियामत तक उसे मुजाहिद का सवाब मिलता रहेगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب الرباط، رقم ۹۵۰۴، ج ۵، ص ۵۲۸)

(961)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मोरचा बन्दी करते हुए मर जाए उसे अपने उस नेक अ़मल का सवाब मिलता रहेगा जिसे वोह अपनी ज़िन्दगी में किया करता था, उसे उस का रिज़्क़ दिया जाता रहेगा, वोह मुन्कर नकीर के सुवालात से अम्न में रहेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बड़ी घबराहट (या'नी क़ियामत की दहशत) से अम्न में रख कर उठाएगा।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الرباط فی سبیل اللہ، رقم ۲۷۶۷، ج ۳، ص ۳۴۴)

एक रिवायत में है कि ''मुजाहिद जब जिहाद करते हुए मर जाए तो उस का वोह अ़मल जिसे वोह अपनी ज़िन्दगी में किया करता था क़ियामत तक लिखा जाता रहेगा और उस तक उस का रिज़्क़ पहुंचता रहेगा और सत्तर हूरों से उस का निकाह़ किया जाएगा और उस से कहा जाएगा कि ठहर जा और ह़िसाब ख़त्म होने तक लोगों की शफ़ाअ़त कर।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الجہاد، باب الترغیب فی الرباط فی سبیل اللہ عزوجل، رقم ۷، ج۲،ص ۱۵۵)

(962)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''लोगों के लिये सब से अच्छी ज़िन्दगी उस शख़्स की है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में अपने घोड़े की लगाम थाम कर उस की पुश्त पर सुवार हो कर उड़ता है, जब भी दुश्मन की ललकार या किसी ख़त़रनाक दुश्मन के बारे में सुनता है तो उसे मारने या ख़ुद मर जाने के लिये घोड़े को दौड़ा कर दुश्मन के क़रीब पहुंच जाता है या उस शख़्स की अच्छी ज़िन्दगी है जो चन्द बकरियां ले कर पहाड़ की इन चोटियों में से किसी एक चोटी के सिरे पर या इन वादियों में से किसी वादी में निकल जाए। वहां नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात अदा करे और मौत आने तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता है और भलाई के सिवा लोगों के किसी मुआ़-मले में न पड़े।'' (صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجہاد والرباط، رقم ۱۸۸۹، ص ۱۰۴۸)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा देने का सवाब

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۙ (پ۱۱، التوبۃ:۱۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मदीने वालों और उन के गिर्द देहात वालों को लाइक़ न था कि रसूलुल्लाह से पीछे बैठ रहें और न येह कि उन की जान से अपनी जान प्यारी समझें येह इस लिये कि उन्हें जो प्यास या तक्लीफ़ या भूक अल्लाह की राह में पहुंचती है और जहां ऐसी जगह क़दम रखते हैं जिस से काफ़िरों को ग़ैज़ आए और जो कुछ किसी दुश्मन का बिगाड़ते हैं इस सब के बदले उन के लिये नेक अ़मल लिखा जाता है बेशक अल्लाह नेकों का नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करता ।

(963)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में एक रात पहरा देना हज़ार रातों में क़ियाम करने और हज़ार दिनों में रोज़ा रखने से अफ़्ज़ल है ।''

(المستدرک، کتاب الجہاد، باب ذکر لیلۃ فضل الخ، رقم ۲۴۷۱، ج۲، ص ۴۰۱)

(964)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीन आंखों को जहन्नम की आग न छूएगी : वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में फूट जाए, वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा दे और वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए ।''

एक सह़ीह़ रिवायत में है, ''दो आंखों तक जहन्नम की आग का पहुंचना ह़राम है : वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और वोह आंख जो इस्लाम और मुसल्मानों की कुफ़्फ़ार से ह़िफ़ाज़त करते हुए रात गुज़ारे ।''

(المستدرک، کتاب الجہاد، باب ثلاثۃ اعین لا تمسھا النار، رقم ۲۴۷۶، ۲۴۷۷، ج۲، ص ۴۰۳)

(965)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दो आंखों को जहन्नम की आग न छू सकेगी : वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा देते हुए रात गुज़ारे ।''

(ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل الحرس فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۴۵، ج۳، ص ۲۳۹)

(966)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दो आंखों को जहन्नम की आग कभी भी न छू सकेगी : वोह आंख जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में पहरा देते हुए रात गुज़ारे और वोह आंख जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए।'' (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، رقم ۴۳۳۹، ج ۳، ص ۴۲۵)

(967)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह शख़्स जो अल्लाह तबा–र–क व तआ़ला की राह में मुसल्मानों की ह़िफ़ाज़त के लिये रिज़ा काराना त़ौर पर पहरा दे और उसे ह़ाकिम के ख़ौफ़ ने पहरा देने पर मजबूर न किया हो तो वोह अपनी आंखों से जहन्नम को न देखेगा मगर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की क़सम पूरी करने के लिये क्यूं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है,

وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ج (پ۱۶، مریم:۷۱) तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند معاذ بن انس، رقم ۱۵۶۱۲، ج ۵، ص ۳۰۸)

(968)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रैह़ाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से बहने वाली या रोने वाली आंख पर जहन्नम ह़राम है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में सारी रात पहरा देने वाली आंख पर जहन्नम ह़राम है और इन के इ़लावा तीसरी आंख भी है जिस पर जहन्नम ह़राम है। (जिसे रावी सुन न पाए।) ।'' (المستدرک، کتاب الجہاد، باب حرمت النار علی عین......الخ، رقم ۲۴۷۸، ج ۲، ص ۴۰۳)

(969)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन ह़न्ज़लिय्यह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ग़ज़्वए हुनैन के दिन सफ़र कर रहे थे, सफ़र त़वील हो गया यहां तक कि रात हो गई। जब अगले दिन हम ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ नमाज़े ज़ोहर अदा की तो एक सुवार आया और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं आप के सामने से गया यहां तक कि मैं फुलां फुलां पहाड़ पर चढ़ा तो मैं ने हवाज़न वालों को माल से लदे हुए ऊंट, मवेशी और औ़रतों के साथ देखा कि वोह हुनैन की त़रफ़ आने के लिये इकट्ठे हुए हैं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराने लगे और फ़रमाया, ''वोह कल मुसल्मानों की ग़नीमत हो जाएगी اِنْ شَآءَ اللّٰہ تَعَالٰی''

फिर आप صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आज रात हमारे लिये पहरा कौन देगा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन अबी मरसद ग़–नवी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं पहरा दूंगा।'' फ़रमाया, ''सुवार हो जाओ।'' जब वोह अपने घोड़े पर सुवार हो कर आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो आप ने उन से फ़रमाया, ''उस घाटी की त़रफ़ जाओ और बुलन्दी पर चढ़ जाना और तुम्हारी वजह से आज रात हम धोका न खा जाएं।'' जब सुब्ह़ हुई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी जाए नमाज़ पर दो रक्अ़तें अदा कीं फिर फ़रमाया, ''क्या तुम ने अपने

सुवार को देखा ?'' सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने उसे नहीं देखा।'' फिर नमाज़ के लिये इक़ामत कही गई तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ाने लगे और नमाज़ के दौरान पहाड़ की चोटी की त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाते रहे।

जब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पूरी फ़रमा ली तो फ़रमाया, ''ख़ुश हो जाओ तुम्हारा सुवार आ गया।'' तो हम घाटी के दरख़्तों के ख़ला की त़रफ़ देखने लगे। अचानक वोह सहाबी आ गए और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ किया और अर्ज़ गुज़ार हुए, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं यहां से रवाना होने के बा'द पहाड़ की चोटी पर उस जगह पहुंचा जहां तक पहुंचने का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे हुक्म फ़रमाया था, जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने दोनों चोटियों को देखा जब ख़ूब नज़र दौड़ाई तो कोई नज़र नहीं आया।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या रात को तुम पहाड़ से उतरे थे ?'' उन्हों ने अर्ज़ किया, ''नहीं सिर्फ़ नमाज़ और क़ज़ाए ह़ाजत के लिये उतरा था।'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम ने अपने लिये (जन्नत) वाजिब कर ली, अब इस पहरे के बा'द कोई अ़मल न करना तुम्हें नुक़्सान न देगा।'' (سنن ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب فضل الحرس، رقم ۲۵۰۱، ج۳، ص۱۴)

(970)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें शबे क़द्र से अफ़्ज़ल रात के बारे में न बताऊं ? (फिर फ़रमाया) जब पहरादार ऐसे ख़ौफ़नाक मक़ाम पर पहरा दे जहां उसे अपने घर वालों की त़रफ़ ज़िन्दा सलामत पलटने की उम्मीद न हो।'' (المستدرک، کتاب الجہاد، باب ذکر لیلۃ افضل من لیلۃ القدر، رقم ۲۴۷۰، ج۲، ص۴۰۰)

(971)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने साहिले समुन्दर पर एक रात पहरा दिया तो उस का येह अ़मल अपने घर में एक हज़ार साल इबादत करने से अफ़्ज़ल है।'' (مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، رقم ۴۱۹۷، ج۳، ص۴۴۹)

(972)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दे का राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक रात पहरा देना अपने घर में एक हज़ार साल के रोज़ों और रातों में क़ियाम करने से अफ़्ज़ल है और येह साल तीन सो दिन का है और एक दिन गोया हज़ार साल का है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الحرس والتکبیر، رقم ۲۷۷۰، ج۳، ص۳۴۴)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
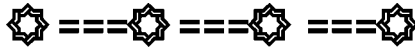
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़ौफ़ज़दा होने का सवाब

(973)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस शख़्स का दिल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ौफ़ की वजह से धड़क्ने लगता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जहन्नम को ह़राम फ़रमा देता है।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السیدۃ عائشۃ رضی اللہ عنہا، رقم ۲۴۶۰۲، ج۹، ص۳۶۹)

(974)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मालिक बहज़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़माना क़रीब में बरपा होने वाले एक फ़ितने का तज़्किरा फ़रमाया तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस वक़्त सब से बेहतरीन शख़्स कौन होगा ?'' फ़रमाया, ''जो शख़्स मवेशियों के रेवड़ में रहे और उस का ह़क़ अदा करे और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता रहे और वोह शख़्स जो अपने घोड़े की लगाम थाम कर दुश्मन को डराए और वोह लोग उसे डराते हों।'' (ترمذی، کتاب الفتن، باب کیف یکون الرجل فی الفتنۃ، رقم ۲۱۸۴، ج۴، ص۷۳)

(975)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मोमिन का दिल धड़क्ने लगता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जैसे खजूर के ख़ोशे झड़ते हैं।'' (طبرانی کبیر، رقم ۶۰۸۶، ج۶، ص۲۳۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में घोड़े के तय्यार करने और उस पर ख़र्च करने का सवाब

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ (پ١٠،الانفال:٦٠)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन के लिये तय्यार रखो जो कुव्वत तुम्हें बन पड़े और जितने घोड़े बांध सको कि उन के दिलों में धाक बिठाओ जो **अल्लाह** के दुश्मन और तुम्हारे दुश्मन हैं।

(976)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''घोड़े तीन क़िस्म के हैं, पहला वोह जो आदमी के लिये बोझ है और दूसरा वोह जो आदमी के लिये ढाल है और तीसरा वोह जो आदमी के लिये सवाब है। बोझ इस सूरत में है कि जब आदमी उसे दिखावे, फ़ख़्र या मुसल्मानों से दुश्मनी करने के लिये बांधे तो येह घोड़े उस के लिये बोझ हैं और ढाल उस आदमी के लिये हैं जो इन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में बांधे और उस की पीठ या रिकाब में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हक़ को न भुलाए तो येह उस के लिये ढाल हैं और घोड़े पालना सवाब उस शख़्स के लिये हैं जो इन्हें राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मुसल्मानों के लिये किसी चरागाह या बाग़ में बांधे तो वोह घोड़े उस चरागाह या बाग़ में से जो कुछ भी खाएंगे उस के लिये उस चारे की मिक़्दार के बराबर नेकियां लिखी जाएंगी और उन घोड़ों की लीद और पेशाब की मिक़्दार के मुताबिक़ बराबर नेकियां लिखी जाएंगी और अगर घोड़े अपनी रस्सी तोड़ कर एक या दो टीलों का चक्कर लगाएं तो **अल्लाह** उन के क़दमों और लीद के बराबर नेकियां लिखेगा, वोह मालिक घोड़ों को ले कर नह्र पर से गुज़रे और वोह घोड़े उस नह्र से पानी पियें हालां कि उस का मालिक उसे पानी पिलाने का इरादा नहीं रखता था तब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पिये जाने वाले पानी के बराबर मालिक के लिये नेकियां लिखेगा।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب اثم مانع الزکاۃ، رقم ۹۸۷، ص۴۹۱)

एक रिवायत में है ''वोह घोड़े मालिक के लिये बाइसे सवाब हैं जिन्हें उन का मालिक राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ले जाए और उन्हें जिहाद के लिये मख़्सूस कर दे तो वोह उन घोड़ों को जो कुछ खिलाएगा उस के इवज़ उस के लिये नेकियां लिखी जाएंगी और अगर उन का मालिक उन्हें किसी चरागाह में ले जाए और चरने के लिये छोड़ दे तो जो चीज़ उस के पेट में जाएगी उस के इवज़ उस के लिये नेकियां लिखी जाएंगी और उस के घोड़े एक या दो जितने चक्कर लगाएंगे उन के हर क़दम पर उस के लिये सवाब लिखा जाएगा, और अगर नह्र नज़र आए और वोह उन्हें उस में से पानी पिलाए तो घोड़े के पेट में जाने वाले हर क़त्रे के इवज़ उस के लिये सवाब लिखा जाएगा।''

(रावी फ़रमाते हैं) यहां तक कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के पेशाब और लीद करने में भी सवाब का ज़िक्र किया (फिर फ़रमाया), ''और जो घोड़े अपने मालिक के लिये ढाल हैं येह वोह घोड़े हैं जिन्हें उन का मालिक पाक दामनी और ज़ीनत और पर्दा पोशी के लिये अपने पास रखे और तंगदस्ती व ख़ुशहाली में उन के पेट और पीठ के हुक़ूक़ अदा करने से न चूके, और जो घोड़े अपने मालिक के लिये बोझ हैं येह वोह घोड़े हैं जिन्हें उन का मालिक ग़ुरूरो तकब्बुर और मुसल्मानों की बद ख़्वाही के लिये अपने पास रखे।'' (صحیح ابن خزیمہ، کتاب الزکاۃ، باب ذکر اسقاط الصدقۃ عن الحمر، رقم ۲۲۹۱، ج۴، ص۳۱)

(977)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर ईमान और उस के वा'दे की तस्दीक़ करते हुए अपने घोड़े को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में वक़्फ़ कर दिया तो उस का चारा, पानी, लीद और पेशाब क़ियामत के दिन नेकियां बना कर उस की मीज़ान में डाल दी जाएंगी।'' (صحیح البخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب من احتبس فرسا، رقم ۲۸۵۳، ج۲، ص۲۶۹)

(978)...... हज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''घोड़ों की पेशानियों में क़ियामत तक के लिये भलाई पोशीदा है लिहाज़ा जो इन्हें राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में तय्यार करने के लिये बांधे और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में सवाब की उम्मीद रखते हुए उन पर ख़र्च करे तो उन घोड़ों के शिकम सैर होने, उन के सैराब होने, उन की लीद और पेशाब को क़ियामत के दिन उस के मीज़ान में नेकियां बना कर डाल दिया जाएगा और जो उसे दिखावे और ग़ुरूरो तकब्बुर की वजह से बांधे तो उस का चारा, पानी, उस की लीद और उस का पेशाब क़ियामत के दिन उस के मीज़ान में ख़सारे का सबब होंगे।''

(مسند امام احمد بن حنبل، من حدیث اسماء ابنۃ یزید رضی اللہ عنہا، رقم ۲۷۶۴۵، ج۱۰، ص۴۳۶)

(979)...... एक अन्सारी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''घोड़े तीन हैं, एक वोह जिसे आदमी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में बांधे तो उस का बदला सवाब है और उस पर सुवार होना सवाब है और उसे आरियत पर लेना सवाब है और उस का चारा सवाब है और वोह घोड़ा जिस पर शर्त लगाई जाए और जिसे रह्न के तौर पर रखा जाए तो उस की बैअ़ का बदला गुनाह है और उस पर सुवार होना गुनाह है और वोह घोड़ा जिसे शिकम सैरी के लिये बांधा जाए तो अगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चाहे तो शायद वोह घोड़ा फ़क़्र से बचाव का ज़रीआ़ हो जाए।'' (مسند امام احمد، رقم ۱۶۲۴۵، ج۵، ص۵۹۲)

(980)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वह बिन अबू जा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''घोड़े की पेशानी में क़ियामत तक भलाई या'नी सवाब और ग़नीमत पोशीदा है।'' (صحیح بخاری، کتاب الجہاد، باب الجہاد ماض الخ، رقم ۲۸۵۲، ج۲، ص۲۶۹)

(981)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''घोड़ों की पेशानियों में क़ियामत तक भलाई पोशीदा है और उन पर ख़र्च करने वाला अपने हाथ से स-दक़ा देने वाले की त़रह़ है।''

(مسند ابی یعلی الموصلی، مسند ابی ہریرہ رضی اللہ عنہ، رقم ۵۹۸۸، ج۵، ص۳۰۳)

(982)...... ह़ज़रते अबू कब्शा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''घोड़े की पेशानी में ख़ैर बंधी हुई है और उस की वजह से उस के मालिकों की मदद की जाती है और उस पर ख़र्च करने वाला हाथ फैला कर स-दक़ा करने वाले की त़रह़ है।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب الخیل، رقم ۴۶۵۵، ج۷، ص۹۰)

(983)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन ह़न्ज़लिय्यह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''घोड़े पर ख़र्च करने वाला हाथ बढ़ा कर मुसल्सल स-दक़ा करने वाले की त़रह़ है।'' (سنن ابی داؤد، کتاب اللباس، باب ماجاء فی اسبال الازار، رقم ۴۰۸۹، ج۴، ص۸۰)

=== === ===

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में तीर अन्दाज़ी का सवाब

(984)...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मिम्बर पर बैठे हुए फ़रमाते सुना : ''وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन के लिये तय्यार रखो जो कुव्वत तुम्हें बन पड़े।'' (پ۱۰،الانفال:۶۰) (फिर फ़रमाया) बेशक तीर अन्दाज़ी कुव्वत है, बेशक तीर अन्दाज़ी कुव्वत है, बेशक तीर अन्दाज़ी कुव्वत है।'' (مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الرمی والحث علیہ، رقم ۱۹۱۷، ص ۱۰۶۱)

(985)...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक तीर की वजह से तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, (1) उस तीर के बनाने वाले को जो उसे बनाते वक़्त ख़ैर की उम्मीद रखे, और (2) तीर फेंकने वाले को, और (3) तीर पकड़ाने वाले को,'' फिर फ़रमाया, ''तीर अन्दाज़ी किया करो, और सुवारी किया करो, और तुम्हारा तीर अन्दाज़ी करना मुझे तुम्हारे सुवारी करने से ज़ियादा पसन्द है, और जो तीर अन्दाज़ी सीखने के बा'द इस से ग़फ़्लत करते हुए छोड़ दे तो उस ने एक ने'मत को छोड़ दिया या कुफ़्राने ने'मत किया।'' (ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب فی الرمی، رقم ۲۵۱۳، ج ۳، ص ۱۹)

(986)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दो लश्करों के दरमियान चलने वाले के लिये हर क़दम पर एक नेकी है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب ماجاء فی القسی والرمی..الخ، رقم ۹۳۹۳، ج ۵، ص ۴۹۱)

(987)...... हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने दुश्मन को तीर मारा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा।'' सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन नह़ह़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह द-रजा कितना बड़ा होगा ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''वोह तुम्हारी मां के घर की चोखट जितना नहीं होगा बल्कि इन दो द-रजों के दरमियान सो साल का फ़ासिला होगा।''

(سنن النسائی، کتاب الجہاد، باب ثواب من رمی بسہم فی سبیل اللہ عزوجل، ج ۶، ص ۲۷)

(988)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'दान बिन अबी त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ त़ाइफ़ का मुह़ा-सरा किया तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाया वोह उस के लिये जन्नत में एक द-रजा होगा।'' तो उस दिन मैं ने सोलह तीर चलाए। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجہاد، رقم ۴۵۹۶، ج۷، ص۶۵)

(989)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाया वोह उस के लिये जन्नत में एक द-रजा होगा।'' तो उस दिन मैं ने सोलह तीर चलाए। (المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عمرو بن عبسہ، رقم ۱۷۰۱۹، ج۶، ص۵۶)

(990)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाया तो उस के लिये एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब है।'' (ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل الرمی فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۴۴، ج۳، ص۲۳۹)

(991)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाना एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجہاد، رقم ۴۵۹۵، ج۷، ص۶۵)

(992)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस के बाल इस्लाम में सफ़ेद हुए तो उस के बालों की सफ़ेदी क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगी और जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाया वोह ख़त़ा गया या निशाने पर लगा तो उस के लिये औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام में से एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۷۵۵۶، ج۸، ص۱۲۲)

(993)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस के बाल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़ेद हुए उस के बालों की सफ़ेदी क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगी और जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाया वोह दुश्मन को लगे या न लगे तीर चलाने वाले को एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और जिस ने एक मोमिन जान को आज़ाद किया तो उस ग़ुलाम का हर उ़ज़्व आज़ाद करने वाले के एक उ़ज़्व का जहन्नम से आज़ादी के लिये फ़िदया हो जाएगा।''

(سنن نسائی، کتاب الجہاد، باب ثواب من رمی بسہم فی سبیل اللہ عزوجل، ج۶، ص۲۶)

और एक रिवायत में है, ''जिस ने तीर चलाया ख़्वाह वोह निशाने पर लगे या ख़ता हो उस का येह अ़मल एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب الرمی فی سبیل اللہ عزوجل، رقم ۲۸۱۲، ج۳، ص۳۶۸)

(994)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाया वोह तीर क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب فیمن رمی بسہم، رقم ۹۳۹۸، ج۵، ص۴۹۲)

(995)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़-नफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुना अबू अ़म्र अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो कि गज़्वए बद्र, अ़क़्बा और उहुद में शरीक हुए रोज़े की ह़ालत में प्यास से बल खाते हुए देखा कि वोह अपने ग़ुलाम से फ़रमा रहे थे कि ''देखते क्या हो ! मुझे ज़िरह पहना दो।'' तो ग़ुलाम ने उन्हें ज़िरह पहना दी। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कमज़ोरी की ह़ालत में तीर निकाले और तीन तीर चलाए।

फिर कहने लगे कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक तीर चलाया और वोह तीर रास्ते में गिर गया या निशाने पर लगा तो वोह तीर उस के लिये क़ियामत के दिन नूर होगा।'' फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले शहीद हो गए। (طبرانی کبیر المعجم الکبیر، رقم ۹۵۱، ج۲۲، ص۳۸۱)

(996)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन अ़ब्दे सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उठो और जिहाद करो।'' तो एक शख़्स ने तीर चलाया। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस तीर ने इस के लिये (जन्नत) वाजिब कर दी।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عتبۃ بن عبد السلمی، رقم ۱۷۶۶۳، ج۶، ص۲۰۲)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में रोज़ा रखने का सवाब

(997)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बन्दा राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में एक दिन रोज़ा रखेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के बदले उस के चेहरे को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त दूर कर देगा।''

(مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام فی سبیل اللّٰہ لمن یطیقہ، رقم ۱۱۵۳، ص ۵۸۱)

(998)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में एक दिन रोज़ा रखेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के बदले उस के चेहरे को जहन्नम से सत्तर साल की मसाफ़त दूर फ़रमा देगा।''

(نسائی، کتاب الصیام، باب ثواب من صام یوما فی سبیل اللّٰہ، ج ۴، ص ۱۷۲)

(999)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में एक रोज़ा रखे तो जहन्नम उस के चेहरे से सो साल की मसाफ़त तक दूर हो जाएगी।''

(طبرانی اوسط، من اسمہ بکر، رقم ۳۲۴۹، ج ۲، ص ۲۶۸)

(1000)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में र-मज़ान के इ़लावा किसी महीने में एक रोज़ा रखे वोह जहन्नम से तेज़ रफ़्तार दुबले घोड़े की सो साल की मसाफ़त तक दूर हो जाएगा।''

(ابویعلی، مسند سھل بن معاذ بن أنس، رقم ۱۴۸۴، ج ۲، ص ۳۶)

(1001)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में एक रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान ज़मीनो आस्मान जितनी एक ख़न्दक़ बना देगा।''

(ترمذی، کتاب فضائل الجھاد، باب فضل الصوم فی سبیل اللّٰہ، رقم ۱۶۳۰، ج ۳، ص ۲۳۳)

(1002)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक राहे खुदा में नमाज़, रोज़ा और ज़िक्र का सवाब ख़र्च करने से सात सो गुना ज़ियादा है।''

(ابوداود، کتاب الجھاد، باب فی تضعیف الذکر، رقم ۲۴۹۸، ج ۳، ص ۱۳)

(1003)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया, ''कौन सा मुजाहिद सब से ज़ियादा सवाब का हक़दार है ?'' फ़रमाया, ''जो सब से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला हो ।''

(مسند احمد، حدیث معاذ بن انس الجھنی رقم ۱۵۶۱۴، ج۵، ص۳۰۹)

(1004)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में ज़िक्रुल्लाह की कसरत करने वाले के लिये ख़ुश ख़बरी है कि उस के लिये हर कलिमे के बदले सत्तर हज़ार नेकियां हैं और इन में से हर नेकी दस गुना है और इस के इलावा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के पास उस के लिये बहुत कुछ है ।''

(طبرانی کبیر، رقم ۱۴۳، ج۲۰، ص۷۸)

(1005)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक ऐसा घोड़ा पेश किया गया जिस का हर क़दम ह़द्दे निगाह पर पड़ता था । फिर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सफ़र शुरूअ़ किया तो हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام भी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसी क़ौम के क़रीब से गुज़रे जो एक दिन काश्त कारी करती और अगले दिन फ़स्ल काटती, जब भी वोह क़ौम फ़स्ल काटती तो फ़स्ल पहले की त़रह़ लौट आती । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ जिब्रईल ! येह कौन लोग हैं ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''येह राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में जिहाद करने वाले हैं, इन की नेकियों में सात सो गुना इज़ाफ़ा कर दिया जाता है और येह जो कुछ ख़र्च करते हैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन्हें इस का बदला अ़त़ा फ़रमा देता है ।''

(مجمع الزوائد، کتاب الایمان، باب منہ فی الاسراء، رقم ۲۳۵، ج۱، ص۲۳۶)

(1006)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में एक हज़ार आयतें पढ़ीं उस का नाम अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शु-हदा और सालिह़ीन के साथ लिखा जाएगा ।''

(المستدرک، کتاب الجہاد، باب انواع الرجال الخ، رقم ۲۴۸۸، ج۲، ص۴۰۹)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
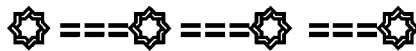
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद का सवाब

कुरआने मजीद में कई मक़ामात पर जिहाद के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, चुनान्चे इर्शाद होता है......

(1) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ۝ (پ۲،البقرۃ:۲۰۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई आदमी अपनी जान बेचता है **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है।

(2) كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۝ (پ۲،البقرۃ:۲۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम पर फ़र्ज़ हुवा ख़ुदा की राह में लड़ना और वोह तुम्हें ना गवार है और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर हो और क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते।

(3) وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا۝ (پ۵،النسآء:۷۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** की राह में लड़े फिर मारा जाए या ग़ालिब आए तो अन्क़रीब हम उसे बड़ा सवाब देंगे।

(4) لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَ الْمُجٰهِدُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝ دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا۝ (پ۵،النسآء:۹۵،۹۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बराबर नहीं वोह मुसल्मान कि बे उ़ज़्र जिहाद से बैठ रहें और वोह कि राहे ख़ुदा में अपने मालों और जानों से जिहाद करते हैं **अल्लाह** ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करने वालों का द-रजा बैठने वालों से बड़ा किया और **अल्लाह** ने सब से भलाई का वा'दा फ़रमाया और **अल्लाह** ने जिहाद वालों को बैठने वालों पर बड़े सवाब से फ़ज़ीलत दी है उस की त़रफ़ से द-रजे और बख़्शिश और रह़मत और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

(5) اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْفَآىٕزُوْنَ ۝ یُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِیْهَا نَعِیْمٌ مُّقِیْمٌ ۝ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاۤ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝ (پ۱۰، التوبہ: ۲۰،۲۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने माल व जान से **अल्लाह** की राह में लड़े **अल्लाह** के यहां उन का द-रजा बड़ा है और वोही मुराद को पहुंचे उन का रब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रह़मत और अपनी रिज़ा की और उन बाग़ों की जिन में उन्हें दाइमी ने'मत है हमेशा हमेशा उन में रहेंगे बेशक **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है।

(6) اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَیَقْتُلُوْنَ وَیُقْتَلُوْنَ ۫ وَعْدًا عَلَیْهِ حَقًّا فِی التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِیْلِ وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَیْعِكُمُ الَّذِیْ بَایَعْتُمْ بِهٖ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝ (پ۱۱، التوبہ: ۱۱۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ने मुसल्मानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है **अल्लाह** की राह में लड़ें तो मारें और मरें उस के ज़िम्मए करम पर सच्चा वा'दा तौरैत और इन्जील और क़ुरआन में और **अल्लाह** से ज़ियादा क़ौल का पूरा कौन तो ख़ुशियां मनाओ अपने सौदे की जो तुम ने उस से किया है और येही बड़ी काम्याबी है।

(7) اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ یَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝ (پ۲۶، الحجرات: ۱۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया और अपनी जान और माल से **अल्लाह** की राह में जिहाद किया वोही सच्चे हैं।

(8) اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الَّذِیْنَ یُقَاتِلُوْنَ فِیْ سَبِیْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْیَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝ (پ۲۸، الصف: ۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर गोया वोह इमारत हैं रांगा पिलाई (सीसा पिलाई दीवार)।

(9) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ (پ۲۸،الصف:۱۰۔۱۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! क्या मैं बता दूं वोह तिजारत जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से बचा ले ईमान रखो **अल्लाह** और उस के रसूल पर और **अल्लाह** की राह में अपने माल व जान से जिहाद करो येह तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम जानो वोह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें रवां और पाकीज़ा महलों में जो बसने के बाग़ों में हैं येही बड़ी काम्याबी है और एक ने'मत तुम्हें और देगा जो तुम्हें प्यारी है **अल्लाह** की मदद और जल्द आने वाली फ़त्ह और ऐ महबूब मुसल्मानों को ख़ुशी सुना दो ।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1007)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया गया कि "कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है ?" फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) पर ईमान लाना ।" अ़र्ज़ किया गया, "फिर कौन सा ?" फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना ।" अ़र्ज़ किया गया, "फिर कौन सा ?" फ़रमाया, "हज्जे मबरूर ।"

(بخاری، کتاب الحج، باب فضل الحج المبرور، رقم ۱۵۱۹، ج۱، ص۵۱۲)

(1008)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है ?" फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना और उस की राह में जिहाद करना ।"

(مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون الایمان باللہ تعالٰی افضل الاعمال، رقم ۸۴، ص۵۷)

(1009)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि लोगों में से सब से अच्छा मर्तबा किस का है ?" सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, "ज़रूर बताइये ।" इर्शाद फ़रमाया, "उस शख़्स का जो अपने घोड़े को राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सर से पकड़ कर ले जाए फिर मर जाए या शहीद कर दिया जाए ।" फिर फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि इस के

बा'द किस का मर्तबा है ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर बताइये ।'' फ़रमाया, ''उस शख़्स का जो लोगों से कनारा कश हो कर किसी घाटी में नमाज़ पढ़े और ज़कात अदा करे और लोगों के शर से बचता रहे ।'' फिर फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें शरीर तरीन इन्सान के बारे में न बताऊं ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये ।'' इर्शाद फ़रमाया, ''जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वासिता दे कर मांगा जाए और वोह अ़ता न करे ।'' (نسائی، کتاب الزکاۃ، باب من یسال باللہ ولا یعطی بہ، ج۵، ص۸۳)

(1010)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया, ''सब से अफ़्ज़ल आदमी कौन है ?'' फ़रमाया, ''वोह मोमिन जो अपनी जान और माल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करे ।'' अ़र्ज़ किया गया, ''फिर कौन अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''वोह मोमिन जो किसी घाटी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करे और लोगों को अपने शर से मह़फ़ूज़ रखे ।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجہاد والرباط، رقم ۱۸۸۸، ص ۱۰۴۷)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया गया कि ''कामिल तरीन मोमिन कौन है ?'' फ़रमाया, ''वोह जो अपनी जान और माल के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करे ।'' (المستدرک، کتاب الجہاد، باب ای المؤمنین اکمل ایمانا، رقم ۲۴۳۷، ج۲، ص ۳۸۷)

(1011)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से अफ़्ज़ल अ़मल वोह ईमान है जिस में शक न हो और वोह जिहाद है जिस में बद दियानती और ख़ियानत न हो और ह़ज्जे मबरूर है ।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجہاد، رقم ۴۵۷۸، ج۷، ص ۵۹)

(1012)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने वालों के लिये सो द-रजे तय्यार किये हैं जिन में से हर दो द-रजों के दरमियान ज़मीनो आस्मान जितना फ़ासिला है ।'' (بخاری، کتاب الجہاد، باب درجات المجاہدین الخ، رقم ۲۷۹۰، ج۲، ص ۲۵۰)

(1013)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने और मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) के रसूल होने पर राज़ी हो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है ।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने

हैरान हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे लिये येह कलिमात दोहराइयेगा।'' आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही जुम्ला दोहरा दिया, फिर फ़रमाया, ''और दूसरी चीज़ जिस की वजह से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बन्दे के सो द-रजात बुलन्द फ़रमाता है जिन में से हर दो द-रजों के दरमियान ज़मीनो आस्मान जितनी मसाफ़त है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन सी चीज़ है?'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करना।'' (مسلم، کتاب الامارۃ، باب بیان ما اعدہ اللہ للمجاھد الخ، رقم ۱۸۸۴، ص ۱۰۴۵)

(1014)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ख़ूब ! बहुत ख़ूब ! बेशक तुम ने एक अ़ज़ीम चीज़ के बारे में सुवाल किया है, बेशक तुम ने एक अ़ज़ीम चीज़ के बारे में सुवाल किया है, बेशक तुम ने एक अ़ज़ीम चीज़ के बारे में सुवाल किया है और येह काम उसी शख़्स के लिये आसान है जिस के साथ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ भलाई का इरादा फ़रमाए।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मरते दम तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान रखो और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और एक **अल्लाह** की इ़बादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ।''

फिर फ़रमाया, ''ऐ मुआ़ज़ ! अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें हर चीज़ की अस्ल, उस के सुतून और कौहान की बुलन्दी के बारे में बताऊं।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया, ''बेशक हर चीज़ की अस्ल येह है कि तुम इस बात की गवाही दो कि **अल्लाह** के इ़लावा कोई मा'बूद नहीं और वोह एक है उस का कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) उस के बन्दे और रसूल हैं और इस दीन का सुतून नमाज़ क़ाइम करना और ज़कात अदा करना और इस के कौहान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करना है और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करूं यहां तक कि वोह नमाज़ क़ाइम करने लगें और ज़कात अदा करने लगें और इस बात की गवाही दें कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह एक है उस का कोई शरीक नहीं और इस बात की गवाही दें कि मुह़म्मद (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं तो जब वोह ऐसा करने लगेंगे तो अपनी जानों और अपने अम्वाल को बचा लेंगे सिवाए किसी ह़क़ के, और इन का ह़िसाब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मे है।''

फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ज़ात की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द कोई अ़मल जिहाद से बढ़ कर नहीं,

जिस में आख़िरत के द-रजात की त़लब करते हुए किसी शख़्स के चेहरे का रंग बदल जाए या क़दम गर्द आलूद हो जाएं और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में दिये जाने वाले जानवर या राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सुवारी के लिये दिये जाने वाले जानवर से ज़ियादा वज़्नी अ़मल बन्दे की मीज़ान में कोई नहीं होगा।''

(مسند احمد، حدیث معاذ بن جبل، رقم ۲۲۱۸۳، ج۸، ص۲۶۲)

(1015)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस्लाम के कौहान की बुलन्दी राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करना है।''

(طبرانی کبیر، رقم ۷۸۸۵، ج۸، ص۲۲۳)

(1016)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ब्शी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया कि ''कौन सा अ़मल सब से अफ़्ज़ल है?'' फ़रमाया, ''ऐसा ईमान जिस में शक न हो और ऐसा जिहाद जिस में बद दियानती न हो और ह़ज्जे मबरूर।'' अ़र्ज़ किया गया, ''कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है?'' फ़रमाया, ''तंगदस्त का स-दक़ा।'' फिर अ़र्ज़ किया गया, ''कौन सी हिजरत अफ़्ज़ल है?'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा अश्या से हिजरत करना।'' अ़र्ज़ किया गया, ''कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है?'' फ़रमाया, ''उस शख़्स का जिस ने अपनी जान व माल से मुश्रिकीन के ख़िलाफ़ जिहाद किया।'' फिर अ़र्ज़ किया गया, ''कौन सा मक़्तूल अ़-ज़मत वाला है?'' फ़रमाया, ''जिस का ख़ून बहाया जाए और टांगें काट दी जाएं।''

(نسائی، کتاب الزکاۃ، باب جھد المقل، ج۵، ص۵۸)

(1017)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद किया करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रन्जो ग़म से नजात अ़त़ा फ़रमाता है।''

(مسند احمد، حدیث عبادہ بن صامت، رقم ۲۲۷۴۳، ج۸، ص۳۹۵)

(1018)...... ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मैं कफ़ील हूं (या'नी ज़ामिन हूं) उस के लिये जो मुझ पर ईमान लाए, मेरी इत़ाअ़त करे और हिजरत करे तो मैं उसे जन्नत के किनारे और वस्त़ में एक मकान की ज़मानत देता हूं और उस का कफ़ील हूं जो मुझ पर ईमान लाए और इत़ाअ़त करे और जिहाद करे, मैं उसे जन्नत के वस्त़ और जन्नत के आ'ला मक़ाम के एक घर की ज़मानत देता हूं।'' फिर फ़रमाया, ''जिस ने ऐसा किया उस ने ख़ैर के लिये कोई कसर न उठा रखी और शर से बचने का कोई मौक़अ़ न गंवाया, अब वोह जहां मरना चाहे मर जाए।''

(نسائی، کتاب الجہاد، باب ما لمن اسلم وھاجر وجاھد، ج۶، ص۲۱)

(1019)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक हज अदा करना चालीस ग़ज़्वात में शरीक होने से बेहतर है और एक ग़ज़्वा चालीस (नफ़्ली) हज अदा करने से बेहतर है और जिस ने हिज्जतुल इस्लाम (या'नी फ़र्ज़ हज) अदा कर लिया तो ग़ज़्वे में शरीक होना उस के लिये चालीस हज अदा करने से बेहतर है और फ़र्ज़ हज अदा करना चालीस जंगों में शरीक होने से बेहतर है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب فضل الجہاد، رقم ۹۴۴۰، ج۵، ص۵۰۸)

एक रिवायत में है कि ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर बहुत से सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से हज के लिये इजाज़त चाही तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो एक मरतबा हज कर चुका है उस के लिये एक ग़ज़्वे में शरीक होना चालीस हज अदा करने से बेहतर है।'' (مراسیل ابی داؤد مع سنن ابی داؤد، باب ماجاء فی الدواب، ص۱۴)

(1020)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने हज अदा नहीं किया उस के लिये हज अदा करना दस ग़ज़्वात में शरीक होने से बेहतर है और जो हज अदा कर चुका उस के लिये एक ग़ज़्वे में शरीक होना दस हज करने से बेहतर है।'' (طبرانی اوسط، من اسمہ بکر، رقم ۳۱۴۴، ج۲، ص۲۴۲)

(1021)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा अ़मल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के बराबर है?'' फ़रमाया, ''तुम इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते।'' जब दो या तीन मरतबा येही अ़र्ज़ किया गया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही इर्शाद फ़रमाया कि ''तुम इस की इस्तित़ाअ़त नहीं रखते।'' फिर फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की मिसाल वापस लौटने तक उस रोज़ादार और रात को क़ियाम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आयतें पढ़ने वाले की त़रह है जो रोज़े और नमाज़ में कोताही नहीं करता।'' (مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الشہادۃ فی سبیل اللہ تعالی، رقم ۱۸۷۸، ص۱۰۴۴)

एक रिवायत में है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने के बराबर हो।'' फ़रमाया, ''ऐसा कोई अ़मल नहीं।'' फिर फ़रमाया, ''क्या तुम इस की इस्तित़ाअ़त रखते हो कि जब मुजाहिद जिहाद के लिये निकले तो तुम मस्जिद में दाख़िल हो कर नमाज़ अदा करो और इस में सुस्ती न करो और रोज़ा रखो मगर इफ़्तार न करो (या'नी कोई रोज़ा न छोड़ो)।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''कौन इस की त़ाक़त रख सकता है?''

(بخاری، کتاب الجہاد والسیر، باب فضل الجہاد والسیر، رقم ۲۷۸۵، ج۲، ص۲۴۹)

एक रिवायत में है कि फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की मिसाल (और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी राह में जिहाद करने वालों को ख़ूब जानता है) दिन को रोज़ा रखने और रात को ख़ुशूअ़ के साथ क़ियाम, रुकूअ़ और सुजूद करने वाले की त़रह है।'' (نسائی، کتاب الجہاد، باب مثل الجہاد فی سبیل اللہ عزوجل، ج۶، ص۱۸)

(1022)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में जिहाद करने वाले की मिसाल उस के वापस आने तक दिन में रोज़ा रखने और रात में क़ियाम करने वाले की सी है, वोह जब भी वापस आए।''

(مسند احمد، حدیث نعمان بن بشیر، رقم ۱۸۴۲۹، ج۶، ص ۳۸۳)

(1023)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरी ज़ौजा सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे शोहर जिहाद के लिये चले गए ह़ालां कि मैं नमाज़ और दीगर आ'माल में उन की पैरवी किया करती थी, लिहाज़ा मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो मैं उन की वापसी तक करती रहूं।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तुम इस की इस्तित़ाअ़त रखती हो कि उस के लौटने तक मुसल्सल नमाज़ अदा करती रहो और इस में सुस्ती न करो, रोज़े रखती रहो और इफ़्त़ार न करो (या'नी कोई रोज़ा न छोड़ो) और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहो और इस में सुस्ती न करो।'' तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं इस की त़ाक़त नहीं रखती।'' फ़रमाया, ''उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम्हें इस की त़ाक़त मिल भी जाए फिर भी तुम उस के अ़मल के अ़शरे अ़शीर को नहीं पहुंच सकती।''

(مسند احمد، حدیث معاذ بن انس الجہنی، رقم ۱۵۶۳۳، ج۵، ص ۳۱۲)

(1024)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि मैं ने अपने वालिदे गिरामी को फ़रमाते हुए सुना कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक जन्नत के दरवाज़े तलवारों के साए में हैं।'' तो एक ख़स्ता ह़ाल बोसीदा कपड़े पहने हुए शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया, ''ऐ अबू मूसा ! आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ फ़रमाते हुए सुना है ?'' उन्हों ने जवाब दिया ''हां।'' तो वोह शख़्स अपने साथियों के पास आया और कहने लगा, ''तुम पर सलामती हो।'' और अपनी तलवार की मियान तोड़ कर फेंक दी। इस के बा'द तलवार ले कर दुश्मन पर ह़म्ला आवर हुवा और लड़ते लड़ते शहीद हो गया।

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب ثبوت الجنۃ للشہید، رقم ۱۹۰۲، ص ۱۰۵۳)

(1025)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आप के अस्ह़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم बद्र की जानिब रवाना हुए और मुश्रिकीन से पहले वहां पहुंच गए। जब मुश्रिकीन वहां पहुंचे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस जन्नत की त़रफ़ बढ़ो जिस की चौड़ाई ज़मीनो आस्मान जितनी है।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन ह़ुमाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या एक जन्नत की चौड़ाई ज़मीनो आस्मान जितनी है ?'' फ़रमाया, ''हां।''

वोह कहने लगे, "ख़ूब बहुत ख़ूब।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तुम ने बहुत ख़ूब क्यूं कहा ?" अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ऐसी कोई बात नहीं मैं ने तो येह बात सिर्फ़ इस उम्मीद पर कही कि मैं भी जन्नत का ह़क़दार हो जाऊं।"

आप ने इर्शाद फ़रमाया, "यक़ीनन तुम जन्नत के ह़क़दार हो।" येह सुन कर उन्हों ने अपने तोशा दान से खजूरें निकालीं और उन्हें खाने लगे फिर कहा, "अगर मैं अपनी खजूरें खाने में मश्ग़ूल रहा तो मेरी ज़िन्दगी त़वील हो जाए।" और अपनी खजूरें फेंक कर मुश्रिकीन से मुक़ाबला करते करते शहीद हो गए।" (مسلم، کتاب الامارۃ، باب ثبوت الجنۃ للشھید، رقم ۱۹۰۱، ص ۱۰۵۳)

(1026)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मेरी राह में जिहाद करने वाला मेरी ज़मानत में है, अगर मैं ने उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली तो उसे जन्नत में पहुंचा दूंगा और अगर उसे वापस लौटाया तो सवाब या ग़नीमत के साथ लौटाऊंगा।" (ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل الجہاد، رقم ۱۶۲۶، ج ۳، ص ۲۳۱)

(1027)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है और मरीज़ की इयादत करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है और मस्जिद की त़रफ़ जाने वाला या मस्जिद से लौटने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है और ह़ाकिमे इस्लाम के पास उस की इ़ज़्ज़त और इआ़नत करने के लिये आने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है और अपने घर में बैठ कर किसी की ग़ीबत न करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है।" (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، رقم ۳۷۳، ج ۱، ص ۲۹۵)

(1028)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ऊंटनी को दो मरतबा दोहने के दरमियानी वक़्त के बराबर जिहाद किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के चेहरे पर जहन्नम को ह़राम फ़रमा देगा।"

(مسند احمد، حدیث عمرو بن عبسۃ، رقم ۱۹۴۶۱، ج ۷، ص ۱۱۴)

=== === ===

राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़ बांध कर खड़े होने का सवाब

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝

(پ۲۸،الصّف:۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** दोस्त रखता है उन्हें जो उस की राह में लड़ते हैं परा (सफ़) बांध कर गोया वोह इमारत हैं रांगा पिलाई (सीसा पिलाई दीवार)।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(1029)...... हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़ बांध कर खड़ा होना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बन्दे की साठ साल की इबादत से अफ़्ज़ल है।''

(المستدرک،کتاب الجہاد،باب مقام احدکم فی سبیل اللہ افضل من صلاتہ..الخ،رقم ۲۴۴۳،ج۲،ص۳۸۵)

(1030)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक ऐसी घाटी के क़रीब से गुज़रे जहां मीठे पानी का एक चश्मा बह रहा था। उन्हें वोह जगह पसन्द आ गई और वोह कहने लगे, ''अगर मैं ने लोगों से कनारा कशी की तो इसी घाटी में क़ियाम करूंगा लेकिन जब तक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त न ले लूं लोगों से हरगिज़ कनारा कशी न करूंगा।''

जब उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस बात का ज़िक्र किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम हरगिज़ ऐसा मत करना, क्यूं कि तुम में से किसी शख़्स का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में खड़ा होना अपने घर में साठ साल तक नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है,'' क्या तुम पसन्द नहीं करते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दे और तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाए ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करो क्यूं कि जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ऊंटनी को दो मरतबा दोहने के दरमियानी वक़्त के बराबर जिहाद करता है उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।''

(ترمذی،کتاب فضائل الجہاد،باب فضل ماجاء فی فضل الغدو...الخ،رقم ۱۶۵۶،ج۳،ص۲۴۵)

(1031)...... हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक जंग में शरीक थे कि अचानक लोग पनाह की तलाश में घबरा कर साहिले समुन्दर की तरफ़ दौड़े फिर जब बताया गया कि ख़तरा टल गया है तो लोग वापस लौट आए और देखा कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहीं खड़े थे। एक शख़्स ने अर्ज़ किया, ''ऐ अबू हुरैरा ! आप यहीं क्यूं खड़े रहे ?'' आप ने जवाब दिया, ''मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में एक घड़ी खड़ा होना शबे क़द्र में ह-जरे अस्वद के पास क़ियाम करने से अफ़्ज़ल है।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان،کتاب السیر،باب فضل الجہاد،رقم ۴۵۸۴،ج۷،ص۶۱)
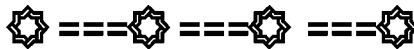
सफ़ों के आमने सामने होते वक़्त दुआ मांगने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

(1) وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَاۤ اَفْرِغْ عَلَیْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ۰ فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ﻗﻔﻼ (پ۲،البقرۃ:۲۵۰،۲۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब सामने आए जालूत और उस के लश्करों के अ़र्ज़ की ऐ रब हमारे ! हम पर सब्र उंडेल दे और हमारे पाउं जमे रख और काफ़िर लोगों पर हमारी मदद कर तो उन्हों ने उन को भगा दिया **अल्लाह** के हुक्म से।

एक और जगह फ़रमाया,

(2) وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِیْۤ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ ۰ فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْیَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِؕ وَاللّٰهُ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ۰

(پ۴،آل عمران:۱۴۷،۱۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कुछ भी न कहते थे सिवा इस दुआ के कि ऐ हमारे रब ! बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़ियादतियां हम ने अपने काम में कीं और हमारे क़दम जमा दे और हमें इन काफ़िर लोगों पर मदद दे तो **अल्लाह** ने उन्हें दुन्या का इन्आम दिया और आख़िरत के सवाब की ख़ूबी और नेकी वाले **अल्लाह** को प्यारे हैं।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1032)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दो साअ़तें ऐसी हैं जिन में आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और मांगने वाले की दुआ बहुत कम रद होती है (1) अज़ान के वक़्त और (2) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़ बांधने के वक़्त।''

एक रिवायत में है कि अज़ान और जंग के दौरान दुश्मनों पर हम्ला करते वक़्त की जाने वाली दुआ रद नहीं की जाती। (ابوداؤد، کتاب الجهاد، باب الدعاء عند اللقاء، رقم ۲۵۴۰، ج۳، ص۲۹)

जब कि एक रिवायत में है कि ''नमाज़ की इक़ामत और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सफ़ बन्दी करते वक़्त की जाने वाली दुआ मांगने वाले पर लौटाई नहीं जाती।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، رقم ۱۷۶۱، ج۳، ص۱۲۸)

राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ज़ख़्मी होने वाले का सवाब

(1033)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक कोई शै दो क़तरों और दो क़दमों से ज़ियादा पसन्दीदा नहीं, वोह दो क़तरे जो पसन्दीदा हैं (1) अल्लाह के ख़ौफ़ से बहने वाले आंसू का क़तरा और (2) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में बहाए जाने वाले ख़ून का क़तरा और वोह दो क़दम जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा हैं इन में से एक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में चलने वाला क़दम और दूसरा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ में से किसी फ़र्ज़ की अदाएगी के लिये चलने वाला क़दम है।"

(ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل المرابط، رقم ۱۶۷۵، ج ۳، ص ۲۵۳)

(1034)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो शख़्स सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद की निय्यत से घर से निकलता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का ज़ामिन होता है कि इसे मेरी राह में जिहाद के जज़्बे, मुझ पर ईमान और मेरे रसूलों की तस्दीक़ ने निकाला है। चुनान्चे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ज़मानत देता है कि उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा या उसे उस के हासिल कर्दा सवाब या ग़नीमत के साथ उस के घर वापस लौटाएगा।"

फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "उस ज़ाते पाक की क़सम, जिस के दस्ते क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है ! जब राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लगने वाले ज़ख़्म को क़ियामत के दिन लाया जाएगा तो उस का रंग ख़ून जैसा और बू मुश्क जैसी होगी और उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है ! अगर मुझे मुसलमानों के मशक़्क़त में पड़ जाने का ख़ौफ़ न होता तो मैं राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में लड़ी जाने वाली एक जंग के बा'द दूसरी से हरगिज़ न बैठता मगर मैं वुस्अत नहीं पाता कि उन्हें इस बात पर आमादा करूं और न ही वोह इस की वुस्अत पाते हैं और मुझ से पीछे रह जाना भी उन्हें गिरां गुज़रता है, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की जान है, मैं चाहता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करूं और शहीद हो जाऊं फिर जिहाद करूं फिर शहीद हो जाऊं फिर जिहाद करूं फिर शहीद हो जाऊं।"

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجہاد والخروج فی سبیل اللہ، رقم ۱۸۷۶، ص ۱۰۴۲)

(1035)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ज़ख़्मी होने वाला क़ियामत के दिन

आएगा तो उस के ज़ख़्मों से सुर्ख़ ख़ून बह रहा होगा और उस की ख़ुश्बू मुश्क जैसी होगी।''

(بخاری، کتاب الذبائح، باب المسک، رقم ۵۵۳۳، ج۳، ص۵۶۶)

एक रिवायत में है कि ''हर वोह ज़ख़्म जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में लगे क़ियामत के दिन तक ताज़ा रहेगा, उस से सुर्ख़ रंग का ख़ून बहता होगा और उस की ख़ुश्बू मुश्क जैसी होगी।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجہاد والخروج فی سبیل اللہ، رقم ۱۸۷۶، ص۱۰۴۲)

(1036)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि ''जिसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक ज़ख़्म लगे वोह क़ियामत के दिन आएगा तो उस की बू मुश्क की सी और उस का रंग ज़ा'फ़रान जैसा होगा, उस पर शु-हदा की मोहर लगी होगी और जो शख़्स इख़्लास के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मर्तबए शहादत त़लब करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शहादत का सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा अगर्चे उस का इन्तिक़ाल अपने बिस्तर पर हुवा हो।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، باب ذکر الجنائز، فصل فی الشھید، رقم ۳۱۸۱، ج۵، ص۷۷)

(1037)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो मुसल्मान ऊंटनी को दो मरतबा दोहने के दरमियानी वक़्त के बराबर राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करता है तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है और जिसे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में एक ज़ख़्म लगे या कोई एक मुसीबत पहुंचे वोह ज़ख़्म क़ियामत के दिन इस त़रह़ होगा कि उस का रंग ज़ा'फ़रान का और ख़ुश्बू मुश्क की होगी।'' (ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فیمن یکلم فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۶۲، ج۳، ص۲۴۷)

गुज़श्ता सफ़ह़ात में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीसे मुबा-रका गुज़र चुकी है कि ''जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में कोई ज़ख़्म लगे उस पर शु-हदा की मोहर लगा दी जाती है जो उस के लिये क़ियामत के दिन नूर होगी और उस (मोहर) का रंग ज़ा'फ़रान जैसा और उस की ख़ुश्बू मुश्क जैसी होगी और उस (मोहर) की वजह से उसे अव्वलीन व आख़िरीन पहचान लेंगे और कहेंगे कि फ़ुलां पर शु-हदा की मोहर लगी हुई है।''

=== === ===

काफ़िर को क़त्ल करने का सवाब

(1038)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''काफ़िर और उस का (मुसल्मान) क़ातिल कभी जहन्नम में जम्अ़ न होंगे।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل کافرا ثم سدد، رقم ۱۸۹۱، ص ۱۰۴۹)

एक रिवायत में है कि ''जहन्नम में ऐसे दो शख़्स जम्अ़ न होंगे जिन में से एक शख़्स दूसरे को नुक़्सान पहुंचा सके, वोह मुसल्मान जिस ने किसी काफ़िर को क़त्ल किया फिर नेकी पर क़ाइम रहा और किसी बन्दे के पेट में राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ का गुबार और जहन्नम का धुवां दोनों इकठ्ठे नहीं हो सकते और बन्दे के दिल में ईमान और बुख़्ल जम्अ़ नहीं हो सकते।'' एक रिवायत में है कि ''बन्दे के दिल में ईमान और ह़सद जम्अ़ नहीं हो सकते।'' (المستدرک، کتاب الجہاد، باب ای المؤمنین اکمل ایمان، رقم ۲۴۴۴، ج ۲، ص ۳۸۹)
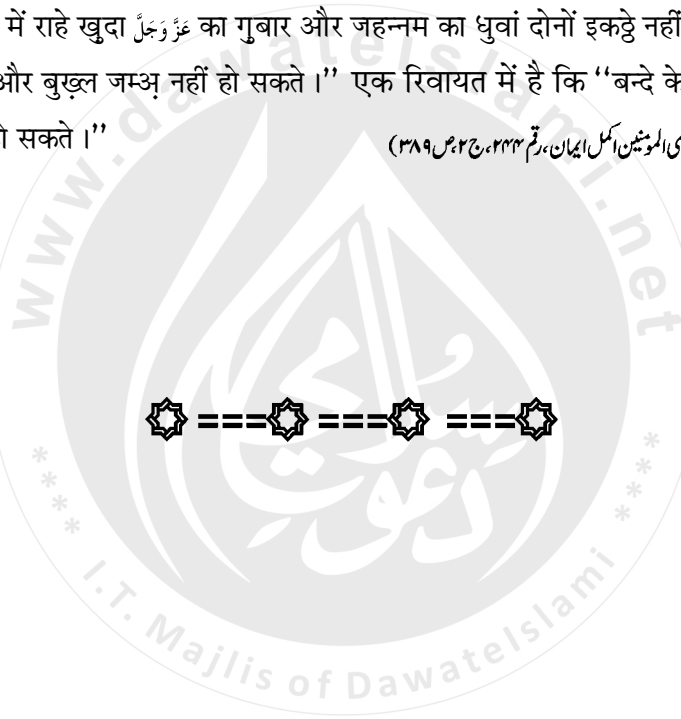
राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में शहीद होने का सवाब

कुरआने पाक में कसीर मक़ामात पर शु-हदा की फ़ज़ीलत बयान की गई है चुनान्चे इर्शाद होता है......

(1) وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ۝ (پ۲،البقرة:۱۵۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें ख़बर नहीं।

(2) وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًاؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۝ فَرِحِيْنَ بِمَاۤ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝ يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ (پ۴،آل عمران:۱۶۹،۱۷۰،۱۷۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं शाद हैं उस पर जो **अल्लाह** ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया और ख़ुशियां मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उन से न मिले कि उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म ख़ुशियां मनाते हैं **अल्लाह** की ने'मत और फ़ज़्ल की और येह कि **अल्लाह** ज़ाएअ़ नहीं करता अज्र मुसल्मानों का।

(3) فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاُوْذُوْا فِیْ سَبِيْلِیْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِؕ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ۝ (پ۴،آل عمران:۱۹۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जिन्हों ने हिजरत की और अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और लड़े और मारे गए मैं ज़रूर उन के सब गुनाह उतार दूंगा और ज़रूर उन्हें बाग़ों में ले जाऊंगा जिन के नीचे नहरें रवां **अल्लाह** के पास का सवाब और **अल्लाह** ही के पास अच्छा सवाब है।

وَالَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ فَلَنْ یُّضِلَّ (4) اَعْمَالَهُمْ0 سَیَهْدِیْهِمْ وَیُصْلِحُ بَالَهُمْ0 وَیُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ0 (پ۲۶،محمد:۴تا۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए अल्लाह हरगिज़ उन के अमल ज़ाएअ न फ़रमाएगा जल्द उन्हें राह देगा और उन का काम बना देगा और उन्हें जन्नत में ले जाएगा उन्हें इस की पहचान करा दी है।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(1039)...... हज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि गुज़श्ता रात मैं ने देखा कि दो शख़्स मेरे पास आए और मुझे साथ ले कर एक दरख़्त के ऊपर चढ़ गए और मुझे एक बहुत ख़ूब सूरत और फ़ज़ीलत वाले घर में दाख़िल कर दिया, मैं ने उस जैसा घर कभी नहीं देखा फिर उन्हों ने मुझ से कहा कि ''येह शु-हदा का घर है।'' (بخاری، کتاب الجہاد، باب درجات المجاہدین فی سبیل اللہ، رقم ۲۷۹۱، ج۲،ص۲۵۱)

(1040)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से अफ़्ज़ल जिहाद कौन सा है ?'' फ़रमाया, ''जिस में तेरी टांगें काट दी जाएं और तेरा ख़ून बहा दिया जाए।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب السیر، باب فضل الجہاد، رقم ۴۶۲۰، ج۷،ص۷۴)

(1041)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें सब से ज़ियादा जूदो करम वाले के बारे में ख़बर न दूं ?'' (फिर फ़रमाया), ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सब से ज़ियादा जूदो करम वाला है और मैं औलादे आदम عَلَیْہِ السَّلَام में सब से ज़ियादा सख़ी हूं और मेरे बा'द सब से ज़ियादा सख़ी वोह शख़्स है जो इल्म हासिल करे फिर अपने इल्म को फैलाए, उसे क़ियामत के दिन एक उम्मत के तौर पर उठाया जाएगा और दूसरा वोह शख़्स है जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के हुसूल के लिये अपने आप को वक़्फ़ कर दे यहां तक कि उसे शहीद कर दिया जाए।'' (ابویعلی، مسند انس بن مالک، رقم ۲۷۸۲، ج۳،ص۱۶)

(1042)...... हज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वजह है कि क़ब्र में सब मुसल्मानों का इम्तिहान होता है लेकिन शहीद का नहीं होता ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''उस के सर पर तलवारों की बिजली गिरना ही उस के इम्तिहान के लिये काफ़ी है।'' (نسائی، کتاب الجنائز، باب الشہید، ج۴،ص۹۹)

(1043)...... हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ा रहे थे। इसी दौरान एक शख़्स नमाज़ के लिये आया और सफ़ में पहुंच कर कहने लगा, ''ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ! तू अपने नेक बन्दों को जो सब से अफ़्ज़ल शै अता फ़रमाता है मुझे भी अता फ़रमा।'' जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ मुकम्मल फ़रमा ली तो दरयाफ़्त फ़रमाया, ''अभी किस ने कलाम किया था ?'' उस शख़्स ने अर्ज़ किया,

''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने।'' तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''फिर तो तुम्हारी टांगें काट दी जाएंगी और तुम्हें शहीद कर दिया जाएगा (या'नी येही अफ़्ज़ल शै है)।''

(المستدرک، کتاب الجہاد، باب قفلۃ کغزوۃ، رقم ۲۴۴۹، ج ۲، ص ۳۹۲)

(1044)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''शहीद को क़त्ल होते वक़्त इतनी ही तक्लीफ़ होती है जितनी तुम में से किसी को चुटकी की तक्लीफ़ होती है।''

(ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فی فضل المرابط، رقم ۱۶۷۴، ج ۳، ص ۲۵۲)

(1045)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जन्नत में दाख़िल होने के बा'द शहीद के सिवा कोई इस बात को पसन्द नहीं करता कि उसे दुन्या में लौटाया जाए और उस के साथ वोही सुलूक किया जाए जो दुन्या में किया जाता था मगर शहीद शहादत की फ़ज़ीलत और करामत देखते हुए तमन्ना करता है कि उसे दुन्या में लौटाया जाए और उसे दस मरतबा क़त्ल किया जाए।'' (بخاری، کتاب الجہاد، باب تمنی المجاہد الخ، رقم ۲۸۱۷، ج ۲، ص ۲۵۹)

(1046)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अहले जन्नत में से एक शख़्स को लाया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा, ''तूने अपने मस्कन को कैसा पाया ?'' वोह अ़र्ज़ करेगा, ''सब से बेहतर।'' फिर **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा, ''कुछ और मांग, कोई और तमन्ना कर।'' तो वोह अ़र्ज़ करेगा, ''मैं क्या मांगूं और किस चीज़ की तमन्ना करूं ?'' फिर वोह शहादत की फ़ज़ीलत देखते हुए अ़र्ज़ करेगा, ''बस मैं तुझ से येह सुवाल करता हूं कि मुझे दुन्या में वापस भेज दे ताकि मुझे तेरी राह में दस मरतबा क़त्ल किया जाए।''

(المستدرک، کتاب الجہاد، باب الجہاد یذہب اللہ بہ الھم والغم، رقم ۲۴۵۲، ج ۲، ص ۳۹۳)

(1047)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद (ﷺ) की जान है, मैं चाहता हूं कि राहे ख़ुदा में जिहाद करूं और शहीद कर दिया जाऊं फिर जिहाद करूं फिर शहीद कर दिया जाऊं फिर जिहाद करूं फिर शहीद कर दिया जाऊं।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجہاد والخروج فی سبیل اللہ، رقم ۱۸۷۶، ص ۱۰۴۲)

(1048)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत़्बे के दौरान इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाना सब से अफ़्ज़ल अ़मल हैं।'' एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मुझे राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में क़त्ल कर दिया जाए तो आप

का क्या ख़याल है कि मेरे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे ?'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हां ! अगर तुम्हें अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में क़त्ल कर दिया जाए जब कि तुम इस पर सवाब की उम्मीद रखते हुए सब्र करो और लड़ाई के दौरान पेश क़दमी करो और मैदाने जिहाद से फ़िरार इख़्तियार न करो ।''

फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया, ''अभी तूने क्या कहा था ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''अगर मुझे राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में क़त्ल कर दिया जाए तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का क्या ख़याल है क्या मेरे गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे ?'' आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हां ! अगर तुम इस पर सब्र करो और मैदाने जिहाद से फ़िरार इख़्तियार न करो तो क़र्ज़ के इलावा तुम्हारे तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे, मुझे जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने येही बताया है ।'' (مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل فی سبیل اللہ الخ، رقم ۱۸۸۵، ص ۱۰۴۶)

(1049)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़र्ज़ के इलावा शहीद के तमाम गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं ।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب من قتل فی سبیل اللہ الخ، رقم ۱۸۸۶، ص ۱۰۴۶)

(1050)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स लोहे का लिबास पहन कर सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं जिहाद करूं या मुसल्मान हो जाऊं ।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''पहले मुसल्मान हो जाओ फिर जिहाद करो ।'' चुनान्चे वोह इस्लाम ले आया फिर जिहाद करते हुए शहीद हो गया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस ने अ़मल कम किया और सवाब ज़ियादा ले गया ।'' (بخاری، کتاب الجہاد، باب عمل صالح قبل القتال، رقم ۲۸۰۸، ج ۲، ص ۲۵۶)

(1051)...... ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन हाद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाया और आप की पैरवी की, फिर अ़र्ज़ किया, ''मैं आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत करना चाहता हूं ।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को उन के बारे में ताकीद फ़रमा दी । जब एक जंग के मौक़अ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे तक़्सीम फ़रमाया और उस आ'राबी सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ह़िस्सा सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को दे दिया, वोह आ'राबी सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन के पीछे पहरा दिया करते थे । जब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उन का ह़िस्सा उन्हें दिया तो उन्हों ने पूछा, ''येह क्या है ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने फ़रमाया, ''येह तुम्हारा ह़िस्सा है जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ता फ़रमाया है ।''

वोह आ'राबी उस माल को ले कर रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह क्या है ?'' फ़रमाया, ''येह मेरी तक़्सीम में से तुम्हारा हिस्सा है।'' आ'राबी सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अर्ज़ किया ''हुज़ूर ! मैं ने इस माल के हुसूल के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी नहीं की बल्कि मैं ने तो इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी की है ताकि मुझे यहां तीर लगे और मैं मर कर जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।'' और अपनी गरदन की त़रफ़ इशारा किया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर तुम सच्चे हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी येह ख़्वाहिश ज़रूर पूरी फ़रमाएगा।'' फिर कुछ अ़र्सा बा'द जब दुश्मनों के साथ मा'रिका हुवा तो उस सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में लाया गया, उन्हें उसी मक़ाम पर तीर लगा था जिस जगह का उन्हों ने इशारा किया था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या येह वोही है ?'' अ़र्ज़ किया गया, ''जी हां।'' आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सच्चा जाना तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की बात पूरी फ़रमा दी।''

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपने जुब्बए मुबा-रका में कफ़न दिया और उन का जनाज़ा पढ़ाया और येह वोही सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ हैं जिन की नमाज़े जनाज़ा में येह दुआ़ पढ़ी गई ''اَللّٰهُمَّ هٰذَا عَبْدُكَ خَرَجَ مُهَاجِرًا فِيْ سَبِيْلِكَ فَقُتِلَ شَهِيْدًا اَنَا شَهِيْدٌ عَلٰى ذٰلِكَ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह तेरा वोही बन्दा है जिस ने तेरी राह में हिजरत की और शहीद हो गया और मैं इस बात का गवाह हूं।''

(نسائی، کتاب الجنائز، باب الصلاۃ علی الشہداء، ج۴،ص۶۰)

(1052)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मेरे चचा अनस बिन नज़्र ग़ज़्वए बद्र में हाज़िर न हो सके फिर उन्हों ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुश्रिकीन के साथ जो पहला जिहाद फ़रमाया था मैं उस में हाज़िर न हो सका था, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मुश्रिकीन के साथ जिहाद का मौक़अ़ दिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ देखेगा कि मैं क्या करता हूं।''

फिर जब ग़ज़्वए उहुद का मौक़अ़ आया और मुसल्मान भागने लगे तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं अपने सहाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم के अ़मल पर मा'ज़िरत ख़्वाह हूं और मुश्रिकीन के अ़मल से बराअत चाहता हूं।'' फिर आगे तशरीफ़ ले गए तो हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मुलाक़ात हुई तो उन से फ़रमाया ''ऐ सा'द बिन मुआ़ज़ ! नज़्र के रब की क़सम ! मैं जन्नत की ख़ुश्बू उहुद के क़रीब महसूस कर रहा हूं।'' हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! जो कुछ उन्हों ने किया मैं उस की हाजत नहीं रखता।''

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''हम ने हज़रते सय्यिदुना अनस बिन नज़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जिस्म पर अस्सी से ज़ाइद तलवार या नेज़ा या तीर के ज़ख़्म पाए वोह शहीद हो चुके थे और मुश्रिकीन ने उन का मुस्ला कर दिया था (या'नी उन का चेहरा बिगाड़ दिया था) उन्हें उन की बहन के इलावा कोई न पहचान सका उन की बहन ने उन की उंगलियों के पोरों से उन्हें पहचाना था, हमारा ख़याल है कि येह आयते मुबा-रका इन्ही के बारे में नाज़िल हुई رِجَالٌ صَدَقُوْا مَاعَاھَدُوااللّٰہَ عَلَیْہِ ج فَمِنْھُمْ مَّنْ قَضٰی نَحْبَہٗ وَمِنْھُمْ مَّنْ یَّنْتَظِرُز وَ مَا بَدَّلُوْا تَبْدِیْلًا ۝ (پ۲۱،الاحزاب:۲۳)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद अल्लाह से किया था तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई राह देख रहा है और वोह ज़रा न बदले।''

(بخاری، کتاب الجہاد، باب قول اللہ تعالٰی من المؤمنین رجال صدقوا الخ، رقم ۲۸۰۵، ج۲، ص۲۵۵)

(1053)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मैं ने जा'फ़र बिन अबू तालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को एक फ़िरिश्ते की सूरत में जन्नत में उड़ते हुए देखा, उन के दो पर थे जिन के ज़रीए वोह जहां चाहते उड़ कर पहुंच जाते और उन की टांगें ख़ून से लिथड़ी हुई थीं।'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۴۶۷، ج۲، ص۱۰۷)

वज़ाहत :

ग़ज़्वए मौता के मौक़अ पर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन हारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को लश्कर का सालार मुक़र्रर फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया था कि ''अगर ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद कर दिया जाए तो जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तुम्हारे सालार होंगे और अगर जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद हो गए तो अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा तुम्हारे सालार बनेंगे।'' जंग शुरूअ़ हुई तो ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़लम (झन्डे) को थाम लिया जब वोह शहीद हो गए तो हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दाएं हाथ से अ़लम को थामा, जब दायां हाथ कट गया तो बाएं हाथों से अ़लम पकड़ लिया, वोह हाथ भी कट गया तो फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को शहीद कर दिया गया।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, जब हम ने हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तलाश किया तो उन्हें मक़्तूलीन में पाया। उन के जिस्म पर तलवार और तीर के नव्वे90 से ज़ाइद ज़ख़्म थे। अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने शु-हदा की तरह उन्हें ज़िन्दा और रिज़्क़ दिये जाने वाले लोगों में शामिल फ़रमा लिया और मज़ीद जज़ा येह अ़ता फ़रमाई कि उन के हाथों को परों में तब्दील फ़रमा दिया जिन के ज़रीए वोह जहां चाहते हैं उड़ कर पहुंच जाते हैं और जन्नत के फलों से जो चाहते हैं खा लेते हैं इसी लिये उन्हें तय्यार (या'नी उड़ने वाला) कहा जाता है और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا जब भी हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا को सलाम करते तो इस तरह सलाम करते, اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا بْنَ ذِی الْجَنَاحَیْن तरजमा : ऐ दो परों वाले बाप के बेटे ! तुम पर सलामती हो।

(1054)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! तुम खुश नसीब हो कि तुम्हारे वालिद फ़िरिश्तों के साथ आस्मानों में उड़ते हैं।"

(مجمع الزوائد، کتاب المناقب، باب مناقب جعفر بن ابی طالب رضی اللہ عنہ، رقم ۱۵۴۹۸، ج۹، ص۴۴۴)

(1055)...... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद साहिब का मुस्ला कर दिया गया था (या'नी चेहरा बिगाड़ दिया गया था), जब उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ला कर आप के सामने रखा गया तो मैं ने उन के चेहरे से चादर हटाना चाही मगर मेरी क़ौम ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक औ़रत के चिल्लाने की आवाज़ सुनी, आप से अ़र्ज़ किया गया, "येह अ़म्र की बेटी या बहन है।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "येह क्यूं रो रही है?" या येह फ़रमाया कि "इसे नहीं रोना चाहिये क्यूं कि फ़िरिश्ते इन पर मुसलसल अपने परों से साया किये हुए हैं।"

(بخاری، کتاب الجہاد، باب ظل الملائکۃ علی الشہید، رقم ۲۸۱۶، ج۲، ص۲۵۸)

(1056)...... ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि जब ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (या'नी मेरे वालिद) ग़ज़्वए उहुद के दिन शहीद हो गए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, "ऐ जाबिर ! क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे बाप से क्या फ़रमाया है ?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "ज़रूर बताइये।" आप ने इर्शाद फ़रमाया, "जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी से कलाम फ़रमाता है तो ह़िजाब के पीछे से कलाम फ़रमाता है मगर उस ने तुम्हारे वालिद से बिग़ैर किसी ह़िजाब व तरजुमान के हम कलाम हो कर फ़रमाया, "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मुझ से मांग मैं तुझे अ़ता फ़रमाऊंगा।" तो तुम्हारे वालिद ने अ़र्ज़ किया, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे दोबारा ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा ताकि मैं तेरी राह में दूसरी मरतबा क़त्ल किया जाऊं।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि मेरा येह फ़ैसला है "**اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝** (پ۲۰، القصص:۳۹) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं।"

फिर उस ने अ़र्ज़ किया, "मुझ से पीछे रह जाने वालों तक येह बात पहुंचा दे।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ۝ (پ۴، آل عمران:۱۶۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

(ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الشہادۃ فی سبیل اللہ، رقم ۲۸۰۰، ج۳، ص۳۶۱)

(1057)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ारिसा बिन सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा उम्मे रबीअ़ बिन्ते बराअ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो

अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे ह़ारिसा के बारे में बताएंगे ? (वोह ग़ज़्वए बद्र में शहीद हो गए थे) कि अगर वोह जन्नत में हैं तो मैं सब्र कर लूंगी और अगर कहीं और हैं तो मैं उन की ह़ालत पर ख़ूब रोऊंगी।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ ह़ारिसा की मां ! वोह जन्नत में एक सर सब्ज़ो शादाब बाग़ में है और फ़िरदौसे आ'ला में पहुंच गया है।''

(بخاری، کتاب الجہاد، باب من اتاہ سہم عرب فقتلہ، رقم ۲۸۰۹، ج ۲، ص ۲۵۶)

(1058)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि कुछ लोग ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कुछ लोगों को हमारे साथ भेज दीजिये ताकि वोह हमें क़ुरआन व सुन्नत सिखाएं।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार में से सत्तर70 सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को जिन्हें ''क़ुर्राअ'' कहा जाता था उन के साथ भेज दिया, उन में मेरे मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िराम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ भी थे, वोह क़ुरआन पढ़ते और रात को सीखने के लिये क़ुरआने पाक की तक्रार किया करते थे और दिन में पानी ला कर मस्जिद में रखते और लकड़ियां जम्अ़ कर के बेचते और उस से जो मिलता उस से अहले सुफ़्फ़ा और फ़ु-क़रा के लिये खाना ख़रीद लिया करते थे।

जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ारियों की इस जमाअ़त को उन लोगों के साथ भेजा तो उन लोगों ने रास्ते में ही साज़िश के तह़त इस क़ाफ़िले वालों को क़त्ल कर दिया। क़ारियों की इस जमाअ़त ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ की, ''या इलाही عَزَّوَجَلَّ ! हमारी ह़ालते ज़ार की ख़बर हमारे नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचा दे, बेशक हम तुझ से मुलाक़ात करने वाले हैं और हम तुझ से राज़ी हैं और तू हम से राज़ी हो जा।'' एक शख़्स मेरे मामूं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पीछे से आया और उस ने अपना नेज़ा उन के पेट में घोंप दिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा, ''रब्बे का'बा की क़सम ! मैं काम्याब हो गया।''

(इसी सूरते ह़ाल को दूसरी जानिब) रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बयान फ़रमा रहे थे। आप ने फ़रमाया कि तुम्हारे भाइयों को क़त्ल कर दिया गया और उन्हों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ की, कि ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी ह़ालते ज़ार की ख़बर हमारे नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचा दे और बेशक हम तुझ से मुलाक़ात करने वाले हैं और हम तुझ से राज़ी हैं और तू हम से राज़ी हो जा।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب ثبوت الجنۃ للشہید، رقم ۶۷۷۔۱۹۰۲، ص ۱۰۵۴)

(1059)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ने अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इस आयते मुबा-रका के बारे में सुवाल किया,

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَ ۝ (پ۴، آل عمران:۱۶۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

तो उन्हों ने फ़रमाया, ''हम ने जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस के बारे में सुवाल किया था तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि ''उन की रूहें सब्ज़ परिन्दों के पेट में हैं, उन के घोंसले अ़र्श से मुअ़ल्लक़ हैं, वोह जन्नत में जहां चाहते हैं चले जाते हैं फिर उन क़िन्दीलों में लौट आते हैं, फिर उन का रब عَزَّوَجَلَّ उन पर तजल्ली फ़रमाता है और इर्शाद फ़रमाता है, ''क्या तुम्हें किसी चीज़ की ख़्वाहिश है ?'' वोह अ़र्ज़ करते हैं, ''हमें किस चीज़ की ख़्वाहिश होगी जब कि हम जन्नत में जहां चाहते हैं चले जाते हैं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तीन मरतबा येह फ़रमाता है कि ''कोई ख़्वाहिश है ?'' जब वोह जान लेते हैं कि हमारे लिये कुछ मांगे बिग़ैर चारा नहीं तो अ़र्ज़ करते हैं, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! हम चाहते हैं कि तू हमारी रूहों को हमारे जिस्मों में लौटा दे ताकि हम एक मरतबा फिर तेरी राह में क़त्ल किये जाएं।'' जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ देखता है कि इन्हें कोई ह़ाजत नहीं तो उन्हें छोड़ देता है।''

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب بیان ارواح الشھداء فی الجنۃ، رقم ۱۸۸۷، ص ۱۰۴۷)

(1060)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक शु-हदा की रूहें जन्नत में सब्ज़ परिन्दों के पेट में हैं जो जन्नत के फलों या जन्नत के दरख़्तों में से खाती हैं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجہاد، باب الترغیب فی الشھادۃ، رقم ۱۸، ج ۲، ص ۲۰۷)

(1061)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब तुम्हारे भाई शहीद हुए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की रूहों को सब्ज़ परिन्दों के पेट में रख दिया जो जन्नत की नहरों पर आ कर उस के फल खाती हैं और अ़र्श के साए में मुअ़ल्लक़ सोने की क़िन्दीलों में पनाह गुज़ीं हो जाती हैं। जब उन लोगों ने अपने खाने और पीने की पाकीज़गी को देखा तो कहा कि हमारे भाइयों तक हमारा येह पैग़ाम कौन पहुंचाएगा कि हम जन्नत में ज़िन्दा हैं और हमें रिज़्क़ दिया जाता है ताकि वोह जिहाद से कनारा कशी न करें और जंग से इज्तिनाब न करें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, ''मैं तुम्हारा पैग़ाम पहुंचाऊंगा फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْیَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ یُرْزَقُوْنَ ۝ (پ۴، آل عمران:۱۶۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

(ابوداود، کتاب الجہاد، باب فی فضل الشھادۃ، رقم ۲۵۲۰، ج ۳، ص ۲۲)

(1062)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हमारा रब तबा–र–क व तआ़ला उस शख़्स से ख़ुश होता है जिस के साथी राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में जिहाद करते हुए शिकस्त खा जाएं और वोह शख़्स अपनी ज़िम्मादारी को पहचाने और अपना ख़ून बह जाने तक लड़ता रहे तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने मलाएका से फ़रमाता है कि ''मेरे इस बन्दे की त़रफ़ देखो जो मेरे इन्आ़मात में रग़बत और मेरे ख़ौफ़ से लौट आया यहां तक कि इस का ख़ून बहा दिया गया।''

(ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب فی الرجل یشتری نفسہ، رقم ۲۵۳۶، ج ۳، ص ۲۷)

(1063)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब बन्दे हि़साब के लिये खड़े होंगे तो एक क़ौम अपनी तलवारें अपनी गरदनों पर रखे हुए आएगी जिन से ख़ून बह रहा होगा और जन्नत के दरवाज़े पर आ कर भीड़ कर देगी। पूछा जाएगा ''येह कौन हैं ?'' जवाब दिया जाएगा, ''येह शु–हदा हैं जो ज़िन्दा थे और रिज़्क़ दिये जाते थे।''

(المعجم الاوسط للطبرانی من اسمہ احمد، رقم ۱۹۹۸، ج ۱، ص ۵۴۲)

(1064)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''शु–हदा जन्नत के दरवाज़े पर एक नह्‌र के किनारे एक सब्ज़ गुम्बद में रहते हैं और सुब्ह़ो शाम जन्नत से उन के लिये रिज़्क़ भेजा जाता है।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ ابن عباس بن عبد المطلب، رقم ۲۳۹۰، ج ۱، ص ۵۷۱)

(1065)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''शहीद अपने घर वालों में से सत्तर[70] अफ़्राद की शफ़ाअ़त करेगा।''

(ابوداؤد، کتاب الجہاد، باب فی الشہید یشفع، رقم ۲۵۲۲، ج ۳، ص ۲۲)

(1066)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक शहीद के लिये अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के पास सात इन्आ़म हैं (1) उस के ख़ून का पहला क़त़रा गिरते ही उस की बख़्शिश हो जाती है और उसे जन्नत में उस का ठिकाना दिखा दिया जाता है (2) उसे ईमान का जोड़ा पहनाया जाता है, (3) उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दी जाती है, (4) उसे क़ियामत के दिन की बड़ी घबराहट से अम्न में रखा जाएगा, (5) उस के सर पर वक़ार का ताज सजाया जाएगा, जिस का याक़ूत दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर होगा, (6) उस का बहत्तर[72] हूरों के साथ निकाह़ कराया जाएगा, (7) सत्तर रिश्तेदारों के ह़क़ में उस की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الجہاد، باب الترغیب فی الشھادۃ، رقم ۲۷، ج ۲، ص ۲۱۰)

(1067)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हु़स्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी

आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ शहीद को छ इन्आम अ़ता फ़रमाता है, (1) उस के ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है और जन्नत में उसे उस का ठिकाना दिखा देता है (2) उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ फ़रमाता है, (3) क़ियामत के दिन उसे बड़ी घबराहट से अम्न अ़ता फ़रमाएगा, (4) उस के सर पर वक़ार का ताज रखेगा जिस का याक़ूत दुन्या और उस की हर चीज़ से बेहतर होगा, (5) उस का हूरों में से बहत्तर[70] हूरों के साथ निकाह़ कराएगा, (6) उस की सत्तर रिश्तेदारों के ह़क़ में शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा।''

(ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الشہادۃ فی سبیل اللہ، رقم ۲۷۹۹، ج ۳، ص ۳۶۰)

(1068)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मक़्तूल तीन त़रह़ के होते हैं, पहला : वोह मोमिन जो राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में अपनी जानो माल से जिहाद करे, जब उस का दुश्मन से सामना हो तो वोह शहीद हो जाने तक उन के साथ जंग करता रहे, येह काम्याब शहीद, अ़र्श तले अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की जन्नत में होगा उस पर अम्बिया सिर्फ़ नुबुव्वत के द-रजे की फ़ज़ीलत रखते होंगे।

दूसरा : वोह शख़्स जो गुनाहों से घबरा कर अपनी जानो माल के साथ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करे जब उस का दुश्मन से सामना हो तो वोह शहीद होने तक उन के साथ जंग करता रहे तो वोह ऐसा निखरा हुवा शहीद है जिस के गुनाह और ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं क्यूं कि तलवार गुनाहों को मिटाने वाली है और जन्नत के आठ दरवाज़े हैं जिस दरवाज़े से येह चाहेगा दाख़िल होगा जब कि जहन्नम के सात दरवाज़े हैं जिन में से बा'ज़ दरवाज़े बा'ज़ से ज़ियादा अ़ज़ाब वाले हैं।

तीसरा मक़्तूल : वोह मुनाफ़िक़ शख़्स जो अपनी जानो माल से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में क़त्ल होने तक जिहाद करे मगर वोह जहन्नम में है क्यूं कि तलवार निफ़ाक़ को नहीं मिटाती।''

(شعب الایمان، باب فی الجہاد، رقم ۴۲۶۱، ج ۴، ص ۲۸)

(1069)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''शु-हदा चार हैं, एक : पुख़्ता ईमान वाला मोमिन कि जब दुश्मन का सामना करे तो क़त्ल हो जाने तक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की तस्दीक़ करता रहे, येह वोही है जिस की त़रफ़ लोग क़ियामत के दिन इस त़रह़ अपनी आंखें उठा कर देखेंगे।'' अपने सर को इस क़दर बुलन्द किया कि आप की टोपी गिर गई (रावी कहते हैं कि मैं नहीं जानता कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की टोपी गिरना मुराद है या नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक टोपी) फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दूसरा : वोह कामिल मोमिन जो दुश्मन का सामना बुज़दिली से करे फिर एक गुमनाम तीर उसे हलाक कर दे तो वोह दूसरे द-रजे में है, और तीसरा : वोह

मोमिन शख़्स जिस के अ़मल अच्छे भी हों और बुरे भी, वोह दुश्मन से मुक़ाबला करे और क़त्ल होने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्दीक़ करता रहे तो वोह तीसरे द-रजे में है, और चौथा : वोह मोमिन जिस ने अपनी जान पर ज़ियादती की या'नी कसरत से गुनाह किये फिर दुश्मन से सामना हुवा तो मरते दम तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्दीक़ करता रहा येह चौथे द-रजे में है।'' (ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فضل الشھداء عنداللہ، رقم ۱۶۵۰، ج ۳، ص ۲۴۱)

(1070)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''शु-हदा तीन हैं, पहला : वोह शख़्स जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी जानो माल के साथ क़त्ल करने या क़त्ल होने की बजाए सिर्फ़ मुसल्मानों की ता'दाद में इज़ाफ़ा करने के लिये निकले, अगर वोह मर जाए या क़त्ल कर दिया जाए तो उस के तमाम गुनाह बख़्श दिये जाते हैं और उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दे दी जाती है और (क़ियामत की) बड़ी घबराहट से अम्न में रखा जाएगा और हूरे ईन से उस का निकाह़ कर दिया जाता है और उसे करामत (बुज़ुर्गी) का हुल्ला पहनाया जाएगा और उस के सर पर जन्नत का बा वक़ार ताज रखा जाएगा।''

दूसरा : वोह शख़्स जो अपनी जानो माल के साथ सवाब की उम्मीद पर क़त्ल होने की बजाए क़त्ल करने के इरादे से जिहाद करे, अगर वोह मर जाए या शहीद कर दिया जाए तो उस की जगह ख़लीलुल्लाह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के साथ मक़ामे सिद्क़ में अ़ज़ीम ताक़त वाले बादशाह के हुज़ूर होगी।

तीसरा : वोह शख़्स जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी जानो माल के ज़रीए सवाब की उम्मीद पर मारने और मरने के लिये जिहाद करने निकले फिर मर जाए या शहीद कर दिया जाए वोह शख़्स क़ियामत के दिन अ़लल ए'लान अपनी तलवार को अपनी गरदन पर रखे हुए आएगा जब कि लोग घुटनों के बल खड़े होंगे, वोह कहेगा, ''सुनो ! हमारे लिये रास्ता छोड़ दो हम ने अपना ख़ून और अपना माल **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला के लिये ख़र्च किया है।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, ''उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर वोह येह बात ख़लीलुर्रह़मान ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام या किसी नबी से भी कहेगा तो वोह भी उस का ह़क़ जानते हुए उस के लिये रास्ता छोड़ देंगे।'' फिर वोह शु-हदा अ़र्श के नीचे नूर के मिम्बरों पर आ कर बैठ जाएंगे और देखेंगे कि लोगों के दरमियान कैसे फ़ैसला किया जाता है, वोह न तो मौत का ग़म पाएंगे, न बरज़ख़ में ख़ौफ़ज़दा होंगे, न ही सूर उन्हें घबराहट में मुब्तला करेगा और न ही ह़िसाब व मीज़ान और सिरात़ का ख़ौफ़ उन्हें रन्जीदा करेगा, वोह देखेंगे कि लोगों के दरमियान क्या फ़ैसला किया जाता है, वोह जो कुछ मांगेंगे उन्हें अ़त़ा किया जाएगा और वोह जिस की सिफ़ारिश करेंगे उन की सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी और जन्नत की जो चीज़ मांगेंगे उन्हें अ़त़ा कर दी जाएगी और जन्नत में जहां चाहेंगे ठिकाना बना लेंगे।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجہاد، باب الترغیب فی الشھادۃ، رقم ۲۱، ج ۲، ص ۲۰۸)

(1071)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना यज़ीद बिन श-जरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन लोगों में से थे जिन के क़ौलो फ़े'ल में कोई तज़ाद न था, उन्हों ने हमें ख़िता़ब करते हुए फ़रमाया, ''ऐ लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की उन ने'मतों को याद करो जो तुम्हें अ़ता की गईं, उन सब्ज़, सुर्ख़ और पीली अश्या और क़ियाम गाहों में ग़ौर करो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें कैसी कैसी ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं ।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे, ''जब लोग नमाज़ या जंग के लिये सफ़ बनाते हैं तो आस्मानों और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और हूरे ईन को संवार कर छोड़ दिया जाता है । जब कोई शख़्स जिहाद में पेश क़दमी करता है तो हूरे ईन कहती हैं, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की मदद फ़रमा ।'' और जब वोह पीछे हटता है तो उस से पर्दा कर लेती हैं और कहती हैं, ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की मग़्फ़िरत फ़रमा ।''

येह सुन कर लोगों के चेहरे मुरझा गए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''तुम पर मेरे मां बाप क़ुरबान ! हूरे ईन को ग़मज़दा न करो क्यूं कि जब मुजाहिद के ख़ून का पहला क़त़रा गिरता है तो उस के हर गुनाह को मिटा दिया जाता है तो हूरे ईन में से उस की दो बीवियां उस के पास उतरती हैं और उस के चेहरे से मिट्टी हटाते हुए कहती हैं, ''हम तुम्हारे लिये हैं ।'' और वोह कहता है, ''मैं तुम्हारे लिये हूं ।'' फिर उसे सो हुल्ले पहनाए जाते हैं जो कि किसी आदमी के बनाए हुए नहीं होते बल्कि जन्नत की पैदावार होते हैं, वोह ऐसे नफ़ीस होते हैं कि अगर उन्हें दो उंग्लियों से पकड़ा जाए तो पकड़ में आ जाएं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाया करते थे कि मुझे बताया गया है, ''तलवारें जन्नत की कुन्जियां हैं ।''

(طبرانی کبیر، حدیث یزید بن شجرۃ، رقم ۶۴۱، ج۲۲، ص ۲۴۶)

(1072)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में शहीद का ज़िक्र हुवा तो आप ने फ़रमाया, ''शहीद के ख़ून से ज़मीन ख़ुश्क होने से पहले हूरे ईन में से उस की दो बीवियां इस त़रह़ आती हैं जैसे रेगिस्तान में दूध पिलाने वाली ऊंटनियां अपने दूध पीने वाले बच्चे को ढांप लेती हैं, उन में से हर एक के हाथ में जन्नत का एक ऐसा जोड़ा होता है जो दुन्या और उस की हर चीज़ से बेहतर है ।''

(ابن ماجہ، کتاب الجہاد، باب فضل الشہادۃ فی سبیل اللہ، رقم ۲۷۹۸، ج۳، ص ۳۶۰)

(1073)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक ह़ब्शी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं एक बदबूदार बद सूरत ह़ब्शी हूं और मेरे पास माल बिल्कुल नहीं, अगर मैं क़त्ल होने तक इन मुशिरकीन के ख़िलाफ़ जंग करूं तो मेरा ठिकाना कहां होगा ?'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''जन्नत में ।'' तो वोह सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद होने तक मुशिरकीन के साथ क़िताल करते रहे । फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन की मय्यित पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरा

चेहरा रोशन कर दिया और तेरी बू को पाकीज़ा फ़रमा कर तेरे माल में इज़ाफ़ा फ़रमा दिया।'' फिर उन्ही या किसी और के बारे में इर्शाद फ़रमाया कि ''मैं ने हूरे ईन में से इस की बीवी को इस के ऊन के जुब्बे को खींच कर इस के और जुब्बे के दरमियान दाख़िल होते देखा।'' (المستدرک، کتاب الجہاد، باب من رضی باللہ ربا و بالاسلام دینا الخ، رقم ۲۵۰۸، ج۲، ص ۴۱۷)

एक रिवायत में है कि एक शख़्स ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर मैं आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने मरने तक जिहाद करता रहूं तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़याल में क्या मेरा रब عَزَّ وَجَلَّ मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा?'' और क्या वोह मुझे कमतर न जानेगा? फ़रमाया, ''हां।'' उस ने अर्ज़ किया, ''फिर मैं जिहाद क्यूं न करूं जब कि मुझ जैसा बदबूदार, सियाह रंग और ख़ानदान का कम तरीन फ़र्द भी जन्नत में दाख़िल होगा।'' फिर वोह चला गया और क़िताल करते करते शहीद हो गया। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के क़रीब से गुज़रे तो फ़रमाया, ''ऐ जिआल! अब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तेरी बू को पाकीज़ा कर दिया और तेरा चेहरा रोशन कर दिया।''

(1074)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक आ'राबी के ख़ैमे के क़रीब से गुज़रे जब कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सहाबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के हमराह जंग करने का इरादा रखते थे। उस आ'राबी ने ख़ैमे का गोशा उठा कर पूछा, ''कौन लोग हैं?'' कहा गया, ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और उन के सहाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان हैं जो कि जंग का इरादा रखते हैं।'' आ'राबी ने पूछा, ''क्या दुन्या का माल भी पाएंगे?'' जवाब दिया गया, ''हां! ग़नीमत पाएंगे फिर उन्हें मुसल्मानों में तक़्सीम कर दिया जाएगा।'' येह सुन कर वोह आ'राबी सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने ऊंट की तरफ़ बढ़े और उसे रस्सी से बांध कर उन के साथ चल पड़े।

वोह अपने ऊंट को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब करने लगे, जब कि सहाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم उस के ऊंट को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से दूर करते रहे तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ज़ाते पाक की क़सम! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है, येह जन्नत के बादशाहों में से है।'' फिर जब दुश्मनों के साथ मुक़ाबला हुवा तो येह आ'राबी सहाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ जंग करते करते शहीद हो गए। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को उन की शहादत की ख़बर दी गई तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन की मय्यित पर तशरीफ़ लाए और उस के सिरहाने बैठ गए और ख़ुशी से मुस्कुराने लगे, फिर अपना रुख़े अन्वर दूसरी तरफ़ फैर लिया तो हम ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुशी से हंसते हुए देखा फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना चेहरए अक़्दस दूसरी तरफ़ क्यूं फैर लिया?'' फ़रमाया, ''मेरी ख़ुशी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में इस का मर्तबा देखने की वजह से थी और

मेरे इस से मुंह फैरने की वजह येह है कि हूरे ईन में से इस की एक बीवी अब इस के सिरहाने आ बैठी है।''
(شعب الایمان، باب فی اثبات العدو وترک الفرار من الزحف، رقم ۴۳۱۷، ج۴، ص ۵۳)

(1075)...... हज़रते सय्यिदुना नईम बिन हम्मार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन से शहीद अफ़्ज़ल हैं ?'' फ़रमाया, ''वोह जो अगर किसी सफ़ में दाख़िल हो तो क़त्ल हो जाने तक अपना रुख़ न मोड़ें, येह वोही लोग हैं जो जन्नत की आ'ला मनाज़िल में होंगे और उन का रब عَزَّوَجَلَّ उन से खुश होता है और जब तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ दुन्या में किसी बन्दे से खुश हो जाए तो उस बन्दे से कोई हिसाब नहीं लिया जाता।''
(مسند احمد، حدیث نعیم بن ھمار، رقم ۲۲۵۳۹، ج۸، ص ۳۴۳)

(1076)...... इमाम त़-बरानी ने हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इसी त़रह़ की एक ह़दीस रिवायत की है।
(مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب ماجاء فی الشھادۃ وفضلھا، رقم ۹۵۱۳، ج۵، ص ۵۳۲)

कुरआने मजीद पढ़ने का सवाब

रिज़ाए इलाही के लिये कुरआने मजीद सीखने, सिखाने, सुनने और तिलावत करने का सवाब

कुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद की ता'लीम व तअ़ल्लुम और तिलावत के कसीर फ़ज़ाइल कुरआने पाक में बयान किये गए हैं चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖؕ اُولٰٓىٕكَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖؕ (پ۱،البقرۃ:۱۲۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिन्हें हम ने किताब दी है वोह जैसी चाहिये इस की तिलावत करते हैं वोही इस पर ईमान रखते हैं।

(2) وَ اِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ وَ بَیْنَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًاۙ (پ۱۵،بنی اسرائیل:۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब तुम ने कुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि आख़िरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुवा पर्दा कर दिया।

(3) وَ نُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّ رَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِیْنَۙ (پ۱۵،بنی اسرائیل:۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम कुरआन में उतारते हैं वोह चीज़ जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रह़मत है।

(4) اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً یَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَۙ لِیُوَفِّیَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ یَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ وَ الَّذِیْۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِیْرٌۢ بَصِیْرٌ ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِیْنَ اصْطَفَیْنَا مِنْ عِبَادِنَاۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖۚ وَ مِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌۚ وَ مِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَیْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं ताकि उन के सवाब उन्हें भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे बेशक वोह बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है और वोह किताब जो हम ने तुम्हारी त़रफ़ वह़्य भेजी वोही ह़क़ है अपने से अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती हुई बेशक अल्लाह अपने बन्दों से ख़बरदार देखने वाला है फिर हम ने किताब का वारिस किया अपने चुने

ذَالِکَ هُوَالْفَضْلُ الْکَبِیْرُ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ یَّدْخُلُوْنَهَا یُحَلَّوْنَ فِیْهَامِنْ اَسَاوِرَمِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِیْهَا حَرِیْرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْٓ اَذْهَبَ عَنَّاالْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَالَغَفُوْرٌشَکُوْرُنِ ۝ الَّذِیْٓ اَحَلَّنَادَارَالْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ لَا یَمَسُّنَا فِیْهَا نَصَبٌ وَّلَایَمَسُّنَا فِیْهَا لُغُوْبٌ ۝

(پ۲۲،الفاطر:۳۲تا۳۵)

हुए बन्दों को तो उन में कोई अपनी जान पर जुल्म करता है और उन में कोई मियाना चाल पर है और उन में कोई वोह है जो **अल्लाह** के हुक्म से भलाइयों में सब्क़त ले गया येही बड़ा फ़ज़्ल है बसने के बाग़ों में दाख़िल होंगे वोह उन में सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और वहां उन की पोशाक रेशमी है और कहेंगे सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जिस ने हमारा ग़म दूर किया बेशक हमारा रब बख़्शने वाला क़द्र फ़रमाने वाला है वोह जिस ने हमें आराम की जगह उतारा अपने फ़ज़्ल से हमें इस में न कोई तक्लीफ़ पहुंचे न हमें इस में कोई तकान लाहिक़ हो।

(5) اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِیْثِ کِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِیَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُالَّذِیْنَ یَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِیْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰی ذِکْرِاللّٰهِ ؕ ذَالِکَ هُدَی اللّٰهِ یَهْدِیْ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَمَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَالَهٗ مِنْ هَادٍ ۝

(پ۲۳،الزمر:۲۳)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने उतारी सब से अच्छी किताब कि अव्वल से आख़िर तक एक सी है दोहरे बयान वाली इस से बाल खड़े होते हैं उन के बदन पर जो अपने रब से डरते हैं फिर उन की खालें और दिल नर्म पड़ते हैं यादे ख़ुदा की तरफ़ रग़बत में येह **अल्लाह** की हिदायत है राह दिखाए इस से जिसे चाहे और जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(1077)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "क़ुरआन पढ़ा करो क्यूं कि येह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेगा।"

(مسلم،کتاب صلاۃ المسافرین،باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ،رقم ۸۰۴،ص ۴۰۳)

(1078)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "रोज़ा और क़ुरआन बन्दे के लिये शफ़ाअ़त करेंगे, रोज़ा अ़र्ज़ करेगा, या रब عَزَّ وَجَلَّ ! मैं ने इसे दिन में खाने और पीने से रोक दिया था लिहाज़ा मेरी शफ़ाअ़त इस के हक़ में क़बूल फ़रमा।" जब कि क़ुरआन कहेगा, "ऐ रब عَزَّ وَجَلَّ ! मैं ने इसे रात को सोने से रोक दिया था लिहाज़ा मेरी शफ़ाअ़त इस के हक़ में क़बूल फ़रमा।" फिर इन दोनों की शफ़ाअ़त क़बूल कर ली जाएगी।"

(الترغیب والترھیب،کتاب قراءۃ القرآن فی الصلاۃ،رقم ۲۲،ج۲،ص ۲۳۰)

(1079)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कु़रआन शफ़ाअ़त करेगा और इस की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी और झगड़ेगा तो इस की तस्दीक़ की जाएगी जो शख़्स इसे अपने पेशे नज़र रखेगा येह जन्नत तक उस की क़ियादत करेगा और जो इसे पसे पुश्त डाल देगा येह उसे हांकता हुवा जहन्नम में ले जाएगा।'' (طبرانی کبیر،رقم ۱۰۴۵۰،ج۱۰،ص۱۹۸)

(1080)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने कु़रआन पढ़ा और फिर इसे याद कर लिया, इस के ह़लाल को ह़लाल जाना और ह़राम को ह़राम जाना तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और उस के घर वालों से ऐसे दस अफ़राद के ह़क़ में उस की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमाएगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुकी होगी।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل قاری القرآن، رقم ۲۹۱۴، ج۴، ص۴۱۴)

(1081)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हु़स्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से बेहतरीन वोह है जो कु़रआन सीखे और दूसरों को सिखाए।'' (بخاری، کتاب فضائل القرآن باب خیرکم من تعلم القرآن وعلمہ، رقم ۵۰۲۷، ج۳، ص۴۱۰)

(1082)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ा़तिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए हम उस वक़्त सुफ़्फ़ा (मस्जिदे न-बवी शरीफ़ के बाहर चबूतरे) पर बैठे थे। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से कौन येह पसन्द करता है कि वोह रोज़ाना सुब्ह़ को बुत़्ह़ान या अ़क़ीक़ की वादियों में जाए और कोई गुनाह और क़त़्ए रेह़्मी किये बिग़ैर दो बड़े कौहान वाली ऊंटनियां ले कर वापस लौटे ?'' तो हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक येह पसन्द करता है।'' फ़रमाया, ''तो तुम में से कोई सुब्ह़ के वक़्त मस्जिद में क्यूं नहीं जाता और किताबुल्लाह की दो आयतें सीखता या तिलावत करता कि येह तुम्हारे ह़क़ में दो ऊंटनियों से बेहतर हैं और तीन आयतें तुम्हारे लिये तीन ऊंटनियों से बेहतर हैं और चार आयतें चार ऊंटनियों से बेहतर हैं और जितनी आयतें सीखेगा या पढ़ेगा उतनी ऊंटनियों से बेहतर हैं।'' (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ القرآن، رقم ۸۰۳، ص۴۰۲)

(1083)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने

इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू ज़र ! तुम्हारा सुब्ह़ के वक़्त किताबुल्लाह की एक आयत सीखने के लिये चलना तुम्हारे लिये सो रक्अ़तें पढ़ने से बेहतर है और तुम्हारा सुब्ह़ के वक़्त इल्म का एक बाब सीखने के लिये जाना ख़्वाह उस पर अ़मल किया जाए या न किया जाए तुम्हारे लिये हज़ार रक्अ़तें पढ़ने से बेहतर है।'' (ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فضل من تعلم القرآن وعلمہ، رقم ۲۱۹، ج ۱، ص ۱۴۲)

(1084)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने क़ुरआन पढ़ा और इस पर अ़मल किया, क़ियामत के दिन उस के वालिदैन को ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस की रोशनी दुन्या के सूरज की रोशनी से ज़ियादा होगी तो तुम्हारा क़ुरआन पर अ़मल करने वाले के बारे में क्या ख़याल है ?'' (ابوداؤد، کتاب الوتر، باب فی ثواب قرأۃ القرآن، رقم ۱۴۵۳، ج ۲، ص ۱۰۰)

(1085)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने क़ुरआन पढ़ा और इसे सीखा और इस पर अ़मल किया उस के वालिदैन को क़ियामत के दिन नूर का एक ऐसा ताज पहनाया जाएगा जिस की चमक सूरज की त़रह़ होगी और उस के वालिदैन को दो ह़ुल्ले पहनाए जाएंगे जिन की क़ीमत येह दुन्या अदा नहीं कर सकती तो वोह पूछेंगे, ''हमें येह लिबास क्यूं पहनाए गए हैं ?'' उन से कहा जाएगा, ''तुम्हारे बच्चों के क़ुरआन को थामने के सबब।'' (المستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب من قرا القرآن وتعلمہ الخ، رقم ۲۱۳۲، ج ۲، ص ۲۷۸)

(1086)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, ''जिस ने क़ुरआन पढ़ा उसे बुरी उ़म्र की त़रफ़ नहीं लौटाया जाएगा।'' क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है :

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِیْنَ ۙ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ (پ۳۰، التین: ۵-۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर उसे हर नीची से नीची ह़ालत की त़रफ़ फैर दिया मगर जो ईमान लाए और अच्छे काम किये।

फिर फ़रमाया, ''अच्छे काम करने वालों से मुराद वोह लोग हैं जिन्हों ने क़ुरआन पढ़ा होगा।''

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب من قرا القرآن لم یرد الی ارذل العمر، رقم ۴۰۰۶، ج ۳، ص ۳۸۲)

(1087)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा कि क़ुरआन पढ़ता जा और जन्नत के द-रजात तै़ करता जा और ठहर ठहर कर पढ़ जैसा कि तू दुन्या में ठहर ठहर कर पढ़ा करता था तू जहां आख़िरी आयत पढ़ेगा वहीं तेरा ठिकाना होगा।'' (ابوداؤد، کتاب الوتر، باب استحباب الترتیل فی القراءۃ، رقم ۱۴۶۴، ج ۲، ص ۱۰۴)

वज़ाहत :

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान ख़त्ताबी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ "मआलिमुस्सुनन" में फ़रमाते हैं कि "रिवायात में आया है कि कुरआन की आयतों की ता'दाद जन्नत के द-रजात के बराबर है लिहाज़ा क़ारी से कहा जाएगा कि तू जितनी आयतें पढ़ सकता है इतने द-रजे तै करता जा तो जो उस वक़्त पूरा कुरआने पाक पढ़ लेगा वोह जन्नत के इन्तिहाई द-रजे को पा लेगा और जिस ने कुरआन का कोई जुज़ पढ़ा तो उस के सवाब की इन्तिहा क़िराअत की इन्तिहा तक होगी।" وَاللّٰہُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب

(1088)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क़ियामत के दिन कुरआन पढ़ने वाला आएगा तो कुरआन अ़र्ज़ करेगा, "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! इसे हुल्ला पहना।" तो उसे करामत का हुल्ला पहनाया जाएगा। फिर कुरआन अ़र्ज़ करेगा, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! इस में इज़ाफ़ा फ़रमा।" तो उसे करामत का ताज पहनाया जाएगा। फिर कुरआन अ़र्ज़ करेगा, "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! इस से राज़ी हो जा।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी हो जाएगा। फिर उस कुरआन पढ़ने वाले से कहा जाएगा, "कुरआन पढ़ता जा और जन्नत के द-रजात तै करता जा और हर आयत पर उसे एक ने'मत अ़ता की जाएगी।" (ترمذی، کتاب فضائل القرآن، رقم ۲۹۲۴، ج۴، ص۴۱۹)

(1089)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "रश्क सिर्फ़ दो आदमियों पर किया जा सकता है, एक : उस शख़्स पर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआन सिखाया और वोह दिन रात इसे पढ़ता रहे और उस का पड़ोसी उसे सुन कर कहे काश ! मुझे भी फ़ुलां शख़्स की मिस्ल कुरआन की तौफ़ीक़ मिलती तो मैं भी उस की तरह अ़मल करता, दूसरा : उस शख़्स पर जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल अ़ता फ़रमाया और वोह राहे हक़ में उसे ख़र्च करे और कोई शख़्स कहे कि काश ! मुझे भी फ़ुलां शख़्स की मिस्ल माल मिलता तो मैं भी उसी की तरह अ़मल करता।" (بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اغتباط صاحب القرآن، رقم ۵۰۲۶، ج۳، ص۴۱۰)

(1090)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तीन लोग ऐसे होंगे जिन्हें बड़ी घबराहट (या'नी क़ियामत) दहशत ज़दा न कर सकेगी और हिसाब उन तक न पहुंचेगा, वोह मुश्क के टीले पर होंगे यहां तक कि मख़्लूक़ हिसाब से फ़ारिग़ हो जाए। (पहला :) वोह शख़्स जो **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये कुरआन पढ़े और इस के ज़रीए क़ौम की इमामत कराए और क़ौम भी उस से राज़ी हो। (दूसरा :) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नमाज़ों की तरफ़ बुलाने वाला (या'नी मुअज़्ज़िन)। (तीसरा :) वोह गुलाम जिस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ और अपने दुन्यवी आक़ा का मुआ-मला खुश उस्लूबी से निभाया।" (طبرانی اوسط، من اسمہ ولید، رقم ۹۲۸۰، ج۶، ص۴۲۵)

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, ''अगर मैं ने येह बात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सात मरतबा न सुनी होती तो मैं इसे हरगिज़ न बयान करता।'' फिर फ़रमाया, ''मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि तीन अफ़्राद मुश्क के टीलों पर होंगे क़ियामत के दिन की घबराहट उन्हें दह्शत ज़दा न करेगी और वोह उस वक़्त भी पुर सुकून होंगे जब लोग दह्शत ज़दा होंगे। (1) वोह शख़्स जिस ने कुरआन सीखा फिर इस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा और इन्आ़म का त़लब गार हुवा الخ,'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۳۵۸۴، ج۱۲، ص۳۳۱)

(1091)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ कुरआन से अफ़्ज़ल किसी अ़मल के साथ नहीं लौटोगे।'' (المستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب الجاھر بالقرآن الخ، رقم ۲۰۸۳، ج۲، ص۲۵۶)

(1092)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने बन्दे को दो रक्अ़तें अदा करने से अफ़्ज़ल किसी शै का इज़्न नहीं दिया और बन्दा जब तक नमाज़ में होता है उस पर रह़मतें निछावर होती रहती हैं और बन्दे कुरआन की मिस्ल किसी और चीज़ से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की कुरबत नहीं पाते।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب۱۷، رقم ۲۹۲۰، ج۴، ص۴۱۸)

(1093)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक लोगों में से कुछ **अल्लाह** वाले हैं।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग हैं ?'' फ़रमाया, ''कुरआन पढ़ने वाले कि येही लोग **अल्लाह** वाले और ख़्वास में शामिल हैं।'' (ابن ماجہ، کتاب السنۃ، باب فی فضل من تعلم القرآن وعلمہ، رقم ۲۱۵، ج۱، ص۱۴۰)

(1094)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक रात अपने अस्त़बल में कुरआन की तिलावत फ़रमा रहे थे कि उन का घोड़ा चक्कर लगाने लगा। उन्हों ने दोबारा कुरआन की तिलावत शुरूअ़ की तो घोड़ा दोबारा उछलने लगा, तीसरी मरतबा ऐसे ही ही हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना उसैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मुझे ख़दशा हुवा कि कहीं घोड़ा (मेरे बेटे) यह़्या को न रौंद डाले, जब मैं घोड़े को पकड़ने के लिये खड़ा हुवा तो मैं ने देखा कि मेरे सर पर एक छतरी साया कुनां है जिस में चराग़ रोशन है और वोह छतरी फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़ है फिर वोह फ़ज़ा में गुम हो गई और मेरी निगाहों से ओझल हो गई।

सुब्ह के वक़्त मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं गुज़श्ता रात अपने अस्त़बल में क़ुरआने पाक की तिलावत कर रहा था कि मेरा घोड़ा मस्त हो गया।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ इब्ने हुज़ैर ! क़ुरआन पढ़ो।'' मैं ने क़ुरआन पढ़ना शुरूअ़ किया तो घोड़ा फिर मस्त हो गया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर फ़रमाया, ''ऐ इब्ने हुज़ैर ! पढ़ो।'' तो मैं पढ़ने लगा और घोड़ा फिर मस्त हो गया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दोबारा इर्शाद फ़रमाया, ''ऐ इब्ने हुज़ैर ! पढ़ते रहो।'' फिर जब मैं वहां से लौटा तो मैं ने अपने सर पर एक छतरी को साया कुनां देखा जिस में चराग़ रोशन थे और वोह फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़ थी फिर वोह फ़ज़ा में बुलन्द होती गई यहां तक कि मेरी नज़रों से ओझल हो गई, उस वक़्त (मेरा बेटा) यह्या घोड़े के क़रीब था मुझे ख़ौफ़ मह़सूस हुवा कि कहीं घोड़ा उसे रौंद न डाले।

फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह मलाएका थे जो तुम्हारी क़िराअत सुनने आए थे अगर तुम तिलावत करते रहते तो सुब्ह लोग उन्हें देखते और उन में से कोई पोशीदा न रहता।'' (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب نزول السکینۃ لقراءۃ القرآن، رقم ۷۹٦، ص ۳۹۹)

(1095)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी रिवायत में है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह सकीना था जो क़ुरआन के लिये उतरा था।'' (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب نزول السکینۃ لقراءۃ القرآن، رقم ۷۹۵، ص ۳۹۹)

एक और रिवायत में है कि ''जब मैं मुड़ा तो मैं ने आस्मान व ज़मीन के दरमियान चराग़ लटके हुए देखे। फिर मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं क़िराअत जारी रखने की इस्तित़ाअ़त न रख सका।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह फ़िरिश्ते थे जो क़ुरआने पाक की क़िराअत सुनने के लिये उतरे थे अगर तुम क़िराअत करते रहते तो बहुत से अ़जाइबात देखते।'' (المستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب الامر بتعاھد القرآن والنھی الخ، رقم ۲۰۷۹، ج ۲، ص ۲۵۴)

(1096)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो क़ौम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के घरों में से किसी एक घर में किताबुल्लाह की तिलावत करने और आपस में इस की तकरार करने के लिये जम्अ़ होती है तो उन पर सकीना नाज़िल होता है, उन्हें रह़मत ढांप लेती है, मलाएका उन्हें (अपने परों से) छूते हैं और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मलाएका के सामने उन का चरचा फ़रमाता है।'' (مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن، رقم ۲۶۹۹، ص ۱۴۴۷)

(1097)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किताबुल्लाह में से एक ह़र्फ़ पढ़ेगा तो उसे एक नेकी मिलेगी और येह एक नेकी दस नेकियों के बराबर है मैं नहीं कहता कि الٓمٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक ह़र्फ़ है और लाम एक ह़र्फ़ है और मीम एक ह़र्फ़ है।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی من قرأ حرفا..الخ، رقم ۲۹۱۹، ج۴، ص۴۱۷)

जब कि एक रिवायत में है कि, ''बेशक येह कुरआन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दस्तर ख़्वान की मिस्ल है लिहाज़ा तुम से जितना हो सके इस दस्तर ख़्वान से खा लिया करो, येह कुरआन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रस्सी, रोशन नूर और नफ़्अ़ बख़्श शिफ़ा है जो इसे थाम ले येह उस की ह़िफ़ाज़त करता है और जो इस की पैरवी करे तो उस के लिये नजात है, येह कज रवी इख़्तियार नहीं करता कि इसे मनाना पड़े, टेढ़ा नहीं होता कि इसे सीधा करना पड़े, इस के अ़जाइबात ख़त्म नहीं होंगे न ही येह कस्रते तकरार से बोसीदा होगा, इस की तिलावत किया करो क्यूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के हर ह़र्फ़ की तिलावत पर तुम्हें दस नेकियां अ़ता फ़रमाएगा और मैं नहीं कहता कि الٓمٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक ह़र्फ़, लाम एक ह़र्फ़ और मीम एक ह़र्फ़ है।'' (المستدرک، کتاب فضائل القرآن، رقم ۲۰۸۴، ج۲، ص۲۵۶)

(1098)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने किताबुल्लाह की एक आयत तवज्जोह के साथ सुनी उस के लिये नेकी इज़ाफ़े के साथ लिखी जाएगी और जिस ने इस की तिलावत की वोह आयत क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगी।'' (مسند احمد، مسند ابی ہریرۃ، رقم ۸۵۰۲، ج۳، ص۲۴۵)

(1099)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे वसिय्यत फ़रमाइये।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि येही हर काम की अस्ल है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मज़ीद नसीह़त फ़रमाइये।'' तो इर्शाद फ़रमाया कि ''क़ुरआन की तिलावत को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह तुम्हारे लिये ज़मीन में नूर और आस्मानों में ज़ख़ीरा होगी।''

(الترغیب والترہیب، کتاب قراءۃ القران، باب الترغیب فی قراءۃ القرآن، رقم ۱۰، ج۲، ص۲۲۷)

(1100)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जिसे क़ुरआन ने मुझ से मांगने से रोक दिया मैं उसे सुवाल करने वालों से अफ़्ज़ल शै अ़ता

फ़रमाऊंगा और कलामुल्लाह को दीगर कलामों पर ऐसी फ़ज़ीलत ह़ासिल है जैसी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अपनी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत है।''
(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب(۲۵)، رقم ۲۹۳۵، ج۴، ص ۲۲۷)

(1101)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ुरआन पढ़ने वाले मोमिन की मिसाल उस संगतरे की त़रह़ है जिस की ख़ुश्बू भी अच्छी है और ज़ाएक़ा भी अच्छा है और क़ुरआन न पढ़ने वाले मोमिन की मिसाल उस खजूर की त़रह़ है जिस की ख़ुश्बू तो नहीं होती मगर ज़ाएक़ा अच्छा होता है और क़ुरआन पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ या फ़ाजिर की मिसाल उस फूल की त़रह़ है जिस की ख़ुश्बू तो अच्छी होती है मगर ज़ाएक़ा कड़वा होता है और क़ुरआन न पढ़ने वाले मुनाफ़िक़ या फ़ाजिर की मिसाल उस तम्मां (एक बूटी) की त़रह़ होती है जिस की ख़ुश्बू नहीं होती और ज़ाएक़ा भी कड़वा होता है।''
(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضیلۃ حافظ القرآن، رقم ۷۹۷، ص ۴۰۰)

(1102)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक लश्कर तय्यार फ़रमाया जो कसीर अफ़्राद पर मुश्तमिल था, फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से क़ुरआन पढ़ने के लिये कहा सब लोग क़ुरआन पढ़ने लगे। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक छोटे बच्चे के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''तुम्हें कितना क़ुरआन याद है?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''इतना इतना और सूरए ब-क़रह।'' आप ने फ़रमाया, ''क्या तुम्हें सूरए ब-क़रह याद है?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां।'' फ़रमाया, ''जाओ तुम इन के अमीर हो।'' तो उन के सरदारों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''ख़ुदा की क़सम! सूरए ब-क़रह सीखने से मुझे सिर्फ़ इस ख़ौफ़ ने रोक दिया कि मैं इसे याद न रख सकूंगा।''

आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''क़ुरआन सीखो और इसे पढ़ा करो क्यूं कि क़ुरआन सीख कर पढ़ने वाले की मिसाल मुश्क से भरे हुए चमड़े के थैले की त़रह़ है जिस की ख़ुश्बू सारे घर में फैल जाती है और जिस ने क़ुरआन सीखा फिर ग़ाफ़िल हो गया और उस के सीने में क़ुरआन है तो उस की मिसाल चमड़े के उस थैले की त़रह़ है जिस के ज़रीए मुश्क को ढांप दिया गया हो।''
(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورۃ البقرۃ الخ، رقم ۲۸۸۵، ج۴، ص ۴۰۱)

(1103)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ुरआन पढ़ने में महारत रखने वाला किरामन कातिबीन के साथ है और जो मशक़्क़त के साथ अटक अटक कर क़ुरआन पढ़ता है उस के लिये दुगना सवाब है।''
(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل الماھر بالقرآن الخ، رقم ۷۹۸، ص ۴۰۰)

(1104)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जिस ने क़ुरआन पढ़ा गोया उस ने अपने पहलू में (इल्मे) नुबुव्वत को समो लिया मगर येह कि उस पर वह़्य नहीं आती।'' (المستدرک،کتاب اخبار فی فضائل القرآن،باب فضیلۃ قراءۃ القرآن،رقم ۲۰۷۲،ج۲،ص۲۵۲)

(1105)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स पांचों नमाज़ों की पाबन्दी करेगा वोह ग़ाफ़िलीन में न लिखा जाएगा और जिस ने एक रात में सो आयतें पढ़ीं उसे इबादत गुज़ार बन्दों में लिखा जाएगा।'' (ابن خزیمہ،کتاب جماع ابواب صلاۃ التطوع باللیل،رقم ۱۱۴۲،ج۲،ص۱۸۰)

(1106)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने एक रात में दस आयतें पढ़ीं उसे ग़ाफ़िलीन में न लिखा जाएगा।'' (مستدرک،کتاب اخبار فی فضائل القرآن،باب من قرأ عشر آیات الخ،رقم ۲۰۸۵،ج۲،ص۲۵۷)

सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ख़्वाब में दीदार किया तो अ़र्ज़ किया, ''या रब عَزَّ وَجَلَّ ! जिन आ'माल के ज़रीए़ तेरे बन्दे तेरा क़ुर्ब ह़ासिल करते हैं उन में सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है?'' इर्शाद फ़रमाया, ''ऐ अह़मद! वोह मेरा कलाम पढ़ना है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''समझ कर पढ़ना या बिग़ैर समझे?'' फ़रमाया, ''समझ कर और बिग़ैर समझे दोनों त़रह़ से।''

सूरए फ़ातिहा की फ़ज़ीलत और उस का सवाब

(1107)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है कि मैं ने नमाज़ को अपने और बन्दे के दरमियान आधा आधा तक़्सीम कर दिया है और मेरे बन्दे के लिये वोही है जो वोह मांगे।"

एक रिवायत में है कि "इस में से आधी क़िराअत मेरे लिये है और आधी मेरे बन्दे के लिये।" जब बन्दा "اَلْحَمْدُلِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ" कहता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है कि "मेरे बन्दे ने मेरी ता'रीफ़ की।" और जब बन्दा "اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم" कहता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, "मेरे बन्दे ने मेरी सना बयान की।" और जब बन्दा "مٰلِکِ یَوْمِ الدِّیْن" कहता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है मेरे बन्दे ने मेरी बुज़ुर्गी बयान की। जब बन्दा "اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَاِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ" कहता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, "येह मेरे और मेरे बन्दे के दरमियान है और मेरे बन्दे के लिये वोही है जो वोह मुझ से मांगे।" जब वोह "اِھْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْھِمْ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْھِمْ وَلَا الضَّآلِّیْن۝" कहता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, "येह मेरे बन्दे के लिये है और मेरा बन्दा जो मांगे उस के लिये वोही है।"

(مسلم، کتاب الصلاۃ، باب وجوب قراءۃ الفاتحۃ فی کل رکعۃ الخ، رقم ۳۹۵، ص۲۰۸)

(1108)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर थे कि उन्हों ने अपने सर पर एक आवाज़ सुनी तो अपने सर को ऊपर उठाया और कहा, "येह आस्मान का दरवाज़ा है जो आज ही खोला गया है इस से पहले कभी नहीं खोला गया।" फिर उस से एक फ़िरिश्ता नीचे उतरा तो जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, "येह एक फ़िरिश्ता है जो ज़मीन की त़रफ़ उतरा है आज से पहले कभी नहीं उतरा।" फिर उस ने सलाम किया और अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! दो नूरों की खुश ख़बरी लीजिये जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ा किये गए हैं, आप से पहले किसी भी नबी को अ़त़ा नहीं हुए, वोह सूरए फ़ातिह़ा और सूरए ब-क़रह की आख़िरी आयतें हैं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन दोनों में से जो भी ह़र्फ़ पढ़ेंगे उस के इवज़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़त़ाएं की जाएंगी।"

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل الفاتحۃ وخواتیم سورۃ البقرۃ، رقم ۸۰۶، ص۴۰۳)

(1109)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद मुअ़ल्लय رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिद में नमाज़ पढ़ रहा था कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे पुकारा मगर मैं ने उन का जवाब न दिया। जब मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं नमाज़ पढ़ रहा

था ।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह इर्शाद नहीं फ़रमाया : اِسْتَجِیْبُوْا لِلّٰہِ وَ لِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاکُمْ (پ۹،الانفال:۲۴)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** और उस के रसूल के बुलाने पर हाज़िर हो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ के लिये बुलाएं ।''

फिर फ़रमाया, ''मैं तुम्हारे मस्जिद से निकलने से पहले तुम्हें एक सूरत सिखाऊंगा जो कि कुरआन की सब से अ़ज़ीम सूरत है ।'' फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ लिया, जब हम ने मस्जिद से निकलने का इरादा किया तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था मैं तुम्हें कुरआन की सब से अ़ज़ीम सूरत सिखाऊंगा ?'' आप ने फ़रमाया, ''वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ है येह वोही सब्ए़ मसानी और कुरआने अ़ज़ीम है जो मुझे अ़ता किया गया ।'' (بخاری، کتاب التفسیر، باب ماجاء فی فاتحۃ الکتاب، رقم ۴۴۷۴، ج۳، ص۱۶۳)

(1110)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''क्या तुम पसन्द करते हो कि मैं तुम्हें एक ऐसी सूरत सिखाऊं जो न तौरात में नाज़िल हुई न इन्जील में और न ही ज़बूर में और न ही कुरआन में इस जैसी कोई और सूरत नाज़िल हुई ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर सिखाइये ।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम नमाज़ में क्या पढ़ते हो ?'' उन्हों ने सूरए फ़ातिह़ा पढ़ कर सुनाई तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ज़ात की क़सम ! जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है, इस जैसी सूरत न तौरात में नाज़िल हुई, न इन्जील में, न ज़बूर में और न ही कुरआन में इस जैसी कोई और सूरत नाज़िल हुई, बेशक येह सब्ए़ मसानी और कुरआन है जो मुझे अ़ता किया गया है ।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل فاتحۃ الکتاب، رقم ۲۸۸۴، ج۴، ص۴۰۰)

(1111)...... ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र के दौरान एक जगह अपनी सुवारी से उतरे तो क़रीब ही एक और शख़्स भी सुवारी से उतर गया । रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें कुरआने मजीद के अफ़्ज़ल हि़स्से के बारे में न बताऊं ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये ।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ की तिलावत फ़रमाई ।'' (المستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب شفاء المجنون بقراءۃ فاتحۃ الکتاب الخ، رقم ۲۱۰۰، ج۲، ص۲۶۴)

=== === ===

सू-रतुल ब-क़रह पढ़ने का सवाब

(1112)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर चीज़ की एक बुलन्दी है और क़ुरआन की बुलन्दी (सूरए) ब-क़रह है, जो शख़्स रात को इसे अपने घर में पढ़ेगा शैत़ान तीन रातों तक उस के घर में दाख़िल न हो सकेगा और जो दिन में इसे पढ़े शैत़ान तीन दिन उस के घर में दाख़िल न हो सकेगा।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب قراءۃ القرآن، رقم ۷۷۷، ج۲، ص ۷۸)

(1113)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपने घरों को क़ब्रिस्तान मत बनाओ, बेशक जिस घर में (सूरए) ब-क़रह पढ़ी जाती है शैत़ान उस घर से भाग जाता है।''

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب استحباب صلاۃ النافلۃ فی بیتہ الخ، رقم ۷۸۰، ص ۳۹۳)

(1114)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''(सूरए) ब-क़रह पढ़ा करो क्यूं कि इस को पढ़ना बाइसे ब-र-कत और छोड़ देना बाइसे हसरत है और जादूगर और शयात़ीन इस का मुक़ाबला नहीं कर सकते।''

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ، رقم ۸۰۴، ص ۴۰۳)

(1115)...... हज़रते सय्यिदुना उसैद बिन हुज़ैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! मैं रात को (सूरए) ब-क़रह की तिलावत कर रहा था कि अचानक मैं ने किसी चीज़ के ह-र-कत करने की आवाज़ सुनी मुझे ख़याल आया शायद मेरा घोड़ा खुल गया है।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू अ़तीक पढ़ो।'' मैं वहां से पलटा तो देखा कि ज़मीनो आस्मान के दरमियान चराग़ लटके हुए हैं जब कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से फ़रमा रहे हैं, ''ऐ अबू अ़तीक पढ़ो।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं पढ़ने की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह मलाएका हैं जो सूरए ब-क़रह की क़िराअत सुनने के लिये नाज़िल हुए हैं अगर तुम पढ़ते रहते तो बहुत से अ़जाइबात देखते।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق باب قراءۃ القرآن، رقم ۷۷۶، ج۲، ص ۷۷)
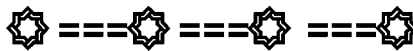
आ-यतुल कुरसी पढ़ने का सवाब

(1116)...... हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू मुन्ज़िर ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि कुरआने पाक की जो आयतें तुम्हें याद हैं उन में से कौन सी आयत अ़ज़ीम है ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया, ''ऐ अबू मुन्ज़िर ! तुम्हें इ़ल्म मुबारक हो।'' (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل سورۃ الکھف وآیۃ الکرسی، رقم ۸۱۰، ص ۴۰۵)

एक रिवायत में है, ''क़सम है उस ज़ात की जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है ! इस आयत की एक ज़बान और दो होंट हैं जो पायए अ़र्श के क़रीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करते हैं।''

(مسند احمد، مسند الانصار، حدیث المشائخ، رقم ۲۱۳۳۶، ج ۸، ص ۶۰)

(1117)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर चीज़ की एक बुलन्दी है और बेशक कुरआन की बुलन्दी सूरए ब-क़रह है, और इस में एक आयत ऐसी है, जो कि कुरआने पाक की आयतों की सरदार है।'' (ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورۃ البقرۃ الخ، رقم ۲۸۸۷، ج ۴، ص ۴۰۲)

एक रिवायत में है कि ''(सूरए) ब-क़रह में एक आयत है जो कुरआने मजीद की आयतों की सरदार है, जिस घर में आ-यतुल कुरसी पढ़ी जाए अगर शैत़ान वहां मौजूद होगा तो भाग जाएगा।''

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب من سورۃ البقرۃ، رقم ۳۰۸۰، ج ۲، ص ۶۴۷)

(1118)...... हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि हमारा एक खलियान था जिस में हम खजूरें सुखाया करते थे, मैं उस की देखभाल किया करता था। मैं ने महसूस किया कि इन खजूरों में कमी आती जा रही है चुनान्चे एक रात मैं ने पहरा दिया तो देखा कि बालिग़ लड़के की मिस्ल एक जानवर है मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने सलाम का जवाब दिया। मैं ने पूछा, ''तुम जिन्न हो या इन्सान ?'' तो उस ने कहा, ''जिन्न हूं।'' मैं ने उस से कहा, ''अपना हाथ मुझे दिखाओ।'' जब मैं ने उस का हाथ देखा तो वोह कुत्ते के पन्जे की त़रह़ था और उस पर कुत्ते की त़रह़ के बाल थे।

मैं ने उस से पूछा, ''क्या जिन्न ऐसे ही होते हैं ?'' तो वोह कहने लगा, ''आप तो जानते ही हैं कि मुझ से त़ाक़त वर जिन्न भी मौजूद हैं।'' मैं ने कहा, ''तुम मेरी खजूरें क्यूं चोरी करते हो ?'' उस ने कहा मुझे पता चला है कि ''आप स-दक़ा करना पसन्द करते हैं तो मैं ने पसन्द किया कि आप के खाने में से ही कुछ ले लिया करूं।'' मैं ने उस से पूछा, ''कौन सी चीज़ हमें तुम्हारे शर से बचा सकती है ?'' उस ने कहा, ''आ-यतुल कुरसी।'' फिर मैं ने उसे छोड़ दिया और सुब्ह़ के वक़्त

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और उन्हें अपना वाक़िआ़ सुनाया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ख़बीस ने बिल्कुल सच कहा।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب قراءۃ القرآن، رقم ۷۸۱، ج۲، ص۷۹)

(1119)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मेरा खजूर का एक गोदाम था। एक जिन्नी वहां आती और उस में से खजूरें चोरी कर लिया करती। मैं ने मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस मरतबा जब वोह आए तो उसे कहना कि हुज़ूर की बारगाह में जवाब देही के लिये चल।'' चुनान्चे मैं ने ऐसा ही किया और उस से आयन्दा न आने का ह़ल्फ़ ले लिया। जब वोह दूसरी मरतबा आई तो मैं ने उसे पकड़ लिया, उस ने फिर न आने का वा'दा किया तो मैं ने उसे छोड़ दिया। फिर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर माजरा अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह झूट की आ़दी है दोबारा आएगी।'' जब वोह तीसरी मरतबा आई तो मैं ने उसे पकड़ लिया, और कहा कि ''आज तुझे नहीं छोड़ूंगा और तुझे रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले कर जाऊंगा।'' तो उस ने कहा, ''मैं तुम्हें एक बात बताती हूं कि अपने घर में आ-यतुल कुरसी पढ़ा करो शैत़ान या कोई भी बला तुम्हारे क़रीब न आएगी।'' सुब्ह़ के वक़्त मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''तुम्हारे क़ैदी का क्या हुवा?'' मैं ने उस की बताई हुई बात अ़र्ज़ की तो आप ने फ़रमाया, ''उस ने सच कहा ह़ालां कि वोह बहुत बड़ी झूटी है।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، (باب۳) رقم ۲۸۸۹، ج۴، ص۴۰۳)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
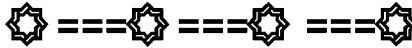
सू-रतुल ब-क़रह की आख़िरी आयात पढ़ने का सवाब

(1120)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर थे कि उन्हों ने अपने सर पर एक आवाज़ सुनी तो ऊपर सर उठाया और अ़र्ज़ किया, ''येह आस्मान का दरवाज़ा है जो आज ही खोला गया है इस से पहले कभी नहीं खोला गया।'' फिर उस से एक फ़िरिश्ता नीचे उतरा तो जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, ''येह एक फ़िरिश्ता है जो ज़मीन की त़रफ़ उतरा है आज से पहले कभी नहीं उतरा।'' फिर उस फ़िरिश्ते ने सलाम किया और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! दो नूरों की ख़ुश ख़बरी लीजिये जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अ़त़ा किये गए और आप से पहले किसी भी नबी को अ़त़ा न हुए, वोह (सूरए) फ़ातिह़ा और (सूरए) ब-क़रह की आख़िरी आयतें हैं, आप इन दोनों में से जो भी ह़र्फ़ पढ़ेंगे उस के इ़वज़ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर अ़त़ाएं की जाएंगी।'' (مسلم،کتاب صلاۃ المسافرین،باب فضل الفاتحۃ الخ،رقم۸۰۶،ص۴۰۳)

(1121)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीनो आस्मान को पैदा करने से दो हज़ार साल पहले एक किताब लिखी फिर उस में से (सूरए) ब-क़रह की आख़िरी दो आयतें नाज़िल फ़रमाईं। जिस घर में तीन रातें इन दो आयतों को पढ़ा जाएगा शैत़ान उस घर के क़रीब न आएगा।''

(ترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی آخر سورۃ البقرۃ،رقم۲۸۹۱،ج۴،ص۴۰۴)

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूं हैं कि ''जिस घर में इन दो आयतों को पढ़ा जाएगा शैत़ान तीन दिन तक उस के क़रीब न आएगा।'' (المستدرک،کتاب فضائل القرآن،باب آیتان من آخر سورۃ البقرۃ..الخ،رقم۲۱۰۹،ج۲،ص۲۶۸)

(1122)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र रَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने अ़र्श के नीचे रखे हुए ख़ज़ाने में से ऐसी दो आयतें अ़त़ा फ़रमाईं जिन के ज़रीए (सूरए) ब-क़रह का इख़्तिताम फ़रमाया, लिहाज़ा ! इन्हें सीखो और अपनी औ़रतों और बच्चों को सिखाओ क्यूं कि येह नमाज़, क़ुरआन और दुआ़ हैं।'' (المستدرک،کتاب فضائل القرآن،باب آیتان من آخر سورۃ البقرۃ..الخ،رقم۲۱۰۹،ج۲،ص۲۶۸)

(1123)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स (सूरए) ब-क़रह की आख़िरी दो आयतें रात में पढ़ेगा वोह उसे किफ़ायत करेंगी।'' (بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب فضل البقرۃ، رقم ۵۰۰۹، ج ۳، ص ۴۰۵)

वज़ाहत :

किफ़ायत करने से मुराद येह है कि येह दो आयतें उस के उस रात के क़ियाम (रात की इबादत) के क़ाइम मक़ाम हो जाएंगी या उस रात उसे शैतान से महफ़ूज़ रखेंगी। एक क़ौल येह भी है कि उस रात में नाज़िल होने वाली आफ़ात से बचाएंगी और एक क़ौल येह है कि उसे फ़ज़ीलत व सवाब के लिये काफ़ी होंगी। وَاللّٰہُ اَعْلَمُ
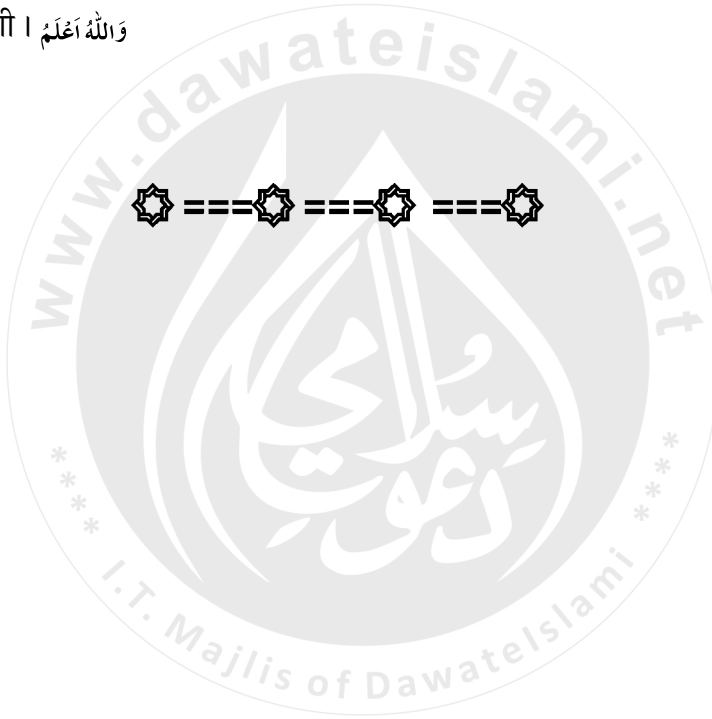
सूरए ब-क़रह और आले इमरान पढ़ने का सवाब

(1124)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''क़ुरआन पढ़ा करो क्यूं कि येह क़ियामत के दिन अपने पढ़ने वालों की शफ़ाअ़त करेगा, दो रोशन सूरतें या'नी ब-क़रह और आले इमरान पढ़ा करो क्यूं कि येह दोनों सूरतें क़ियामत के दिन साया करने वाले बादल की त़रह आएंगी कि गोया परिन्दों के झुन्ड हैं जो अपने पर फैलाए हुए हैं, फिर येह अपने पढ़ने वालों के बारे में झगड़ा करेंगी, सूरए ब-क़रह पढ़ा करो क्यूं कि इसे पढ़ना बाइसे ब-र-कत और छोड़ देना बाइसे ह़सरत है और ब-त़ला इस का मुक़ाबला नहीं कर सकते।'' सय्यिदुना मुआ़विया बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मुझ तक येह ख़बर पहुंची है कि ब-त़ला से मुराद जादूगर हैं।

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ القرآن وسورۃ البقرۃ، رقم ۸۰۴، ص ۴۰۳)

(1125)...... हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सूरए ब-क़रह और आले इमरान सीखो क्यूं कि येह रोशन सूरतें क़ियामत के दिन अपने क़ारियों पर साया करेंगी गोया साया करने वाले बादल या पर फैलाए हुए परिन्दों का झुन्ड हैं।''

(المستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب اخبار فی فضل سورۃ البقرۃ..الخ، رقم ۲۱۰۱، ج ۲، ص ۲۶۵)

=== === ===

सूरए कह्फ़ की इब्तिदाई या आख़िरी दस आयतें पढ़ने का सवाब

(1126)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सूरए कह्फ़ की पहली दस आयतें याद करेगा दज्जाल से मह़फ़ूज़ रहेगा।''

और एक रिवायत में है कि ''जो शख़्स सूरए कह्फ़ की आख़िरी दस आयतें याद करेगा दज्जाल से मह़फ़ूज़ रहेगा।'' (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل سورۃ الکھف وآیۃ الکرسی، رقم ۸۰۹، ص ۴۰۴)

(1127)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सूरए कह्फ़ उसी त़रह़ पढ़ी जैसी नाज़िल हुई है तो येह क़ियामत के दिन उस के (पढ़ने के) मक़ाम से ले कर मक्का तक नूर हो जाएगी और जिस ने इस की आख़िरी दस आयतें पढ़ीं फिर दज्जाल भी निकल आया तो उस पर ग़ालिब न आ सकेगा और जिस ने वुज़ू किया फिर येह पढ़ा, ''سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَ اَتُوْبُ اِلَیْکَ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! तू पाक है और तेरी ही ह़म्द है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं तुझ से मग़्फ़िरत चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं।'' तो उस का नाम एक काग़ज़ पर लिख कर एक अंगूठी में बन्द कर दिया जाएगा जो क़ियामत तक नहीं टूटेगी।'' (المستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب فضیلۃ قراءۃ سورۃ الکھف، رقم ۲۱۱۶، ج ۲، ص ۲۷۲)

सूरए यासीन पढ़ने का सवाब

(1128)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''(सूरए) ब-क़रह क़ुरआने पाक की रिफ़्अ़त है और इस की हर आयत के साथ अस्सी80 मलाएका नाज़िल हुए और اَللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ को अ़र्श के नीचे से निकाल कर इस सूरत के साथ मिलाया गया और (सूरए) यासीन क़ुरआन का दिल है जो इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और आख़िरत की बेहतरी के लिये पढ़ेगा उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।'' (مسند احمد، حدیث معقل بن یسار، رقم ۲۰۳۲۲، ج ۷، ص ۲۸۶)

(1129)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने किसी रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये (सूरए) यासीन पढ़ी उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، فصل فی قیام اللیل، رقم ۲۵۶۵، ج ۴، ص ۱۲۱)

(1130)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बेशक हर चिज़ का एक दिल है और क़ुरआन का दिल (सूरए) यासीन है और जो एक मरतबा (सूरए) यासीन पढ़ेगा उस के लिये दस मरतबा क़ुरआन पढ़ने का सवाब लिखा जाएगा।'' (ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل یٰس، رقم ۲۸۹۶، ج ۴، ص ۴۰۶)

सूरए दुख़ान पढ़ने का सवाब

(1131)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किसी रात में सूरए दुख़ान पढ़ेगा तो सुब्ह़ होने तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहेंगे।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل حم الدخان، رقم ۲۸۹۷، ج ۴، ص ۴۰۶)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
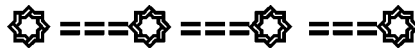
सूरए मुल्क पढ़ने का सवाब

(1132)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "बेशक क़ुरआन में तीस आयतों पर मुश्तमिल एक सूरत है जो अपने क़ारी के लिये शफ़ाअ़त करती रहेगी यहां तक कि उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी और येह تَبٰرَکَ الَّذِیۡ بِیَدِہِ الۡمُلۡکُ है।"

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورۃ الملک، رقم ۲۹۰۰، ج۴، ص۴۰۸)

(1133)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो शख़्स रोज़ाना रात में تَبٰرَکَ الَّذِیۡ بِیَدِہِ الۡمُلۡکُ पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा।" सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में इसे मानेअ़ा (या'नी अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाने वाली) कहा करते थे और बेशक येह क़ुरआन की एक ऐसी सूरत है जो इसे रात में पढ़ता है वोह बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।

(عمل الیوم واللیلۃ مع السنن الکبری للنسائی الجزء الثالث، رقم ۱۰۵۴۷، ج۶، ص۱۷۹)

(1134)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि, "जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो अ़ज़ाब उस के क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूं कि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था। फिर अ़ज़ाब उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई रास्ता नहीं क्यूं कि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था। फिर वोह उस के सर की त़रफ़ आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूं कि येह रात में सूरए मुल्क पढ़ा करता था।" तो येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से रोकती है, तौरात में इस का नाम सूरए मुल्क है जो इसे रात में पढ़ता है बहुत ज़ियादा और अच्छा अ़मल करता है।" (المستدرک، کتاب التفسیر، باب المانعۃ من عذاب القبر سورۃ الملک، رقم ۳۸۹۲، ج۳، ص۳۲۲)

(1135)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं कि एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने एक क़ब्र पर अपना ख़ैमा लगाया मगर उन्हें इ़ल्म न था कि यहां क़ब्र है। लेकिन बा'द में पता चला कि वहां किसी शख़्स की क़ब्र है जो सूरए मुल्क पढ़ रहा है और उस ने पूरी सूरत ख़त्म की। वोह सह़ाबी रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने एक क़ब्र पर ख़ैमा तान लिया मगर मुझे मा'लूम न था कि वहां क़ब्र है जब कि वहां एक ऐसे शख़्स की क़ब्र है जो रोज़ाना पुरी सू-रतुल मुल्क पढ़ता है।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "येही रोकने वाली है, येही नजात दिलाने वाली है जिस ने उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखा।"

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فضل سورۃ الملک، رقم ۲۸۹۹، ج۴، ص۴۰۷)

सू-रतुज़्ज़िल्ज़ाल, काफ़िरून और नस्र पढ़ने का सवाब

(1136)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, ''ऐ फ़ुलां ! क्या तुम ने शादी कर ली है ?'' तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ख़ुदा की क़सम ! नहीं की, मेरे पास शादी करने के लिये कुछ नहीं।'' फ़रमाया, ''क्या तुम्हें قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''येह तिहाई क़ुरआन के बराबर है।'' फिर फ़रमाया, ''क्या तुम्हें اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं।'' फ़रमाया, ''येह चौथाई क़ुरआन के बराबर है।'' फिर दरयाफ़्त फ़रमाया, ''क्या तुम्हें قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं।'' फ़रमाया, ''येह चौथाई क़ुरआन के बराबर है।'' फिर फ़रमाया, ''क्या तुझे اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ याद नहीं ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं।'' फ़रमाया, ''येह चौथाई क़ुरआन है।'' फिर दो मरतबा इर्शाद फ़रमाया, ''शादी कर लो।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی سورۃ الاخلاص الخ، رقم ۲۹۰۴، ج۴، ص۴۰۹)

(1137)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''اِذَا زُلْزِلَتْ निस्फ़ क़ुरआन के बराबर है और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ तिहाई क़ुरआन के बराबर है और قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ चौथाई क़ुरआन के बराबर है।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء سورۃ الاخلاص..الخ، رقم ۲۹۰۳، ج۴، ص۴۰۹)

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ने का सवाब

(1138)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''तुम में से कोई शख़्स रात में तिहाई क़ुरआन क्यूं नहीं पढ़ता ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''कोई शख़्स तिहाई क़ुरआन कैसे पढ़ सकता है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ तिहाई क़ुरआन के बराबर है।''

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ قل ھواللہ احد، رقم ۸۱۱، ص ۴۰۵)

और एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआन के तीन जुज़ फ़रमा दिये और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ को क़ुरआन के अज्ज़ा में से एक जुज़ बना दिया है।

(مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ قل ھواللہ احد، رقم ۸۱۱، ص ۴۰۵)

(1139)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''इकट्ठे हो जाओ क्यूं कि अभी मैं तुम्हारे सामने तिहाई क़ुरआन पढ़ूंगा।'' चुनान्चे सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से जिन्हें जम्अ़ होना था वहां जम्अ़ हो गए। फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ी और वापस तशरीफ़ ले गए। हम एक दूसरे से कहने लगे, ''शायद आस्मान से कोई ख़बर आई है

जिस की वजह से हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए हैं।'' जब आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दोबारा तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया कि ''मैं ने तुम्हारे सामने तिहाई कुरआन पढ़ने का कहा था तो सुन लो कि येही सूरत तिहाई कुरआन के बराबर है।'' (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ قل ھو اللہ احد، رقم ۸۱۲، ص ۴۰۵)

(1140)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''एक शख़्स ने किसी को बार बार قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ पढ़ते हुए सुना तो उसे बहुत कम ख़याल करते हुए सुब्ह़ के वक़्त रसूले अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर उस का तज़्किरा किया। रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ज़ात की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है येह सूरत तिहाई कुरआन के बराबर है।'' (بخاری، کتاب فضائل القرآن، باب فضل قل ھو اللہ احد، رقم ۵۰۱۳، ج ۳، ص ۴۰۶)

(1141)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन अनस जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जो शख़्स दस मरतबा قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक मह़ल बनाएगा।'' ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर तो हम इसे कसरत से पढ़ा करेंगे।'' आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बहुत ज़ियादा अ़त़ा फ़रमाने वाला और पाक है।'' (مسند احمد، حدیث معاذ بن انس، رقم ۱۵۶۱۰، ج ۵، ص ۳۰۸)

(1142)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को किसी सरिय्या में भेजा तो वोह अपने साथियों की इमामत कराते हुए अपनी क़िराअत को قُلْ ھُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ पर ख़त्म किया करता था। जब वोह लश्कर वापस आया और लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में इस बात का तज़्किरा किया तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''उस से पूछो कि वोह ऐसा क्यूं करता है ?'' जब लोगों ने उस से पूछा तो उस ने जवाब दिया, ''इस लिये कि इस में रह़मान عَزَّوَجَلَّ की ता'रीफ़ है और मैं इसे पढ़ना पसन्द करता हूं।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उसे ख़बर दे दो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस से मह़ब्बत फ़रमाता है।'' (بخاری، کتاب التوحید، باب ماجاء دعاء النبی امتہ الی توحید اللہ تبارک وتعالی، رقم ۷۳۷۵، ج ۴، ص ۵۳۱)

(1143)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीस में है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस शख़्स से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ''ऐ फ़ुलां ! तुम्हें अपने साथियों का कहना मानने से कौन सी चीज़ रोकती है और हर रक्अ़त में पाबन्दी से येही सूरत पढ़ने पर कौन सी चीज़ आमादा करती है ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''मैं इसे पसन्द करता हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तेरा इसे पसन्द करना तुझे जन्नत में दाख़िल कर देगा।''

(بخاری، کتاب الاذان، باب الجمع بین السورتین فی الرکعۃ، رقم ۷۷۴، ج ۱، ص ۲۷۳)

(1144)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कहीं जा रहा था कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी शख़्स को सूरए इख़्लास पढ़ते हुए सुना तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''वाजिब हो गई।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वाजिब हो गई ?'' फ़रमाया, ''जन्नत।'' (الموطاللامام مالک، کتاب القرآن، باب ماجاء فی قراءۃ قل ھواللہ احد، رقم ۴۹۵، ج۱، ص ۱۹۸)

(1145)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जो शख़्स रोज़ाना दो सो मरतबा قُلْ ھُوَاللّٰہُ اَحَدٌ पढ़ेगा उस के पचास बरस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे मगर येह कि उस पर क़र्ज़ हो।''

(ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی سورۃ الاخلاص، رقم ۲۹۰۷، ج۴، ص ۴۱۱)

वज़ाह़त :

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस क़ौल ''मगर येह कि उस पर क़र्ज़ हो'' से मुराद येह है कि येह सूरत उन गुनाहों को तो मिटा देती है जो हुक़ूक़ुल्लाह से तअ़ल्लुक़ रखते हैं जब कि क़र्ज़ का तअ़ल्लुक़ हुक़ूक़ुल इबाद से है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास की फ़ज़ीलत और सवाब

(1146)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे सूरए हूद और सूरए यूसुफ़ की आयतें पढ़ाइये।'' तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ उ़क़्बा बिन आ़मिर ! तुम قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को मह़बूब और उस के नज़्दीक ज़ियादा बलीग़ कोई सूरत हरगिज़ नहीं पढ़ सकोगे अगर तुम से हो सके तो नमाज़ में येह सूरत पढ़ना न छोड़ो।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، رقم ۱۸۳۹، ج۳، ص ۱۵۹)

(1147)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तुम जानते हो कि गुज़श्ता रात कुछ ऐसी आयतें नाज़िल हुईं जिन की मिस्ल कोई आयत नहीं वोह قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ हैं।'' (مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب فضل قراءۃ المعوذتین، رقم ۸۱۴، ص ۴۰۶)

जब कि अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत के अल्फ़ाज़ येह हैं कि ''मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ **जुह़फ़ा** और **अब्वा** के दरमियान से गुज़र रहा था कि हमें शदीद आंधी और तारीकी ने घेर लिया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق** और **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ** के ज़रीए पनाह मांगना शुरूअ़ की और मुझ से फ़रमाया, ''ऐ उ़क़्बा ! इन दोनों के ज़रीए पनाह मांगा करो किसी पनाह चाहने वाले ने इस की मिस्ल किसी चीज़ के वसीले से पनाह नहीं मांगी।''

(ابوداوٗد، کتاب الوتر، باب فی المعوذتین، رقم ۱۴۶۳، ج۲، ص۱۰۴)

अबू दावूद शरीफ़ ही की एक रिवायत है कि ''मैं एक सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ उ़क़्बा ! क्या मैं तुम्हें पढ़ी जाने वाली दो बेहतरीन सूरतें न सिखाऊं ?'' फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق** और **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ** सिखाईं।'' (ابوداوٗد، کتاب الوتر، باب فی المعوذتین، رقم ۱۴۶۲، ج۲، ص۱۰۳)

(1148)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''ऐ जाबिर ! पढ़ो।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! क्या पढ़ूं ?'' फ़रमाया, ''**قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق** और **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ**।'' फिर मैं ने येह दोनों पढ़ीं तो फ़रमाया, ''इन दोनों को पढ़ा करो क्यूं कि तुम इन की मिस्ल हरगिज़ न पढ़ सकोगे।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب قراءۃ القرآن، رقم ۷۹۳، ج۲، ص۸۴)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सवाब

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ाइल के बारे में कई आयात हैं, चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) فَاذْكُرُوْنِیْۤ اَذْكُرْكُمْ (پ۲،البقرۃ:۱۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चरचा करूंगा।

(2) الَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ (پ۴،آل عمران:۱۹۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो **अल्लाह** की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे।

(3) الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ (پ۱۳،الرعد:۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और उन के दिल **अल्लाह** की याद से चैन पाते हैं सुन लो **अल्लाह** की याद ही में दिलों का चैन है।

(4) وَ الذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا (پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

(5) یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِیْرًاۙ وَّ سَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًاؕ هُوَ الَّذِیْ یُصَلِّیْ عَلَیْكُمْ وَ مَلٰٓىٕكَتُهٗ لِیُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِؕ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِیْنَ رَحِیْمًا (پ۲۲،الاحزاب:۴۱تا۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो! **अल्लाह** को बहुत याद करो और सुब्ह़ व शाम उस की पाकी बोलो वोही है कि दुरूद भेजता है तुम पर वोह और उस के फ़िरिश्ते कि तुम्हें अंधेरों से उजाले की त़रफ़ निकाले और वोह मुसल्मानों पर मेहरबान है।

(6) وَ اذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِیْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (پ۲۸،الجمعہ:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(1149)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक्का के रास्ते पर सफ़र करते हुए एक पहाड़ से गुज़रे जिसे जुमदान कहा जाता था तो फ़रमाया, ''इस जुमदान की सैर किया करो, मुफ़र्रिदून सब्क़त ले गए।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुफ़र्रिदून से क्या मुराद है ?'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कसरत से ज़िक्र करने वाले और वालियां।'' (مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب الحث علی ذکر اللہ تعالی، رقم ۲۶۷۶، ص ۱۴۳۹)

एक रिवायत में है कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुफ़र्रिदून कौन हैं ?'' फ़रमाया, ''पाबन्दी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले, ज़िक्र उन के बोझ को कम कर देता है और वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हलके हो कर हाज़िर होंगे।'' (ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی العفو والعافیہ، رقم ۳۶۰۷، ج ۵، ص ۳۴۲)

(1150)...... हज़रते सय्यिदुना हारिस अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते यहूया बिन ज़-करिय्या عَلَیْہِمَا السَّلَام की तरफ़ पांच बातों की वह्य फ़रमाई और इन पर खुद अ़मल करने और बनी इस्राईल को इन पर अ़मल की तरग़ीब दिलाने का हुक्म दिया।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस में से एक येह भी है कि मैं तुम्हें कसरत से ज़िक्र करने का हुक्म देता हूं और ज़िक्र करने वाले की मिसाल उस शख़्स की तरह है जिस के दुश्मन उस की तलाश में हों फिर वोह एक क़ल्ए के पास पहुंच कर अपने आप को उस में छुपा ले, इसी तरह बन्दा ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़रीए ही शैतान से नजात हासिल कर सकता है।'' (المستدرک، کتاب الصوم، باب وان ریح الصوم ریح المسک، رقم ۱۵۷۴، ج ۲، ص ۵۱)

(1151)...... हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''गुनाहों को छोड़ दो क्यूं कि येह सब से अफ़्ज़ल हिजरत है और फ़राइज़ की पाबन्दी किया करो क्यूं कि येह सब से अफ़्ज़ल जिहाद है और ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसरत किया करो क्यूं कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास कस्रते ज़िक्र के इलावा किसी पसन्दीदा चीज़ के साथ हाज़िर नहीं हो सकते।'' (طبرانی کبیر، رقم ۳۱۳، ج ۲۵، ص ۱۲۹)

(1152)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से जो रात को इबादत करने, अपने माल को राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने और दुश्मन से जिहाद करने से आ़जिज़ हो तो उसे चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कसरत से किया करे।''

(شعب الایمان، باب فی محبۃ اللہ عزوجل، فصل فی ادامۃ ذکر اللہ عزوجل، رقم ۵۰۸، ج ۱، ص ۳۹۰)

(1153)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब हूं जो वोह मुझ से करता है और जब वोह मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस के साथ होता हूं, अगर वोह मुझे तन्हाई में याद करता है तो मैं भी उसे तन्हा याद करता हूं और अगर वोह मेरा ज़िक्र किसी मज्मअ़ में करता है तो मैं उस से बेहतर मज्मअ़ में उस का ज़िक्र करता हूं अगर वोह एक बालिश्त मुझ से क़रीब होता है तो मेरी रह़मत उस से एक हाथ क़रीब हो जाती है और अगर वोह एक हाथ मेरे क़रीब आता है तो मेरी रह़मत उस से दो हाथ क़रीब हो जाती है और अगर वोह मेरे पास चलते हुए आता है तो मेरी रह़मत उस के पास दौड़ती हुई आती है।'' (بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ ویحذرکم اللہ نفسہ، رقم ۷۴۰۵، ج۴، ص۵۴۱)

(1154)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ इब्ने आदम ! जब तू तन्हाई में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं भी तन्हा तेरा ज़िक्र करता हूं और जब तू किसी मज्मअ़ में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस मज्मअ़ से बेहतर मज्मअ़ में तेरा ज़िक्र करता हूं।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، الترغیب فی الاکثار من ذکر اللہ، رقم ۳، ج۲، ص۲۵۲)

(1155)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जब मेरा बन्दा अपने दिल में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं अपने फ़िरिश्तों की जमाअ़त में उस का चरचा करता हूं और जब मेरा बन्दा किसी मज्मअ़ में मेरा ज़िक्र करता है तो मैं रफ़ीक़े आ'ला में उस का ज़िक्र करता हूं।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی الاکثار من ذکر اللہ الخ، رقم ۲، ج۲، ص۲۵۲)

(1156)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है जब मेरा बन्दा मेरा ज़िक्र करता है और उस के होंट मेरे लिये हिलते हैं तो मैं उस के साथ होता हूं।'' (ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل الذکر، رقم ۳۷۹۲، ج۴، ص۲۴۳)

(1157)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें तुम्हारे उस अ़मल के बारे में न बताऊं जो तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बेहतर और पाकीज़ा है, तुम्हारे द–रजात में सब से ऊंचा और तुम्हारे लिये सोना और चांदी ख़र्च करने से बेहतर है, तुम्हारे लिये दुश्मनों से लड़ने और उन की गरदनें काटने या अपनी गरदन कटवाने से बेहतर है ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर इर्शाद फ़रमाएं।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र।''

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़ियादा अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब से बचाने वाली कोई चीज़ नहीं। (ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۶، رقم ۳۳۸۸، ج۵، ص۲۴۶)

(1158)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से अफ़्ज़ल द-रजे वाले कौन लोग होंगे ?" इर्शाद फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कसरत से ज़िक्र करने वाले ।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले ग़ाज़ी से भी अफ़्ज़ल होंगे ?" फ़रमाया, "अगर वोह अपनी तलवार के साथ कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन को क़त्ल करता रहे ह़त्ता कि उस की तलवार टूट जाए और वोह ख़ून में रंग जाए तब भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले अफ़्ज़ल हैं ।" (ترمذی، کتاب الدعوات، باب۵، رقم ۳۳۸۷، ج۵، ص۲۴۵)

(1159)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "किसी बन्दे ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से बढ़ कर अ़ज़ाब से नजात दिलाने वाला कोई अ़मल नहीं किया ।" अ़र्ज़ किया गया, "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना भी नहीं ?" फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना भी नहीं मगर जब कि लड़ते लड़ते उस की तलवार टूट जाए ।" (طبرانی اوسط، من اسمہ ابراہیم، رقم ۲۲۹۶، ج۲، ص۳)

(1160)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "बेशक हर चीज़ की सफ़ाई होती है और दिलों की सफ़ाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र है और ज़िक्रुल्लाह से बढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से नजात दिलाने वाली कोई चीज़ नहीं ।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना भी नहीं ?" फ़रमाया, "नहीं, अगर्चे मुजाहिद तलवार टूटने तक लड़ता रहे ।"
(الترغیب والترہیب کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی الاکثار من ذکر اللہ، رقم ۱۰، ج۲، ص۲۵۴)

(1161)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस्लामी अह़कामात मुझ पर कसीर हो गए हैं मुझे कोई ऐसी चीज़ के बारे में बताइये जिस को मैं मज़्बूती से थाम लूं ।" इर्शाद फ़रमाया, "तेरी ज़बान हमेशा ज़िक्रुल्लाह से तर रहा करे ।" (ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الذکر، رقم ۳۳۸۶، ج۵، ص۲۴۵)

(1162)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मख़ारिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मे'राज की रात मैं ने एक शख़्स को देखा जो अ़र्श के नूर में डूबा हुवा था तो पूछा, "येह कौन है ? क्या कोई

फ़िरिश्ता है ?'' मुझ से कहा गया, ''नहीं ।'' मैं ने पूछा, ''क्या कोई नबी हैं ?'' अ़र्ज़ किया गया, ''नहीं ।'' मैं ने पूछा, ''फिर येह कौन हैं ?'' कहा गया, ''येह वोह शख़्स है जिस की ज़बान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर रहती थी और दिल मसाजिद में लगा रहता था और इस ने कभी अपने वालिदैन को गालियां नहीं दिलाईं ।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی الاکثار من ذکر اللہ، رقم ۷، ج۲، ص۲۵۳)

(1163)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से जुदा होते वक़्त जो आख़िरी कलाम किया वोह येह सुवाल था कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल कौन सा है ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारी मौत इस ह़ाल में आए कि तुम्हारी ज़बान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर हो ।''

एक रिवायत में है कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से अफ़्ज़ल और पसन्दीदा अ़मल के बारे में बताइये ।'' फ़रमाया, ''तुम्हारा इस त़रह़ मरना कि तुम्हारी ज़बान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर हो ।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی الاکثار من ذکر اللہ، رقم ۷، ج۲، ص۲۵۳)

(1164)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई ''وَالَّذِیْنَ یَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ (پ۱۰، التوبۃ:۳۴)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी ।''

तो हम उस वक़्त रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र पर थे । बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان कहने लगे, ''सोने और चांदी के बारे में तो आयत नाज़िल हो गई अगर हम जान लें कि कौन सा माल बेहतर है तो हम उसे इख़्तियार कर लेंगे ।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब से अफ़्ज़ल माल ज़िक्र करने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल और ईमान दार बीवी है जो उस के ईमान में मददगार हो ।'' (ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ التوبۃ، رقم ۳۱۰۵، ج۵، ص۶۵)

(1165)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे चार चीज़ें मिल गईं उसे दुन्या व आख़िरत की भलाई मिल गई, शुक्र करने वाला दिल, ज़िक्र करने वाली ज़बान, आज़्माइश पर सब्र करने वाला बदन और अपने आप और शोहर के माल में ख़ियानत न करने वाली बीवी ।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی الاکثار ذکر اللہ، رقم ۱۶، ج۲، ص۲۵۶)

(1166)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपने रब عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले और न करने वाले की मिसाल ज़िन्दा और मुर्दा की त़रह़ है ।''

(بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر اللہ عزوجل، رقم ۶۴۰۷، ج۴، ص۲۲۰)

(1167)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "कुछ लोग ऐसे हैं जो नर्म व मुलायम बिस्तरों पर **अल्लाह** का ज़िक्र करते हैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन्हें बुलन्द द-रजात अ़ता फ़रमाएगा।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الاخلاص واعمال السر، رقم ۴۰۱، ج ۱، ص ۳۰۹)

(1168)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "हर दिन और रात में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ एक स-दक़ा करता है और उस के ज़रीए अपने बन्दों पर एह़सान फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने बन्दे पर अपने ज़िक्र के इल्हाम से बड़ा एह़सान नहीं फ़रमाया।"

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی الاکثار من ذکر اللہ، رقم ۲۳، ج ۲، ص ۲۵۷)

(1169)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अगर एक शख़्स की झोली दिरहमों से भरी हुई हो और वोह उन्हें तक़्सीम कर रहा हो और दूसरा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र कर रहा हो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला अफ़्ज़ल होगा।" (طبرانی اوسط، من اسمہ محمد، رقم ۵۹۴۹، ج ۴، ص ۲۷۴)

(1170)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा मुजाहिद सब से ज़ियादा सवाब वाला है ? फ़रमाया, "जो उन में से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र कसरत से करने वाला हो।" उस ने फिर अ़र्ज़ किया, कौन सा रोज़ादार सब से ज़ियादा सवाब वाला है ? फ़रमाया, "जो उन में से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र कसरत से करने वाला हो।" फिर उस ने नमाज़, ज़कात, ह़ज और स-दक़ा के बारे में येही सुवाल किया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वोही जवाब देते रहे। कि जो उन में से कसरत से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला हो तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस शख़्स से फ़रमाया, "ऐ अबू ह़फ़्स ! ज़िक्र करने वाले तो हर भलाई ले गए।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "हां ! ऐसा ही है।" (مسند احمد، حدیث معاذ بن انس الجہنی، رقم ۱۵۶۱۴، ج ۵، ص ۳۰۸)

(1171)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अहले जन्नत को उस घड़ी के सिवा किसी शै पर ह़सरत न होगी जिस में वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र न कर सके थे।" (طبرانی کبیر، رقم ۱۸۲، ج ۲۰، ص ۹۳)

(1172)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, कि ''आदमी की जो घड़ी ऐसी गुज़रे जिस में वोह अल्लाह का ज़िक्र न कर पाए तो क़ियामत के दिन उसे उस घड़ी पर ह़सरत होगी।'' (شعب الایمان، باب فی محبۃ اللہ عزوجل، فصل فی ادامۃ ذکر اللہ، رقم ۵۱۱، ج۱، ص۳۹۲)

(1173)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक शैत़ान अपनी सूंड इब्ने आदम के दिल पर रखे हुए होता है, जब इन्सान अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो शैत़ान पीछे हट जाता है और जब वोह ज़िक्रुल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को भूल जाता है तो शैत़ान उस का दिल चबाने लगता है और येही ख़न्नास के वस्वसे हैं।''

(ابو یعلی، مسند انس بن مالک، رقم ۴۲۸۵، ج۳، ص۴۵۳)

(1174)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है कि ऐ इब्ने आदम ! जब तू मेरा ज़िक्र करता है तो मेरा शुक्र करता है और जब मुझे भूल जाता है तो मेरी ना शुक्री करता है।'' (طبرانی اوسط، من اسمہ محمد، رقم ۷۲۶۵، ج۵، ص۲۶۱)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

ज़िक्र के ह़ल्क़ों और इज्तिमाअ़ का सवाब

(1175)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सहाबा के एक ह़ल्के़ के क़रीब से गुज़रे तो उन से पूछा, ''तुम्हें किस चीज़ ने यहां बिठाया है ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो हमें इस्लाम की हिदायत अ़ता फ़रमाई और इस के ज़रीए़ हम पर एह़सान फ़रमाया इस पर हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने और उस का शुक्र अदा करने के लिये बैठे हैं।'' फ़रमाया, ''तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! क्या तुम सिर्फ़ इसी काम के लिये बैठे हो ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम इसी काम के लिये बैठे हैं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मैं ने तुम से तोहमत की वजह से ह़ल्फ़ नहीं उठवाया बल्कि मेरे पास जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام आए और उन्हों ने मुझ से अ़र्ज़ किया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों के सामने तुम पर फ़ख़्र फ़रमाता है।''

(مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن، رقم ۲۷۰۱، ج۱، ص۱۴۴۸)

(1176)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से किसी शख़्स से मिलते तो कहते कि ''आओ ! हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर घड़ी भर के लिये ईमान ले आएं।'' एक दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येही बात एक शख़्स से कही तो वोह नाराज़ हो कर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप इब्ने रवाह़ा को नहीं देखते कि वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़ता किये हुए ईमान से दूर हो कर एक घड़ी के ईमान की त़रफ़ जा रहे हैं ?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इब्ने रवाह़ा पर रह़्म फ़रमाए वोह उन मजालिस को पसन्द करते हैं जिन पर फ़िरिश्ते फ़ख़्र करते हैं।''

(مسند احمد، مسند انس بن مالک، رقم ۱۳۷۹۸، ج۴، ص۵۲۸)

(1177)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते रास्तों में घूम फिर कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों को तलाश करते हैं। जब वोह किसी क़ौम को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुए पाते हैं तो एक दूसरे को आवाज़ देते हैं कि अपनी मन्ज़िल की त़रफ़ आ जाओ। फिर वोह उन लोगों को आस्माने दुन्या तक अपने परों से ढांप लेते हैं तो उन का रब عَزَّوَجَلَّ ह़ालां कि वोह ख़ूब जानता है फिर भी उन से पूछता है कि ''मेरे बन्दे क्या कहते हैं ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''तेरी तस्बीह़ पढ़ते हैं और तेरी पाकी, बड़ाई, ह़म्द और अ़-ज़्मत बयान करते हैं।'' **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है, ''क्या उन्हों ने मुझे देखा है ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''तेरी क़सम ! उन्हों ने तुझे नहीं देखा।''

फिर रब तआ़ला फ़रमाता है, ''अगर वोह मुझे देख लेते तो क्या करते ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''अगर वोह तुझे देख लेते तो तेरी बहुत ज़ियादा इबादत करते और ज़ियादा शौक़ से तेरी पाकी और बुज़ुर्गी बयान करते।'' फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पूछता है कि ''वोह मुझ से क्या मांगते हैं ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''तुझ से जन्नत मांगते हैं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''क्या उन्हों ने उसे देखा है ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''तेरी क़सम ! नहीं देखा।'' रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''अगर वोह देख लेते तो क्या करते ?'' वोह अ़र्ज़ करते हैं, ''अगर वोह उसे देख लेते तो शिद्दत के साथ उसे पाने की ख़्वाहिश करते, उस की त़लब में शदीद कोशिश करते और उस में ज़ियादा रग़्बत रखते।''

फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, ''वोह किस चीज़ से पनाह मांगते हैं ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''वोह जहन्नम से पनाह मांगते हैं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता हे, ''क्या उन्हों ने जहन्नम को देखा है ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''तेरी क़सम ! नहीं देखा।'' रब तआ़ला फ़रमाता है, ''अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''अगर वोह उसे देख लेते तो शिद्दत के साथ उस से फ़िरार इख़्तियार करते और उस से ख़ौफ़ खाते।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,''मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि बेशक मैं ने उन को बख़्श दिया।'' उन में से एक फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है, ''फ़ुलां शख़्स उन में से नहीं बल्कि वोह अपनी किसी ज़रूरत के तह़्त आया था ?'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''वोह ऐसे लोग हैं जिन का हम नशीन भी मह़रूम नहीं रहता।'' (بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل ذکر اللہ عزوجل، رقم ۶۴۰۸، ج۴، ص۲۲۰)

जब कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते घूम फिर कर ज़िक्र की मजालिस तलाश करते हैं। जब वोह कोई ऐसी मजलिस देखते हैं जिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र हो रहा हो तो उन लोगों के साथ जा कर बैठ जाते हैं और एक दूसरे को अपने परों से ढांप लेते हैं यहां तक कि आस्मान तक का ख़ला पुर हो जाता है। जब वोह मजलिस मु-तफ़र्रिक़ होती है तो फ़िरिश्ते आस्मान की त़रफ़ परवाज़ कर जाते हैं। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन से पूछता है ह़ालां कि वोह ज़ियादा जानने वाला है, ''तुम कहां से आए हो ?'' तो वोह अ़र्ज़ करते हैं, ''हम ज़मीन से तेरे बन्दों के पास से आ रहे हैं वोह तेरी पाकी और बड़ाई बयान कर रहे थे, तेरा कलिमा पढ़ते और तेरी ता'रीफ़ करते थे और तुझ से सुवाल करते थे।'' रब तआ़ला फ़रमाता है, ''वोह क्या मांगते थे ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''तुझ से तेरी जन्नत मांग रहे थे।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''क्या उन्हों ने मेरी जन्नत को देखा है ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''नहीं।'' रब तआ़ला फ़रमाता है, ''अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते ?''

फिर फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''और वोह तेरी पनाह त़लब कर रहे थे।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''किस चीज़ से पनाह चाहते थे ?'' अ़र्ज़ करते हैं, ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जहन्नम से।'' रब तआ़ला फ़रमाता है, ''क्या उन्हों ने जहन्नम को देखा है ?'' फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं ''नहीं।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''अगर वोह उसे देख लेते तो क्या करते ?''

फिर फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''वोह तुझ से मग़्फ़िरत चाहते थे।'' रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''मैं ने उन की मग़्फ़िरत फ़रमा दी और उन की मुराद उन्हें अ़त़ा फ़रमा दी और जिस से वोह पनाह चाहते थे उन्हें उस से पनाह अ़त़ा फ़रमा दी।'' वोह अ़र्ज़ करते हैं, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! उन में फ़ुलां शख़्स भी है जो बहुत गुनहगार है वोह वहां से गुज़र रहा था और उन के साथ बैठ गया।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''मैं ने उस को भी बख़्श दिया क्यूं कि येह ऐसी क़ौम है जिस का हम नशीन भी महरूम नहीं रहता।''

(مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل مجالس الذکر، رقم ۲۶۸۹، ص۱۴۴۴)

(1178)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, अ़न्क़रीब क़ियामत के दिन जम्अ़ होने वाले जान जाएंगे कि करम वाले लोग कौन हैं ?'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! करम वाले लोग कौन हैं ?'' फ़रमाया, ''ज़िक्र की मह़फ़िलें क़ाइम करने वाले।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، رقم ۸۱۳، ج۲، ص۹۳)

(1179)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो क़ौम सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये ज़िक्र करने के लिये बैठे तो उन के उठने से पहले आस्मान से एक मुनादी उन्हें मुख़ात़ब कर के निदा करता है कि मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर खड़े हो जाओ कि तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गए हैं।'' (ابو یعلی، مسند انس بن مالک، رقم ۴۱۲۷، ج۳، ص۴۰۸)

(1180)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन ह़न्ज़लिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो क़ौम किसी मजलिस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये उस का ज़िक्र करने किसी मजलिस में बैठती है उन के उठने से पहले ही उन से कह दिया जाता है कि खड़े हो जाओ तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दी गई और तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गए हैं।'' (طبرانی کبیر، رقم ۶۰۳۰، ج۶، ص۲۱۲)

(1181)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास से गुज़रे तो वोह सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को वा'ज़ फ़रमा रहे थे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम ही वोह लोग हो जिन के साथ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे सब्र करने का हुक्म दिया है फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई,

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِیْنَ یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا۝ (پ۱۵، الکہف:۲۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी जान उन से मानूस रखो जो सुब्ह़ व शाम अपने रब को पुकारते हैं उस की रिज़ा चाहते हैं और तुम्हारी आंखें उन्हें छोड़ कर और पर न पड़ें क्या तुम दुन्या की ज़िन्दगी का सिंगार चाहोगे और उस का कहा न मानो जिस का दिल हम ने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम ह़द से गुज़र गया।

फिर फ़रमाया, ''जब तुम्हारा कोई गुरौह बैठता है तो उस के साथ इतनी ही ता'दाद में मलाएका भी बैठ जाते हैं अगर तुम्हारा गुरौह سُبْحٰنَ الله कहता है तो फ़िरिश्ते भी سُبْحٰنَ الله कहते हैं अगर तुम اَلْحَمْدُ لِله कहते हो तो फ़िरिश्ते भी اَلْحَمْدُ لِله कहते हैं और अगर तुम اَللهُ اَكْبَرُ कहते हो तो फ़िरिश्ते भी اَللهُ اَكْبَرُ कहते हैं फिर वोह फ़िरिश्ते अपने रब की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाते हैं।

फिर वोह फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं (ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा जानने वाला है), ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे बन्दे तेरी पाकी बयान करते थे तो हम ने भी तेरी पाकी बयान की, उन्हों ने तेरी बड़ाई बयान की तो हम ने भी तेरी बड़ाई बयान की, उन्हों ने तेरी ह़म्द की तो हम ने भी तेरी ह़म्द बयान की।'' तो हमारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ फ़िरिश्तो ! गवाह हो जाओ कि मैं ने उन्हें बख़्श दिया है।'' वोह अ़र्ज़ करते हैं, ''उन में फ़ुलां बन्दा बड़ा बदकार है ?'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''वोह ऐसी क़ौम है जिस का हम नशीन भी बद बख़्त नहीं रहता।'' (مجمع البحرین، کتاب الاذکار، باب مجالس ذکر الله، رقم ۴۵۲۰، ج۴، ص۱۹۲)

(1182)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते क़ाफ़िले की सूरत में ज़िक्र के ह़ल्क़ों को तलाश करते हैं। जब वोह किसी इज्तिमाए ज़िक्र पर आते हैं तो उसे अपने परों से ढांप लेते हैं और अपने क़ासिद फ़िरिश्ते को आस्मान की त़रफ़ रब तबा-र-क व तआ़ला के पास भेजते हैं। फिर अ़र्ज़ करते हैं, ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरे बन्दों में से कुछ बन्दों के पास से आए हैं, वोह तेरी ने'मतों की अ़-ज़मत बयान कर रहे थे, तेरी किताब की तिलावत कर रहे थे, तेरे ह़बीब मुह़म्मद صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेज रहे थे और तुझ से दुन्या व आख़िरत की भलाइयां मांग रहे थे।'' तो **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला फ़रमाता है, ''उन को मेरी रह़मत से ढांप दो क्यूं कि वोह ऐसी क़ौम है जिन का हम नशीन मह़रूम नहीं रहता।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی مجالس الذکر، رقم ۱۶۷۶۹، ج۱۰، ص۷۷)

(1183)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''लोगो ! बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़िरिश्ते क़ाफ़िले की सूरत में सैर करते हैं और ज़िक्र की मजलिसों में ठहर जाते हैं लिहाज़ा जन्नत की क्यारियों में से कुछ न कुछ चुन लिया करो।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''जन्नत की क्यारियां कहां हैं ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''ज़िक्र की मह़फ़िलें, लिहाज़ा सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में गुज़ारो और उसे अपने दिल में याद किया करो, जो अपना मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक देखना चाहता है तो वोह ग़ौर करे कि उस के दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क्या मरतबा है ? क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को वैसा ही मक़ाम अ़ता फ़रमाता है जैसा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने हां रखता है (या'नी जितना वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता और उस के अह़कामात पर अ़मल करता है)।''

(ابویعلی، مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۲۱۳۵، ج۲، ص ۳۱۷)

(1184)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम्हारा गुज़र जन्नत की क्यारियों पर से हो तो उस में से कुछ न कुछ चुन लिया करो।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''जन्नत की क्यारियां क्या हैं ?'' फ़रमाया, ''ज़िक्र के ह़ल्क़े।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ۸۷، رقم ۳۵۲۱، ج۵، ص ۳۰۴)

(1185)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़िक्र की मजलिसों की ग़नीमत क्या है ?'' फ़रमाया, ''मजालिसे ज़िक्र की ग़नीमत जन्नत है।''

(مسند احمد بن حنبل، حدیث عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۶۶۳، ج۲، ص ۵۹۱)

(1186)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन एक क़ौम को उठाएगा जिन के चेहरों पर नूर होगा और वोह मोतियों के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करेंगे ह़ालां कि न तो वोह अम्बिया होंगे न ही शु-हदा।'' एक आ'राबी ने घुटनों के बल खड़े हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें उन का ह़ुलिया बयान फ़रमाइये ताकि हम उन्हें पहचान सकें।'' इर्शाद फ़रमाया, ''वोह मुख़्तलिफ़ क़बाइल और मुख़्तलिफ़ शहरों से तअ़ल्लुक़ रखने वाले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले होंगे जो ज़िक्रुल्लाह की मह़फ़िल में जम्अ़ हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करेंगे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی مجالس الذکر، رقم ۱۶۷۷۰، ج۱۰، ص ۷۷)

(1187)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''रह़मान عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कुछ लोग होंगे जो न तो अम्बिया होंगे न ही शु-हदा, उन के चेहरों की चमक लोगों की निगाहों को ख़ीरा किये देती होगी अम्बिया और शु-हदा उन के मर्तबे और उन की बारगाहे इलाही में कुर्ब पर तअ़ज्जुब करेंगे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ?'' फ़रमाया, ''वोह मुख़्तलिफ़ क़बाइल के लोग होंगे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये जम्अ़ होंगे और उ़म्दा कलाम से लुत्फ़ अन्दोज़ होंगे जैसे खजूर खाने वाला उस के ज़ाएक़े से लुत्फ़ अन्दोज़ होता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی مجالس الذکر، رقم ۱۶۷۷۱، ج۱۰، ص ۷۸)

(1188)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और ह़जरते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि हम दोनों आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो क़ौम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये बैठती है फ़िरिश्ते उन्हें अपने परों से छूते हैं और रह़मत उन्हें ढांप लेती है और उन पर सकीना नाज़िल होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों के सामने उन का चर्चा फ़रमाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن، رقم ۲۷۰۰، ص ۱۴۴۸)

=== === ===

कलिमए तय्यिबा (لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰه) पढ़ने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِی السَّمَآءِ ۙ تُؤْتِیْۤ اُكُلَهَا كُلَّ حِیْنٍۭ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ (پ۱۳، ابراھیم:۲۴۔۲۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** ने कैसी मिसाल बयान फ़रमाई पाकीज़ा बात की जैसे पाकीज़ा दरख़्त जिस की जड़ क़ाइम और शाख़ें आस्मान में हर वक़्त अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से ।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, ''इस आयते मुबा-रका में पाकीज़ा बात से मुराद لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰه है ।'' (الدرالمنثور، ابراھیم:۲۴، ج۵، ص۲۰)

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1189)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़ियामत के दिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से बहरा मन्द होने वाले खुश नसीब लोग कौन होंगे ?'' फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा ! मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न पूछेगा क्यूं कि मैं ह़दीस सुनने के मुआ-मले में तुम्हारी हि़र्स को जानता हूं, क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त पाने वाला खुश नसीब वोह होगा जो सिद्क़े दिल से لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰه कहेगा ।''

(بخاری، کتاب العلم، باب الحرص علی الحدیث، رقم ۹۹، ج۱، ص۵۳)

(1190)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे ऐसी चीज़ सिखा जिस के ज़रीए मैं तुझे याद किया करूं और तुझे पुकारा करूं ।'' फ़रमाया, ''لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰه पढ़ा करो ।'' अ़र्ज़ किया, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! येह तो तेरा हर बन्दा कहता है ।'' फ़रमाया, ''لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰه पढ़ा करो ।'' अ़र्ज़ किया, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ऐसी चीज़ सीखना चाहता हूं जो मेरे लिये ख़ास हो ।'' फ़रमाया, ''ऐ मूसा अगर सातों ज़मीन और सातों आस्मानों को एक पलड़े में रखा जाए और ''لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰه को दूसरे पलड़े में रखा जाए तो येह उन पर ग़ालिब आ जाएगा ।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب التاریخ، باب بدء الخلق، رقم ۶۱۸۵، ج۸، ص۳۵)

(1191)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र لَآ اِلٰهَ اِلَّااللّٰه है और सब से अफ़्ज़ल दुआ اَلْحَمْدُ لِلّٰه है ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل الحامدین، رقم ۳۸۰۰، ج۴، ص۲۴۸)

(1192)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने इख़्लास के साथ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।'' अ़र्ज़ किया गया, ''इख़्लास से क्या मुराद है ?'' फ़रमाया, ''इस का इख़्लास येह है कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से दूर रहो।''

(طبرانی کبیر، رقم ۵۰۷۴، ج۵، ص۱۹۷)

(1193)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस बन्दे ने इख़्लास के साथ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, यहां तक कि वोह अ़र्श तक पहुंच जाता है बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे।''

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات باب دعاء ام سلمہ، رقم ۳۶۰۱، ج۵، ص۳۴۰)

(1194)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपने ईमान की तज्दीद कर लिया करो।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम अपने ईमान की तज्दीद कैसे किया करें ?'' फ़रमाया, ''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कसरत से पढ़ा करो।''

(مسند احمد، مسند ابی ہریرۃ، رقم ۸۷۱۸، ج۳، ص۲۸۱)

(1195)...... ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन ओस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तुम्हारे साथ कोई अजनबी शख़्स (या'नी अहले किताब) भी है ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! नहीं है।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरवाज़ा बन्द करने का हुक्म दिया और फ़रमाया, ''अपने हाथ उठा लो और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहो।''

हम ने थोड़ी देर के लिये हाथ उठाए फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में दुआ़ की, ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! बेशक तूने मुझे इस कलिमे के साथ भेजा है और मुझ से इस कलिमे पर जन्नत का वा'दा फ़रमाया है और बेशक तू अपने वा'दे का ख़िलाफ़ नहीं करता।'' फिर हम से फ़रमाया कि ''ख़ुश ख़बरी सुन लो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।''

(مسند احمد، حدیث شداد بن اوس، رقم ۱۷۱۲۱، ج۶، ص۷۸)

(1196)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं जो उसे अपने दिल की गहराई से कहे फिर उस पर मर जाए वोह आग पर ह़राम है वोह कलिमा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ है।''

(المستدرک کتاب الایمان، باب من قال لا الہ الا اللہ حقا من قلبہ۔۔۔الخ، رقم ۲۵۰، ج۱، ص۲۵۱)

(1197)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه की गवाही देना जन्नत की कुन्जी है।''

(مسند احمد، مسند معاذ بن جبل، رقم ۲۲۱۶۳، ج۸، ص ۲۵۷)

(1198)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अर्श के सामने नूर का एक सुतून है, जब बन्दा لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه कहता है तो वोह सुतून हिलने लगता है, **अल्लाह** तबा-र-क व तआला उसे फ़रमाता है, ''ठहर जा।'' वोह अर्ज़ करता है, ''मैं कैसे ठहरूं हालां कि तूने इस कलिमा पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत नहीं फ़रमाई।'' तो **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त फ़रमाता है, ''बेशक मैं ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी तो फिर वोह सुतून ठहर जाता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی فضل لا الہ الا اللہ، رقم ۱۶۸۰۴، ج۱۰، ص ۸۸)

(1199)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बन्दा दिन या रात की किसी साअ़त में لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه कहता है तो उस के नामए आ'माल में से बुराइयां मिटा कर उन की जगह इतनी ही नेकियां लिख दी जाती हैं।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی فضل لا الہ الا اللہ، رقم ۱۶۸۰۳، ج۱۰، ص ۸۸)

(1200)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه कहने वालों को क़ब्र और आख़िरत में वह़शत न होगी, गोया कि मैं لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه कहने वालों को अपने सरों से मिट्टी झाड़ते और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْحَزَنَ (तमाम ता'रीफ़ें उस रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने हम से ग़म को दूर फ़रमाया) कहते हुए सुन रहा हूं।''

(طبرانی اوسط، من اسمہ یعقوب، رقم ۹۴۷۸، ج۶، ص ۴۸۰)

(1201)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''سُبْحٰنَ اللّٰه कहना निस्फ़ मीज़ान को भर देता है और اَلْحَمْدُ لِلّٰه पूरे मीज़ान को भर देता है और لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने की राह में कोई ह़िजाब नहीं।''

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، (باب ۹۲) ماجاء فی عقد التسبیح، رقم ۳۵۲۹، ج۵، ص ۳۰۸)

(1202)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने बेटे को क्या नसीह़त फ़रमाई थी ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये ।'' फ़रमाया, ''ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुए फ़रमाया, ''बेटा ! मैं तुम्हें दो बातों की वसिय्यत करता हूं और दो बातों से मन्अ़ करता हूं, तुम्हें لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहने की वसिय्यत करता हूं क्यूं कि अगर इसे एक पलड़े में रखा जाए और दूसरे में ज़मीनो आस्मान को रख दिया जाए तो येह कलिमा उन दोनों पर ग़ालिब आ जाएगा, और अगर ज़मीनो आस्मान इस के लिये ह़ल्क़ा बन जाएं तो येह उन्हें तोड़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने में काम्याब हो जाएगा ।''

जब कि एक रिवायत में है कि ''मैं तुम को لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहने का हुक्म देता हूं क्यूं कि अगर ज़मीनो आस्मान और जो कुछ इस में है एक पलड़े में और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ दूसरे पलड़े में रखा जाए तो येह कलिमा उन सब पर ग़ालिब आ जाएगा और अगर ज़मीनो आस्मान और जो कुछ इस में है उस के लिये ह़ल्क़ा बन जाएं तो येह उन्हें तोड़ देगा, और मैं तुम्हें سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहने का हुक्म देता हूं क्यूं कि येही हर चीज़ की तस्बीह़ है और इसी के सबब हर चीज़ को रिज़्क़ दिया जाता है ।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی قول لا الہ الا اللہ، رقم ۲۰، ج۲، ص۲٦۹)

सो मरतबा कलिमए त़य्यिबा पढ़ने का सवाब

(1203)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बन्दा सो मरतबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ पढ़ेगा, जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे उठाएगा तो उस का चेहरा चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमकता होगा । और उस बन्दे से अफ़्ज़ल किसी का अ़मल नहीं उठाया जाता मगर जो इस की मिस्ल पढ़े या इस से ज़ियादा पढ़े ।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب فیمن ھلل مئۃ او اکثر، رقم ۱٦۸۳۰، ج۱۰، ص۹٦)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
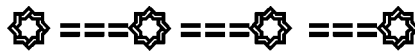
तौहीद व रिसालत की गवाही देने का सवाब

(1204)...... हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने इस बात की गवाही दी कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं और इस बात की गवाही दी कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं और ईसा عَلَیْہِ السَّلام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं और ऐसा कलिमा हैं जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यि-दतुना मरयम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की त़रफ़ इल्क़ा किया और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से फूंकी हुई रूह़ हैं और जन्नत और जहन्नम के ह़क़ होने की गवाही दी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ख़्वाह उस के अ़मल जैसे भी हों।" (بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ۴۹، رقم ۳۴۳۵، ج ۲، ص ۴۵۵)

एक रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जो इस बात की गवाही दे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर जहन्नम की आग को ह़राम फ़रमा देगा।"

(مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی ان من مات علی التوحید دخل الجنۃ، رقم ۲۹، ص ۳۶)

(1205)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रदीफ़ थे (या'नी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक सुवारी पर सुवार थे) तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ऐ मुआ़ज़ बिन जबल !" उन्हों ने तीन मरतबा अ़र्ज़ किया, "लब्बैक या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! (या'नी या रसूलल्लाह ! मैं ह़ाज़िर हूं।)" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, "जो कोई इस बात की सच्चे दिल से गवाही देगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर जहन्नम की आग ह़राम फ़रमा देगा।" अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह ! क्या मैं येह बात लोगों को न बता दूं ताकि वोह ख़ुश हो जाएं।" फ़रमाया, "फिर तो वोह इसी पर भरोसा करने लगेंगे।"

(بخاری، کتاب العلم، باب من خص بالعلم قوما دون قوم...الخ، رقم ۱۲۸، ج ۱، ص ۶۷)

(1206)...... हज़रते सय्यिदुना रिफ़ाआ़ जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र में थे। जब हम कदीद या क़दीद के मक़ाम पर पहुंचे तो आप ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बयान की और फ़रमाया, "बहुत ख़ूब।" फिर इर्शाद फ़रमाया "मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गवाही देता हूं कि जो बन्दा इस बात की सच्चे दिल से गवाही देगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और इस बात की, कि मैं (या'नी मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं फिर इस पर साबित क़दम रहे तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۱۶۲۱۸، ج ۵، ص ۴۸۰)

(1207)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन मेरी उम्मत के एक शख़्स को मख़्लूक़ में से चुन लेगा और उस के सामने निनानवे दफ़ातिर (रजिस्टर) फैला देगा, उन में से हर रजिस्टर ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ होगा। फिर उस शख़्स से फ़रमाएगा, "क्या तू इस में से किसी बात का इन्कारी है? क्या मेरे लिखने वाले मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों ने तेरे साथ कोई ज़ियादती की है?" वोह बन्दा अ़र्ज़ करेगा, "नहीं या रब عَزَّوَجَلَّ!" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, "क्या तेरे पास कोई उ़ज़्र है?" वोह अ़र्ज़ करेगा, "नहीं या रब عَزَّوَجَلَّ!" तो **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा, "क्यूं नहीं! तेरी एक नेकी हमारे पास है, आज तुझ पर कोई ज़ुल्म नहीं होगा।" फिर एक परचा निकालेगा जिस पर اَشْھَدُ اَنْ لَّآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ लिखा होगा फिर फ़रमाएगा, "अपनी मीज़ान पर जाओ।" वोह बन्दा अ़र्ज़ करेगा, "इन दफ़ातिर के साथ येह परचा कैसा है?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा "तुझ पर कोई ज़ुल्म न होगा।" फिर उन दफ़्तरों को एक पलड़े में और उस परचे को दूसरे पलड़े में रखा जाएगा तो वोह दफ़्तर हलके हो जाएंगे और परचा भारी हो जाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम के मुक़ाबिल कोई शै भारी न होगी।"

(سنن الترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فیمن یموت وھو یشھد ...الخ رقم ۲۶۴۸، ج۴، ص۲۹۰)

===

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ पढ़ने का सवाब

(1208)...... ह़ज़रते सय्यिदुना या'कूब बिन आ़सिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दो सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो बन्दा रूह़ की गहराई और तस्दीके़ क़ल्ब के साथ अपनी ज़बान से येह कहता है
''لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ'' अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाही है, सब ख़ूबियों सराहा और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।''
तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर नज़रे करम फ़रमाने के लिये आस्मान को कुशादा फ़रमा देता है और जिस बन्दे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाता है उस का येह ह़क़ है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मुराद पूरी फ़रमाए।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الدعاء والذکر، باب الترغیب فی قول لا الہ الا اللہ، الخ رقم ۳، ج۲، ص۲۷۱)

(1209)...... ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने
لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ कहा तो इस कलिमे से कोई अ़मल आगे न बढ़ सकेगा और उस के साथ कोई गुनाह बाक़ी न रहेगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی لا الہ الا اللہ وحدہ الخ، رقم ۱۶۸۲۴، ج۱۰، ص۹۴)

(1210)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने दादा से रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेहतरीन दुआ़ यौमे अ़-रफ़ा की दुआ़ है और सब से बेहतर कलिमा जो मैं ने और मुझ से पहले के अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام ने कहा है वोह لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ है।''

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی دعاء یوم عرفہ، رقم ۳۵۹۶، ج۵، ص۳۳۸)

(1211)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने ''لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ'' कहा येह एक या दो गुलाम आज़ाद करने के बराबर है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء لا الہ الا اللہ وحدہ..الخ، رقم ۱۶۸۱۹، ج۱۰، ص۹۳)

(1212)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार,

हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो चांदी (या'नी रुपै वग़ैरा) क़र्ज़ दे या दूध का जानवर आ़रियतन दे या किसी को रास्ता बताए उसे एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और जिस ने لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ कहा उसे भी एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा।''

(مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۱۸۵۴۱، حدیث البراء بن عازب، ج ۶، ص ۴۰۸)

चार गुलाम आज़ाद करने का सवाब

(1213)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने दस मरतबा येह कलिमा पढ़ा لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ गोया उस ने औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام में से चार गुलाम आज़ाद किये।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی قول لاالہ الااللہ وحدہ، الخ، رقم ۱، ج ۲، ص ۲۷۰)

(1214)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने एक दिन में सो मरतबा येह कलिमा ''لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ'' पढ़ा तो येह उस के लिये दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर है और उस के लिये सो नेकियां लिखी जाएंगी, उस के सो गुनाह मिटा दिये जाएंगे और येह कलिमा उस दिन शाम तक शैत़ान से उस की ह़िफ़ाज़त करेगा और उस दिन उस से अ़मल में कोई न बढ़ सकेगा मगर जो उस से ज़ियादा मरतबा पढ़े।''

(صحیح بخاری، کتاب الدعوات، باب فضل التهلیل، رقم ۶۴۰۳، ج ۴، ص ۲۱۸)

(1215)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुन्ज़िर जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे सब से अफ़्ज़ल कलिमा सिखाइये।'' शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू मुन्ज़िर ! रोज़ाना सो मरतबा येह कलिमात पढ़ लिया करो لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ'' तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है, सब ख़ूबियों सराहा, ज़िन्दा करता और मारता है। उसी के क़ब्ज़े में भलाई है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।'' तो उस दिन अ़मल के लिहाज़ से तुम से अफ़्ज़ल कोई न होगा मगर वोह जो तुम्हारी मिस्ल पढ़े।

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب فیمن ھلل مائۃ لوا کثر، رقم ۱۶۸۳۱، ج ۱۰، ص ۹۶)

बीस लाख नेकियों का सवाब

(1216)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो ''لَا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ اَحَدًا صَمَدًا لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ'' तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, यक्ता व बे नियाज़ न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।'' पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये बीस लाख नेकियां लिखेगा।

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ما جاء فی لا الٰہ الا اللہ، الخ، رقم ۱۶۸۲۷، ج۱۰، ص۹۵)

जन्नत में दाख़िला

(1217)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये لَا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِی وَیُمِیْتُ وَھُوَ الْحَیُّ الَّذِیْ لَایَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ कहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे येह कलिमात पढ़ने की वजह से जन्नते नईम में दाख़िल फ़रमाएगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ما جاء فی لا الٰہ الا اللہ وحدہ لاشریک لہ، رقم ۱۶۸۲۵، ج۱۰، ص۹۵)

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहने का सवाब

(1218)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, "क्या मैं तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा कलाम के बारे में न बताऊं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! (जी हां !) मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पसन्दीदा कलाम के बारे में बताइये ।" आप ने इर्शाद फ़रमाया, "बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा कलाम येह है سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है और सब ख़ूबियों सराहा ।"

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया गया कि "सब से अफ़्ज़ल कलाम कौन सा है ?" इर्शाद फ़रमाया, "वोह जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मलाएका और बन्दों के लिये ख़ास कर लिया और वोह سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ है ।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل سبحان اللہ وبحمدہ، رقم ۲۷۳۱، ص۱۴۶۱)

(1219)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ता है उस के लिये जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है ।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی سبحان اللہ وبحمدہ وماضم معھا، رقم ۱۶۸۷۵، ج۱۰، ص۱۱۱)

(1220)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِہٖ अ-ज़मत वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है और सब ख़ूबियों सराहा ।" पढ़ता है उस के लिये जन्नत में खजूर का एक दरख़्त लगा दिया जाता है ।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، رقم ۸۳۲، ج۲، ص۹۶)

(1221)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस के लिये रात में इ़बादत करना दुश्वार हो या वोह जो अपना माल ख़र्च करने में बुख़्ल से काम लेता हो या दुश्मन से जिहाद करने से डरता हो तो वोह سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कसरत से पढ़ा करे क्यूं कि ऐसा करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सोने का पहाड़ स-दक़ा करने से ज़ियादा पसन्द है ।" (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی سبحان اللہ وبحمدہ الخ، رقم ۱۶۸۷۶، ج۱۰، ص۱۱۲)

(1222)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो एक दिन में सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ

पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।"

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ٦١، رقم ٣٤٧٧، ج ٥، ص ٢٨٧)

(1223)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सहल अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" कहा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" या येह फ़रमाया, "उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाएगी, और जिस ने सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक लाख चौबीस हज़ार नेकियां लिखेगा।" सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर तो हम में से कोई भी हलाकत में मुब्तला न होगा।" फ़रमाया, "क्यूं नहीं ! तुम में से एक शख़्स बे शुमार नेकियां ले कर आएगा कि अगर उन नेकियों को किसी पहाड़ पर रख दिया जाए तो उस से भी ज़ियादा वज़्नी हो जाएं फिर ने'मतें आएंगी और उन तमाम नेकियों को ले जाएंगी फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी दो रहमतों से फ़ज़्ल फ़रमाएगा।"

(المستدرک، کتاب التوبۃ، باب من قال لا الٰہ الا اللہ وجبت لہ الجنۃ، رقم ٧٧١٤، ج ٥، ص ٣٥٦)

(1224)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहा तो वोह सो ऊंट कुरबान करने वाले के बराबर होगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ما جاء فی الباقیات الصالحات ونحوھا، رقم ١٦٨٦٥، ج ١٠، ص ١٠٧)

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْم पढ़ने का सवाब

(1225)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "दो कलिमे سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْم ज़बान पर हलके, मीज़ान पर भारी और रहमान عَزَّوَجَلَّ को पसन्द हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعا، باب فضل التہلیل والتسبیح، رقم ٢٦٩٤، ص ١٤٤٦)

(1226)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْم اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ कहा उस के लिये उस कलिमे को इसी तरह लिख लिया जाएगा फिर उसे अर्श के साथ मुअल्लक़ कर दिया जाएगा और उस शख़्स का कोई गुनाह उसे न मिटा सकेगा यहां तक कि जब वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ मुलाक़ात करेगा तो वोह कलिमा उसी तरह मोहर बन्द होगा जिस तरह उस ने कहा था।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار باب ما جاء فی سبحان اللہ وبحمدہ...الخ، رقم ١٦٨٧٨، ج ١٠، ص ١١٢)

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ पढ़ने का सवाब

(1227)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सफ़ाई निस्फ़ ईमान है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना मीज़ान को भर देता है और سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहना ज़मीनो आस्मान के दरमियान हर चीज़ को भर देता है और नमाज़ नूर है, स-दक़ा बुरहान है, सब्र रोशनी है, क़ुरआन तेरे लिये दलील है या तेरे ख़िलाफ़ दलील है। जब कोई शख़्स सुब्ह़ करता है तो अपनी जान बेचने वाला होता है फिर या तो उसे आज़ाद कर देता है या हलाक कर देता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۲۲۳، ص ۱۴۰)

(1228)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''औलादे आदम में से हर इन्सान को तीन सो साठ जोड़ों के साथ पैदा किया गया तो जब कोई आदमी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बड़ाई बयान करते हुए तीन सो साठ मरतबा اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ या سُبْحَانَ اللّٰہِ या اَلْحَمْدُ لِلّٰہ या اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहता है या मुसल्मानों के रास्ते से कोई पथ्थर या कांटेदार झाड़ी या हड्डी हटा देता है या नेकी का हुक्म देता है या किसी बुराई से मन्अ़ करता है तो उस दिन शाम तक के लिये अपने आप को जहन्नम से नजात दिला देता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب بیان ان اسم الصدقۃ یقع علی کل نوع من المعروف، رقم ۱۰۰۷، ص ۵۰۳)

(1229)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ कहना मुझे हर उस चीज़ से ज़ियादा मह़बूब है जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل التہلیل والتسبیح، رقم ۲۶۹۵، ص ۱۴۴۶)

(1230)...... एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब से अफ़्ज़ल कलाम سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ है।''

(مسند احمد بن حنبل، حدیث بعض اصحاب النبی، رقم ۱۶۴۱۲، ج ۵، ص ۵۲۵)

(1231)...... ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को प्यारे कलिमात चार हैं سُبْحَانَ اللّٰہِ ,اَلْحَمْدُلِلّٰہِ ,لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ और اَللّٰہُ اَکْبَرُ जिस कलिमे से इब्तिदा करो मुज़ीर (नुक़्साने रसां) नहीं।''

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ۶۰، رقم ۳۴۷۳، ج ۵، ص ۲۸۶)

(1232)......ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : शबे मे'राज मेरी मुलाक़ात इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से हुई, उन्हों ने फ़रमाया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत को मेरा सलाम फ़रमा दें और उन्हें बता दें कि जन्नत की ज़मीन बहुत ज़रख़ैज़ है, वहां का पानी बहुत शीरीं और जन्नत में सफ़ेद ज़मीन बहुत है वहां के

दरख़्त येह कलिमात हैं : ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ''

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات عن رسول اللہ ﷺ، باب ماجاء فی فضل التسبیح والتکبیر، الحدیث:۳۴۷۳، ج۵،ص۲۸۶)

(1233)...... हज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक जन्नत में हौज़ हैं तुम उन के पौदों में इज़ाफ़ा किया करो ।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस के पौदे क्या हैं ?'' फ़रमाया, ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی الباقیات الصالحات، رقم ۱۶۸۵۲، ج۱۰،ص۱۰۳)

(1234)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास से गुज़रे तो मैं पौदे लगा रहा था । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा ! तुम क्या लगा रहे हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''पौदे लगा रहा हूं ।'' फ़रमाया, ''क्या मैं तुझे इन से बेहतर पौदों के बारे में न बताऊं ?'' फिर फ़रमाया, ''वोह سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ हैं, इन में से हर एक के बदले जन्नत में एक पौदा लगा दिया जाता है ।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل التسبیح، رقم ۳۸۰۷، ج۴،ص۲۵۲)

(1235)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने कलाम में से चार कलिमात سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ को चुन लिया है । चुनान्चे ! जो سُبْحَانَ اللّٰہِ कहता है उस के लिये बीस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के बीस गुनाह मिटा दिये जाते हैं और जो اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहता है उसे भी येही फ़ज़ीलत हासिल होती है और जो لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ कहता है उस की भी येही फ़ज़ीलत है और जो दिल से ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ'' तरजमा : सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जो तमाम जहानों का पालने वाला है ।'' कहता है उस के लिये तीस नेकियां लिखी जाती हैं और उस के तीस गुनाह मिटा दिये जाते हैं ।''

(المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر الخ، باب فضیلۃ التسبیح، رقم ۱۹۲۹، ج۲،ص۱۹۲)

(1236)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपनी ढालें उठा लो ।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! क्या दुश्मन ने हम्ला कर दिया है ?'' फ़रमाया, ''नहीं ! बल्कि जहन्नम के मुक़ाबले में अपनी ढालें उठा लो और سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ पढ़ा करो क्यूं कि येह कलिमात क़ियामत के दिन तुम्हारे आगे और पीछे से हिफ़ाज़त करेंगे और येही बाक़ी रहने वाली नेकियां हैं ।''

(المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر الخ، باب المنجیات الباقیات الصالحات، رقم ۲۰۲۹، ج۲،ص۲۳۵)

(1237) ...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल को याद करने के लिये जो तस्बीह़, तह्लील और तह़मीद करते हो तो वोह कलिमात अ़र्श के गिर्द घूमते हैं उन की आवाज़ शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की त़रह़ होती है और येह अपने पढ़ने वालों का तज़्किरा करते हैं।'' (फिर फ़रमाया), ''क्या तुम पसन्द नहीं करते कि तुम्हारा तज़्किरा हमेशा होता रहे ?'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل التسبیح، رقم ۳۸۰۹، ج۴، ص۲۵۳)

(1238)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक टहनी को पकड़ कर झाड़ा तो उस के पत्ते न झड़े फिर उसे दोबारा झाड़ा मगर पत्ते न झड़े, तीसरी मरतबा फिर झाड़ा तो पत्ते झड़ने लगे। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ'' कहना गुनाहों को इस त़रह़ झाड़ देता है जिस त़रह़ दरख़्त अपने पत्तों को झाड़ देता है।'' (مسند احمد، رقم ۱۲۵۵۶، ج۳، ص۱۵۲)

(1239)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ! मैं ने क़ुरआने पाक की मश्क़ की कोशिश की मगर न कर सका लिहाज़ा मुझे ऐसी चीज़ सिखाइये जो क़ुरआन की जगह मेरे लिये किफ़ायत करे।'' ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ'' कहा करो।'' तो उस ने येह कलिमात कहे और इन्हें अपनी उंग्लियों पर शुमार किया। फिर अ़र्ज़ किया कि ''या रसूलल्लाह ! येह तो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं मेरे लिये क्या है ?'' आप ने फ़रमाया कि तुम येह कहा करो ''اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ وَاھْدِنِیْ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रह़म फ़रमा और आफ़िय्यत और रिज़्क़ दे और हिदायत अ़त़ा फ़रमा।''

जब वोह आ'राबी चला गया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आ'राबी अपने हाथों को ख़ैर से भर कर ले गया।'' एक रिवायत में ''لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ'' कहने का इज़ाफ़ा है।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب قضاء الفوائت، رقم ۱۸۰۷، ج۳، ص۱۴۸)

(1240)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तुम में से कोई रोज़ाना उहुद पहाड़ के बराबर अ़मल करने की इस्तित़ाअ़त नहीं रखता ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! रोज़ाना उहुद पहाड़ के बराबर अ़मल करने की इस्तित़ाअ़त कौन रख सकता है ?'' आप ने फ़रमाया, ''तुम में से हर एक इस की इस्तित़ाअ़त रखता है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ?'' फ़रमाया ''لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ، سُبْحَانَ اللّٰہِ اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ और اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहना उहुद पहाड़ से ज़ियादा अ़-ज़मत वाला है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۳۹۸، ج۱۸، ص۱۷۴)

(1241)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ कहा उस के लिये हर ह़र्फ़ के बदले दस नेकियां लिखी जाएंगी।'' (طبرانی اوسط، رقم ۱۴۹۱، ج۵، ص۳۲)

(1242)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो उन में से कुछ चुन लिया करो।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''जन्नत की क्यारियां क्या हैं?'' फ़रमाया ''मसाजिद।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''और सब्ज़ा क्या है?'' फ़रमाया ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ।'' (سنن ترمذی، کتاب الدعوات، رقم ۳۵۲۰، باب ۸۷، ج۵، ص۳۰۴)

(1243)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि चन्द सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! मालदार लोग अज्र ले गए, जिस त़रह़ हम नमाज़ पढ़ते हैं वोह भी नमाज़ पढ़ते हैं और जिस त़रह़ हम रोजे़ रखते हैं वोह भी रोजे़ रखते हैं और वोह अपने फ़ाज़िल माल के ज़रीए स-दक़ा भी करते हैं।'' ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये कोई ऐसी चीज़ नहीं बनाई जो तुम स-दक़ा कर सको?'' फिर फ़रमाया, ''बेशक سُبْحَانَ اللّٰہِ कहना स-दक़ा है और اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहना स-दक़ा है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना स-दक़ा है और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْفِ या'नी नेकी की दा'वत देना स-दक़ा है और نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَرِ या'नी बुराई से रोकना स-दक़ा है और तुम्हारे लिये तुम्हारी शर्मगाहों में स-दक़ा है।''

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह! क्या हम में से कोई अपनी शह्वत पूरी करे तो क्या उस के लिये इस में सवाब है?'' फ़रमाया ''तुम्हारा क्या ख़याल है कि अगर वोह अपनी शह्वत ज़रीअ़ए ह़राम से पूरी करे तो क्या उसे गुनाह होगा?'' (फिर फ़रमाया) ''इसी त़रह़ अगर वोह अपनी शह्वत ह़लाल ज़रीए से पूरी करे तो उस के लिये इस में सवाब है।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب بیان ان اسم الصدقۃ یقع...الخ، رقم ۱۰۰۶، ص۵۰۳)

(1244) ...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''ख़ूब! बहुत ख़ूब! पांच चीजे़ं कितनी अच्छी

हैं कि मीज़ान में उन से वज़्नी कोई चीज़ नहीं होगी वोह اَللّٰہُ اَکْبَرُ और سُبْحَانَ اللّٰہِ ,اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ ,لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ कहना और मुसल्मान का अपने नेक व सालेह़ बच्चे के मर जाने पर सवाब की उम्मीद पर सब्र करना है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، رقم ۸۳۰، ج۲، ص۹۹)

(1245)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जब मैं तुम्हें कोई ह़दीस सुनाता हूं तो उस की ताईद में किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आयत पेश करता हूं, (फिर फ़रमाया) बेशक बन्दा जब اَللّٰہُ اَکْبَرُ ,لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ ,اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ ,سُبْحَانَ اللّٰہِ और تَبَارَکَ اللّٰہُ कहता है तो मलाएका इन कलिमात को पकड़ लेते हैं और उन्हें अपने परों के नीचे छुपा लेते हैं, फिर उन का गुज़र फ़िरिश्तों के जिस गुरौह पर भी होता है वोह इन कलिमात के कहने वाले के लिये इस्तिग़्फ़ार करते हैं, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

اِلَیْہِ یَصْعَدُ الْکَلِمُ الطَّیِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ یَرْفَعُہٗ (پ۲۲،الفاطر:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उसी की त़रफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम और जो नेक काम है वोह उसे बुलन्द करता है।

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب۴۰۳، رقم ۳۶۴۲، ج۳، ص۲۰۴)

(1246)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबू वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे कि आप ने फ़रमाया, ''क्या तुम में से कोई रोज़ाना एक हज़ार नेकियां कमाने से आ़जिज़ है?'' ह़ाज़िरीन में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया कि ''हम में से कोई एक हज़ार नेकियां कैसे कमा सकता है?'' फ़रमाया, ''अगर वोह सो मरतबा तस्बीह़ या'नी سُبْحٰنَ اللّٰہ कहे तो उस के लिये एक हज़ार नेकियां लिखी जाती हैं या एक हज़ार गुनाह मिटा दिये जाते हैं।''

(صحیح مسلم کتاب الذکر والدعاء، باب فضل التہلیل والتسبیح، رقم ۲۶۹۸ص ۱۴۴۷)

(1247)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सो मरतबा لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ और सो मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहा तो येह उस के लिये दस गुलाम आज़ाद करने और सात ऊंट या गाय कुरबान करने से बेहतर है।''

(1248)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहा तो उस का येह अ़मल सो ऊंट कुरबान करने के बराबर है और जिस ने सो मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहा तो येह मक्कए मुकर्रमा में सो ऊंट नह़्र करने के बराबर है।''

(طبرانی کبیر، رقم ۷۵۴۴، ج۸، ص۱۱۵)

(1249)...... हज़रते सय्यि–दतुना उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं बूढ़ी और कमज़ोर हो गई हूं लिहाज़ा आप मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिसे मैं बैठ कर करती रहूं।'' नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''सो मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ बयान करो (या'नी سُبْحَانَ اللّٰہِ कह लिया करो) तो येह तुम्हारे लिये औलादे इस्माईल में से सो गुलाम आज़ाद करने के बराबर है और सो मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तह़मीद कर लिया करो (या'नी اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कह लिया करो) येह तुम्हारे लिये सो कजावे और ज़ीन वाले घोड़े राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में देने से बेहतर है और सो मरतबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बड़ाई बयान कर लिया करो (या'नी اَللّٰہُ اَکْبَرُ कह लिया करो) येह तुम्हारे लिये सो कुरबानियों के बराबर है और सो मरतबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कह लिया करो।''

सय्यिदुना अबू ख़लफ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ कहते हैं, ''मेरा ख़याल है कि इस की फ़ज़ीलत येह बयान फ़रमाई कि ''येह ज़मीनो आस्मान के दरमियान की हर चीज़ को भर देगा और उस दिन तुझ से अफ़्ज़ल अ़मल किसी का न उठाया जाएगा सिवाए उस शख़्स के कि जो तेरी मिस्ल अ़मल करे।''

एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है, ''और لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहा करो येह किसी गुनाह को बाक़ी न छोड़ेगा और इस जैसा कोई अ़मल नहीं।'' (مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۲۶۹۷۷، ج۱۰، ص۲۶۴)
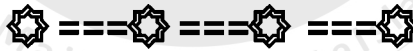
سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ कहने का सवाब

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِیْنَۃُ الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا ج وَالْبٰقِیٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَیْرٌ عِنْدَ رَبِّکَ ثَوَابًا وَّخَیْرٌ اَمَلًا ۝ (پ۱۵،الکہف:۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : माल और बेटे येह जीती दुन्या का सिंगार है और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें इन का सवाब तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह उम्मीद में सब से भली।

(1250)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बाक़ियाते सालिहात (या'नी बाक़ी रहने वाली अच्छी बातों) की कसरत किया करो।'' अ़र्ज़ की गई, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह क्या हैं?'' फ़रमाया, ''اَلْحَمْدُلِلّٰہِ، سُبْحَانَ اللّٰہِ، لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ، اَللّٰہُ اَکْبَرُ और لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، رقم ۸۳۷، ج۲، ص۱۰۲)

(1251)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ पढ़ा करो क्यूं कि येह बाक़ियाते सालिहात (या'नी बाक़ी रहने वाली नेकियां) हैं और गुनाहों को इस तरह झाड़ देती हैं जिस तरह दरख़्त अपने पत्ते झाड़ता है और येह जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی الباقیات الصالحات، رقم ۱۶۸۵۵، ج۱۰، ص۱۰۴)

(1252)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स ज़मीन पर لَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहता है तो उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों।'' एक रिवायत में سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ कहने का भी ज़िक्र है।''

(المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر، باب افضل الذکر لا الہ الا اللہ الخ، رقم ۱۸۹۶، ج۲، ص۱۷۹)

(1253)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ وَلَآاِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ कहता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''मेरे बन्दे ने सरे तस्लीम ख़म कर लिया और सलामती पा गया।''

(المستدرک، کتاب افضل الذکر لا الہ الا اللہ الخ، باب تفسیر سبحان اللہ، رقم ۱۸۹۳، ج۲، ۱۷۸)

(1254)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मुन्ज़िर जुहनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे सब से अफ़्ज़ल कलाम सिखाइये।'' फ़रमाया, ''ऐ अबू मुन्ज़िर ! रोज़ाना सो मरतबा येह कलिमात पढ़ लिया करो ''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ'' उस दिन तुम ही अ़मल के ए'तिबार से सब से अफ़्ज़ल होगे मगर जो तुम्हारी मिस्ल कहे और

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ कसरत से कहा करो क्यूं कि येह सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार हैं और गुनाहों को मिटा देते हैं।'' रावी कहते हैं मेरा ख़याल है कि येह भी इर्शाद फ़रमाया कि ''येह कलिमात जन्नत को वाजिब करने वाले हैं।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی الباقیات الصالحات، رقم ۱۶۸۴۲، ج۱۰، ص۱۰۰)

(1255)...... हज़रते सय्यि-दतुना सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह ! मुझे कुछ कलिमात सिखाइये जो ज़ियादा न हों।'' फ़रमाया, ''दस मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा, ''येह मेरे लिये है।'' और दस मरतबा سُبْحَانَ اللّٰهِ कहो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा, ''येह मेरे लिये है।'' और اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ कहो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा, ''मैं ने तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।'' फिर जब तुम दस मरतबा येही कलिमात दोहराओगी तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा, ''मैं ने तेरी अ़र्ज़ क़बूल फ़रमा ली।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی الباقیات الصالحات، رقم ۱۶۸۶۸، ج۱۰، ص۱۰۹)

(1256)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا एक सुब्ह़ रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुई, ''मुझे ऐसे कलिमात सिखाइये जिन्हें मैं अपनी नमाज़ में पढ़ा करूं।'' फ़रमाया, ''سُبْحَانَ اللّٰهِ, اَللّٰهُ اَكْبَرُ, और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ दस दस मरतबा कहा करो फिर जो चाहो दुआ़ मांगो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा, ''हां ! हां ! (या'नी मैं तुम्हारी दुआ़ क़बूल फ़रमाऊंगा)।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، صلوۃ الاستسقاء، فصل فی القنوت، رقم ۲۰۰۸ ج۳ ص۲۳۰)

(1257)...... हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि ''मैं सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक औ़रत के घर में दाख़िल हुवा। उस के सामने खजूर की गुठलियां या कंकरियां रखी हुई थीं जिन पर वोह तस्बीह़ शुमार कर रही थी।'' फ़रमाया, ''मैं तुझे इस से आसान या अफ़्ज़ल अ़मल बताता हूं।'' फिर इर्शाद फ़रमाया

''سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي السَّمَاءِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ فِي الْاَرْضِ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا بَيْنَ ذٰلِكَ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ''

तरजमा : **अल्लाह** की इतनी पाकियां हैं जितनी उस ने आस्मान में मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई है, **अल्लाह** की इतनी पाकियां हैं जितनी उस ने ज़मीन में मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इतनी पाकियां हैं

जितनी इन दोनों के दरमियान मख़्लूक़ है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इतनी पाकी है जितनी मख़्लूक़ का वोह ख़ालिक़ है।'' और لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ भी इसी तरतीब से और لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه और اَللّٰهُ اَكْبَرُ इसी तरतीब से कहो (या'नी इन सब के साथ مَاعَدَدَ فِى الْاَرْضِ और مَاعَدَ دَ فِى السَّمَاءِ वग़ैरहुमा मिला कर पढ़ा करो)।''

(ابوداؤد، کتاب الوتر، باب التسبیح بالحصی، رقم ۱۵۰۰، ج۲، ص۱۱۵)

(1258)...... उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना जुवैरिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सुब्ह फ़ज्र की नमाज़ के वक़्त मेरे पास से तशरीफ़ ले गए और चाश्त की नमाज़ अदा फ़रमाने के बा'द तशरीफ़ लाए तो मैं उसी जगह बैठी हुई थी। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''तुम उस वक़्त से इसी हालत में बैठी हो जिस पर मैं तुम्हें छोड़ कर गया था?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां!'' तो फ़रमाया, ''मैं ने यहां से जाने के बा'द चार कलिमात तीन तीन मरतबा पढ़े हैं, अगर उन्हें तुम्हारे आज के तमाम अज़्कार के साथ तोला जाए तो मेरे कलिमात ज़ियादा वज़्नी होंगे, वोह कलिमात येह हैं ''سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضَا نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ'' तरजमा : **अल्लाह** तआला की पाकी और ह़म्द है उस की मख़्लूक़ के अ़दद, उस की रिज़ा, उस के अ़र्श के वज़्न और उस के कलिमात की रोशनाई के बराबर।''

एक रिवायत में येह कलिमात बयान किये गए हैं

''سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رِضَا نَفْسِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ مِدَادَ كَلِمَاتِهٖ'' तरजमा : **अल्लाह** की मख़्लूक़ के बराबर **अल्लाह** की पाकी है और उस की रिज़ा के बराबर उस की पाकी है और **अल्लाह** की पाकी उस के अ़र्श के वज़्न के बराबर है, **अल्लाह** के कलिमात की रोशनाई जितनी उस की पाकी है।''

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب تسبیح اول النھار، رقم ۲۷۲۶، ص۱۴۵۹)

जब कि तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत में येह कलिमात यूं बयान किये गए हैं, ''سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ خَلْقِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ خَلْقِهٖ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ خَلْقِهٖ'' तरजमा : **अल्लाह** की मख़्लूक़ के बराबर उस की पाकी है, **अल्लाह** की पाकी उस की मख़्लूक़ के अ़दद के बराबर है, **अल्लाह** की पाकी उस की मख़्लूक़ के बराबर है।'' इसी त़रह़ दीगर कलिमात भी तीन तीन मरतबा ज़िक्र किये हैं।

(1259)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे अपने होंट हिलाते हुए देखा तो फ़रमाया, ''ऐ अबू उमामा! तुम अपने होंट क्यूं हिला रहे हो?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कर रहा हूं।'' तो आप ने मुझ से फ़रमाया, ''क्या मैं तुझे तेरे दिन रात ज़िक्र करने से ज़ियादा और अफ़्ज़ल कलिमात न बताऊं?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह! क्यूं नहीं ज़रूर बताइये।'' इर्शाद फ़रमाया,

''سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَمَا خَلَقَ، سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْءَ مَاخَلَقَ ، سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَ مَافِی الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْءَ مَافِی الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ، سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْءَ مَا اَحْصٰی کِتَابُہٗ، سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَ کُلِّ شَیْءٍ، سُبْحَانَ اللّٰہِ مِلْءَ کُلِّ شَیْءٍ، اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْءَ مَا خَلَقَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا فِی الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْءَ مَا فِی الْاَرْضِ وَالسَّمَاءِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا اَحْصٰی کِتَابُہٗ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ کُلِّ شَیْءٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْءَ کُلِّ شَیْءٍ

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पाकी उस की तमाम मख़्लूक़ के अ़दद के बराबर है, **अल्लाह** की इतनी पाकी है जितनी अश्या को उस की मख़्लूक़ घेरे हुए है, **अल्लाह** की इतनी पाकी है जितनी ज़मीनो आस्मान के दरमियान की मख़्लूक़ की ता'दाद है, **अल्लाह** की इतनी पाकी है जितनी अश्या को ज़मीनो आस्मान के दरमियान की मख़्लूक़ घेरे हुए है, **अल्लाह** की इतनी पाकी है जितनी अश्या उस की किताब में बयान हैं, हर शै के अ़दद के बराबर **अल्लाह** की पाकी है, हर शै के घेराव जितनी **अल्लाह** की पाकी है, **अल्लाह** की ख़ूबियां उस की मख़्लूक़ की ता'दाद के बराबर हैं, **अल्लाह** की इतनी ख़ूबियां हैं जितनी अश्या को उस की मख़्लूक़ घेरे हुए है और **अल्लाह** की इतनी ख़ूबियां हैं जितनी ज़मीनो आस्मान के दरमियान की मख़्लूक़ है, **अल्लाह** की इतनी ख़ूबियां हैं जितनी जगह को ज़मीनो आस्मान की अश्या घेरे हुए हैं, **अल्लाह** की इतनी ख़ूबियां है जितनी उस की किताब में बयान हैं और **अल्लाह** की ह़म्द है हर शै के अ़दद जितनी और **अल्लाह** की ह़म्द है हर शै के घेराव जितनी ।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، رقم ۸۲۷، ج ۲، ص ۹۸)

एक रिवायत में है, ''क्या मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न बताऊं कि जब तुम उन्हें पढ़ो फिर दिन रात ज़िक्र करते रहो तब भी इन के अज्र तक न पहुंच सको ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर बताइये ।'' फ़रमाया, ''اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا اَحْصٰی کِتَابُہٗ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا فِیْ کِتَابِہٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ مَا اَحْصٰی خَلْقُہٗ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْءَ مَا فِیْ خَلْقِہٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ مِلْءَ سَمٰوَاتِہٖ وَاَرْضِہٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَدَدَ کُلِّ شَیْءٍ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ

तरजमा : **अल्लाह** की इतनी ख़ूबियां हैं जितनी अन्वाअ़ पर उस की किताब मुश्तमिल है और **अल्लाह** की इतनी ख़ूबियां जितनी उस की किताब में हैं और **अल्लाह** की ख़ूबियां हैं जितनी अश्या को उस की मख़्लूक़ घेरे है और **अल्लाह** को ह़म्द है इतनी जितनी अश्या को उस की मख़्लूक़ घेरे हुए है और **अल्लाह** को ह़म्द है जितनी जगह को ज़मीनो आस्मान घेरे हुए है और **अल्लाह** को ह़म्द है हर शै की ता'दाद के बराबर और हर शै पर **अल्लाह** का शुक्र है ।'' इसी त़रह़ तस्बीह़ और तक्बीर भी कहो (या'नी سُبْحَانَ اللّٰہِ عَدَدَ مَا اَحْصٰی کِتَابُہٗ . اَللّٰہُ اَکْبَرُ عَدَدَ مَا اَحْصٰی کِتَابُہٗ आख़िर तक कहो) ।'' (المعجم الکبیر، رقم ۸۱۲۲، ج ۸، ص ۲۹۲)

(1260)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने येह कहा **اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ تَوَاضَعَ کُلُّ شَیْءٍ لِعَظَمَتِہٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ ذَلَّ کُلُّ شَیْءٍ لِعِزَّتِہٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ خَضَعَ کُلُّ شَیْءٍ لِمُلْکِہٖ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ الَّذِیْ اسْتَسْلَمَ کُلُّ شَیْءٍ لِقُدْرَتِہٖ**

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तमाम ख़ूबियां हैं जिस की अ़-ज़मत के आगे हर शै सर निगूं है और उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं जिस की इ़ज़्ज़त के आगे तमाम चीज़ें ज़लील हैं और तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की हु़कूमत के सामने हर शै सर झुकाए है और तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की कु़दरत के सामने हर शै सर ख़मीदा है।''

और येह कलिमात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अज्रो सवाब की त़लब में कहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक हज़ार नेकियां लिखेगा और उस के एक हज़ार द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों को क़ियामत तक उस के लिये इस्तिग़फ़ार करने पर मुक़र्रर फ़रमाएगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی الحمد، رقم ۱۶۸۹۱، ج ۱۰، ص ۱۱۶)

(1261)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब आप दिन या रात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत का ह़क़ अदा करना चाहें तो येह कह लिया करें **اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا کَثِیْرًا خَالِدًا مَعَ خُلُوْدِکَ وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَّا مُنْتَھٰی لَہٗ دُوْنَ عِلْمِکَ وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَّا مُنْتَھٰی لَہٗ دُوْنَ مَشِیْئَتِکَ وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَّا جَزَاءَ لِقَائِلِہٖ اِلَّا رِضَاکَ**

तरजमा : ऐ **अल्लाह** तेरे लिये बहुत सी हमेशा रहने वाली बहुत ख़ूबियां हैं जो तेरे वुजूद तक तेरे साथ हैं और तेरे लिये ऐसी ख़ूबी है जिस की तेरे इ़ल्म के इ़लावा कोई इन्तिहा नहीं और तेरे लिये ऐसी ख़ूबी है जिस की इन्तिहा तेरी मशिय्यत के इ़लावा कुछ नहीं और तेरे लिये ऐसी ह़म्द है जिस के क़ाइल की जज़ा तेरी रिज़ा के इ़लावा कुछ नहीं।''

(شعب الایمان، باب فی تعدید نعم اللہ عزوجل وشکرھا، رقم ۴۳۸۹، ج ۴، ص ۹۵)

(1262)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक ह़ल्के़ में बैठा हुवा था कि एक शख़्स आया और اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ कहा तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम के जवाब में وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ फ़रमाया, जब वोह शख़्स बैठ गया तो उस ने कहा,

''اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا طَیِّبًا مُّبَارَكًا فِیْهِ كَمَا یُحِبُّ رَبُّنَا اَنْ یُّحْمَدَ وَیَنْبَغِیْ لَهٗ'' तरजमा : **अल्लाह** के लिये तमाम पाकीज़ा ब-र-कत वाली ख़ूबियां हैं जैसा कि हमारा रब ता'रीफ़ पसन्द फ़रमाता है और जो उस के शायाने शान हैं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया, ''तुम ने अभी क्या कहा ?'' तो उस शख़्स ने जो कलिमात कहे थे उन्हें दोहरा दिया। इस पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ज़ाते मुबा-रका की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है दस फ़िरिश्ते इन कलिमात को लिखने के लिये लपके कि इन कलिमात को कैसे लिखें ? यहां तक कि वोह इन्हें उठा कर **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह में ले गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, ''इन्हें उसी त़रह़ लिखो जिस त़रह़ मेरे बन्दे ने येह कलिमात कहे थे।'' (صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، رقم ۸۴۲، ج۲، ص۱۰۴)

(1263)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें बयान फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एक बन्दे ने अ़र्ज़ किया ''یَا رَبِّ لَکَ الْحَمْدُ کَمَا یَنْبَغِیْ لِجَلَالِ وَجْهِکَ وَعَظِیْمِ سُلْطَانِکَ'' या'नी : या रब ! तेरे लिये वैसी ह़म्द है जैसी तेरे जलाल और तेरी अ़ज़ीम सल्त़नत के शायाने शां है।''

तो दो फ़िरिश्ते न जान पाए कि इन्हें किस त़रह़ लिखें वोह इन कलिमात को ले कर आस्मान की त़रफ़ परवाज़ कर गए, फिर अ़र्ज़ किया, ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे बन्दे ने कुछ कलिमात कहे हैं हम नहीं जानते कि इन्हें कैसे लिखें।'' ''तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दे के कहे हुए कलिमात के बारे में ज़ियादा जानने के बा वुजूद फ़रमाया कि ''मेरे बन्दे ने क्या कहा ?'' दोनों फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ किया, ''या रब ! उस ने कहा یَا رَبِّ لَکَ الْحَمْدُ کَمَا یَنْبَغِیْ لِجَلَالِ وَجْهِکَ وَعَظِیْمِ سُلْطَانِکَ ''। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों से फ़रमाया, ''तुम दोनों इन कलिमात को इसी त़रह़ लिख लो यहां तक कि जब मेरा बन्दा मुझ से मुलाक़ात करेगा तो मैं उसे इन कलिमात का अज्र दूंगा।'' (سنن ابن ماجه، کتاب الادب، باب فضل حامدین، رقم ۳۸۰۱، ج۴، ص۲۴۸)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ पढ़ने का सवाब

(1264)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ पढ़ा करो क्यूं कि येह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।''

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء باب استحباب خفض الصوت بالذکر، رقم ۲۷۰۴، ص۱۴۵۰)

(1265)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े के बारे में न बताऊं?'' अ़र्ज़ किया, ''वोह क्या है?'' इर्शाद फ़रमाया, ''لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی لاحول ولاقوۃ الا باللہ، رقم ۱۶۸۹۷، ج۱۰، ص۱۱۸)

(1266)...... हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मेरे वालिद साहिब ने मुझे सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करने के लिये भेजा। जब मैं दो रक्अ़तें अदा कर चुका तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे पास तशरीफ़ लाए और मुझे अपने पाउं से हलकी सी ठोकर रसीद की और फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े के बारे में न बताऊं?'' मैं ने अ़र्ज़ किया ''ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया, ''वोह لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ है।''

(المستدرک، کتاب الادب، باب النھی عن تعاطی السف مسلوہ، رقم ۷۸۵۷، ج۵، ص۴۱۳)

(1267)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''ऐ अबू ज़र! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में न बताऊं?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर बताइये।'' इर्शाद फ़रमाया, ''वोह لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب ماجاء فی لاحول ولاقوۃ الا باللہ، رقم ۳۸۲۵، ج۴، ص۲۶۰)

(1268)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ की कसरत किया करो क्यूं कि येह जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।''

हज़रते सय्यिदुना मक्हूल رَحِمَہُ اللّٰہ फ़रमाते हैं, ''जिस ने لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ وَلَا مَنْجَاءَ مِنَ اللّٰہِ اِلَّا اِلَیْہِ कहा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर मुसीबतों के सत्तर दरवाज़े बन्द फ़रमा देगा जिन में सब से छोटी मुसीबत फ़क्र है।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें एक ऐसा कलिमा न सिखाऊं जो अ़र्श के नीचे जन्नत के ख़ज़ानों में से एक है, तुम لَا حَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ पढ़ोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''मेरे बन्दे ने सरे तस्लीम ख़म कर लिया और नजात पा गया।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा ! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में न बताऊं ?'' मैं ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया, ''لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ पढ़ा करो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा मेरे बन्दे ने सरे तस्लीम ख़म कर लिया।''

एक रिवायत में है कि ताजदारे रिसालत, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! क्या मैं तुम्हें जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाने के बारे में न बताऊं ?'' मैं ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया, ''لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّابِاللّٰہِ وَلَا مَلْجَاً وَلَا مَنْجَاءَ مِنَ اللّٰہِ اِلَّا اِلَیْہِ पढ़ा करो।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکروالدعاء، الترغیب فی قول لاالہ الااللہ..الخ، رقم ۲، ج۲، ص۲۹۰)

(1269)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ पढ़ा तो येह (उस के लिये) निनानवे बीमारियों की दवा है इन में सब से हलकी बीमारी रन्जो अलम है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الذکروالدعاء، الترغیب فی اذکارتقال باللیل والنہار، رقم ۸، ج۲، ص۲۹۲)

(1270)...... हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने कोई ने'मत अता फ़रमाई फिर वोह बन्दा उस ने'मत को बाक़ी रखना चाहता हो तो उसे चाहिये कि لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ की कसरत करे।'' (المعجم الکبیر، رقم ۸۵۹، ج۱۷، ص۳۱۰)

(1271)...... हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मे'राज की रात आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के क़रीब से गुज़रे तो उन्हों ने पूछा, ''ऐ जिब्रईल ! तुम्हारे साथ कौन है।'' उन्हों ने अर्ज़ किया, ''येह मुहम्मद (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) हैं।'' हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अर्ज़ किया, ''ऐ मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अपनी उम्मत को जन्नत के पौदों में इज़ाफ़ा करने का हुक्म दीजिये क्यूं कि जन्नत की मिट्टी पाकीज़ा और ज़मीन वसीअ है।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि, ''जन्नत के पौदे क्या हैं ?'' हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने जवाब दिया, ''لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ (पढ़ना)।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابوایوب الانصاری، رقم ۲۳۶۱۱، ج۹، ص۱۴۱)

(1272)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जन्नत के पौदों में इज़ाफ़ा करो क्यूं कि उस का पानी मीठा और मिट्टी पाकीज़ा है, लिहाज़ा उस के पौदों में इज़ाफ़ा करो।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जन्नत के पौदे क्या हैं ?'' फ़रमाया, ''مَاشَاءَ اللّٰہُ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّابِاللّٰہِ।'' (طبرانی کبیر، رقم ۱۳۳۵۴، ج۱۲، ص۲۷۹)

सुब्ह़ व शाम पढ़ी जाने वाली सूरतों और आयात का सवाब

(1273)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''हमारा एक गोदाम था जिस में हम खजूरें ख़ुश्क किया करते थे। जब मैं ने देखा कि उस में कमी आती जा रही है तो एक रात मैं ने पहरा दिया तो मैं ने बालिग़ लड़के की मिस्ल एक जानवर देखा। मैं ने उसे सलाम किया तो उस ने सलाम का जवाब दिया फिर मैं ने पूछा, ''तुम जिन्न हो या इन्सान ?'' उस ने कहा, ''जिन्न हूं।'' मैं ने कहा, ''अपना हाथ मुझे दिखाओ।'' मैं ने देखा कि उस का हाथ कुत्ते के पन्जे की त़रह़ है और उस पर बाल हैं। मैं ने पूछा ''क्या जिन्न ऐसे ही होते हैं ?'' उस ने कहा, ''आप तो जानते ही हैं कि मुझ से त़ाक़त वर जिन्न भी मौजूद हैं।'' फिर मैं ने पूछा, ''तुम मेरी खजूरें क्यूं चोरी करते हो ?'' उस ने कहा, ''मुझे पता चला था कि आप स-दक़े को पसन्द करते हैं लिहाज़ा ! मैं ने आप के ग़ल्ले में से ही लेना शुरूअ़ कर दिया।''

मैं ने उस से पूछा, ''कौन सी चीज़ हमें तुम्हारे शर से बचा सकती है ?'' उस ने कहा, ''आ-यतुल कुरसी, जो शख़्स शाम को इसे पढ़ेगा वोह सुब्ह़ तक हम (या'नी जिन्नात) से मह़फ़ूज़ रहेगा और जो सुब्ह़ को पढ़ेगा वोह शाम तक हम से बचा रहेगा।'' फिर जब सुब्ह़ हुई तो मैं ने उसे छोड़ दिया और बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ सुनाया तो आप ने फ़रमाया, ''उस ख़बीस ने बिल्कुल सच कहा।'' (المعجم الكبير، رقم ۵۴۱، ج۱، ص۲۰۱)

(1274)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स सुब्ह़ के वक़्त येह कलिमात पढ़े तो दिन में रह जाने वाली कमी पूरी हो जाएगी और जो शाम के वक़्त येह कलिमात पढ़े तो रात में रह जाने वाली कमी पूरी हो जाएगी,

فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِیْنَ تُمْسُوْنَ وَحِیْنَ تُصْبِحُوْنَ ۝ وَلَهُ الْحَمْدُ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِیًّا وَّحِیْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝ یُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَیُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ وَیُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَاؕ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝ (پ۲۱، الروم: ۱۷، ۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह़ हो और उसी की ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में और कुछ दिन रहे और जब तुम्हें दो पहर हो वोह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता है उस के मरे पीछे और यूंही तुम निकाले जाओगे।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح، رقم ۵۰۷۶، ج۴، ص۴۱۴)

(1275)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने पूरी सूरए दुख़ान और حٰمٓ غافر की इब्तिदाई

आयात وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ तक (या'नी सूरए मुअमिन की इब्तिदाई तीन आयात) और आ–यतुल कुरसी शाम के वक़्त पढ़ीं, सुब्ह तक आफ़ातो बलिय्यात से महफ़ूज़ रहेगा और जिस ने सुब्ह के वक़्त पढ़ीं शाम तक महफ़ूज़ हो जाएगा।'' (الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، باب فی آیات واذکار یقولھا الخ، رقم ۲۱، ج ۱، ص ۲۵۹)

(1276)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ–लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने सुब्ह के वक़्त तीन मरतबा ''اَعُوۡذُ بِاللّٰہِ السَّمِیۡعِ الۡعَلِیۡمِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ'' तरजमा : मैं सुनने वाले इल्म वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की शैत़ान मरदूद से पनाह त़लब करता हूं।'' और सूरए ह़श्र की आख़िरी तीन आयात पढ़ीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सत्तर हज़ार फ़िरिश्तों को शाम तक उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करने पर मुक़र्रर फ़रमा देगा और अगर शाम के वक़्त पढ़े तो उस के लिये सुब्ह तक येही फ़ज़ीलत है।'' (سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ۲۲، رقم ۲۹۳۱، ج ۴، ص ۴۲۳)

(1277)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि एक बारिश वाली तारीक रात में हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़ अदा करने के लिये निकले। जब हम मक्की म–दनी सुल्त़ान, रह़मते आ–लमिय्यान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचे तो आप ने हम से फ़रमाया, ''पढ़ो।'' मैं ने कुछ न पढ़ा तो फिर फ़रमाया, ''पढ़ो।'' मैं ख़ामोश रहा। आप ने दोबारा फ़रमाया, ''पढ़ो।'' तो मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या पढ़ूं ?'' फ़रमाया, ''सुब्ह व शाम قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ और मऊ़–ज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) तीन तीन मरतबा पढ़ लिया करो येह तुम्हें हर चीज़ से किफ़ायत करेंगी।''

(سنن ابی داود، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ۵۰۸۲، ج ۴، ص ۴۱۶)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
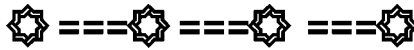
सुब्ह़ व शाम के अज़्कार का सवाब

(1278)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इन्सान के दो मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में दिन और रात में लिखे गए आ'माल उठा कर ले जाते हैं तो जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ सह़ीफ़े के अव्वल व आख़िर में भलाई देखता है तो फ़िरिश्तों से फ़रमाता है मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपने बन्दे के सह़ीफ़े के दोनों किनारों के दरमियान जो कुछ है उसे मुआफ़ कर दिया।'' (سنن الترمذی، کتاب الجنائز، باب۹، رقم ۹۸۳، ج۲، ص۲۹۵)

(1279)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने दिन की इब्तिदा किसी अच्छे काम से की और अपने दिन को अच्छे काम ही पर ख़त्म किया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा, ''इन दोनों के दरमियान जो गुनाह हैं उन्हें मत लिखो।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ۱۶۹۸۳، ج۱۰، ص۱۴۸)

(1280)...... ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार है

''اَللّٰھُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَ اَنَا عَبْدُکَ وَ اَنَا عَلٰی عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَ اَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَا غْفِرْلِیْ اِنَّہٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ''

तरजमा : ऐ **अल्लाह** तू मेरा परवरद गार है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तूने मुझे पैदा फ़रमाया है और मैं तेरा बन्दा हूं और मैं जिस क़दर इस्तिताअ़त रखूं तेरे अ़हद और वा'दे पर हूं, मैं अपने अ़मल के शर से तेरी पनाह चाहता हूं, मैं तेरी उस ने'मत पर इक़रार करता हूं जो तूने मुझ पर की है और अपने गुनाह का भी ए'तिराफ़ करता हूं तो मेरी बख़्शिश फ़रमा क्यूं कि तू ही गुनाह मिटाता है।'' जिस ने इसे शाम के वक़्त ईमान व यक़ीन के साथ पढ़ा फिर उस का उस रात में इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा और जिस ने सुब्ह़ के वक़्त इसे ईमान व यक़ीन के साथ पढ़ा फिर उसी दिन उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।'' (صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا اصبح، رقم ۶۳۲۳، ج۴، ص۱۸۹)

(1281)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सुब्ह़ के वक़्त तीन मरतबा येह पढ़ा

اَللّٰھُمَّ لَکَ الْحَمْدُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ رَبِّیْ وَاَنَا عَبْدُکَ اٰمَنْتُ بِکَ مُخْلِصًا لَّکَ دِیْنِیْ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ عَلٰی'' عَھْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَتُوْبُ اِلَیْکَ مِنْ سَیِّیءِ عَمَلِیْ وَاَسْتَغْفِرُکَ لِذُنُوْبِیَ الَّتِیْ لَا یَغْفِرُھَا اِلَّا اَنْتَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** तेरे लिये हम्द है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तू मेरा रब है और मैं तेरा बन्दा हूं मैं तेरे दीन के बारे में मुख़्लिस हो कर तुझ पर ईमान लाया अब मैं जिस क़दर इस्तिताअत रखूं तेरे अ़हद और वा'दे पर हूं, मैं तेरी बारगाह में अपने बुरे आ'मल से तौबा करता हूं और अपने उन गुनाहों की बख़्शिश चाहता हूं जिन्हें तेरे सिवा कोई नहीं मिटा सकता ।''

अगर उस का उसी दिन इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा और अगर शाम के वक़्त तीन मरतबा पढ़ा फिर उस का उसी रात में इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।

फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस बात पर ऐसी क़सम उठाई जो किसी और काम पर न उठाते थे और इर्शाद फ़रमाया कि ''ख़ुदा की क़सम ! बन्दा अगर किसी दिन में इसे पढ़े फिर उस दिन उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा और अगर रात में इसे पढ़े और उस रात में उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۸۰۲، ج۸، ص۱۹۶)

(1282)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने ऐसा बिच्छू कभी नहीं देखा जिस ने मुझे गुज़श्ता रात काटा था ।'' सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''तुम ने शाम के वक़्त ''اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ'' तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ के शर से कामिल कलिमात की पनाह चाहता हूं ।'' क्यूं न पढ़ लिया कि बिच्छू तुम्हें कोई नुक़्सान न पहुंचाता ।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الاذکار، رقم ۱۰۱۶، ج۲، ص۱۸۰)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने शाम के वक़्त तीन मरतबा اَعُوْذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّمَا خَلَقَ पढ़ा उसे उस रात कोई आफ़त नुक़्सान न पहुंचा सकेगी ।''

हज़रते सय्यिदुना सुहैल عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि ''हमारे ज़माने के लोग येह दुआ़ सीखा करते और हर रात इसे पढ़ा करते थे, एक मरतबा एक लड़की को बिच्छू ने काट लिया मगर उसे कोई तक्लीफ़ महसूस न हुई ।'' (الترغیب والترھیب، کتاب النوافل، باب فی آیات واذکار یقولھا الخ، رقم ۶، ج۱، ص۲۵۳)

(1283)...... हज़रते सय्यिदुना अबान बिन उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बन्दा हर दिन की सुब्ह और हर रात की शाम में तीन तीन मरतबा येह पढ़ेगा, तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचा सकेगी ''بِسْمِ اللّٰہِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِہٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَاءِ وَھُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ'' तरजमा : **अल्लाह** के नाम से जिस के नाम की मौजूदगी में ज़मीनो आस्मान में कोई शै नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती और वोह सुनने, जानने वाला है ।''

हज़रते सय्यिदुना अबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ालिज में मुब्तला हुए तो एक शख़्स उन की तरफ़ तअ़ज्जुब से देखने लगा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''क्या देख रहे हो ? ह़दीस तो इसी त़रह़ है जैसे मैं ने तुम्हें बयान की मगर उस दिन तक़्दीर के लिखे को पूरा करने की वजह से इस दुआ़ को न पढ़ सका।'' (سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی الدعاء اذا اصبح واذا امسی، رقم ۳۳۹۹، ج۵)

(1284)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सुब्ह़ और शाम के वक़्त सो सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ा क़ियामत के दिन उस से अफ़्ज़ल अ़मल ले कर आने वाला कोई न होगा मगर वोह जो उस की मिस्ल कहे या उस से ज़ियादा पढ़े।''

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل التھلیل والتسبیح، رقم ۲۶۹۲، ص۱۴۴۵)

एक रिवायत में سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ने का तज़्किरा है। जब कि एक रिवायत में है कि ''पढ़ने वाले की मग़्फ़िरत कर दी जाती है अगर्चे उस के गुनाह समुन्दर की झाग से ज़ियादा हों।''

(1285)...... शहज़ादिये सरवरे कौनैन हज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें ता'लीम देते हुए इर्शाद फ़रमाया करते थे कि ''सुब्ह़ के वक़्त येह पढ़ा करो

''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ مَاشَاءَ اللّٰہُ کَانَ وَمَالَمْ یَشَأْ لَمْ یَکُنْ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰہَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ وَّاَنَّ اللّٰہَ قَدْ اَحَاطَ بِکُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا''

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है और तमाम ख़ूबियां उसी के लिये हैं और नेकी करने की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की कुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो चाहता है वोह हो कर रहता है और जो नहीं चाहता वोह नहीं होता मुझे यक़ीन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर शै पर क़ादिर है और **अल्लाह** तआ़ला का इ़ल्म हर शै को घेरे हुए है।'' जो इसे सुब्ह़ के वक़्त पढ़ेगा शाम तक मह़फ़ूज़ कर दिया जाएगा और जो इसे शाम के वक़्त पढ़ेगा सुब्ह़ तक मह़फ़ूज़ कर दिया जाएगा।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح، رقم ۵۰۷۵، ج۴، ص۴۱۴)

(1286)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से कोई शख़्स रोज़ाना सुब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक हज़ार नेकियां करना न छोड़े, वोह सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ लिया करे क्यूं कि येह एक हज़ार नेकियां हैं। ख़ुदा की क़सम ! अगर्चे उस के उस दिन में एक हज़ार गुनाह भी हो जाएं तब भी जो अच्छा काम उस ने किया है, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो वोह उन गुनाहों से बहुत ज़ियादा होगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ۱۶۸۷۷، ج۱۰، ص۱۱۲)

(1287)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सुब्ह के वक़्त एक हज़ार मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ पढ़ा उस ने अपनी जान को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से ख़रीद लिया और वोह शाम के वक़्त अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का आज़ाद कर्दा बन्दा होगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ١٦٩٩٠، ج١٠، ص١٥١)

(1288)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने एक दिन में सो मरतबा येह कलिमात पढ़े لَا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِ وَیُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ'' तरजमा : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है, सब ख़ूबियों सराहा, जिलाता और मारता है, और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है। तो येह उस के लिये दस ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर हैं, उस के लिये सो नेकियां लिखी जाएंगी और सो गुनाह मिटा दिये जाएंगे और वोह उस दिन शाम तक शैतान से हिफ़ाज़त में रहेगा और उस दिन उस से अफ़्ज़ल अमल वाला कोई न होगा मगर जो उस से ज़ियादा ता'दाद में पढ़े।'' (صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ٢٦٩١، ص١٤٤٥)

(1289)...... हज़रते सय्यिदुना अबू अयाश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सुब्ह के वक़्त لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ पढ़ा तो येह उस के लिये औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام से एक ग़ुलाम आज़ाद करने के बराबर होगा और उस के लिये इस के इवज़ दस नेकियां लिखी जाएंगी और उस के दस गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस के दस द-रजात बुलन्द कर दिये जाएंगे और वोह शाम तक शैतान से हिफ़ाज़त में रहेगा और अगर शाम के वक़्त पढ़ा तो उसे सुब्ह तक येही फ़ज़ीलत हासिल होगी।''

हज़रते सय्यिदुना हम्माद عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत की तो अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अबू अयाश आप صَلَّى الله عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़ुलां फ़ुलां बात रिवायत करते हैं।'' तो म-दनी आक़ा صَلَّى الله تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अबू अयाश सच कहते हैं।'' (سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب مایقول اذا اصبح، رقم ٥٠٧٧، ج٤، ص٤١٤)

(1290)...... हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के

लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सुब्ह़ के वक़्त لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ दस मरतबा पढ़ा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और येह उस के लिये दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर है। और **अल्लाह** तआला उसे शैतान से पनाह अ़ता फ़रमाएगा और जिस ने इसे रात के वक़्त पढ़ा उस के लिये भी येही फ़ज़ीलत है।''

एक रिवायत में ''وَلَهُ الْحَمْدُ'' के बा'द ''يُحْيِ وَيُمِيْتُ'' का इज़ाफ़ा भी है। और येह भी है कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये हर मरतबा पढ़ने पर दस नेकियां लिखता है और उस के दस गुनाह मिटा देता है, उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमा देता है और येह उस के लिये दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर हैं और येह उस के लिये दिन की इब्तिदा से ले कर इन्तिहा तक मुसल्लह़ मुह़ाफ़िज़ है और उस दिन उस से अफ़्ज़ल अ़मल कोई नहीं कर सकेगा और अगर शाम के वक़्त पढ़ेगा तो सुब्ह़ तक येही फ़ज़ीलत है।''

(مسند احمد بن حنبل، حدیث ابی ایوب الانصاری، رقم ۲۳۶۲۷، ج۹، ص۱۴۴)

(1291)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबान मुह़ारिबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसल्मान बन्दा सुब्ह़ो शाम पढ़ेगा ''رَبِّيَ اللّٰهُ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا وَّاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ'' तरजमा : मेरा रब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ है मैं उस का शरीक नहीं ठहराता और मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** तआला के सिवा कोई मा'बूद नहीं।'' तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के शाम तक के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और अगर शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، باب فی آیات واذکار یقولھا الخ، رقم ۳۲، ج۱، ص۲۶۲)

(1292)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जिस ने सुब्ह़ व शाम सात सात मरतबा पढ़ा ''حَسْبِيَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ'' तरजमा : मुझे **अल्लाह** काफ़ी है उस के इलावा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, मैं उसी पर तवक्कुल करता हूं और वोही अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है।'' **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की तमाम ह़क़ीक़ी और ख़याली परेशानियों में किफ़ायत करेगा।''

(سنن ابی داود، کتاب الأدب، باب مایقول اذا اصبح وامسی، رقم ۵۰۸۱، ج۴، ص۴۱۶)

(1293)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स सुब्ह़ या शाम के वक़्त एक मरतबा येह पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُكَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِكَ وَمَلَائِكَتِكَ وَجَمِيْعَ خَلْقِكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझे, तेरे अ़र्श के ह़ामिलीन, तेरे फ़िरिश्तों और तेरी तमाम मख़्लूक़ को इस बात पर गवाह बना कर सुब्ह़ करता हूं कि तू ही **अल्लाह** है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तेरे बन्दे और रसूल हैं।'' तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के चौथाई ह़िस्से को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा, और जो दो मरतबा पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के निस्फ़ जिस्म को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा, और जो तीन मरतबा पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के तीन चौथाई ह़िस्से को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा, और जो चार मरतबा पढ़े तो उसे मुकम्मल जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح، رقم ۵۰۷۰، ج۴، ص۴۱۲)

एक रिवायत में وَحۡدَکَ لَاشَرِیۡکَ لَکَ पढ़ने का भी ज़िक्र है।

और एक रिवायत में है कि ''उस के उस दिन के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं और अगर शाम को पढ़े तो उस के उस रात के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।''

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ۸۱، رقم ۳۵۱۱، ج۵، ص۳۰۰)

(1294)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुनैज़िर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो सुब्ह़ के वक़्त येह पढ़े رَضِیۡتُ بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالۡاِسۡلَامِ دِیۡنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَبِیًّا'' तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के रब होने और इस्लाम के दीन होने और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राज़ी हूं।'' तो मैं उसे अपने हाथ से पकड़ कर जन्नत में दाख़िल करने की ज़मानत देता हूं।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ۱۷۰۰۵، ج۱۰، ص۱۵۷)

(1295)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि मैं ह़िम्स की मस्जिद में बैठा हुवा था कि एक शख़्स वहां से गुज़रा तो लोगों ने मुझे बताया कि येह सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ादिम हैं। येह सुन कर मैं उन के पीछे चल दिया और उन से अ़र्ज़ किया कि ''मुझे ऐसी ह़दीस सुनाइये जो आप ने ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हो।'' तो उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : ''जिस ने सुब्ह़ व शाम رَضِیۡنَا بِاللّٰہِ رَبًّا وَّبِالۡاِسۡلَامِ دِیۡنًا وَّبِمُحَمَّدٍ رَّسُوۡلًا कहा तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उसे राज़ी कर दे।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ۵۰۷۲، ج۴، ص۴۱۳)

और तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत में ''وَبِمُحَمَّدٍ نَبِیًّا'' का ज़िक्र है।''

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء اذا اصبح واذا امسی، رقم ۳۴۰۰، ج۵، ص۲۵۱)

(1296)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ग़न्नाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे

अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सुब्ह़ के वक़्त कहा ''اَللّٰھُمَّ مَا اَصْبَحَ بِیْ مِنْ نِّعْمَۃٍ اَوْبِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِکَ فَمِنْکَ وَحْدَکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ فَلَکَ الْحَمْدُ وَلَکَ الشُّکْرُ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे या तेरी मख़्लूक़ में से जिसे भी कोई ने'मत मिली वोह तेरी ही जानिब से मिली है तू तन्हा है तेरा कोई शरीक नहीं लिहाज़ा तेरे ही लिये ह़म्द और तेरे ही लिये शुक्र है।'' तो उस ने उस दिन का शुक्र अदा कर दिया और उस ने शाम के वक़्त कहा तो उस ने अपनी उस रात का शुक्र अदा कर दिया।'' (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ۵۰۷۳، ج۴، ص۴۱۳)

(1297)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सुब्ह़ व शाम के वक़्त येह कलिमात पढ़ना नहीं छोड़ते थे,

''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَۃَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَۃَ فِیْ دِیْنِیْ وَدُنْیَایَ وَاَھْلِیْ وَمَالِیْ اَللّٰھُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِیْ وَ اٰمِنْ رَوْعَاتِیْ اَللّٰھُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَیْنِ یَدَیَّ وَمِنْ خَلْفِیْ وَعَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ فَوْقِیْ وَمِنْ تَحْتِیْ وَاَعُوْذُ بِعَظْمَتِکَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से दुन्या और आख़िरत में अ़फ़्वो दर गुज़र और आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से अपने दीन व दुन्या और अहलो माल में अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत मांगता हूं ऐ **अल्लाह** ! मेरी पर्दा पोशी फ़रमा और मुझे डर और ख़ौफ़ से अम्न अ़ता फ़रमा, ऐ **अल्लाह** ! मेरे आगे, पीछे, दाएं, बाएं ऊपर और नीचे से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा और मैं तेरी अ़-ज़मत की इस बात से पनाह चाहता हूं कि मुझे नीचे से धोका दिया जाए।''

ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि ''नीचे से धोका दिया जाने से मुराद ख़सफ़ या'नी ज़मीन में धंसना है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب یدعو بہ الرجل اذا اصبح واذا امسی، رقم ۳۸۷۱، ج۴، ص۲۸۵)

(1298)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने सुब्ह़ व शाम सो सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ पढ़ा तो वोह सो ह़ज करने वाले की त़रह़ है और जिस ने सुब्ह़ शाम सो सो मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ कहा वोह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में मुजाहिदीन को सो घोड़े देने वाले की त़रह़ है या फ़रमाया कि सो मरतबा जिहाद करने वाले की त़रह़ है और जिस ने सुब्ह़ शाम सो सो मरतबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ पढ़ा वोह औलादे इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام से सो गुलाम आज़ाद करने वाले की त़रह़ है और जिस ने सुब्ह़ शाम सो सो मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहा तो उस दिन उस से ज़ियादा अ़मल करने वाला कोई न होगा मगर जो उस की मिस्ल कहे या उस से ज़ियादा मरतबा कहे।'' (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب ۶۳، رقم ۳۴۸۲، ج۵، ص۲۸۸)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने सूरज तुलूअ़ होने से पहले और गुरूब होने से पहले सो सो मरतबा سُبْحَانَ اللّٰہِ कहा तो वोह सो क़ुरबानियां करने वाले से अफ़्ज़ल है और जिस ने सूरज के तुलूअ़ और गुरूब होने

से पहले सो मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा तो वोह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सो घोड़े देने वाले से अफ़्ज़ल है और जिस ने सूरज के तुलूअ़ व गुरूब होने से पहले सो मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहा तो येह सो गुलाम आज़ाद करने से अफ़्ज़ल है और जिस ने सूरज के तुलूअ़ और गुरूब होने से पहले सो मरतबा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ कहा तो क़ियामत के दिन उस से अफ़्ज़ल अ़मल ले कर आने वाला कोई न होगा मगर जो उस के मिस्ल कहे या ज़ियादा मरतबा कहे।"

(1299)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें वोह ह़दीसे पाक न सुनाऊं जो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से कई मरतबा सुनी है ?" मैं ने कहा, "ज़रूर सुनाइये।" फ़रमाया, "जिस ने सुब्ह़ व शाम येह कहा "اَللّٰھُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنْتَ تَھْدِیْنِیْ وَاَنْتَ تُطْعِمُنِیْ وَاَنْتَ تَسْقِیْنِیْ وَاَنْتَ تُمِیْتُنِیْ وَاَنْتَ تُحْیِیْنِیْ" तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! तूने मुझे पैदा किया और तूने मुझे हिदायत दी और तू मुझे खिलाता और पिलाता है और मुझे ज़िन्दगी और मौत देने वाला है।" तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो कुछ मांगेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अ़ता फ़रमाएगा।" जब मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मिला तो मैं ने उन से कहा, "क्या मैं तुम्हें वोह हदीसे पाक न सनाऊं जो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से कई मरतबा सुनी है।" तो उन्हों ने कहा, "ज़रूर सुनाइये।" तो मैं ने उन्हें येही ह़दीसे पाक सुनाई तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा कि "मेरे मां बाप रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान ! येह वोह कलिमात हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को अ़ता फ़रमाए थे और मूसा عَلَیْہِ السَّلَام रोज़ाना इन के वसीले से सात मरतबा दुआ़ किया करते थे, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो भी मांगते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अ़ता फ़रमा दिया करता था।" (المعجم الاوسط، رقم ۱۰۲۸، ج۱، ص۲۹۱)

(1300)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से "مَقَالِیْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ" के बारे में पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मुझ से आज तक किसी ने इस के बारे में नहीं पूछा, इस की तफ़्सीर येह है, "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْاَوَّلِ الظَّاھِرِ وَالْبَاطِنِ بِیَدِہِ الْخَیْرُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْر" तरजमा : **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** पाक है और मैं उस की ह़म्द के वसीले से **अल्लाह** से बख़्शिश चाहता हूं नेकी की तौफ़ीक़ और बुराई से बचने की क़ुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है वोह अव्वल है ज़ाहिर है बातिन है तमाम भलाइयां उसी के दस्ते क़ुदरत में हैं वोह ज़िन्दा करता और मारता है और वोह हर शै पर क़ादिर है।"

ऐ उ़स्मान ! जो इसे सुब्ह़ में दस मरतबा पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे छ ख़स्लतें अ़त़ा फ़रमाएगा, पहली : येह कि उसे शैत़ान और उस के लश्कर से बचाएगा, दूसरी : येह कि उसे जन्नत में एक क़िन्त़ार[1] अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा, तीसरी : येह कि जन्नत में उस का द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा, चौथी : येह कि ह़ूरे ईन से उस का निकाह़ कराएगा, पांचवीं : येह कि उसे क़ुरआन, तौरात और इन्जील पढ़ने वाले का सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा, छटी : येह कि ऐ उ़स्मान ! वोह ऐसे ह़ाजी और मो'तमिर (या'नी उ़म्रह करने वाले) की त़रह़ है जिस का ह़ज व उ़म्रह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़बूल फ़रमा लिया है और अगर उस का उस दिन इन्तिक़ाल हो गया तो उस पर शु-हदा की मोहर लगा दी जाएगी।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا اصبح واذا امسی، رقم ۱۷۰۰۰، ج۱۰، ص۱۱۵)

(1301)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने सुब्ह़ व शाम मुझ पर दस दस मरतबा दुरूद पढ़ा क़ियामत के दिन उसे मेरी शफ़ाअ़त ह़ासिल होगी।"

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب یقول اذا اصبح امسی، رقم ۱۷۰۲۲، ج۱۰، ص۱۶۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

=== === ===

....
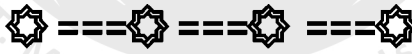
(1)..... **क़िन्त़ार** का मा'ना बहुत माल, बा'ज़ ने फ़रमाया कि बारह हज़ार अशरफ़ियां क़िन्त़ार हैं, बा'ज़ ने फ़रमाया कि बैल की खाल भर सोना बा'ज़ के नज़्दीक सत्तर हज़ार दीनार। ह़क़ येह है कि इस की ह़द मुक़र्रर नहीं, यहां बे शुमार सवाब वाले मुराद हैं। ह़ज़रते मुआ़ज़ इब्ने जबल फ़रमाते हैं कि क़िन्त़ार बारह सो ऊक़िय्या हैं जिन का एक ऊक़िय्या ज़मीन व आस्मान से बढ़ कर है। (मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे मिश्कातुल मसाबीह़, जि. 2 स. 242 मुलख़्ख़सन)

सोते वक़्त बिस्तर पर पहुंच कर पढ़े जाने वाले वज़ाइफ़ का सवाब

(1302)...... हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसलमान बिस्तर पर जाते वक़्त किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कोई एक सूरत पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता उस की हिफ़ाज़त के लिये भेजता है जो उस के बेदार होने तक मूज़ी अश्या से उस की हिफ़ाज़त करता रहता है चाहे वोह जब भी बेदार हो।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث مسند اُوس، رقم ۱۷۱۳۲، ج ۶، ص ۷۹)

(1303)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम अपना पहलू बिस्तर पर रख कर सूरए फ़ातिहा और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ लोगे तो मौत के इलावा हर चीज़ से अमान में आ जाओगे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب یقول اذا آوی الی فراشہ واذا، رقم ۱۷۰۳۰، ج ۱۰، ص ۱۶۵)

(1304)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे र-मज़ान के स-दक़ात की हिफ़ाज़त पर मुक़र्रर फ़रमाया तो एक शख़्स उस में से मुठ्ठियां भर कर ले जाने लगा। मैं ने उसे पकड़ लिया और कहा कि ''मैं ज़रूर तुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ले जाऊंगा।'' उस ने कहा कि ''मैं मोहताज हूं मेरे साथ मेरे अहलो इयाल हैं और मुझ पर क़र्ज़ भी है लिहाज़ा ! मुझे इस की सख़्त हाजत है।'' तो मैं ने उसे छोड़ दिया।

सुब्ह के वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा ! तुम्हारे रात वाले क़ैदी ने क्या किया ?'' मैं ने वाक़िआ बयान किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस ने तुम से झूट बोला है वोह फिर आएगा।'' तो मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमान की वजह से यक़ीन कर लिया कि वोह ज़रूर आएगा। फिर मैं उस की टोह में लग गया वोह आया और उस गन्दुम में से मुठ्ठियां भरने लगा, मैं ने उसे पकड़ लिया फिर मा क़ब्ल की मिस्ल रिवायत बयान की यहां तक कि फ़रमाया : मैं ने उस से कहा कि मैं ज़रूर तुझे बारगाहे रिसालत में पेश करूंगा तू तीसरी मरतबा कह रहा है कि नहीं आऊंगा मगर फिर आ जाता है।'' तो उस ने कहा, ''मुझे छोड़ दो मैं तुम्हें कुछ कलिमात बताता हूं जिन के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें नफ़्अ देगा।'' मैं ने पूछा, ''वोह कलिमात क्या हैं ?'' उस ने कहा, ''जब तुम अपने बिस्तर पर आया करो तो आ-यतुल कुरसी पढ़ लिया करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से तुम्हारे लिये एक मुहाफ़िज़ मुक़र्रर कर दिया जाएगा और शैतान सुब्ह तक तुम्हारे क़रीब न आएगा।'' मैं ने उसे छोड़ दिया।

सुब्ह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''तुम्हारे रात के क़ैदी ने क्या किया ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस ने कहा कि अगर मैं उसे छोड़ दूं तो वोह मुझे कुछ ऐसे कलिमात बताएगा कि जिन के सबब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुझे नफ़्अ़ देगा।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह कौन से कलिमात हैं ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''उस ने मुझे बताया कि जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो आ-यतुल कुरसी पढ़ लिया करो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से तुम्हारे लिये एक मुह़ाफ़िज़ मुक़र्रर कर दिया जाएगा और सुब्ह़ तक शैत़ान तुम्हारे पास न आएगा।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह है तो बड़ा झूटा मगर उस ने तुम से सच कहा है।'' फिर फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा ! क्या तुम जानते हो कि तीन दिन से तुम्हारा मुख़ात़ब कौन था ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''नहीं।'' इर्शाद फ़रमाया, ''वोह शैत़ान था।'' (صحیح بخاری، کتاب الوکالہ، باب اذا وکل رجلا...الخ، رقم ۲۳۱۱، ج۲، ص۸۲)

(1305)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुसब्बिह़ात पढ़ा करते थे और फ़रमाया करते कि ''इन में एक ऐसी आयत है जो हज़ार आयतों से बेहतर है।'' (ابوداؤد، کتاب الادب، باب مایقول عند النوم، رقم ۵۰۵۷، ج۴، ص۴۰۸)

वज़ाह़त :

मुआ़विया बिन सालेह़ कहते हैं कि ''बा'ज़ अहले इल्म के नज़्दीक मुसब्बिह़ात छ सूरतें हैं सूरए ह़दीद, सूरए ह़श्र, सूरए ह़वारिय्यीन (या'नी सूरए सफ़), सूरए जुमुआ़, सूरए तग़ाबुन और سَبِّحِ اسْمَ رَبِّکَ الْاَعْلٰی (या'नी सूरए आ'ला)।''

(1306)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नौफ़िल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ पूरी पढ़ कर सोया करो क्यूं कि येह शिर्क से बराअत है।'' (ابوداؤد، کتاب الادب، باب مایقول عند النوم، رقم ۵۰۵۵، ج۴، ص۴۰۷)

(1307)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अपने बिस्तर पर सोने का इरादा करे फिर अपने दाएं पहलू पर लैट कर सो मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ पढ़े **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त क़ियामत के दिन उस से फ़रमाएगा कि, ''ऐ मेरे बन्दे ! दाईं त़रफ़ से जन्नत में दाख़िल हो जा।'' (جامع الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی سورۃ الاخلاص، رقم ۲۹۰۷، ج۴، ص۴۱۱)

बिस्तर पर आ कर पढ़े जाने वाले वज़ाइफ़ का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

اَلَّذِیْنَ یَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ (پ۴، آل عمران:۱۹۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो **अल्लाह** की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे ।

(1308)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब आदमी बिस्तर पर आता है तो एक फ़िरिश्ता और एक शैत़ान उस के पास आ जाते हैं । फ़िरिश्ता कहता है कि ''अपने दिन का इख़्तिताम किसी अच्छे अ़मल पर करो ।'' और शैत़ान कहता है कि ''अपने दिन का इख़्तिताम किसी बुरे अ़मल पर करो ।'' तो अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र कर के सोता है तो फ़िरिश्ता रात भर उस की ह़िफ़ाज़त करता रहता है फिर जब वोह बेदार होता है तो फ़िरिश्ता कहता है कि ''अपने दिन का आग़ाज़ अच्छे अ़मल से करो ।'' जब कि शैत़ान कहता है कि ''अपने दिन का आग़ाज़ किसी बुरे अ़मल से करो ।'' तो अगर वोह बन्दा येह पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ رَدَّ عَلَیَّ نَفْسِیْ وَلَمْ یُمِتْهَا فِیْ مَنَامِهَا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَاۤ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ كَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ یُحْیِ الْمَوْتٰى وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

तरजमा : तमाम ख़ूबियां उसी **अल्लाह** के लिये हैं जिस ने मेरी जान मुझे लौटा दी और इसे नींद की ह़ालत में मौत न दी, तमाम ख़ूबियां उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो रोके हुए है आस्मानों और ज़मीन को कि जुम्बिश न करें अगर वोह हट जाएं तो उन्हें कौन रोके **अल्लाह** के सिवा बेशक वोह ह़िल्म वाला बख़्शने वाला है, तमाम ख़ूबियां उस **अल्लाह** के शायां हैं जो रोके हुए है आस्मान को कि ज़मीन पर न गिर पड़े मगर उस के हुक्म से, तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं जो मुर्दों को जिलाता है और वोह हर शै पर क़ादिर है ।'' और फिर बिस्तर से गिर कर उस का इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।'' (الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، باب الترغیب فی کلمات...الخ، رقم ۹، ج۱، ص۲۳۵)

(1309)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बा वुज़ू अपने बिस्तर पर आए फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे यहां तक कि उस पर ग़ुनूदगी छा जाए तो रात की जिस घड़ी में वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुन्या व आख़िरत की जो भलाई मांगेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह भलाई अ़त़ा फ़रमा देगा ।'' (ترمذی، کتاب الدعوات، باب(۱۰۱) رقم ۳۵۳۷، ج۵، ص۳۱۱)

(1310)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो मुसल्मान इन पर हमेशगी इख़्तियार करेगा जन्नत में दाख़िल होगा और दोनों बहुत ही आसान हैं जब कि इन पर अ़मल करने वाले निहायत क़लील हैं हर नमाज़ के बा'द اَللّٰہُ اَکْبَرُ ,سُبْحَانَ اللّٰہِ ,اَلْحَمْدُ لِلّٰہ दस दस मरतबा कहे येह ज़बान पर डेढ़ सो हैं और मीज़ान में पन्दरह सो हैं और जब वोह अपने बिस्तर पर जाए तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ,سُبْحَانَ اللّٰہِ तेंतीस तेंतीस मरतबा और اَللّٰہُ اَکْبَرُ चौंतीस मरतबा पढ़ ले येह ज़बान पर सो और मीज़ान में एक हज़ार हैं'' मैं ने कई मरतबा रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह कलिमात अपनी उंगलियों पर शुमार करते देखा । सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह आसान अ़मल करने वाले क़लील (कम) क्यूं हैं ?'' फ़रमाया, ''तुम में से किसी के पास शैत़ान उस के बिस्तर पर आता है और येह कलिमात पढ़ने से पहले उस को सुला देता है और उस की नमाज़ में आता है और येह कलिमात पढ़ने से पहले उसे कोई ह़ाजत याद दिला देता है ।''

(الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، رقم ۵، ج۱، ص ۲۳۳)

(1311)...... हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम में कोई अपने दाएं पहलू पर लैट कर येह कलिमात कहेगा

اَللّٰھُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْکَ وَوَجَّھْتُ وَجْھِی اِلَیْکَ وَاَلْجَأْتُ ظَھْرِیْ اِلَیْکَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْکَ لَا مَلْجَاءَ مِنْکَ اِلَّا اِلَیْکَ اٰوَمِنْ بِکِتَابِکَ وَرَسُوْلِکَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं ने अपनी जान तेरे सिपुर्द की और तेरी जानिब मु–तवज्जेह हुवा और अपनी पीठ तेरे हु़ज़ूर झुका दी और अपना मुआ़–मला तेरे सिपुर्द किया तेरे मुक़ाबले में तेरा ही सहारा है मैं ईमान लाया तेरी किताब और तेरे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ।'' अगर उस का उस रात में इन्तिक़ाल हो गया तो जन्नत में दाख़िल होगा ।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی الدعا...الخ رقم ۳۴۰۶۰، ج۵، ص ۲۵۴)

(1312)...... हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो नमाज़ की त़रह़ वुज़ू कर लिया करो फिर अपने दाएं पहलू पर लैट कर येह दुआ़ पढ़ लो

اَللّٰھُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْکَ وَوَجَّھْتُ وَجْھِی اِلَیْکَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْکَ وَاَلْجَئْتُ ظَھْرِیْ اِلَیْکَ رَغْبَۃً وَّرَھْبَۃً اِلَیْکَ لَامَلْجَأً وَلَامَنْجَاءَ مِنْکَ اِلَّا اِلَیْکَ آمَنْتُ بِکِتَابِکَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ وَبِنَبِیِّکَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने अपनी ज़िन्दगी तेरे ह़वाले की और अपना रुख़ तेरी जानिब फैर दिया और मुआ़–मला तेरे सिपुर्द कर दिया और अपनी पीठ तेरे इन्आ़मात में रग़बत और तेरे अ़ज़ाब से डरते हुए तेरे हुज़ूर झुका दी नजात और तेरे मुक़ाबले में सहारा तेरा ही है मैं तेरी नाज़िल कर्दा किताब और तेरे मब्ऊ़स कर्दा नबी पर ईमान लाया ।'' तो अगर तुम्हारा उस रात इन्तिक़ाल हो गया तो तुम फ़ित़रत पर मरोगे और जब तुम सुब्ह़ करोगे तो भलाई के साथ करोगे और इन कलिमात को अपना आख़िरी विर्द बना लो (या'नी सोने से

पहले पढ़ लिया करो और इस के बा'द कोई गुफ़्त-गू किये बिग़ैर सो जाया करो) ।''

हज़रते बराअ बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने जब सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में येह कलिमात दोहराए और जब اٰمَنْتُ بِکِتَابِکَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ पर पहुंचा तो ''وَنَبِیِّکَ'' की जगह ''وَ رَسُوْلِکَ'' कह दिया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''ऐसे नहीं ! बल्कि بِنَبِیِّکَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ कहो ।'' (الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، باب الترغیب فی کلمات...الخ، رقم ۱، ج۱، ص۲۳۲)

(1313)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने बिस्तर पर आते वक़्त येह कलिमात पढ़े

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِا للّٰہِ سُبْحَا نَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ

तरजमा : **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं उसी की बादशाही है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं और वोह हर शै पर क़ादिर है नेकी की तौफ़ीक़ और गुनाहों से बचने की कुव्वत **अल्लाह** ही की तरफ़ से है **अल्लाह** पाक है और **अल्लाह** के लिये तमाम ख़ूबियां हैं और **अल्लाह** के इलावा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है। उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों ।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الزینۃ والتطییب، باب آداب النوم، رقم ۵۵۰۳، ج۷، ص۴۴۳)

एक रिवायत में سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कहने का ज़िक्र है और आख़िर के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि ''उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग से ज़ियादा हों ।''

(الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، باب الترغیب فی کلمات ج، الخ، رقم ۷، ج۱، ص۲۳۴)

(1314)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अपने बिस्तर पर आते वक़्त तीन मरतबा येह पढ़ ले اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ'' तरजमा : मैं उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश चाहता हूं जिस के इलावा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा और क़य्यूम है और मैं उसी की तरफ़ रुजूअ़ करता हूं ।'' उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों, अगर्चे दरख़्तों के पत्तों के बराबर हों, अगर्चे टीलों की रैत के ज़र्रात के बराबर हों, अगर्चे दुन्या के अय्याम के बराबर हों ।'' (ترمذی، کتاب الدعوات، باب (۱۷) رقم ۳۴۰۸، ج۵، ص۲۵۵)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
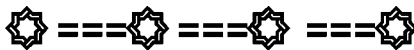
बेदार हो कर पढ़ी जाने वाली दुआ

(1315)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बन्दे की रूह़ रात को उसे वापस लौटा दे फिर वोह बन्दा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तस्बीह़ और बुज़ुर्गी बयान करे और उस से इस्तिग़फ़ार करे फिर उस से दुआ़ मांगे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे ज़रूर क़बूल फ़रमाता है।''

(الترغیب والترہیب،کتاب النوافل،باب الترغیب فی کلمات...الخ،رقم ۶،ج۱،ص۲۳۸)

(1316)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने नींद से बेदार हो कर कहा

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ''

سُبْحَا نَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِا للّٰه

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उसी की ख़ूबियां और वोह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है **अल्लाह** पाक है और **अल्लाह** ख़ूबियों वाला है और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, और **अल्लाह** सब से बड़ा है और गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ और नेकी की क़ुव्वत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ही की त़रफ़ से ह़ासिल होती है।''

फिर اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ कहा या कोई दुआ़ मांगी तो उसे क़बूल कर लिया जाएगा, फिर अगर वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी तो उस की नमाज़ क़बूल कर ली जाएगी।'' (بخاری،کتاب التہجد،باب فضل من تعارمن اللیل فصلی،رقم ۱۱۵۴،ج۱،ص۳۹۱)

(1317)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने नींद से बेदार होते वक़्त ''दस बार بِسْمِ اللّٰہِ दस बार سُبْحَانَ اللّٰہِ और दस बार اٰمَنْتُ بِاللّٰہِ وَکَفَرْتُ بِالطَّاغُوْتِ (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पाक है, मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर ईमान रखता और शैत़ान का इन्कार करता हूं।) पढ़ा तो हर उस गुनाह से बचा लिया जाएगा जिस का उसे ख़ौफ़ हो और कोई गुनाह उस तक न पहुंच सकेगा।''

(مجمع الزوائد،کتاب الاذکار،باب اذا تعارمن اللیل،رقم ۱۸۰۲۰،ج۱۰،ص۱۸۴)

(1318)...... ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब रात में तहज्जुद के लिये बेदार होते तो येह दुआ़ पढ़ते

اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَیِّمُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْھِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْھِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْھِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَّالْجَنَّةُ حَقٌّ وَّالنَّارُ حَقٌّ وَّالنَّبِیُّوْنَ حَقٌّ وَّمُحَمَّدٌ (صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ) حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰھُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَلَكَ آمَنْتُ وَعَلَیْكَ تَوَكَّلْتُ وَاِلَیْكَ اَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَاِلَیْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ وَمَا اَسْرَرْتُ وَمَا اَعْلَنْتُ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّیْ اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَاَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! ऐ हमारे रब ! तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं तू ज़मीन व आस्मान और इन के दरमियान की मख़्लूक़ को क़ाइम रखने वाला है और तेरे लिये ही तमाम ता'रीफ़ें हैं तू ज़मीन व आस्मान और इन के दरमियान की मख़्लूक़ का नूर है और तेरे लिये तमाम सताइशें हैं तू ही ज़मीन व आस्मान और इन के दरमियान की मख़्लूक़ का बादशाह है और तेरे लिये ही तमाम मिद्हतें हैं कि तू हक़ है और तेरा फ़रमान हक़ है और तेरा वा'दा हक़ है और तेरी मुलाक़ात हक़ है और जन्नत हक़ है और जहन्नम हक़ है और अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हक़ हैं और मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हक़ हैं और क़ियामत हक़ है ऐ **अल्लाह** ! मैं मुसल्मान हुवा और तुझ पर ईमान लाया और तुझ पर भरोसा किया और तेरी बारगाह में ताइब हुवा और तुझ ही से इन्साफ़ चाहा और तुझे ही ह़कम माना लिहाज़ा तू मुझे बख़्श दे जो लग़्ज़िशें मुझ से पहले हुईं या बा'द में होंगी और जो मैं ने छुप कर किया और जिन को मैं ने ए'लानिया किया, तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे करने वाला है, तेरे इलावा कोई मा'बूद नहीं।" (بخاری، کتاب التہجد، باب التہجد باللیل، رقم ۱۱۲۰، ج۱، ص ۳۸۱)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

घर से मस्जिद वग़ैरा की त़रफ़ जाते हुए पढ़ी जाने वाली दुआ़ का सवाब

(1319)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब आदमी घर से निकलते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ تَوَ كَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहता है तो उस से कहा जाता है कि "येह तेरे लिये काफ़ी है तुझे हिदायत दी गई और तेरी किफ़ायत की गई तू बच गया।" और शैतान उस से दूर हो जाता है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فیما یقول اذا خرج...الخ، رقم ا، ج۲، ص۳۰۴)

एक रिवायत में है कि उस वक़्त उस से कहा जाता है कि "तू हिदायत पा गया और तुझे हिदायत दे दी गई और किफ़ायत पा गया।" तो शैतान उस से दूर हो जाता है उस शैतान से दूसरा शैतान कहता है कि "तू उस शख़्स का अब कुछ नहीं कर सकता जिसे किफ़ायत की गई और जो हिदायत पा गया और बचा लिया गया।"

(سنن ابوداود، کتاب الادب ، باب مایقول اذا خرج من بیتہ، رقم ۵۰۹۵، ج۴، ص۴۲۰)

(1320)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो मुसल्मान घर से सफ़र या किसी और इरादे से निकले फिर येह दुआ़ पढ़े "آمَنْتُ بِاللّٰہِ اَعْتَصَمْتُ بِاللّٰہِ تَوَ كَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ" तरजमा : मैं **अल्लाह** पर ईमान लाया, मैं ने **अल्लाह** के सहारे को मज़्बूती से थामा, **अल्लाह** पर भरोसा किया कि नेकी की तौफ़ीक़ और बुराई से बचने की कुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।" तो वोह अपने उस इरादे में भलाई पाएगा।"

(مسند امام احمد، مسند عثمان بن عفان، رقم ۴۷۱، ج۱، ص۱۴۴)

(1321)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो अपने घर से नमाज़ के लिये निकलते हुए येह दुआ़ पढ़े

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْکَ وَبِحَقِّ مَمْشَایَ ھٰذَا فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا وَّلَا بَطَرًا وَّلَا رِیَاءً وَّلَا سُمْعَةً وَّخَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سَخَطِکَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِکَ اَسْئَلُکَ اَنْ تُعِیْذَنِیْ مِنَ النَّارِ وَاَنْ تَغْفِرَ لِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से साइलीन के उस ह़क़ के वसीले से सुवाल करता हूं जो तेरे ज़िम्मए करम पर है और अपने उस चलने के ह़क़ के वसीले से मांगता हूं क्यूं कि मैं तकब्बुर करने, इतराने और दिखावे के लिये नहीं निकला बल्कि तेरी ना राज़गी से बचने और तेरी रिज़ा चाहने के लिये निकला हूं मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि तू मुझे जहन्नम से पनाह दे दे और मेरे गुनाह बख़्श दे क्यूं कि गुनाह तू ही मिटाता है।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर नज़रे रह़मत फ़रमाता है और सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते हैं।"

(ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب المشی الی الصلاۃ، رقم ۷۷۸، ج۱، ص۴۲۸)
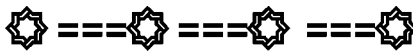
मस्जिद में दाखि़ल होते वक़्त पढ़े जाने वाले कलिमात का सवाब

(1322)...... ह़ज़रते सय्यिदुना हैवत बिन शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते उ़क़्बा बिन मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मिला तो मैं ने उन से पूछा कि ''मुझे मा'लूम हुवा है कि आप येह रिवायत करते हैं कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी मस्जिद में दाखि़ल होते तो येह कलिमात पढ़ा करते اَعُوْذُ بِاللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَبِوَجْھِہِ الْکَرِیْمِ وَسُلْطَانِہِ الْقَدِیْمِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ''। तो उन्हों ने पूछा, ''बस इतना ही ?'' मैं ने कहा, ''हां।'' फ़रमाया, ''जब बन्दा येह कलिमात पढ़ लेता है तो शैत़ान कहता है येह सारा दिन मुझ से मह़फ़ूज़ हो गया।''

(ابوداؤد، کتاب الصلاۃ، باب فیما یقول الرجل عند دخولہ المسجد، رقم ۴۶۶، ج۱، ص۱۹۹)

नमाज़ में वस्वसा आने पर पढ़े जाने वाले कलिमात का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

وَاِمَّا یَنْزَغَنَّکَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰہِ ؕ اِنَّہٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝ (پ۹، الاعراف:۲۰۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ सुनने वाले अगर शैत़ान तुझे कोई कोंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए) तो **अल्लाह** की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है।

(1323)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! शैत़ान मेरे और मेरी नमाज़ के दरमियान ह़ाइल हो जाता है और मेरी क़िराअत में शुबा डाल देता है।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''येह वोह शैत़ान है जिसे ''ख़िन्ज़ब'' कहा जाता है जब तुम इसे मह़सूस करो तो उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो और अपने बाईं त़रफ़ तीन मरतबा थूक दिया करो।'' आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जब मैं ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शैत़ान को मुझ से दूर फ़रमा दिया।''

(صحیح مسلم، کتاب السلام، باب التعوذ من شیطان الوسوسۃ فی الصلوۃ، رقم ۲۲۰۳، ج۱، ص۱۲۰۹)
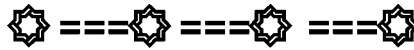
फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द के अज़्कार का सवाब

(1324)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने नमाज़ के बा'द आ–यतुल कुरसी पढ़ी उसे मौत के इलावा जन्नत में दाख़िले से कोई चीज़ नहीं रोक सकती।'' एक रिवायत में قُلۡ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ पढ़ने का भी ज़िक्र भी है। (طبرانی کبیر، رقم ۷۵۳۲، ج۸، ص۱۱۴)

(1325)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द आ–यतुल कुरसी पढ़ी वोह बन्दा अगली नमाज़ तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی الاذکار عقب الصلوۃ، رقم ۱۶۹۲۴، ج۱۰، ص۱۲۸)

(1326)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़ज्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले कुछ कलिमात ऐसे हैं जिन को हर नमाज़ के बा'द पढ़ने वाला मह़रूम नहीं होता سُبۡحٰنَ اللّٰہ और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ तेंतीस मरतबा اَللّٰہُ اَکۡبَرُ चौंतीस मरतबा।''

(مسلم، کتاب المساجد، باب استحباب الذکر بعد الصلوۃ، رقم ۵۹۶، ج۱، ص۳۰۱)

(1327)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मुहाजिरीन फु–क़रा शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़िए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया, ''मालदार लोग बुलन्द द–रजात और बाक़ी रहने वाली ने'मतें ले गए।'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह कैसे?'' अ़र्ज़ किया, ''वोह हमारी त़रह़ नमाज़ पढ़ते हैं और हमारी त़रह़ रोज़े रखते हैं और स–दक़ा करते हैं, हम स–दक़ा नहीं कर सकते और वोह गुलाम आज़ाद करते हैं जब कि हम गुलाम आज़ाद नहीं कर सकते।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न सिखाऊं जिस के ज़रीए तुम अगलों और पिछलों पर सब्क़त ले जाओ और तुम से अफ़्ज़ल कोई न हो सके मगर जो तुम्हारी मिस्ल करे।'' अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर सिखाइये।'' फ़रमाया, ''हर नमाज़ के बा'द سُبۡحَانَ اللّٰہِ, اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ और اَللّٰہُ اَکۡبَرُ तेंतीस मरतबा पढ़ लिया करो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ फ़रमाते हैं कि ''फिर फु–क़रा मुहाजिरीन दोबारा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि ''हमारे मालदार भाइयों ने भी वोह सुन लिया है जो हम करते हैं तो वोह भी इसी की मिस्ल करने लगे हैं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ذٰلِکَ فَضۡلُ اللّٰہِ یُؤۡتِیۡہِ مَنۡ یَّشَآءُ.

हज़रते सय्यिदुना सम्मी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ कहते हैं कि ''मैं ने अपने बा'ज़ घर वालों को येह हदीस सुनाई तो उन्हों ने कहा कि तुम्हें वह्म हो गया है हदीस में سُبْحَانَ اللہِ और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ तेंतीस तेंतीस मरतबा और اَللّٰہُ اَکْبَرُ चौंतीस मरतबा पढ़ने का इर्शाद है । फिर मैं हज़रते सय्यिदुना अबू सालेह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया और उन्हें येह बात बताई तो उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ा और سُبْحَانَ اللہِ, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और اَللّٰہُ اَکْبَرُ पढ़ने लगे यहां तक कि तीनों अवराद को तेंतीस, तेंतीस मरतबा पढ़ा ।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی آیات...الخ، رقم ا، ج۲، ص۲۹۶)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने हर नमाज़ के बा'द سُبْحَانَ اللہِ तेंतीस मरतबा, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ तेंतीस मरतबा, اَللّٰہُ اَکْبَرُ तेंतीस मरतबा कहा तो येह निनानवे हैं फिर सो का अ़दद पूरा करने के लिये لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ कहा तो उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे अगर्चे वोह समुन्दर की झाग के बराबर हों ।''

(مسلم، کتاب المساجد باب استحباب الذکر بعد الصلوۃ، رقم ۵۹۷، ج۱، ص۳۰۱)

(1328)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो बन्दा इन पर हमेशगी इख़्तियार करेगा जन्नत में दाख़िल होगा, येह दोनों काम हैं तो बहुत आसान मगर इन पर अ़मल करने वाले लोग बहुत कम हैं । तुम में से कोई हर नमाज़ के बा'द दस मरतबा سُبْحٰنَ اللہ, दस मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और दस मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَرُ पढ़ लिया करे तो येह ज़बान पर डेढ़ सो हैं जब कि मीज़ान में पन्दरह सो हैं । फिर जब वोह अपने बिस्तर की तरफ़ आए तो तेंतीस मरतबा سُبْحٰنَ اللہ, तेंतीस मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और चौंतीस मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहे, येह ज़बान पर तो सो हैं जब कि मीज़ान में एक हज़ार हैं ।''

फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से कौन है जो रोज़ाना पच्चीस सो गुनाह करता हो ?'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलुल्लाह ! इन्हें कैसे गिना जा सकता है ?'' फ़रमाया, ''तुम में से कोई शख़्स नमाज़ में होता है तो शैतान उस के पास आता है और उस से कहता है कि ''येह बात याद कर, वोह बात याद कर ।'' और जब वोह सोने लगता है तो उसे येह कलिमात पढ़ने से पहले ही सुला देता है ।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب اقامۃ الصلاۃ، باب مایقال بعد التسلیم، رقم ۹۲۶، ج۱، ص۴۹۷)

(1329)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने नमाज़ के बा'द येह कहा

سُبْحَانَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِہٖ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَاِلَّا بِاللّٰہِ तरजमा : पाक है अ़-ज़मत वाला रब और उसी की ता'रीफ़ है और उसी की अ़ता से नेकी की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की कुव्वत (मिलती) है।'' तो वोह मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर उठेगा।'' (المعجم الکبیر، رقم ۵۱۲۴، ج۵، ص۲۱۱)

(1330)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने हर नमाज़ के बा'द तीन मरतबा येह पढ़ा

سُبْحَانَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَ0 وَسَلَامٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ0 وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ0 (پ۲۳، الصّٰفّٰت: ۱۸۰ تا ۱۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है तुम्हारे इ़ज़्ज़त वाले रब को उन की बातों से और सलाम है पैग़म्बरों पर और सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो सारे जहां का रब है।'' तो उस ने अज्र में से एक पूरा जरीब (एक पैमाने का नाम) तोल लिया।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی الاذکار...الخ، رقم ۱۶۹۲۶، ج۱۰، ص۱۳۹)

(1331)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने नमाज़ के बा'द येह पढ़ा ''اَسْتَغْفِرُاللّٰہَ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ'' तरजमा : मैं **अल्लाह** तआ़ला से मग़्फ़िरत का त़लब गार हूं और उस की बारगाह में तौबा करता हूं।'' उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी अगर्चे वोह जिहाद से फ़िरार हुवा हो।'' (المعجم الاوسط، رقم ۷۷۳۸، ج۵، ص۳۹۸)

(1332)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द येह दुआ़एं मांगीं क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त उस के लिये हलाल होगी اَللّٰھُمَّ اَعْطِ مُحَمَّدَ نِ الْوَسِیْلَۃَ وَاجْعَلْ فِی الْمُصْطَفِیْنَ مَحَبَّتَہٗ وَفِی الْعَالِیْنَ دَرَجَتَہٗ وَفِی الْمُقَرَّبِیْنَ دَارَہٗ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को वसीला अ़ता फ़रमा और अपने पसन्दीदा बन्दों के दिलों में इन की महब्बत डाल दे और इन का मरतबा बुलन्द द-रजात वालों में कर और इन का घर मुक़र्रबीन में बना।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی آیات...الخ، رقم ۱۱، ج۲، ص۳۰۰)

✡===✡===✡===✡

बाज़ार और मक़ामाते ग़फ़्लत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने का सवाब

(1333)...... हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने बाज़ार में दाख़िल हो कर कहा

''لَااِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ''

तरजमा : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं उस की बादशाही है और उसी के लिये तमाम ख़ूबियां हैं वोह ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ख़ुद ज़िन्दा है कभी न मरेगा उसी के हाथ में तमाम भलाइयां हैं और वोह हर शै पर क़ादिर है।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दस लाख नेकियां लिखेगा और उस के दस लाख गुनाह मिटा देगा और उस के दस लाख द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا دخل السوق، رقم ۳۴۳۹، ج۵، ص ۲۷۰)

(1334)...... इसी रिवायत को ह़ाकिम ने भी ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत किया और फ़रमाया, कि ''इस की सनद सह़ीह़ है।'' (المستدرک، کتاب الدعاء...الخ، باب دعاء دخول السوق، رقم ۲۰۱۹، ج۲، ص ۲۳۱)

(1335)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ग़ाफ़िल लोगों के दरमियान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला शिकस्त ख़ूरदा लोगों के दरमियान सब्र करने वाले की त़रह़ है।''

(مجمع البحرین، کتاب الاذکار، باب الذکر عند اہل الغفلۃ، رقم ۴۵۲۲، ج۴، ص ۱۹۳)

(1336)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ग़ाफ़िलीन के दरमियान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला शिकस्त ख़ूरदा लोगों में दुश्मन से जिहाद करने वाले की त़रह़ है और ग़ाफ़िल लोगों के दरमियान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाला अंधेरी कोठड़ी में रोशन चराग़ की त़रह़ है और ग़ाफ़िल लोगों के दरमियान ज़िक्रुल्लाह करने वाले को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दगी में ही जन्नत में उस का ठिकाना दिखा देगा और ग़ाफ़िल लोगों के दरमियान ज़िक्रुल्लाह करने वाले के, बनी आदम और जानवरों की ता'दाद के बराबर गुनाहों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب البیوع وغیرھا، باب الترغیب فی ذکر اللہ...الخ، رقم ۴، ج۲، ص ۳۳۷)

एक रिवायत में है कि ''ग़ाफ़िल लोगों के दरमियान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसी नज़रे रह़मत फ़रमाएगा जिस के बा'द उसे फिर अ़ज़ाब न देगा और बाज़ार में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले को हर बाल के बदले क़ियामत के दिन एक नूर अ़त़ा किया जाएगा।'' (شعب الایمان، باب فی محبۃ اللہ فصل فی ادامۃ ذکر اللہ...الخ، رقم ۵۶۷، ج۱، ص ۴۱۲)

(1337)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किसी ऐसी मजलिस में बैठा जिस में उस ने कसरत से फ़ुज़ूल कलाम किया फिर अपनी जगह से उठने से पहले कहा سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! तू पाक है और तेरे ही लिये सब ख़ूबियां हैं मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं।'' तो उस के उस मजलिस के तमाम गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا قام من مجلسہ، رقم ۳۴۴۴، ج۵، ص۲۷۳)

(1338)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्इम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने ज़िक्र की मजलिस में कहा ''سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَ اَتُوْبُ اِلَیْکَ तरजमा : **अल्लाह** पाक है और सब ख़ूबियां उसी की हैं, ऐ **अल्लाह** ! तू पाक है और तमाम ख़ूबियां तेरे ही लिये हैं, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं।'' तो येह उस मोहर की त़रह़ है जो उस पर लगा दी गई हो और जिस ने इसे कलामे फ़ुज़ूल की मजलिस में कहा तो उस के लिये कफ़्फ़ारा है।''

(الطبرانی الکبیر، رقم ۱۵۸۶، ج۲، ص۱۳۸)

(1339)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो इन्हें (या'नी ऊपर मज़्कूर कलिमात को) किसी अच्छी या बुरी मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़ेगा तो येह कलिमात उस के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएंगे और जो इसे ख़ैर या ज़िक्र की मजलिस में पढ़ेगा तो उन पर ह़िफ़ाज़त की ऐसी मोहर लगा दी जाएगी जैसे अंगूठी से काग़ज़ पर लगाई जाती है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی کلمات...الخ، رقم ۷، ج۲، ص۲۶۵)

(1340)...... ह़ज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़दीज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के आख़िरी अय्याम में जब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप की बारगाह में ह़ाज़िर होते और आप वहां से उठने का इरादा फ़रमाते तो येह कलिमात पढ़ते

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَاَتُوْبُ اِلَیْکَ عَمِلْتُ سُوْءً اَوْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْ لِیْ اِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ
तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! तू पाक है और तमाम ख़ूबियां तेरी ही हैं मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं मैं कोई बुरा अ़मल करूं या गुनाह के ज़रीए अपनी जान पर ज़ुल्म करूं तो तू मुझे बख़्श देना क्यूं कि गुनाह तू ही मिटाता है।'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह कलिमात आप ने नए कहे हैं।'' फ़रमाया, ''हां ! मेरे पास जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلام आए और कहने लगे, ''या मुहम्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह मजलिस के कफ़्फ़ारे हैं।''

(المستدرک، کتاب وذکر باب دعاء کفارۃ المجالس، رقم ۲۰۱۵، ج ۲، ص ۲۲۹)
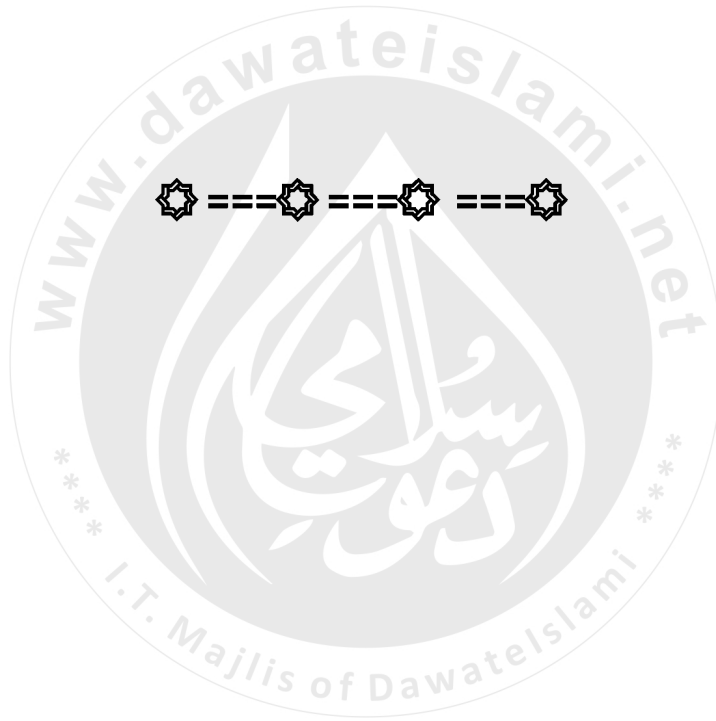
नए कपड़े पहनते वक़्त पढ़े जाने वाले कलिमात का सवाब

(1341)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कोई ने'मत अ़ता फ़रमाई और उस ने यक़ीन कर लिया कि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के शुक्र अदा करने से पहले उस के लिये शुक्र लिख देता है और बन्दा जब कोई गुनाह करे फिर उस पर नादिम हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के इस्तिग़्फ़ार करने से पहले ही उस के लिये मग़्फ़िरत लिख देता है और बन्दा जब एक या निस्फ़ दीनार से कोई कपड़ा ख़रीदे फिर उसे पहन कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे तो इस से पहले कि वोह कपड़ा उस के घुटने तक पहुंचे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है।''

(المستدرک، کتاب الدعاء، باب فضیلۃ التحمید والتسبیح التھلیل، رقم ۱۹۳۷، ج۲، ص۱۹۶)

(1342)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो खाना खाने के बा'द येह कहता है '' اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ ھٰذَاوَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِحَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ'' तरजमा : तमाम ख़ूबियां उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे येह खिलाया और मेरी कोशिश और क़ुव्वत के बिग़ैर मुझे येह खाना अ़ता फ़रमाया।'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा देता है और जो नए कपड़े पहनने के बा'द '' اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ ھٰذَاوَرَزَقَنِیْہِ مِنْ غَیْرِحَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّۃٍ'' तरजमा : तमाम ख़ूबियां उस अल्लाह के लिये हैं जिस ने मुझे येह (कपड़ा) पहनाया और मेरी कोशिश और क़ुव्वत के बिग़ैर मुझे येह लिबास अ़ता फ़रमाया।'' कहता है तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।''

(ابوداود، کتاب اللباس، باب مایقول اذالبس ثوبا جدیدا، رقم ۴۰۲۳، ج۴، ص۵۹)

(1343)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नए कपड़े पहनने के बा'द येह कहा

'' اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَااُوَارِیْ بِہٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِہٖ فِیْ حَیَاتِیْ '' तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह की हैं जिस ने मुझे ऐसा लिबास पहनाया जिस से मैं अपना सित्र छुपाता हूं और अपनी ज़िन्दगी में ज़ीनत ह़ासिल करता हूं।'' फिर फ़रमाया कि ''मैं ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि जिस ने नए कपड़े पहनने के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَااُوَارِیْ بِہٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِہٖ فِیْ حَیَاتِیْ कहा फिर अपने पुराने कपड़े स-दक़ा कर दिये तो वोह ज़िन्दगी में और मौत के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़िफ़ाज़त, मदद और पर्दा पोशी में होगा।''

(جامع الترمذی، کتاب احادیث شتی، باب(۱۲۱)، رقم ۳۵۷۱، ج۵، ص۳۲۸)
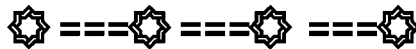
सुवारी पर सुवार होने की दुआ का सवाब

(1344)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे अपनी सुवारी पर अपने साथ बिठाया जब आप सुवारी पर सुकून से तशरीफ़ फ़रमा हो गए तो आप ने اَللّٰہُ اَکْبَرُ, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ, और سُبْحَانَ اللّٰہِ तीन तीन मरतबा और لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ एक मरतबा कहा और नीचे हो कर मुस्कुराए फिर मेरी जानिब मु-तवज्जेह हो कर फ़रमाया, ''जो शख़्स अपनी सुवारी पर सुवार होते वक़्त इसी तरह करे जैसे मैं ने किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाएगा और उस से ख़ुश होगा।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ، رقم ۳۰۵۸، ج۱، ص۷۰۷)

(1345)...... हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शह सुवार सफ़र के दौरान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के ज़िक्र में मश्ग़ूल होता है तो एक फ़िरिश्ता मुसल्सल उस के साथ शरीके सफ़र होता है और जो इस के बर अक्स होता है उस का रदीफ़ शैतान होता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب مایقول اذا رکب دابۃ، رقم ۱۷۰۹۶، ج۱۰، ص۱۸۵)
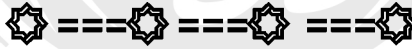
सुवारी के अड़ी करने पर बिस्मिल्लाह पढ़ने का सवाब

(1346)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू तमीमा हुजैमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं एक दराज़ गोश पर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का रदीफ़ था तो वोह दराज़ गोश अड़ी करने लगा तो मैं ने कहा, ''शैत़ान हलाक हो।'' तो फ़रमाया, ''ऐसा न कहो क्यूं कि जब तुम येह कहोगे कि शैत़ान हलाक हो तो वोह ख़ुद को बड़ा समझने लगता है और कहता है कि ''मैं ने अपनी क़ुव्वत से इसे गिरा दिया।'' और अगर तुम बिस्मिल्लाह कहोगे तो वोह सुकड़ कर मख्खी जितना हो जाता है।'' (المستدرک، کتاب الادب، باب لاتقولوا...الخ، رقم ۷۸۶۲، ج۵، ص۴۱۵)

(1347)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मलीह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का रदीफ़ था तो हमारा ऊंट अड़ी करने लगा तो मैं ने कहा कि ''शैत़ान हलाक हो।'' तो मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''येह न कहो कि शैत़ान हलाक हो क्यूं कि वोह अपने को बड़ा समझने लगता है यहां तक की वोह घर जितना बड़ा हो जाता है और कहता है, ''हां ! मेरी क़ुव्वत है।'' बल्कि तुम बिस्मिल्लाह पढ़ो इस त़रह़ वोह छोटा हो कर मक्खी जितना हो जाएगा।'' (المستدرک، کتاب الادب، باب لاتقولوا...الخ، رقم ۷۸۶۳، ج۵، ص۴۱۵)
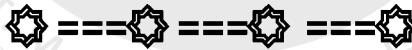
किसी मक़ाम पर पड़ाव करते वक़्त की दुआ का सवाब

(1348)...... हज़रते सय्यि-दतुना ख़ौला बिन्ते हकीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो किसी मक़ाम पर ठहरे फिर येह कहे '' اَعُوۡذُ بِکَلِمَاتِ اللّٰہِ التَّامَّاتِ مِنۡ شَرِّمَا خَلَقَ तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ के शर से उस के कामिल कलिमात की पनाह चाहता हूं।'' तो उस मक़ाम से कूच करने तक उसे कोई चीज़ नुक़्सान न पहुंचाएगी।'' (مسلم، کتاب الذکروالدعاء، باب التعوذ من سوء القضاء...الخ، رقم ۲۷۰۸، ج۱، ص۱۴۵۲)

(1349)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़िमस से निकला तो बक़ीआ़ के मक़ाम पर मुझे रात ने आ लिया तो मेरे पास ज़मीन के हशरात आए। मैं ने सू-रतुल आ'राफ़ की येह आयते मुबा-रका पढ़ी '' اِنَّ رَبَّکُمُ اللّٰہُ الَّذِیۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारा रब **अल्लाह** है जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए।'' (پ۸،الاعراف:۵۴) तो वोह एक दूसरे से कहने लगे कि अब सुब्ह तक इस की हिफ़ाज़त करो। जब सुब्ह हुई तो मैं अपनी सुवारी पर सुवार हो गया।''

✡===✡===✡===✡

आफ़त ज़दा शख़्स को देख कर पढ़ी जाने वाली दुआ का सवाब

(1350)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने किसी मुसीबत ज़दा को देख कर येह कहा اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِہٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی کَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا'' तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने मुझे इस मुसीबत से आ़फ़िय्यत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर बड़ी फ़ज़ीलत दी।'' तो उसे वोह मुसीबत न पहुंचेगी।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا رای الخ، رقم ۳۴۴۳، ج۵، ص۲۷۳)

(1351)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबिल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि ''जब से मैं मुसल्मान हुवा हूं अपने जिस्म में दर्द मह़सूस करता हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि ''तुम्हारे जिस्म में जहां दर्द हो रहा है वहां अपना हाथ रखो और तीन मरतबा ''बिस्मिल्लाह'' पढ़ने के बा'द सात मरतबा येह पढ़ो اَعُوْذُ بِعِزَّۃِ اللّٰہِ وَقُدْرَتِہٖ مِنْ شَرِّ مَااَجِدُوَمَااُحَاذِرُ'' तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़ज़्ज़त और क़ुदरत की पनाह चाहता हूं उस तक्लीफ़ के शर से जो मैं मह़सूस कर रहा हूं और जिस से मैं डरता हूं।''

एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''जब मैं ने ऐसा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे उस मरज़ को दूर फ़रमा दिया तो अब मैं हमेशा अपने घर वालों और दूसरे लोगों को ऐसा ही करने का मश्वरा देता हूं।'' (مسلم، کتاب السلام، باب استحباب وضع یدہ علی موضع الالم، رقم ۲۲۰۲، ج۱، ص۱۲۰۹)

(1352)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जो لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر (तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है) कहता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की तस्दीक़ करते हुए इर्शाद फ़रमाता है لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنَا وَاَنَا اَکْبَرُ (तरजमा : मैं ही मा'बूद हूं और मैं ही सब से बड़ा हूं) और जब वोह बन्दा لَااِلٰـہَ اِلَّااللّٰہُ وَحْدَہٗ (तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला ही मा'बूद है और वोह अकेला है) कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है لَااِلٰہَ اِلَّا اَنَا وَحْدِیْ (तरजमा : मैं ही मा'बूद हूं और मैं ही अकेला हूं) फिर जब बन्दा لَااِلٰـہَ اِلَّااللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ (तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला ही मा'बूद है वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं) कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है मेरा बन्दा सच कहता है لَااِلٰہَ اِلَّا اَنَا وَحْدِیْ لَاشَرِیْکَ لِیْ (तरजमा : मैं ही मा'बूद हूं अकेला हूं मेरा कोई शरीक नहीं) और जब बन्दा لَااِلٰـہَ اِلَّااللّٰـہُ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ (तरजमा : **अल्लाह** तआ़ला ही मा'बूद है, उसी की बादशाही, सब ख़ूबियां सराहा) कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाता है لَااِلٰهَ اِلَّا اَنَالِیَ الْمُلْکُ وَلِیَ الْحَمْدُ (तरजमा : मैं ही मा'बूद हू मेरी ही बादशाही है और सब ख़ूबियां मेरी हैं) और जब वोह لَااِلٰـهَ اِلَّااللّٰـهُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَاِلَّابِاللهِ (तरजमा : **अल्लाह** ही मा'बूद है नेकी करने की क़ुव्वत और बुराई से बचने की ताक़त **अल्लाह** तआ़ला ही की त़रफ़ से है) कहता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है لَااِلٰهَ اِلَّااَنَا وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَاِلَّابِی (तरजमा मैं ही मा'बूद हूं और नेकी की ताक़त और बुराई से बचने की क़ुव्वत मेरी ही त़रफ़ से है) ।

आप फ़रमाया करते थे कि जो इस दुआ़ को ह़ालते मरज़ में पढ़े फिर मर जाए उसे जहन्नम की आग न छूएगी । (ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول العبداذامرض، رقم ۳۴۴۱، ج۵، ص۲۷۱)

(1353)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ अबू हुरैरा ! क्या मैं तुम्हें एक सच्ची बात न बताऊं, जो इसे अपनी बीमारी की इब्तिदा में पहली मरतबा सोते वक़्त पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से नजात अ़त़ा फ़रमाएगा ।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! ज़रूर बताइये ।'' फ़रमाया, ''जब तुम सुब्ह़ करो तो शाम से पहले और शाम करो तो सुब्ह़ से पहले अपने मरज़ की इब्तिदा में पहली मरतबा सोते वक़्त येह कलिमात पढ़ोगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जहन्नम से नजात अ़त़ा फ़रमाएगा,

''لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يُحْيِ وَيُمِيتُ وَهُوَحَيٌّ لَّايَمُوْتُ وَسُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعِبَادِوَالْبِلَادِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ كَثِيْرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا كَبْرِيَاءُ رَبِّنَاوَجَلَالُهٗ وَقُدْرَتُهٗ بِكُلِّ مَكَانٍ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ اَمْرَضْتَنِیْ لِتَقْبِضَ رُوْحِیْ فِیْ مَرَضِیْ هٰذَا فَاجْعَلْ رُوْحِیْ فِیْ اَرْوَاحِ مَنْ سَبَقَتْ لَهٗ مِنْكَ الْحُسْنٰى وَاَعِذْنِیْ مِنَ النَّارِ كَمَا اَعَذْتَ اَوْلِيَائَكَ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنْكَ الْحُسْنٰى

तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह जिलाता और मारता है और वोह ज़िन्दा है, कभी न मरेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है जो कि तमाम बन्दों और शहरों का परवर्द गार है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हर ह़ाल में पाकीज़ा, कसीर और ब-र-कत वाली ख़ूबियां हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बहुत बड़ा है हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ, उस के जलाल और क़ुदरत की हर जगह बड़ाई बयान करते हैं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तूने मुझे इस मरज़ में मेरी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये मुब्तला फ़रमाया है लिहाज़ा मेरी रूह़ को उन रूह़ों में शामिल फ़रमा जिन के लिये तेरी त़रफ़ से भलाई का फ़ैसला हो चुका है और मुझे उसी त़रह़ जहन्नम से पनाह दे जैसे तूने अपने उन औलिया को पनाह दी जिन के लिये तेरी बारगाह से पहले ही भलाई का फ़ैसला हो चुका है ।''

फिर अगर तुम्हारा उस मरज़ में इन्तिक़ाल हो गया तो तुम्हारा ठिकाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और जन्नत में होगा और अगर तुम ने बहुत सारे गुनाह किये हों तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाएगा ।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی کلمات...الخ، رقم ۵، ج۴، ص۱۶۸)

(1354)...... हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने "**لَا اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیۡ کُنۡتُ مِنَ الظّٰلِمِیۡنَ**" तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे, पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बे जा हुवा ।" (پ۱۷،الانبیاء:۸۷) की तफ़्सीर बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाया, कि "जिस मुसल्मान ने इस दुआ़ को अपने मरज़ में चालीस मरतबा पढ़ा फिर उसी मरज़ में उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उसे एक शहीद का अज्र दिया जाएगा और अगर उसे शिफ़ा हासिल हो गई तो वोह अपने गुनाहों से पाक हो जाएगा और उस के तमाम गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।" (الترغیب الترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی کلمات، الخ، رقم ۴، ج ۴، ص ۱۶۷)
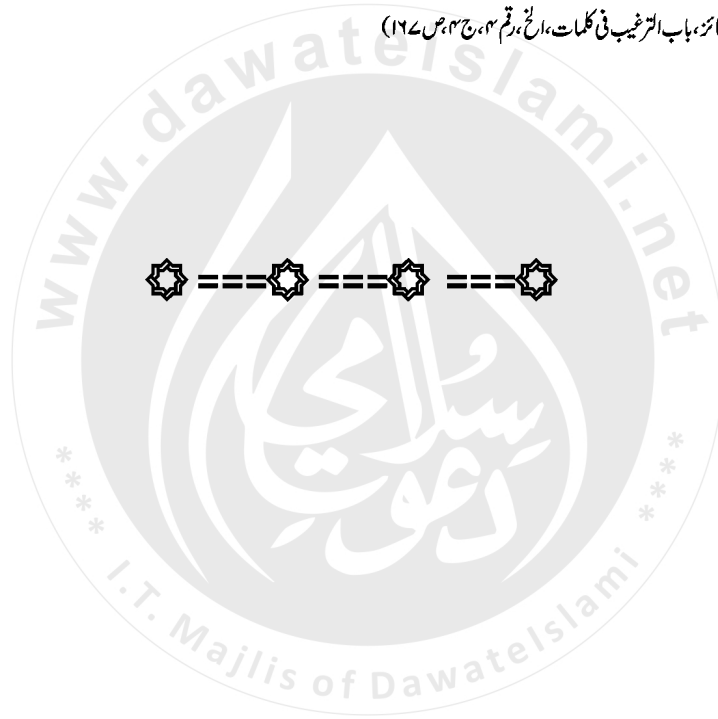
अफ़्वो आफ़िय्यत मांगने का सवाब

(1355)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मिम्बर पर खड़े हुए फिर रोने लगे और फ़रमाया, ''जब ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़्मतुल्लिल आ–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पहले साल हमारे दरमियान मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो रोने लगे फिर आप ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से अफ़्व और आफ़िय्यत का सुवाल किया करो क्यूं कि ईमान के बा'द किसी को आफ़िय्यत से बेहतर कोई चीज़ नहीं दी गई।'' (جامع الترمذی، کتاب احادیث شتّی، باب(۱۲۰)، رقم ۳۵۶۹، ج۵، ص۳۲۷)

(1356)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़–मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दा इस से अफ़्ज़ल कोई दुआ़ नहीं मांगता اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡئَلُکَ الۡمُعَافَاۃَ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَۃِ तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से दुन्या और आख़िरत में आफ़िय्यत का सुवाल करता हूं।'' (ابن ماجہ، کتاب الدعاء، باب الدعاء بالعفو...الخ، رقم ۳۸۵۱، ج۴، ص۲۷۳)

(1357)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से आफ़िय्यत का सुवाल करना उसे ज़ियादा मह़बूब है।'' (ترمذی، کتاب الدعوات، باب(۸۹) رقم ۳۵۲۶، ج۵، ص۳۰۶)

(1358)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से अफ़्ज़ल दुआ़ कौन सी है?'' फ़रमाया, ''अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से आफ़िय्यत और दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल किया करो।'' फिर उस शख़्स ने दूसरे दिन ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से अफ़्ज़ल दुआ़ कौन सी है?'' फ़रमाया, ''अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से आफ़िय्यत और दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल किया करो।'' फिर तीसरे दिन ह़ाज़िर हो कर उस ने येही सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर इस की मिस्ल दुआ़ बताई फिर फ़रमाया, ''जब तुझे दुन्या और आख़िरत में आफ़िय्यत मिल जाए तो तू काम्याब हो गया।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، رقم ۳۵۲۳، باب(۸۹) ج۵، ص۳۰۵)
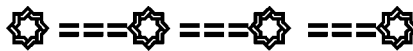
दुआ मांगने का सवाब

कुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद में दुआ मांगने के बारे में कई आयात हैं चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ؕ اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ (پ۲، البقرۃ:۱۸۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़्दीक हूं दुआ क़बूल करता हूं पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।

(2) اُدْعُوْا رَبَّکُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْیَةً ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ۝ (پ۸، الاعراف:۵۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं।

(3) وَقَالَ رَبُّکُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَکُمْ ؕ (پ۲۴، المؤمن:۶۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा।

(4) اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَیَکْشِفُ السُّوْٓءَ (پ۲۰، النمل:۶۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1359)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "मैं अपने बन्दे के (मुझ से किये जाने वाले) गुमान के क़रीब हूं और जब वोह मुझे पुकारता है तो मैं उस के साथ होता हूं।"

(مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل الذکر والدعاء والتقرب، رقم ۲۶۷۵، ج۱، ص۱۴۴۲)

(1360)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : "ऐ इब्ने आदम ! जब तक तू मुझे पुकारता रहेगा और मुझ से उम्मीद रखेगा तो मैं तेरे गुनाहों की मग़्फ़िरत फ़रमाता रहूंगा और मुझे कोई परवाह नहीं।"

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب(۱۰۷)، رقم ۳۵۵۱، ج۵، ص۳۱۸)

(1361)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "दुआ मांगने से मत उक्ताओ क्यूं कि दुआ की हमराही में कोई हलाक न होगा।"

(مستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر، باب لا یھلک مع الدعاء احد، رقم ۱۸۶۱، ج۲، ص۱۶۴)

(1362)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं जो तुम्हें दुश्मनों से नजात दिलाए और तुम्हारे रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दे ? अपने दिन और रात में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से दुआ़ मांगा करो क्यूं कि दुआ़ मोमिन का हथियार है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب الاستنصار بالدعاء، رقم ۱۷۱۹۹، ج۱۰، ص۲۲۱)

(1363)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दुआ़ मोमिन का हथियार, दीन का सुतून और ज़मीनो आस्मान का नूर है।'' (مستدرک، کتاب الدعا والتکبیر، باب الدعاء سلاح المومن، رقم ۱۸۵۵، ج۲، ص۱۶۲)

(1364)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक कोई चीज़ दुआ़ से ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाली नहीं।'' (جامع ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، رقم ۳۳۸۱، ج۵، ص۲۴۳)

(1365)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे येह पसन्द हो कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तंगदस्ती के वक़्त उस की दुआ़एं क़बूल फ़रमाए वोह खु़शह़ाली में दुआ़ की कसरत किया करे।'' (جامع ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء ان دعوۃ المسلم مستجابۃ، رقم ۳۳۹۳، ج۵، ص۲۴۸)

(1366)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दुआ़ वोह तो इ़बादत है।'' फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा तिलावत फ़रमाई :

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ ۠ (پ۲۴، المومن:۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने फ़रमाया मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा बेशक वोह जो मेरी इ़बादत से ऊंचे खिंचते (तकब्बुर करते) हैं अ़न्क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।

(جامع ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ المومن، رقم ۳۲۵۸، ج۵، ص۱۶۶)

(1367)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खु़श ख़िसाल, पैकरे हु़स्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दुआ़ इ़बादत का मग़्ज़ है।''

(جامع ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، رقم ۳۳۸۲، ج۵، ص۲۴۳)

(1368)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दुआ़ तक़्दीर को टाल देती है और नेकी उ़म्र में इज़ाफ़ा करती है और बेशक बन्दा गुनाहों की वजह से रिज़्क़ से मह़रूम कर दिया जाता है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی کثرۃ الدعاء..الخ، رقم ۱۷، ج ۲، ص ۳۱۶)

(1369)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एह़तियात़ तक़्दीर से बे नियाज़ नहीं करती और दुआ़ नाज़िल शुदा और ग़ैर नाज़िल शुदा आफ़ात से नफ़्अ़ देती है और जब कोई आफ़त नाज़िल होती है तो उस का सामना दुआ़ से होता है और दोनों क़ियामत तक लड़ती रहती हैं।''

(مستدرک، کتاب الدعاء، باب الدعاء ینفع مما نزل، رقم ۱۸۵۶، ج ۲، ص ۱۶۲)

(1370)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दुआ़ तक़्दीर को टाल देती है और नेकी उ़म्र में इज़ाफ़ा करती है।''

(ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء لا یرد القدر الا الدعاء، رقم ۲۱۴۶، ج ۴، ص ۵۴)

(1371)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के फ़ज़्ल का सुवाल किया करो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात को पसन्द करता है कि उस से मांगा जाए और ख़ुशह़ाली का इन्तिज़ार करना सब से अफ़्ज़ल इबादत है।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی انتظار الفرج وغیر ذالک، رقم ۳۵۸۲، ج ۵، ص ۳۳۳)

(1372)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम में से जिस के लिये दुआ़ का दरवाज़ा खोल दिया गया उस के लिये रह़मत के दरवाज़े खोल दिये गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत के सुवाल से ज़ियादा पसन्दीदा किसी चीज़ का सुवाल नहीं किया गया और बेशक दुआ़ नाज़िल शुदा और नाज़िल न होने वाली आफ़तों से नफ़्अ़ देती है तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! दुआ़ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، رقم ۳۵۵۹، ج ۵، ص ۳۲۲)

(1373)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ह़य्य**

और **करीम** है या'नी वोह इस बात से ह़या फ़रमाता है कि कोई बन्दा उस की बारगाह में हाथ उठाए और वोह उसे ख़ाली लौटा दे ।'' (جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب(۱۱۹)، رقم ۳۵۶۷، ج۵، ص۳۲۶)

(1374)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़ीम और करीम है और अपने बन्दे से ह़या फ़रमाता है कि वोह उस की बारगाह में हाथ उठाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन हाथों में कोई भलाई न रखे ।''

(مستدرک، کتاب الدعاء، باب ان اللہ عزوجل حی کریم یستحی من عبدہ رقم ۱۸۷۵، ج۲، ص۱۷۰)

(1375)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किसी सुवाल के लिये अपना चेहरा बुलन्द करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह चीज़ अ़ता फ़रमा देता है या तो जल्द ही उसे वोह चीज़ दे दी जाती है या फिर उस के लिये ज़ख़ीरा कर दी जाती है ।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، رقم ۹۷۹۲، ج۳، ص۴۵۸)

(1376)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सत़्ह़े ज़मीन पर जो मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई दुआ़ मांगता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की वोह मुराद पूरी फ़रमा देता है या उस से उसी की मिस्ल कोई बुराई हटा देता है जब तक बन्दा किसी गुनाह या क़त़्ए़ रेह़्मी के बारे में दुआ़ न मांगे ।'' तो ह़ाज़िरीन में से एक शख़्स ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया, ''फिर तो हम बहुत ज़ियादा दुआ़एं मांगा करेंगे ।'' तो इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बहुत ज़ियादा दुआ़एं क़बूल फ़रमाने वाला है ।'' (ترمذی، کتاب احادیث شتی، باب فی انتظار الفرج، رقم ۳۵۸۴، ج۵، ص۳۳۴)

(1377)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुसल्मान कोई ऐसी दुआ़ मांगता है जिस में कोई गुनाह या क़त़्ए़ रेह़्मी न हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तीन में से एक ख़स्लत अ़ता फ़रमाता है, (1) या तो उस की दुआ़ जल्द क़बूल कर ली जाती है (2) या उसे आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर दिया जाता है (3) या फिर उस से उसी की मिस्ल कोई बुराई दूर कर दी जाती है ।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''फिर तो हम बहुत ज़ियादा दुआ़एं मांगा करेंगे ।'' तो फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा दुआ़एं क़बूल फ़रमाने वाला है ।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید خدری، رقم ۱۱۱۳۳، ج۴، ص۳۷)

(1378)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस पर मोह़ताजी नाज़िल हो फिर वोह लोगों से सुवाल करने लगे तो उस की मोह़ताजी ख़त्म नहीं होगी और जिस पर मोह़ताजी त़ारी हो और वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से सुवाल करे तो क़रीब है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जल्द या ब देर रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाए।'' (ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی ھم الدنیا وحبھا، رقم ۲۳۳۳، ج۴، ص۱۴۶)

(1379)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से रिवायत करते हुए फ़रमाया, ''ऐ मेरे बन्दो ! मैं ने ज़ुल्म करने को अपने आप पर ह़राम कर दिया है और उसे तुम्हारे दरमियान भी ह़राम कर दिया है लिहाज़ा एक दूसरे पर ज़ुल्म न किया करो। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुमराह हो मगर जिसे मैं ने हिदायत दी तो मुझ से हिदायत चाहो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब भूके हो मगर जिसे मैं ने खिलाया तो मुझ से खाना त़लब करो मैं तुम्हें खिलाऊंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब बे लिबास हो मगर जिसे मैं ने कपड़े पहनाए तो मुझ से लिबास त़लब करो मैं तुम्हें लिबास अ़त़ा फ़रमाऊंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम दिन रात गुनाह करते हो और मैं तमाम गुनाहों को बख़्श देता हूं तो मुझ से मग़्फ़िरत त़लब करो मैं तुम्हें बख़्श दूंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम मेरे नुक़्सान को नहीं पहुंच सकते कि मुझे नुक़्सान पहुंचाओ और तुम मेरे नफ़्अ़ तक भी नहीं पहुंच सकते कि मुझे नफ़्अ़ पहुंचा सको। ऐ मेरे बन्दो ! अगर तुम्हारे अगले पिछले और तुम्हारे इन्सो जिन्न तुम में से किसी एक मुत्तक़ी परहेज़ गार की त़रह़ हो जाएं तो भी मेरी सल्त़नत में कुछ इज़ाफ़ा न होगा। ऐ मेरे बन्दो ! अगर तुम्हारे अगले पिछले तुम्हारे इन्सो जिन्न तुम में से सब से ज़ियादा गुनाहगार शख़्स की त़रह़ फ़ाजिर हो जाएं तो भी मेरे मुल्क में कोई कमी न होगी। ऐ मेरे बन्दो ! अगर तुम्हारे अगले पिछले इन्सो जिन्न किसी एक मकान में यक्जा हो कर मुझ से सुवाल करें और मैं हर इन्सान का सुवाल पूरा फ़रमा दूं तो भी मेरे ख़ज़ाने में कुछ कमी न आएगी मगर इतनी कि जैसे किसी सूई को समुन्दर में डाल दिया जाए तो वोह जितनी कमी करती है। ऐ मेरे बन्दो ! येह तुम्हारे आ'माल हैं जिन्हें मैं शुमार करता हूं फिर तुम्हें इन का पूरा अज्र अ़त़ा फ़रमाऊंगा लिहाज़ा जो भलाई पाए तो वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा करे और जो इस के इलावा पाए तो वोह अपने आप ही को मलामत करे।''

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब येह ह़दीसे मुबारक सुनाते तो घुटनों के बल खड़े हो जाया करते थे।''

(صحیح مسلم، کتاب البر...الخ، باب تحریم الظلم، رقم ۲۵۷۷، ص۱۳۹۳)

===

आयते करीमा पढ़ने का सवाब

(1380)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून (ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام) ने मछली के पेट में येह दुआ़ मांगी '' **لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ** '' (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बे जा हुवा (پ۱۷،انبیاء،۸۷)) लिहाज़ा जो मुसल्मान इस दुआ़ के वसीले से जो कुछ मांगेगा उस की दुआ़ क़बूल की जाएगी।''

(ترمذی،کتاب الدعوات،باب(۱۵)رقم ۳۵۱۶،ج۵،ص۳۰۲)

(1381)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को कहते हुए सुना, '' اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاَنِّیْ اَشْھَدُ اَنَّکَ اَنْتَ اللّٰہُ لَااِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से इस बात के वसीले से सुवाल करता हूं कि मैं गवाही देता हूं कि तू ही **अल्लाह** है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तू ऐसा तन्हा और बे नियाज़ है जिस ने न किसी को जना और न उसे किसी ने जना और कोई उस का हमसर नहीं।''

तो इर्शाद फ़रमाया, ''तुम ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के उस इस्म के वसीले से दुआ़ मांगी है कि जब इस के वसीले से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से सुवाल किया जाता है तो वोह ज़रूर अ़त़ा फ़रमाता है और जब इस के वसीले से दुआ़ मांगी जाती है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे क़बूल फ़रमाता है।'' (سنن ابوداؤد،کتاب الوتر،باب الدعاء،رقم ۱۴۹۳،ج۲،ص۱۱۳)

(1382)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने इन पांच कलिमात के वसीले से दुआ़ मांगी तो वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से जो चीज़ भी मांगेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे अ़त़ा फ़रमा देगा वोह कलिमात येह हैं

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ

तरजमा : **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** सब से बड़ा है **अल्लाह** तआ़ला के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाही है और उस की ख़ूबियां हैं और वोह हर शै पर क़ादिर है **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और नेकी की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की कुव्वत **अल्लाह** ही की त़रफ़ से है।'' (مجمع الزوائد،کتاب الادعیہ باب فیما یستفتح،الخ،رقم ۱۷۲۶۴،ج۱۰،ص۲۴۱)

(1383)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को يَا ذَالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام (या'नी ऐ अ-ज़्म-तो बुज़ुर्गी वाले) कहते हुए सुना तो फ़रमाया, ''अब दुआ मांगो कि तुम्हारी दुआ क़बूल होगी।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی کلمات...الخ، رقم ۲، ج ۲، ص ۳۱۷)

(1384)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का गुज़र हज़रते सय्यिदुना अबू अयाश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़रीब से हुवा तो वोह नमाज़ पढ़ते हुए येह कह रहे थे

''اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاَنَّ لَکَ الْحَمْدُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ یَاحَنَّانُ یَامَنَّانُ یَابَدِیْعَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ یَا ذَالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ''

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं इस बात के वसीले से कि तमाम ता'रीफ़ें तेरे लिये हैं तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं ऐ बहुत ज़ियादा रहम फ़रमाने वाले ऐ बहुत ज़ियादा एहसान फ़रमाने वाले ऐ ज़मीनो आस्मान को पैदा फ़रमाने वाले ऐ इज़्ज़तो जलाल वाले।''

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक इस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस इस्मे आ'ज़म के वसीले से दुआ मांगी है जिस के वसीले से दुआ मांगी जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर क़बूल फ़रमाता है और सुवाल किया जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर अता फ़रमाता है।'' एक रिवायत में يَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ के अल्फ़ाज़ ज़ियादा हैं। (رواہ احمد وابوداود والنسائی وابن حبان والحاکم)

===
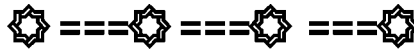
अपने भाई की ग़ैर मौजू-दगी में उस के लिये दुआ मांगने की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّار ٥ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ط وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ٥ (پ۲،البقرۃ:۲۰۱،۲۰۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई यूं कहता है कि ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा ऐसों को उन की कमाई से भाग (या'नी ख़ुश नसीबी) है और **अल्लाह** जल्द हिसाब करने वाला है।

(1385)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि, ''जो मुसल्मान बन्दा अपने भाई की ग़ैर मौजू-दगी में उस के लिये दुआ मांगता है तो उस का मुवक्कल फ़िरिश्ता कहता है कि तेरे लिये भी इस की मिस्ल है।''

एक रिवायत में है कि मक्की म-दनी सुल्तान, रह़मते आ-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि ''मुसल्मान आदमी की अपने भाई की ग़ैर मौजू-दगी में उस के लिये की जाने वाली दुआ मक़्बूल है और उस के सर पर एक फ़िरिश्ता होता है जब भी वोह अपने भाई के लिये भलाई की दुआ मांगता है तो वोह फ़िरिश्ता आमीन कहता है और कहता है कि तेरे लिये भी उस की मिस्ल है।''

(مسلم، کتاب الذکر والدعاء، رقم ۲۷۳۲، باب فضل الدعاء...الخ، ص۱۴۶۲)

(1386)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीन दुआएं ऐसी हैं जिन के मक़्बूल होने में कोई शक नहीं वालिद की दुआ, मज़्लूम की दुआ और मुसाफ़िर की दुआ।''

(ترمذی، کتاب البر والصلہ، باب ماجاء فی دعوۃ الوالدین، رقم ۱۹۱۲، ج۳، ص۳۶۲)

(1387)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि ''सब से जल्द क़बूल होने वाली दुआ वोह है जो बन्दा किसी के लिये उस की ग़ैर मौजू-दगी में करे।''

(سنن ابی داوٗد، کتاب الوتر، باب الدعاء بظہر الغیب، رقم ۱۵۳۴، ج۲، ص۱۲۷)

जन्नत का सुवाल और जहन्नम से पनाह मांगने का सवाब

(1388)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो बन्दा सात मरतबा जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहती है, ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे फुलां बन्दे ने मुझ से पनाह मांगी है लिहाज़ा तू उसे पनाह अ़ता फ़रमा।'' और जो बन्दा सात मरतबा जन्नत का सुवाल करता है तो जन्नत कहती है, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे फुलां बन्दे ने मेरा सुवाल किया है लिहाज़ा उसे जन्नत में दाखि़ल फ़रमा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ والنار، باب الترغیب فی سوال الجنۃ...الخ، رقم ۳، ج۴، ص۲۴۳)

(1389)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तीन मरतबा जन्नत का सुवाल करता है तो जन्नत कहती है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे जन्नत में दाखि़ल फ़रमा।'' और जो तीन मरतबा जहन्नम से पनाह मांगता है तो जहन्नम कहती है, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे जहन्नम से पनाह अ़ता फ़रमा।''

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی صفۃ انھار الجنۃ، رقم ۲۵۸۱، ج۴، ص۲۵۷)

इस्तिग़फ़ार करने की फ़ज़ीलत

कुरआने ह़कीम फ़ुरक़ाने मजीद में कई मक़ाम पर इस्तिग़फ़ार का बयान है चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪ وَلَمْ یُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ ۝ اُولٰٓىٕكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ۝ (پ۴، آل عمران: ۱۳۵۔۱۳۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जाएं ऐसों को बदला उन के रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और कामियों (नेक लोगों) का क्या अच्छा नेग (या'नी इन्आ़म) है।

(2) وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِیْمًا ۝ (پ۵، النساء: ۶۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

(3) وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِیُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِیْهِمْ ؕ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ یَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ (پ۹، الانفال: ۳۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** का काम नहीं कि उन्हें अ़ज़ाब करे जब तक ऐ मह़बूब तुम इन में तशरीफ़ फ़रमा हो और **अल्लाह** इन्हें अ़ज़ाब करने वाला नहीं जब तक वोह बख़्शिश मांग रहे हैं।

(4) وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَیْهِ یُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّیُؤْتِ كُلَّ ذِیْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ (پ۱۱، ھود: ۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि अपने रब से मुआ़फ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरत्ना (फ़ाएदा उठाना) देगा एक ठहराए वा'दे तक और हर फ़ज़ीलत वाले को उस का फ़ज़्ल पहुंचाएगा।

(5) وَیٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَیْهِ یُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَیْكُمْ مِّدْرَارًا وَّیَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ (پ۱۲، ھود: ۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मेरी क़ौम अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तुम पर ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी क़ुव्वत है उस से और ज़ियादा देगा।

(6) كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝ (پ۲۶،الذاریات:۱۷۔۱۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़्फ़ार करते ।

(7) فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝ وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّ بَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝ (پ۲۹،النوح:۱۰۔۱۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तो मैं ने कहा अपने रब से मुआफ़ी मांगो बेशक वोह बड़ा मुआफ़ फ़रमाने वाला है तुम पर शर्राटे का मींह (मूसला धार बारिश) भेजेगा और माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिये बाग़ बना देगा और तुम्हारे लिये नहरें बनाएगा ।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1390)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ मेरे बन्दो ! मैं ने ज़ुल्म करने को अपने आप पर हराम कर दिया है और इसे तुम्हारे दरमियान भी हराम कर दिया है लिहाज़ा एक दूसरे पर ज़ुल्म न किया करो । ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुमराह हो मगर जिसे मैं ने हिदायत दी तो मुझ से हिदायत चाहो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा । ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब भूके हो मगर जिसे मैं ने खिलाया तो मुझ से खाना तलब करो मैं तुम्हें खिलाऊंगा । ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब बे लिबास हो मगर जिसे मैं ने कपड़े पहनाए तो मुझ से लिबास तलब करो मैं तुम्हें लिबास अता फ़रमाऊंगा । ऐ मेरे बन्दो ! तुम दिन रात गुनाह करते हो और मैं तमाम गुनाहों को बख़्श देता हूं तो मुझ से मग़्फ़िरत तलब करो मैं तुम्हें बख़्श दूंगा ।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तबा-र-क व तआला फ़रमाता है, ''ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुनाहगार हो मगर जिसे मैं ने बचाया, लिहाज़ा मुझ से मग़्फ़िरत का सुवाल करो, मैं तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दूंगा और तुम में से जिस ने यक़ीन कर लिया कि मैं बख़्श देने पर क़ादिर हूं फिर मुझ से मेरी कुदरत के वसीले से इस्तिग़्फ़ार किया तो मैं उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दूंगा ।'' (سنن ابن ماجہ،کتاب الزھد باب ذکر التوبۃ،رقم ۴۲۵۷،ج۴،ص۴۹۵)

(1391)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दा जब एक गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है फिर अगर वोह तौबा करे और उस गुनाह से बाज़ आ जाए और इस्तिग़्फ़ार करे तो उस का दिल चमका दिया जाता है और अगर वोह मज़ीद गुनाह करे तो उस सियाही में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है यहां तक कि उस के दिल पर ग़िलाफ़ आ जाता है येह वोही ज़ंग है जिसे **अल्लाह** तआला ने कुरआने पाक में यूं ज़िक्र फ़रमाया है,

كَلَّا بَلْ ٜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ0(پ۳۰،المطففین:۱۴) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने ।

(ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ (ویل للمطففین) رقم ۳۳۴۵، ج۵، ص۲۲۰)

(1392)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक तांबे की त़रह़ दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और उस की जिला (या'नी सफ़ाई) इस्तिग़्फ़ार करना है ।''

(مجمع الزوائد، کتاب التوبہ، باب ماجاء فی الاستغفار، رقم ۱۷۵۷۵، ج۱۰، ص۳۴۶)

(1393)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है, ''ऐ इब्ने आदम ! जब तू मुझे पुकारता है और मुझ से उम्मीद रखता है तो मैं तेरे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा देता हूं और मुझे कोई परवाह नहीं । ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आस्मान के बादलों के बराबर भी पहुंच जाएं फिर तू मुझ से बख़्शिश मांगे तो मैं तेरी ख़त़ाएं बख़्श दूंगा । ऐ इब्ने आदम ! अगर तू मेरे पास गुनाहों से ज़मीन भर कर भी ले आए फिर मुझ से इस ह़ाल में मुलाक़ात करे कि तूने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो तो मैं तेरे ज़मीन भर गुनाहों को भी बख़्श दूंगा ।''

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل التوبہ والاستغفار، رقم ۳۵۵۱، ج۵، ص۳۱۸)

(1394)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब इब्लीस ने कहा कि ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं तेरे बन्दों को उस वक़्त तक बहकाता रहूंगा जब तक उन की रूहें उन के जिस्म में रहेंगी ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, ''मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक वोह मुझ से बख़्शिश मांगते रहेंगे मैं उन की मग़्फ़िरत करता रहूंगा ।''

(مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، رقم ۱۱۲۳۷، ج۴، ص۵۸)

(1395)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुझे उस ज़ात की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है अगर तुम गुनाह करना छोड़ दो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें ले जाएगा और ऐसी क़ौम को लाएगा जो गुनाह करेगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत चाहेगी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की मग़्फ़िरत फ़रमा दे ।''

(مسلم، کتاب التوبہ، باب سقوط الذنوب بالاستغفار، رقم ۲۷۴۹، ص۱۴۷۰)

(1396)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने इस्तिग़्फ़ार को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की हर परेशानी दूर फ़रमाएगा और हर तंगी से उसे राह़त अ़ता फ़रमाएगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा।'' (ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فی الاستغفار، رقم ۳۸۱۹، ج۴، ص۲۵۷)

(1397)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़वाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो इस बात को पसन्द करता है कि उस का नामए आ'माल उसे ख़ुश करे तो उसे चाहिये कि उस में इस्तिग़्फ़ार का इज़ाफ़ा करे।'' (مجمع الزوائد، کتاب التوبۃ، باب الاکثار من الاستغفار، رقم ۱۷۵۷۹، ج۱۰، ص۳۴۷)

(1398)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुसर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जो अपने नामए आ'माल में इस्तिग़्फ़ार को कसरत से पाए।'' (ابن ماجہ، کتاب الادب، باب الاستغفار، رقم ۳۸۱۸، ج۴، ص۲۵۷)

(1399)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं वोह शख़्स हूं कि जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़दीस सुनता हूं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उस से जितना चाहे नफ़्अ़ दे देता है और जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कोई सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मुझे कोई ह़दीस सुनाते हैं तो मैं उन से ह़ल्फ़ ले लेता हूं और जब वोह ह़ल्फ़ उठा लेते हैं तो मैं उन की तस्दीक़ करता हूं और मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़दीस सुनाई और उन्हों ने सच फ़रमाया कि मैं ने म-दनी आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो बन्दा गुनाह कर बैठे फिर अह़सन त़रीक़े से वुज़ू करे फिर खड़े हो कर दो रक्अ़तें अदा करे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़्फ़ार करे तो उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।'' फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई

وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ۪ (پ۴، آل عمران: ۱۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें।

(ترمذی، کتاب الصلوۃ، ما جاء فی الصلوۃ عند التوبہ، رقم ۴۰۶، ج۱، ص۴۱۴ بتغیر)

(1400)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने दादा से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और अर्ज़ किया कि ''हाए मेरे गुनाह ! हाए मेरे गुनाह !'' उस ने येह बात दो या तीन मरतबा कही तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया कि ''येह दुआ पढ़ो ''اَللّٰھُمَّ مَغْفِرَتُکَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِیْ وَرَحْمَتُکَ اَرْجٰی عِنْدِیْ مِنْ عَمَلِیْ'' या'नी ऐ **अल्लाह** ! तेरी मग़्फ़िरत मेरे गुनाहों से ज़ियादा वसीअ है और मैं अपने अमल के मुक़ाबले में तेरी रहमत की ज़ियादा उम्मीद रखता हूं।'' उस ने येह कलिमात दोहरा दिये फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया, ''दोबारा येह कलिमात कहो।'' तो उस ने येह कलिमात दोबारा दोहरा दिये। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया, ''दोहराओ।'' उस ने फिर दोहरा दिये तो आप ने फ़रमाया, ''खड़े हो जाओ ! बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दी है।''

(المستدرک،کتاب الدعاء والتکبیر،باب دعاء مغفرۃ الذنوب الکثیرۃ،رقم ۲۰۳۸،ج۲،ص۲۳۸)

(1401)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक सफ़र के मौक़अ पर इर्शाद फ़रमाया, ''इस्तिग़्फ़ार करो।'' तो हम इस्तिग़्फ़ार करने लगे। फिर फ़रमाया, ''इसे सत्तर मरतबा पूरा करो।'' जब हम ने येह ता'दाद पूरी कर दी तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो आदमी या औरत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से एक दिन में सत्तर मरतबा इस्तिग़्फ़ार करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के सात सो गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और बेशक जो बन्दा दिन या रात में सात सो से ज़ियादा गुनाह करे वोह बड़ा बद नसीब है।''

(بیہقی شعب الایمان،باب فی محبۃ اللہ،فصل فی ادامۃ ذکراللہ عزوجل،رقم ۶۵۲،جلد۱،ص۴۴۲)

(1402)...... हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद ने मेरे दादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत करते हुए मुझे बताया कि मैं ने सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने येह कहा ''اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ الَّذِیْ لَااِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ'' तरजमा : मैं **अल्लाह** तआला से बख़्शिश चाहता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है निगहबान है और मैं उस के हुज़ूर तौबा करता हूं।'' उस की मग़्फ़िरत कर दी जाएगी अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से भागा हो।''

(سنن الترمذی،کتاب الدعوات،رقم ۳۵۸۸،ج۵،ص۳۳۶)
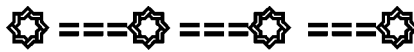
दुरूदे पाक के फ़ज़ाइल

अल्लाह तआला फ़रमाता है,

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝ (پ۲۲،الاحزاب:۵۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो ।

(1403)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस मरतबा रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा ।''

(مسلم،باب،کتاب الصلاۃ،الصلوۃ علی النبی صلی اللہ علیہ وسلم،رقم ۴۰۸،ص۲۱۶)

(1404)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी आप के पीछे हो लिया । आप एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए । आप ने सज्दे को इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे मुबा-रका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो । चुनान्चे मैं आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब हो कर आप को बग़ौर देखने लगा । जब आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया, ''ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! क्या हुवा ?'' मैं ने जवाबन अपना ख़दशा आप पर ज़ाहिर कर दिया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिब्रईले अमीन ने मुझ से कहा, ''क्या आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को येह बात ख़ुश नहीं करती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रह़मत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती नाज़िल फ़रमाऊंगा ।''

(مسند احمد،حدیث عبدالرحمٰن بن عوف،رقم ۱۶۶۲،ج۱،ص۴۰۶)

एक रिवायत में है कि हम में से चार या पांच सहाबए किराम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत करने के लिये दिन रात मौजूद रहते थे । एक मरतबा मैं आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप अपने घर से निकल चुके थे । मैं भी आप के पीछे पीछे चल दिया । आप खजूर के एक बाग़ में दाख़िल हुए और वहां नमाज़ अदा फ़रमाई । आप ने सज्दे को इतना त़वील कर दिया कि मैं समझा कि शायद **अल्लाह** तआला ने आप की रूहे मुबारक को क़ब्ज़ कर लिया है । जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सरे मुबारक सज्दे से उठाया तो मुझे पुकार कर फ़रमाया, ''क्या हुवा ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ने इतना त़वील सज्दा किया कि मैं समझा शायद **अल्लाह** तआला ने अपने रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह क़ब्ज़ कर ली है और अब मैं आयन्दा इन्हें कभी नहीं देख सकूंगा ।''

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "मैं अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा करने के लिये सज्दा कर रहा था कि उस ने मेरी उम्मत के मुआ-मले में उ़ज़्र क़बूल फ़रमा लिया, जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे दस नेकियां अ़ता फ़रमाएगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा।" (مسند ابی یعلی مسند عبد الرحمٰن بن عوف، رقم ۸۵۵، ج ۱، ص ۳۵۳)

(1405)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الادعیہ، رقم ۹۰۱، ج ۲، ص ۱۳۰ بتغیر)

(1406)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरदा बिन नियार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मेरी उम्मत से जिस ने सिद्क़े दिल से एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस मरतबा रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा।" (المعجم الکبیر، رقم ۵۱۳، ج ۲۲، ص ۱۹۶)

(1407)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक मरतबा सुब्ह़ के वक़्त सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरे पर ख़ुशी के आसार नुमायां थे। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! आज आप बहुत ख़ुश नज़र आ रहे हैं?" फ़रमाया, "मेरे पास मेरे रब عَزَّ وَجَلَّ की त़रफ़ से एक आने वाला आया और मुझ से अ़र्ज़ किया कि आप का जो उम्मती आप पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा और उस पर इतनी ही रह़मत भेजेगा।" (مسند احمد، حدیث ابی طلحہ، رقم ۱۶۳۵۲، ج ۵، ص ۵۰۹)

एक रिवायत में है कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो आप के चेहरे के नुक़ूश ख़ुशी से चमक रहे थे। मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! आज मैं आप को जितना ख़ुश देख रहा हूं इतना कभी नहीं देखा।" फ़रमाया, "मैं क्यूं ख़ुश न होउं कि जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام कुछ देर पहले ही मेरे पास से गए हैं, उन्हों ने मुझ से कहा कि "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم! आप का जो उम्मती आप पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटाएगा और उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा।" और फ़िरिश्ता भी वोही कहता है जो वोह शख़्स आप के लिये कहता है। मैं ने इस्तिफ़्सार किया कि "ऐ जिब्राईल! वोह कैसा फ़िरिश्ता है?" तो उन्हों ने जवाब दिया, "जब आप की पैदाइश हुई ह़त्ता कि आप

मब्ऊ़स हुए तब से **अल्लाह** तआ़ला ने एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है कि जब आप का उम्मती आप पर दुरूद भेजता है तो वोह कहता है ''صَلَّی اللہُ عَلَیْکَ وَسَلَّم या'नी आप पर **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत और सलामती हो।''

(1408)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और एक फ़िरिश्ता उस दुरूद को मुझ तक पहुंचाने पर मुक़र्रर है।'' (طبرانی کبیر، رقم ۷۶۱۱، ص ۱۳۴، ج ۸)

(1409)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुझ पर दुरूद पढ़ता है उस का दुरूद मुझ तक पहुंच जाता है और मैं उस के लिये इस्तिग़फ़ार करता हूं इस के इलावा उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं।'' (طبرانی فی الاوسط، رقم ۱۶۴۲، ج ۱، ص ۴۴۶)

(1410)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब कोई मुझ पर सलाम भेजता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरी रूह़ को लौटा देता है ताकि मैं उस के सलाम का जवाब दूं।'' (سنن ابی داود، کتاب المناسک، باب زیارۃ القبور، رقم ۲۰۴۱، ج ۲، ص ۳۱۵)

(1411)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम जहां भी रहो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंच जाता है।''

(طبرانی کبیر، رقم ۲۷۲۹، ص ۸۲، ج ۳)

(1412)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते घूम फिर कर मेरी उम्मत के सलाम मुझ तक पहुंचाते हैं।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الادعیہ، رقم ۹۱۰، ج ۲، ص ۱۳۴)

(1413)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुक़र्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख़्लूक़ की आवाज़ें सुनने की त़ाक़त अ़त़ा फ़रमाई है, क़ियामत तक जो कोई मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के बाप का नाम पेश करता है कहता है कि फ़ुलां बिन फ़ुलां ने आप पर दुरूदे पाक पढ़ा है।'' (مسند البزار، رقم ۱۴۲۵ ج ۴، ص ۲۵۵)

(1414)...... ह़ज़रते सय्यिदुना औस बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारे अय्याम में

सब से अफ़्ज़ल दिन जुमुआ़ है इस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیۡهِمُ السَّلَام को पैदा किया गया और इसी दिन क़ियामत क़ाइम होगी और इसी दिन सूर फूंका जाएगा, लिहाज़ा इस दिन में मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि तुम्हारा दुरूदे पाक मुझ तक पहुंचाया जाता है।'' सह़ाबए किराम عَلَیۡهِمُ الرِّضۡوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के विसाल के बा'द दुरूदे पाक आप तक कैसे पहुंचाया जाएगा ?'' इर्शाद फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ السَّلَام के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमाया है।'' (سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، باب فضل یوم الجمعۃ، رقم ۱۰۴۷، ج۱، ص۳۹۱)

(1415)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि येह यौमे मश्हूद है, इस में मलाएका ह़ाज़िर होते हैं और तुम में से जो भी मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस के फ़ारिग़ होने से पहले उस का दुरूद मुझ तक पहुंचा दिया जाता है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''और आप के विसाल के बा'द ?'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अम्बियाए किराम عَلَیۡهِمُ السَّلَام के अज्साम को खाना ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ذکر وفاتہ ودفنہ، رقم ۱۶۳۷، ج۲، ص۲۹۱)

(1416)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जुमुआ़ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत किया करो क्यूं कि मेरी उम्मत का दुरूद हर जुमुआ़ के दिन मुझ पर पेश किया जाता है, (क़ियामत के दिन) लोगों में से मेरे ज़ियादा क़रीब वोही शख़्स होगा जिस ने (दुन्या में) मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा होगा।''

(السنن الکبری للبیہقی، کتاب الجمعۃ، باب مایومر بہ فی لیلۃ الجمعۃ، رقم ۵۹۹۰، ج۳، ص۳۵۴)

(1417)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते उस पर सत्तर रह़मतें नाज़िल फ़रमाते हैं।''

(مسند امام احمد بن حنبل، حدیث عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۷۶۶، ج۲، ص۶۱۴)

(1418)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो मरतबा रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और क़ियामत के दिन उसे शु-हदा के साथ जगह अ़त़ा फ़रमाएगा।'' (المعجم الاوسط، رقم ۷۲۳۵، ج۵، ص۲۵۲)

(1419)...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बन्दा जब तक मुझ पर दुरूद पढ़ता रहता है, मलाएका उस पर रह़मत नाज़िल करते रहते हैं अब बन्दे की मरज़ी है कि वोह दुरूदे पाक कम पढ़े या ज़ियादा।'' (مسند امام احمد بن حنبل، حدیث عامر بن ربیعہ، رقم ۱۵۶۸۰، ج۵، ص ۳۲۴)

(1420)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क़ियामत के दिन मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर कसरत से दुरूद पढ़ा होगा।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الادعیہ، رقم ۹۰۸، ج۲، ص ۱۳۳)

(1421)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ब्बान बिन मुन्क़िज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अपनी दुआ़ का तिहाई ह़िस्सा आप पर दुरूदे पाक के लिये ख़ास कर दूं ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''हां ! अगर तुम चाहो।'' उस ने अ़र्ज़ किया ''और अगर दो तिहाई ह़िस्सा दुरूदे पाक के लिये वक़्फ़ कर दूं ?'' फ़रमाया ''हां।'' फिर उस ने अ़र्ज़ किया, ''और अगर पूरा वक़्त आप पर दुरूदे पाक ही पढ़ता रहूं ?'' तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''फिर तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी दीनी और दुन्यवी हर परेशानी में तुझे किफ़ायत करेगा।''

(المعجم الکبیر، رقم ۳۵۷۴، ج۴، ص ۳۵)

(1422)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब रात का चौथाई ह़िस्सा गुज़र जाता तो नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियाम करते और फिर फ़रमाते, ''ऐ लोगो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करो, पहले सूर फूंके जाने का वक़्त क़रीब आ गया, इस के बा'द दूसरा सूर फूंका जाएगा, मौत अपनी तमाम तर ह़श्र सामानियों के साथ आने वाली है, अ़न्क़रीब मौत आ जाएगी।''

तो ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं दुरूद की कसरत करता हूं, मैं आप पर दुरूद पढ़ने के लिये कितना वक़्त मुक़र्रर करूं ?'' फ़रमाया, ''जितना चाहो कर लो।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''चौथाई ?'' फ़रमाया, ''जितना चाहो कर लो लेकिन अगर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ोगे तो बेहतर है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''निस्फ़ ?'' फ़रमाया, ''जितना चाहो पढ़ो मगर ज़ियादा पढ़ोगे तो बेहतर है।'' अ़र्ज़ किया, ''मैं सारा वक़्त आप पर दुरूदे पाक पढ़ता रहूंगा।'' फ़रमाया, ''फिर तो येह अ़मल तुम्हारी परेशानियों को किफ़ायत करेगा और तुम्हारी मग़्फ़िरत का सबब बन जाएगा।'' (المستدرک، کتاب التفسیر، باب اکثروا علی الصلوۃ فی یوم الجمعۃ، رقم ۳۶۳۱، ج۳، ص ۱۹۸)

(1423)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान के पास स-दक़ा करने को कुछ न हो उसे चाहिये कि अपनी दुआ में येह कलिमात कह लिया करे

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ وَصَلِّ عَلَی الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! अपने बन्दे और रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा मुअमिनीन व मुअमिनात और मुसल्मान मर्दों और औरतों पर रह़मत नाज़िल फ़रमा ।'' क्यूं कि येह ज़कात है और मोमिन कभी ख़ैर (भलाई) से शिकम सैर नहीं होता यहां तक कि जन्नत उस का ठिकाना होती है ।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان کتاب الرقائق، باب الأدعیہ، رقم ۹۰۰، ج ۲، ص ۱۳۰)

(1424)...... ह़ज़रते सय्यिदुना रुवैफ़िअ बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने येह कहा '' اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْہُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَکَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा और उन्हें क़ियामत के दिन अपने क़ुर्ब वाला मक़ाम अ़ता फ़रमा ।'' तो उस पर मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई ।'' (طبرانی کبیر، رقم ۴۴۸۰، ج ۵، ص ۲۵)

(1425)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने येह पढ़ा

''جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَاھُوَ اَھْلُہٗ (तरजमा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हमारी त़रफ़ से ऐसी जज़ा अ़ता फ़रमाए जिस के वोह अह्ल हैं) ।'' उस ने सत्तर कातिब फ़िरिश्तों को एक हज़ार दिन तक मसरूफ़ कर दिया ।'' (الطبرانی اوسط، رقم ۲۳۵، ج ۱، ص ۸۲)

(1426)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब आपस में मह़ब्बत करने वाले दो दोस्त मुलाक़ात करते हैं और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले ही उन दोनों के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं ।'' (مسند ابویعلی، رقم ۲۹۵۱، ج ۳، ص ۹۵)

(1427)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''बेशक दुआ ज़मीनो आस्मान के दरमियान रुक जाती है और जब तक तुम अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक न पढ़ लो उस में से कोई चीज़ बुलन्द नहीं होती ।'' (جامع الترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی فضل الصلاۃ، رقم ۴۸۶، ج ۲۸)

(1428)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ''हर दुआ रोक दी जाती है जब तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद न पढ़ लिया जाए ।'' (طبرانی اوسط، رقم ۷۲۱، ج ۱، ص ۲۱۱)

===

हुस्ने अख़्लाक़ का सवाब
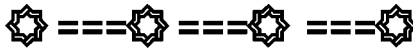
सिलए रेहमी का सवाब

अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّاۤ اِیَّاهُ وَبِالْوَالِدَیْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَاۤ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَاۤ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِیْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّیٰنِیْ صَغِیْرًا ۝ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِیْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِیْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِیْنَ غَفُوْرًا ۝

(پ۱۵، بنی اسرائیل: ۲۳، ۲۴، ۲۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारे रब ने हुक्म फ़रमाया कि उस के सिवा किसी को न पूजो और मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उन में एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन से हुं न कहना और उन्हें न झिड़क्ना और उन से ता'ज़ीम की बात कहना और उन के लिये आ़जिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से और अ़र्ज़ कर कि ऐ मेरे रब तू इन दोनों पर रह्म कर जैसा कि इन दोनों ने मुझे छुटपन (बचपन) में पाला तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे दिलों में है अगर तुम लाइक़ हुए तो बेशक वोह तौबा करने वालों को बख़्शने वाला है।

सूरए लुक़्मान में है,

وَوَصَّیْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَیْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِیْ عَامَیْنِ اَنِ اشْكُرْ لِیْ وَلِوَالِدَیْكَ ؕ اِلَیَّ الْمَصِیْرُ ۝ وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِیْ مَا لَیْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِی الدُّنْیَا مَعْرُوْفًا ۖ وَّاتَّبِعْ سَبِیْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَیَّ ۚ ثُمَّ اِلَیَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

(پ۲۱، لقمان: ۱۴، ۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने आदमी को उस के मां बाप के बारे में ताकीद फ़रमाई उस की मां ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी झैलती हुई और उस का दूध छूटना दो बरस में है येह कि हक़ मान मेरा और अपने मां बाप का आख़िर मुझी तक आना है और अगर वोह दोनों तुझ से कोशिश करें कि मेरा शरीक ठहराए ऐसी चीज़ को जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहना न मान और दुन्या में अच्छी त़रह उन का साथ दे और उस की राह चल जो मेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया फिर मेरी ही त़रफ़ तुम्हें फिर आना है तो मैं बता दूंगा जो तुम करते थे।

जब कि सूरए अह्क़ाफ़ में है,

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰۤى اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ؕ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْۤ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝ (پ۲۶،الاحقاف:۱۵،۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने आदमी को हुक्म किया कि अपने मां बाप से भलाई करे इस की मां ने इसे पेट में रखा तक्लीफ़ से और जनी इस को तक्लीफ़ से और इसे उठाए फिरना और इस का दूध छुड़ाना तीस महीने में है यहां तक कि जब अपने ज़ोर को पहुंचा और चालीस बरस का हुवा अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी ने'मत का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर और मेरे मां बाप पर की और मैं वोह काम करूं जो तुझे पसन्द आए और मेरे लिये मेरी औलाद में सलाह़ (नेकी) रख मैं तेरी त़रफ़ रुजूअ़ लाया और मैं मुसल्मान हूं येह हैं वोह जिन की नेकियां हम क़बूल फ़रमाएंगे और उन की तक़्सीरों से दर गुज़र फ़रमाएंगे जन्नत वालों में सच्चा वा'दा जो उन्हें दिया जाता था।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1429)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल कौन सा है ?" फ़रमाया, "वक़्त पर नमाज़ पढ़ना।" मैं ने अ़र्ज़ किया "फिर कौन सा ?" फ़रमाया, "वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना।"

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب وسمی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، رقم ۷۵۳۴، ج۴، ص۵۸۹)

(1430)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तीन शख़्स किसी रास्ते से गुज़र रहे थे अचानक बारिश शुरूअ़ हो गई। उन्हों ने पहाड़ की एक ग़ार में पनाह ली अचानक ग़ार के दहाने पर एक चट्टान आ गिरी और वोह लोग ग़ार में क़ैद हो कर रह गए। वोह एक दूसरे से कहने लगे कि अपने वोह नेक आ'माल याद करो जिन्हें तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया था और उन के वसीले से दुआ़ करो शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस चट्टान को हटा दे। तो उन में से एक ने कहा, "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे वालिदैन बूढ़े थे और मेरे

छोटे छोटे बच्चे थे। मैं बकरियां चराया करता था। जब घर वापस आता तो दूध दोह कर अपने बच्चों से पहले अपने वालिदैन को दूध पिलाया करता था। एक मरतबा मैं चारे की तलाश में निकला तो वापसी पर मुझे रात हो गई जब मैं घर आया तो अपने वालिदैन को सोते हुए पाया। मैं ने अपने मा'मूल के मुताबिक़ दूध दोहा और उसे ले कर अपने वालिदैन के सिरहाने खड़ा हो गया। मैं ने उन को जगाना मुनासिब न समझा और न ही येह मुनासिब समझा कि मैं अपने वालिदैन से पहले अपने बच्चों को दूध पिलाऊं हालां कि मेरे बच्चे मेरे क़दमों में रो रहे थे। मेरा अपने वालिदैन के साथ येह मुआ-मला तुलूए फ़ज्र तक रहा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू जानता है कि मैं ने येह अमल तेरी रिज़ा के लिये किया था पस तू हमारे लिये इस चट्टान को हटा दे ताकि हम आस्मान को देख सकें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चट्टान को इस क़दर हटा दिया जिस से वोह आस्मान को देख सकते।''

(صحیح مسلم، کتاب الرقائق، باب قصۃ اصحاب الغار، رقم ۲۷۴۳، ص۱۴۶۵)

(1431)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर जिहाद की इजाज़त तलब की, तो आप ने फ़रमाया, ''क्या तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं?'' उस ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जी हां।'' फ़रमाया, ''उन्हीं में अपना जिहाद करो (या'नी उन की ख़िदमत करो येही तुम्हारा जिहाद है)।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب بر الوالدین، رقم ۲۵۴۹، ص۱۳۷۹)

(1432)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अहले यमन में से एक शख़्स ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ हिजरत कर के हाज़िर हुवा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से पूछा, ''क्या यमन में तुम्हारा कोई रिश्तेदार है?'' उस ने अर्ज़ किया, ''मेरे वालिदैन हैं।'' फ़रमाया, ''क्या उन्हों ने तुम्हें इजाज़त दी है?'' अर्ज़ किया, ''नहीं।'' फ़रमाया, ''उन की तरफ़ लौट जाओ और उन से इजाज़त तलब करो, अगर वोह इजाज़त दें तो जिहाद करो वरना उन की ख़िदमत में मश्ग़ूल हो जाओ।'' (سنن ابی داود، کتاب الجہاد، باب الرجل یغزو وابواہ کارھان، رقم ۲۵۳۰، ج۳، ص۲۵)

(1433)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि ''मैं हिजरत और जिहाद पर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअत करना चाहता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अज्र का तलब गार हूं।'' फ़रमाया, ''क्या तेरे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है?'' अर्ज़ किया, ''हां! बल्कि दोनों ज़िन्दा हैं।'' फ़रमाया, ''तो क्या तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सवाब के तलब गार हो?'' अर्ज़ किया ''जी हां।'' फ़रमाया, ''अपने वालिदैन की तरफ़ लौट जाओ और उन की अच्छे तरीक़े से उनकी ख़िदमत करो (येही तुम्हारा जिहाद है)।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب بر الوالدین، رقم ۲۵۴۹، ص۱۳۸۰)

एक रिवायत में है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, "मैं आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हाथ पर हिजरत की बैअ़त करने के लिये अपने वालिदैन को रोता हुवा छोड़ कर आया हूं।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "उन की त़रफ़ लौट जाओ और उन्हें उसी त़रह़ हंसाओ जिस त़रह़ उन्हें रुलाया है।"

(سنن ابی داود، کتاب الجھاد، باب فی الرجل یغزو وابواہ کارھان، رقم ۲۵۲۸، ج ۳، ص ۲۴)

(1434)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, "मैं जिहाद का शौक़ रखता हूं मगर इस की त़ाक़त नहीं रखता।" फ़रमाया, "तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा है?" अ़र्ज़ किया, "जी हां! मेरी मां है।" फ़रमाया, "तो उस की ख़िदमत में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की इत़ाअ़त करो जब तुम ऐसा कर लोगे तो तुम ह़ाजी, मो'तमिर (उ़म्रह करने वाले) और मुजाहिद का मरतबा पा लोगे।"

(المعجم الاوسط، رقم ۲۹۱۵، ج ۲، ص ۱۷۱)

(1435)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन जाहमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद ह़ज़रते सय्यिदुना जाहमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! मेरा जिहाद करने का इरादा हुवा तो मैं आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मश्वरा करने के लिये चला आया।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क्या तेरी मां है?" अ़र्ज़ किया, "हां।" फ़रमाया, "तो उस की ख़िदमत को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि जन्नत उस के क़दम के पास है।"

(سنن النسائی، کتاب الجھاد، باب فضل من یجاھد فی سبیل اللہ، ج ۶، ص ۱۱)

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाहमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से जिहाद के बारे में मश्वरा करने के लिये ह़ाज़िर हुवा तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क्या तेरे वालिदैन ज़िन्दा हैं?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "हां।" फ़रमाया, "उन की ख़िदमत ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि जन्नत उन के क़दमों के नीचे है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلاۃ، باب بر الوالدین، رقم ۱۲، ج ۳، ص ۲۱۷)

(1436)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! वालिदैन का अपनी औलाद पर क्या ह़क़ है?" फ़रमाया, "वोही तेरी जन्नत और दोज़ख़ हैं।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب بر الوالدین، رقم ۳۶۶۲، ج ۴، ص ۱۸۶)

(1437)...... ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन मुआ़विया सु-लमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर

अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना चाहता हूं।'' फ़रमाया, ''क्या तेरी मां ज़िन्दा है ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां।'' फ़रमाया, ''उस के क़दमों से लगे रहो जन्नत वहीं है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۸۱۶۲، ج۸، ص۳۱۱)

(1438)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास एक शख़्स आया और कहा ''मेरी एक बीवी है और मेरी मां मुझे अपनी बीवी को त़लाक़ देने का हुक्म देती है।'' तो उन्हों ने फ़रमाया : ''मैं ने म-दनी आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''वालिद जन्नत के दरवाज़ों में से वस्त़ी दरवाज़ा है चाहे तो इसे ज़ाएअ़ कर दो और चाहे तो इस की ह़िफ़ाज़त करो।''

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء من الفضل فی رضا الوالدین، رقم ۱۹۰۶، ج۳، ص۳۵۹)

एक रिवायत में है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आया और अ़र्ज़ किया कि ''मेरे वालिद मुझ से इसरार करते रहे यहां तक कि उन्हों ने मेरी शादी करा दी और अब वोह मुझ से अपनी बीवी को छोड़ने का कहते हैं।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''मैं न तो तुझे वालिदैन की ना फ़रमानी का कहूंगा और न ही अपनी बीवी को त़लाक़ देने का मश्वरा दूंगा बल्कि अगर तू चाहे तो मैं तुझे एक ऐसी ह़दीस सुनाता हूं जो मैं ने हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी कि ''वालिद जन्नत के दरवाज़ो में बीच वाला दरवाज़ा है चाहो तो इस दरवाज़े की ह़िफ़ाज़त करो या इसे छोड़ दो।'' रावी कहते हैं कि फिर उस शख़्स ने अपनी बीवी को त़लाक़ दे दी। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان کتاب البر والاحسان، باب حق الوالدین، رقم ۴۲۶، ج۱، ص۳۲۶)

(1439)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वालिद की रिज़ा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी वालिद की ना राज़गी में है।'' एक और रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा वालिदैन की रिज़ा में है।'' (سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء من الفضل فی رضاء الوالدین، رقم ۱۹۰۷، ج۳، ص۳۶۰)

(1440)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक इन्सान गुनाह की वजह से रिज़्क़ से मह़रूम कर दिया जाता है और तक़्दीर को दुआ़ ही टाल सकती है और उ़म्र में इज़ाफ़ा अच्छे बरताव से होता है।'' (ابن ماجہ، باب العقوبات، رقم ۴۰۲۲، ج۴، ص۳۶۹)

(1441)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दुआ़ ही तक़्दीर को टाल सकती है और नेक सुलूक ही उ़म्र में इज़ाफ़ा करता है।'' (سنن الترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء لا یرد القدر الا الدعاء، رقم ۲۱۴۶، ج۴، ص۵۵)

(1442)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे येह पसन्द हो कि उस की उ़म्र और रिज़्क़ में इज़ाफ़ा कर दिया जाए तो उसे चाहिये कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करे और अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेह़मी किया करे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب البر والصلاۃ، باب برالوالدین، رقم ۱۶، ج ۳، ص ۲۱۷)

(1443)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करता है उस के लिये ख़ुश ख़बरी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की उ़म्र में इज़ाफ़ा कर देता है।'' (المستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب من بر والدیہ زاد اللہ فی عمرہ، رقم ۷۳۳۹، ج ۵، ص ۲۱۳)

(1444)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''लोगों की औ़रतों को पाक दामन रहने दो तुम्हारी औ़रतें पाक दामन रहेंगी। अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक किया करो तुम्हारे बेटे तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करेंगे और जिस के पास उस का भाई मा'ज़िरत करने के लिये आया तो उसे चाहिये कि अपने भाई को मुआ़फ़ कर दे ख़्वाह वोह झूटा हो या सच्चा जो ऐसा नहीं करेगा हौ़ज़े कौसर पर न आ सकेगा।''

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب البر والصلۃ، باب بروا آباءکم تبرکم ابناءکم، رقم ۷۳۴۰، ج ۵، ص ۲۱۳)

(1445)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस की नाक ख़ाक आलूद हो फिर उस की नाक मिट्टी में मिल जाए।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! किस की ?'' फ़रमाया, ''जो अपने वालिदैन या इन में किसी एक को बुढ़ापे में पाए और (इन की ख़िदमत कर के) जन्नत में दाख़िल न हो सके।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب رغم من ادرک ابویہ، رقم ۲۵۵۱، ص ۱۳۸۱)

(1446)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अ़म्र कुशैरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो किसी मुसल्मान को आज़ाद करे तो उस का येह अ़मल उस के लिये जहन्नम से फ़िदया हो जाएगा और जो अपने वालिदैन में से किसी एक को पाए फिर भी उस की मग़्फ़िरत न हो तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे अपनी रह़मत से दूर फ़रमाए।''

(مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۱۹۰۵۲، ج ۷، ص ۲۸)

क़त्ए रेह़्मी के बा वुजूद सिलए रेह़्मी करने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

وَالَّذِیْنَ یَصِلُوْنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ اَنْ یُّوْصَلَ وَیَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَیَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ0 وَالَّذِیْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً وَّیَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ0 جَنّٰتُ عَدْنٍ یَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّیّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ یَدْخُلُوْنَ عَلَیْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ0 سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ0 (پ۱۳،الرعد:۲۱-۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जोड़ते हैं उसे जिस के जोड़ने का **अल्लाह** ने हुक्म दिया और अपने रब से डरते और ह़िसाब की बुराई से अन्देशा रखते हैं और वोह जिन्हों ने सब्र किया अपने रब की रिज़ा चाहने को और नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया और बुराई के बदले भलाई कर के टालते हैं उन्हीं के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है बसने के बाग़ जिन में वोह दाख़िल होंगे और जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में और फ़िरिश्ते हर दरवाज़े से उन पर येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।

और फ़रमाता है

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِیْنَ وَابْنَ السَّبِیْلِ ؕ ذٰلِكَ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ یُرِیْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ0 (پ۲۱،الروم:۳۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो रिश्तेदार को उस का ह़क़ दो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को येह बेहतर है उन के लिये जो **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हैं और इन्ही का काम बना।

इस बारे में अह़ादीसे मुबा-रका :

(1447)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक आ'राबी ने सफ़र के दौरान नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी की नकेल पकड़ कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे ऐसे अ़मल के बारे में बताइये जो मुझे जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर कर दे।'' सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने तवक़्क़ुफ़ फ़रमाया और फिर अपने सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ देखते हुए फ़रमाया ''येह हिदायत पा गया।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''ह़ुज़ूर ! आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अभी क्या इर्शाद फ़रमाया ?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना जुम्ला दोहरा दिया फिर इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और सिलए रेह़्मी किया करो।'' फिर फ़रमाया, ''ऊंटनी को रास्ता दो।''

(صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب بیان الایمان الذی یدخل بہ الجنۃ،رقم ۱۳،ص۲۶)

एक रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "और रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहमी करो।" जब वोह लौट गया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "मैं ने इसे जिस चीज़ का हुक्म दिया है अगर येह उस पर अ़मल करे तो जन्नत में दाख़िल होगा।"

(1448)...... ख़स्अ़म क़बीला के एक शख़्स से मरवी है कि मैं ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के झुरमट में रोनक़ अफ़रोज़ थे। मैं ने अ़र्ज़ किया, "क्या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही वोह शख़्स हैं जो अपने आप को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का रसूल कहते हैं?" फ़रमाया, "हां।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल कौन सा है?" फ़रमाया "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर ईमान लाना।" मैं ने अ़र्ज़ किया "फिर कौन सा?" फ़रमाया, "सिलए रेहमी करना।"

मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से ना पसन्दीदा अ़मल कौन सा है?" फ़रमाया, "किसी को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शरीक ठहराना।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "फिर कौन सा?" फ़रमाया, "रिश्तेदारों से क़त्ए तअ़ल्लुक़ी करना।" मैं ने अ़र्ज़ किया फिर कौन सा?" फ़रमाया, "बुराई का हुक्म देना और भलाई से मन्अ़ करना।"

(1449)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि "जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने मेहमान का इक्राम करे और जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अपने रिश्तादारों से तअ़ल्लुक़ जोड़े रखे और जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الحث علی اکرام الجار، رقم ۷۴، ص ۴۳)

(1450)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, कि "जो अपने रिज़्क़ में कुशा-दगी और उ़म्र में इज़ाफ़ा पसन्द करता है उसे चाहिये कि वोह अपने रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़े रखे।" (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب صلۃ، رقم ۲۵۵۷، ص ۱۳۸۴)

(1451)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि तौरात में है कि "जो अपनी उ़म्र में इज़ाफ़ा और रिज़्क़ में कुशा-दगी चाहता है वोह अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहमी किया करे।" (المستدرک علی الصحیحین، کتاب البر والصلۃ، ارحموا اھل الارض یرحمکم اھل السماء، رقم ۷۳۶۱، ج ۵، ص ۲۲۲)

(1452)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपनी उ़म्र में इज़ाफ़ा और रिज़्क़ में कुशा-दगी और बुरी मौत से तह़फ़्फ़ुज़ चाहता है वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से डरे और सिलए रेह़्मी करे।'' (مسند احمد، مسند علی بن ابی طالب، رقم ۱۲۱۲، ج۱، ص۳۰۲)

(1453)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ स-दक़ा और सिलए रेह़्मी के सबब उ़म्र में इज़ाफ़ा करता है और बुरी मौत को दूर करता है और मक्रूह व ना पसन्दीदा चीज़ों से बचाता है।'' (مسند ابی یعلی، رقم ۴۰۹۰، ج۳، ص۳۹۸)

(1454)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे नर्मी अ़त़ा की गई उसे दुन्या व आख़िरत की अच्छाइयों में से ह़िस्सा दिया गया और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़ना, पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करना और हुस्ने अख़्लाक़ घरों को आबाद रखते और उ़म्र में इज़ाफ़ा करते हैं।'' (مسند احمد، رقم ۲۵۳۱۴، ج۹، ص۵۰۴)

(1455)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, कि ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ एक क़ौम की वजह से दुन्या को आबाद रखता है और उन की वजह से माल में इज़ाफ़ा करता है और जब से उन्हें पैदा फ़रमाया है उन की त़रफ़ ना पसन्दीदा नज़र से नहीं देखा।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! वोह कैसे?'' फ़रमाया, ''उन के अपने रिश्तेदारों के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ने की वजह से।'' (المعجم الکبیر، رقم ۱۲۵۵۶، ج۱۲، ص۶۷۰)

(1456)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''रिश्तेदारी अ़र्श के साथ लटक्ती हुई कहती है कि जो मेरे साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ेगा और जो मेरे साथ तअ़ल्लुक़ तोड़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के साथ तअ़ल्लुक़ तोड़ेगा।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب صلۃ الرحم، رقم ۲۵۵۵، ص۱۳۸۳)

(1457)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, ''मैं ही रह़मान हूं मैं ने रिश्तेदारी को पैदा किया और उसे अपने नाम का एक ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमा दिया लिहाज़ा जो इस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ेगा मैं उस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ूंगा और जो इस के साथ तअ़ल्लुक़ तोड़ेगा मैं उस के साथ तअ़ल्लुक़ तोड़ूंगा।''

(سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی صلۃ الرحم، رقم ۱۶۹۴، ج۲، ص۱۸۵)

(1458)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक रिश्तेदारी रह़मान عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक ख़मदार टहनी है, वोह अ़र्ज़ करती है, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझे काट दिया गया, या रब ! मेरे साथ बुरा सुलूक किया गया, या रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझ पर ज़ुल्म किया गया, या रब ! या रब !'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जवाब में इर्शाद फ़रमाता है, ''क्या तू इस बात पर राज़ी नहीं कि मैं तेरे साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ने वाले से अपना तअ़ल्लुक़ जोड़ लेता हूं और तेरे साथ तअ़ल्लुक़ तोड़ने वाले से अपना तअ़ल्लुक़ तोड़ लेता हूं।'' (مسند احمد، مسند ابی ھریرہ، رقم ۸۹۸۵، ج ۳، ص ۳۲۹)

(1459)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो रिश्तेदारी खड़ी हो कर अ़र्ज़ करने लगी, ''येह क़त़ए रेह़मी से तेरी पनाह चाहने वाले का मक़ाम है ?'' फ़रमाया, ''हां ! क्या तू इस बात से राज़ी नहीं कि मैं तेरे साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ने वाले से तअ़ल्लुक़ जोड़ूं और तुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़ने वालों से अपना तअ़ल्लुक़ तोड़ूं ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं।'' **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया, ''फिर तेरे लिये ऐसा ही है।''

फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर तुम चाहो तो येह आयत पढ़ लो :

فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْۤا اَرْحَامَكُمْ ۝ اُولٰٓىٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰۤى اَبْصَارَهُمْ ۝

(پ۲۶، محمد: ۲۲، ۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या तुम्हारे येह लच्छन (अन्दाज़) नज़र आते हैं कि अगर तुम्हें हुकूमत मिले तो ज़मीन में फ़साद फैलाओ और अपने रिश्ते काट दो येह हैं वोह लोग जिन पर **अल्लाह** ने ला'नत की और उन्हें ह़क़ से बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب صلۃ الرحم ۔۔۔ الخ، رقم ۲۵۵۴، ص ۱۳۸۳)

(1460)...... हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया, ''बेशक रिश्तेदारी चर्ख़ की सलाख़ की त़रह़ है और अ़र्श को पकड़े फ़सीह़ ज़बान में कहती है, ''ऐ **अल्लाह** ! जो मेरे साथ तअ़ल्लुक़ जोड़े, तू उस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ और जो मुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़े, तू उस के साथ तअ़ल्लुक़ तोड़ ले।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''मैं रह़मान व रह़ीम हूं और मैं ने अपने नाम से रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी) को बनाया है लिहाज़ा जो इस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ता है मैं उस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ लेता हूं और जो इस के साथ तअ़ल्लुक़ तोड़ता है मैं उस से तअ़ल्लुक़ तोड़ लेता हूं।'' (الترغیب والترھیب کتاب البر والصلہ ۔ الخ، باب الترغیب فی صلۃ الرحم، رقم ۲۰، ج ۳، ص ۲۳۰ بتغیر)

(1461)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बेशक सूद से बड़ा गुनाह मुसल्मान की नाह़क़ बे इ़ज़्ज़ती करना है और बेशक येह रिश्तादारी रह़मान عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से एक पेचीदा टहनी है लिहाज़ा जो इस से तअ़ल्लुक़ तोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर जन्नत को ह़राम फ़रमा देगा।"

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند سعید بن زید، رقم ۱۶۵۱، ج۱، ص۴۰۲)

(1462)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा वोह है जो कीना परवर रिश्तेदार को दिया जाए इस की वजह येह है कि कीना परवर रिश्तेदार को स-दक़ा देने में स-दक़ा भी है और क़त़ए रेह़्मी करने वाले से सिलए रेह़्मी भी।" (المستدرک، کتاب الزکاۃ، باب افضل الصدقۃ...الخ رقم ۱۵۱۵، ج۲ص۲۷)

(1463)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस में तीन ख़स्लतें होंगी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ह़िसाब आसानी से लेगा और उसे अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह! हमारे मां और बाप आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान! वोह ख़स्लतें कौन सी हैं?" फ़रमाया, "जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो, जब तुम येह आ'माल बजा लाओगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा।"

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب ثلاث من کن فیہ الخ، رقم ۳۹۲۸، ج۳، ص۳۶۲)

(1464)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के सब से बेहतरीन अख़्लाक़ के बारे में न बताऊं? जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो और जो तुम्हें मह़रूम करे उस को अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो।"

(المعجم الاوسط للطبرانی، رقم ۵۵۶۷، ج۴، ص۵۵۶۷)

(1465)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! मुझे सब से अफ़्ज़ल अ़मल के बारे में बताइये।" हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ऐ उ़क़्बा! जो तुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़े तू उस के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ और जो तुझे मह़रूम करे उसे अ़त़ा कर और जो तुझ पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दे।" (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی صلۃ الرحم...الخ، رقم ۲۷، ج۳، ص۲۳۲)

(1466)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की, कि ''मेरे कुछ रिश्तेदार हैं जिन से मैं तअ़ल्लुक़ जोड़ता हूं ह़ालां कि वोह मुझ से तअ़ल्लुक़ तोड़ते हैं और मैं उन के साथ अच्छा सुलूक करता हूं ह़ालां कि वोह मेरे साथ बुरा सुलूक करते हैं और मैं उन से नरमी करता हूं ह़ालां कि वोह मुझ से जहालत का बरताव करते हैं।'' फ़रमाया, ''अगर तुम ऐसा ही करते हो जैसा तुम ने बताया है तो गोया तुम उन्हें गर्म राख खिला रहे हो और जब तक तुम ऐसा करते रहोगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन के मुक़ाबले में एक फ़िरिश्ता तुम्हारी मदद करता रहेगा।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب صلۃ الرحم....الخ، رقم ۲۵۵۸، ص۱۳۸۴)

(1467)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं, हम एक जगह जम्अ़ थे कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ''ऐ गुरौहे मुस्लिमीन! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अपने रिश्तेदारों के साथ तअ़ल्लुक़ जोड़ो क्यूं कि कोई सवाब सिलए रेह़्मी से ज़ियादा तेज़ नहीं और बग़ावत से बचते रहो क्यूं कि कोई उ़क़ूबत बग़ावत से तेज़ नहीं और वालिदैन की ना फ़रमानी से बचते रहो क्यूं कि जन्नत की ख़ुश्बू एक हज़ार साल की मसाफ़त से सूंघी जा सकती है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! वालिदैन का ना फ़रमान और क़त़ए रेह़्मी करने वाला और ग़ुरूर की वजह से अपना तहबन्द लटकाने वाला उसे नहीं पा सकेगा, क्यूं कि किब्रियाई **अल्लाह** रब्बुल आ़-लमीन ही के लिये है।''

(المعجم الاوسط، رقم ۵۶۶۴، ج۴، ص۱۸۷)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

शोहर और रिश्तेदारों पर स-दक़ा करने का सवाब

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है,

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ۝ (پ۲۱،الروم:۳۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो रिश्तेदार को उस का ह़क़ दो और मिस्कीन और मुसाफ़िर को येह बेहतर है उन के लिये जो **अल्लाह** की रिज़ा चाहते हैं और उन्ही का काम बना।

और फ़रमाता है,

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ۚ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ۝ (پ۲،البقرۃ:۱۷۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और **अल्लाह** की महब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदनें छुड़ाने में और नमाज़ क़ाइम रखे और ज़कात दे और अपना क़ौल पूरा करने वाले जब अ़ह्द करें और सब्र वाले मुसीबत और सख़्ती में और जिहाद के वक़्त, येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की और येही परहेज़गार हैं।

सूरए ब-क़रह में है,

قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ۝ (پ۲،البقرۃ:۲۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और राहगीर के लिये है और जो भलाई करो बेशक **अल्लाह** उसे जानता है।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(1468)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा हज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब स-क़फ़िय्यह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ औरतो ! स-दक़ा किया करो अगर्चे अपने ज़ेवरात ही से करो ।'' तो मैं अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास गई और उन से कहा, ''आप एक तंगदस्त शख़्स हैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें स-दक़ा करने का हुक्म दिया है, जाइये और आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछिये कि अगर मैं आप पर स-दक़ा करूं तो क्या मेरी त़रफ़ से स-दक़ा अदा हो जाएगा वरना मैं इसे आप के इलावा किसी और पर स-दक़ा कर दूं ।'' तो सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया, ''तुम ख़ुद ही चली जाओ ।'' लिहाज़ा मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िरी के लिये रवाना हुई तो मैं ने देखा कि अन्सार की एक औरत भी येही सुवाल करने के लिये दरे दौलत पर हाज़िर है।

हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरऊब रहतीं थीं चुनान्चे जब हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हमारी त़रफ़ आए तो हम ने उन से कहा, ''रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जा कर अर्ज़ करो कि दो औरतें दरवाज़े पर येह सुवाल करने के लिये खड़ी हैं कि अगर वोह अपने शोहर और अपने ज़ेरे कफ़ालत यतीमों पर स-दक़ा करें तो क्या उन की त़रफ़ से स-दक़ा अदा हो जाएगा ? और ऐ बिलाल ! हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह न बताना कि हम कौन हैं ।''

तो हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर हो कर येह सुवाल किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''वोह औरतें कौन हैं ?'' हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अर्ज़ किया, ''अन्सार की एक औरत और ज़ैनब है ।'' आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कौन सी ज़ैनब ?'' अर्ज़ किया, ''अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा ।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उन दोनों के लिये दुगना अज्र है, एक रिश्तेदारी का और दूसरा स-दक़े का ।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل النفقۃ...الخ، رقم ۱۰۰۰، ص۵۰۱)

(1469)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''रिश्तेदार पर किये जाने वाले स-दक़े का सवाब दो गुना कर दिया जाता है ।''

(المعجم الکبیر، رقم ۷۸۳۴، ج۸، ص۲۰۶)

(1470)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान बिन आ़मह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मिस्कीन पर स-दक़ा करना एक स-दक़ा है और रिश्तेदार पर स-दक़ा करने में दो स-दक़े हैं, स-दक़ा और सिलए रेह़मी।''
(ابن خزیمہ، کتاب الزکاۃ، باب استحباب ابتاء الم،،، الخ، رقم ۲۳۸۵، ج ۴، ص ۷۷)

(1471)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे कुल्सूम बिन्ते उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा कीना परवर रिश्तेदार पर किया जाने वाला स-दक़ा है।''

(صحیح ابن خزیمہ، کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ علی ذہ الرحم الکاشح، رقم ۲۳۸۶، ج ۴، ص ۷۸)

(1472)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि ''सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा कौन सा है?'' फ़रमाया, ''जो कीना परवर रिश्तेदार पर किया जाए।''

(المسند للامام احمد بن حنبل ، مسند حکیم بن حزام، رقم ۱۵۳۲۰، ج ۵، ص ۲۲۸)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

अहले ख़ाना पर ख़र्च करने का सवाब

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है,

وَمَاۤ اَنۡفَقۡتُمۡ مِّنۡ شَیۡءٍ فَهُوَ یُخۡلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَیۡرُ الرّٰزِقِیۡنَ ۝ (پ۲۲،سبا:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो चीज़ तुम **अल्लाह** की राह में ख़र्च करो वोह उस के बदले और देगा और वोह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला।

और फ़रमाता है,

لِیُنۡفِقۡ ذُوۡ سَعَةٍ مِّنۡ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنۡ قُدِرَ عَلَیۡهِ رِزۡقُهٗ فَلۡیُنۡفِقۡ مِمَّاۤ اٰتٰىهُ اللّٰهُ ؕ لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفۡسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰىهَا ؕ سَیَجۡعَلُ اللّٰهُ بَعۡدَ عُسۡرٍ یُّسۡرًا ۝ (پ۲۸،الطلاق:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मक़्दूर वाला अपने मक़्दूर के क़ाबिल न-फ़क़ा दे और जिस पर उस का रिज़्क़ तंग किया गया वोह उस में से न-फ़क़ा दे जो उसे **अल्लाह** ने दिया **अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं रखता मगर उसी क़ाबिल जितना उसे दिया है क़रीब है कि **अल्लाह** कि दुश्वारी के बा'द आसानी फ़रमा देगा।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1473)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब कोई शख़्स सवाब की निय्यत से अपने अहले ख़ाना पर ख़र्च करता है तो वोह उस के लिये स-दक़ा होता है।''
(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، رقم ۱۰۰۲، ص۵۰۲)

(1474)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो पाक दामनी चाहते हुए अपने आप पर कुछ ख़र्च करे तो येह उस के लिये स-दक़ा है और जो अपनी बीवी, बच्चों और घर वालों पर ख़र्च करे तो येह भी स-दक़ा है।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فی الرجل، رقم ۴۶۶۲، ج۳، ص۳۰۲)

(1475)...... हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो कुछ तू ख़ुद को खिलाए वोह तेरे लिये स-दक़ा है और जो कुछ तू अपनी बीवी को खिलाए वोह तेरे लिये स-दक़ा है और जो कुछ तू अपने ख़ादिम को खिलाए वोह भी तेरे लिये स-दक़ा है।'' (مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۱۷۱۹۱، ج۶، ص۹۴)

(1476)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल

आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''हर नेकी स-दक़ा है और बन्दा जो कुछ अपने घर वालों पर ख़र्च करता है वोह स-दक़ा शुमार होता है और जो कुछ बन्दा अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये ख़र्च करता है वोह उस के लिये स-दक़ा शुमार होता है और जो कुछ बन्दा ख़र्च करता है उस का बदला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है और **अल्लाह** तआ़ला ज़ामिन है मगर जो वोह इ़मारत बनाने या मा'सियत में ख़र्च करे।'' (المستدرک، کتاب البیوع، باب کل معروف صدقۃ، رقم ۲۳۵۸، ج۲، ص۳۵۸)

एक रिवायत में है कि ''बन्दा जो कुछ अपने आप पर और अपने बच्चों, अपने घर वालों और रिश्तेदारों पर ख़र्च करता है वोह उस के लिये स-दक़ा शुमार होता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب فی نفقۃ الرجل....الخ، رقم ۴۶۶۲، ج۳، ص۳۰۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़मीद या'नी इब्नुल ह़सन हिलाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ कहते हैं कि मैं ने इब्ने मुन्कदिर عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ से पूछा कि ''इस बात का कि ''जो कुछ बन्दा अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये ख़र्च करता है'' क्या मत़्लब है?'' फ़रमाया ''इस से मुराद वोह माल है जो एक मुत्तक़ी शख़्स अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये किसी शाइ़र या चर्ब ज़बान शख़्स को देता है।''

(1477)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब से गुज़रा तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उस के फुरतीले बदन की मज़्बूती और चुस्ती को देखा तो अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह! काश! इस का येह ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में होता।'' तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर येह शख़्स अपने छोटे बच्चों के लिये रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर येह शख़्स अपने बूढ़े वालिदैन के लिये रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो भी येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर येह अपनी पाक दामनी के लिये रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो भी येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर येह दिखावे और तफ़ाख़ुर के लिये निकला है तो येह शैत़ान की राह में है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب النکاح، باب الترغیب فی النفقۃ علی الزوجۃ، رقم ۱۰، ج۳، ص۴۲)

(1478)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया, ''तू जो कुछ भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहते हुए ख़र्च करेगा तुझे उस का सवाब दिया जाएगा यहां तक कि जो कुछ अपनी बीवी के मुंह में डालेगा उस का भी सवाब दिया जाएगा।''

(صحیح البخاری، کتاب المرضی، باب قول المریض،،،،الخ، رقم ۵۶۶۸، ج۴، ص۱۲)

(1479)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''वोह दीनार जो तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करे और वोह

दीनार जो तू किसी गुलाम को आज़ाद करने में ख़र्च करे और वोह दीनार जो तू किसी मिस्कीन पर स-दक़ा करने में ख़र्च करे और वोह दीनार जो तू अपने घर वालों पर ख़र्च करे उन में से सब से ज़ियादा अज्र वाला दीनार वोह है जो तू अपने घर वालों पर ख़र्च करता है।" (صحیح مسلم،کتاب الزکاۃ،باب فضل النفقۃ علی العیال،رقم ۹۹۵،ص ۴۹۹)

(1480)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "सब से अफ़्ज़ल दीनार जिसे बन्दा ख़र्च करता है वोह दीनार है जिसे वोह अपने घर वालों पर ख़र्च करता है और वोह दीनार है जिसे वोह **अल्लाह** की राह में अपने जानवर पर ख़र्च करता है और वोह दीनार है जिसे **अल्लाह** की राह में अपने साथियों पर ख़र्च करता है।"

(صحیح مسلم،کتاب الزکاۃ،باب فضل النفقۃ علی العیال،رقم ۹۹۴،ص ۴۹۹)

(1481)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बन्दे के मीज़ान में सब से पहले उस के अपने घर वालों पर ख़र्च किये गए माल को रखा जाएगा।" (المعجم الاوسط،رقم ۶۱۳۵،ج ۴،ص ۳۲۹)

(1482)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अम्र बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान या अ़ब्दुर्रह़मान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا एक ऊनी चादर को ख़रीदने के लिये भाव तै कर रहे थे कि मेरा वहां से गुज़र हुवा और मैं ने वोह चादर ख़रीद कर अपनी बीवी सुख़ैला बिन्ते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को ओढ़ा दी। जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान या अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का वहां से गुज़र हुवा तो उन्हों ने पूछा कि "तुम ने जो चादर ख़रीदी थी उस का क्या हुवा?" मैं ने कहा, "उसे मैं ने सुख़ैला बिन्ते उ़बैदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا पर स-दक़ा कर दिया है।" तो उन्हों ने पूछा, "जो कुछ तुम अपने घर वालों पर ख़र्च करते हो क्या वोह स-दक़ा है?" मैं ने जवाब दिया कि "मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ फ़रमाते हुए सुना है।" जब मेरी येह बात रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने ज़िक्र की गई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अम्र ने सच कहा है तुम जो कुछ अपने घर वालों पर ख़र्च करते हो वोह उन पर स-दक़ा ही है।"

(الترغیب والترھیب،کتاب النکاح،الترغیب فی النفقۃ....الخ،رقم ۱۵،ج ۳،ص ۴۳)

(1483)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जब कोई शख़्स अपनी बीवी को पानी पिलाता है तो उसे उस का अज्र दिया जाता है।" रावी कहते हैं कि "फिर मैं अपनी बीवी के पास आया और मैं ने उसे पानी पिलाया और जो कुछ मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना था उसे सुनाया।"

(مجمع الزوائد،کتاب الزکاۃ،باب فی نفقۃ الرجل....الخ رقم ۴۶۵۹،ج ۳،ص ۳۰۰)

दो बेटियां या दो बहनें होने की सूरत में सब्र करते हुए उन की परवरिश करने का सवाब

(1484)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ''मेरे पास एक मिस्कीन औ़रत अपनी दो बच्चियों को उठाए हुए आई तो मैं ने उन्हें तीन खजूरें दीं। उस औ़रत ने एक एक खजूर अपनी बच्चियों को दे दी और एक ख़ुद खाने का इरादा करते हुए अपने मुंह की त़रफ़ ले गई। जब उस की बच्चियां खजूरें खा चुकीं तो उस औ़रत ने अपनी खजूर भी दो ह़िस्सों में तक़्सीम कर के अपनी बच्चियों को दे दी। मैं उस के इस अ़मल से बहुत ख़ुश हुई और मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने इस बात का तज़्किरा किया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उन दो बच्चियों की वजह से उस औ़रत पर जन्नत वाजिब कर दी या (येह फ़रमाया) उन दो बच्चियों की वजह से उस औ़रत को जहन्नम से आज़ाद कर दिया।''

(صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ، باب فضل الاحسان الی البنات، رقم ۲۶۳۰، ص۱۴۱۵)

(1485)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ''मेरे पास एक औ़रत अपनी दो बच्चियों के साथ कुछ मांगने के लिये आई। मैं ने एक खजूर के इ़लावा कुछ न पाया तो वोही खजूर उस औ़रत को दे दी। उस ने वोह खजूर अपनी बच्चियों में तक़्सीम कर दी और उस में से ख़ुद कुछ न खाया और चली गई। फिर जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह वाक़िआ़ सुनाया। आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस की बच्चियों की वजह से आज़माइश की गई और उस ने उन के साथ अच्छा सुलूक किया तो येह उस के लिये जहन्नम से पर्दा हो जाएंगी।''

(صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ، باب فضل الاحسان الی البنات، رقم ۲۶۲۹، ص۱۴۱۴)

(1486)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस मुसल्मान की दो बेटियां हों और वोह जब तक उस के पास रहें उन के साथ अच्छा सुलूक करता रहे तो येह बेटियां उसे जन्नत में दाख़िल करवा देंगी।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب برالوالد...الخ، رقم ۳۶۷۰، ج۴، ص۱۸۹)

(1487)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने दो बच्चियों के बालिग़ होने तक उन की परवरिश की तो मैं और वोह शख़्स क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएंगे।'' फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी दोनों उंगलियां मिला कर दिखाईं।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ...الخ باب فضل الاحسان...الخ، رقم ۲۶۳۱، ص۱۴۱۵)

एक रिवायत में है कि "जिस ने दो बच्चियों की परवरिश की मैं और वोह जन्नत में इस त़रह़ दाखि़ल होंगे।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दो उंगलियों की त़रफ़ इशारा किया।

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی النفقۃ، رقم ۱۹۲۱، ج۳، ص۳۶۷)

और एक रिवायत में है कि "जिस ने दो या तीन बच्चियों की शादी हो जाने या मर जाने तक उन की परवरिश की तो मैं और वोह शख़्स जन्नत में इस त़रह़ दाखि़ल होंगे।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शहादत और बीच वाली उंगली मिला कर इशारा किया।"

(الترغیب والترھیب، کتاب النکاح، باب الترغیب فی النفقۃ، رقم ۲۴، ج۳، ص۴۵)

(1488)...... ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस मुसल्मान की तीन बेटियां हों फिर वोह उन की शादी हो जाने या मर जाने तक उन पर ख़र्च करता रहे तो वोह उस के लिये जहन्नम से पर्दा हो जाएंगी।" एक औ़रत ने अ़र्ज़ किया, "और जिस की दो बेटियां हों?" फ़रमाया "और जिस की दो बेटियां हों (उस के लिये भी येही फ़ज़ीलत है)।" (المعجم الکبیر، رقم ۱۰۲، ج۱۸، ص۵۶)

(1489)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों या दो बेटियां या दो बहनें हों फिर वोह उन की अच्छी त़रह़ परवरिश करे और उन के मुआ़-मले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता रहे तो उस के लिये जन्नत है।"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی النفقۃ علی البنات، رقم ۱۹۲۳، ج۳، ص۳۶۷)

एक रिवायत में है कि "जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों और वोह उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो वोह जन्नत में दाखि़ल होगा।" (جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی النفقۃ، رقم ۱۹۲۳، ج۳، ص۳۶۷)

एक रिवायत में है कि "फिर वोह उन की अच्छी तरबिय्यत करे और उन के साथ अच्छा बरताव करे तो उस के लिये जन्नत है।" (جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی النفقۃ...الخ، رقم ۱۹۱۹، ج۳، ص۳۶۶)

(1490)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने किसी यतीम की परवरिश की ख़्वाह वोह यतीम उस का रिश्तेदार हो या न हो तो मैं और वोह शख़्स जन्नत में इस त़रह़ होंगे।" फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी दो उंगलियों को मिला कर दिखाया।

एक रिवायत में है कि "जिस ने अपनी तीन बेटियों की परवरिश में कोशिश की वोह जन्नत में होगा और उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में दिन में रोज़ा रखने और रात में क़ियाम करने वाले मुजाहिद का सा अज्र है।" (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب منہ: فی الاولاد...الخ، رقم ۱۳۴۹۳، ج۸، ص۲۸۸)

(1491)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने अपनी दो बेटियों या दो बहनों या दो रिश्तेदार बच्चियों पर उन दोनों के **अल्लाह** के फ़ज़्ल से ग़नी होने तक सब्र करते हुए ख़र्च किया तो वोह उस के लिये आग से पर्दा हो जाएंगी।''

(مسندامام احمد بن حنبل، حدیث ام سلمۃ، رقم ۲۶۵۷۸، ج۱۰، ص۱۷۹)

(1492)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस की तीन बेटियां हों और वोह उन पर रह़म करे और उन की कफ़ालत करे तो उस पर जन्नत वाजिब हो जाती है।'' अ़र्ज़ किया गया ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और अगर दो बेटियां हों ?'' फ़रमाया, ''और अगर दो बेटियां हों तब भी।'' रावी कहते हैं कि बा'ज़ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का ख़याल है कि ''अगर एक बच्ची के बारे में पूछा जाता तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़रूर उन की ताईद फ़रमाते।'' एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है, ''और उन की शादी कराए।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب منہ: فی الاولاد....الخ، ۱۳۴۹۱، ج۸، ص۲۸۷)

(1493)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस की एक बच्ची हो और वोह उसे ज़िन्दा दफ़्न न करे और न ही उसे ह़क़ीर जाने, और न अपने बेटे को उस पर तरजीह़ दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।''

(سنن ابوداوٗد، کتاب الادب، باب فی فضل من عال یتیما، رقم ۵۱۴۶، ج۴، ص۴۳۵)

(1494)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस की तीन बेटियां हों और उन की परवरिश की वजह से पहुंचने वाली सख़्ती, तंगदस्ती और ख़ुशह़ाली पर सब्र करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उन बच्चियों पर शफ़्क़त की वजह से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! और जिस की दो बेटियां हों ?'' फ़रमाया, ''और जिस की दो बेटियां हों उसे भी।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! और जिस की एक बेटी हो ?'' फ़रमाया, ''और जिस की एक बेटी हो उसे भी।''

(مسندامام احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، رقم ۸۴۳۳، ج۳، ص۲۳۴)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
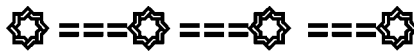
मिस्कीन और मोह्‌ताज की परवरिश के लिये कोशिश करने का सवाब

(1495)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मोह्‌ताज और मिस्कीन की परवरिश के लिये कोशिश करने वाला **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद करने वाले की त़रह़ है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरा ख़याल है कि येह भी फ़रमाया, ''वोह रात के क़ियाम में सुस्ती न करने और दिन में रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है।'' (صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب الاحسان الی الارملۃ....الخ رقم ۲۹۸۲،ص۱۵۹۲)

एक रिवायत में है कि ''मिस्कीन की परवरिश करने वाला **अल्लाह** की राह में जिहाद करने वाले और रात में क़ियाम करने और दिन में रोज़ा रखने वाले की त़रह़ है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب الحث علی المکاسب، رقم ۲۱۴۰، ج۳،ص۷)

(1496)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने किसी यतीम या मोह्‌ताज की कफ़ालत की **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे अपने अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा और जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب تجہیز المیت...الخ، رقم ۴۰۶۲، ج۳،ص۱۱۴)
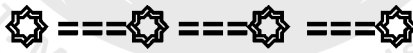
यतीम की कफ़ालत और उस पर ख़र्च करने का सवाब

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है,

وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ (پ۲،البقرۃ:۱۷۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हां अस्ल नेकी येह कि ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और **अल्लाह** की मह़ब्बत में अपना अ़ज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों (को)।

सूरए ब-क़रह में है,

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ؕ قُلْ مَاۤ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝ (پ۲،البقرۃ:۲۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम से पूछते हैं क्या ख़र्च करें तुम फ़रमाओ जो कुछ माल नेकी में ख़र्च करो तो वोह मां बाप और क़रीब के रिश्तेदारों और यतीमों और मोह़ताजों और राहगीर के लिये है और जो भलाई करो बेशक **अल्लाह** उसे जानता है।

और फ़रमाता है,

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ۝

(پ۲۹،الدھر:۸-۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते।

इस बारे में अह़ादीसे मुबा-रका :

(1497)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मैं और यतीम की कफ़ालत करने वाला जन्नत में इस त़रह़ होंगे।'' फिर अपनी शहादत और बीच वाली उंगली की त़रफ़ इशारा करते हुए उन दोनों को खोल दिया। (صحیح بخاری، کتاب الادب، رقم ۶۰۰۵، ج۴، ص۱۰۲)

(1498)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों

के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अपने या किसी और के यतीम बच्चे की कफ़ालत करने वाला और मैं जन्नत में इस तरह होंगे।'' फिर इमाम मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी शहादत की और बीच वाली उंगली की तरफ़ इशारा फ़रमाया।

(صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق ، باب الاحسان الی الارملۃ...الخ، رقم ۲۹۸۳،ص۱۵۹۲)

वज़ाहत :

अपने यतीम से मुराद यतीम रिश्तेदार है जैसे कोई मां अपने यतीम बेटे या दादा, दादी अपने यतीम पोते, पोती की कफ़ालत करे जब कि किसी और यतीम बच्चे से मुराद किसी अज्नबी यतीम की परवरिश करना है जिस के साथ कोई रिश्तेदारी न हो उन दोनों ही की परवरिश पर अज्रे अज़ीम हासिल होगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(1499)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ुरारह बिन अबू औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी क़ौम के एक शख़्स मलिक या इब्ने मालिक से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने दो मुसल्मानों के सामने किसी यतीम के खाने और पीने की ज़िम्मादारी ली यहां तक कि उसे बे परवाह कर दिया तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है और जिस ने अपने वालिदैन या उन में से किसी एक को पाया और उस के साथ अच्छा सुलूक न किया तो वोह जहन्नम में दाख़िल होगा और जो मुसल्मान किसी मुसल्मान जान (या'नी गुलाम) को आज़ाद करे वोह उस के लिये जहन्नम से नजात का सबब बन जाएगी।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ ، باب ماجاء فی الایتام والارامل والمساکین، رقم ۱۳۵۱۲،ج۸،ص۲۹۵)

(1500)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने दो मुसल्मानों के दरमियान किसी यतीम के खाने और पीने की ज़िम्मादारी ली तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा जब कि वोह कोई ना क़ाबिले मुआफ़ी गुनाह न करे।'' (سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء رحمۃ الیتیم وکفالتہ، رقم ۱۹۲۴،ج۳،ص۳۶۸)

(1501)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने तीन यतीमों की परवरिश की, उसे रात को क़ियाम, दिन में रोज़ा और सुब्ह व शाम राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी तलवार चलाने वाले का सवाब दिया जाएगा और मैं और वोह जन्नत में इस तरह भाई भाई होंगे जिस तरह येह दोनों हैं।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत और बीच वाली उंगली मिला दी।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب حق الیتیم، رقم ۳۶۸۰،ج۴،ص۱۹۴)

(1502)...... ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अश्जई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं और ज़र्द रुख़्सारों वाली औ़रत क़ियामत में इस त़रह़ होंगे।" फिर रावी ने बीच की और शहादत वाली उंग्लियों की त़रफ़ इशारा किया। "ज़र्द रुख़्सारों वाली औ़रत से मुराद हुस्नो जमाल और मन्सब वाली बेवा औ़रत है जब अपने यतीम बच्चों की कफ़ालत के लिये अपने आप को उन से जुदा होने या मरने तक वक़्फ़ कर दे और दूसरी शादी न करे।" (ابوداود، کتاب الادب، باب فی فضل من عال یتیما، رقم ۵۱۴۹، ج۴، ص۴۳۵)

(1503)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मैं सब से पहले जन्नत का दरवाज़ा खोलूंगा मगर एक औ़रत को ख़ुद से सब्क़त ले जाते देखूंगा तो उस से पूछूंगा कि "तुझे क्या हुवा ? और तू कौन है ?" तो वोह कहेगी कि "मैं वोह औ़रत हूं जिस ने ख़ुद को अपने यतीम बच्चों की परवरिश के लिये वक़्फ़ कर दिया था।"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی کفالۃ الیتیم...الخ رقم ۱۲، ج۳، ص۲۳۶)

(1504)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब किसी क़ौम के दस्तर ख़्वान पर कोई यतीम बैठता है तो शैत़ान उन के दस्तर ख़्वान के क़रीब नहीं आता।"

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الایتام ولاارامل، رقم ۱۳۵۱۲، ج۸، ص۲۹۴)

(1505)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा घर वोह है जहां यतीम की इ़ज़्ज़त की जाती हो।" (المعجم الکبیر، رقم ۱۳۴۳۴، ج۱۲، ص۲۹۶)

(1506)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मुसल्मानों के घरों में से बेहतरीन घर वोह है जिस में यतीम के साथ अच्छा बरताव किया जाता हो और मुसल्मानों के घरों में से बद तरीन घर वोह है जहां यतीम के साथ बुरा सुलूक किया जाता हो।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الادب، باب حق الیتیم، رقم ۳۶۷۹، ج۴، ص۱۹۳)

=== === ===
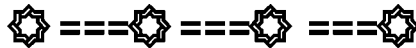
यतीम के सर पर शफ़्क़त से हाथ फैरने का सवाब

(1507)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किसी यतीम के सर पर हाथ फैरेगा तो जिस जिस बाल पर से उस का हाथ गुज़रेगा उस के इवज़ हाथ फैरने वाले के लिये नेकियां लिखी जाएंगी और जो अपने ज़ेरे कफ़ालत यतीम (लड़के या लड़की) के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं और वोह जन्नत में इस त़रह़ होंगे।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत और बीच वाली उंग्लियों को जुदा कर दिया। (مسند احمد، حدیث ابی امامہ الباھلی، رقم ۲۲۲۱۵، ج۸، ص۲۷۲)

(1508)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो इर्शाद फ़रमाया कि ''यतीम के सर पर हाथ फैरा करो और मिस्कीन को खाना खिलाया करो।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ...الخ باب ماجاء فی الایتام، رقم ۱۳۵۰۸، ج۸، ص۲۹۳)

(1509)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो इर्शाद फ़रमाया कि ''क्या तू चाहता है कि तेरा दिल नर्म हो जाए और तेरी ह़ाजतें पूरी हों ? तू यतीम पर रह़्म किया कर और उस के सर पर हाथ फैरा कर और अपने खाने में से उस को खिलाया कर ऐसा करने से तेरा दिल नर्म होगा और ह़ाजतें पूरी होंगी।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الایتام والارامل والمساکین، رقم ۱۳۵۰۹، ج۸، ص۲۹۳)

(1510)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''उस ज़ात की क़सम ! जिस ने मुझे ह़क़ के साथ मब्ऊ़स फ़रमाया है कि जिस ने यतीम पर रह़्म किया और उस के साथ नर्मी से गुफ़्त-गू की और उस की यतीमी और कमज़ोरी पर रह़्म खाया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए माल से अपने पड़ोसी पर फ़ख़्र न किया तो **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन उसे अ़ज़ाब न देगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب الصدقۃ علی الاقارب صدقۃ المراۃ علی زوجھا، رقم ۴۶۵۲، ج۳، ص۲۹۷)

=== === ===
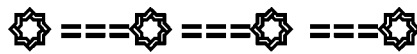
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने भाई से मुलाक़ात करने का सवाब

(1511)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''एक शख़्स किसी शहर में अपने किसी भाई से मिलने गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता उस के रास्ते में भेजा, जब वोह फ़िरिश्ता उस के पास पहुंचा तो उस से पूछा कि ''कहां का इरादा है ?'' उस ने कहा, ''उस शह्‌र में मेरा एक भाई रहता है उस से मिलने जा रहा हूं।'' उस फ़िरिश्ते ने पूछा, ''क्या उस का तुझ पर कोई एह़सान है जिसे उतारने जा रहा है ?'' तो उस ने कहा, ''नहीं ! बल्कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये उस से मह़ब्बत करता हूं।'' फ़िरिश्ते ने कहा, ''मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे पास भेजा है ताकि तुझे बता दूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी तुझ से इसी त़रह़ मह़ब्बत फ़रमाता है जिस त़रह़ तू उस के लिये दूसरों से मह़ब्बत करता है।''

(مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فی فضل الحب فی اللہ، رقم ۲۵۶۷، ص ۱۳۸۸)

(1512)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब कोई अपने किसी भाई से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करता है तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है कि ख़ुश हो जाओ कि जन्नत भी तुझ से ख़ुश है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने अ़र्श के मलाएका से फ़रमाता है कि ''मेरा बन्दा मेरे लिये लोगों से मिलता है, उस की मेज़बानी करना मेरे ज़िम्मे है।'' फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत के इ़लावा किसी सवाब पर राज़ी नहीं होता।'' (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب الزیارۃ، رقم ۱۳۵۹۱، ج ۸، ص ۳۱۷)

(1513)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो किसी मरीज़ की इ़यादत करता है या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने किसी इस्लामी भाई से मिलने जाता है तो एक मुनादी उसे मुख़ात़ब कर के कहता है कि ''ख़ुश हो जा क्यूं कि तेरा येह चलना मुबारक है और तूने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।''

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی زیارۃ الاخوان، رقم ۲۰۱۵، ج ۳، ص ۴۰۶)

(1514)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि तुम में से कौन जन्नत में जाएगा ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया कि ''नबी जन्नत में जाएगा, सिद्दीक़ जन्नत में जाएगा और वोह शख़्स भी जन्नत में जाएगा जो मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने किसी भाई से मिलने शह्‌र के मज़ाफ़ात में जाए।'' (المعجم الاوسط، رقم ۱۷۴۳، ج ۱، ص ۴۷۲)

(1515)...... हज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मैं ने चमकदार दांतों वाले एक नौ जवान को देखा, उस के साथ और लोग भी थे। जब उन में किसी बात पर इख़्तिलाफ़ हो जाता तो वोह उस की त़रफ़ रुजूअ़ करते और उस के क़ौल को फ़ैसल मानते तो मैं ने उन के बारे में किसी से पूछा तो मुझे बताया गया कि ''येह हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं।'' अगले दिन मैं सुब्ह़ सवेरे मस्जिद में पहुंचा तो मैं ने उन्हें पहले से नमाज़ पढ़ते हुए पाया फिर मैं ने उन की नमाज़ मुकम्मल होने का इन्तिज़ार किया फिर उन के सामने से उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उन्हें सलाम किया फिर अ़र्ज़ किया, ''ख़ुदा की क़सम ! मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आप से मह़ब्बत करता हूं।'' उन्हों ने मुझ से पूछा, ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुझ से मह़ब्बत करते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये।'' उन्हों ने फिर पूछा, ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुझ से मह़ब्बत करते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां ! **अल्लाह** के लिये।'' तो उन्हों ने मेरी चादर का किनारा खींच कर मुझे अपने साथ चिमटा लिया और फ़रमाया कि ''ख़ुश ख़बरी सुन लो कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''मेरे लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले और मेरे लिये इकट्ठे हो कर बैठने वाले और मेरे लिये एक दूसरे से मिलने वाले और मेरे लिये ख़र्च करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए।'' (موطاامام مالک ،کتاب الشعر، باب ماجاء فی المتحابین فی اللہ، رقم ۱۸۲۸، ج۲،ص۴۳۹)

(1516)...... हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना आप अपने रब عَزَّوَجَلَّ से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि ''मेरे लिये मह़ब्बत करने वाले और मेरे लिये एक दूसरे से मिलने वाले और मेरे लिये सफ़र करने वाले और मेरे लिये ख़र्च करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الحب فی اللہ، رقم ۱۵، ج۴، ص۱۱)

(1517)...... हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा عَزَّوَجَلَّ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना आप ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि सिर्फ़ मेरे लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए और मेरे लिये एक दूसरे से मिलने वाले और मेरे लिये ख़र्च करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए और मेरे लिये स-दक़ा करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الحب...الخ، رقم ۱۶، ج۴، ص۱۱)

(1518)...... हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नत में बालाख़ाने हैं जिन के बाहर से अन्दर का हिस्सा

नज़र आता है और अन्दर से बाहर का मन्ज़र नज़र आता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपने लिये महब्बत करने वालों और अपने लिये एक दूसरे से मिलने वालों और अपनी राह में ख़र्च करने वालों के लिये तय्यार किया है।''

(المعجم الاوسط، رقم ۲۹۰۳، ج۲، ص۱۲۶)

(1519)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक जन्नत में याकूत के कुछ सुतून हैं जिन पर ज़बर जद के कमरे हैं उन के खुले दरवाज़े दमदार सितारे की त़रह चमकदार हैं।'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! उन कमरों में कौन रहेगा ?'' फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करने वाले, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने वाले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुलाक़ात करने वाले।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الحب فی اللہ...الخ، رقم ۲۴، ج۴، ص۱۳)

(1520)...... हज़रते सय्यिदुना ज़र्र बिन हुबैश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन अ़स्साल मुरादी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आए तो उन्हों ने पूछा, ''क्या तुम मुलाक़ात के लिये आए हो ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''हां।'' उन्हों ने फ़रमाया कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि ''जो शख़्स अपने मोमिन भाई से मिलता है वोह वापस लौटने तक रहमत में ग़ोता ज़न रहता है और जो अपने मोमिन भाई की इयादत करता है वापस लौटने तक रहमत में ग़ोते लगाता रहता है।''

(طبرانی کبیر، رقم ۷۳۸۹، ج۸، ص۶۷)

(1521)...... हज़रते सय्यिदुना अबू रज़ीन उ़क़ैली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ''ऐ अबू रज़ीन ! मुसल्मान जब अपने मुसल्मान भाई से मिलता है और फिर जब वोह उसे रुख़्सत करता है तो सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और अ़र्ज़ करते हैं, ''या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जैसे इस ने तेरे लिये मुलाक़ात की तू भी इसे अपना क़ुर्ब अ़ता फ़रमा।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب الزکاۃ واکرام الزائرین، رقم ۱۳۵۹۲، ج۸، ص۳۱۷)

हज़रते सय्यिदुना औ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दोस्त जब उन के पास मुलाक़ात के लिये ह़ाज़िर हुए तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से पूछा, ''क्या मेरे पास बैठोगे ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर हम आप की महफ़िल हरगिज़ नहीं छोड़ेंगे।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से फ़रमाया कि ''क्या तुम आपस में एक दूसरे की मुलाक़ात के लिये जाते हो ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''हां ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान ! जब हम में से कोई अपने किसी भाई को मफ़्क़ूद पाता है तो कूफ़ा के कोने कोने तक उसे तलाश करता है।'' आप ने फ़रमाया कि जब तक तुम ऐसा करते हो ख़ैर के काम में होते हो।

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی زیارۃ الاخوان، رقم ۸، ج۳، ص۲۴۸)

अपने मुसलमान भाइयों की ह़ाजतें पूरी करने का सवाब

(1522)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो किसी मुसल्मान की एक दुन्यवी परेशानी दूर करेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो तंगदस्त के लिये आसानी मुहय्या करेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस के लिये आसानियां पैदा फ़रमाएगा और जो दुन्या में किसी मुसल्मान की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ दुन्या व आख़िरत में उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और बन्दा जब तक अपने (मुसल्मान) भाई की मदद करता रहता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ भी उस की मदद फ़रमाता रहता है।''

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الستر علی المسلم، رقم ۱۹۳۷، ج۳، ص ۳۷۳)

(1523)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुसल्मान मुसल्मान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न ही उसे क़ैद करता है और जो कोई अपने भाई की ह़ाजत पूरी करता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की ह़ाजत पूरी फ़रमाता है और जो किसी मुसल्मान की एक परेशानी दूर करेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।'' (مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب تحریم الظلم، رقم ۲۵۸۰، ص ۱۳۹۴)

(1524)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो शख़्स अपने भाई की ह़ाजत रवाई के लिये चले उस का येह अ़मल उस के लिये दस साल ए'तिकाफ़ करने से बेहतर है और जो शख़्स अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दिन ए'तिकाफ़ करे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के और जहन्नम के दरमियान तीन ख़न्दक़ें ह़ाइल फ़रमा देता है और उन में से दो ख़न्दक़ों का दरमियानी फ़ासिला मशरिक़ो मग़रिब के फ़ासिले से ज़ियादा है।''

एक रिवायत में है कि ''तुम में से जो कोई अपने भाई की ह़ाजत पूरी करने के लिये चले तो येह अ़मल मेरी इस मस्जिद (या'नी मस्जिदे न-बवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) में दो महीने ए'तिकाफ़ करने से अफ़्ज़ल है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین...الخ رقم ۸، ج۳، ص ۲۶۳)

(1525)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बन्दा जब तक अपने भाई की ह़ाजत पूरी करने में रहता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की ह़ाजत पूरी फ़रमाता रहता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب فضل قضاء الحوائج، رقم ۱۳۷۲۳، ج۸، ص ۳۵۳)

(1526)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ

ने कुछ क़ौमों को बा'ज़ ने'मतें अ़ता की हैं जिन्हें वोह उस वक़्त तक उन के पास रखता है जब तक वोह मुसल्मानों की ह़ाजत रवाई करते रहते हैं और जब वोह उन्हें मुसल्मानों पर ख़र्च नहीं करते तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोह ने'मतें दूसरों की त़रफ़ मुन्तक़िल फ़रमा देता है।'' (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب فضل قضاء الحوائج، رقم ۱۳۷۱۳، ج۸، ص۳۵۱)

(1527)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुछ ऐसी क़ौमें हैं जिन्हें उस ने बन्दों के फ़ाएदे के लिये बा'ज़ ने'मतों के साथ मुख़्तस फ़रमा दिया है वोह उन्हें इस ह़ाल पर उस वक़्त तक बर क़रार रखता है जब तक वोह इन ने'मतों को लोगों पर ख़र्च करते रहते हैं फिर जब वोह इन ने'मतों को लोगों से रोक लेते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोह ने'मतें उन से मौक़ूफ़ फ़रमा कर दूसरों को दे देता है।'' (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب فضل قضاء الحوائج، رقم ۱۳۷۱۴، ج۸، ص۳۵۱)

(1528)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ में से चन्द लोग ऐसे हैं जिन्हें उस ने लोगों की ह़ाजत रवाई के लिये पैदा किया है लोग अपनी ह़ाजतों में उन की त़रफ़ फ़रियाद करते हैं, बेशक वोही लोग अ़ज़ाब से अम्न वाले हैं।'' (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب فضل قضاء الحوائج، رقم ۱۳۷۱۰، ج۸، ص۳۵۰)

(1529)...... ह़ज़रते इब्ने उ़मर और अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने भाई की ह़ाजत पूरी होने तक ह़ाजत रवाई करता रहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पछत्तर हज़ार (75000) मलाएका के ज़रीए उस पर साया फ़रमाता है वोह उस के लिये इस्तिग़फ़ार और दुआ़ करते हैं, अगर सुब्ह़ को ह़ाजत रवाई की तो शाम तक और अगर शाम को ह़ाजत रवाई की तो सुब्ह़ तक और वोह जो भी क़दम उठाता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाता है और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، رقم ۹، ج۳، ص۲۶۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत में है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने किसी बन्दे की ज़रूरत में उस की मदद की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस दिन ऐसी जगह पर साबित क़-दमी अ़ता फ़रमाएगा जिस दिन क़दम फिसलेंगे।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین، رقم ۱۰، ج۳، ص۲۶۳)

(1530)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क़ियामत के दिन लोगों को सफ़ों में खड़ा किया जाएगा। फिर जब

अहले जन्नत वहां से गुज़रेंगे तो उन में से एक शख़्स एक जहन्नमी के पास से गुज़रेगा तो वोह जहन्नमी कहेगा, ''ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे वोह दिन याद नहीं जब तूने मुझ से पानी मांगा था और मैं ने तुझे एक घूंट पानी पिलाया था ?'' फिर वोह उस शख़्स के लिये शफ़ाअ़त करेगा। फिर उस शख़्स का गुज़र दूसरे जहन्नमी के क़रीब से होगा तो वोह उस से कहेगा, ''क्या तुझे वोह दिन याद नहीं कि जब मैं ने तुझे वुज़ू के लिये पानी दिया था ?'' तो वोह उस के लिये भी शफ़ाअ़त करेगा। फिर उस का गुज़र तीसरे शख़्स के क़रीब से होगा तो वोह उस से कहेगा, ''ऐ फ़ुलां ! क्या तुझे वोह दिन याद नहीं जब तूने मुझे फ़ुलां की ह़ाजत रवाई के लिये भेजा था तो मैं तेरी वजह से चला गया था।'' तो वोह उस की भी शफ़ाअ़त करेगा।''

(ابن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل صدقۃ الماء، رقم ۳۶۸۵، ج۴، ص۱۹۶)

(1531)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने किसी इस्लामी भाई की ह़ाजत रवाई के लिये चलता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के अपनी जगह वापस आने तक उस के हर क़दम पर उस के लिये सत्तर नेकियां लिखता है और उस के सत्तर गुनाहों को मिटा देता है। फिर अगर उस के हाथों वोह ह़ाजत पूरी हो गई तो वोह अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था और अगर इस दौरान उस का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल होगा।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین..الخ، رقم ۱۳، ج۳، ص۲۶۴)

(1532)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने किसी मुसल्मान भाई की जाइज़ फ़रियाद बादशाह तक पहुंचाने के लिये या किसी तंगदस्त को मोहलत दिलाने के लिये जाता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस दिन पुल सिरात़ को उ़बूर करने में उस की मदद फ़रमाएगा जब लोगों के क़दम फिसल रहे होंगे।''

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین..الخ، رقم ۱۶، ج۳، ص۲۶۵)

(1533)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हर मुसल्मान पर एक स-दक़ा है।'' अ़र्ज़ किया गया, ''अगर वोह इस की त़ाक़त न रखे तो ?'' फ़रमाया, ''वोह अपने हाथ से कमाए, ख़ुद को नफ़्अ़ पहुंचाए और दूसरों पर स-दक़ा भी करे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''अगर वोह इस की भी इस्तित़ाअ़त न रखे ?'' फ़रमाया, ''किसी मज़्लूम ह़ाजत मन्द की मदद करे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''अगर वोह इस की भी इस्तित़ाअ़त न रखे ?'' फ़रमाया ''तो वोह नेकी या भलाई का ह़ुक्म दे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''अगर ऐसा न कर सके तो ?'' फ़रमाया, ''शर से बचता रहे क्यूं कि येह भी स-दक़ा है।'' (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب بیان ان اسم الصدقۃ...الخ، رقم ۱۰۰۸، ص۵۰۴)
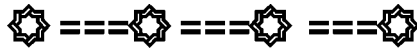
मुसल्मान के दिल में खुशी दाखि़ल करने का सवाब

(1534)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने मुसल्मान भाई से उस की पसन्दीदा ह़ालत में मिले **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उसे खुश कर देगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین..الخ، رقم ۱۷، ج ۳، ص ۲۶۵)

(1535)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मोमिन के दिल में खुशी दाखि़ल करना सब से अफ़्ज़ल अ़मल है ख़्वाह तू उस की सित्र पोशी करने के लिये कपड़े पहनाए या उस की भूक दूर करने के लिये उसे शिकम सैर कर दे या उस की कोई ह़ाजत पूरी कर दे।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین..الخ، رقم ۱۹، ج ۳، ص ۲۶۵)

(1536)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक फ़राइज़ की अदाएगी के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल मुसल्मान के दिल में खुशी दाखि़ल करना है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۱۱۰۷۹، ج ۱۱، ص ۵۹)

(1537)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने अपने मुसल्मान भाई की जाइज़ फ़रियाद सुल्त़ान तक पहुंचाई या उस के दिल में खुशी दाखि़ल की **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नत में बुलन्द मक़ाम अ़त़ा फ़रमाएगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب فضل قضاء الحوائج، رقم ۱۳۷۱۱، ج ۸، ص ۳۵۰)

(1538)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम्हारा अपने मुसल्मान भाई के दिल में खुशी दाखि़ल करना मग़्फ़िरत को वाजिब करने वाले आ'माल में से है।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب فضل قضاء الحوائج، رقم ۱۳۷۱۹، ج ۸، ص ۳۵۲)

(1539)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि ''या रसूलल्लाह! लोगों में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का पसन्दीदा शख़्स कौन है?'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को वोह शख़्स ज़ियादा पसन्द है जो लोगों को ज़ियादा नफ़्अ़ पहुंचाता हो और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का सब से पसन्दीदा अ़मल वोह सुरूर या'नी खुशी है जो तू किसी मुसल्मान के दिल में दाखि़ल करे ख़्वाह तू उस की परेशानी दूर करे या उस का क़र्ज़ अदा करे या उस की भूक मिटाए और अपने किसी भाई की ह़ाजत रवाई के लिये चलना मुझे अपनी इस मस्जिद में एक महीना ए'तिकाफ़ करने से ज़ियादा पसन्द है और जिस ने अपना गुस्सा पी लिया ह़ालां कि वोह उसे नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत रखता था

तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के दिल को अपनी रिज़ा से भर देगा और जो शख़्स अपने भाई की ह़ाजत पूरी होने तक उस के साथ रहे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस दिन उसे साबित क़-दमी अ़ता फ़रमाएगा जिस दिन क़दम फिसलते होंगे।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین، رقم ۲۲، ج۳، ص۲۶۵)

(1540)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने मुसल्मानों के किसी घर में ख़ुशी दाख़िल की **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत से कम किसी सवाब पर राज़ी न होगा।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، وغیرھا، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین..الخ، رقم ۲۱، ج۳، ص۲۶۵)

(1541)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद अपने दादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो शख़्स किसी मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत और तौह़ीद में मसरूफ़ रहता है। जब वोह बन्दा अपनी क़ब्र में चला जाता है तो वोह फ़िरिश्ता उस के पास आ कर पूछता है, ''क्या तू मुझे नहीं पहचानता ?'' वोह कहता है कि ''तू कौन है ?'' तो वोह फ़िरिश्ता कहता है कि ''मैं वोह ख़ुशी हूं जिसे तूने फ़ुलां के दिल में दाख़िल किया था आज मैं तेरी वह़शत में तुझे उन्स पहुंचाऊंगा और सुवालात के जवाबात में साबित क़दम रखूंगा और तुझे रोज़े क़ियामत के मनाज़िर दिखाऊंगा और तेरे लिये तेरे रब عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में सिफ़ारिश करूंगा और तुझे जन्नत में तेरा ठिकाना दिखाऊंगा।''
(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی قضاء حوائج المسلمین، رقم ۲۳، ج۳، ص۲۶۶)

मरीज़ की इयादत का सवाब

(1542)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन फ़रमाएगा ''ऐ इब्ने आदम ! मैं बीमार हुवा तो तूने मेरी इयादत क्यूं न की ?'' बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी इयादत कैसे करता तू तो रब्बुल आ़–लमीन है ?'' अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, ''क्या तू न जानता था कि मेरा फ़ुलां बन्दा बीमार है फिर भी तूने उस की इयादत नहीं की, क्या तू नहीं जानता था कि अगर तू उस की इयादत करने के लिये उस के पास जाता तो मुझे उस के पास पाता।'' फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, ''ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से खाना मांगा तो तूने मुझे खाना क्यूं न खिलाया ?'' बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ''ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे खाना कैसे खिलाता तू तो रब्बुल आ़–लमीन है ?'' अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से खाना मांगा था तो तूने उसे खाना क्यूं नहीं खिलाया ? क्या तू न जानता था कि अगर तू उसे खाना खिलाता तो इस का सवाब मेरे पास ज़रूर पा लेता ?'' फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझ से पानी मांगा तो तूने मुझे पानी क्यूं न दिया ?'' बन्दा अ़र्ज़ करेगा, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे पानी कैसे पिलाता तू तो रब्बुल आ़–लमीन है।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि ''मेरे फ़ुलां बन्दे ने तुझ से पानी मांगा तो तूने उसे पानी न पिलाया, क्या तू न जानता था कि अगर तू उस को पानी पिला देता तो इस का सवाब मेरे पास पाता।'' (مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل عیادۃ المریض، رقم ۲۵۶۹، ص۱۳۸۹)

(1543)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़–मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो शख़्स किसी मरीज़ की इयादत करता है तो एक मुनादी आस्मान से निदा करता है, ''ख़ुश हो जा कि तेरा येह चलना मुबारक है और तूने जन्नत में अपना ठिकाना बना लिया है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب من عاد مریضا، رقم ۱۴۴۳، ج۲، ص۱۹۲)

एक रिवायत में है कि जब कोई शख़्स अपने भाई की इयादत करने या उस से मिलने के लिये निकलता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''ख़ुश हो जा कि तेरा येह चलना मुबारक है और तूने जन्नत में अपने लिये एक ठिकाना बना लिया है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی، رقم ۸، ج۴، ص۱۶۴)

(1544)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आज तुम में से किस ने रोज़ा रखा ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं ने।'' फिर फ़रमाया कि ''तुम में से आज मिस्कीन को किस ने खाना खिलाया ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र

सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं ने।'' फिर फ़रमाया कि ''तुम में से आज मरीज़ की इयादत किस ने की ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं ने।'' फिर फ़रमाया कि ''आज तुम में से जनाज़े के साथ कौन गया ?'' ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''मैं।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस शख़्स में येह चार ख़स्लतें हो जाएं वोह जन्नत में दाख़िल होगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب فی عیادۃ المرضی..الخ، رقم ۷، ج۴، ص۱۶۳)

(1545)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''पांच अ़मल ऐसे हैं कि जो कोई इन में से एक पर भी अ़मल करेगा वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर होगा। (1) जिस ने मरीज़ कि इयादत की... या... (2) जनाज़े के साथ चला... या... (3) ग़ाज़ी बन कर निकला... या... (4) ह़ाकिमे इस्लाम के पास इस लिये आया कि उस की इ़ज़्ज़तो तौक़ीर करे... या... (5) अपने घर में इस लिये बैठा रहा ताकि लोग इस के शर से मह़फ़ूज़ रहें और वोह लोगों के शर से मह़फ़ूज़ रहे।'' (مسند امام احمد، حدیث معاذ بن جبل، رقم ۲۲۱۵۴، ج۸، ص۲۵۵)

(1546)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''पांच आ'माल ऐसे हैं जो इन्हें एक दिन में करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जन्नतियों में लिखेगा, (1) मरीज़ की इयादत करना, (2) जनाज़े में ह़ाज़िर होना, (3) रोज़ा रखना, (4) नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाना और (5) गुलाम आज़ाद करना।'' (مسند امام احمد، حدیث معاذ بن جبل، رقم ۲۲۱۵۴، ج۸، ص۲۵۵)

(1547)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मरीज़ों की इयादत किया करो और जनाज़ों में शिर्कत किया करो येह तुम्हें आख़िरत की याद दिलाते रहेंगे।''

(مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، رقم ۱۱۱۸۰، ج۴، ص۴۷)

(1548)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने किसी मुसल्मान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये जाता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाएका के ज़रीए साया फ़रमाता है, वोह फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ करते हैं और वोह फ़ारिग़ होने तक रह़मत में ग़ोता ज़न रहता है और जब वोह उस काम से फ़ारिग़ हो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये एक ह़ज और एक उ़म्रे का सवाब लिखता है और जिस ने मरीज़

की इयादत की **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर पछत्तर हज़ार मलाएका के ज़रीए साया फ़रमाएगा और घर वापस आने तक उस के हर क़दम उठाने पर उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस के हर क़दम रखने पर उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा और एक द-रजा बुलन्द किया जाएगा, जब वोह मरीज़ के साथ बैठेगा तो रह़मत उसे ढांप लेगी और अपने घर वापस आने तक रह़मत उसे ढांपे रखेगी।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی، رقم ۱۳، ج۴، ص۱۶۵)

(1549)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो शख़्स किसी मरीज़ की इयादत करता है वोह दरियाए रह़मत में ग़ोते लगाता है। जब वोह मरीज़ के पास बैठता है तो रह़मत उसे ढांप लेती है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह! येह तो उस तन्दुरुस्त के लिये है जो मरीज़ की इयादत करता है, उस मरीज़ के लिये क्या है?'' फ़रमाया, ''उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब बन्दा तीन दिन बीमार होता है तो गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب عیادۃ المریض، رقم ۳۷۶۴، ج۳، ص۲۰)

(1550)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने मरीज़ की इयादत की, जब तक वोह बैठ न जाए दरियाए रह़मत में ग़ोते लगाता रहता है और जब वोह बैठ जाता है तो रह़मत में डूब जाता है।''

(مسند امام احمد، مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۱۴۲۶۴، ج۵، ص۳۰)

(1551)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने मरीज़ की इयादत की वोह दरियाए रह़मत में दाख़िल हो गया, जब वोह उस मरीज़ के पास बैठ जाता है तो दरियाए रह़मत में नहाने लगता है।''

एक रिवायत में है कि ''जब वोह उस के पास से उठता है तो जहां से वोह इयादत के लिये चला था वहां पहुंचने तक दरियाए रह़मत में ग़ोता ज़न रहता है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی...الخ، رقم ۱۶، ج۴، ص۱۶۶)

(1552)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने अच्छे त़रीक़े से वुज़ू किया और सवाब की उम्मीद पर अपने किसी मुसल्मान भाई की इयादत की उसे जहन्नम से सत्तर साल के फ़ासिले तक दूर कर दिया जाएगा।'' (سنن ابوداؤد، کتاب الجنائز، باب فی فضل العیادۃ...الخ، رقم ۳۰۹۷، ج۳، ص۲۴۸)

(1553)...... हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जब मुसल्मान अपने मुसल्मान भाई की इयादत करता है तो वोह लौटने तक जन्नत के खुरफ़े में रहता है।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह ! जन्नत का खुरफ़ा क्या है ?'' फ़रमाया, ''जन्नत का एक फल।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی، رقم ۹، ج ۴، ص ۱۶۴)

(1554)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब मुसल्मान अपने मुसल्मान भाई की इयादत करता है तो वोह मरीज़ के पास बैठने तक जन्नत के बाग़ में चेहल क़-दमी करता है जब वोह बैठता है तो रह़मत उसे ढांप लेती है। जब कोई शाम के वक़्त किसी मरीज़ की इयादत करता है तो उस के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते भी निकलते हैं जो सुब्ह़ तक उस के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते हैं और जो सुब्ह़ के वक़्त किसी मरीज़ की इयादत करता है उस के साथ सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते निकलते हैं जो शाम तक उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं।''

जब कि एक रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो मुसल्मान सुब्ह़ को किसी मुसल्मान की इयादत को निकलता है शाम तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं और जो शाम को मरीज़ की इयादत करने निकलता है सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं और उस के लिये जन्नत में एक बाग़ लगा दिया जाता है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی...الخ، رقم ۱۱، ج ۴، ص ۱۶۴)

मरीज़ के लिये दुआ करने का सवाब

(1555)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने किसी ऐसे मरीज़ की इयादत की जिस की मौत का वक़्त क़रीब न आया हो और सात मरतबा येह अल्फ़ाज़ कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से शिफ़ा अ़ता फ़रमाएगा اَسْئَلُ اللّٰہَ الْعَظِیْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ اَنْ یَّشْفِیَکَ तरजमा : मैं अ़-ज़मत वाले, अ़र्शे अ़ज़ीम के मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं।''

(سنن ابوداود، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمریض عند العیادۃ، رقم ۳۱۰۶، ج ۳، ص ۲۵۱)

मरीज़ का इ़यादत करने वालों के लिये दुआ़ करने का सवाब

(1556)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाए उस की कोई दुआ़ रद नहीं होती ।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی عیادۃ المرضی...الخ، رقم۱۹، ج۴،ص۱۶۶)

(1557)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब तुम किसी मरीज़ के पास आओ तो उस से अपने लिये दुआ़ की दर-ख़्वास्त करो क्यूं कि उस की दुआ़ फ़िरिश्तों की दुआ़ की त़रह़ होती है ।'' (ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عیادۃ المریض، رقم۱۴۴۱، ج۲،ص۱۹۱)

(1558)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मरीज़ों की इ़यादत किया करो और उन्हें अपने लिये दुआ़ करने का कहा करो क्यूं कि मरीज़ की दुआ़ मक़्बूल और उस के गुनाह मुआ़फ़ हैं ।'' (مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب دعاء المریض، رقم۳۷۵۹، ج۳،ص۱۸)

ज़ोह्द और अदब का सवाब

हुस्ने अख़्लाक़ का सवाब और इस की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने ह़बीब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मद्ह़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیْمٍ۝ (پ۲۹،القلم:۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक तुम्हारी ख़ू बू (ख़ुल्क़) बड़ी शान की है।

इस बारे में अह़ादीसे मुक़द्दसा :

(1559)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم न तो फ़ोहूश गो थे न ही बद कलामी करने वाले थे और फ़रमाया करते थे, ''तुम में से बेहतरीन शख़्स वोह है जिस का अख़्लाक़ अच्छा है।''

(بخاری، کتاب المناقب، باب صفۃ النبی صلی اللہ علیہ والہ وسلم، رقم ۳۵۵۹، ج۲، ص۴۸۹)

(1560)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नव्वास बिन समआ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से गुनाह और नेकी के बारे में पूछा तो आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हुस्ने अख़्लाक़ नेकी है और जो तेरे दिल में खटके और जिस बात पर लोगों का मुत्तलअ़ होना तुझे ना पसन्द हो वोह गुनाह है।''

(مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب تفسیر البر، رقم ۲۵۵۳، ص۱۳۸۲)

(1561)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कामिल तरीन मोमिन वोह है जिस के अख़्लाक़ सब से बेहतर हों और जो अपने घर वालों पर सब से ज़ियादा नर्मी करने वाला हो।'' (ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی استکمال الایمان، رقم ۲۶۲۱، ج۴، ص۲۷۸)

(1562)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि तुम में से बेहतरीन शख़्स कौन है ?'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''क्यूं नहीं या रसूलल्लाह ! '' फ़रमाया, ''तुम में से उ़म्र रसीदा और ज़ियादा हुस्ने अख़्लाक़ वाला।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حسن الخلق، رقم ۴۸۴، ج۱، ص۳۵۲)

(1563)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मोमिनों में कामिल तरीन शख़्स वोह है जो उन में ज़ियादा अच्छे अख़्लाक़ वाला है और तुम में से बेहतरीन शख़्स वोह है जो अपने अहले ख़ाना के मुआ़-मले में बेहतर हो।'' (جامع ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی استکمال الایمان وزیادتہ ونقصانہ، رقم ۲۶۲۱، ج۴، ص۲۷۸)

(1564)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ऐसी

तवज्जोह के साथ बैठे हुए थे कि गोया हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हुए हैं। जब लोग आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होते तो हम में से कोई हरगिज़ कलाम न करता। एक मरतबा लोगों ने अ़र्ज़ किया, "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से ज़ियादा मह़बूब बन्दा कौन है ?" फ़रमाया, "जो इन में से बेहतरीन अख़्लाक़ वाला हो।"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی الخلق الحسن، رقم ۲۵، ج ۳، ص ۲۷۴)

एक रिवायत में है कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह ! इन्सान को अ़ता की गई सब से बेहतरीन चीज़ कौन सी है ?" फ़रमाया, "हुस्ने अख़्लाक़।"

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ، باب الترغیب فی الخلق الحسن، رقم ۲۶، ج ۳، ص ۲۷۴)

(1565)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन समुरह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक ऐसी मजलिस में बैठा हुवा था जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا भी शरीक थे। आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, "बेशक बद अख़्लाक़ी और बद कलामी इस्लाम में से नहीं और बेशक लोगों में इस्लाम के ए'तिबार से सब से अच्छा वोह है जो इन में ज़ियादा अच्छे अख़्लाक़ वाला है।" (المسند للامام احمد بن حنبل، رقم ۲۰۸۷۴، ج ۷، ص ۴۱۰)

(1566)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सी नमाज़ अफ़्ज़ल है ?" फ़रमाया, "जिस में त़वील क़ियाम किया जाए।" उस ने पूछा, "कौन सा स-दक़ा अफ़्ज़ल है ?" फ़रमाया, "वोह जो कोई तंगदस्त अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ करे।" फिर उस ने अ़र्ज़ किया, "कामिल मोमिन कौन है ?" फ़रमाया, "जो बेहतरीन अख़्लाक़ वाला हो।" (المعجم الکبیر، رقم ۱۰۳، ج ۱۷، ص ۴۸)

(1567)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मोमिन की फ़य्याज़ी उस का दीन है और उस की मुरव्वत उस की अ़क़्ल है और उस की शराफ़त उस का अख़्लाक़ है।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان باب حسن الخلق، رقم ۴۸۳، ج ۱، ص ۳۵۱)

(1568)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ऐ अबू ज़र ! तदबीर से बढ़ कर कोई अ़क़्ल नहीं और गुनाह से बाज़ रहने से बढ़ कर कोई तक़्वा नहीं और हुस्ने अख़्लाक़ से बढ़ कर कोई शराफ़त नहीं।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الخلق الحسن، رقم ۱۲، ج ۳، ص ۲۷۲)

(1569)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क़ियामत के दिन तुम में से मेरे सब से ज़ियादा क़रीब और ज़ियादा महबूब वोह शख़्स होगा जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे होंगे।''
(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی معالی الاخلاق، رقم ۲۰۲۵، ج۳، ص۴۰۹)

(1570)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना ''क्या मैं तुम्हें ख़बर न दूं कि क़ियामत के दिन तुम में से मेरा महबूब तरीन और सब से ज़ियादा क़रीब कौन शख़्स होगा?'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह सुवाल तीन या दो मरतबा दोहराया तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह! ज़रूर ख़बर दीजिये।'' फ़रमाया कि ''तुम में जिस के अख़्लाक़ सब से अच्छे होंगे।''
(المسند للامام احمد بن حنبل، رقم ۶۷۴۷، ج۲، ص۶۱۰)

(1571)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा ख़ु-शनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक तुम में से मुझे सब से ज़ियादा महबूब और आख़िरत में मेरे सब से ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स होगा जो तुम में बेहतरीन अख़्लाक़ वाला होगा और तुम में से मुझे सब से ज़ियादा ना पसन्द और आख़िरत में मुझ से ज़ियादा दूर वोह शख़्स होगा जो तुम में बद तरीन अख़्लाक़ वाला होगा।''
(المسند للامام احمد بن حنبل، رقم ۱۷۷۴۷، ج۶، ص۲۲۰)

(1572)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मेरे नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा पसन्दीदा लोग वोह हैं जो तुम में बेहतरीन अख़्लाक़ वाले, नर्म दिल, लोगों से महब्बत करने वाले हैं और जिन से लोग महब्बत करते होंगे और तुम में मेरे सब से ज़ियादा ना पसन्दीदा लोग वोह चुग़ुल ख़ोर हैं जो दोस्तों के दरमियान तफ़र्क़ा डालें और पाक दामन लोगों में ऐब ढूंडें।''
(مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب ماجاء فی حسن الخلق، رقم ۱۲۶۶۸، ج۸، ص۴۸)

(1573)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से लोगों को कसरत से जन्नत में दाख़िल करने वाले अ़मल के बारे में सुवाल किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरना और हुस्ने अख़्लाक़।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कसरत से जहन्नम में दाख़िल करने वाली चीज़ के बारे में सुवाल किया गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुंह और शर्मगाह।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب حسن الخلق، رقم ۴۷۶، ج۱، ص۳۴۹)

(1574)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया कि ''ऐ अबू ज़र ! क्या मैं तुम्हें दो ऐसी ख़स्लतों के बारे में न बताऊं जो ब ज़ाहिर तो हलकी हैं मगर मीज़ान पर बहुत भारी हैं ?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! ज़रूर बताइये।'' आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''हुस्ने अख़्लाक़ और ख़ामोशी इख़्तियार कर लो, उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है मख़्लूक़ ने इन दोनों जैसा कोई अ़मल नहीं किया।'' (مسند ابی یعلی الموصلی، سند انس بن مالک، رقم ۳۲۸۵، ج۳، ص۱۷۴)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की रिवायत के अल्फ़ाज़ कुछ यूं कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''ऐ अबू दरदा ! क्या मैं तुझे दो ऐसे अ़मल न बताऊं जिन की मशक़्क़त तो ख़फ़ीफ़ है मगर उन का अज्र अ़ज़ीम है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के साथ उन जैसे किसी अ़मल के साथ मुलाक़ात नहीं की गई, वोह दो अ़मल त़वील ख़ामोशी और हुस्ने अख़्लाक़ हैं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الخلق الحسن، رقم ۲۳، ج۳، ص۲۷۴)

(1575)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ान में हुस्ने अख़्लाक़ से ज़ियादा वज़्नी कोई शै नहीं होगी।'' (جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی حسن، رقم ۲۰۰۹، ج۳، ص۴۰۴)

(1576)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''येह अख़्लाक़ **अल्लाह** का अ़तिय्या हैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे अच्छे अख़्लाक़ अ़ता फ़रमाता है और जिस के साथ बुराई का इरादा फ़रमाता है उसे बुरे अख़्लाक़ दे देता है।''

(المعجم الاوسط، من اسمہ مسعود، رقم ۸۶۲۱، ج۶، ص۲۳۴)

(1577)......ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबिय्यों के सरवर, दो जहां के ताजवर सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, ''अच्छे अख़्लाक़ गुनाह को इस तरह पिघला देते हैं जिस त़रह़ पानी बर्फ़ को पिघला देता है और बुरे अख़्लाक़ अ़मल को ऐसे ख़राब करते हैं जैसे सिर्का शह्द को ख़राब कर देता है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۱۰۷۷۷، ج۱۰، ص۳۱۹)

(1578)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! किसी औ़रत ने दो शादियां कीं फिर उस का इन्तिक़ाल

हो गया और वोह और उस के दोनों शोहर जन्नत में दाख़िल हो गए तो वोह किस की बीवी बनेगी, पहले की या दूसरे की ?" आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "वोह उन दोनों में से अपने साथ दुन्या में हुस्ने अख़्लाक़ के साथ पेश आने वाले को इख़्तियार करेगी।" फिर फ़रमाया "ऐ उम्मे हबीबा ! हुस्ने अख़्लाक़ अपने साथ दुन्या व आख़िरत की भलाइयां ले कर चला गया।" (المعجم الكبير، رقم ٤١١، ج ٢٣، ص ٢٢٢)

(1579)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो हक़ पर होते हुए झगड़ा ख़त्म करे मैं उस के लिये जन्नत के किनारे एक घर की ज़मानत देता हूं और झूट तर्क करने वाले को जन्नत के वस्त़ में एक घर की ज़मानत देता हूं अगर्चे वोह मुज़ाह के तौर पर झूट बोलता हो और अच्छे अख़्लाक़ वाले को जन्नत के आ'ला द-रजे में एक घर की ज़मानत देता हूं।"

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، رقم ٤٨٠٠، ج ٤، ص ٣٣٢)

(1580)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य भेजी कि ऐ मेरे ख़लील عَلَيْهِ السَّلَام ! लोगों से हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आओ ख़्वाह (सामने वाला) काफ़िर ही क्यूं न हो तो अबरार के ठिकाने में दाख़िल हो जाओगे और बेशक मैं अच्छे अख़्लाक़ वाले के बारे में कह चुका हूं कि उसे अपने अ़र्श के नीचे साए में जगह दूंगा और उसे अपनी जन्नत के शरबत से सैराब करूंगा और अपने जवारे रहमत में जगह अ़ता फ़रमाऊंगा।" (المعجم الاوسط، من اسمه محمد، رقم ٦٥٠٦، ج ٥، ص ٣٧)

(1581)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ बन्दे के अच्छे अख़्लाक़ के सबब उसे रोज़ादार और नमाज़ी के द-रजे पर पहुंचा देता है।" (المعجم الاوسط، من اسمه علی، رقم ٣٩٨٠، ج ٣، ص ٩٤)

(1582)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बेशक बन्दा अपने अच्छे अख़्लाक़ के सबब आख़िरत के अ़ज़ीम द-रजों और बुलन्द मन्ज़िलों तक पहुंच जाता है हालां कि वोह इबादत में कमज़ोर होता है और बन्दा अपने बुरे अख़्लाक़ के सबब जहन्नम के सब से निचले द-रजे तक पहुंच जाता है।" (المعجم الكبير، رقم ٧٥٤، ج ١، ص ٢٦٠)

(1583)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक सीधा सादा मुसल्मान अपने अच्छे अख़्लाक़ और नफ़ीस तृबीअ़त के सबब रोज़ादारों और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आयात पढ़ते हुए क़ियाम करने वालों का द-रजा पा लेता है।'' (المسند للامام احمد حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو، رقم ۶۶۵۹، ج ۲، ص ۵۹۱)

(1584)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक मोमिन अपने अच्छे अख़्लाक़ के सबब रोज़ेदार और रात भर इ़बादत करने वाले के द-रजे को पा लेता है।'' (سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، رقم ۴۷۹۸، ج ۴، ص ۳۳۲)

(1585)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक आदमी अपने अच्छे अख़्लाक़ के सबब रात को इ़बादत करने वाले और सख़्त गर्मी में रोज़ा रखने वाले के द-रजे को पा लेता है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۷۷۰۹، ج ۸، ص ۱۲۹)

===

ह़या का सवाब

(1586)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ईमान के तिहत्तर से ज़ाइद या साठ से ज़ियादा शो'बे हैं, इन में से सब से अफ़्ज़ल لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहना और सब से कम तर द-रजा रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर कर देना है और ह़या ईमान की एक शाख़ है।''

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان وافضلھا، رقم ۳۵،ص ۳۹)

(1587)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ह़या ईमान से है और ईमान जन्नत में (ले जाने वाला) है फ़ोह़्श गोई बद अख़्लाक़ी की एक शाख़ है और बद अख़्लाक़ी जहन्नम में (ले जाने वाली) है।''

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی الحیاء، رقم ۲۰۱۶، ج ۳،ص ۴۰۶)

(1588)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ह़या और ईमान दोनों एक दूसरे से मिले हुए हैं जब उन में से एक उठ जाता है तो दूसरा भी उठ जाता है।''

(المستدرک، کتاب الایمان، باب اذا زنی العبد خرج منہ الایمان، رقم ۶۶، ج ۱،ص ۱۷۶)

(1589)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बे ह़याई जिस चीज़ में हो उसे ऐबदार कर देती है और ह़या जिस चीज़ में हो उसे ज़ीनत बख़्शती है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد باب الحیاء، رقم ۴۱۸۵، ج ۴،ص ۴۶۱)

(1590)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ह़या और कम गोई ईमान की दो शाख़ें हैं और बे ह़याई और फ़ुज़ूल गोई निफ़ाक़ का ह़िस्सा हैं।''

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، رقم ۲۰۳۴، ج ۳،ص ۴۱۴)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ह़या और कम गोई ईमान में से हैं और येह दोनों ख़स्लतें जन्नत के क़रीब और जहन्नम से दूर करने वाली हैं जब कि फ़ोह़्श गोई और बद कलामी शैत़ान की त़रफ़ से हैं और जन्नत से दूर और जहन्नम से क़रीब कर देती हैं।''

(1591)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक हर दीन का एक ख़ुल्क़ होता है और इस्लाम का ख़ुल्क़ ह़या है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحیاء، رقم ۴۱۸۲، ج ۴،ص ۴۶۰)

सच का सवाब

कुरआने पाक में कई मक़ामात पर सच बोलने की फ़ज़ीलत बयान की गई है चुनान्चे इर्शाद होता है,

(1) هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (پ۷، المائدہ:۱۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह है वोह दिन जिस में सच्चों को उन का सच काम आएगा उन के लिये बाग़ हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा हमेशा इन में रहेंगे **अल्लाह** उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी येह है बड़ी काम्याबी।

(2) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ (پ۱۱، التوبہ:۱۱۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो **अल्लाह** से डरो और सच्चों के साथ हो।

(3) مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۚۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا (پ۲۱، الاحزاب:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़ह्द **अल्लाह** से किया था तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई राह देख रहा है और वोह ज़रा न बदले।

(4) لِّيَجْزِیَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ (پ۲۱، الاحزاب:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ताकि **अल्लाह** सच्चों को उन के सच का सिला दे।

(5) وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا (پ۲۲، الاحزاب:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और सच्चे और सच्चियां और सब्र वाले और सब्र वालियां और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

(6) وَالَّذِیْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖۤ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ۝ لَهُمْ مَّا یَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْؕ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الْمُحْسِنِیْنَ ۝ لِیُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِیْ عَمِلُوْا وَیَجْزِیَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِیْ كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝

(پ۲۴، الزمر: ۳۳، ۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो येह सच ले कर तशरीफ़ लाए और वोह जिन्हों ने उन की तस्दीक़ की येही डर वाले हैं इन के लिये है जो वोह चाहें अपने रब के पास नेकों का येही सिला है ताकि अल्लाह उन से उतार दे बुरे से बुरा काम जो उन्हों ने किया और उन्हें उन के सवाब का सिला दे अच्छे से अच्छे काम पर जो वोह करते थे।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1592)...... हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सच्चाई को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह नेकी के साथ है और येह दोनों जन्नत में हैं और झूट से बचते रहो क्यूं कि येह गुनाह के साथ है और येह दोनों जहन्नम में ले जाने वाले हैं।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، باب الکذب، رقم ۵۷۰۴، ج۷، ص۴۹۴)

(1593)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सच्चाई को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह नेकी की त़रफ़ रहनुमाई करती है और येह दोनों जन्नत में हैं और झूट से बचते रहो क्यूं कि येह गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और येह दोनों जहन्नम में ले जाने वाले हैं।''

(طبرانی کبیر، رقم ۸۹۴، ج۱۹، ص۳۸۱)

(1594)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत की त़रफ़ ले जाती है और बेशक बन्दा सच बोलता रहता है यहां तक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सिद्दीक़ या'नी बहुत सच बोलने वाला हो जाता है जब कि झूट गुनाह की त़रफ़ ले जाता है और गुनाह जहन्नम की त़रफ़ ले जाता है और बेशक बन्दा झूट बोलता रहता है यहां तक कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक कज़्ज़ाब या'नी बहुत बड़ा झूटा हो जाता है।''

(بخاری، کتاب الادب، باب قول اللہ تعالی، رقم ۶۰۹۴، ج۴، ص۱۲۵)

(1595)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक शख़्स ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जन्नती अ़मल कौन सा है?'' आप ने इर्शाद फ़रमाया कि ''सच बोलना, बन्दा जब सच बोलता है तो नेकी करता है और जब नेकी करता है मह़फ़ूज़ हो जाता है और जब मह़फ़ूज़ हो जाता है तो जन्नत में दाख़िल हो जाता है।'' फिर उस शख़्स ने अ़र्ज़ किया ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जहन्नम में ले जाने वाला अ़मल कौन सा है?'' फ़रमाया कि ''झूट बोलना। जब बन्दा झूट बोलता है तो गुनाह करता है और जब गुनाह करता है तो ना शुक्री करता है और जब ना शुक्री करता है तो जहन्नम में दाख़िल हो जाता है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ ابن عمرو بن العاص، رقم ٦٦٥٢، ج٢ص٥٨٩)

(1596)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम मुझे छ चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं, (1) जब बोलो तो सच बोलो, (2) जब वा'दा करो तो उसे पूरा करो, (3) जब अमानत लो तो उसे अदा करो, (4) अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करो, (5) अपनी निगाहें नीची रखा करो और (6) अपने हाथों को रोके रखो।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والصلۃ والاحسان..الخ، باب الصدق الخ، رقم ٢٧١، ج١، ص٢٤٥)

(1597)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम मेरी छ बातें क़बूल कर लो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं, (1) जब तुम में से कोई गुफ़्त-गू करे तो झूट न बोले, (2) जब वा'दा करे तो उसे पूरा करे, (3) जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत न करे, (4) अपनी निगाहों को नीचे रखो, (5) अपने हाथों को रोको और (6) अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करो।''

(مسند ابی یعلی الموصلی، مسند انس بن مالک، رقم ٤٢٤١، ج٣، ص٤٤٣)

(1598)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़राद सु-लमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर थे। आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू के लिये पानी मंगवाया। फिर उस में अपना हाथ डाला और वुज़ू फ़रमाया। हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुसालए मुबा-रका की जुस्त-जू की और उसे थोड़ा थोड़ा पी लिया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम्हें इस काम पर किस चीज़ ने आमादा किया?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के

रसूल (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की महब्बत ने।'' फ़रमाया, ''अगर तुम चाहते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी तुम से महब्बत करें तो जब अमानतें तुम्हारे सिपुर्द की जाएं तो उन्हें अदा कर दिया करो और जब तुम बोलने लगो तो सच बोला करो और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक किया करो।''

(مجمع الزوائد، کتاب علامات النبوۃ باب منہ فی الخصائص، رقم ۱۴۰۱۶، ج ۸، ص ۴۸۴)

(1599)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''चार ख़स्लतें ऐसी हैं जो अगर तुम में हों तो तुम्हें दुन्या की किसी महरूमी का एह़सास नहीं होगा (1) अमानत की हि़फ़ाज़त करना (2) सच बोलना (3) हुस्ने अख़्लाक़ (4) ह़लाल कमाई खाना।''

हुस्ने अख़्लाक़ के बयान में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ह़दीस गुज़र चुकी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो ह़क़ पर होते हुए झगड़ा ख़त्म करे मैं उस के लिये जन्नत के किनारे पर एक घर की ज़मानत देता हूं, झूट तर्क करने वाले अगर्चे वोह मुज़ाह़ के तौर पर झूट बोलता हो जन्नत के वस्त़ में एक घर की ज़मानत देता हूं और अच्छे अख़्लाक़ वाले को जन्नत के आ'ला द-रजे में एक घर की ज़मानत देता हूं।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۶۶۴، ج ۲، ص ۵۹۱)

(1600)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सच बोला करो अगर्चे तुम्हें इस में हलाकत नज़र आए क्यूं कि इसी में नजात है।''

(مکارم الاخلاق، باب فی الصدق...الخ، ص ۱۱۱)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
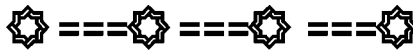
अपने मुसल्मान भाइयों के लिये आ़जिज़ी करने वाले का सवाब

इस बारे में कुरआनी आयात :

(1) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (پ٦، المائدہ:٥٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो तुम में जो कोई अपने दीन से फिरेगा तो अ़न्क़रीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसल्मानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त।

(2) مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (پ٢٦، الفتح:٢٩)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल।

(3) تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِى الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ○ (پ٢٠، القصص:٨٣)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आ़क़िबत परहेज़ गारों ही की है।

इस बारे में अह़ादीसे मुबा-रका :

(1601)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''स-दक़ा माल में कमी नहीं करता, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अफ़्वो दर गुज़र की वजह से बन्दे की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमा देता है और जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी करता है **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب استحباب العفو...الخ، رقم ۲۵۸۸ ص ۱۳۹۷)

(1602)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, ''जो मेरे लिये इतनी सी आ़जिज़ी इख़्तियार करता है,'' (फिर सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी हथैली का रुख़ ज़मीन की त़रफ़ कर दिया और कहने लगे कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है) ''मैं उसे इतनी बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता हूं।'' येह कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी हथैली को आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर दिया। (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عمر بن الخطاب، رقم ۳۰۹، ج۱، ص۱۰۱)

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मिम्बर पर ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि ''ऐ लोगो ! आ़जिज़ी इख़्तियार करो क्यूं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाएगा। तो वोह (या'नी आ़जिज़ी करने वाला) ख़ुद को छोटा मह़सूस करता है जब कि लोगों की नज़रों में इ़ज़्ज़त दार हो जाता है और जो तकब्बुर करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे हलाक कर देगा और फ़रमाएगा कि दूर हो जा तो वोह लोगों की नज़रों में छोटा हो जाएगा ह़ालां कि वोह ख़ुद को बड़ा मह़सूस करता था।'' (مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب فی التواضع، رقم ۱۳۰۶۷، ج۸، ص۱۵۶)

(1603)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हर आदमी के सर में एक लगाम होती है जो कि एक फ़िरिश्ते के हाथ में होती है जब वोह आदमी आ़जिज़ी करता है तो फ़िरिश्ते को हुक्म होता है कि इस शख़्स की लगाम को बुलन्द कर दो और जब वोह तकब्बुर करता है तो फ़िरिश्ते को हुक्म होता है कि इस शख़्स की लगाम को नीचे कर दो।'' (المعجم الکبیر، کتاب الادب، رقم ۱۲۹۳۹، ج۱۲، ص۱۲۹)

(1604)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक द-रजा आ़जिज़ी करता है अल्लाह उसे एक द-रजा बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाता है यहां तक कि उसे आ'ला इ़ल्लिय्यीन (या'नी सब से आ'ला द-रजे) में कर देता है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का एक द-रजा कम कर देता है यहां तक कि उसे अस्फ़लुस्साफ़िलीन (या'नी सब से निचले द-रजे) में कर देता है और तुम में कोई किसी ऐसी ख़ुश्क ग़ार में भी छुप कर अ़मल करे जिस में न तो कोई दरवाज़ा हो न ही कोई खिड़की तो जो उस ने लोगों से छुपाया वोह ज़ाहिर हो कर रहेगा।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، باب التواضع والکبر والعجب، رقم ۵۶۴۹، ج۷، ص۴۷۵)

(1605)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने मुसल्मान भाई के सामने आ़जिज़ी इख़्तियार करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़त़ा फ़रमाएगा और जो उस के सामने अपनी बड़ाई का इज़्हार करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे रुस्वा कर देगा।''

(المعجم الاوسط، باب الف، رقم ۱۱۷۷، ج۵، ص۳۹۰)

(1606)...... हज़रते सय्यिदुना रकब मिसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''खुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जिस ने कमज़ोर न होने के बा वुजूद आजिज़ी की और सुवाल किये बिग़ैर खुद को कमतर जाना और वोह हलाल माल जिसे उस ने किसी गुनाह के बिग़ैर जम्अ किया था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च किया और कमज़ोरों और मिस्कीनों पर रहम किया और अहले फ़िक़्ह व हिक्मत के साथ मेलजोल रखा। खुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जिस की कमाई हलाल है और जिस का बातिन अच्छा और ज़ाहिर पाकीज़ा है और जिस ने अपने शर को लोगों से हटा दिया। खुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जिस ने अपने इल्म पर अमल किया और अपना फ़ाज़िल माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़ैरात कर दिया और फ़ुज़ूल कलाम तर्क कर दिया।'' (المعجم الکبیر، رقم ۴۶۱۶، ج۵، ص۷۱)

हिल्म इख़्तियार करने और गुस्सा पीने का सवाब

इस बारे में आयाते कुरआनिया :

(1) وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ 0 وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ قف وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ 0 (پ۴، آل عمران: ۱۳۴، ۱۳۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग अल्लाह के मह़बूब हैं और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें अल्लाह को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा अल्लाह के और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जाएं।

(2) اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ 0 (پ۴، آل عمران: ۱۳۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐसों को बदला उन के रब की बख़्शिश और जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहें और कामियों (नेक लोगों) का क्या अच्छा नेग (इन्आ़म) है।

(3) وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ 0 جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ 0 سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ 0 (پ۱۳، الرعد: ۲۲، ۲۳، ۲۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जिन्हों ने सब्र किया अपने रब की रिज़ा चाहने को और नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया और बुराई के बदले भलाई कर के टालते हैं इन्ही के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है बसने के बाग़ जिन में वोह दाख़िल होंगे और जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में और फ़िरिश्ते हर दरवाज़े से उन पर येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला।

(4) وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ 0 (پ۲۵، الشوریٰ: ۳۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जो बड़े बड़े गुनाहों और बे ह़याइयों से बचते हैं और जब गुस्सा आए मुआ़फ़ कर देते हैं।

(5) وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰہَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۝ (پ۲۸،التغابن:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर मुआफ़ करो और दर गुज़र करो और बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेह्रबान है।

(6) اِدْفَعْ بِالَّتِیْ ھِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ بَیْنَکَ وَبَیْنَہٗ عَدَاوَۃٌ کَاَنَّہٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ۝ وَمَا یُلَقّٰھَآ اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا یُلَقّٰھَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ۝ (پ۲۴،حم سجدہ:۳۴،۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल जभी वोह कि तुझ में और उस में दुश्मनी थी ऐसा हो जाएगा जैसा कि गहरा दोस्त और येह दौलत नहीं मिलती मगर साबिरों को और इसे नहीं पाता मगर बड़े नसीब वाला।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(1607)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्ज़िर बिन आइज़ अशज्ज رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि ''तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जिन को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पसन्द फ़रमाता है एक ह़िल्म और दूसरी बुर्द-बारी।''

(صحیح مسلم،کتاب الایمان،باب الامر بالایمان باللہ تعالی ورسولہ وشرائع الدین الخ،رقم ۱۷،ص۲۹)

(1608)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक बन्दा ह़िल्म या'नी बुर्द-बारी के ज़रीए दिन को रोज़ा रखने वाले और रात को क़ियाम करने वाले का द-रजा पा लेता है।'' (الترغیب والترھیب،کتاب الادب،باب الترغیب فی الرفق والاناۃ والحلم،رقم ۱۹،ج۳،ص۳۸۱)

(1609)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में न बताऊं जिस के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ द-रजात को बुलन्द फ़रमाता है?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह! ज़रूर फ़रमाइये।'' फ़रमाया कि ''जो तुम्हारे साथ जहालत का बरताव करे उस के साथ बुर्द-बारी से पेश आओ और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआफ़ कर दो और जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम से क़त़ए तअ़ल्लुक़ी करे उस के साथ सिलए रेह़मी करो।'' (مجمع الزوائد،کتاب البر والصلۃ،باب مکارم الاخلاق...الخ،رقم ۱۳۶۹۴،ج۸،ص۳۴۵)

(1610)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हर कमज़ोर, नर्म दिल और अच्छे अख़्लाक़ वाले शख़्स पर जहन्नम की आग ह़राम है।''

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۴۵، رقم ۲۴۹۶، ج ۴، ص ۲۲۰)

(1611)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया कि ''कौन सा अ़मल मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से बचा सकता है?'' फ़रमाया, ''गुस्सा न किया करो।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو، رقم ۶۶۴۶، ج ۲، ص ۵۸۷)

(1612)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया, ''मुझे ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''गुस्सा मत किया करो तुम्हें जन्नत ह़ासिल हो जाएगी।''

(المعجم الاوسط، باب الف، رقم ۲۳۵۳، ج ۲، ص ۲۰)

(1613)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बहादुर वोह नहीं जो लोगों पर ग़ालिब आ जाए बल्कि बहादुर तो वोह है जो गुस्से के वक़्त ख़ुद पर क़ाबू पा ले।''

एक रिवायत में है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''कामिल बहादुर वोह है, कामिल बहादुर वोह है, कामिल बहादुर वोह है जो ग़ज़ब नाक हो और उस का चेहरा गुस्से की शिद्दत से सुर्ख़ हो जाए और उस की खाल कांपने लगे फिर वोह अपने गुस्से पर क़ाबू पा ले।''

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب الحذر من الغضب، رقم ۶۱۱۴، ج ۴، ص ۱۳۰)

(1614)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने गुस्से को पी ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से अपना अ़ज़ाब दूर कर देगा और जो अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के उ़यूब की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الادب، باب فیمن یملک نفسہ عند الغضب، رقم ۱۲۹۸۳، ج ۸، ص ۱۳۲)

(1615)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तीन ख़स्लतें ऐसी हैं जिस में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी पनाह में ले लेगा और उसे अपनी रह़मत से ढांप देगा और

उसे अपने महबूब बन्दों में शामिल फ़रमाएगा, वोह शख़्स जिसे अ़ता किया जाए तो शुक्र अदा करे और जब किसी चीज़ पर क़ादिर हो तो मुआफ़ कर दे, जब ग़ज़ब नाक हो तो नर्मी करे।''

(المستدرک کتاب العلم ثلاثۃ من کن فیہ...الخ، رقم ۴۴۴، ج۱، ص۳۳۲)

(1616)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ''اِدْفَعْ بِالَّتِیْ ھِیَ اَحْسَن (حٰم سجدہ پ۲۴ آیت۳۴)'' (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ सुनने वाले बुराई को भलाई से टाल) की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि ''इस से मुराद गुस्से के वक़्त सब्र करना और बुराई के वक़्त मुआफ़ कर देना है, जब लोग ऐसा करेंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुश्मनों से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाएगा और उन के सामने दुश्मनों को झुका देगा।''

(صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب حٰم السجدہ، ج۳، ص۳۱۸)

(1617)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बन्दे का रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने गुस्से को पी लेना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक किसी भी शै के पीने से अफ़्ज़ल है।'' (ابن ماجہ، کتاب الزھد باب الحلم، رقم۴۱۸۹، ج۴، ص۴۶۳)

(1618)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बा वुजूद गुस्सा पी ले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों के सामने बुलाएगा ताकि उस को इख़्तियार दे कि जन्नत की हूरों में से जिसे चाहे पसन्द कर ले।''

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحلم، رقم۴۱۸۶، ج۴، ص۴۶۲ بتغیر قلیل)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

ज़ालिम और जफ़ाकार को मुआफ़ कर देने का सवाब

इस बारे में आयाते कुरआनिया :

(1) وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ (پ۶،المائدہ: ۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़ख़्मों में बदला है फिर जो दिल की खुशी से बदला करावे तो वोह उस का गुनाह उतार देगा।

(2) وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ۝ (پ۴،آل عمران:۱۳۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और गुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के महबूब हैं।

(3) فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ۝ (پ۱۴،الحجر: ۸۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम अच्छी तरह दर गुज़र करो।

(4) وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ؕ وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ۝ (پ۱۴،النحل:۱۲۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम सज़ा दो तो ऐसी ही सज़ा दो जैसी तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाई थी और अगर तुम सब्र करो तो बेशक सब्र वालों को सब्र सब से अच्छा।

(5) وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۝ (پ۱۸،النور:۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और चाहिये कि मुआफ़ करें और दर गुज़र करें क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है।

(6) وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ (پ۲۵،الشوریٰ:۴۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बुराई का बदला उसी की बराबर बुराई है तो जिस ने मुआफ़ किया और काम संवारा तो उस का अज्र **अल्लाह** पर है।

(7) وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ۝ (۲۵،الشوریٰ:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक जिस ने सब्र किया और बख़्श दिया तो येह ज़रूर हिम्मत के काम हैं।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(1619)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''स-दक़ा माल में कुछ कमी नहीं करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे के अफ़्वो दर गुज़र से काम लेने की वजह से उस की इज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाता है।''

(صحیح مسلم،کتاب البر والصلہ،باب استحباب العفو والتواضع،رقم ۲۵۸۸،ص۱۳۹۷)

(1620)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है तीन बातें ऐसी हैं जिन पर मैं क़सम उठा सकता हूं : (1) स-दक़े से माल में कुछ कमी नहीं होती लिहाज़ा स-दक़ा दिया करो, (2) जो बन्दा ज़ालिम को मुआ़फ़ कर देता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाएगा, (3) जो बन्दा अपने लिये सुवाल का दरवाज़ा खोलेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देगा।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الرحمٰن بن عوف الزہری، رقم ۱۶۷۴، ج۱، ص۴۱۰)

(1621)...... हज़रते सय्यिदुना कब्शा अन्मारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''मैं तीन बातों में क़सम उठा सकता हूं और तुम्हें एक काम की बात बताता हूं इसे याद कर लो, (1) स-दक़ा बन्दे के माल में कमी नहीं करता (2) जिस बन्दे पर ज़ुल्म किया जाए और वोह उस पर सब्र करे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा फ़रमाएगा (3) जो बन्दा सुवाल का दरवाज़ा खोलेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देगा।'' (جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء مثل الدنیا اربعۃ نفر، رقم ۲۳۳۲، ج۴، ص۱۴۵)

(1622)...... हज़रते सय्यिदुना सख़्बरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो बन्दा अ़ता पर शुक्र करे, आज़माइश पर सब्र करे, ज़ुल्म कर बैठे तो इस्तिग़्फ़ार करे और अगर उस पर ज़ुल्म किया जाए तो मुआ़फ़ कर दे।'' येह फ़रमा कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई तो सहा़बए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस के लिये क्या है ?'' फ़रमाया कि ''ऐसे लोग ही अम्न और हिदायत वाले हैं।'' (المعجم الکبیر مسند سخبرۃ الازدی، رقم ۶۶۱۳، ج۷، ص۱۳۸)

(1623)...... हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिसे पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं तो उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दिया करे, जो इसे मह़रूम करे उसे अ़ता किया करे और जो इस से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी करे उस के साथ सिलए रेह़मी करे।'' (المستدرک، کتاب التفسیر، رقم ۳۲۱۵، ج۳، ص۱۲)

(1624)...... हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क्या मैं तुम्हें ऐसे अ़मल के बारे में ख़बर न दूं जिस के सबब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ द-रजात को बुलन्द फ़रमाता है ?'' फिर फ़रमाया, ''जो

तुम्हारे साथ जहालत वाला बरताव करे उस के साथ नर्मी से पेश आओ, जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआफ़ कर दो और जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम से क़त़ए तअ़ल्लुक़ी करे उस के साथ सिलए रेह़मी करो।'' (مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب مکارم الاخلاق...الخ، رقم ۱۳۶۹۴، ج۸، ص۳۴۵)

(1625)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तीन ख़स्लतें ऐसी हैं जिस में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का ह़िसाब नर्मी से लेगा और उसे अपनी रह़मत से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे मां बाप आप पर क़ुरबान वोह ख़स्लतें कौन सी हैं ?'' फ़रमाया, ''जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो, और जो तुम्हारे साथ क़त़ए तअ़ल्लुक़ी करे उस के साथ सिलए रेह़मी करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआफ़ कर दो, जब तुम ऐसा कर लोगे तो जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।'' (المستدرک، کتاب التفسیر باب ثلاث من کن....الخ، رقم ۳۹۲۸، ج۳، ص۳۶۲)

(1626)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''लोगों पर रह़्म करो तुम पर रह़्म किया जाएगा और लोगों को मुआफ़ कर दिया करो तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۵۵۲، ج۲، ص۵۱۵ باختصار)

(1627)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस के बदन में कोई सख़्त ज़ख़्म लगा दिया गया और उस ने ज़ख़्मी करने वाले को मुआफ़ कर दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की मुआफ़ी की मिस्ल उसे बदला अ़त़ा फ़रमाएगा।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبادۃ بن صامت، رقم ۲۲۷۶۴، ج۸، ص۳۹۹)

(1628)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे ख़िलाफ़त में किसी के दांत तोड़ दिये। जब मज़्लूम शख़्स को दियत दी गई तो उस ने दियत क़बूल करने से इन्कार कर दिया। तीन मरतबा कोशिश की गई मगर उस ने क़बूल न की और कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जो अपने ख़ून या किसी ज़ख़्म को स–दक़ा (या'नी मुआफ़) करेगा वोह स–दक़ा क़ियामत के दिन उस के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب الدیات، باب ماجاء فی العفو...الخ، رقم ۱۰۸۰۰، ج۶، ص۴۷، بتصرف ما)

(1629)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सफ़्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं क़ुरैश के एक शख़्स ने एक अन्सारी का दांत तोड़ दिया तो उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की अ़दालत में उस पर दा'वा दाइर कर दिया। उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा, ''ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! इस शख़्स ने मेरा दांत तोड़ दिया है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया ''मैं अन्क़रीब तुम्हें राज़ी कर दूंगा।'' जब दूसरे शख़्स ने ह़ज़रते

सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया से बहूस की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि "तुम्हारा मुआ-मला तुम्हारे इस साथी के हाथ में है।"

उस मजलिस में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मौजूद थे। उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस शख़्स के जिस्म पर कोई ज़ख़्म लग जाए और वोह उसे स-दक़ा (या'नी मुआ़फ़) कर दे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस का एक गुनाह मिटा देता है और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमा देता है।" येह सुन कर उस अन्सारी ने कहा, "क्या आप ने वाक़ेई रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ऐसा फ़रमाते हुए सुना है?" ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि "हां! मेरे कानों ने इसे सुना और दिल ने इसे याद कर लिया।" तो उस अन्सारी ने कहा, "मैं इस शख़्स को मुआ़फ़ करता हूं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें हरगिज़ रुस्वा न करूंगा। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उसे कुछ माल देने का हुक्म फ़रमाया। (جامع الترمذی، کتاب الدیات، باب ماجاء فی العفو، رقم ۱۳۹۸، ج ۳، ص ۹۷)

(1630)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मख़्लूक़ को जम्अ़ फ़रमाएगा तो एक मुनादी निदा करेगा, "अहले फ़ज़्ल कहां हैं?" तो कुछ लोग खड़े होंगे जो ता'दाद में निहायत क़लील होंगे। जब येह जल्दी से जन्नत की त़रफ़ बढ़ेंगे तो फ़िरिश्ते उन से मिलेंगे और कहेंगे, "हम देख रहे हैं कि तुम तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ जा रहे हो, तुम कौन हो?" तो वोह जवाब देंगे कि हम अहले फ़ज़्ल हैं। फ़िरिश्ते कहेंगे कि तुम्हारा फ़ज़्ल क्या है? वोह जवाब देंगे, "जब हम पर ज़ुल्म किया जाता था तो हम सब्र करते थे और जब हम से बुराई का बरताव किया जाता था तो उसे बरदाश्त करते थे।" फिर उन से कहा जाएगा कि जन्नत में दाख़िल हो जाओ और अच्छे अ़मल वालों का सवाब कितना अच्छा है।" (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الرفق، رقم ۱۸، ج ۳، ص ۲۸۱)

(1631)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब बन्दों को ह़िसाब के लिये खड़ा किया जाएगा तो एक क़ौम अपनी गरदनों पर अपनी तलवारें रखे आएगी और जन्नत के दरवाज़े पर आ कर रुक जाएगी। पूछा जाएगा, "येह कौन लोग हैं?" जवाब मिलेगा, "येह वोह शु-हदा हैं जो ज़िन्दा थे और इन्हें रिज़्क़ दिया जाता था।" फिर एक मुनादी निदा करेगा कि "जिस का सवाब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है वोह खड़ा हो जाए और जन्नत में दाख़िल हो जाए।"

फिर दोबारा येही निदा की जाएगी।" ह़ाज़िरीन में से किसी ने पूछा, "वोह कौन हैं जिन का अज्र **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर होगा?" म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "लोगों को मुआ़फ़ करने वाले।" (फिर फ़रमाया) "तीसरी मरतबा भी येही निदा दी जाएगी कि जिस का

अज्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर हो वोह खड़ा हो जाए और जन्नत में दाख़िल हो जाए फिर इतने इतने हज़ार लोग खड़े होंगे और जन्नत में बिला हिसाब दाख़िल हो जाएंगे।" (المعجم الاوسط،باب الف،رقم ۱۹۹۸،ج۱،ص۵۴۲)

(1632)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर थे कि आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अचानक मुस्कुराने लगे यहां तक कि आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हो गए। हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर कुरबान आप क्यूं मुस्कुराए ?" फ़रमाया, "मेरे दो उम्मती **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सामने घुटनों के बल खड़े होंगे और उन में से एक अ़र्ज़ करेगा, "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे भाई से मुझ पर किये गए ज़ुल्म का बदला ले।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, "तुम अपने भाई से क्या बदला लोगे ? इस के पास तो कोई नेकी नहीं बची।" तो वोह अ़र्ज़ करेगा कि "ऐ मेरे रब ! फिर मेरे गुनाह येह अपने सर ले ले।"

(येह फ़रमाने के बा'द) आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चश्माने करम से आंसू जारी हो गए फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बेशक वोह एक अ़ज़ीम दिन होगा और लोग चाहेंगे कि उन के गुनाह उन से उठा लिये जाएं।"

(फिर फ़रमाया) "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुत़ा-लबा करने वाले से फ़रमाएगा, "ऊपर देखो।" तो वोह अपनी निगाह उठाएगा और अ़र्ज़ करेगा, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं सोने के मह़ल्लात देख रहा हूं जिन्हें मोतियों से मुज़य्यन किया गया है, येह किस नबी عَلَیْہِ السَّلام के लिये या किस सिद्दीक़ के लिये या किस शहीद के लिये हैं ?" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, "उस के लिये जो इस की क़ीमत अदा करेगा।" वोह अ़र्ज़ करेगा कि "इस का मालिक कौन बन सकता है ?" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा, "तू इस का मालिक बन सकता है।" वोह अ़र्ज़ करेगा, "वोह कैसे ?" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा, "अपने इस भाई को मुआ़फ़ कर के।" वोह अ़र्ज़ करेगा, "मैं ने इसे मुआ़फ़ किया।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, "अपने भाई का हाथ पकड़ और जन्नत में दाख़िल हो जा।"

फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "इस लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और अपने आपस के मुआ़-मलात को दुरुस्त रखो क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुसल्मानों के दरमियान सुल्ह़ फ़रमाएगा।" (المستدرک،کتاب الاھوال،باب اذالم یبق من الحسنات...الخ،رقم ۸۷۵۸،ج۵،ص۷۹۵)

=== === ===
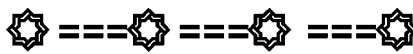
कमज़ोर मख़्लूक़ पर शफ़्क़त व रह़मत करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ (پ۲۶،الفتح:۲۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल हैं और इन के साथ वाले काफ़िरों पर सख़्त हैं और आपस में नर्म दिल।

और इर्शाद फ़रमाता है,

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِؕ۝ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِؕ۝ (پ۳۰،البلد:۱۷۔۱۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर हो उन से जो ईमान लाए और उन्हों ने आपस में सब्र की वसिय्यतें कीं और आपस में मेहरबानी की वसिय्यतें कीं येह दाहिनी त़रफ़ वाले हैं।

इस बारे में अह़ादीसे मुक़द्दसा :

(1633)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''रह़्म करने वालों पर रह़मान عَزَّوَجَلَّ रह़्म फ़रमाता है, तुम ज़मीन वालों पर रह़्म करो आस्मान वाला तुम पर रह़्म फ़रमाएगा।''

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی رحمۃ المسلمین، رقم ۱۹۳۱، ج۳، ص۳۱۱ بالاختصار)

(1634)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, ह़ुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''रह़्म किया करो तुम पर रह़्म किया जाएगा और मुआ़फ़ कर दिया करो तुम्हारी मग़्फ़िरत कर दी जाएगी और नसीह़त सुन कर सुनी अनसुनी कर देने वाले के लिये हलाकत है और जानबूझ कर अपने फ़े'ल (या'नी गुनाह) पर इसरार करने वालों के लिये हलाकत है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۵۵۲، ج۲، ص۵۶۵)

(1635)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुकैर बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसी बात बताता हूं जो मैं हर एक को नहीं बताता, बेशक एक मरतबा नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बैतुल्लाह के दरवाज़े में खड़े थे जब कि हम उस के अन्दर थे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अइम्मा क़ुरैश से होंगे बेशक मेरा तुम पर एक ह़क़ है और क़ुरैश का भी तुम पर एक ऐसा ही ह़क़ है, जब उन से रह़्म त़लब किया जाए तो रह़्म करें और वा'दा करें तो उसे पूरा करें और जब फ़ैसला करें तो इन्साफ़ करें और जो ऐसा न करे तो उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک بن النضر، رقم ۱۲۳۰۹، ج۴، ص۲۵۹)

(1636)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जब तक एक दूसरे पर रह़्म न करोगे कामिल मोमिन नहीं हो सकते।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से हर एक रह़्म दिल है।'' फ़रमाया ''अपने दोस्त पर रह़्म करना काफ़ी नहीं बल्कि आ़म लोगों पर भी रह़्म करो।''

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ، باب رحمۃ الناس، رقم ۱۳۶۷۱، ج ۸، ص ۳۴۰)

(1637)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तीन ख़स्लतें जिस में होंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमाएगा और उसे अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, (1) कमज़ोरों पर रह़्म करना (2) वालिदैन पर शफ़्क़त करना (3) हुक्मरानों के साथ भलाई करना।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الرفق، رقم ۱۰، ج ۳، ص ۲۷۹)

(1638)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़ुरैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तू अपने ख़ादिम के अ़मल में जितनी कमी करेगा तेरे आ'माल नामे में उतना ही सवाब लिखा जाएगा।''

(صحیح ابن حبان، کتاب العتق، باب التخفیف عن الخادم، رقم ۴۲۹۳، ج ۶، ص ۲۵۵)

(1639)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन क़ुर्रह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! बकरी को ज़ब्ह़ करते हुए मुझे उस पर रह़्म आता है।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''अगर तू उस पर रह़्म करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाएगा।'' (المستدرک، کتاب الاضاحی، باب افضل الضحایا...الخ، رقم ۷۶۳۶، ج ۵، ص ۳۲۷)

(1640)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''एक शख़्स कूंएं पर गया और नीचे उतर कर उस में से पानी पिया। वहीं पर एक कुत्ता भी प्यास की शिद्दत से हांप रहा था। उस शख़्स ने अपना एक मोज़ा उतारा और उस के ज़रीए उस कुत्ते को पानी पिलाया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस का येह अ़मल पसन्द आया और उस ने उस आदमी को दाख़िले जन्नत फ़रमा दिया।''

एक रिवायत में है कि एक कुत्ता कूंएं के गिर्द घूम रहा था और क़रीब था कि प्यास की शिद्दत उसे हलाक कर देती। इसी अस्ना में बनी इस्राईल की बदकार औ़रतों में से एक बदकार औ़रत ने उसे देखा और अपना मोज़ा उतार कर उस से पानी पिलाया तो उस के इस अ़मल के सबब उस की मग़्फ़िरत कर दी गई। (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب فصل من البر والاحسان، باب ذکر رجاء دخول الجنان، رقم ۵۴۴، ج ۱، ص ۳۷۷)

हर मुआ-मले में नर्मी करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝ يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝ اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝ وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝ وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝ وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ۝ اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝ (پ۱۹، الفرقان: ۶۷ تا ۷۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और इन दोनों के बीच ए'तिदाल पर रहें और वोह जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पूजते और उस जान को जिस की **अल्लाह** ने हुरमत रखी नाह़क़ नहीं मारते और बदकारी नहीं करते और जो येह काम करे वोह सज़ा पाएगा बढ़ाया जाएगा उस पर अ़ज़ाब क़ियामत के दिन और हमेशा उस में ज़िल्लत से रहेगा मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है और जो तौबा करे और अच्छा काम करे तो वोह **अल्लाह** की त़रफ़ रुजूअ़ लाया जैसी चाहिये थी और जो झूटी गवाही नहीं देते और जब बेहूदा पर गुज़रते हैं अपनी इ़ज़्ज़त संभाले गुज़र जाते हैं और वोह कि जब कि उन्हें उन के रब की आयतें याद दिलाई जाएं तो उन पर बहरे अन्धे हो कर नहीं गिरते और वोह जो अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब ! हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक और हमें परहेज़ गारों का पेश्वा बना उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का और वहां मुजरे और सलाम के साथ उन की पेश्वाई होगी हमेशा उस में रहेंगे क्या ही अच्छी ठहरने और बसने की जगह ।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1641)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''नर्मी जिस चीज़ में होती है उसे ज़ीनत बख़्शती है और जिस चीज़ से नर्मी छीन ली जाती है उसे ऐबदार कर देती है।'' (صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ، باب فضل الرفق، رقم ۲۵۹۲،ص۱۳۹۸)

(1642)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिसे नर्मी में से हि़स्सा दिया गया उसे भलाई में से हि़स्सा दिया गया और जो नर्मी के हि़स्से से मह़रूम रहा वोह भलाई में से अपने हि़स्से से मह़रूम रहा।''

(ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب فی الرفق، رقم ۲۰۲۰، ج۳،ص۴۰۷)

(1643)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेह़रबान है और हर काम में नरमी को पसन्द करता है।''

एक रिवायत में है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेह़रबान है और नर्मी को पसन्द फ़रमाता है और नर्मी पर वोह इन्आ़मात अ़ता फ़रमाता है जो सख़्ती पर अ़ता नहीं फ़रमाता और न ही किसी और चीज़ पर अ़ता फ़रमाता है।'' (صحیح البخاری، کتاب استتابۃ المرتدین..الخ، باب اذا عرّض الذمی...الخ، ج۴،ص۳۷۹)

(1644)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ नर्मी पर वोह इन्आ़म अ़ता फ़रमाता है जो जहालत व ह़माक़त पर अ़ता नहीं फ़रमाता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उसे नर्मी अ़ता फ़रमाता है और जो घर नर्मी से मह़रूम रहा वोह मह़रूम ही है।''

(المعجم الکبیر،مسند جریر بن عبد اللہ،رقم ۲۲۷۴،ج۲،ص۳۰۶)

(1645)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ''ऐ आइशा ! नर्मी इख़्तियार करो जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी ख़ानदान से भलाई का इरादा करता है तो उन्हें नर्मी अ़ता फ़रमा देता है।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عائشۃ رضی اللہ عنہا، رقم ۲۴۴۸، ج۹،ص۳۴۵ بتغیر قلیل)

(1646)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क्या मैं तुम्हें उस शख़्स के बारे में ख़बर न दूं जो जहन्नम पर ह़राम है, (या येह फ़रमाया कि) जिस पर जहन्नम ह़राम है ?'' जहन्नम हर नर्म ख़ू नर्म दिल और अच्छी ख़ू वाले शख़्स पर ह़राम है।'' (ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم باب ۴۵، رقم ۲۴۹۶، ج۴،ص۲۲۰)

अपने भाई की पर्दा पोशी करने का सवाब

(1647)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो बन्दा दुन्या में किसी बन्दे की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस बन्दे की पर्दा पोशी करेगा।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب تحریم الغیبۃ، رقم ۲۵۹۰، ص ۱۳۹۷)

(1648)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो बन्दा किसी मुसल्मान की दुन्यवी परेशानी दूर करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत की परेशानियों में से उस की एक परेशानी दूर फ़रमाएगा, और जो दुन्या में किसी मुसल्मान के लिये आसानी पैदा करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये दुन्या और आख़िरत में आसानी पैदा फ़रमाएगा, जो किसी बन्दे की दुन्या में पर्दा पोशी करेगा अल्लाह तआ़ला दुन्या व आख़िरत में उस के उ़यूब की पर्दा पोशी फ़रमाएगा, और जो किसी बन्दे की मदद करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे की मदद फ़रमाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعا، فصل الاجتماع علی تلاوۃ القرآن، رقم ۲۶۹۹، ص ۱۴۴۷ بالاختصار)

(1649)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुसल्मान मुसल्मान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करता है और न ही किसी ह़ाजत में उस से अपना पीछा छुड़ाता है, जो अपने भाई की ह़ाजत रवाई में होता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की ह़ाजत पूरी फ़रमाता है, जो किसी मुसल्मान की कोई परेशानी दूर करता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की क़ियामत की परेशानी दूर फ़रमाएगा और जो किसी मुसल्मान की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।'' (سنن ابی داؤد (عن سالم عن ابیہ رضی اللہ عنہما)، کتاب الادب باب المواخاۃ، رقم ۴۸۹۳، ج ۴، ص ۳۵۷)

(1650)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मक्ह़ूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना मस्लमह बिन मुख़ल्लिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास तशरीफ़ ले गए तो उन के दरबान के साथ उन की तकरार हो गई। ह़ज़रते मस्लमह बिन मुख़ल्लिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन की आवाज़ सुन ली और उन्हें अन्दर बुलवा लिया। सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''मैं तुम्हारी मुलाक़ात के लिये नहीं आया बल्कि ज़रूरत के तह़त आया हूं क्या तुम्हें वोह दिन याद है जिस दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि जो अपने भाई के किसी ऐब पर मुत्तलअ़ हो कर उस की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा।'' सय्यिदुना मस्लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कहा, ''मुझे याद है।'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''मैं इसी लिये आया था।''

(المعجم الکبیر، مسند محمد بن سیرین، رقم ۹۶۲، ج ۱۷، ص ۳۴۹، بتغیر ما)

(1651)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने किसी भाई के किसी ऐब को देख ले और उस की पर्दा पोशी करे तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे इस पर्दा पोशी की वजह से जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।"

(المعجم الکبیر مسند عقبہ بن عامر، رقم ۷۹۵، ج ۱۷، ص ۲۸۸)

(1652)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो अपने भाई की पर्दा पोशी करेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जो अपने भाई के राज़ खोलेगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस का राज़ ज़ाहिर कर देगा यहां तक कि वोह अपने घर ही में रुस्वा हो जाएगा।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب الحدود، باب الستر علی المومن، رقم ۲۵۴۶، ج ۳، ص ۲۱۹)

(1653)...... हज़रते सय्यिदुना दुख़ैन अबुल हैसम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा कि "मेरे कुछ पड़ोसी शराब पीते हैं लिहाज़ा मैं सिपाहियों को बुलाने जा रहा हूं ताकि वोह उन्हें पकड़ कर ले जाएं।" तो उन्हों ने फ़रमाया "ऐसा न करो बल्कि उन्हें नसीहत करो और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के अ़ज़ाब से डराओ।" मैं ने जवाब दिया, "मैं उन्हें शराब पीने से मन्अ़ कर चुका हूं मगर वोह बाज़ नहीं आते, इसी लिये अब मैं सिपाहियों को बुलाने जा रहा हूं ताकि वोह उन्हें पकड़ कर ले जाएं।" तो हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ऐसा न करो मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जिस ने किसी की पर्दा पोशी की गोया उस ने ज़िन्दा दफ़्न की गई बच्ची को ज़िन्दा कर दिया।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والصلۃ، باب الجار، رقم ۵۱۸، ج ۱، ص ۳۶۷)

(1654)...... हज़रते सय्यिदुना रजाअ बिन हयात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मैं ने सय्यिदुना मस्लमह बिन मुख़ल्लिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते हुए सुना कि "मैं मिस्र में था कि मेरा दरबान मेरे पास आया और कहने लगा, "दरवाज़े पर एक आ'राबी अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त मांग रहा है।" मैं ने आने वाले से पूछा, "तुम कौन हो ?" उस आ'राबी ने जवाब दिया कि "मैं जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह हूं।" तो मैं ने उन्हें ग़ौर से देखा फिर कहा, "मैं आप के लिये नीचे आऊं या आप मेरे पास ऊपर आएंगे ?"

उन्हों ने कहा कि "न आप नीचे उतरें न ही मैं ऊपर आऊंगा बल्कि मैं तो मोमिन की पर्दा पोशी के बारे में एक हदीस सुनने के लिये आया हूं, मुझे ख़बर मिली है कि आप इसे रिवायत करते हैं ?" तो मैं ने जवाब दिया, "हां ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "जिस ने मोमिन की पर्दा पोशी की गोया कि उस ने ज़िन्दा दरगोर की गई बच्ची को ज़िन्दा कर दिया।" तो सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना ऊंट वापस जाने के लिये मोड़ दिया।

(المعجم الاوسط، رقم ۸۱۳۳، ج ۶، ص ۹۷)

=== === ===

लोगों के दरमियान सुल्ह कराने का सवाब

इस बारे में आयाते करीमा :

(1)

لَاخَیْرَ فِیْ كَثِیْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۭ بَیْنَ النَّاسِؕ وَمَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِیْهِ اَجْرًا عَظِیْمًا۝ (پ۵،النساء:۱۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन के अक्सर मश्वरों में कुछ भलाई नहीं मगर जो हुक्म दे ख़ैरात या अच्छी बात या लोगों में सुल्ह करने का और जो **अल्लाह** की रिज़ा चाहने को ऐसा करे तो उसे अ़न्क़रीब हम बड़ा सवाब देंगे।

(2)

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَیْنِكُمْ۪ وَاَطِیْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِیْنَ۝ (پ۹،الانفال:۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** से डरो और अपने आपस में मेल (सुल्ह सफ़ाई) रखो और **अल्लाह** और रसूल का हुक्म मानो अगर ईमान रखते हो।

(3)

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَیْنَ اَخَوَیْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ۝ (پ۲۶،الحجرات:۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मुसलमान भाई हैं तो अपने दो भाइयों में सुल्ह करो और **अल्लाह** से डरो कि तुम पर रहमत हो।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(1655)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें रोज़ा, नमाज़ और स-दक़ा से अफ़्ज़ल अ़मल न बताऊं?" सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" फ़रमाया कि "वोह अ़मल आपस में रूठने वालों में सुल्ह करा देना है क्यूं कि रूठने वालों में होने वाला फ़साद ख़ैर को काट देता है।"

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی اصلاح ذات البین، رقم ۴۹۱۹، ج۴، ص۳۶۵)

(1656)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "सब से अफ़्ज़ल स-दक़ा रूठे हुए लोगों में सुल्ह करा देना है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب اصلاح بین الناس، رقم ۶، ج۳، ص۳۲۱)

(1657)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "लोगों के हर जोड़ पर हर उस दिन जिस में सूरज तुलूअ़ होता है एक स-दक़ा है, दो आदमियों के दरमियान इन्साफ़ करना स-दक़ा है, किसी शख़्स की मदद के लिये उसे अपनी सुवारी पर सुवार करना या उस का सामान अपनी सुवारी पर लादना स-दक़ा है, अच्छी बात कहना स-दक़ा है, नमाज़ के लिये हर क़दम चलने पर स-दक़ा है और रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर कर देना स-दक़ा है।"

(صحیح بخاری، کتاب الجھاد، باب من اخذ بالرکاب ونحوہ، رقم ۲۹۸۹، ج۲، ص۳۰۶ بتغیر قلیل)

(1658)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें एक तिजारत के बारे में न बताऊं?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "ज़रूर बताइये।" इर्शाद फ़रमाया, "जब लोग झगड़ा करें तो उन के दरमियान सुल्ह़ करवा दिया करो, जब वोह एक दूसरे से दूरी इख़्तियार करें तो उन्हें क़रीब कर दिया करो।"

एक रिवायत में है, हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें ऐसे स-दक़े के बारे में न बताऊं जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पसन्द करते हैं, जब लोग एक दूसरे से नाराज़ हो कर रूठ जाएं तो उन में सुल्ह़ करा दिया करो।" (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب اصلاح بین الناس، رقم ۷،۸،۹، ج۳، ص۳۲۱)

(1659)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जो शख़्स लोगों के दरमियान सुल्ह़ कराएगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस का मुआ-मला दुरुस्त फ़रमा देगा और उसे हर कलिमा बोलने पर एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब अ़ता फ़रमाएगा और वोह जब लौटेगा तो अपने पिछले गुनाहों से मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर लौटेगा।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب اصلاح بین الناس، رقم ۹، ج۳، ص۳۲۱)

=== === ===
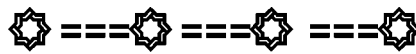
किसी को मुसल्मान की ग़ीबत या बे इ़ज़्ज़ती से रोकने का सवाब

(1660)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अपने भाई की इ़ज़्ज़त बचाएगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के चेहरे को जहन्नम से दूर कर देगा।''

एक रिवायत में है कि ''जिस ने अपने भाई की इ़ज़्ज़त बचाई अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस से अपना अ़ज़ाब दूर फ़रमा देगा।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ۝ (پ۲۱،الروم:۴۷) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे ज़िम्मए करम पर है मुसल्मानों की मदद फ़रमाना।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب من الغیبۃ ...الخ، رقم ۳۷، ج ۳، ص ۳۳۴)

(1661)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो दुन्या में अपने भाई की इ़ज़्ज़त बचाएगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो उसे जहन्नम से बचाएगा।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب من الغیبۃ، رقم ۳۹، ج ۳، ص ۳۳۴)

(1662)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मुआ़ज़ बिन अनस अपने वालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने किसी मोमिन को मुनाफ़िक़ से बचाया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ एक फ़िरिश्ता भेजेगा जो क़ियामत के दिन उस के गोश्त को जहन्नम से बचाएगा और जिस ने किसी मुसलमान को रुस्वा करने के लिये कोई बात कही अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जहन्नम के पुल पर रोक लेगा यहां तक कि वोह अपने कहे की सज़ा भुगत ले।'' (ابوداود، کتاب الأدب، باب من ردعن مسلم، رقم ۴۸۸۳، ج ۴، ص ۳۵۵)

(1663)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अपने भाई की ग़ैर मौजू-दगी में उस की इ़ज़्ज़त बचाई अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ पर ह़क़ है कि उसे जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند اسماء بنت یزید، رقم ۲۷۶۸۰، ج ۱۰، ص ۴۴۵ بتغیر قلیل)

(1664)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस के सामने उस के भाई की ग़ीबत की जाए और वोह उस की मदद कर सकता हो फिर अगर वोह उस की मदद करे तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ दुन्या और आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा और अगर उस ने उस की मदद न की तो उसे दुन्या व आख़िरत में इस का गुनाह मिलेगा।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب من الغیبۃ ...الخ، رقم ۴۰، ج ۳، ص ۳۳۴)

(1665)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से रिवायत है कि हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की ऐसी जगह मदद न करे जहां उस की इ़ज़्ज़त पामाल की जा रही हो और उसे गालियां दी जा रही हों तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसी जगह रुस्वा करेगा जहां वोह अपनी मदद का त़लब गार होगा और जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की ऐसी जगह मदद करे जहां उसे गालियां दी जा रही हों और उस की इ़ज़्ज़त पामाल की जा रही हो तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की ऐसी जगह मदद फ़रमाएगा जहां वोह अपनी मदद का त़लब गार होगा।'' (ابوداوٗد، کتاب الأدب، باب من ردعن مسلم غیبۃ، رقم ۴۸۸۴، ج۴، ص۳۵۵)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
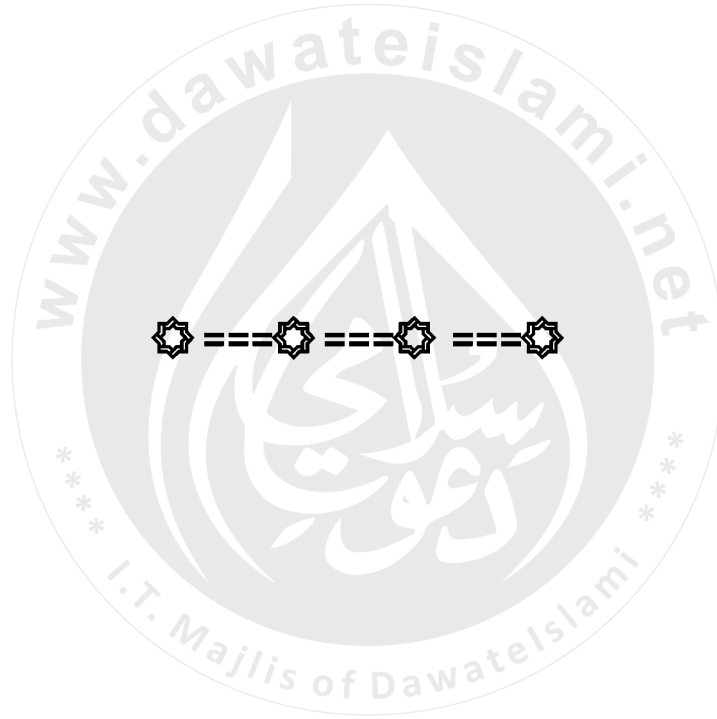
अल्लाह तआला के लिये महब्बत करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है,

اَلْاَخِلَّآءُ یَوْمَىٕذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِیْنَ ۞ یٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَیْكُمُ الْیَوْمَ وَ لَاۤ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۞ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاٰیٰتِنَا وَ كَانُوْا مُسْلِمِیْنَ ۞ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَ اَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ۞ یُطَافُ عَلَیْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّ اَكْوَابٍۚ وَ فِیْهَا مَا تَشْتَهِیْهِ الْاَنْفُسُ وَ تَلَذُّ الْاَعْیُنُۚ وَ اَنْتُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۞ وَ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِیْۤ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ لَكُمْ فِیْهَا فَاكِهَةٌ كَثِیْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۞

(پ۲۵، الزخرف: ۶۷ تا ۷۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़ गार, उन से फ़रमाया जाएगा ऐ मेरे बन्दो आज न तुम पर ख़ौफ़ न तुम को ग़म हो वोह जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और मुसल्मान थे। दाख़िल हो जन्नत में तुम और तुम्हारी बीबियां तुम्हारी ख़ातिरें होतीं उन पर दौरा होगा सोने के पियालों और जामों का और उस में जो जी चाहे और जिस से आंख को लज़्ज़त पहुंचे और तुम इस में हमेशा रहोगे और येह है वोह जन्नत जिस के तुम वारिस किये गए अपने आ'माल से, तुम्हारे लिये इस में बहुत मेवे हैं कि इन में से खाओ।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(1666)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप का उस शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जो किसी क़ौम से महब्बत करे मगर उन के साथ मिल न सके ?" फ़रमाया, "आदमी जिस से महब्बत करेगा उसी के साथ होगा।"

(صحیح بخاری، کتاب الأدب علامۃ حب اللہ،،، الخ، رقم ۶۱۶۹، ج ۴، ص ۱۴۷)

(1667)......हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह ! एक शख़्स किसी क़ौम के साथ महब्बत करता है मगर उन जैसे आ'माल नहीं कर सकता ?" फ़रमाया "ऐ अबू ज़र ! तुम उसी के साथ होगे जिस से तुम्हें महब्बत है।" मैं ने अर्ज़ किया, "मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से महब्बत करता हूं।" इर्शाद फ़रमाया "ऐ अबू ज़र ! तुम जिस के साथ महब्बत करते हो उस के साथ ही रहोगे।"

(ابوداود، کتاب الأدب، باب اخبار الرجل الرجل بمحبتہ ایاہ، رقم ۵۱۲۶، ج ۴، ص ۴۲۹)

(1668)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''क़ियामत कब आएगी ?'' फ़रमाया, ''तूने उस के लिये क्या तय्यारी की है ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''कुछ नहीं मगर मैं **अल्लाह** और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करता हूं।'' फ़रमाया, ''तुम उसी के साथ होगे जिस से मह़ब्बत करते हो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हमें किसी शै से इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितनी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस क़ौल से हुई कि तुम जिस से मह़ब्बत करते हो उसी के साथ होगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़ व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के साथ मह़ब्बत करता हूं और मुझे उम्मीद है कि इन से मह़ब्बत करने की वजह से इन्ही के साथ होउंगा।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، باب مناقب عمر بن خطاب، رقم ۳۶۸۸، ج۲، ص ۵۲۷)

एक रिवायत में है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को एक बात पर जितना ख़ुश होते देखा उतना किसी और बात पर ख़ुश होते नहीं देखा। वोह इस त़रह़ कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! एक शख़्स किसी से उस के किसी नेक अ़मल की वजह से मह़ब्बत करता है मगर उस की मिस्ल अ़मल नहीं करता ?'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आदमी जिस से मह़ब्बत करेगा उसी के साथ होगा।''

(الترغیب الترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب الحب فی اللہ، رقم ۳۴، ج۴، ص ۱۵)

(1669)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तीन बातों पर मैं क़सम उठाता हूं कि जिस का इस्लाम में एक ह़िस्सा भी होगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे उस शख़्स की त़रह़ न करेगा जिस का इस्लाम में कुछ ह़िस्सा नहीं और इस्लाम के ह़िस्से तीन हैं (1) नमाज़, (2) रोज़ा, (3) ज़कात और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जिस बन्दे की ज़िम्मादारी दुन्या में ले लेता है क़ियामत के दिन उसे मह़रूम न करेगा और जो शख़्स किसी क़ौम से मह़ब्बत करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे उन्ही में शामिल कर देगा।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند عائشہ رضی اللہ عنہا، رقم ۲۵۱۷۵، ج۹، ص ۴۷۸ بالاختصار)

(1670)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी से महब्बत करे और उसे बता दे कि मैं तुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करता हूं तो वोह दोनों जन्नत में दाख़िल होंगे फिर अगर महब्बत करने वाला बुलन्द मर्तबे में होगा तो जिस से वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करता था उसे उस के साथ मिला दिया जाएगा ।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب المتحابین فی اللہ، رقم ۱۸۰۱۵، ج۱۰، ص۴۹۶)

(1671)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत की और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बुग़्ज़ रखा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी को कुछ अ़ता किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये रोक लिया तो उस ने अपना ईमान कामिल कर लिया ।''

(ابوداود، کتاب السنۃ، باب الدلیل علی زیادۃ الایمان، رقم ۴۶۸۱، ج۴، ص۲۹۰)

(1672)...... हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया कि ''सब से अफ़्ज़ल ईमान कौन सा है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी से महब्बत करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी से बुग़्ज़ रखो और अपनी ज़बान को ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ रखो ।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस के इ़लावा कौन सा ?'' फ़रमाया कि ''तुम लोगों के लिये वोही पसन्द करो जिसे अपने लिये पसन्द करते हो और जिसे अपने लिये ना पसन्द करते हो उसे लोगों के लिये ना पसन्द करो ।''

(مسند احمد، حدیث معاذ بن جبل، رقم ۲۲۱۹۱، ج۸، ص۲۶۶)

(1673)...... हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में बैठे हुए थे कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इस्लाम का कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''नमाज़ ।'' आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''येह एक नेकी ज़रूर है मगर येह वोह नहीं (जो मैं तुम से पूछ रहा हूं) ।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''र-मज़ान के रोज़े रखना ।'' फ़रमाया कि ''येह अच्छा अ़मल है मगर येह वोह नहीं ।'' सहाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''जिहाद ।'' फ़रमाया, ''येह भी अच्छा अ़मल है मगर येह वोह नहीं ।'' फिर इर्शाद फ़रमाया कि ''ईमान का सब से मज़्बूत अ़मल येह है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बुग़्ज़ रखो ।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند براء بن عازب، رقم ۱۸۵۴۹، ج۶، ص۴۱۰ بتغیر قلیل)

(1674)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तीन अ़लामतें जिस में पाई जाएं वोह उन के ज़रीए ईमान की मिठास पा लेगा, (1) जिस के

नज़्दीक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा महबूब हों, (2) जो सिर्फ़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये किसी बन्दे से महब्बत करे और (3) जो कुफ़्र में लौटना उसी त़रह ना पसन्द करे जैसे जहन्नम में दाख़िल किये जाने को ना पसन्द करता है।''

(مسلم، کتاب الایمان، باب بیان خصال من اتصف...الخ، رقم ۴۳، ص ۴۲)

एक रिवायत में है कि ''तीन ख़स्लतें जिस में होंगी वोह ईमान की ह़लावत और ज़ाएक़ा चख लेगा, (1) जो सारी काएनात से ज़ियादा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को महबूब रखता है, (2) तुम्हारा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये किसी से महब्बत करना और (3) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये ही किसी से बुग़्ज़ रखना।''

(سنن النسائی، کتاب الایمان، باب طعم الایمان، ج ۸، ص ۹۴)

(1675)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो इस बात को पसन्द करता है कि वोह ईमान की ह़लावत पा ले उसे चाहिये कि किसी शख़्स से सिर्फ़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये महब्बत करे।''

(مستدرک، کتاب الایمان، رقم ۳، ج ۱، ص ۱۴۸)

(1676)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक आदमी का किसी से सिर्फ़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये महब्बत करना ईमान में से है और येह महब्बत सिर्फ़ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये हो उस के अ़त़ा कर्दा माल की वजह से न हो और येही ईमान है।''

(المعجم الکبیر مسند عبداللہ ابن مسعود، رقم ۸۸۶۰، ج ۹، ص ۱۷۳)

(1677)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब दो शख़्स आपस में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये महब्बत करते हैं तो उन में से जिस की महब्बत ज़ियादा होती है वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का ज़ियादा महबूब होता है।''

(المعجم الاوسط، رقم ۲۸۹۹، ج ۲، ص ۱۶۵)

(1678)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सात अफ़राद को अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस दिन अ़र्श के साए में जगह अ़त़ा फ़रमाएगा जिस दिन उस के साए के इ़लावा कोई साया न होगा।'' आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन दो आदमियों का भी ज़िक्र फ़रमाया जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये महब्बत करते हों, उसी की महब्बत पर इकट्ठे होते हों और इसी पर जुदा होते हों।''

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل اخفاء الصدقۃ، رقم ۱۰۳۱، ص ۵۱۴ بالاختصار)

(1679)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन फ़रमाएगा, ''मेरे जलाल के लिये आपस में महब्बत करने वाले कहां हैं? आज जब कि मेरे अ़र्श के साए के इ़लावा कोई साया नहीं मैं उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह दूंगा।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل احب فی اللہ، رقم ۲۵۶۶، ص ۱۳۸۸)

(1680)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''एक शख़्स किसी शह्र में अपने किसी भाई से मिलने गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता उस के रास्ते में भेजा। जब वोह फ़िरिश्ता उस के पास पहुंचा तो उस से पूछा, ''कहां का इरादा है ?'' उस शख़्स ने जवाब दिया, ''इस शह्र में मेरा एक भाई रहता है उस से मिलने जा रहा हूं।'' उस फ़िरिश्ते ने पूछा, ''क्या उस का तुझ पर कोई एह़सान है जिसे उतारने जा रहा है ?'' तो उस शख़्स ने कहा, ''नहीं बल्कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये उस से मह़ब्बत करता हूं।'' फ़िरिश्ते ने कहा, ''मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे पास भेजा है ताकि तुझे बता दूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी तुझ से इसी त़रह़ मह़ब्बत फ़रमाता है जिस त़रह़ तू उस के लिये दूसरों से मह़ब्बत करता है।''
(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الحبّ فی اللہ، رقم ۲۵۶۷، ص ۱۳۸۸)

(1681)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना आप अपने रब से रिवायत करते हुए फ़रमाते हैं कि ''मेरे लिये मह़ब्बत करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए और मेरे लिये आपस में तअ़ल्लुक़ रखने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए और मेरे लिये एक दूसरे से मिलने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए और मेरी राह में कसरत से ख़र्च करने वाले मेरी मह़ब्बत के ह़क़दार हो गए।''
(مسند احمد بن حنبل، حدیث معاذ بن جبل، رقم ۲۲۰۶۳، ج ۸، ص ۲۳۲)

(1682)...... ह़ज़रते सय्यिदुना शुरह़बील बिन सम्त़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ किया, ''क्या आप मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी हुई कोई ऐसी ह़दीस सुनाएंगे जिस में भूल या झूट की आमैज़िश न हो ?'' आप ने फ़रमाया, ''हां ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''बेशक उन लोगों के लिये मेरी मह़ब्बत साबित हो गई जो मेरी वजह से एक दूसरे से मह़ब्बत करते हैं और उन के लिये मेरी मह़ब्बत साबित हो गई जो मेरी वजह से एक दूसरे से मिलते हैं और उन के लिये मेरी मह़ब्बत साबित हो गई जो लोग मेरी वजह से आपस में गुफ़्त-गू करते हैं और उन के लिये मेरी मह़ब्बत साबित हो गई जो लोग मेरी वजह से एक दूसरे से तअ़ल्लुक़ रखते हैं।''
(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب المتحابین فی اللہ عزوجل، رقم ۱۸۱۳، ج ۱۰، ص ۴۸۹)

(1683)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अ़र्ज़ किया कि ''ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं किसी दुन्यवी ग़रज़ या तअ़ल्लुक़ के बिग़ैर आप से मह़ब्बत करता हूं।'' आप ने पूछा ''फिर किस वजह से मह़ब्बत करते हो ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये।'' तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मेरी निशस्त गाह की चोकी को अपनी त़रफ़ खींचा और फ़रमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो ख़ुश हो जाओ कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करने वाले उस दिन

अर्श के साए में होंगे जिस दिन अर्श के सिवा कोई साया न होगा और अम्बिया व शु-हदा उन के मर्तबे पर रश्क करेंगे।''

सय्यिदुना अबू मुस्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मज़ीद फ़रमाते हैं कि मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई तो मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह बात बयान की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है ''मेरे लिये आपस में मह़ब्बत करने वालों पर मेरी मह़ब्बत साबित हो गई और मेरे लिये एक दूसरे की ख़ैर चाहने वालों के लिये मेरी मह़ब्बत साबित हो गई और मेरे लिये दिल खोल कर ख़र्च करने वालों के लिये मेरी मह़ब्बत साबित हो गई, येह लोग नूर के मिम्बरों पर होंगे अम्बिया, शु-हदा और सिद्दीक़ीन इन के मर्तबे पर रश्क करेंगे।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الصحبۃ والمجالس، رقم ۵۷۶، ج۱، ص۳۹۲)

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''मेरे जलाल की वजह से आपस में मह़ब्बत करने वालों के लिये नूर के मिम्बर होंगे और अम्बिया और शु-हदा उन के मर्तबे पर रश्क करेंगे।''

(جامع الترمذی، کتاب الزھد، باب فی الحب فی اللہ، رقم ۲۳۹۷، ج۴، ص۱۷۴)

(1684)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं जिन्हें वोह क़ियामत के दिन नूर के मिम्बरों पर बिठाएगा और नूर उन के चेहरों को ढांप लेगा यहां तक कि मख़्लूक़ ह़िसाब से फ़ारिग़ हो जाए।''

(المعجم الکبیر، مسند ابو اُمامہ، رقم ۷۵۲۷، ج۸، ص۱۱۲)

(1685)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन कुछ क़ौमों को उठाएगा जिन के चेहरे मुनव्वर होंगे, वोह नूर के मिम्बरों पर होंगे, लोग उन पर रश्क करेंगे और वोह न तो अम्बिया होंगे और न ही शु-हदा।'' तो एक आ'राबी ने घुटनों के बल खड़े हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उन के औसाफ़ बयान फ़रमा दीजिये ताकि हम उन्हें पहचान सकें।'' तो इर्शाद फ़रमाया कि ''वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले होंगे जो मुख़्तलिफ़ क़बीलों और शहरों से तअ़ल्लुक़ रखते होंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के लिये जम्अ़ होंगे और उस का ज़िक्र करेंगे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء فی مجالس الذکر، رقم ۱۶۷۷۰، ج۱۰، ص۷۷)

(1686)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि ''बेशक जन्नत में याक़ूत के सुतून हैं जिन पर ज़बर जद के कमरे हैं, उन के खुले

दरवाज़े चमकदार सितारे की त़रह़ चमकते हैं।'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! उन में कौन रहेगा ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करने वाले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ख़र्च करने वाले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दूसरे से मुलाक़ात करने वाले।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی الحب فی اللہ...الخ، رقم ۲۴، ج ۴، ص ۱۳)

(1687)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नत में कुछ ऐसे कमरे हैं जिन में आर पार नज़र आता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें उन लोगों के लिये तय्यार किया है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करते हैं और उस की रिज़ा के लिये ख़र्च करते हैं।''

(المعجم الاوسط، رقم ۲۹۰۳، ج ۲، ص ۱۲۶)

(1688)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक क़ियामत के दिन अ़र्श की दाहिनी जानिब कुछ लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब में होंगे और अ़र्शे इलाही عَزَّوَجَلَّ की दोनों तरफ़ें दाहिनी ही हैं, वोह नूर के मिम्बरों पर होंगे उन के चेहरे नूरानी होंगे, वोह न तो अम्बिया होंगे, न शु-हदा और न ही सिद्दीक़ीन होंगे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन होंगे ?'' फ़रमाया कि ''**अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करने वाले।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی الحب فی اللہ، رقم ۱۷، ج ۴، ص ۱۱)

(1689)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से कुछ बन्दे ऐसे हैं जो न तो अम्बिया हैं न ही शु-हदा और अम्बिया और शु-हदा क़ियामत के दिन उन की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से क़ुरबत पर रश्क करेंगे।'' सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! हमें उन के बारे में बताइये कि वोह कौन हैं ?'' फ़रमाया कि ''वोह लोग जो किसी क़िस्म की रिश्तेदारी और माली लैन दैन के बिग़ैर मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन के चेहरे पुरनूर होंगे और वोह नूर के मिम्बरों पर होंगे और उस वक़्त येह लोग ख़ौफ़ज़दा न होंगे जब लोग ख़ौफ़ में मुब्तला होंगे और येह ग़म से मह़फ़ूज़ होंगे जब लोग ग़मज़दा होंगे।''

फिर आप صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝ (پ ۱۱، یونس: ۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی الحب فی اللہ...الخ، رقم ۲۲، ج ۴، ص ۱۳)

(1690)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ लोगो ! सुन लो, समझ लो और जान लो कि बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे हैं जो न तो अम्बिया हैं न ही शु-हदा, और अम्बिया व शु-हदा उन के मर्तबे और कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ की वजह से उन पर रश्क करेंगे।'' पीछे बैठे हुए एक आ'राबी सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ अपने हाथ से इशारा कर के अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जो बन्दे न तो अम्बिया हैं न ही शु-हदा, और अम्बिया व शु-हदा उन के मर्तबे और कुर्बे इलाही عَزَّوَجَلَّ की वजह से उन पर रश्क करेंगे, हमें उन के औसाफ़ बताइये।''

तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चेह्रए अक्दस पर आ'राबी के सुवाल की वजह से खुशी के आसार नुमूदार हुए फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''वोह मुख़्तलिफ़ क़बाइल से तअ़ल्लुक़ रखने वाले लोग होंगे जो किसी क़िस्म की रिश्तेदारी के बिग़ैर मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत रखेंगे और एक दूसरे से मुसा-फ़ह़ा करेंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये क़ियामत के दिन नूर के मिम्बर बिछाएगा जिन पर वोह बैठेंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के चेहरों और कपड़ों को नूर कर देगा, क़ियामत के दिन जब लोग घबराहट में मुब्तला होंगे वोह न घबराएंगे येह ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वोह औलिया हैं जिन्हें न तो कोई ख़ौफ़ होगा और न ही कुछ ग़म।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی الحب فی اللہ الخ، رقم ۲۳، ج۴، ص۱۳)

(1691)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे हैं जो न तो अम्बिया हैं न ही शु-हदा, और अम्बिया व शु-हदा उन पर रश्क करेंगे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''हमें उन के औसाफ़ बताइये शायद हम उन से मह़ब्बत करने लगें।'' फ़रमाया कि ''वोह क़ौम जो रिश्तेदारी और माली लैन दैन के बिग़ैर सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आपस में मह़ब्बत करे, वोह नूर के मिम्बरों पर होंगे, उन के चेहरे पुरनूर होंगे, जब लोग ख़ौफ़ज़दा होंगे वोह बे ख़ौफ़ होंगे, जब लोग ग़मज़दा होंगे वोह ग़म से अम्न में होंगे।''

फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई :

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰہِ لَاخَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَاهُمْ یَحْزَنُوْنَ ٥ (پ۱۱، یونس:۶۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सुन लो बेशक **अल्लाह** के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है न कुछ ग़म।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الصحبۃ والمجالس، رقم ۵۷۲، ج۱، ص۳۹۰)

मुअमिनीन को सलाम करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है,

وَاِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّةٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَاۤ اَوْ رُدُّوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا۝ (پ۵،النساء:۸۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और जब तुम्हें कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ जवाब में कहो या वोही कह दो बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर हिसाब लेने वाला है।

सलाम के बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1692)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम जन्नत में हरगिज़ दाख़िल नहीं हो सकते जब तक ईमान न ले आओ और तुम (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते जब तक आपस में मह़ब्बत न करने लगो, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं कि जब तुम उसे करो तो आपस में मह़ब्बत करने लगो ?'' फिर इर्शाद फ़रमाया, ''आपस में सलाम को आ़म करो।'' (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب ان افشاء السلام سبب لحصولھا، رقم ۵۴، ص ۴۷)

(1693)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम में पिछली उम्मतों की बीमारियां बुग़्ज़ और ह़सद फैल जाएंगी, बुग़्ज़ तो काटने वाला उस्तरा है जो बालों को नहीं बल्कि दीन को काट देता है, उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जब तक तुम ईमान न ले आओ जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते और जब तक आपस में मह़ब्बत न करो (कामिल) मोमिन नहीं हो सकते क्या मैं तुम्हें ऐसा अ़मल न बताऊं जो मह़ब्बत पैदा करे ?'' (फिर फ़रमाया) ''आपस में सलाम को आ़म करो।'' (مسند احمد، مسند الزبیر بن العوام، رقم ۱۴۳۰، ج ۱، ص ۳۵۲)

(1694)...... हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सलाम को आ़म करो सलामती पा लोगे।'' (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام...الخ، رقم ۴۹۱، ج ۱، ص ۳۵۷)

(1695)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''रह़मान عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और सलाम को आ़म करो और खाना खिलाओ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام، رقم ۴۸۹، ج ۱، ص ۳۵۶)

(1696)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''ऐ लोगो ! सलाम को आ़म करो और खाना खिलाओ और रात को जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی افشاء السلام، رقم ۶، ج ۳، ص ۲۸۵)

(1697)...... हज़रते सय्यिदुना अबू शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसी चीज़ के बारे में ख़बर दीजिये जो मेरे लिये जन्नत वाजिब कर दे।'' ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अच्छी गुफ़्त-गू करना, सलाम को आ़म करना और खाना खिलाना।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی افشاء السلام، رقم ۸، ج ۳، ص ۲۸۵)

(1698)...... हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ''। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब इर्शाद फ़रमाया। फिर वोह शख़्स बैठ गया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''दस नेकियां हैं।'' फिर एक दूसरा शख़्स हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ'' आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे भी सलाम का जवाब दिया। फिर वोह बैठ गया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बीस नेकियां हैं।'' फिर एक और शख़्स ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ'' फिर वोह बैठ गया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तीस नेकियां हैं।'' (ابوداود، کتاب الادب، باب کیف السلام، رقم ۵۱۹۵، ج ۴، ص ۴۴۹)

(1699)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहता है उस के लिये दस नेकियां लिखी जाती हैं और जो اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ कहता है उस के लिये बीस नेकियां लिखी जाती हैं और जो اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ कहता है उस के लिये तीस नेकियां लिखी जाती हैं।''

(المعجم الکبیر، مسند سہل بن حنیف، رقم ۵۵۶۳، ج ۶، ص ۷۶)

(1700)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक जगह तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक शख़्स वहां से गुज़रा तो उस ने اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहा। आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दस नेकियां।'' फिर एक दूसरा शख़्स गुज़रा तो उस ने अ़र्ज़ किया اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ फ़रमाया, ''बीस नेकियां।'' फिर एक और शख़्स गुज़रा तो उस ने अ़र्ज़ किया اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ। फ़रमाया, ''तीस नेकियां।'' फिर एक शख़्स मजलिस से उठा और सलाम किये बिग़ैर चला गया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम्हारा येह रफ़ीक़ कितनी जल्दी भूल गया, जब तुम में से कोई शख़्स किसी मजलिस में आए तो सलाम करे फिर अगर बैठना चाहे तो बैठ जाए और अगर मजलिस से उठे तो सलाम करे क्यूं कि पहले सलाम करना आख़िर में सलाम करने से ज़ियादा अफ़्ज़ल नहीं।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام، رقم ۴۹۳، ج۱، ص ۳۵۷)

✡===✡===✡===✡

सलाम में पहल करने का सवाब

(1701)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक लोगों में से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब वोह शख़्स है जो सलाम करने में पहल करे।''

(ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی فضل من بداء بالسلام، رقم ۵۱۹۷، ج۴، ص۴۴۹)

एक रिवायत में है कि अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब दो शख़्स मुलाक़ात करें तो पहले कौन सलाम करे ?'' फ़रमाया, ''जो उन में से अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब हो।'' (جامع الترمذی، باب ماجاء فی فضل الذی یبداء بالسلام، رقم ۲۷۰۳، ج۴، ص۳۱۹)

(1702)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन कु़र्रह फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया कि ऐ मेरे बेटे ! जब तुम किसी ऐसी मजलिस में हो जिसे तुम अच्छा समझते हो फिर किसी ह़ाजत की बिना पर जल्दी उठो तो اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहा करो, इस त़रह़ तुम भी उस भलाई में शरीक हो जाओगे जो अहले मजलिस को नसीब होगी।''

पिछले सफ़ह़ात में येह रिवायत गुज़र चुकी है कि ''जब तुम में से कोई किसी मजलिस में ह़ाज़िर हो तो उसे चाहिये कि सलाम करे फिर अगर वोह उस मजलिस में बैठना चाहे तो बैठ जाए और अगर जाना चाहे तो सलाम कर के जाए क्यूं कि पहले सलाम करना आख़िर में सलाम करने से ज़ियादा अफ़्ज़ल नहीं।''

(الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب افشاء السلام، رقم ۴۹۳، ج۱، ص۳۵۷)

✡ ===✡ ===✡ ===✡
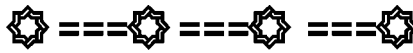
घर में दाख़िल हो कर सलाम करने का सवाब

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है,

فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُیُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ تَحِیَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُبٰرَكَةً طَیِّبَةً ؕ (پ۱۸،النور:۶۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब किसी घर में जाओ तो अपनों को सलाम करो मिलते वक़्त की अच्छी दुआ़ **अल्लाह** के पास से मुबारक पाकीज़ा।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1703)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ऐ बेटे ! जब तुम घर में दाख़िल हुवा करो तो अपने घर वालों को सलाम किया करो ताकि तुम पर और तुम्हारे घर वालों पर ब-र-कत नाज़िल हो।'' (ترمذی، کتاب الاستئذان، باب ماجاء فی التسلیم اذا دخل بیتہ، رقم ۲۷۰۷، ج۴، ص۳۲۰)

(1704)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तीन शख़्स ऐसे हैं जिन में से हर एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है, पहला वोह शख़्स जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद के लिये निकले वोह मरने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए या अज्रो सवाब के साथ वापस लौटाए, दूसरा वोह शख़्स जो मस्जिद की त़रफ़ जाए वोह मरने तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि वोह उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए या अज्रो सवाब के साथ वापस लौटाए, और तीसरा वोह शख़्स जो अपने घर में सलाम करते हुए दाख़िल हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है।''

एक रिवायत में है कि ''तीन अश्ख़ास ऐसे हैं जिन में से हर एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है अगर ज़िन्दा रहें तो उन्हें रिज़्क़ दिया जाए और उन की किफ़ायत की जाए और अगर मर जाएं तो जन्नत में दाख़िल हों, एक वोह शख़्स जो अपने घर में सलाम कर के दाख़िल हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है......الخ।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الذکر والدعاء، باب فیما یقول اذا خرج...الخ، رقم ۹، ج۲، ص۳۰۶)

(1705)...... हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो इस बात को पसन्द करता है कि खाना खाते वक़्त, लैटते वक़्त और रात गुज़ारते वक़्त शैतान उस के क़रीब न आए तो उसे चाहिये कि जब घर में दाख़िल हो तो सलाम कर लिया करे और खाना खाते वक़्त بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ लिया करे।''

(المعجم الکبیر، مسند سلمان فارسی، رقم ۶۱۰۲، ج۶، ص۲۴۰ بتغیر قلیل)

मुसा-फ़हा का सवाब

(1706)...... हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब कोई मुसल्मान अपने भाई से मुलाक़ात करते हुए उस का हाथ पकड़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे तेज़ आंधी में ख़ुश्क दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं और उन दोनों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है अगर्चे उन के गुनाह समुन्दर की झाग के बराबर हों।" (المعجم الکبیر، مسند سلمان فارسی، رقم ۶۱۵۰، ج۶، ص۲۵۶)

(1707)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को श-रफ़े मुलाक़ात बख़्शा तो जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से मुसा-फ़हा फ़रमाना चाहा तो हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ झुक गए और अ़र्ज़ किया कि "मैं जुंबी हूं (या'नी मुझ पर गुस्ल फ़र्ज़ है)।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, "मुसल्मान जब अपने भाई से मुसा-फ़हा करता है तो उस के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जैसे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं।"

(مجمع الزوائد، کتاب الأدب، باب المصافحۃ والسلام، رقم ۱۲۷۶۸، ج۸، ص۷۶)

(1708)...... हज़रते सय्यिदुना बराअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते वक़्त मुसा-फ़हा करते हैं तो उन दोनों के जुदा होने से पहले उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।" (ابوداود، کتاب الادب، باب فی المصافحۃ، رقم ۵۲۱۲، ج۴، ص۴۵۳)

एक रिवायत में है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हुए मुसा-फ़हा करते हैं, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ह़म्द करते हैं और उस से इस्तिग़्फ़ार करते हैं तो उन दोनों की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।" (ابوداود، کتاب الادب، باب فی المصافحۃ، رقم ۵۲۱۱، ج۴، ص۴۵۲)

एक रिवायत में है कि सय्यिदुना नुफ़ैअ़ आ'मी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझ से मुसा-फ़हा फ़रमाया और मुस्कुराने लगे फिर पूछा "क्या तुम जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ?" मैं ने अ़र्ज़ किया "नहीं।" तो फ़रमाने लगे कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे श-रफ़े मुलाक़ात बख़्शा तो मेरे साथ ऐसे ही किया फिर मुझ से पूछा, "जानते हो मैं ने ऐसा क्यूं किया ?" तो मैं ने अ़र्ज़ किया "नहीं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते वक़्त मुसा-फ़हा करते हैं और दोनों एक दूसरे के सामने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये मुस्कुराते हैं तो उन के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत कर दी जाती है।" (المعجم الاوسط، رقم ۷۶۳۰، ج۵، ص۳۶۶)

(1709)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़्-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हैं फिर उन में से एक अपने भाई का हाथ पकड़ता है (या'नी मुसा-फ़हा करता है) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उन की दुआ़ क़बूल फ़रमाए और उन के हाथों के जुदा होने से पहले ही उन की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، رقم ۱۲۴۵۴، ج ۴، ص ۲۸۶)

(1710)...... हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब दो मुसल्मान मर्द मुलाक़ात करते हैं और उन में से एक अपने रफ़ीक़ को सलाम करता है तो उन में से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक ज़ियादा महबूब वोह होता है जो अपने रफ़ीक़ से ज़ियादा गर्म जोशी से मुलाक़ात करता है। फिर जब वोह मुसा-फ़हा करते हैं तो उन पर सो रहमतें नाज़िल होती हैं उन में से नव्वे रहमतें सलाम में पहल करने वाले के लिये और दस मुसा-फ़हा में पहल करने वाले के लिये हैं।'' (مسند البزاز، رقم ۳۰۸، ج ۱، ص ۴۳۷)

(1711)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब दो मुसल्मान मुलाक़ात करते हुए मुसा-फ़हा करते हैं और एक दूसरे से ख़ैरियत दरयाफ़्त करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के दरमियान सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है जिन में से निनान्वे रहमतें ज़ियादा पुर तपाक त़रीक़े से मिलने वाले और अच्छे त़रीक़े से अपने भाई से ख़ैरियत दरयाफ़्त करने वाले के लिये होती हैं।'' (المعجم الاوسط، باب الالف، رقم ۷۶۷۲، ج ۵، ص ۳۸۰)

(1712)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हाथ पकड़ना (या'नी मुसा-फ़हा करना) सलाम की तक्मील है।''

(ترمذی، کتاب، الاستئذان والادب، باب ماجاء فی المصافحۃ، رقم ۲۷۳۹، ج ۴، ص ۳۳۴)

(1713)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ता ख़ुरासानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुसा-फ़हा किया करो कीना दूर होगा और तोहफ़ा दिया करो महब्बत बढ़ेगी और बुग़्ज़ दूर होगा।''

(ترمذی، کتاب، الاستئذان والادب، باب ماجاء فی المصافحۃ، رقم ۲۷۳۹، ج ۴، ص ۳۳۴)

ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने का सवाब

(1714)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हर नेकी स-दक़ा है और तुम्हारा किसी से ख़न्दा पेशानी से मिलना भी नेकी है और अपने डोल से अपने भाई के बरतन में पानी डालना भी नेकी है।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۱۴۷۱۵، ج۵، ص۱۱۱)

(1715)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''किसी नेक काम को हरगिज़ ह़क़ीर न जानो अगर्चे वोह तुम्हारा अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से मिलना ही क्यूं न हो।''

(مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فی استحباب طلاقۃ الوجہ عند اللقاء، رقم ۲۶۲۶، ص۱۴۱۳)

(1716)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम्हारा अपने भाई के लिये मुस्कुराना स-दक़ा है और तुम्हारा नेकी का हु़क्म देना और बुराई से मन्अ़ करना स-दक़ा है और तुम्हारा गुमराही की सर ज़मीन पर किसी शख़्स को हिदायत देना स-दक़ा है और तुम्हारा रास्ते से पथ्थर, कांटे और हड्डियां हटा देना स-दक़ा है और तुम्हारा अपने डोल से अपने भाई के डोल में पानी डालाना स-दक़ा है। एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है, ''और तुम्हारा अन्धे को रास्ता बताना स-दक़ा है।'' (ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب صنائع المعروف، رقم ۱۹۶۳، ج۳، ص۳۸۴)

(1717)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जुरा हुजैमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम एक देहाती क़ौम हैं लिहाज़ा हमें ऐसा अ़मल सिखाइये जिस के ज़रीए अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमें नफ़्अ़ बख़्शे।'' इर्शाद फ़रमाया, ''किसी नेकी को हरगिज़ ह़क़ीर न समझो अगर्चे वोह तुम्हारा अपने भाई के बरतन में अपने डोल से पानी डालना या अपने भाई से गुफ़्त-गू करते हुए मुस्कुराना ही क्यूं न हो और तहबन्द लटकाने से बचते रहो क्यूं कि येह तकब्बुर की अ़लामत है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इसे पसन्द नहीं फ़रमाता और अगर कोई शख़्स तुम्हें तुम्हारे किसी ऐ़ब का त़ा'ना दे तो तुम उसे उस के ऐ़ब का त़ा'ना हरगिज़ न दो क्यूं कि तुम्हें इस का सवाब मिलेगा और त़ा'ना देने वाले पर वबाल होगा।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، رقم ۵۲۳، ج۱، ص۳۷۰)

एक रिवायत में है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''किसी नेक काम को ह़क़ीर जानते हुए हरगिज़ न छोड़ो, चाहे वोह तुम्हारा किसी को रस्सी का टुकड़ा तोह़फ़े में देना हो और चाहे वोह तुम्हारा अपने डोल से पानी पीने वाले के बरतन में पानी डालना हो और चाहे वोह तुम्हारा अपने भाई से गर्म जोशी से मुलाक़ात करना हो और चाहे वोह तुम्हारा जानवरों को मानूस करना हो और चाहे वोह तुम्हारा किसी को जूते का तस्मा तोह़फ़े में देना हो।'' (السنن الکبری للنسائی، کتاب الزینۃ، باب الحلی، رقم ۹۲۹۴، ج۵، ص۴۸۶)

(1718)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम्हारा लोगों को गर्म जोशी से सलाम करना भी स-दक़ा है।'' (جامع العلوم والحکم، ج۱، ص۲۳۵)
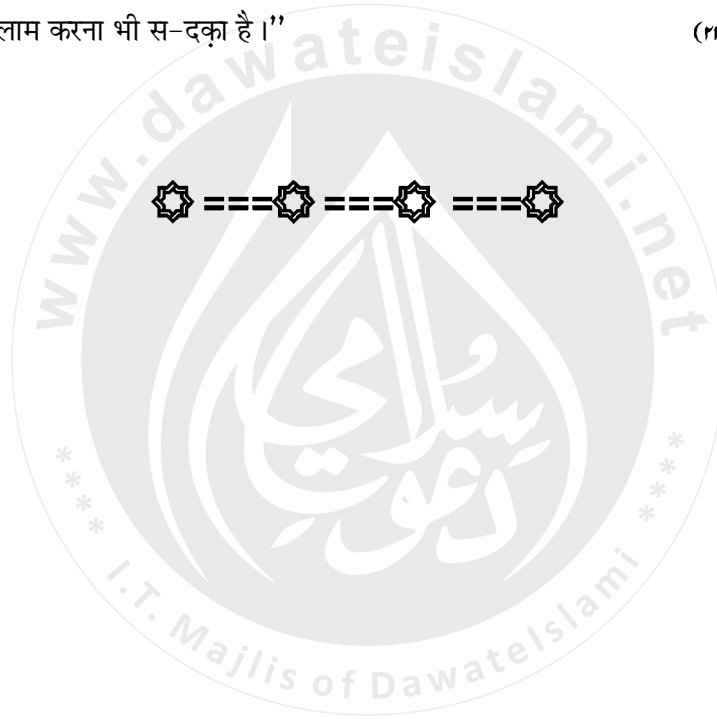
अच्छी गुफ़्त-गू करने का सवाब

(1719)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जन्नत में एक कमरा है जिस का बैरूनी ह़िस्सा अन्दर से और अन्दरूनी ह़िस्सा बाहर से दिखाई देता है।'' सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये है ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''उस के लिये जो अच्छी गुफ़्त-गू करे और खाना खिलाए और जब लोग सो जाएं तो वोह नमाज़ पढ़ते हुए रात गुज़ारे।'' (مسند احمد، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۶۶۲۶، ج۲، ص۵۸۳)

(1720)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जिसे करने से मेरे लिये जन्नत वाजिब हो जाए।'' इर्शाद फ़रमाया, ''खाना खिलाना, सलाम को आ़म करना और अच्छा कलाम करना जन्नत को वाजिब करने वाले आ'माल हैं।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاطعمۃ، باب اطعام الطعام، رقم ۷۸۷۲، ج۵، ص۹)

(1721)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं एक शख़्स ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल सिखाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।'' इर्शाद फ़रमाया, ''खाना खिलाया करो, सलाम को आ़म करो और अच्छा कलाम किया करो और रात को जब लोग सो जाएं तो नमाज़ पढ़ा करो सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।'' (مجمع الزوائد، کتاب الاطعمۃ، باب اطعام الطعام، رقم ۷۸۶۷، ج۵، ص۸)

(1722)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अच्छी बात कहना स-दक़ा है।'' (صحیح بخاری، کتاب الادب، باب طیب الکلام، ج۴، ص۱۰۶)

(1723)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''अ़न्क़रीब तुम में से हर एक से उस का रब عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ कलाम करेगा कि बन्दे और रब के दरमियान कोई तरजुमान न होगा। जब वोह बन्दा अपने दाएं त़रफ़ देखेगा तो उसे वोही नज़र आएगा जो उस ने आगे भेजा था, बाएं त़रफ़ देखेगा तो जो उस ने आगे भेजा था वोही नज़र आएगा, अपने सामने देखेगा तो उसे अपने चेहरे के नज़्दीक आग नज़र आएगी लिहाज़ा आग से बचने की कोशिश करो अगर्चे एक खजूर स-दक़ा करने से हो और जो इस की भी इस्तित़ाअ़त न रखता हो तो वोह अच्छी बात के ज़रीए से कोशिश करे।'' (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ، رقم ۱۰۱۶، ص۵۰۷)

नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने का सवाब

इस बारे में आयाते मुबा-रका :

(1) وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ (پ۴،آل عمران:۱۰۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम में एक गुरौह ऐसा होना चाहिये कि भलाई की त़रफ़ बुलाएं और अच्छी बात का हुक्म दें और बुरी से मन्अ़ करें और येही लोग मुराद को पहुंचे।

(2) كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ (پ۴،آل عمران:۱۱۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मन्अ़ करते हो।

(3) وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ (پ۱۰،التوبہ:۷۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं भलाई का हुक्म दें और बुराई से मन्अ़ करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें और **अल्लाह** व रसूल का हुक्म मानें येह हैं जिन पर अ़न्क़रीब **अल्लाह** रह़्म करेगा।

(4) فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَئِيْسٍۭ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝ (پ۹،الاعراف:۱۶۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब वोह भुला बैठे जो नसीह़त उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ़ करते थे और ज़ालिमों को बुरे अ़ज़ाब में पकड़ा बदला उन की ना फ़रमानी का।

(5) يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ (پ۲۱،لقمان:۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे बेटे नमाज़ बरपा रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़ कर और जो उफ़्ताद तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर बेशक येह हिम्मत के काम हैं।

इस बारे में अहादीसे करीमा :

(1724)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इन्सानी बदन के हर हिस्से पर रोज़ाना एक स-दक़ा है।'' लोगों में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें जो बातें बताई हैं येह उन में से सब से ज़ियादा सख़्त है।'' इर्शाद फ़रमाया, ''तुम्हारा नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना स-दक़ा है और तुम्हारा रास्ते से गन्दगी हटा देना स-दक़ा है और तुम्हारा नमाज़ के लिये चलने में हर क़दम स-दक़ा है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی اماطۃ الاذی عن الطریق، رقم ۶، ج ۳، ص ۳۷۷)

(1725)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने जिस नबी को भी किसी उम्मत में मब्ऊ़स किया उन के साथ उन की उम्मत में कुछ हवारी और सहाबा होते थे जो उन की सुन्नत पर अ़मल करते और उन के अहकाम की पैरवी करते थे फिर उन के बा'द कुछ ना ख़लफ़ आए जो ऐसी बातें कहते हैं जिन पर ख़ुद अ़मल नहीं करते और वोह काम करते हैं जिस का उन्हें हुक्म नहीं दिया गया, लिहाज़ा जो इस त़रह के लोगों से अपने हाथ से जिहाद करेगा वोह मोमिन है, जो अपनी ज़बान से जिहाद करेगा वोह मोमिन है और जो अपने दिल से जिहाद करे वोह मोमिन है और इस के बा'द राई के दाने बराबर भी ईमान नहीं।'' (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان کون النھی عن المنکر، رقم ۵۰، ص ۴۴)

(1726)...... हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के अहकाम की पासदारी करने वाला और इन्हें तोड़ने वाला उस क़ौम की मिस्ल है जो एक सफ़ीने पर सुवार हो, उन में से बा'ज़ ऊपर की मन्ज़िल जब कि कुछ निचली मन्ज़िल में हों। निचली मन्ज़िल वाले जब प्यास महसूस करें तो ऊपर वालों से कहें कि हम अपनी मन्ज़िल में सूराख़ कर लेते हैं तुम्हें इस से कोई तक्लीफ़ नहीं होगी तो अगर ऊपर वाले उन्हें ऐसा करने दें तो सब के सब हलाक हो जाएं और अगर उन के हाथों को रोक दें तो सब महफ़ूज़ रहते हैं।''

(صحیح البخاری، کتاب الشرکۃ، باب ھل یقرع فی القسمۃ، رقم ۲۴۹۳، ج ۲، ص ۱۴۳)

(1727)...... हज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम पर ऐसे उ-मरा को मुसल्लत़ किया जाएगा जिन में तुम कुछ अच्छाइयां और कुछ बुराइयां देखोगे, तो जो बुराई को ना पसन्द करेगा वोह बरी है और जो बुराई का इन्कार करेगा वोह महफ़ूज़ है मगर जो राज़ी हुवा और पैरवी की।'' (صحیح مسلم، کتاب الامارۃ، باب وجوب الانکار علی الامراء، رقم ۱۸۵۴، ص ۱۰۳۱)

(1728)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तुम में से कोई जब किसी बुराई को देखे तो उसे चाहिये कि बुराई को अपने हाथ से बदल दे और जो अपने हाथ से बदलने की इस्तित़ाअ़त न रखे उसे चाहिये कि अपनी ज़बान से बदल दे और जो अपनी ज़बान से बदलने की भी इस्तित़ाअ़त न रखे उसे चाहिये कि अपने दिल में बुरा जाने और येह कमज़ोर तरीन ईमान की अ़लामत है।"

(سنن نسائی، کتاب الایمان، باب تفاضل اھل الایمان، ج۸، ص۱۱۱ بتغیر قلیل)

(1729)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा में से कुछ लोगों ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मालदार लोग अज्र ले गए ह़ालां कि वोह भी हमारी त़रह़ नमाज़ें पढ़ते हैं और हमारी त़रह़ रोज़े रखते हैं ?" आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये कोई ऐसी चीज़ नहीं बनाई जो तुम स-दक़ा कर सको ? बेशक हर तस्बीह़ स-दक़ा है और हर तक्बीर स-दक़ा है और हर तह़मीद स-दक़ा है और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف (या'नी नेकी की दा'वत देना) स-दक़ा है और نَھْیٌ عَنِ الْمُنْکَر (या'नी बुराई से मन्अ़ करना) स-दक़ा है।" (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب بیان اسم الصدقۃ، رقم۱۰۰۶، ص۵۰۳)

(1730)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "आदमी को तीन सो साठ जोड़ों पर पैदा किया गया है तो जिस ने اَللّٰہُ اَکْبَرُ और لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ और سُبْحَانَ اللّٰہِ और اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ कहा और मुसल्मानों के रास्ते से पथ्थर, कांटा या हड्डी हटा दी और नेकी का हुक्म दिया और बुराई से मन्अ़ किया और येह काम तीन सो साठ मरतबा किये तो वोह उस दिन इस ह़ाल में रात गुज़ारेगा कि उस ने अपने आप को जहन्नम से बचा लिया होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، رقم۱۰۰۷، ص۵۰۳)

(1731)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू कसीर सुहैमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा कि "मुझे ऐसा अ़मल बताइये कि जब बन्दा उसे करे तो जन्नत में दाख़िल हो जाए।" उन्हों ने फ़रमाया, "जब मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में येही सुवाल किया था तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि "वोह बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत पर ईमान ले आए।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ईमान के साथ कोई अ़मल भी इर्शाद फ़रमाइये।" फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये हुए रिज़्क़ में से कुछ न कुछ स-दक़ा करे।"

मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर वोह फ़क़ीर हो और स-दक़े की इस्तित़ाअ़त न रखता हो तो क्या करे ?" फ़रमाया, "वोह नेकी का हुक्म दे और बुरी बात से मन्अ़

करे।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर वोह बोलने में अटकता हो, नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने की इस्तित़ाअ़त न हो तो ?'' फ़रमाया कि ''जाहिल को इ़ल्म सिखाए।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''अगर वोह ख़ुद जाहिल हो तो ?'' फ़रमाया, ''मज़्लूम की मदद करे।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''अगर वोह कमज़ोर हो और मज़्लूम की मदद करने पर क़ादिर न हो तो ?'' फ़रमाया कि ''तुम अपने दोस्त में जो भलाई चाहते हो वोह येह है कि वोह लोगों को ईज़ा देना छोड़ दे।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर वोह येह अ़मल करेगा तो जन्नत में दाख़िल हो जाएगा ?'' फ़रमाया कि ''जो मुसल्मान इन आ'माल में से कोई एक अ़मल भी करेगा मैं ख़ुद उस का हाथ पकड़ कर उसे जन्नत में दाख़िल करूंगा।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الحدود، باب الترغیب فی الامر بالمعروف...الخ، رقم ۲۰، ج ۳ص ۱۶۲)

(1732)...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहि़बे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''दिलों पर कंकरियों की त़रह़ रफ़्ता रफ़्ता फ़ितने पेश होंगे जो दिल उन्हें क़बूल करेगा उस पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाएगा और जो उन से इन्कार करेगा उस पर एक सफ़ेद नुक्ता लगा दिया जाएगा यहां तक कि उन में से एक दिल सफ़ेद चट्टान की त़रह़ सफ़ेद हो जाएगा फिर जब तक ज़मीन व आस्मान क़ाइम हैं उसे कोई फ़ितना नुक़्सान न दे सकेगा और दूसरे दिल औंधे पड़े हुए कूज़े की त़रह़ गदले पन की त़रफ़ माइल हो कर सियाह हो जाएंगे फिर वोह नेकी को नेकी और बुराई को बुराई न समझेंगे मगर उसे जिसे उन का नफ़्स अच्छा या बुरा समझे।''

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب استحقاق الوالی...الخ، رقم ۱۴۴، ص ۸۷)

(1733)...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि, ''इस्लाम के आठ ह़िस्से हैं (1) इस्लाम एक ह़िस्सा है (2) नमाज़ एक ह़िस्सा है (3) ज़कात एक ह़िस्सा है (4) बैतुल्लाह का ह़ज एक ह़िस्सा है (5) र-मज़ान के रोज़े रखना एक ह़िस्सा है (6) नेकी का हुक्म देना एक ह़िस्सा है (7) बुराई से मन्अ़ करना एक ह़िस्सा है (8) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना एक ह़िस्सा है और जिस के लिये इन में से कोई ह़िस्सा न हो वोह बड़ा ही मह़रूम है।'' (مسند البزار، رقم ۲۹۲۷، ج ۷، ص ۳۳۰)

=== === ===
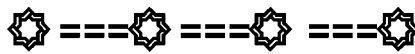
ज़ालिम बादशाह के सामने ह़क़ बात कहने का सवाब

(1734)...... ह़ज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ बिन शहाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपना मुबारक क़दम घोड़े की रिकाब में रख चुके तो एक शख़्स ने सुवाल किया, ''कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया, ''ज़ालिम बादशाह के सामने ह़क़ बात कहना।''

(سنن النسائی، کتاب البیعۃ، فضل من تکلم بالحق...الخ، ج۷، ص۱۶۱)

(1735)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने जम्रए ऊला के क़रीब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! कौन सा जिहाद अफ़्ज़ल है ?'' सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे और कोई जवाब न दिया। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जम्रए सानिया की रमी फ़रमाई तो फिर उस शख़्स ने येही सुवाल किया। सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फिर ख़ामोश रहे। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जम्रए उ़क़्बा की रमी फ़रमा ली तो घोड़े के रिकाब में पाउं रख कर फ़रमाया, ''सुवाल करने वाला कहां है ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ह़ाज़िर हूं।'' फ़रमाया, ''वोह ह़क़ बात जो ज़ालिम बादशाह के सामने कही जाए।''

(ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب امر بالمعروف ونھی عن المنکر رقم ۴۰۱۲، ج۴، ص۳۶۳)

(1736)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''सब से अफ़्ज़ल जिहाद ज़ालिम बादशाह या ज़ालिम अमीर के सामने ह़क़ बात कहना है।''

(ابوداؤد، کتاب الملاحم، باب الامر والنھی، رقم ۴۳۴۴، ج۴، ص۱۶۶)

(1737)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सय्यिदुश्शु-हदा (या'नी शहीदों के सरदार) ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं और दूसरा वोह शख़्स है जिस ने ज़ालिम बादशाह को नेकी का हुक्म दिया और बुराई से मन्अ़ किया तो बादशाह ने उसे क़त्ल करवा दिया।''

(مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، باب من قام الی امام جائر...الخ، رقم ۴۹۳۶، ج۴، ص۱۹۹)

मुसीबत पर सब्र करने का सवाब

इस बारे में आयाते करीमा :

(1)

وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ۝ (پ۲،البقرۃ:۱۵۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और खुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को।

(2)

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۝ (پ۴،آل عمران:۲۰۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और अल्लाह से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो।

(3)

وَالَّذِیْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَةً وَّیَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّیِّئَةَ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ یَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآىٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّیّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓىٕكَةُ یَدْخُلُوْنَ عَلَیْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ۝ سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ۝ (پ۱۳،الرعد:۲۲،۲۳،۲۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जिन्हों ने सब्र किया अपने रब की रिज़ा चाहने को और नमाज़ क़ाइम रखी और हमारे दिये से हमारी राह में छुपे और ज़ाहिर कुछ ख़र्च किया और बुराई के बदले भलाई कर के टालते हैं उन्ही के लिये पिछले घर का नफ़्अ़ है बसने के बाग़ जिन में वोह दाख़िल होंगे और जो लाइक़ हों उन के बाप दादा और बीबियों और औलाद में और फ़िरिश्ते हर दरवाज़े से उन पर येह कहते आएंगे सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही खूब मिला।

(4)

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ۝ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِیْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ (پ۱۷،الحج:۳۴،۳۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और ऐ महबूब खुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उन के दिल डरने लगते हैं और जो उफ़्ताद पड़े उस के सहने वाले।

(5) وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝ (پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और सब्र वाले और सब्र वालियां और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

(6) وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ (پ۲۱،العنکبوت:۵۸،۵۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें जन्नत के बालाख़ानों पर जगह देंगे जिन के नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उन में रहेंगे क्या ही अच्छा अज्र काम वालों का वोह जिन्हों ने सब्र किया और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं।

(7) اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ (پ۲۳،الزمر:۱۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : साबिरों ही को उन का सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती।

(8) اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا (پ۲۰،القصص:۵۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : उन को उन का अज्र दोबाला दिया जाएगा बदला उन के सब्र का।

(9) وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝ (پ۲۵،الشوری:۴۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और बेशक जिस ने सब्र किया और बख़्श दिया तो येह ज़रूर हिम्मत के काम हैं।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1738)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो सब्र करना चाहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा देगा और सब्र से बेहतर और वुस्अ़त वाली अ़ता किसी पर नहीं की गई।" (صحیح مسلم،کتاب الزکاۃ،باب فضل التعفف والصبر،رقم ۱۰۵۳،ص۵۲۴)

(1739)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने किसी बन्दे को सब्र से बेहतर और वुस्अ़त वाली कोई भलाई अ़ता नहीं फ़रमाई।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۲، ج۴، ص۱۳۹)

(1740)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सफ़ाई निस्फ़ ईमान है और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहना मीज़ान को भर देता है और سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہِ ज़मीन व आस्मान के दरमियान हर चीज़ को भर देते हैं और नमाज़ नूर है, स-दक़ा दलील (या'नी राहनुमा) है, सब्र रोशनी है और कुरआन तेरे ह़क़ में या तेरे ख़िलाफ़ हुज्जत (या'नी दलील) है, हर शख़्स दिन की इब्तिदा अपने नफ़्स को बेचने वाला होता है अब या तो उसे आज़ाद करता है या हलाक।'' (صحیح مسلم، کتاب الطہارۃ، باب فضل الوضوء، رقم ۲۲۳، ص۱۴۰)

(1741)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सब्र निस्फ़ ईमान है और यक़ीन पूरा ईमान है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۵، ج۴، ص۱۴۰)

(1742)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब रूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मोमिन के मुआ़-मले पर तअ़ज्जुब है कि उस का सारा मुआ़-मला भलाई पर मुश्तमिल है और येह सिर्फ़ उसी मोमिन के लिये है जिसे ख़ुशह़ाली ह़ासिल होती है तो शुक्र करता है क्यूं कि उस के ह़क़ में येही बेहतर है और अगर तंगदस्ती पहुंचती है तो सब्र करता है तो येह भी उस के ह़क़ में बेहतर है।'' (صحیح مسلم، کتاب الزھد والرقائق، باب المؤمن امرہ کلہ خیر، رقم ۲۹۹۹، ص۱۵۹۸)

(1743)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मोमिन की मिसाल उस खेती की त़रह़ है जिसे हवाएं हिलाती रहती हैं और मोमिन आफ़ात में मुब्तला रहता है और मुनाफ़िक़ की मिसाल सनोबर के दरख़्त की त़रह़ है जो कटने तक बिल्कुल नहीं हिलता।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند ابوہریرہ، رقم ۷۸۱۹، ج۳، ص۱۲۷)

(1744)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया, ''ऐ ईसा ! मैं तेरे बा'द एक उम्मत को भेजने वाला हूं। अगर उन्हें पसन्दीदा चीज़ ह़ासिल होगी तो शुक्र करेंगे और अगर कोई ना गवार चीज़ पहुंचेगी तो सवाब की

उम्मीद रखेंगे और सब्र करेंगे हालां कि न तो उन के पास इल्म होगा न ही हिल्म।'' उन्हों ने अर्ज़ किया, ''या रब عَزَّ وَجَلَّ ऐसा कैसे हो सकता है जब कि उन के पास न तो इल्म होगा न ही हिल्म ?'' फ़रमाया कि ''मैं उन्हें अपने इल्म और हिल्म से हिस्सा अता फ़रमाऊंगा।'' (المستدرک،کتاب الجنائز،باب المریض یکتب لہ من الخیر ما کان یعمل،رقم ۱۳۲۹،ج۱،ص۶۷۰)

(1745)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत में मुब्तला फ़रमा देता है।''

(صحیح بخاری،کتاب المرضی،باب ماجاء کفارۃ المرض،رقم ۵۶۴۵،ج۴،ص۴)

(1746)...... हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबू वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से ज़ियादा मुसीबतें किन लोगों पर आईं ?'' फ़रमाया, ''अम्बिया पर फिर इन के बा'द जो लोग बेहतर हैं फिर इन के बा'द जो बेहतर हैं, बन्दे को अपनी दीनदारी के ए'तिबार से मुसीबत में मुब्तला किया जाता है अगर वोह दीन में सख़्त होता है तो उस की आज़माइश भी सख़्त होती है और अगर वोह अपने दीन में कमज़ोर होता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की दीनदारी के मुताबिक़ उसे आज़माता है। बन्दा मुसीबत में मुब्तला होता रहता है यहां तक कि इस दुन्या ही में उस के सारे गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।'' (سنن ابن ماجہ،کتاب الفتن،باب الصبر علی البلاء،رقم ۴۰۲۳،ج۴،ص۳۶۹)

एक रिवायत में है कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया गया कि ''कौन लोग सख़्त आज़माइश में मुब्तला किये जाते हैं ?'' फ़रमाया कि ''अम्बिया फिर जो इन के बा'द बेहतर हों फिर जो इन के बा'द अच्छे हों। लोगों को अपने दीन के मुताबिक़ आज़माइश में मुब्तला किया जाता है। जिस का दीन सख़्त होता है उस की आज़माइश सख़्त होती है और जिस का दीन कमज़ोर होता है उस की आज़माइश भी कमज़ोर और हलकी होती है और बेशक बन्दे पर आज़माइश आती रहती है यहां तक कि लोगों के दरमियान ही उस की ज़िन्दगी में उस की बख़्शिश कर दी जाती है।''

(الترغیب والترھیب،کتاب الجنائز،باب الترغیب فی الصبر...الخ،رقم ۱۵،ج۴،ص۱۴۱)

(1747)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो बुख़ार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सोहबत की ब-र-कतें लूट रहा था। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ऊपर एक कम्बल था। मैं ने कम्बल पर हाथ रख कर अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप का बुख़ार कितना तेज़ है ?'' फ़रमाया कि ''हम ऐसे ही हैं, हमारी आज़माइश सख़्त होती है और हमें दुगना अज्र दिया जाता है।'' मैं ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से ज़ियादा सख़्त आज़माइशें किन लोगों पर होती हैं ?'' फ़रमाया कि ''अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام पर।'' मैं ने अर्ज़ किया, ''फिर किन लोगों पर ?'' फ़रमाया कि ''उ-लमा पर।'' मैं ने अर्ज़ किया, ''फिर किन पर ?'' फ़रमाया कि ''सालिहीन पर, इन में से किसी को जूं के ज़रीए आज़माया जाता है यहां तक कि वोह उस नेक बन्दे को क़त्ल

कर देती है और किसी को फ़क्र व तंगदस्ती के ज़रीए आज़माया जाता है यहां तक कि वोह पहनने के लिये इबा या'नी चुगे के इलावा कोई लिबास नहीं पाता और इन में से बा'ज़ लोग आज़माइश पर इस क़दर खुश होते हैं जितना तुम अ़ता पर भी नहीं होते।'' (المستدرک، کتاب الایمان، رقم ۱۲۶، ج۱، ص۲۰۳)

(1748)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ह़लाल को ह़राम ठहरा लेना और माल को ज़ाएअ़ कर देना दुन्या से बे रग़बती नहीं, बल्कि दुन्या से बे रग़बती तो येह है कि तुम्हें अपने पास मौजूद माल से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ानों पर भरोसा हो और जब तुम्हें मुसीबत में मुब्तला किया जाए तो तुम उस के सवाब की वजह से उस मुसीबत के बाक़ी रहने में रग़बत करो।'' (ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الزھادۃ،...الخ، رقم ۲۳۴۷، ج۴، ص۱۵۲)

(1749)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है या उसे अपना दोस्त बनाने का इरादा फ़रमाता है तो उस पर आज़माइशों की बारिश फ़रमा देता है फिर जब वोह बन्दा अपने रब को पुकारता है, ''ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ!'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''मेरे बन्दे तू जो कुछ मुझ से मांगेगा मैं तुझे अ़ता फ़रमाऊंगा या तो जल्द ही तुझे दे दूंगा या उसे तेरी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा कर दूंगा।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۱۹، ج۴، ص۱۴۲)

(1750)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से रिवायत है कि मैं ने आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को मुसीबत में मुब्तला फ़रमाता है, अगर वोह बन्दा किसी ना पसन्दीदा रास्ते में हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस मुसीबत को उस के लिये कफ़्फ़ारा या त़हारत कर देता है जब तक वोह अपनी उस मुसीबत को ग़ैरुल्लाह की त़रफ़ से न समझे या जब तक वोह ग़ैरुल्लाह को (मा'बूद समझ कर) मुसीबत दूर करने के लिये न पुकारे।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۱۳، ج۴، ص۱۴۱)

(1751)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''क़ियामत के दिन जब मुसीबत ज़दा लोगों को सवाब दिया जाएगा तो दुन्या में आ़फ़िय्यत के साथ रहने वाले तमन्ना करेंगे कि ''काश! उन के जिस्मों को क़ैंचियों से काट दिया जाता।'' (ترمذی، کتاب الزھد، باب(۵۹)، رقم ۲۴۱۰، ج۴، ص۱۸۰)

(1752)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''क़ियामत के दिन शहीद को ला कर ह़िसाब के लिये खड़ा कर दिया जाएगा फिर स-दक़ा करने

वालों को लाया जाएगा और हिसाब के लिये रोक दिया जाएगा फिर मुसीबत ज़दा लोगों को लाया जाएगा और उन के लिये न तो मीज़ान नस्ब किया जाएगा और न ही उन का आ'माल नामा खोला जाएगा। फिर उन पर अज्र निछावर किया जाएगा तो मौक़िफ़ में मौजूद दुन्या में आफ़िय्यत के साथ रहने वाले लोग अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के दिये हुए इस सवाब को देख कर तमन्ना करेंगे कि "काश ! दुन्या में उन के जिस्म कैंचियों से काट दिये जाते।" (المعجم الکبیر، رقم ۱۲۸۲۹، ج ۱۲، ص ۱۴۱)

(1753)...... हज़रते सय्यिदुना महमूद बिन लुबैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "जब अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ किसी से महब्बत फ़रमाता है तो उसे आज़माइश में मुब्तला फ़रमाता है लिहाज़ा जो सब्र करे उस के लिये सब्र है और जो चीख़े चिल्लाए (या'नी बे सब्री करे) उस के लिये चीख़ना ही है।"

(مسند احمد بن حنبل، مسند محمود بن لبید، رقم ۲۳۶۹۵، ج ۹، ص ۱۶۰)

(1754)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया "बेशक ज़ियादा अज्र सख़्त आज़माइश पर ही है और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जब किसी क़ौम से महब्बत करता है तो उन्हें आज़माइश में मुब्तला कर देता है तो जो उस की क़ज़ा पर राज़ी हो उस के लिये रिज़ा है और जो नाराज़ हो उस के लिये ना राज़गी है।"

(ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب الصبر علی البلاء، رقم ۴۰۳۱، ج ۴، ص ۳۷۴)

(1755)...... हज़रते बुरैदा अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "मुसल्मान को जो मुसीबत पहुंचती है हत्ता कि कांटा भी चुभे तो उस की वजह से या तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस का कोई ऐसा गुनाह मिटा देता है जिस का मिटाना इसी मुसीबत पर मौक़ूफ़ था या उसे कोई बुज़ुर्गी अता फ़रमाता है कि बन्दा इस मुसीबत के इलावा किसी और ज़रीए से उस तक न पहुंच पाता।" (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۲۴، ج ۴، ص ۱۴۳)

(1756)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बेशक किसी बन्दे के लिये अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक कोई मरतबा होता है फिर अगर वोह किसी अ़मल के ज़रीए उस तक नहीं पहुंच पाता तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे आज़माइशों में मुब्तला करता रहता है यहां तक कि उस बन्दे को उस मर्तबे तक पहुंचा देता है।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر ...الخ، رقم ۲۸۹۷، ج ۴، ص ۲۴۸)

(1757)...... हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने दादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से, जो कि सहाबिये रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हैं, रिवायत करते हैं कि "जब बन्दे के लिये अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के पास कोई मर्तबा मुक़द्दर हो और वोह बन्दा किसी अ़मल के ज़रीए उस तक न पहुंच पाए तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उसे जिस्मानी या माली या औलाद की परेशानी में मुब्तला फ़रमा देता है फिर उसे उस पर सब्र की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाता है और उसे उस मर्तबे तक पहुंचा

देता है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के लिये मुक़द्दर होता है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ....الخ، رقم ۲۵، ج۴، ص۱۴۳)

(1758)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मोमिन और मोमिना को अपनी जान, औलाद और माल के ज़रीए आज़माया जाता रहेगा यहां तक कि वोह अल्लाह तआला से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस के ज़िम्मे कोई गुनाह न होगा।''

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الصبر علی البلاء، رقم ۲۴۰۷، ج۴، ص۱۷۹)

(1759)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबू रबाह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने मुझ से फ़रमाया कि ''क्या मैं तुम्हें अहले जन्नत में से कोई औ़रत न दिखाऊं ?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर दिखाइये।'' फ़रमाया ''येह ह़ब्शी औ़रत, जब येह नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास आई तो इस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे मिरगी का मरज़ है जिस की वजह से मेरा सित्र या'नी पर्दा खुल जाता है लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये दुआ़ कीजिये।''

रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर तुम चाहो तो सब्र करो और तुम्हारे लिये जन्नत है और अगर चाहो तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तुम्हारे लिये दुआ़ करूं कि वोह तुझे आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमा दे।'' तो इस ने अ़र्ज़ किया, ''मैं सब्र करूंगी।'' फिर अ़र्ज़ किया कि ''मेरा पर्दा खुल जाता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि मेरा पर्दा न खुला करे।'' फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस के लिये दुआ़ फ़रमाई।''

(صحیح بخاری، کتاب المرضی، باب فضل من یصرع من الریح، رقم ۵۶۵۲، ج۴، ص۶)

(1760)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक औ़रत ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुई। वोह जुनून के मरज़ में मुब्तला थी। उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मेरे लिये दुआ़ कीजिये।'' इर्शाद फ़रमाया, ''अगर तुम चाहो तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तुम्हारे लिये दुआ़ करूं कि वोह तुम्हें शिफ़ा दे और अगर तुम चाहो तो सब्र करो तो तुम पर कोई ह़िसाब न होगा।'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''बल्कि मैं सब्र करूंगी ताकि मुझ से ह़िसाब न लिया जाए।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر وثواب الامراض الخ، رقم ۲۸۹۸، ج۴، ص۲۴۸)

(1761)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक दरख़्त के पास तशरीफ़ लाए और उसे हिलाया यहां तक कि उस के इतने पत्ते गिर गए जितने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहे। फिर फ़रमाया, ''मुसीबतें और तक्लीफ़ें मेरे इस दरख़्त के पत्तों को गिराने से भी तेज़ी से आदमी के गुनाहों को गिरा देती हैं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۳۷، ج۴، ص۱۴۵)

(1762)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुसीबत अपने साहिब का चेहरा उस दिन चमकाएगी जिस दिन चेहरे सियाह होंगे।'' (المعجم الاوسط، رقم ۴۶۲۲، ج۳، ص۲۹۰)

(1763)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम में से किसी को मुसीबत में मुब्तला कर के आज़माता है जैसे तुम में से कोई अपने सोने को आग के ज़रीए आज़माता है तो जो उस आज़माइश में ख़ालिस सोने की तरह निकलता है येह वोह शख़्स है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शुबुहात से महफ़ूज़ रखा, और जो उस आज़माइश में कमतर सोने की मिस्ल निकलता है तो येह वोह शख़्स है जो शुबे में जा पड़ता है और जो इस आज़माइश में सियाह सोने की मिस्ल निकलता है येह वोही है जो आज़माइश में मुब्तला किया गया।'' (المعجم الکبیر، رقم ۷۶۹۸، ج۸، ص۱۲۶)

(1764)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को हुक्म देता है कि ''मेरे बन्दे की तरफ़ जाओ और उस पर ख़ूब मुसीबतें नाज़िल करो।'' तो वोह बन्दा (उस मुसीबत में भी) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द करता है। जब वोह फ़िरिश्ते वापस लौटते हैं और अर्ज़ करते हैं, ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम ने तेरे हुक्म के मुताबिक़ उस पर मुसीबतें ढा दीं।'' तो **अल्लाह** तआला फ़रमाता है कि ''दोबारा जाओ क्यूं कि मैं उस की आवाज़ सुनना पसन्द करता हूं।''
(المعجم الکبیر، رقم ۷۶۹۷، ج۸، ص۱۲۶)

(1765)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा रखा और लोगों पर ज़ाहिर न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فیمن صبر ... الخ، رقم ۱۷۸۷۲، ج۱۰، ص۴۵۰)

एक रिवायत में है कि ''मुसल्मान को थकावट, मरज़, रन्ज और ग़म में से जो मुसीबत पहुंचती है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है।''
एक रिवायत में है कि ''जिस मुसल्मान को कोई बीमारी, थकावट, या ग़म पहुंचता है वोह उस के गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाता है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ... الخ، رقم ۲۹، ج۴، ص۱۴۴)

(1766)...... हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡهَا फ़रमाती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, ''मुसल्मान को जो

मुसीबत पहुंचती है ह़त्ता कि कांटा भी चुभता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस की वजह से उस के गुनाह मिटा देता है।''
(صحیح البخاری، کتاب المرضی، باب کفارۃ المرض، رقم ۵۶۴۰،ج۴،ص۳)

एक रिवायत में है ''जिस मोमिन को कोई कांटा चुभता है या कोई बड़ी परेशानी लाह़िक़ होती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की वजह से उस के गुनाहों में कमी फ़रमा देता है।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب ثواب المؤمن...الخ، رقم ۲۵۷۲،ص۱۳۹۱)

दूसरी रिवायत में है कि ''उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता और एक गुनाह मिटा देता है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۳۴،ج۴،ص۱۴۵)

और एक रिवायत में है कि ''कुरैश के कुछ नौ जवान हंसते हुए उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बारगाह में हाज़िर हुए। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا उस वक़्त मिना में तशरीफ़ फ़रमा थीं। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने पूछा कि ''तुम क्यूं हंस रहे हो ?'' अ़र्ज़ किया, ''फ़ुलां शख़्स ख़ैमे की रस्सी में अटक कर गिर गया और उस की गरदन टूटते टूटते रह गई और आंख ज़ाएअ़ होते होते बची।'' आप رَضِیَ اللہُ عَنْھَا ने फ़रमाया कि ''मत हंसो ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस मुसल्मान को कोई कांटा चुभता है या कोई बड़ी मुसीबत पहुंचती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक द-रजा लिखता है और उस का एक गुनाह मिटा देता है।''
(صحیح بخاری، کتاب المرضی، باب کفارۃ المرض، رقم ۵۶۴۰،ج۴،ص۳)

(1767)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''मोमिन के जिस्म में जो तक्लीफ़ देने वाली चीज़ पहुंचती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के सबब उस बन्दे के गुनाह मिटा देता है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر...الخ، رقم ۳۱،ج۴،ص۱۴۴)

(1768)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास मौजूद था। एक त़बीब आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पीठ के एक फोड़े का इलाज कर रहा था जिस की वजह से आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ को तक्लीफ़ हो रही थी। मैं ने कहा, ''अगर हमारे किसी जवान को ऐसा फोड़ा निकलता तो हम इसे उस के लिये काफ़ी समझते।'' तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''मुझे इस तक्लीफ़ के न पहुंचने पर कोई ख़ुशी न होती क्यूं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''मुसल्मान को अपने जिस्म में जो तक्लीफ़ पहुंचती है वोह उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाती है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر...الخ، رقم ۳۱،ج۴،ص۱۴۴)

(1769)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल ड़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मुसल्मान को थकावट, मरज़, रन्ज और ग़म में से जो मुसीबत पहुंचती है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की वजह से उस के गुनाहों को मिटा देता है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۳۹،ج۴،ص۱۴۵)

(1770)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मोमिन की बीमारी उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।'' (المستدرک، کتاب الجنائز، باب لایزال البلاء، رقم ۱۳۲۲، ج۱، ص۶۶۷)

(1771)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि ''जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई

''**مَنۡ یَّعۡمَلۡ سُوۡٓءًا یُّجۡزَ بِہٖ**'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।'' (پ۵،النساء:۱۲۳)

तो मुसल्मान ग़मज़दा हो गए। इस पर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अपने आ'माल में मियाना रवी इख़्तियार करो क्यूं कि मुसल्मान को जो भी पहुंचता है वोह उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है यहां तक कि वोह मुसीबत जो उसे पहुंचती है या वोह कांटा जो उसे चुभता है वोह भी उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता है।'' (صحیح مسلم کتاب البر والصلۃ، باب ثواب مومن فیما یصیبہ من مرض....الخ، رقم ۲۵۷۴-۱۳۹۲)
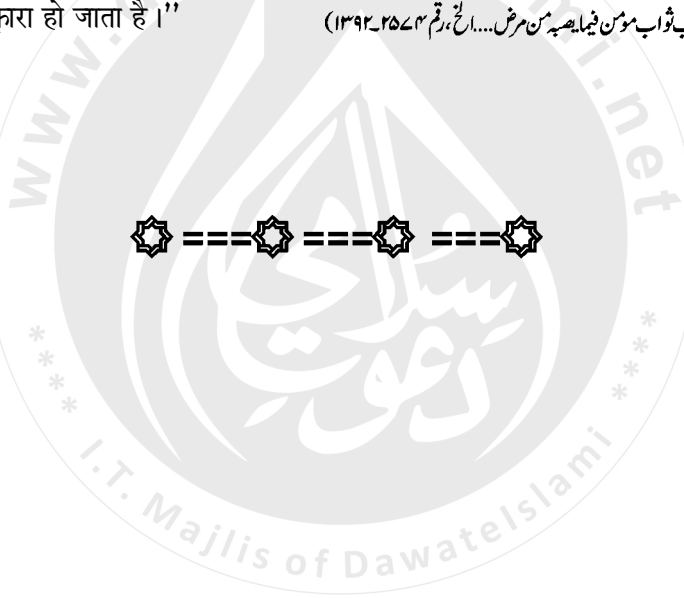
बीमारी का सवाब

(1772)...... हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब मोमिन बीमार होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे गुनाहों से ऐसा पाक कर देता है जैसे भट्टी लोहे के ज़ंग को साफ़ कर देती है।''

(الترغیب الترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۴۲، ج۴، ص ۱۴۶)

(1773)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि ''क्या तुम पसन्द करते हो कि बीमार न पड़ो ?'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम आ़फ़िय्यत को ज़रूर पसन्द करते हैं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम्हारे लिये इस में क्या भलाई है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें याद न करे।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۴۵، ج۴، ص ۱۴۶)

(1774)...... हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जब मोमिन की नस चढ़ जाती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का एक गुनाह मिटा देता है, उस के लिये एक नेकी लिखता है और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाता है।''

(المعجم الاوسط، رقم ۲۴۶۰، ج۲، ص ۴۸)

(1775)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब बन्दा बीमार होता है या सफ़र करता है तो जो अ़मल वोह तन्दुरुस्ती और इक़ामत की ह़ालत में करता है वोह अ़मल भी उस के लिये लिखा जाता है।''

(صحیح بخاری، کتاب الجھاد، باب یکتب للمسافر مثل ما کان، رقم ۲۹۹۶، ج۲، ص ۳۰۸)

(1776)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब कोई बन्दा किसी मरज़ में मुब्तला होता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों को हुक्म देता है कि ''येह जो बुराई करे उसे न लिखो और जो नेकी करे उस के इ़वज़ दस नेकियां लिखो और इस के उस नेक अ़मल को भी लिखो जो येह तन्दुरुस्ती की ह़ालत में किया करता था अगर्चे बीमारी के दौरान वोह उस अ़मल को न कर सके।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب ما یجری علی المریض، رقم ۳۸۱۳، ج۳، ص ۳۳)

(1777)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब किसी को कोई जिस्मानी तक्लीफ़ पहुंचती है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के मुहाफ़िज़ फ़िरिश्तों को हुक्म देता है कि ''जब तक मेरा येह बन्दा इस तक्लीफ़ में है इस के लिये हर दिन और रात में वोह अ़मल भी लिखो जो येह तन्दुरुस्ती में किया करता था।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب فی الصبر ....الخ، رقم ۴۸، ج۴، ص۱۴۷)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब बन्दा कोई इ़बादत करता हो फिर बीमार हो जाए तो उस के मुअक्कल फ़िरिश्ते से कहा जाता है कि जो अ़मल येह तन्दुरुस्ती की ह़ालत में किया करता था इस के लिये वोही लिखो यहां तक कि मैं इसे सिह़्ह़त बख़्शूं या अपने पास बुला लूं।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ....الخ رقم ۴۹، ج۴، ص۱۴۷)

(1778)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ किसी मुसल्मान को जिस्मानी तक्लीफ़ में मुब्तला करता है तो फ़िरिश्ते से फ़रमाता है, ''जो नेक अ़मल येह तन्दुरुस्ती की ह़ालत में किया करता था इस के लिये वोही लिखो।'' फिर अगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाता है तो उसे धो कर पाक फ़रमा देता है और अगर उस की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमा लेता है तो उस की मग़्फ़िरत फ़रमा कर उस पर रह़मतें निछावर फ़रमाता है।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک بن النضر، رقم ۱۲۵۰۵، ج۴، ص۲۹۷)

(1779)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ह़ुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मोमिन पर तअ़ज्जुब है कि वोह बीमारी से डरता है, अगर वोह जान लेता कि बीमारी में उस के लिये क्या है ? तो सारी ज़िन्दगी बीमार रहना पसन्द करता।'' फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना सर आस्मान की त़रफ़ उठाया और मुस्कुराने लगे। अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर तबस्सुम क्यूं फ़रमाया ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''मैं दो फ़िरिश्तों पर ह़ैरान हूं कि वोह दोनों एक बन्दे को एक मस्जिद में तलाश कर रहे थे जिस में वोह नमाज़ पढ़ा करता था, जब उन्हों ने उसे न पाया तो लौट गए और अ़र्ज़ किया, ''या रब عَزَّ وَجَلَّ ! हम तेरे फ़ुलां बन्दे के दिन और रात में किये हुए आ'माल लिखते थे फिर हम ने देखा कि तूने उसे आज़माइश में मुब्तला फ़रमा दिया।'' तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है कि ''मेरा बन्दा दिन और रात में जो अ़मल किया करता था उस के लिये वोह अ़मल लिखो और उस के अज्र में कमी न करो, जब तक वोह मेरी त़रफ़ से आज़माइश में है उस का सवाब मेरे ज़िम्मए करम पर है और जो आ'माल वोह किया करता था उस के लिये उन का भी सवाब है।'' (المعجم الاوسط، رقم ۲۳۱۷، ج۲، ص۱۱)

(1780)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अश्अ़स सनआ़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि, ''मैं एक मरतबा सुब्ह़ सवेरे जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ की त़रफ़ गया तो मेरी मुलाक़ात ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद

बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ हुई, ह़ज़रते सुनाबिही رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी उन के साथ थे। मैं ने पूछा कि "आप कहां का इरादा रखते हैं?" उन्हों ने जवाब दिया, "हम अपने एक बीमार भाई की इ़यादत करने जा रहे हैं।" मैं भी उन दोनों के साथ चल दिया। जब हम उस शख़्स के पास पहुंचे तो उन दोनों ने उस से पूछा कि "दिन कैसा गुज़रा?" उस ने जवाब दिया कि "ने'मत में गुज़रा।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि "तुझे गुनाहों के कफ़्फ़ारे और गुनाहों के मिट जाने की खुश ख़बरी हो कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि **अल्लाह** तआला फ़रमाता है, "जब मैं अपने बन्दों में से किसी मोमिन बन्दे को मुसीबत में मुब्तला करूं और वोह उस मुसीबत पर मेरा शुक्र अदा करे तो (ऐ फ़िरिश्तो) उस के लिये वोही अज्र लिखा करो जो तुम उस की तन्दुरुस्ती की ह़ालत में लिखा करते थे।" (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۵۳، ج۴، ص۱۴۸)

(1781)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا फ़रमाती हैं एक शख़्स ने येह आयते करीमा पढ़ी :

مَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا یُّجْزَ بِهٖ (پ۵، النساء:۱۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।

और कहा कि "अगर हमें हर हर अ़मल का बदला मिलेगा फिर तो हम हलाक हो जाएंगे।" जब येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंची तो फ़रमाया कि "हां! दुन्या ही में उस का बदला तक्लीफ़ देह जिस्मानी बीमारी के ज़रीए से दिया जाएगा।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی الصبر ....الخ، رقم ۲۹۱۲، ج۴، ص۲۵۴)

(1782)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने बारगाहे न-बवी में अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस आयते करीमा के बा'द हम किसी अज्र की उम्मीद रखें?" जब कि हमें अपने हर अ़मल का बदला दिया जाएगा।

لَیْسَ بِاَمَانِیِّکُمْ وَلَآ اَمَانِیِّ اَهْلِ الْکِتٰبِ ؕ مَنْ یَّعْمَلْ سُوْٓءًا یُّجْزَ بِهٖ (پ۵، النساء:۱۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : काम न कुछ तुम्हारे ख़यालों पर है और न किताब वालों की हवस पर जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "अबू बक्र! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए, क्या तुम बीमार नहीं होते? क्या तुम तंगदस्ती में मुब्तला नहीं होते?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "क्यूं नहीं?" फ़रमाया कि "येही वोह जज़ा है जो तुम्हें दी जाती है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۶۰، ج۴، ص۱۴۹)

(1783)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला फ़रमाता है, "जब मैं अपने किसी मोमिन बन्दे को बीमारी में मुब्तला करूं और वोह अपनी इ़यादत के लिये आने वालों से मेरी शिकायत न करे तो मैं

उसे आज़माइश से छुटकारा दे देता हूं, उस के गोश्त को बेहतर गोश्त से बदल देता हूं, उस के ख़ून को बेहतर ख़ून से बदल देता हूं फिर वोह नए सिरे से अ़मल शुरूअ़ करता है।''

(مستدرک، کتاب الجنائز، باب المریض یکتب لہ من الخیر، رقم ۱۳۳۰، ج۱، ص ۶۷۰)

(1784)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जब कोई बन्दा बीमार होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ दो फ़िरिश्ते भेजता है और उन से फ़रमाता है, ''देखो येह अपनी इयादत करने वालों से क्या कहता है?'' फिर अगर वोह मरीज़ अपनी इयादत के लिये आने वालों की मौजू-दगी में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना बयान करे तो वोह फ़िरिश्ते उस की येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ कर देते हैं ह़ालां कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा जानने वाला है। **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है, ''मेरे बन्दे का मुझ पर ह़क़ है कि मैं उसे जन्नत में दाख़िल करूं और अगर उसे शिफ़ा दूं तो उस के गोश्त को बेहतर गोश्त से बदल दूं और उस के गुनाह मिटा दूं।''

(موطا امام مالک، کتاب العین، باب فی اجر المریض، رقم ۱۷۹۸، ج۲، ص ۴۳۰-۴۲۹)

(1785)...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक मोमिन जब किसी बीमारी में मुब्तला हो फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज़ से शिफ़ा दे दे तो येह बीमारी उस के पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा और मुस्तक़्बिल में उस के लिये नसीह़त हो जाती है और मुनाफ़िक़ जब बीमार हो फिर उसे आ़फ़िय्यत मिले तो वोह उस ऊंट की त़रह़ होता है जिसे उस के मालिक ने बांध कर खोल दिया हो कि वोह नहीं जानता कि उसे क्यूं बांधा गया और क्यूं छोड़ा गया।'' मज्मअ़ (अहले मजलिस) में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह बीमारियां क्या होती हैं ? ख़ुदा की क़सम ! मैं तो कभी बीमार नहीं हुवा।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''हम से दूर हो जा, तू हम में से नहीं या'नी हमारे त़रीक़े पर नहीं।''

(ابوداود، کتاب الجنائز، باب الامراض المکفرۃ للذنوب، رقم ۳۰۸۹، ج۳، ص ۲۴۵)

(1786)...... ह़ज़रते सय्यिदुना असद बिन कुर्ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मरीज़ के गुनाह इस त़रह़ झड़ते हैं जैसे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۵۶، ج۴، ص ۱۴۸)

(1787)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे अ़लाअ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا जो कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फूफी और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बैअ़त करने वाली औ़रतों में से हैं, फ़रमाती हैं कि ''जब मैं बीमार हुई तो मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी इयादत फ़रमाई और मुझ से फ़रमाया कि ''ऐ उम्मे अ़लाअ ! ख़ुश ख़बरी सुन ले कि मुसल्मान की बीमारी उस से गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देती है जैसे आग लोहे और चांदी के मैल को दूर कर देती है।''

(ابوداود، کتاب الجنائز، باب عیادۃ النساء، رقم ۳۰۹۲، ج۳، ص ۲۴۶)

(1788)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जब कोई मोमिन मर्द या मोमिन औ़रत, मुसल्मान मर्द या मुसल्मान औ़रत बीमार होती है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस मरज़ की वजह से उस के गुनाह मिटा देता है।'' (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۱۴۷۳۱، ج ۵، ص ۱۱۴)

एक रिवायत में है कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस मरज़ की वजह से उस के गुनाह इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ दरख़्त से पत्ते गिरते हैं।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۵۵، ج ۴، ص ۱۴۸)

(1789)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''जब कोई मुसल्मान किसी बीमारी या मुसीबत में मुब्तला होता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के गुनाह इस त़रह़ मिटाता है जिस त़रह़ दरख़्त अपने पत्ते गिरा देता है।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب ثواب المؤمن...الخ، رقم ۲۵۷۱، ص ۱۳۹۰)

(1790)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''मोमिन की बीमारी उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।'' (مستدرک، کتاب الجنائز، باب لایزال البلاء...الخ، رقم ۱۳۲۲، ج ۱، ص ۶۶۷)

(1791)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने बन्दे को बीमारी में मुब्तला फ़रमाता रहता है यहां तक कि उस का हर गुनाह मिटा देता है।'' (مستدرک، کتاب الجنائز، باب لایزال البلاء...الخ، رقم ۱۳۲۶، ج ۱، ص ۶۶۹)

(1792)...... हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने में एक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो किसी ने कहा, ''येह कितना ख़ुश नसीब है कि बीमारी में मुब्तला हुए बिग़ैर ही मर गया।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुझ पर अफ़्सोस है ! क्या तुम्हें नहीं मा'लूम कि अगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इसे किसी बीमारी में मुब्तला फ़रमाता तो इस के गुनाह मिटा देता।''

(موطاء امام مالک، کتاب العین، باب فی اجر المرض، رقم ۱۸۰۱، ج ۲، ص ۴۳۰)

(1793)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो बन्दा किसी मरज़ में मुब्तला होगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे उस बीमारी से पाक कर के उठाएगा।'' (المعجم الکبیر، رقم ۷۴۸۵، ج ۸، ص ۹۷)

(1794)...... हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार में से एक शख़्स की इयादत फ़रमाई तो उस की मिज़ाज पुरसी करने लगे तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने सात रातों से आंख नहीं झपकी और न ही कोई मुझ से मिलने के लिये आया है।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''ऐ मेरे भाई ! सब्र करो, ऐ मेरे भाई सब्र करो, तुम अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाओगे जैसे इन में दाख़िल होते वक़्त थे।'' फिर इर्शाद फ़रमाया कि ''बीमारी की साअ़तें गुनाहों की साअ़तों को ले जाती हैं।'' (شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی ذکر مافی الاوجاع...الخ، رقم ۹۹۲۵، ج۷، ص۱۸۱)

बुख़ार का सवाब

यूं तो पिछले बाब की तमाम अहादीस में बुख़ार का सवाब भी शामिल है मगर दर्जे ज़ैल अहादीस में ख़ास तौर पर बुख़ार का ज़िक्र कर के इस का सवाब बयान किया गया है लिहाज़ा ! इन अहादीस को अलग बयान किया गया है।

(1795)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उम्मे साइब के पास तशरीफ़ लाए तो उन से पूछा, "तुम्हें क्या हुवा ? क्यूं कांप रही हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "मुझे बुख़ार है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस में ब-र-कत न दे।" तो इर्शाद फ़रमाया कि "बुख़ार को बुरा न कहो क्यूं कि येह आदमी के गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देता है जिस त़रह़ भट्टी लोहे के ज़ंग को दूर कर देती है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب ثواب المومن، رقم ۲۵۷۵، ص ۱۳۹۲)

(1796)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और जब मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को छुवा तो अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप को तो बहुत तेज़ बुख़ार है ?" फ़रमाया, "हां ! मुझे तुम्हारे दो मर्दों के बराबर बुख़ार होता है।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "क्या येह इस लिये कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये दुगना सवाब होता है ?" इर्शाद फ़रमाया, "हां।" फिर फ़रमाया, "जिस मुसलमान को कोई जिस्मानी बीमारी या कोई और मुसीबत पहुंचती है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह इस त़रह़ मिटा देता है जिस त़रह़ दरख़्त अपने पत्तों को गिरा देता है।"

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب ثواب المومن...الخ، رقم ۲۵۷۱، ص ۱۳۹۰)

(1797)...... हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बुख़ार ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी की इजाज़त चाही तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "कौन है ?" उस ने अ़र्ज़ किया, "मैं बुख़ार हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अहले क़ुबा की त़रफ़ जाने का हुक्म दिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है कि उन में से कितने लोग बुख़ार में मुब्तला हुए। फिर जब उन लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर बुख़ार की शिकायत की तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तुम्हें क्या चाहिये ? अगर तुम चाहो तो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करूं कि वोह तुम से बुख़ार को दूर फ़रमा दे और अगर चाहो तो येह तुम्हारे लिये पाकीज़गी का ज़रीआ़ बन जाए।" उन लोगों ने अ़र्ज़ किया, "क्या येह ऐसा कर सकता है ?" फ़रमाया, "हां।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "फिर इसे रहने दीजिये।"

एक रिवायत में है कि जब उन लोगों ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बुख़ार का शिक्वा किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करूं कि वोह इसे तुम से दूर फ़रमा दे, और अगर तुम चाहो तो इसे रहने दो येह तुम्हारे बक़िय्या गुनाह झाड़ देगा ?" उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह ! फिर इसे रहने दें।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۸۱، ج ۴، ص ۱۵۳)

(1798)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बन्दए मोमिन को जब लू लगती है या बुख़ार होता है तो उस की मिसाल उस लोहे की त़रह़ होती है जिसे आग में डाला गया तो आग ने उस का ज़ंग दूर कर दिया और अच्छाई बाक़ी रखी।"

(المستدرک، کتاب معرفۃ الصحابہ، ذکر مناقب عبدالرحمٰن، رقم ۵۸۸۰، ج ۴، ص ۵۳۶)

(1799)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना फ़ात़िमा ख़ुज़ाइय्यह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार की एक औ़रत की इ़यादत फ़रमाई और उस से पूछा कि "कैसा मह़सूस कर रही हो ?" तो उस ने अ़र्ज़ किया, "बेहतर ! मगर इस बुख़ार ने मुझे थका दिया है।" तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "सब्र करो क्यूं कि बुख़ार आदमी के गुनाहों को इस त़रह़ दूर कर देता है जिस त़रह़ भट्टी लोहे के ज़ंग को दूर कर देती है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر، رقم ۷۷، ج ۴، ص ۱۵۲)

(1800)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उमैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि मैं ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से इन आयात के बारे में पूछा,

وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِیْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ۝ (پ۳، البقرۃ ۲۸۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या छुपाओ, **अल्लाह** तुम से उस का ह़िसाब लेगा तो जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ादिर है।

और......

مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ (پ۵، النساء: ۱۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो बुराई करेगा उस का बदला पाएगा।

तो उम्मुल मुअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि "जब से मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह सुवाल किया है मुझ से किसी ने इस के बारे में नहीं पूछा, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सुवाल के जवाब में फ़रमाया था कि "ऐ आइशा ! येह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का बन्दे से मुबा-यआ (या'नी मुआ-हदा) है उसे जो बुख़ार हो, मुसीबत पहुंचे या कांटा चुभे यहां तक कि वोह जो पूंजी अपनी पोटली में रखे और उसे न पाए तो उस के लिये बेचैन हो जाए फिर उसे अपने पहलू में पा ले, यहां तक कि मोमिन अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे सुर्ख़ सोना भट्टी से निकलता है।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترھیب فی الصبر، رقم ۶۱، ج ۴، ص ۱۴۹)

(1801)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! बुख़ार का सवाब क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया, "जब तक बुख़ार में मुब्तला शख़्स के क़दम में दर्द रहता है और उस की रग फड़क्ती रहती है उसे इस के इवज़ नेकियां मिलती रहती हैं।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दुआ की, "ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मैं तुझ से ऐसे बुख़ार का सुवाल करता हूं जो मुझे तेरी राह में जिहाद करने, तेरे घर और तेरे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मस्जिद शरीफ़ की त़रफ़ जाने से न रोके।" इस के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रोज़ाना शाम के वक़्त बुख़ार हो जाया करता था।

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ رقم ۸۲، ج ۴، ص ۱۵۳)

(1802)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक मुसल्मान ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम जिन बीमारियों में मुब्तला होते हैं हमारे लिये उन में क्या है ?" इर्शाद फ़रमाया, "येह गुनाहों के कफ़्फ़ारे हैं।" ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर्चे बीमारी कम ही हो ?" फ़रमाया, "अगर्चे कांटा चुभे या कोई और तक्लीफ़ पहुंचे।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने लिये दुआ की, कि मरते दम तक बुख़ार इन से जुदा न हो और येह बुख़ार उन्हें ह़ज, उ़म्रह, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में जिहाद और फ़र्ज़ नमाज़े बा जमाअ़त अदा करने से न रोके। फिर उन के विसाल तक जो भी उन्हें छूता बुख़ार की तपिश मह़सूस करता।" (مسند احمد بن حنبل، مسند ابوسعید الخدری، رقم ۱۱۱۸۳، ج ۴، ص ۴۸)

(1803)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब कोई बन्दा या बन्दी मुसल्सल बुख़ार या सर दर्द में मुब्तला हो और उस पर उहुद पहाड़ की मिस्ल गुनाह हों तो जब वोह बीमारी उस से जुदा होती है तो उन के सर पर राई के दाने बराबर भी गुनाह नहीं होते।"

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۶۷، ج ۴، ص ۱۵۱)

(1804)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जो मुसल्मान बुख़ार और दर्दे सर में मुब्तला हुवा और उस

के सर पर उहुद पहाड़ से ज़ियादा गुनाह हों जब येह उसे छोड़ते हैं तो उस के सर पर राई के दाने बराबर गुनाह नहीं होते।''
(مسند احمد بن حنبل، مسند ابو ذر، رقم ۲۱۷۹۵، ج۸، ص۱۷۲)

(1805)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ''जो एक रात बुख़ार में मुब्तला हुवा और इस पर सब्र करे और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से राज़ी रहे तो अपने गुनाहों से ऐसे निकल जाता है जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था।''
(شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی ذکر...الخ، رقم ۹۸۶۸، ج۷، ص۱۶۷)

(1806)...... हज़रते सय्यिदुना अबू रैहाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बुख़ार जहन्नम के जोश से है और येह मोमिन का जहन्नम से हिस्सा है।''
(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۸۳، ص ج۴، ص۱۵۴)

(1807)...... हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बुख़ार हर मोमिन का जहन्नम से हिस्सा है।''
(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۸۵، ص ج۴، ص۱۵۴)

(1808)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बुख़ार जहन्नम की भट्टी है लिहाज़ा इस में से जितनी मिक़्दार मोमिन को पहुंची वोह उस का जहन्नम से हिस्सा होता है।''
(مسند احمد بن حنبل، مسند ابو امامہ، رقم ۲۲۲۲۷، ج۸، ص۲۷۵)

(1809)...... हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان एक रात के बुख़ार को पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा समझते थे।
(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۷۸، ج۴، ص۱۵۳)

हज़रते सय्यिदुना हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ एक रात के बुख़ार के सबब मोमिन के पिछले तमाम गुनाह मिटा देता है।''
(ایضاً)

===
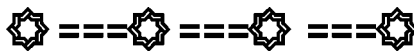
सर दर्द का सवाब

(1810)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मोमिन का दर्दे सर और वोह कांटा जो उसे चुभता है या उसे जो चीज़ तक्लीफ़ देती है उस के इवज़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ क़ियामत के दिन उस का द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा और उस के गुनाह मिटा देगा।''

(شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، رقم ۹۸۷۵، ج۷، ص۱۶۸)

(1811)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में सर दर्द में मुब्तला हो फिर उस पर सब्र करे तो उस के पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।'' (مسند البزار، رقم ۲۴۳۷، ج۶، ص۴۱۳)

(1812)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जब कोई मर्द या औ़रत बुख़ार या सर दर्द में मुब्तला हो और उस पर उहुद पहाड़ की मिस्ल गुनाह हों तो जब वोह बीमारी उसे छोड़ती है तो उस के सर पर राई के दाने के बराबर गुनाह नहीं होते।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۶۷، ج۴، ص۱۵۱)

गुज़श्ता सफ़ह़ात में ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ की येह रिवायत गुज़र चुकी कि ''जो मुसल्मान बुख़ार और दर्दे सर में मुब्तला हुवा और उस के सर पर उहुद से ज़ियादा गुनाह हों जब वोह उसे छोड़ते हैं तो उस के सर पर राई के दाने के बराबर भी गुनाह नहीं होते।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی الدرداء، رقم ۲۱۷۹۵، ج۸، ص۱۷۲)

۞ ===۞ ===۞ ===۞

नाबीना का सवाब

(1813)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जब मैं अपने बन्दे को आंखों के मुआ-मले में आज़्माऊं फिर वोह सब्र करे तो मैं उस की आंखों के इ़वज़ उसे जन्नत अ़ता फ़रमाऊंगा।'' (صحیح البخاری، کتاب المرضی، باب فضل من ذھب بصرہ، رقم ۵۶۵۳، ج۴، ص۶)

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''जब मैं अपने बन्दे की आंखें दुन्या में ले लूं तो जन्नत के इ़लावा कोई चीज़ उस का बदला न होगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۸۶، ص ج۴، ص ۱۵۴)

एक रिवायत में है कि ''मैं जिस की आंखें ले लूं फिर वोह इस पर सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखे तो मैं उस के लिये जन्नत के इ़लावा किसी सवाब पर राज़ी न होउंगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۸۷، ص ج۴، ص ۱۵۴)

(1814)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की आंखें ले लेता है और वोह बन्दा इस पर सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر ...الخ، رقم ۲۹۲۱، ج۴، ص ۲۵۷)

(1815)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इ़रबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रब عَزَّوَجَلَّ से रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''अगर मैं अपने किसी बन्दे से उस की आंखें ले लूं ह़ालां कि वोह आंखें उसे मह़बूब हैं तो मैं उस के लिये जन्नत से कम किसी सवाब पर राज़ी न होउंगा जब कि वोह आंखों के चले जाने पर भी मेरा शुक्र अदा करे।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر، رقم ۲۹۲۰، ج۴، ص ۲۵۶)

(1816)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फरमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है ''जब मैं अपने किसी बन्दे की दोनों आंखें ले लूं और वोह इस पर सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखे तो मैं उस के लिये जन्नत से कम किसी सवाब पर राज़ी नहीं होउंगा।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی الصبر، رقم ۲۹۱۹، ج۴، ص ۲۵۶)

(1817)...... हज़रते सय्यि-दतुना आइशा बिन्ते कुदामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہا फ़रमाती हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की रहमत से बईद है कि वोह बन्दे की आंखें ले ले और फिर उसे जहन्नम में दाखिल फ़रमाए।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند عائشۃ بنت قدامۃ، رقم ۲۷۱۳۱، ج۱۰، ص۳۰۱)

(1818)...... हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आकाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बन्दे के लिये शिर्क से बढ़ कर कोई मुसीबत नहीं और इस के बा'द सब से बड़ी मुसीबत आंखों का चला जाना है और जिस की आंखें चली गईं और उस ने इस पर सब्र किया तो अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा'' (الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب الترغیب فی الصبر ...الخ، رقم ۹۳ص ج۴، ص۱۵۵)

एक रिवायत में है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बन्दा अपने दीन के चले जाने के बा'द आंखों की बीनाई जाते रहने से बढ़ कर किसी मुसीबत में मुब्तला नहीं हुवा और जिस की आज़माइश बीनाई से महरूमी के ज़रीए हो और वोह अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से मिलने तक इस पर सब्र करे तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से मिलते वक्त उस पर कोई हिसाब न होगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجنائز، باب فی الصبر، رقم ۹۲، ج۴، ص۱۵۵)

(1819)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जिस की बीनाई ले ले और वोह इस पर सब्र करे और अज्र की उम्मीद रखे तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस बन्दे की आंखों को जहन्नम न दिखाए।'' (المعجم الاوسط، رقم ۲۱۵۶، ج۴، ص۳۳۴)

(1820)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ जिब्रईल ! मैं जिस बन्दे की आंखें ले लूं तो उस का सवाब मेरा दीदार और मेरे घर (या'नी जन्नत) में रहना है।''

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''मैं ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने रोते हुए और बीनाई चले जाने की तमन्ना करते हुए देखा।'' (المعجم الاوسط، رقم ۸۸۵۵، ج۶، ص۳۰۴)

रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाने का सवाब

इस बारे में आयाते मुक़द्दसा :

(1) وَمَایَفْعَلُوْا مِنْ خَیْرٍ فَلَنْ یُّکْفَرُوْہُ ط (پ۴،آل عمران:۱۱۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोह जो भलाई करें उन का हक़ न मारा जाएगा।

(2) وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِکُمْ مِّنْ خَیْرٍ تَجِدُوْہُ عِنْدَاللّٰہِ ھُوَخَیْرًاوَّاَعْظَمَ اَجْرًا(پ۲۹،المزمل:۲۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और अपने लिये जो भलाई आगे भेजोगे उसे **अल्लाह** के पास बेहतर और बड़े सवाब की पाओगे।

(3) فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ خَیْرًا یَّرَہٗ ۰ وَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ شَرًّا یَّرَہٗ ۰(پ۳۰،الزلزال:۷،۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तो जो एक ज़र्रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़र्रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(1821)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आदमी को तीन सो साठ जोड़ों पर पैदा किया गया है लिहाज़ा जिस ने तीन सो साठ मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَرُ ,لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ ,سُبْحَانَ اللّٰہِ और اَسْتَغْفِرُاللّٰہَ कहा और मुसल्मानों के रास्ते से पथ्थर, कांटा या हड्डी हटा दी और नेकी का हुक्म दिया और बुराई से मन्अ़ किया वोह उस दिन इस ह़ाल में शाम करेगा कि जहन्नम से आज़ाद होगा।''

(صحیح مسلم،کتاب الزکاۃ،باب اسم الصدقۃ یقع علی الخ،رقم ۱۰۰۷،ص۵۰۳)

(1822)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आदमी के हर जोड़ पर रोज़ाना एक स-दक़ा है। दो आदमियों के दरमियान अ़द्ल करना स-दक़ा है, आदमी का किसी को अपनी सुवारी पर सुवार कर लेना या किसी का सामान अपनी सुवारी पर लाद लेना या किसी शख़्स को सुवारी पर सुवार होने में मदद देना स-दक़ा है उस का सामान सुवारी पर रखना स-दक़ा है, अच्छी बात कहना स-दक़ा है, नमाज़ के लिये चलने में हर क़दम पर स-दक़ा है और रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा देना स-दक़ा है।''

(مسلم،کتاب زکوۃ،بیان ان اسم صدقۃ یقع علی کل نوع من المعروف،رقم ۱۰۰۹،ص۵۰۴)

(1823)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''इन्सान के तीन सो साठ जोड़ हैं और उस पर हर हर जोड़ का स-दक़ा देना लाज़िम है।'' सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस की इस्तित़ाअ़त कौन रख सकता है ?'' फ़रमाया कि ''मस्जिद में पड़े हुए थूक को दफ़्न कर देना और वोह चीज़ जिसे तुम रास्ते से हटा दो स-दक़ा

है अगर तुम इस की भी इस्तिताअत न रखो तो चाश्त की दो रक्अतें अदा कर लिया करो वोह तुम्हारी त़रफ़ से किफ़ायत करेंगी।''
(مسند احمد بن حنبل، مسند بریدہ اسلمی، رقم ۲۳۰۹۹، ج۹، ص۳۰)

(1824)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''ईमान की साठ या सत्तर से ज़ाइद शाखे़ं हैं इन में सब से बुलन्द शाख़ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहना है और सब से निचली शाख़ रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटा देना है।''
(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان عدد شعب الایمان، رقم ۳۵، ص ۳۹)

(1825)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''मुझ पर मेरी उम्मत के अच्छे बुरे आ'माल पेश किये गए तो मैं ने अच्छे आ'माल में रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाना भी पाया और बुरे आ'माल में मस्जिद में पड़े हुए थूक को भी पाया जिसे दफ़्न न किया गया।''
(صحیح مسلم، کتاب المساجد، باب النھی عن البصاق فی المسجد، رقم ۵۵۳، ص ۲۷۹)

(1826)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इन्सान के हर जोड़ पर रोज़ाना एक स-दक़ा है।'' एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें जो कुछ बयान फ़रमाया है येह उन में से सब से सख़्त बात है।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''तेरा नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना स-दक़ा है और तेरा कमज़ोर को अपनी सुवारी पर बिठा लेना स-दक़ा है और तेरा रास्ते से गन्दगी हटा देना स-दक़ा है और तेरे लिये नमाज़ के लिये चलने में हर क़दम पर स-दक़ा है।''
(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی اماطۃ الاذی عن الطریق، رقم ۶، ج ۳، ص ۳۷۷)

(1827)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने मुसल्मानों के रास्ते से ईज़ा पहुंचाने वाली चीज़ हटा दी उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और जिस के लिये अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के पास एक नेकी लिखी जाए तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस नेकी के सबब उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा देगा।
(المعجم الاوسط، رقم ۳۲، ج۱، ص۱۹)

(1828)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''हर उस दिन में जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है आदमी पर एक स-दक़ा है।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे पास माल कहां है कि हम स-दक़ा करें ?'' इर्शाद फ़रमाया, ''भलाई के दरवाज़े बहुत ज़ियादा हैं। سُبْحٰنَ اللّٰه, اَلْحَمْدُ لِلّٰه, لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه, اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहना, नेकी का हुक्म देना, बुराई से मन्अ़ करना, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटा देना, बहरे से बुलन्द आवाज़ के साथ गुफ़्त-गू करना, अन्धे को रास्ता बताना और ह़ाजत मन्द की मदद करना, येह सब कुछ तुम्हारी त़रफ़ से अपनी जान पर स-दक़ा हैं।''
(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب زکوۃ، باب ما یکون لہ حکم الصدقۃ، رقم ۳۳۶۸، ج۵، ص ۱۶۰)

एक रिवायत में है कि ''तुम्हारा अपने भाई के सामने मुस्कुराना स-दक़ा है और तुम्हारा रास्ते से पथ्थर, कांटा या हड्डी हटा देना स-दक़ा है। और गुमराही की सर ज़मीन पर किसी को हिदायत देना तुम्हारे लिये स-दक़ा है।'' (جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی صنائع المعروف، رقم ۱۹۶۳، ج۳، ص۳۸۴)

(1829)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''एक शख़्स किसी रास्ते से गुज़र रहा था, उस ने उस रास्ते पर एक कांटेदार शाख़ को पाया तो उसे रास्ते से हटा दिया, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को उस शख़्स का येह अ़मल पसन्द आया और उस बन्दे की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।''

एक रिवायत में है कि ''एक शख़्स रास्ते के बीच में पड़ी हुई दरख़्त की शाख़ के क़रीब से गुज़रा तो उस ने कहा, ''ख़ुदा की क़सम ! मैं मुसल्मानों के रास्ते से इसे ज़रूर हटा दूंगा ताकि वोह इन्हें तक्लीफ़ न पहुंचाए।'' तो उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया गया।''

एक रिवायत में है कि ''मैं ने एक शख़्स को जन्नत में एक दरख़्त में तसर्रुफ़ करते हुए देखा जिसे उस ने रास्ते के बीच से इस लिये काट दिया था कि वोह मुसल्मानों को ईज़ा दे रहा था।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل ازالۃ...الخ، رقم ۱۹۱۴، ص۱۴۱۰)

एक रिवायत में है कि ''एक शख़्स जिस ने कभी कोई नेक अ़मल नहीं किया था रास्ते से कांटेदार शाख़ को हटा दिया या वोह किसी दरख़्त की शाख़ थी तो उस ने उसे काट दिया या फिर वोह रास्ते में पड़ी हुई थी और उस ने उसे रास्ते से हटा दिया तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को उस का येह अ़मल पसन्द आया और उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।'' (ابوداؤد، کتاب الادب، باب فی اماطۃ الاذی عن الطریق، رقم ۵۲۴۵، ج۴، ص۴۶۲)

(1830)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रास्ते में पड़ा हुवा एक दरख़्त लोगों को तक्लीफ़ देता था। एक शख़्स ने उसे लोगों के रास्ते से हटा दिया तो रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मैं ने उसे जन्नत में उस दरख़्त के साए में लैटे हुए देखा है।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک، رقم ۱۲۵۷۲، ج۴، ص۳۰۹)

=== === ===
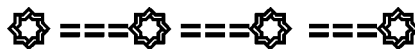
सांप और छिपकली को क़त्ल करने का सवाब

(1831)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हु़स्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''जिस ने सांप को क़त्ल किया उस के लिये सात नेकियां हैं और जिस ने छिपकली को क़त्ल किया उस के लिये एक नेकी है।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند ابن مسعود، رقم ۳۹۸۴، ج۲، ص۱۰۰)

(1832)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अह़्वस जु-समी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमा रहे थे कि दीवार पर एक सांप नज़र आया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना ख़ुत़्बा छोड़ कर उसे अपनी कमान मार कर क़त्ल कर दिया, फिर फ़रमाया कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने एक सांप मारा गोया उस ने एक ऐसे मुश्रिक को क़त्ल किया जिस को मारना ह़लाल था।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند ابن مسعود، رقم ۳۷۴۶، ج۲، ص۴۸)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने सांप या बिच्छू को क़त्ल किया।''

(مجمع الزوائد، کتاب العید والذبائح، باب قتل الحیات والحشرات، رقم ۶۱۱۷، ج۴، ص۲۸)

(1833)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''जिस ने पहली ज़र्ब से छिपकली को क़त्ल किया उस के लिये इतनी इतनी नेकियां हैं और जिस ने इसे दो ज़र्बों में मारा उस के लिये पहले वाले से कम इतनी इतनी नेकियां हैं और जिस ने तीन ज़र्बों में मारा उस के लिये उस से कम इतनी इतनी नेकियां हैं।''

एक रिवायत में है कि ''जिस ने पहली ज़र्ब में छिपकली को क़त्ल किया उस के लिये सो नेकियां हैं और दूसरी ज़र्ब में मारने वाले के लिये इस से कम और तीसरी ज़र्ब में मारने वाले के लिये इस से कम नेकियां हैं।'' (صحیح مسلم، کتاب السلام، باب استحباب قتل الوزغ، رقم ۲۲۴۰، ص۱۲۳۰)

कस्बे ह़लाल का सवाब
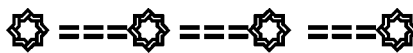
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ (پ۲،البقرۃ:۱۹۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तुम पर कुछ गुनाह नहीं कि अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो।

और फ़रमाता है,

فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝ (پ۲۸،الجمعہ:۱۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो और अल्लाह को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह़ पाओ।

(1834)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''किसी ने अपने हाथ की कमाई से बेहतर कभी कोई खाना नहीं खाया और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام अपने हाथ की कमाई से खाया करते थे।''

(صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل وعملہ بیدہ، رقم ۲۰۷۲، ج۲، ص۱۱)

एक रिवायत में है कि ''बन्दे ने अपने हाथ की कमाई से पाकीज़ा कभी कोई कमाई नहीं खाई और आदमी अपनी जान, घर वालों, बच्चों और अपने ख़ादिम पर जो कुछ ख़र्च करता है वोह स-दक़ा है।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب الحث علی، رقم ۲۱۳۸، ج۳، ص۶)

(1835)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया गया, ''कौन सी कमाई पाकीज़ा है ?'' फ़रमाया कि ''बन्दे के अपने हाथ की कमाई और हर ह़लाल कमाई।''

(مستدرک، کتاب البیوع، باب لیس منا من غشنا، رقم ۲۲۰۳، ج۲، ص۳۰۱)

(1836)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया गया कि ''कौन सी कमाई अफ़्ज़ल है ?'' फ़रमाया कि ''बन्दे के अपने हाथ की कमाई और हर ह़लाल कमाई।''

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب ای کسب اطیب، رقم ۶۲۱۲، ج۴، ص۱۰۲)

(1837)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पेशावर मोमिन को पसन्द फ़रमाता है।''

(المعجم الاوسط، باب میم، رقم ۸۹۳۴، ج۶، ص۳۲۷)

(1838)...... हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि ''जो अपने हाथ के काम से थक कर शाम करता है वोह मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर शाम करता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب البیوع، باب نوم الصباح، رقم ۶۲۳۸، ج۴، ص۱۰۸)

(1839)...... हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़रीब से गुज़रा तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने उस को देख कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! काश इस का येह ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में होता।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अगर येह शख़्स अपने बच्चों के लिये रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर येह शख़्स अपने बूढ़े वालिदैन के लिये रिज़्क़ की तलाश में निकला है तो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में है और अगर येह दिखावे और बड़ाई के इज़्हार के लिये निकला है तो येह शैत़ान की राह में है।'' (المعجم الکبیر، رقم ۲۸۲، ج۱۹، ص۱۲۹)

(1840)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''जिस ने ह़लाल माल कमाया फिर उसे ख़ुद खाया या उस कमाई से लिबास पहना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की दीगर मख़्लूक़ को खिलाया और पहनाया तो उस का येह अ़मल उस की ज़कात है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرضاع، باب النفقۃ، رقم ۴۲۲۲، ج۶، ص۲۱۸)

(1841)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने ह़लाल माल कमाया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल किया और लोग उस के शर से मह़फ़ूज़ रहे तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप की उम्मत में आज कल ऐसे लोग तो बहुत ज़ियादा हैं।'' फ़रमाया कि ''मेरे बा'द के ज़मानों में भी होंगे।'' (ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب (۱۲۵) رقم ۲۵۲۸، ج۴، ص۲۳۳)

(1842)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने येह आयते करीमा पढ़ी गई,

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِی الْاَرْضِ حَلٰلًا طَیِّبًا (پ۲، البقرہ:۱۶۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! खाओ जो कुछ ज़मीन में ह़लाल पाकीज़ा है।

तो ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबू वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खड़े हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि वोह मुझे मुस्तजाबुद्दा'वात बना दे।'' तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ऐ सा'द ! अपनी ग़िज़ा को पाकीज़ा कर लो मुस्तजाबुद्दा'वात हो जाओगे, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है बेशक बन्दा जब ह़राम का एक लुक़्मा अपने पेट में डालता है तो चालीस दिन तक उस का कोई अ़मल क़बूल नहीं किया जाता और जिस का गोश्त ह़राम से पला बढ़ा हो जहन्नम की आग उस की ज़ियादा ह़क़दार है।'' (المعجم الاوسط، باب میم، رقم ۶۴۹۵، ج۵، ص۳۴)

(1843)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''दुन्या मीठी और सर सब्ज़ है, जिस ने इस में से ह़लाल त़रीक़े से कमाया और उसे कारे सवाब में ख़र्च करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और अपनी जन्नत में दाख़िल फरमाएगा और और जिस ने इस में ह़राम त़रीक़े से कमाया और उसे नाह़क़ ख़र्च किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ज़िल्लत व ह़क़ारत के घर को ह़लाल कर देगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के माल में ख़ियानत करने वाले बहुत से लोगों के लिये क़ियामत के दिन जहन्नम होगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِیْرًا
(پ۱۵، بنی اسرائیل:۹۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।

(شعب الایمان، باب فی قبض الید عن الاموال المحرمۃ، رقم ۵۵۲۷، ج۴، ص۳۹۶)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
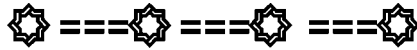
सच्चे और अमानत दार ताजिर का सवाब

(1844)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़मतुल्लिल आ–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सच्चा और अमानत दार ताजिर, अम्बिया, सिद्दीक़ीन और शु–हदा के साथ होगा।'' (ترمذی، کتاب البیوع، باب ماجاء فی التجار، رقم ۱۲۱۳، ج۳، ص۵)

(1845)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन ह़िज़ाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़–ज़्–मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ख़रीदो फ़रोख़्त करने वाले जब तक सौदा मुकम्मल न कर लें उन्हें इख़्तियार ह़ासिल है अगर वोह सौदा करते हुए सच बोलें और सच बयान करें तो उन के सौदे में ब–र–कत डाल दी जाती है और अगर वोह छुपाएं और झूट बोलें तो शायद वोह कुछ नफ़्अ़ कमा ही लें मगर अपने सौदे की ब–र–कत ख़त्म कर बैठेंगे क्यूं कि झूटी क़सम सौदा तो बिकवा देती है मगर ब–र–कत ख़त्म कर देती है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البیوع، باب ترغیب التجار فی الصرف، رقم ۴، ج۲، ص۳۶۶)

(1846)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक सब से पाकीज़ा कमाई उन ताजिरों की है जो बात करें तो झूट न बोलें और जब उन के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत न करें और जब वा'दा करें तो उस की ख़िलाफ़ वरज़ी न करें और जब कोई चीज़ ख़रीदें तो उस में ऐ़ब न निकालें और जब कुछ बेचें तो उस की बे जा ता'रीफ़ न करें और जब उन पर किसी का कुछ आता हो तो उस की अदाएगी में सुस्ती न करें और जब उन का किसी पर आता हो तो उस की वुसूली के लिये सख़्ती न करें।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البیوع، باب التجار فی الصدق، رقم ۳، ج۲، ص۳۶۶)

ख़रीदो फ़रोख़्त, क़र्ज़ की अदाएगी और वुसूली में नर्मी का सवाब

(1847)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़रीदो फ़रोख़्त और क़र्ज़ का मुत़ा-लबा करने में नर्मी करने वाले शख़्स पर रह़म फ़रमाए।'' (صحیح بخاری، کتاب البیوع، باب السھولۃ..الخ، رقم ۲۰۷۶، ج۲،ص۱۲)

एक रिवायत में है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम से पिछली उम्मत के एक शख़्स की इस वजह से मग़्फ़िरत फ़रमा दी कि वोह ख़रीदो फ़रोख़्त और क़र्ज़ के मुत़ा-लबे में नर्मी किया करता था।''

(سنن الترمذی، کتاب البیوع، باب ۷۶، رقم ۱۳۲۴، ج۳،ص۵۹)

(1848)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़रीदो फ़रोख़्त, क़र्ज़ अदा करने और क़र्ज़ का मुत़ा-लबा करने में नर्मी करने वाले एक शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया।''

(نسائی، کتاب البیوع، باب حسن المعاملۃ والرفق، ج۷،ص۳۱۹)

(1849)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''एक शख़्स क़र्ज़ की वुसूली और अदाएगी में नर्मी करने की वजह से जन्नत में दाख़िल हो गया।''

(مسند، احمد بن حنبل، مسند ابن عمرو، رقم ۶۹۸۱، ج۲،ص۶۶۲)

(1850)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़रीदो फ़रोख़्त और क़र्ज़ की अदाएगी में नर्मी करने को पसन्द फ़रमाता है।'' (ترمذی، کتاب البیوع، رقم ۱۳۲۳، ج۳،ص۵۸)

(1851)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुअमिनीन में सब से अफ़्ज़ल वोह शख़्स है जो ख़रीदो फ़रोख़्त और क़र्ज़ की वुसूली या अदाएगी में नर्मी इख़्तियार करे।'' (المعجم الاوسط، رقم ۷۵۴۴، ج۵،ص۳۴۳)

(1852)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''जो शख़्स नर्म दिल, नर्म ख़ू और आसानी पैदा करने वाला होगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा।'' एक रिवायत में है कि ''हर नर्म दिल, नर्म ख़ू और आसानी पैदा करने वाले पर जहन्नम ह़राम है।''

(الترغیب والترھیب، کتاب البیوع، باب فی السماحۃ فی البیع والشراء، رقم ۲، ج۲،ص۳۵۴)

(1853)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि कौन जहन्नम पर ह़राम है और जहन्नम किस पर ह़राम है ? वोह नर्म दिल, नर्म ख़ू आसानी पैदा करने वाला शख़्स है।'' (جامع الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم ۲۴۹۶، ج۴، ص ۲۲۰)

एक रिवायत में है कि ''बेशक जहन्नम हर नर्म दिल, नर्म ख़ू और आसानी पैदा करने वाले शख़्स पर ह़राम है।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان، باب الرحمۃ، رقم ۴۶۹، ج۱، ص ۳۴۶)

(1854)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और अपने ग़ुलाम से कहा करता था कि ''जब तुम किसी तंगदस्त के पास जाओ तो उस से नर्मी किया करो शायद **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हम पर नर्मी फ़रमाए।'' जब वोह (मरने के बा'द) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उसे बख़्श दिया।'' (صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، باب فضل انظار المعسر، رقم ۱۵۶۲، ص ۸۴۵)

(1855)...... ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''(बरोज़े क़ियामत) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दों में से एक ऐसे बन्दे को पेश किया जाएगा जिसे उस ने दुन्या में माल अ़ता फ़रमाया था तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस से फ़रमाएगा तूने दुन्या में क्या किया ?''

फिर रावी ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई

وَلَا یَکْتُمُوْنَ اللّٰہَ حَدِیْثًا۝ (پ۵، النسآء: ۴۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई बात **अल्लाह** से न छुपा सकेंगे।

तो वोह शख़्स अ़र्ज़ करेगा कि ''या रब عَزَّ وَجَلَّ ! तूने मुझे माल अ़ता फ़रमाया तो मैं लोगों के साथ ख़रीदो फ़रोख़्त किया करता था और ख़ुशह़ाल पर नर्मी करता और तंगदस्त को मोहलत दिया करता था।'' **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा कि ''मैं तुझ से ज़ियादा इस का ह़क़दार हूं।'' फिर अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा कि ''मेरे बन्दे को छोड़ दो।''

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर और अबू मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के द-हने मुबारक से इसी त़रह़ सुना है।''

(صحیح مسلم، کتاب المساقاۃ، باب فضل انظار المعسر، رقم ۱۵۶۰، ص ۸۴۴)

=== === ===
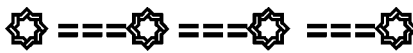
नदामत के साथ बैअ़ का इक़ाला करने का सवाब

(1856)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शुरैह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने अपने भाई के साथ इक़ाला किया (या'नी उस ने जो चीज़ ख़रीदी थी वापस करने पर उस से ले ली) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की परेशानी दूर फ़रमाएगा।''

(مجمع الزوائد،کتاب البیوع،کتاب فیمن اقال اخاہ بیعا،رقم ۶۵۳۸،ج۴،ص۱۹۹)

(1857)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने किसी मुसल्मान की परेशानी को दूर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की परेशानी दूर करेगा।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البیوع، باب الاقالۃ، رقم ۵۰۰۸، ج۷، ص۲۴۳)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने किसी मुसल्मान को बेची हुई चीज़ उस के वापस करने पर वापस ले ली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस की परेशानी को उठा देगा।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب الاقالۃ، رقم ۲۱۹۹، ج۳، ص۳۷)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और अपने आक़ा के हुक़ूक़ अदा करने वाले गुलाम का सवाब

(1858)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तीन शख़्स ऐसे हैं जिन के लिये दुगना अज्र है। **पहला :** अहले किताब में से वोह शख़्स जो अपने नबी और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दोनों पर ईमान लाया, **दूसरा :** वोह गुलाम जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और अपने आक़ा के हुक़ूक़ अदा किये और **तीसरा :** वोह शख़्स जिस की एक कनीज़ थी उस ने उसे अच्छी तरबिय्यत दी और अच्छी ता'लीम दी फिर उसे आज़ाद कर के उस के साथ निकाह़ कर लिया तो उस के लिये दो अज्र हैं।"

(بخاری، کتاب العلم، باب تعلیم الرجل امتہ واھلہ، رقم ۹۷، ج۱، ص۵۲)

(1859)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "वोह गुलाम जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत अच्छी त़रह़ से करे और अपने आक़ा के हुक़ूक़ अदा करे और उस की ख़ैर ख़्वाही चाहते हुए उस की इत़ाअ़त करे उस के लिये दो अज्र हैं।"

(بخاری، کتاب العتق، باب کراھۃ التطاول علی الرقیق، رقم ۲۵۵۱، ج۲، ص۱۵۹)

(1860)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "इस्लाह़ पसन्द (इस्लाह़ करने वाले) गुलाम के लिये दो अज्र हैं।"

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "उस ज़ाते पाक की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में अबू हुरैरा की जान है ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद करना, ह़ज करना और अपनी वालिदा की ख़िदमत करना रुकावट न होता तो मैं गुलामी की ह़ालत में मरना पसन्द करता।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب ثواب العبد...الخ، رقم ۱۶۶۵، ص۹۰۷)

(1861)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "गुलाम जब अपने आक़ा की ख़ैर ख़्वाही करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अच्छी त़रह़ इ़बादत करे तो उस के लिये दुगना अज्र है।"

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب ثواب العبد...الخ، رقم ۱۶۶۴، ص۹۰۷)

(1862)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मुझ पर सब से पहले जन्नत में दाख़िल होने वाले तीन शख़्स पेश किये गए वोह येह लोग हैं (1) शहीद (2) पाक दामन शख़्स और (3) वोह ग़ुलाम जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की अच्छी त़रह़ इ़बादत करे और अपने आक़ा के साथ ख़ैर ख़्वाही करे।" (ترمذی، کتاب فضائل الجھاد، باب ماجاء فی ثواب الشہید، رقم ۱۶۴۷،ص ۲۴۰)

(1863)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जन्नत की त़रफ़ सब पर सब्क़त ले जाने वाला वोह ग़ुलाम होगा जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और अपने आक़ा की इत़ाअ़त करता होगा।" (الترغیب والترھیب، کتاب البیوع، باب المملوک فی اداء حق اللہ تعالی، رقم ۱۰، ج ۳ص ۱۷)

(1864)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "वोह ग़ुलाम जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इत़ाअ़त करे और अपने आक़ा की इत़ाअ़त करे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे उस के आक़ा से सत्तर साल पहले जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। तो उस का आक़ा अ़र्ज़ करेगा कि "या रब عَزَّ وَجَلَّ ! येह तो दुन्या में मेरा ग़ुलाम था।" तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा कि "मैं ने इसे इस के अ़मल की जज़ा दी है और तुझे तेरे अ़मल की।" (المعجم الکبیر، رقم ۱۲۸۰۴، ج ۱۲، ص ۱۳۶)

(1865)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बख़ील, दग़ाबाज़ और बुरा हुक्मरान जन्नत में दाख़िल न होंगे और सब से पहले जन्नत का दरवाज़ा खट-खटाने वाले वोह ग़ुलाम होंगे जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और अपने आक़ाओं के मुआ़-मले को ख़ुश उस्लूबी से निभाया करते थे।" (مجمع الزوائد، کتاب اھل الجنۃ، باب فی اوائل من...الخ، رقم ۱۸۷۱۵، ج ۱۰، ص ۷۵۹)

(1866)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तीन शख़्स क़ियामत के दिन मुश्क के टीलों पर होंगे, **पहला :** वोह ग़ुलाम जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और अपने आक़ा का ह़क़ अदा करे, **दूसरा :** वोह शख़्स जो किसी क़ौम की इमामत कराए और उस की क़ौम भी उस से राज़ी हो और **तीसरा :** वोह शख़्स जो रोज़ाना दिन और रात में पांच नमाज़ों के लिये अज़ान दे।"

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب فضل المملوک، رقم ۱۹۹۳، ج ۳، ص ۳۹۷)

एक रिवायत में है कि ''तीन अफ़राद को बड़ी घबराहट (या'नी क़ियामत) परेशान न करेगी और न ही उन से हिसाब लिया जाएगा और वोह मख़्लूक़ के हिसाब से फ़ारिग़ होने तक मुश्क के टीलों पर होंगे। **पहला :** वोह शख़्स जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये कुरआन पढ़ा और उस के ज़रीए से किसी क़ौम की इमामत कराई और वोह क़ौम भी उस से राज़ी हुई, **दूसरा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अज़ान देने वाला और **तीसरा :** वोह गुलाम जिस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ और अपने आक़ाओं के मुआ-मले को खुश उस्लूबी से निभाया।''

एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''वोह गुलाम जिसे दुन्या की गुलामी अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त से न रोके।'' (الترغیب والترہیب، کتاب البیوع، باب ترغیب المملوک فی اداء حق اللہ، رقم ۹، ج ۳، ص ۱۷)
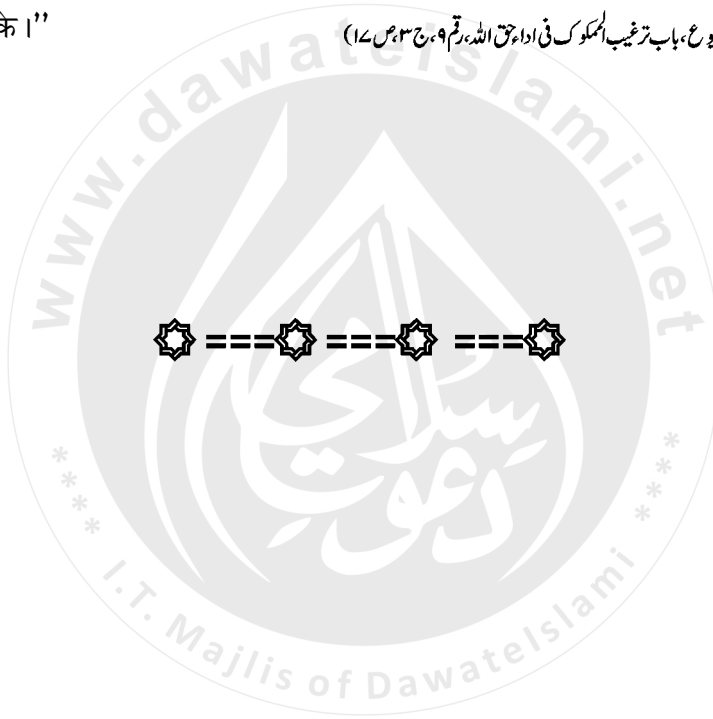
गुलाम मुसलमान मर्द या औरत को आज़ाद करने का सवाब

(1867)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने एक गुलाम आज़ाद किया **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस गुलाम के हर उ़ज़्व के बदले उस के एक उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند ابو موسی اشعری، رقم ۱۹۶۴۲، ج ۷، ص ۱۴۹)

(1868)...... हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन हारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बेशक मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जिस ने मुसल्मान मां बाप के किसी यतीम बच्चे को अपने खाने और पीने में शिकम सैर होने तक शरीक किया उस के लिये जन्नत ज़रूर वाजिब हो गई और जिस ने मुसल्मान मर्द को आज़ाद किया तो वोह उस के लिये जहन्नम से आज़ादी का ज़रीआ बन जाएगा और उस गुलाम के हर उ़ज़्व के बदले उस के एक उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाएगा।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث ابی اروی، رقم ۱۹۰۴۷، ج ۷، ص ۲۷)

(1869)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो मुसल्मान मर्द किसी मुसल्मान मर्द को आज़ाद करेगा तो वोह उस की जहन्नम से आज़ादी का ज़रीआ बन जाएगा और उस की हर हड्डी के इवज़ उस की एक हड्डी को जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाएगा और जो मुसल्मान औ़रत किसी मुसल्मान औ़रत को आज़ाद करेगी तो वोह उस के लिये जहन्नम से आज़ादी का ज़रीआ बन जाएगी और उस की हर हड्डी के बदले उस की एक हड्डी को जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाएगा और जिस मुसल्मान मर्द ने दो मुसल्मान औ़रतों को आज़ाद किया तो वोह दोनों उस की जहन्नम से आज़ादी का ज़रीआ बन जाएंगी और उन दोनों की एक एक हड्डी के इवज़ उस की एक एक हड्डी को जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाएगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب البیوع، باب الترغیب فی العتق، رقم ۷، ج ۳، ص ۲۰)

(1870)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान मर्द ने किसी मुसल्मान मर्द को आज़ाद किया वोह उस की जहन्नम से आज़ादी का ज़रीआ बन जाएगा और उस के हर उ़ज़्व के बदले इस के हर उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाएगा और जिस मुसल्मान मर्द ने दो औ़रतों को आज़ाद किया वोह दोनों जहन्नम से उस की आज़ादी का ज़रीआ बन जाएंगी और उन के हर उ़ज़्व के बदले इस का हर उ़ज़्व जहन्नम से आज़ाद हो जाएगा।''

एक रिवायत में है कि ''जिस मुसल्मान औ़रत ने एक मुसल्मान औ़रत को आज़ाद किया तो वोह उस के लिये जहन्नम से आज़ादी का ज़रीआ़ बन जाएगी और उस के हर उ़ज़्व के इवज़ इस के एक उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद कर दिया जाएगा।'' (ترمذی، کتاب النذور والایمان، باب فی فضل من اعتق، رقم ۱۵۵۲، ج۳، ص۱۹۲)

(1871)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने नुजैह़ सु-लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ त़ाइफ़ का मुह़ा-सरा किये हुए थे कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो मुसल्मान किसी मुसल्मान को आज़ाद करेगा अल्लाह उस की हर हड्डी के लिये आज़ाद की गई हड्डियों में से एक को नजात का ज़रीआ़ बना देगा और जो मुसल्मान औ़रत किसी मुसल्मान औ़रत को आज़ाद करेगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की हर हड्डी के लिये उस की आज़ाद कर्दा हड्डियों में से एक हड्डी को नजात का ज़रीआ़ बना देगा।'' (ابوداؤد، کتاب العتق، باب ای الرقاب افضل، رقم ۳۹۶۵، ج۴، ص۴۱)

(1872)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, एक आ'राबी ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''तुम ने निहायत कम अल्फ़ाज़ में बहुत बड़ा सुवाल किया है। ग़ुलाम आज़ाद करो और जान को छुड़ाओ।'' उस ने अ़र्ज़ किया ''क्या येह दोनों एक ही चीज़ नहीं ?'' फ़रमाया, ''नहीं ! बल्कि ग़ुलाम आज़ाद करने का मत़्लब येह है कि तुम तन्हा कोई ग़ुलाम आज़ाद करो और जान छुड़ाओ का मत़्लब येह है कि किसी के ग़ुलाम को आज़ाद कराने में तुम माली मदद करो।'' (الترغیب والترھیب، کتاب البیوع، باب فی العتق، رقم ۹، ج۳، ص۲۱)

(1873)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि बेशक मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस ने एक दिन में पांच अ़मल किये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नतियों में लिखेगा, (1) जिस ने किसी मरीज़ की इ़यादत की, (2) किसी जनाज़े में शिर्कत की, (3) दिन में रोज़ा रखा, (4) जुमुआ़ की त़रफ़ चला और (5) एक ग़ुलाम आज़ाद किया।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلوۃ، باب صلاۃ الجمعۃ، رقم ۲۷۶۰، ج۴، ص۱۹۱)

(1874)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने किसी मुसल्मान मर्द को आज़ाद किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस ग़ुलाम के हर उ़ज़्व के बदले उस आज़ाद

करने वाले के एक उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा।'' ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुरजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا को येह ह़दीसे मुबारक सुनाई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने एक गुलाम को (जिसे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا दस हज़ार दिरहम या एक हज़ार दीनार में ख़रीदना चाहते थे) आज़ाद कर दिया।''

(صحیح البخاری، کتاب العتق، باب فی العتق وفضلہ، رقم ۲۵۱۷، ج۲، ص۱۵۰)

एक रिवायत में है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने किसी मुसल्मान गुलाम को आज़ाद किया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस गुलाम के हर उ़ज़्व के बदले आज़ाद करने वाले के एक उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा यहां तक कि उस की शर्मगाह के इवज़ इस की शर्मगाह को आज़ाद फ़रमा देगा।''

(صحیح مسلم، کتاب العتق، باب فضل عتق، رقم ۱۵۰۹، ص۸۱۲)

(1875)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने किसी मुसल्मान गुलाम को आज़ाद किया तो येह गुलाम जहन्नम से उस की आज़ादी का ज़रीआ़ है।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند عقبۃ بن عامر، رقم ۱۷۳۶۱، ج۶، ص۱۳۱)

(1876)...... ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं गज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर था। बनी सुलैम के एक गुरोह ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि ''हमारे एक रफ़ीक़ ने अपने ऊपर जहन्नम वाजिब कर ली है।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''उस की त़रफ़ से एक गुलाम आज़ाद कर दो, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस गुलाम के हर उ़ज़्व के बदले उस के एक उ़ज़्व को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा देगा।''

(ابوداود، کتاب العتق، باب ثواب العتق، رقم ۳۹۶۴، ج۴، ص۷ بتغیر قلیل)

✡===✡===✡===✡
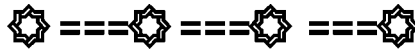
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने का सवाब

इस बारे में आयाते करीमा :

(1) اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا۝ (پ۵،النساء:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर बचते रहो कबीरा गुनाहों से जिन की तुम्हें मुमा-न-अ़त है तो तुम्हारे और गुनाह हम बख़्श देंगे और तुम्हें इ़ज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे ।

(2) وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝ اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝ (پ۱۸،المومنون:۵تا۱۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं मगर अपनी बीबियों या शर-ई बांदियों पर जो उन के हाथ की मिल्क हैं कि उन पर कोई मलामत नहीं तो जो इन दो के सिवा कुछ और चाहे वोही ह़द से बढ़ने वाले हैं और वोह जो अपनी अमानतों और अपने अ़ह्द की रिआ़यत करते हैं और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं येही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस की मीरास पाएंगे वोह उस में हमेशा रहेंगे ।

(3) قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ (پ۱۸،النور:۳۰،۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है बेशक **अल्लाह** को उन के कामों की ख़बर है और मुसल्मान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त करें ।

(4) وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है ।

(5) وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىO فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰىO (پ۳۰، النازعات: ۴۰، ۴۱)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।

इस बारे में अहादीसे मुबा–रका :

(1877)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो मुझे अपनी दो दाढ़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।"

(بخاری، کتاب الرقائق، باب حفظ اللسان، رقم ۶۴۷۴، ج ۴، ص ۲۴۰)

(1878)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ जिसे दो दाढ़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) के शर से बचा ले वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (ترمذی، کتاب الزھد، باب حفظ اللسان، رقم ۲۴۱۷، ج ۴، ص ۱۸۴)

(1879)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "जिस ने अपनी दो दाढ़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) की हिफ़ाज़त की वोह जन्नत में दाख़िल होगा।" (المعجم الکبیر مسند عن ابی رافع، رقم ۹۱۹، ج ۱، ص ۳۱۱)

(1880)...... हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ–लमीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "तुम मुझे छ चीज़ों की ज़मानत दे दो मैं तुम्हें जन्नत की ज़मानत देता हूं, (1) जब बात करो तो सच बोलो, (2) जब वा'दा करो तो उसे पूरा करो, (3) जब अमानतें तुम्हारे सिपुर्द की जाएं तो उन्हें अदा कर दिया करो, (4) अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो, (5) अपनी निगाहें नीची रखो और (6) अपने हाथों को रोके रखो।"

(مستدرک، کتاب الحدود، باب ست یدخل بھا الرجل الجنۃ، رقم ۸۱۳۰، ج ۵، ص ۵۱۳)

(1881)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "औरत जब पांचों नमाज़ें अदा करे, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे और अपने शोहर की इताअ़त करे तो जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाएगी।" (الاحسان بترتیب ابن حبان، کتاب النکاح، باب معاشرۃ الزوجین، رقم ۴۱۵۱، ج ۶، ص ۱۸۴)

(1882)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ऐ क़ुरैश के

जवानो ! अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो, ज़िना मत करो, जिस ने अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त की उस के लिये जन्नत है।''

एक रिवायत में है कि ऐ कुरैश के जवानो ! ज़िना मत करना क्यूं की जिस की जवानी बे दाग़ होगी वोह जन्नत में दाख़िल होगा। (الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب من الزنا، رقم ۴۰، ج ۳، ص ۱۹۴)

(1883)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सात अश्ख़ास ऐसे हैं कि जिस दिन अ़र्श के सिवा कोई साया न होगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा।'' और फिर उन सात अफ़राद का ज़िक्र फ़रमाया और उन में उस शख़्स का भी ज़िक्र किया ''जिसे साहिबे हैसियत ख़ूब सूरत औरत गुनाह के लिये बुलाए तो वोह कहे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं।'' (بخاری، کتاب الزکوۃ، باب الصدقۃ بالیمین، رقم ۱۴۲۳، ج ۱، ص ۴۸۰)

(1884)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम से पिछली उम्मतों में से तीन आदमियों ने सफ़र के दौरान रात के वक़्त एक ग़ार में पनाह ली। जब वोह उस में दाख़िल हुए तो पहाड़ से एक चट्टान गिरी और उस ग़ार का मुंह बन्द हो गया। वोह आपस में एक दूसरे से कहने लगे, तुम्हें इस मुसीबत से सिर्फ़ येही चीज़ नजात दिला सकती है कि तुम अपने नेक आ'माल के वसीले से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ मांगो।''

तो उन में से एक ने अ़र्ज़ किया ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी एक चचाज़ाद बहन थी जो मुझे सब से ज़ियादा पसन्द थी। मैं ने उस के साथ बुरा काम करना चाहा तो वोह मुझ से बच गई। फिर एक साल क़ह़त़ पड़ा और वोह मजबूर हो कर मेरे पास आई तो मैं ने उसे एक सो बीस दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह मेरे साथ तन्हाई में मुलाक़ात करे वोह इस बात पर राज़ी हो गई और ख़ुद को मेरे ह़वाले कर दिया। जब मैं उस से बुरा फ़े'ल करने लगा तो वोह बोली कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और ह़राम काम में मत पड़ो।'' तो मैं उस से बदकारी करने से बाज़ रहा और उस से ए'राज़ किया ह़ालां कि वोह मुझे सब से ज़ियादा मह़बूब थी, मैं ने जो दीनार उसे दिये थे उस के पास ही रहने दिये।'' ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने ऐसा तेरी रिज़ा के लिये किया था लिहाज़ा हम से येह परेशानी दूर फ़रमा दे जिस में हम मुब्तला हैं तो वोह चट्टान हट गई।''

(ملخصاً)(الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب من الزنا سیما بحلیلۃ الجار، رقم ۳۹، ج ۳، ص ۱۹۳)

(1885)...... ह़ज़रते इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को एक बात इर्शाद फ़रमाते हुए सुना, अगर मैं ने येह बात आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के द-हने अक़्दस से एक मरतबा या दो मरतबा (फिर सात मरतबा तक गिन कर फ़रमाया कि) सात मरतबा न सुनी होती तो मैं हरगिज़ तुम्हें न सुनाता मगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह ह़दीस इस से भी ज़ाइद मरतबा सुनी है। (फिर फ़रमाया) मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि,

''बनी इस्राईल में किफ़्ल नामी एक शख़्स गुनाह करने से न चूकता था। एक मरतबा उस के पास एक मजबूर औ़रत आई तो उस ने उसे साठ दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह उस के साथ ज़िना करने पर राज़ी हो जाए। जब वोह उस औ़रत पर ह़ावी होने लगा तो वोह औ़रत कांपने लगी और रोना शुरूअ़ कर दिया। उस ने पूछा, ''क्यूं रो रही हो?'' औ़रत ने जवाब दिया कि ''मैं ने येह काम पहले कभी नहीं किया, आज एक ज़रूरत ने मुझे इस काम पर मजबूर कर दिया है।'' उस ने पूछा ''क्या तुम अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से कांप रही हो? मैं तुम से ज़ियादा डरने का ह़क़दार हूं जाओ! मैं ने जो कुछ तुम्हें दिया है वोह तुम्हारा है ख़ुदा की क़सम! आज के बा'द मैं अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की कभी ना फ़रमानी न करूंगा।'' फिर उसी रात उस रईस का इन्तिक़ाल हो गया। सुब्ह़ उस के दरवाज़े पर लिखा हुवा था कि ''اِنَّ اللّٰہَ قَدْ غَفَرَ لِلْكِفْلِ या'नी अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने किफ़्ल की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।'' तो लोगों को इस बात पर बहुत तअ़ज्जुब हुवा।

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم ۲۵۰۴، ج۴، ص۲۲۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों से निगाहें बचाने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ یَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ یَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا یَصْنَعُوْنَ ۝ وَ قُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ یَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَ یَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَ لَا یُبْدِیْنَ زِیْنَتَهُنَّ (پ۱۸،النور:۳۰،۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मर्दों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की ह़िफ़ाज़त करें येह उन के लिये बहुत सुथरा है बेशक **अल्लाह** को उन के कामों की ख़बर है और मुसलमान औ़रतों को हुक्म दो अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी पारसाई की ह़िफ़ाज़त करें और अपना बनाव न दिखाएं।

(1886)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से रिवायत करते हुए फ़रमाया कि ''बद निगाही शैत़ान के तीरों में से ज़हर में बुझा हुवा एक तीर है, जो इसे (या'नी बद निगाही को) मेरे ख़ौफ़ से छोड़ देगा मैं उसे ऐसा ईमान अ़त़ा फ़रमाऊंगा जिस की मिठास वोह अपने दिल में मह़सूस करेगा।'' (المعجم الکبیر مسند عبداللہ بن مسعود، رقم ۱۰۳۶۲،ج۱۰،ص۱۷۳)

(1887)...... ह़ज़रते मुआ़विया बिन ह़य्यिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तीन आदमियों की आंखें जहन्नम न देखेंगी। **एक :** वोह आंख जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहरा दिया, **दूसरी :** वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और **तीसरी :** वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों की त़रफ़ उठने से रुक जाए।

(المعجم الکبیر مسند بھز بن حکیم، رقم ۱۰۰۳،ج۱۹،ص۴۱۶)

(1888)...... ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मासूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अकबर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क़ियामत के दिन (इन तीन आंखों के) इलावा हर आंख रोएगी, **एक :** वोह आंख जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ें देखने से रुक गई, **दूसरी :** वोह आंख जिस ने राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में पहरा दिया और **तीसरी :** वोह आंख जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से मख्खी के पर के बराबर आंसू निकला।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الجہاد، باب فی الحراسۃ فی سبیل اللہ، رقم ۱۲،ج۲،ص۱۶۰)

(1889)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस मुसल्मान की नज़र किसी औ़रत के हुस्न पर जा पड़े और वोह अपनी निगाह झुका ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल में इबादत की लज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाएगा।'' (مسند احمد بن حنبل مسند ابوامامۃ، رقم ۲۲۳۴۱،ج۸،ص۲۹۹)
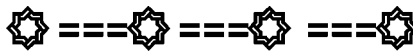
रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये निकाह कराने का सवाब

(1890)...... एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये किसी का निकाह कराया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे करामत का ताज पहनाएगा।''

(1891)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो औरत पांचों नमाज़ें पढ़े और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे और अपने शोहर की इताअत करे वोह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाएगी।'' (الترغیب والترھیب، کتاب النکاح، باب فی الوفاء بحق زوجتہ والمرأۃ، رقم ۱۳، ج۳، ص۳۳)

(1892)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''औरत जब पांचों नमाज़ें पढ़े, र-मज़ान के रोज़े रखे, अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करे और अपने शोहर की इताअत करे तो उस से कहा जाएगा कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहो जन्नत में दाख़िल हो जाओ।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند عبد الرحمٰن بن عوف، رقم ۱۶۶۱، ج۱، ص۴۰۶)

(1893)...... उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया कि ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! औरत पर सब से ज़ियादा किस का हक़ है ?'' फ़रमाया कि ''उस के शोहर का।'' मैं ने अर्ज़ किया, ''तो फिर मर्द पर सब से ज़ियादा हक़ किस का है ?'' फ़रमाया कि ''उस की मां का।'' (مستدرک، کتاب البر والصلۃ، باب بر اُمّک......الخ، رقم ۷۳۲۶، ج۵، ص۲۰۸)

(1894)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि तुम में से कौन से मर्द जन्नत में होंगे ?'' हम ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया कि ''हर नबी जन्नत में होगा, हर सिद्दीक़ जन्नत में होगा, जो शख़्स सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने किसी भाई से मिलने शहर के मज़ाफ़ात में जाए वोह जन्नत में होगा।'' फिर फ़रमाया, ''और क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि तुम्हारी औरतों में से कौन सी औरतें जन्नत में होंगी ?'' हम ने अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया कि ''हर महब्बत करने वाली और ज़ियादा बच्चे जनने वाली औरत कि जब उसे गुस्सा दिलाया जाए या उस का शोहर उस से नाराज़ हो तो वोह कहे कि मेरा येह हाथ तेरे हाथ में है जब तक तू राज़ी न होगा मैं सोऊंगी नहीं।'' (المعجم الکبیر، باب الف، رقم ۱۷۴۳، ج۱، ص۲۷۲)

(1895)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि एक सहा़बिया رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ कि : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास औ़रतों की त़रफ़ से नुमायन्दा बन कर ह़ाज़िर हुई हूं उन में से हर औ़रत ख़्वाह वोह मेरे आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने को जानती हो या न जानती हो मगर वोह उसे पसन्द ज़रूर करती होगी। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मर्द व औ़रत दोनों का रब और ख़ुदा है और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मर्द व औ़रत दोनों की त़रफ़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के भेजे हुए रसूल हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मर्दों पर जिहाद फ़र्ज़ किया है अगर वोह इस में ज़ख़्मी होते हैं तो ग़नीमत पाते हैं और अगर शहीद हो जाएं तो अपने रब عَزَّ وَجَلَّ के पास ज़िन्दा होते हैं और उन्हें रिज़्क़ दिया जाता है। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमें ऐसा अ़मल इर्शाद फ़रमाइए जो उन के इस अ़मल के मुसावी हो।''

तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''वोह अ़मल औ़रत का अपने शोहर की इत़ाअ़त करना और उस के हुक़ूक़ को पहचानना है और तुम में से बहुत कम औ़रतें हैं जो ऐसा करती हैं।''

एक रिवायत में है कि एक औ़रत ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं औ़रतों की त़रफ़ से नुमायन्दा बन कर ह़ाज़िर हुई हूं, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मर्दों पर जिहाद फ़र्ज़ फ़रमाया है अगर येह ज़ख़्मी हों तो अज्र पाएं और अगर शहीद हो जाएं तो अपने रब عَزَّ وَجَلَّ के पास ज़िन्दा रहें और रिज़्क़ दिये जाएं और हम औ़रतें इन के घर की देखभाल करती हैं लिहाज़ा हमारे लिये इस में क्या अज्र है?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''तुम जिस औ़रत से भी मिलो तो उसे बता दो कि शोहर की फ़रमां बरदारी करना और उस के ह़क़ को पहचानना जिहाद के बराबर है और तुम में से बहुत कम औ़रतें ऐसा करती हैं।'' (الترغیب والترھیب، کتاب النکاح، باب الزوج فی الوفاء بحق زوجتہ، رقم ۱۷، ج۳، ص۳۴)

(1896)...... ह़ज़रते हु़सैन बिन मिह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरी फूफी शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तुम शादी शुदा हो?'' उन्हों ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां!'' आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ''तुम्हारा अपने शोहर के साथ रवय्या कैसा है?'' अ़र्ज़ किया कि ''मैं उस के हुक़ूक़ पूरे करने में कोई कमी नहीं करती मगर जिस से मैं आ़जिज़ आ जाऊं।'' इर्शाद फ़रमाया, ''तुम उस से जैसा भी रवय्या इख़्तियार करो वोही तुम्हारी जन्नत और तुम्हारी जहन्नम है।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند حصین بن محصن، رقم ۱۹۰۲۵، ج۷، ص۱۲۱ بتغیر ما)

(1897)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं : ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस औ़रत के मरते वक़्त उस का शोहर उस से राज़ी हो वोह जन्नत में दाख़िल होगी।'' (ترمذی، کتاب الرضاع، باب فی حق الزوج، رقم ۱۱۶۴، ج۲، ص۳۸۶)

अच्छी निय्यत से हम बिस्तरी करने का सवाब

(1898)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से कुछ लोगों ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मालदार लोग अज्र ले गए हालां कि वोह हमारी त़रह़ नमाज़ें पढ़ते हैं और हमारी त़रह़ रोज़े रखते हैं और अपने ज़ाइद माल से स-दक़ा करते हैं।'' इर्शाद फ़रमाया, ''क्या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे लिये कोई ऐसी चीज़ नहीं बनाई जिसे तुम स-दक़ा कर सको ? बेशक हर तस्बीह़ स-दक़ा है और हर तक्बीर स-दक़ा है और हर तह़मीद स-दक़ा है और اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف स-दक़ा है और نَهْیٌ عَنِ الْمُنْكَر स-दक़ा है और तुम्हारे लिये तुम्हारी शर्मगाहों में स-दक़ा है।''

सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर हम में से कोई अपनी शह्वत पूरी करे तो क्या उस के लिये इस में सवाब है ?'' इर्शाद फ़रमाया कि ''तुम्हारा इस बारे में क्या ख़याल है कि अगर वोह अपनी शह्वत को ह़राम ज़रीए से पूरा करे तो क्या उसे गुनाह होगा ? इसी त़रह़ अगर वोह अपनी शह्वत ह़लाल ज़रीए से पूरी करे तो उस के लिये इस में सवाब है।''

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب ان اسم الصدقۃ یقع ،رقم ۱۰۰۶،ص ۵۰۳)

===
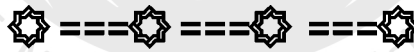
इस्लाम में बुढ़ापा पाने वाले का सवाब

(1899)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस के बाल राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़ेद हो गए उस के बालों की सफ़ेदी क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होगी।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الجنائز، فصل فی اعمار ھذہ الامۃ، رقم ۲۹۷۳، ج۴، ص۲۷۸، رواہ عن ابی نجیح السلمی)

(1900)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़-बसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस के बाल इस्लाम में सफ़ेद हुए तो वोह बाल क़ियामत के दिन उस के लिये नूर होंगे।''

(نسائی، کتاب الجھاد، باب ثواب من رمی بسھم، ج۶، ص۲۷، رواہ عن کعب بن مرہ)

(1901)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुऐ़ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने दादा से रिवायत करते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सफ़ेद बालों को न उखाड़ो क्यूं कि जिस के बाल इस्लाम की ह़ालत में सफ़ेद हुए क़ियामत के दिन उस के बालों की सफ़ेदी उस के लिये नूर होगी।''

एक रिवायत में है कि ''जिस के बाल इस्लाम की ह़ालत में सफ़ेद हुए उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और उस का एक गुनाह मिटा दिया जाएगा।''

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सफ़ेद बालों को उखाड़ने से मन्अ़ किया और फ़रमाया कि ''येह मुसल्मान का नूर हैं।''

(ترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء فی النھی عن نتف الشیب، رقم ۲۸۳۰، ج۴، ص۳۷۵)

(1902)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''सफ़ेद बालों को न उखाड़ो क्यूं कि येह क़ियामत के दिन नूर होंगे। जिस का एक बाल सफ़ेद हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक नेकी लिखेगा और उस का एक गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा और उस का एक द-रजा बुलन्द फ़रमाएगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب اللباس والزینۃ، باب فی ابقاء الشیب، رقم ۱، ج۳، ص۸۶)

=== === ===
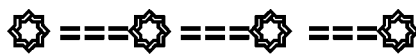
अच्छी बात के इलावा ख़ामोश रहने का सवाब

(1903)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और क़ियामत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि अच्छी बात कहे या ख़ामोश रहे।''

(بخاری، کتاب الرقائق، باب حفظ اللسان، رقم ۶۴۷۵، ج۴، ص۲۴۰)

(1904)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से अफ़्ज़ल मुसल्मान कौन है ?'' फ़रमाया, ''जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसल्मान महफ़ूज़ रहें।'' (بخاری، کتاب الایمان، باب ای الاسلام افضل، رقم ۱۱، ج۱، ص۱۶ بتغیر قلیل)

(1905)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! सब से अफ़्ज़ल अ़मल कौन सा है ?'' फ़रमाया, ''वक़्त पर नमाज़ पढ़ना।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह ! फिर कौन सा ?'' फ़रमाया, ''तुम्हारी ज़बान से मुसल्मानों का महफ़ूज़ रहना।'' (المعجم الکبیر، مسند ابن مسعود، رقم ۹۸۰۲، ج۱۰، ص۱۹)

(1906)...... हज़रते सय्यिदुना ह़ारिस बिन हश्शाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई अ़मल बताइये जिसे मैं अपने आप पर लाज़िम कर लूं।'' तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने मुबारक की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि ''इस पर क़ाबू पा लो।'' (المعجم الکبیر، مسند حارث بن ھشام، رقم ۳۳۴۹، ج۳، ص۲۶۰)

(1907)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई नसीह़त फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से डरते रहने की नसीह़त करता हूं क्यूं कि येह तुम्हारे हर काम के लिये ज़ीनत है।''

मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मज़ीद कुछ इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''तिलावते क़ुरआन और ज़िक्रुल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं की येह आस्मानों में तुम्हारे चरचे का सबब और ज़मीन में तुम्हारे लिये नूर होगा।''

मैं ने अ़र्ज़ किया, '' मज़ीद कुछ इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''ज़ियादा तर ख़ामोश रहा करो क्यूं कि येह शैत़ान को दूर करने वाला और दीनी मुआ़–मलात में तुम्हारा मददगार साबित होगा।''

मैं ने अ़र्ज़ किया, ''ह़ुज़ूर ! मज़ीद कुछ इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''ज़ियादा हंसने से बचते रहो क्यूं कि हंसी दिल को मुर्दा करती और चेहरे के नूर को ख़त्म कर देती है।''

मैं ने अ़र्ज़ किया, ''हुज़ूर ! मज़ीद कुछ इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''ह़क़ बात कहो अगर्चे कड़वी लगे। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत से मत डरो।''

मैं ने अ़र्ज़ किया, ''मज़ीद कुछ नसीह़त फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''अपने ऐ़बों को पेशे नज़र रखो ता कि लोगों के उ़यूब न उछाल सको।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب ، باب فی الصمت الاعن خیر، رقم ۲۷، ج ۳ص ۳۴۰)

(1908)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कुछ नसीह़त फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह हर भलाई को शामिल है और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि येही मुसल्मानों की रहबानियत (या'नी तर्के दुन्या) है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और उस की किताब की तिलावत को अपने ऊपर लाज़िम कर लो क्यूं कि येह तुम्हारे लिये ज़मीन पर नूर और आस्मानों में तुम्हारे चरचे का ज़रीआ़ है और अपनी ज़बान को अच्छी बात कहने के इ़लावा रोके रखो इस के ज़रीए़ तुम शैत़ान पर ग़ालिब आ जाओगे।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الصمت وحفظ اللسان، رقم ۱۸۱۷، ج ۱۰، ص ۵۴۲)

(1909)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को श-रफ़े मुलाक़ात बख़्शा तो इर्शाद फ़रमाया, ''ऐ अबू ज़र ! क्या मैं तुझे दो ख़स्लतों के बारे में न बताऊं जो कि ज़ाहिर में हलकी और मीज़ान में दूसरों से ज़ियादा भारी हैं ?'' अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''हुस्ने अख़्लाक़ और त़वील ख़ामोशी को अपने ऊपर लाज़िम कर लो, उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है मख़्लूक़ ने इन दोनों की मिस्ल कोई अ़मल नहीं किया।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فی الصمت وحفظ اللسان، رقم ۱۸۱۲۵، ج ۱۰، ص ۵۴۰)

(1910)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया, ''ऐ अबू दरदा ! क्या मैं तुझे ऐसे दो कामों के बारे में न बताऊं जिन की पाबन्दी आसान और अज्र अ़ज़ीम है और तुम इन की मिस्ल किसी और अ़मल के साथ बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में ह़ाज़िर नहीं हो सकते ? वोह दो काम त़वील ख़ामोशी और हुस्ने अख़्लाक़ हैं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی الخلق الحسن، رقم ۲۳، ج ۳ص ۲۷۴)

(1911)...... हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं एक आ'राबी नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल सिखाइये जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे।'' इर्शाद फ़रमाया, ''तुम ने निहायत कम अल्फ़ाज़ में बहुत बड़ा सुवाल कर लिया, तने तन्हा ग़ुलाम आज़ाद करो या किसी की मदद से ग़ुलाम आज़ाद करो और अगर तुम इस की त़ाक़त न रखो तो भूके को खाना खिलाओ और प्यासे को पानी पिलाओ और नेकी का हुक्म दो और बुराई से मन्अ़ करो फिर अगर तुम इस की त़ाक़त न रखो तो अच्छी बात के इ़लावा अपनी ज़बान को रोके रखो।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب ، باب فی الصمت الاعن خیر، رقم ۴، ج ۳، ص ۳۳۶)

(1912)...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ?'' फ़रमाया कि ''अपनी ज़बान अपने क़ाबू में रखो और अपने घर को वसीअ़ रखो और अपने गुनाह पर रो लिया करो।'' (ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، رقم ۲۴۱۴، ج ۴، ص ۱۸۲)

(1913)...... हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस ने अपनी ज़बान पर क़ाबू पा लिया और अपने घर को वसीअ़ किया और अपने गुनाह पर रोया।'' (المعجم الکبیر، باب من اسمہ ابراھیم رقم ۲۳۴۰، ج ۲، ص ۱۷)

(1914)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने जिसे दाढ़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) के शर से बचा लिया वोह जन्नत में दाख़िल होगा।'' (ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، رقم ۲۴۱۷، ج ۴، ص ۱۸۴)

एक रिवायत में है कि ''जो मुझे दाढ़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) की ज़मानत दे मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।''

(بخاری، کتاب الرقائق، باب حفظ اللسان، رقم ۶۴۷۴، ج ۴، ص ۲۴۰)

(1915)...... हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ''क्या मैं तुम्हें ऐसे दो अ़मल न बताऊं जिन्हें करने वाला जन्नत में दाख़िल होगा ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''बन्दा अपनी दाढ़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दो टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) की ह़िफ़ाज़त करे।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فی الصمت وحفظ اللسان، رقم ۱۸۱۴۶، ج ۱۰، ص ۵۳۵)

(1916)...... हज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने अपनी दाढ़ों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी ज़बान) और दोनों टांगों के दरमियान वाली चीज़ (या'नी शर्मगाह) की ह़िफ़ाज़त की वोह जन्नत में दाख़िल होगा।'' (المعجم الکبیر، مسند ابی رافع، رقم ۹۱۹، ج ۱، ص ۳۱۱ تقدم ذکرہ)

(1917)...... हज़रते अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अमल कौन सा है ?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ख़ामोश रहे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''वोह अमल ज़बान की हिफ़ाज़त करना है।'' (الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الصمت الاعن خیر، رقم ۱۰، ج ۳ ص ۳۳۶)

(1918)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब तक बन्दा अपनी ज़बान को महफ़ूज़ न कर ले ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता।''

(مجمع الزوائد کتاب الزھد، باب ماجاء فی الصمت وحفظ اللسان، رقم ۱۸۱۷۷، ج ۱۰، ص ۵۴۳)

(1919)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने अपना गुस्सा पी लिया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस से अपना अज़ाब दूर फ़रमाएगा और जिस ने अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त की अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की सित्र पोशी फ़रमाएगा।''

एक और रिवायत में है कि ''जिस ने अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त की अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की पर्दा पोशी फ़रमाएगा और जिस ने अपना गुस्सा रोक लिया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस से अपना अज़ाब दूर फ़रमाएगा और जिस ने अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में उ़ज़्र पेश किया अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस का उ़ज़्र क़बूल फ़रमाएगा।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی الصمت الاعن خیر، رقم ۱۱، ج ۳، ص ۳۳۷)

(1920)...... हज़रते सय्यिदुना रक्ब मिस्री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''उस के लिये खुश ख़बरी है जिस ने अपने इल्म पर अमल किया और अपना ज़रूरत से ज़ाइद माल (राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में) ख़र्च किया और फ़ुज़ूल गुफ़्त-गू से रुक गया।'' (المعجم الکبیر، مسند رکب المصری، رقم ۴۶۱۶، ج ۵، ص ۷۱ بالاختصار)

(1921)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब तक बन्दे का दिल सीधा न हो जाए उस का ईमान दुरुस्त नहीं हो सकता और जब तक उस की ज़बान सीधी न हो जाए उस का दिल सीधा नहीं हो सकता और जिस की शरारतों से उस के पड़ोसी महफ़ूज़ न रहें वोह जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता।'' (مسند احمد بن حنبل، رقم ۱۳۰۴۷، ج ۴، ص ۳۹۵)

(1922)...... मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं एक सफ़र के मौक़अ़ पर नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ था एक सुब्ह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की कुरबत में सैर करते हुए मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसे अमल के बारे में बताइये जो मुझे जन्नत में

दाख़िल और जहन्नम से दूर कर दे।" इर्शाद फ़रमाया कि "तुम ने एक बहुत बड़ा सुवाल किया है और बेशक येह काम उसी के लिये आसान है जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आसान फ़रमाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ और नमाज़ अदा करो और ज़कात अदा करो और र-मज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का हज करो।" फिर फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें ख़ैर के दरवाज़ों के बारे में न बताऊं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" फ़रमाया कि "रोज़ा (जहन्नम से) ढाल है और स-दक़ा गुनाह को इस त़रह़ मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है। और आधी रात को आदमी का नमाज़ पढ़ना सालिहीन की अ़लामत है फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान की तिलावत की,

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۠ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (پ۲۱، السجدہ:۱۶،۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

फिर फ़रमाया कि "मैं तुम्हें हर चीज़ की अस्ल, इस के सुतून और इस के कौहान की बुलन्दी के बारे में न बताऊं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" फ़रमाया, "हर चीज़ की अस्ल इस्लाम क़बूल करना है और इस का सुतून नमाज़ पढ़ना है और इस के कौहान की बुलन्दी जिहाद है।" फिर फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें इन सब की बक़ा के ज़राएअ़ के बारे में न बताऊं ?" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।" तो अपनी ज़बाने मुबारक की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया कि, "इसे क़ाबू में कर लो।" मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम अपनी ज़बान से जो गुफ़्त-गू करते हैं क्या हम से इस का मुआ-ख़ज़ा होगा ?" फ़रमाया, "तेरी मां तुझे रोए ! लोगों को जहन्नम में मुंह के बल या नाक के बल उन की ज़बान की लग़्ज़िशें ही घसीटेंगी।" (ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمۃ الصلوۃ، رقم ۲۶۲۵، ج۴، ص۲۸۰)

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सुवाल किया, "या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी के बा'द (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ना सब से अफ़्ज़ल अ़मल है ?" फ़रमाया "नहीं ! मगर येह एक बहुत ही अच्छा अ़मल है।" फिर अ़र्ज़ किया, "क्या र-मज़ान के रोज़ों के बा'द नफ़्ली रोज़े रखना सब से अफ़्ज़ल अ़मल है ?" फ़रमाया "नहीं ! मगर येह एक बहुत ही अच्छा अ़मल है।" फिर अ़र्ज़ किया, "क्या ज़कात की अदाएगी के बा'द सब से अफ़्ज़ल अ़मल स-दक़ा करना है ?" फ़रमाया, "नहीं ! मगर येह एक निहायत अच्छा अ़मल है।" फिर अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! फिर सब से अफ्ज़ल अमल कौन सा है ?'' तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ज़बाने अक्दस को निकाल कर उस पर अपनी मुबारक उंगली रख दी । येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ''اِنَّالِلّٰهِ وَاِنَّاۤاِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ'' पढ़ा और अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम जो गुफ़्त-गू करते हैं क्या वोह लिखी जाती है और क्या हम से इस का मुआ-ख़ज़ा होगा ?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक कई मरतबा ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के कन्धे पर मारा और फ़रमाया कि ''ऐ इब्ने जबल ! तेरी मां तुझे रोए ? लोगों को जहन्नम में नाक के बल उन की ज़बान की लग़्ज़िशें ही घसीटेंगी ।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب الترغیب فی الصمت، رقم ۲۵، ج ۳، ص ۳۳۹)

(1923)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे वसिय्यत फ़रमाइये ।'' फ़रमाया, ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इस त़रह़ इबादत करो कि गोया तुम उसे देख रहे हो और अपने आप को मुर्दों में शुमार करो और अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें ऐसी चीज़ के बारे में बताऊं जो तुम्हारे लिये इन सब से ज़ियादा इख़्तियार में हो ? ।'' फिर अपनी ज़बाने अक्दस की त़रफ़ अपने दस्ते मुबारक से इशारा कर के फ़रमाया कि ''वोह येह है ।''

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب، باب فی الصمت الاعن خیر، رقم ۳۰، ج ۳، ص ۳۴۱)

(1924)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो ख़ामोश रहा उस ने नजात पाई ।''

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم ۲۵۰۹، ج ۴، ص ۲۲۵ رواہ عن عبداللہ بن عمرو)

(1925)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जो सलामत रहना चाहता है वोह ख़ामोशी इख़्तियार कर ले ।''

(فیض القدیر، رقم ۸۷۴۶، ج ۶، ص ۱۹۵)

===

फ़सादे ज़माना के वक़्त गोशा नशीनी का सवाब

(1926)...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने ऊंट पर सुवार थे कि उन के बेटे उ़मर उन के पास आए। जब ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन्हें देखा तो फ़रमाया कि ''मैं इस सुवार के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं।'' फिर अपने ऊंट से उतर गए तो उन के बेटे ने अ़र्ज़ किया, ''आप अपने ऊंट से उतर गए और लोगों को हुकूमत के बारे में लड़ता हुवा छोड़ दिया ?'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन के सीने पर हाथ मार कर इर्शाद फ़रमाया कि ''ख़ामोश रहो ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ परहेज़ गार, क़नाअ़त पसन्द और गुमनाम बन्दे को पसन्द फ़रमाता है।'' (مسلم، کتاب الزھد، رقم ۲۹۶۵،ص ۱۵۸۵)

(1927)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर के पास रोते हुए पाया तो पूछा कि ''आप को किस चीज़ ने रुलाया ?'' अ़र्ज़ किया, ''उस ह़दीसे मुबारक ने जिसे मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि ''थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया से दुश्मनी की गोया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ जंग का ए'लान कर दिया और बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन नेक, परहेज़ गार और गुमनाम बन्दों को पसन्द फ़रमाता है जो ग़ाइब हों तो उन की कमी मह़सूस न की जाए और जब ह़ाज़िर हों तो उन्हें पहचाना न जाए, उन के दिल हिदायत के चराग़ हैं, वोह हर अंधेरी ज़मीन से निकल जाते हैं।'' (ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ السلامۃ، رقم ۳۹۸۹، ج ۴،ص ۳۵۰)

(1928)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अ़न्क़रीब मुसल्मान का सब से बेहतरीन माल वोह रेवड़ होगा जिन्हें ले कर वोह अपने दीन को फ़ितनों से बचाने के लिये चोटियों और बारिश बरसने की जगहों पर ले कर चला जाएगा।'' (بخاری، کتاب الایمان، باب من الدین الفرار من الفتن، رقم ۱۹، ج ۱،ص ۱۸)

(1929)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''लोगों में से सब से बेहतर ज़िन्दगी उस शख़्स की है जो अपने घोड़े की पीठ पर सुवार हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में लगाम थामे उसे तेज़ी से दौड़ाता है और जब भी जंग का नक़्क़ारा या दुश्मन की लल्कार सुनता है तो क़त्ल करने या शहीद हो जाने के लिये उस जगह पहुंच जाता है और फिर उस शख़्स की है जो दुन्या से कनारा कश हो कर किसी चोटी पर अपने रेवड़ में ज़िन्दगी बसर करे, नमाज़

क़ाइम करे, ज़कात अदा करे और मौत आने तक अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता रहे वोह लोगों में से भलाई पर है ।" (مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الجھاد، رقم ۱۸۸۹، ص ۱۰۴۸)

(1930)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क्या मैं तुम्हें सब से बेहतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह शख़्स है जो राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपने घोड़े की रस्सी थामे हुए हो ।" फिर फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें इस से कम द-रजे वाले शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह शख़्स है जो दुन्या से कट कर अपने रेवड़ में रहते हुए उन मवेशियों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का हक़ अदा करे ।" फिर फ़रमाया, "क्या मैं तुम्हें सब से बदतर शख़्स के बारे में न बताऊं ? येह वोह शख़्स है जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा दे कर मांगा जाए मगर वोह फिर भी अ़ता न करे ।"

(ترمذی، کتاب فضائل الجھاد، باب ماجاء ای الناس خیر، رقم ۱۶۵۸، ج ۳، ص ۲۴۶)

एक रिवायत में है कि "क्या मैं तुम्हें उस शख़्स के बारे में न बताऊं जो उस (पहले शख़्स) के साथ है ?" हम ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये ।" फ़रमाया कि "येह वोह शख़्स है जो किसी घाटी में रहते होते नमाज़ क़ाइम करे और ज़कात अदा करे और लोगों के शर से बचा रहे ।" (نسائی، کتاب الزکاۃ، باب من یسال باللہ، ج ۵، ص ۸۳)

(1931)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! लोगों में सब से अफ़्ज़ल कौन है ?" फ़रमाया "राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में अपनी जान और माल के ज़रीए जिहाद करने वाला ।" अ़र्ज़ किया, "फिर कौन अफ़्ज़ल है ?" फ़रमाया, "किसी घाटी में गोशा नशीनी इख़्तियार कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने वाला ।"

एक रिवायत में है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने और लोगों को अपने शर से मह़फ़ूज़ रखने वाला ।" (بخاری، کتاب الجھاد والسیر، باب افضل الناس مؤمن، الخ رقم ۲۷۸۶، ج ۲، ص ۲۴۹) (کتاب الرقاق، باب العزلۃ راحۃ... الخ رقم ۶۴۹۴، ج ۴، ص ۲۴۵)

(1932)...... हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि "मेरे नज़्दीक सब से पसन्दीदा शख़्स वोह है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल पर ईमान लाए और नमाज़ अदा करे और ज़कात अदा करे और अपने माल और अपने दीन की ह़िफ़ाज़त करे और लोगों से कनारा कश हो जाए ।" (الترغیب والترھیب، الترغیب فی العزلۃ لمن یأمن علی نفسہ عند الاختلاط، رقم ۸، ج ۳، ص ۲۹۷)

(1933)...... हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हम से पांच चीज़ों के बारे में वा'दा फ़रमाया कि "जो शख़्स इन में से एक पर भी अ़मल करेगा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर होगा, जिस ने मरीज़ की इयादत की या जनाज़े के साथ चला या राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के लिये निकला या ह़ाकिमे इस्लाम की इ़ज़्ज़तो तौक़ीर करने निकला या घर में बैठा रहा और लोगों के शर से मह़फ़ूज़ रहा और लोग उस के शर से मह़फ़ूज़ रहे ।" (مسند احمد بن حنبل، رقم ۲۲۱۵۴، ج ۸، ص ۲۵۵)

एक रिवायत में है कि ''जो राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद करने निकला वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है और जिस ने मरीज़ की इयादत की वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है और जो हाकिमे इस्लाम के पास उस की इज़्ज़तो तौक़ीर के लिये हाज़िर हुवा वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है और जो अपने घर में बैठा रहा और किसी की ग़ीबत न की वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ज़मानत में है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، مسند معاذ بن جبل، رقم ۳۷۳، ج۱، ص۲۹۵)

(1934)...... हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''छ ख़स्लतें ऐसी हैं कि मुसल्मान इन में से जिस पर भी मरेगा उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर होगा।'' फिर उन ख़स्लतों का ज़िक्र फ़रमाया और उन में उस शख़्स का भी तज़्किरा फ़रमाया जो अपने घर में बैठा रहा और मुसल्मानों की ग़ीबत न की और न ही उन से नाराज़ हुवा और न उन से किसी चीज़ का बदला लिया। (مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب فضل الجہاد، رقم ۹۴۲۹، ج۵، ص۵۰۵)

(1935)...... हज़रते सय्यिदुना उक़्बा बिन आमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ?'' फ़रमाया, ''अपनी ज़बान अपने क़ाबू में रखो और अपने घर को वसीअ़ रखो और अपने गुनाह पर रोया करो।'' (ترمذی، کتاب الزہد، باب حفظ اللسان، رقم ۲۴۱۴، ج۴، ص۱۸۲)

त़-बरानी ने हज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत किया कि ''जिस ने अपनी ज़बान पर क़ाबू पा लिया और घर को भी वसीअ़ कर लिया और अपने गुनाह पर रो लिया उस के लिये खुश ख़बरी है।'' (المعجم الاوسط، رقم ۲۳۴۰، ج۲، ص۱۷)

(1936)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि दीनदार को अपना दीन बचाने के लिये एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ और एक ग़ार से दूसरी ग़ार की त़रफ़ भागना पड़ेगा तो जब ऐसा ज़माना होगा तो रोज़ी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना राज़गी ही से हासिल की जाएगी फिर जब ऐसा ज़माना आ जाएगा तो आदमी अपने बीवी बच्चों के हाथों हलाक होगा, अगर उस के बीवी बच्चे न हों तो वोह अपने वालिदैन के हाथों हलाक होगा, अगर उस के वालिदैन न हुए तो वोह रिश्तेदारों और पड़ोसियों के हाथों हलाक होगा।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! वोह कैसे ?'' फ़रमाया कि ''वोह उसे उस की तंगदस्ती पर आ़र दिलाएंगे तो वोह अपने आप को हलाकत में डालने वाले कामों में मसरूफ़ कर देगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، باب فی العزلۃ لمن لا یامن...الخ رقم ۱۲، ج۳، ص۲۹۹)

(1937)...... हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम ! मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक जिसे इम्तिहान से बचा लिया गया वोह ख़ुश बख़्त है, बेशक जिसे आज़माइश से बचा लिया गया वोह ख़ुश बख़्त है, बिला शुबा जिसे फ़ितनों से बचा लिया गया वोह सआदत मन्द है और वोह भी ख़ुश क़िस्मत है जिसे आज़माइश में मुब्तला किया गया तो उस ने हसरत व शौक़ के साथ उस पर सब्र किया।''

(ابوداؤد، کتاب الفتن والملاحم، باب فی النھی عن السعی فی الصلاۃ، رقم ۴۲۶۳، ج۴، ص۱۳۷)

(1938)...... हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो दुन्या से कट कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के हर काम में किफ़ायत फ़रमाएगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अता फ़रमाएगा जिस का उसे गुमान भी न होगा और जो (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से) कट कर दुन्या की तरफ़ आएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे दुन्या के सिपुर्द कर देगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب ماجاء فی العزلۃ، رقم ۱۸۱۸۹، ج۱۰، ص۵۴۶)

✡===✡===✡ ===✡

ज़ुल्म का साथ न देने का सवाब

(1939)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए। उस वक़्त हम चौरानवे[94] या पिचानवे[95] की ता'दाद में अ़रब के लोग थे जब कि बाक़ी अ़-जमी लोग थे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि "सुनो ! क्या तुम ने सुना है कि मेरे बा'द कुछ उ-मरा होंगे, जो उन के पास जा कर उन के झूट में उन की तस्दीक़ करे और उन के मज़ालिम में उन की मदद करेगा तो वोह मुझ से नहीं और मैं उस से नहीं और न ही वोह मेरे ह़ौज़ पर आ सकेगा और जो उन के पास न जाए और उन के ज़ुल्म में उन की मदद न करे और न ही उन के झूट की तस्दीक़ करे तो वोह मुझ से है और मैं उस से हूं और वोह ह़ौज़ पर मेरे पास ह़ाज़िर होगा।"

(نسائی، کتاب البیعۃ، باب ذکر الوعید لمن اعان، ج۷، ص۱۶۰)

(1940)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बे वुक़ूफ़ों की हुक्मरानी से पनाह में रखे।" उन्हों ने अ़र्ज़ किया, "बे वुक़ूफ़ों की हुक्मरानी क्या है ?" फ़रमाया कि "मेरे बा'द कुछ हुक्मरान होंगे जो मेरी हिदायत में से रहनुमाई ह़ासिल न करेंगे तो जिस ने उन के झूट की तस्दीक़ की और ज़ुल्म पर उन की मदद की वोह मुझ से नहीं और मैं उन से नहीं और न ही वोह मेरे ह़ौज़ पर आ सकेगा और जिस ने उन के झूट की तस्दीक़ न की और न ही ज़ुल्म पर उन की मदद की वोह मुझ से है और मैं उस से हूं और अ़न्क़रीब वोह मेरे ह़ौज़ पर ह़ाज़िर होगा।" फिर फ़रमाया, "ऐ का'ब बिन उ़जरह ! रोज़े ढाल हैं और स-दक़ा गुनाह को इस त़रह़ मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है और नमाज़ क़ुरबानी है।" या फ़रमाया कि "नमाज़ बुरहान है, दो त़रह़ के लोग सुब्ह़ करते हैं एक तो अपनी जान को ख़रीद कर आज़ाद कर देता है और दूसरा अपनी जान को बेच कर हलाक कर देता है।"

(مسند احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبداللہ، رقم ۱۴۴۴۸، ج۵، ص۶۴)

एक रिवायत में है कि "अ़न्क़रीब कुछ हुक्मरान होंगे जो उन के पास आया और उन के ज़ुल्म में उन की मदद की और उन के झूट की तस्दीक़ की वोह मुझ से नहीं और मैं उस से नहीं और न ही वोह मेरे ह़ौज़ पर आ सकेगा, और जो उन के पास नहीं गया और उन के ज़ुल्म में उन की मदद नहीं की और न ही उन के झूट पर उन की तस्दीक़ की वोह मुझ से है और मैं उस से हूं और वोह अ़न्क़रीब मेरे ह़ौज़ पर ह़ाज़िर होगा।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب البر والاحسان الصدق والامر بالمعروف...الخ رقم ۲۸۲، ج۱ ص۲۵۰)

(1941)...... ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे

परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि हम इशा की नमाज़ के बा'द मस्जिद में मौजूद थे। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाई फिर उसे झुका लिया यहां तक कि हम समझे कि आस्मान में कोई वाक़िआ़ रूनुमा हो गया है। फिर फ़रमाया कि ''सुन लो कि मेरे बा'द कुछ हुक्मरान होंगे जो ज़ुल्म करेंगे और झूट बोलेंगे तो जिस ने उन के झूट की तस्दीक़ की और उन के ज़ुल्म में उन की मदद की वोह मुझ से नहीं और न ही मैं उस से हूं और जिस ने उन के झूट की तस्दीक़ नहीं की और न ही उन के ज़ुल्म में उन की मदद की तो वोह मुझ से है और मैं उस से हूं।''

(مسند احمد بن حنبل،مسند نعمان بن بشیر،رقم ۱۸۳۸۱،ج۶،ص۳۷۳)

(1942)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''कुछ हुक्मरान होंगे जिन्हें जहन्नम के पर्दे या किनारे ढांक लेंगे, वोह झूट बोलेंगे और ज़ुल्म करेंगे तो जो उन के पास आ कर उन के झूट पर उन की तस्दीक़ करेगा और उन के ज़ुल्म में उन की मदद करेगा तो वोह मुझ से नहीं और मैं उस से नहीं और जो उन के पास नहीं आएगा और न ही उन के झूट की तस्दीक़ करेगा और न उन के ज़ुल्म में उन की मदद करेगा तो मैं उस से हूं और वोह मुझ से है।''

(مسند احمد بن حنبل،مسند ابوسعید خُدری،رقم ۱۱۹۲،ج۴،ص۵۰)

एक रिवायत में है कि ''जिस ने उन के झूट की तस्दीक़ की और उन के ज़ुल्म में उन की मदद की तो मैं उस से बरी हूं और वोह मुझ से बरी है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،کتاب البر والاحسان،باب الصدق امر بالمعروف...الخ،رقم ۲۸۶،ج۱،ص۲۵۲)

✡ ===✡ ===✡ ===✡

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करने का सवाब

इस बारे में आयाते करीमा :

(1) اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ التَّوَّابِیۡنَ وَیُحِبُّ الۡمُتَطَہِّرِیۡنَ۝ (پ۲،البقرہ:۲۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।

(2) اِنَّمَا التَّوۡبَۃُ عَلَی اللّٰہِ لِلَّذِیۡنَ یَعۡمَلُوۡنَ السُّوۡٓءَ بِجَہَالَۃٍ ثُمَّ یَتُوۡبُوۡنَ مِنۡ قَرِیۡبٍ فَاُولٰٓئِکَ یَتُوۡبُ اللّٰہُ عَلَیۡہِمۡ ؕ وَکَانَ اللّٰہُ عَلِیۡمًا حَکِیۡمًا۝ (پ۴،النساء:۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्ही की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में तौबा कर लें ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इ़ल्म व ह़िक्मत वाला है।

(3) فَمَنۡ تَابَ مِنۡۢ بَعۡدِ ظُلۡمِہٖ وَاَصۡلَحَ فَاِنَّ اللّٰہَ یَتُوۡبُ عَلَیۡہِ ؕ (پ۶،المائدہ:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो अपने ज़ुल्म के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेह्र से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा।

(4) وَالَّذِیۡنَ عَمِلُوا السَّیِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوۡا مِنۡۢ بَعۡدِہَا وَاٰمَنُوۡۤا ۫ اِنَّ رَبَّکَ مِنۡۢ بَعۡدِہَا لَغَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ۝ (پ۹،الاعراف:۱۵۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने बुराइयां कीं और उन के बा'द तौबा की और ईमान लाए तो इस के बा'द तुम्हारा रब बख़्शने वाला मेह्रबान है।

(5) وَاَنِ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّکُمۡ ثُمَّ تُوۡبُوۡۤا اِلَیۡہِ یُمَتِّعۡکُمۡ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی وَّیُؤۡتِ کُلَّ ذِیۡ فَضۡلٍ فَضۡلَہٗ ؕ (پ۱۱،الھود:۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि अपने रब से मुआफ़ी मांगो फिर उस की त़रफ़ तौबा करो तुम्हें बहुत अच्छा बरत्ना देगा एक ठहराए वा'दे तक और हर फ़ज़ीलत वाले को उस का फ़ज़्ल पहुंचाएगा।

(6) وَاِنِّیۡ لَغَفَّارٌ لِّمَنۡ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اہۡتَدٰی۝ (پ۱۶،طٰہٰ:۸۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा।

(7) اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِکَ یُبَدِّلُ اللّٰہُ سَیِّاٰتِہِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَکَانَ اللّٰہُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۝ (پ۱۹،الفرقان:۷۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

(8) وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَۃَ عَنْ عِبَادِہٖ وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَیَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝ (پ۲۵،الشوریٰ:۲۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता और गुनाहों से दर गुज़र फ़रमाता है और जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(9) یٰۤاَیُّہَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَی اللّٰہِ تَوْبَۃً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰی رَبُّکُمْ اَنْ یُّکَفِّرَ عَنْکُمْ سَیِّاٰتِکُمْ وَیُدْخِلَکُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِہَا الْاَنْہٰرُ ۙ (پ۲۸،التحریم:۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त हो जाए क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयां तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें बहें।

(10) اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِکَ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّۃَ وَلَا یُظْلَمُوْنَ شَیْـًٔا ۝ (پ۱۶،المریم:۶۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : मगर जो ताइब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो येह लोग जन्नत में जाएंगे और उन्हें कुछ नुक़्सान न दिया जाएगा।

(11) اَلَّذِیْنَ یَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَہٗ یُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّہِمْ وَیُؤْمِنُوْنَ بِہٖ وَیَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ کُلَّ شَیْءٍ رَّحْمَۃً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِیْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِیْلَکَ وَقِہِمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ ۝ (پ۲۴،المؤمن:۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जो अ़र्श उठाते हैं और जो उस के गिर्द हैं अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और उस पर ईमान लाते और मुसल्मानों की मग़्फ़िरत मांगते हैं ऐ रब हमारे, तेरे रह़मत व इ़ल्म में हर चीज़ की समाई है तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ﹰالَّتِیْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّیّٰتِهِمْ ؕ اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ۙ وَقِهِمُ السَّیِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّیِّاٰتِ یَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِکَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝ (پ۲۴،المؤمن:۸،۹) (12)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तूने उन से वा'दा फ़रमाया है और उन को जो नेक हों उन के बाप, दादा और बीबियों और औलाद में बेशक तू ही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है और उन्हें गुनाहों की शामत से बचा ले और जिसे तू उस दिन गुनाहों की शामत से बचाए तो बेशक तूने उस पर रह़्म फ़रमाया और येही बड़ी काम्याबी है ।

इस बारे में अह़ादीसे मुक़द्दसा :

(1943)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब सूरज मग़रिब से तुलूअ़ होगा तो जिस ने सूरज के मग़रिब से तुलूअ़ होने से पहले तौबा कर ली अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा ।'' (مسلم،کتاب الذکروالدعاء،باب استحباب الاستغفار،رقم ۲۷۰۳،ص۱۴۴۹)

(1944)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''अगर तुम गुनाह करते रहो यहां तक कि वोह आस्मान तक पहुंच जाएं फिर तुम तौबा करो तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमा लेगा ।''

(ابن ماجہ،کتاب الزھد،باب ذکر التوبہ،رقم ۴۲۴۸،ج۴،ص۴۹۰بتغیر قلیل)

(1945)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, सात दरवाज़े बन्द हैं और एक दरवाज़ा सूरज के मग़रिब से तुलूअ़ होने तक तौबा के लिये खुला हुवा है ।'' (المعجم الکبیر،مسند ابن مسعود،رقم ۱۰۴۷۹،ج۱۰،ص۲۰۶)

(1946)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़िर बिन हुबैश رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन अ़स्साल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास मोज़ों पर मस्ह़ के बारे में सुवाल करने के लिये गया (फिर एक ह़दीसे मुबा-रका ज़िक्र की, इस के बा'द फ़रमाते हैं), मैं ने पूछा, ''क्या आप ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़्वाहिशात के बारे में कुछ सुना है ?'' उन्हों ने फ़रमाया, ''हां ! हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे कि एक आ'राबी ने बा आवाज़े बुलन्द निदा की, ''या मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उतनी ही आवाज़ में जवाब दिया कि ''पकड़ लो ।'' तो मैं ने उस

शख़्स से कहा, ''तुझ पर अफ़्सोस है अपनी आवाज़ को आहिस्ता कर, तू इस वक़्त रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में है और तुझे इन की बारगाह में आवाज़ बुलन्द करने से मन्अ़ किया गया है।'' तो उस ने कहा, ''ख़ुदा की क़सम ! मैं अपनी आवाज़ पस्त नहीं करूंगा।'' फिर उस आ'राबी ने अ़र्ज़ किया, ''एक शख़्स किसी क़ौम के साथ महब्बत करता है मगर अभी तक उस क़ौम से मिल नहीं सका।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आदमी क़ियामत के दिन उसी के साथ होगा जिस से वोह महब्बत करता है।'' रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमें येह ह़दीस बयान करते रहे यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मग़रिब की त़रफ़ के एक दरवाज़े का ज़िक्र फ़रमाया, जिस की चौड़ाई की मसाफ़त 40 या 70 साल है।

(इस ह़दीसे मुबारक के एक रावी सुफ़्यान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं वोह दरवाज़ा मुल्के शाम की त़रफ़ है।) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे उसी दिन पैदा फ़रमाया था जिस दिन ज़मीन व आस्मान को पैदा फ़रमाया था और जब तक सूरज इस दरवाज़े से तुलूअ़ न हो जाए, येह तौबा के लिये खुला रहेगा।''

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبۃ، رقم ۳۵۴۶، ج۵، ص ۳۱۵)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमें बयान फ़रमाते रहे यहां तक आप ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मग़रिब की त़रफ़ एक दरवाज़ा बनाया है जिस की चौड़ाई की मसाफ़त 70 साल है वोह उस वक़्त तक बन्द नहीं होगा जब तक सूरज उस की त़रफ़ से तुलूअ़ न हो जाए और उस का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में है,

يَوْمَ يَاْتِیْ بَعْضُ اٰیٰتِ رَبِّكَ لَا یَنْفَعُ نَفْسًا اِیْمَانُهَا (پ۸، الانعام: ۱۵۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन तुम्हारे रब की वोह एक निशानी आएगी किसी जान को ईमान लाना काम न देगा।

(1947)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब तक बन्दे की रूह़ हुल्क़ूम (गले) तक न पहुंच जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमाता है।'' (سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر التوبۃ، رقم ۴۲۵۳، ج۴، ص ۴۹۲)

(1948)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम से पहले एक शख़्स ने निनानवे क़त्ल किये थे। जब उस ने अहले ज़मीन में सब से बड़े आ़लिम के बारे में पूछा तो उसे एक राहिब के बारे में बताया गया फिर वोह उस के पास आया और उस से कहा कि ''मैं ने निनानवे क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?'' राहिब ने जवाब दिया, ''नहीं।'' फिर उस ने उसे भी क़त्ल कर दिया और सो[100] का अ़दद पूरा कर लिया। फिर उस ने अहले ज़मीन के सब से बड़े आ़लिम के बारे में सुवाल किया तो उसे एक आ़लिम के बारे में बताया गया तो उस ने उस आ़लिम से कहा कि ''मैं ने सो क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?'' उस ने जवाब दिया, ''हां !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और तौबा के दरमियान क्या चीज़ रुकावट बन सकती है ? फ़ुलां फ़ुलां अ़लाक़े की त़रफ़ जाओ वहां कुछ लोग अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करते हैं, उन के साथ मिल कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और अपने अ़लाक़े की त़रफ़ वापस न आना क्यूं कि येह बुराई की सर ज़मीन है।''

वोह क़ातिल उस अ़लाक़े की त़रफ़ चल दिया जब वोह आधे रास्ते में पहुंचा तो उसे मौत आ गई तो रह़मत और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के बारे में बह़स करने लगे। रह़मत के फ़िरिश्ते कहने लगे कि ''येह बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में तौबा की निय्यत से इस त़रफ़ आया था।'' जब कि अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते कहने लगे कि ''इस ने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया।'' तो उन के पास एक फ़िरिश्ता इन्सानी सूरत में आया और उन्हों ने उसे सालिस मुक़र्रर कर लिया। उस फ़िरिश्ते ने उन से कहा कि ''दोनों त़रफ़ की ज़मीनों को नाप लो येह जिस ज़मीन के क़रीब होगा उसी का ह़क़दार है।'' जब ज़मीन नापी गई तो वोह उस ज़मीन के क़रीब था जिस के इरादे से वोह अपने शह्र से निकला था लिहाज़ा ! रह़मत के फ़िरिश्ते उसे ले गए।''

एक रिवायत में है कि ''वोह सालिह़ीन के शह्र से एक बालिश्त क़रीब था लिहाज़ा उन्ही में से कर दिया गया।''

एक रिवायत में है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस त़रफ़ की ज़मीन को हुक्म दिया कि ''दूर हो जा।'' और इस त़रफ़ की ज़मीन को हुक्म दिया कि ''क़रीब हो जा।'' फिर फ़रमाया, ''दोनों त़रफ़ की ज़मीन को नापो।'' तो उसे उस ज़मीन के एक बालिश्त क़रीब पाया गया तो उस की मग़्फ़िरत कर दी गई।

(مسلم،کتاب التوبۃ،باب قبول توبۃ القاتل،رقم ۲۷۶۶،ص ۱۴۷۹)

(1949)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म करने वाले शख़्स की किसी से मुलाक़ात हुई तो इस ने उस से पूछा, ''मैं ने निनानवे अफ़्राद को ज़ुल्मन क़त्ल किया है क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?'' तो उस ने कहा कि ''मैं तुझ से येह कहूं कि अल्लाह तआ़ला क़ातिल की तौबा क़बूल नहीं फ़रमाता तो येह झूट है, यहां एक इबादत गुज़ार क़ौम है उन के पास जाओ और उन के साथ मिल कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो।'' वोह शख़्स उन की त़रफ़ जाते हुए रास्ते में मर गया तो उस के बारे में रह़मत और अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों में बह़स हो गई तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ता भेजा उस ने उन से कहा कि ''दोनों जानिब की ज़मीन को नाप लो येह जिस अ़लाक़े के क़रीब होगा उन्हीं से होगा।'' तो उन्हों ने उसे तौबा करने वालों की बस्ती से उंगली के पोरे के बराबर क़रीब पाया तो उस की मग़्फ़िरत कर दी गई।''

(طبرانی کبیر،مسند امیر معاویہ،رقم ۸۶۷،ج ۱۹،ص ۳۶۹)

एक रिवायत में है कि दो शह्र थे एक नेक लोगों का और दूसरा ज़ालिमों का, ज़ुल्म वालों के शह्र से एक शख़्स सालिह़ीन के शह्र का इरादा कर के निकला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रास्ते में जहां

चाहा उसे मौत दे दी तो उस के बारे में फ़िरिश्ते और शैतान में झगड़ा हो गया शैतान कहने लगा कि "ख़ुदा की क़सम ! इस ने कभी मेरी ना फ़रमानी नहीं की।" फ़िरिश्ता कहने लगा कि "येह तौबा के इरादे से निकला था।" फिर उन दोनों के दरमियान येह तै हुवा कि देखा जाए कि येह किस शह्र के क़रीब है तो उन्हों ने उसे सालिहीन के अ़लाक़े से एक बालिश्त क़रीब पाया तो उस की मग़्फ़िरत कर दी गई।

हज़रते सय्यिदुना मा'मर عَلَيْهِ الرَّحْمَة कहते हैं कि मैं ने कुछ रावियों को येह कहते हुए भी सुना है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सालिहीन के शह्र को उस के क़रीब कर दिया।"

(الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب فی التوبہ والمبادرۃ...الخ، رقم ۲۷، ج۴، ص۵۰)

(1950)...... हज़रते क़ाज़ी शुरैह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हुए सुना कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, "ऐ इब्ने आदम ! मेरी तरफ़ उठ, मेरी रहमत तेरी तरफ़ चल कर आएगी और तू मेरी तरफ़ क़दम बढ़ा, मेरी रहमत तेरी तरफ़ दौड़ती हुई आएगी।"

(مسند احمد بن حنبل، مسند صحابی، رقم ۱۵۹۲۵، ج۵، ص۳۹۴)

(1951)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक बालिश्त क़रीब आता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत एक हाथ उस के क़रीब आ जाती है और जो एक हाथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़रीब आता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत उस के दो हाथ क़रीब आ जाती है और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ चल कर आता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत उस की तरफ़ दौड़ती हुई आती है, हालां कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बुलन्द व आ'ला है बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बुलन्द व आ'ला है बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बुलन्द व आ'ला है।" (الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب التوبۃ والمبادرۃ...الخ رقم ۳۱، ج۴، ص۵۲)

(1952)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है मैं अपने बन्दे के मुझ से किये जाने वाले गुमान के क़रीब हूं और जब वोह मेरा ज़िक्र करता है तो मेरी रहमत उस के साथ होती है।"

फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "ख़ुदा की क़सम ! तुम में से किसी शख़्स को बियाबान में अपना गुमशुदा माल मिल जाने पर जो ख़ुशी होती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे की तौबा पर इस से भी ज़ियादा ख़ुश होता है।"

फिर फ़रमाया कि रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, "और जो एक बालिश्त मेरे क़रीब हो मेरी रहमत एक हाथ उस के क़रीब हो जाती है और जो एक हाथ मेरे क़रीब आ जाए मेरी रहमत उस के दो हाथ क़रीब आ जाती है और जो चल कर मेरी तरफ़ आए मेरी रहमत दौड़ कर उस की तरफ़ आती है।"

(مسلم، کتاب التوبۃ، باب الحض علی التوبہ، رقم ۲۶۷۵، ص۱۴۶۷)

(1953)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''मौत की तमन्ना मत किया करो क्यूं कि उख़रवी ज़िन्दगी की इब्तिदा बहुत सख़्त है और बन्दे की उ़म्र का त़वील होना और उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौबा की तौफ़ीक़ मिलना खुश बख़्ती है।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند جابر، رقم ۱۴۵۷۰، ج۵، ص۸۷)

(1954)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''हर आदमी गुनहगार है और इन में से बेहतर वोह हैं जो तौबा कर लेते हैं।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر التوبہ، رقم ۴۲۵۱، ج۴، ص۴۹۱)

(1955)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मोमिन जब एक गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है फिर अगर वोह तौबा कर ले और गुनाह छोड़ दे और इस्तिग़्फ़ार करे तो वोह नुक्ता मिटा दिया जाता है और अगर वोह मज़ीद गुनाह करे तो उस सियाही में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है यहां तक कि उस के दिल पर ग़िलाफ़ आ जाता है येह वोही सियाही है जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी किताब में इस त़रह़ ज़िक्र किया है كَلَّا بَلْ سکتہ رَانَ عَلٰی قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ۝ (پ۳۰، المطففین:۱۴) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं ! बल्कि उन के दिलों पर ज़ंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

(مسند احمد بن حنبل، مسند ابی ھریرۃ، رقم ۷۹۵۷)

(1956)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लिखने वाले फ़िरिश्तों को उस के गुनाह भुला देता है, यहां तक कि क़ियामत के दिन जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के गुनाह पर कोई गवाह न होगा।''

(الترغیب والترھیب، الترغیب فی التوبۃ، رقم ۱۷، ج۴، ص۴۸)

(1957)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं।''

(سنن ابن ماجہ کتاب الزھد، باب ذکر التوبۃ، رقم ۴۲۵۰، ج۴، ص۴۹۱)

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि ''गुनाह पर क़ाइम रहते हुए तौबा करने वाला अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मज़ाक़ करने वाला है।''

(الترغیب والترھیب، الترغیب فی التوبۃ...الخ، رقم ۱۹، ج۴، ص۴۸)

(1958)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''बनी इस्राईल का ''किफ़्ल'' नामी शख़्स गुनाह करने से न चूकता था। एक मरतबा उस के पास एक मजबूर औ़रत आई तो उस ने उसे नव्वे दीनार इस शर्त़ पर दिये कि वोह इसे ज़िना करने दे। जब वोह उस औ़रत पर ह़ावी होने लगा तो वोह औ़रत कांपने लगी और रोना शुरूअ़ कर दिया। उस ने औ़रत से पूछा ''क्यूं रो रही हो ? क्या मैं तुम्हारे साथ ज़बर दस्ती कर रहा हूं ?'' तो उस औ़रत ने कहा ''नहीं ! मैं ने येह काम कभी न किया था मगर आज एक ज़रूरत ने मुझे येह काम करने पर मजबूर कर दिया।'' उस ने कहा कि ''तुम आज वोह काम कर रही हो जो तुम ने पहले कभी नहीं किया, जाओ, मैं ने जो कुछ तुम्हें दिया है वोह तुम्हारा है। ख़ुदा की क़सम ! आज के बा'द मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कभी ना फ़रमानी नहीं करूंगा।'' फिर उसी रात उस का इन्तिक़ाल हो गया। सुब्ह़ उस के दरवाज़े पर लिखा हुवा था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किफ़्ल की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।''

(سنن الترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، رقم ۲۵۰۴، ج۴، ص ۲۲۳)

(1959)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख़्स से ज़ियादा खुश होता है जो किसी हलाकत ख़ैज़ पथरीली ज़मीन पर पड़ाव करे। उस के साथ उस की सुवारी भी हो जिस पर उस के खाने पीने का सामान लदा हुवा हो। फिर वोह ज़मीन पर सर रख कर सो जाए और जब बेदार हो तो उस की सुवारी जा चुकी हो, तो वोह उसे तलाश करे यहां तक कि गर्मी और शिद्दते प्यास या जिस वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे वोह परेशान हो कर कहे कि मैं उसी जगह लौट जाता हूं जहां सो रहा था, और फिर सो जाता हूं यहां तक कि मर जाऊं। फिर वोह अपनी कलाई पर सर रख कर मरने के लिये सो जाए फिर जब बेदार हो तो उस के पास उस की सुवारी मौजूद हो और उस पर उस का तोशा भी मौजूद हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मोमिन बन्दे की तौबा पर उस शख़्स के अपनी सुवारी के लौटने पर खुश होने से भी ज़ियादा खुश होता है।''

(مسلم، کتاب التوبۃ، باب الحث علی التوبۃ، رقم ۲۷۴۴، ص ۱۴۶۸ بتغیر)

===
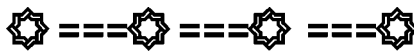
गुनाह के फ़ौरन बा'द नेकी करने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰت (پ۱۲،ھود:۱۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।

(1960)...... हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र और मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जहां भी रहो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहो और गुनाह के बा'द नेकी कर लिया करो कि वोह नेकी उस गुनाह को मिटा देगी और लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आओ।'' (سنن ترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ماجاء فی معاشرۃ الناس، رقم ۱۹۹۴، ج۳،ص ۳۹۷/۹۸)

(1961)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जब हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सफ़र का इरादा किया तो अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करो और किसी को उस का शरीक न ठहराओ।'' अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मज़ीद इर्शाद फ़रमाइये।'' फ़रमाया, ''जब तुम कोई बुराई करो तो नेकी कर लिया करो और अपने अख़्लाक़ को अच्छा बनाओ।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، مسند ابن عمرو، رقم ۵۲۵، ج۱،ص ۳۷۱)

(1962)...... हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे वसिय्यत फ़रमाइये।'' फ़रमाया कि ''जब तुम गुनाह करो तो उस के बा'द नेकी कर लिया करो वोह उस गुनाह को मिटा देगी।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहना भी नेकी है ?'' फ़रमाया कि ''येह सब से अफ़्ज़ल नेकी है।'' (المسند احمد بن حنبل، مسند ابوذر، رقم ۲۱۵۴۳، ج۸،ص ۱۱۴۔۱۱۳)

(1963)...... हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया, ''बेशक गुनाह के बा'द नेकी करने वाले की मिसाल उस शख़्स की त़रह है जिस की तंग ज़िरह ने उस का गला घोंट दिया हो फिर वोह नेक अ़मल करे तो उस ज़िरह का एक हल्क़ा खुल जाए फिर जब वोह दूसरी नेकी करे तो उस का दूसरा हल्क़ा भी खुल जाए यहां तक कि वोह ज़िरह ज़मीन पर गिर जाए।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند عقبۃ بن عامر، رقم ۱۷۳۰۹، ج۶،ص ۱۲۱)

फ़सादे ज़माना के वक़्त नेक अ़मल करने का सवाब

(1964)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''फ़सादे ज़माना के वक़्त इ़बादत करना मेरी त़रफ़ हिजरत करने की त़रह़ है।'' (مسلم، کتاب الفتن، باب فضل العبادۃ فی الھرج، رقم ۲۹۴۸، ص۱۵۷۹)

(1965)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जिस ने मेरी उम्मत के फ़साद के वक़्त मेरी सुन्नत को थामा उस के लिये एक शहीद का अज्र है।'' (الترغیب والترھیب، رقم ۵، ج۱، ص۴۱)

(1966)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उमय्या शा'बानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सा'लबा ख़ुशनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से पूछा ''ऐ अबू सा'लबा ! आप इस आयत के बारे में क्या कहते हैं, '' (پ۷، المآئدۃ:۱۰۵) عَلَیْکُمْ اَنْفُسَکُمْ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम अपनी फ़िक्र रखो।''

तो उन्हों ने फ़रमाया, ''ख़ुदा की क़सम ! तुम ने एक बा ख़बर शख़्स से सुवाल किया है जब मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इस आयत के बारे में सुवाल किया था तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''नेकी का हुक्म दो और बुराई से मन्अ़ करो यहां तक कि जब तुम देखो कि लालच की इत़ाअ़त और ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की इत्तिबाअ़ की जा रही है और दुन्या को तरजीह़ दी जा रही है और हर शख़्स अपनी राय को पसन्द करता है तो तुम अपने आप को देखो और अ़वाम को छोड़ दो फिर तुम्हारे बा'द कुछ दिन ऐसे आएंगे कि उन में सब्र करने वाला अपने हाथ में अंगारा पकड़ने वाले की त़रह़ होगा और उन दिनों में अ़मल करने वाले को उस की मिस्ल अ़मल करने वाले पचास लोगों का अज्र दिया जाएगा।'' (ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب قول تعالٰی علیکم انفسکم، رقم ۴۰۱۴، ج۴، ص۳۶۵)

एक रिवायत में है कि अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम में से पचास लोगों का अज्र या उन लोगों में से पचास लोगों का अज्र ?'' फ़रमाया कि ''तुम में से पचास लोगों का अज्र।'' (ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ المائدۃ، رقم ۳۰۶۹، ج۵، ص۴۱)

(1967)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम ऐसे ज़माने में हो कि तुम में से जिस ने इस चीज़ का दसवां हि़स्सा छोड़ दिया जिस का उसे हुक्म दिया गया तो वोह हलाक हो जाएगा फिर एक ऐसा ज़माना आएगा कि जो इस चीज़ में से दसवें हि़स्से पर अ़मल करेगा जिस का उसे हुक्म दिया गया तो नजात पा जाएगा।'' (ترمذی، کتاب الفتن، باب۷۹، رقم ۲۲۷۴، ج۴، ص۱۱۸)

=== === ===
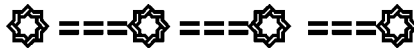
फु-क़रा और कमज़ोरों का सवाब

(1968)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा ''आप को क्या हुवा है कि आप फ़ुलां फ़ुलां की त़रह़ माल की तलाश में नहीं जाते ?'' उन्हों ने जवाब दिया कि ''मैं ने रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना है कि ''तुम्हारे पीछे एक दुश्वार गुज़ार घाटी है जिसे ज़ियादा बोझ उठाने वाले उ़बूर न कर सकेंगे।'' लिहाज़ा मैं पसन्द करता हूं कि उस घाटी को उ़बूर करने के लिये कम बोझ उठाऊं।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزکوۃ، رقم ۴۵۳۰، ج۳، ص۲۵۹)

एक रिवायत में है कि ''तुम्हारे सामने एक दुश्वार गुज़ार घाटी है जिस से वोही नजात पा सकेगा जिस का बोझ हलका होगा।'' (مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فضل الفقراء، ج۱۰، ص۶۴)

(1969)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास ह़ाज़िर हुवा। आप ''रब्ज़ा'' में थे और आप के पास एक ह़ब्शी औ़रत थी जिस पर सफ़ाई और जमाल के कोई आसार न थे आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''क्या तुम नहीं देख रहे कि येह काली औ़रत मुझ से क्या कह रही है? येह कह रही है कि मैं इ़राक़ आऊं, जब मैं इ़राक़ पहुंचूंगा तो वोह लोग अपनी दुन्या के साथ मेरी त़रफ़ माइल होंगे ह़ालां कि मेरे ख़लील صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे नसीह़त फ़रमाई है कि जहन्नम के पुल के इ़लावा एक फिस्लन वाला रास्ता है और हमें उस पर से गुज़रना है जब कि हमारे तोशे वज़्न दार होंगे और हलके फुलके लोग उस रास्ते से ज़रूर गुज़र जाएंगे जब कि हम त़ाक़त से ज़ियादा बोझ लादे हुए होंगे।'' (مسند احمد بن حنبل، مسند ابی ذر الغفاری، رقم ۲۱۴۷۳، ج۸، ص۹۵)

(1970)...... ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत करता है तो दुन्या को उस से ऐसे रोक लेता है जैसे तुम में से कोई अपने ज़ख़्म को पानी से बचाने के लिये ढांप लेता है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، باب الفقر والزھد والقناعۃ، رقم ۶۶۸، ج۲، ص۳۱)

(1971)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलाम अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते हुए सुना है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मेरा ह़ौज़ अ़दन से अ़म्मान की मसाफ़त जितना वसीअ़ है, उस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शह्द से ज़ियादा मीठा है और उस के जाम सितारों की ता'दाद के बराबर हैं, जो शख़्स उस में से एक घूंट पी लेगा उस के बा'द कभी प्यासा न होगा और उस ह़ौज़ पर सब से पहले आने वाले वोह मुहाजिरीन फ़ु-क़रा होंगे जिन के सर गर्द आलूद और कपड़े बोसीदा होंगे जो ख़ूब सूरत और नाज़ व निअ़्म वाली औ़रतों से निकाह़ नहीं कर सकते थे और न उन के लिये दरवाज़े खोले जाते हैं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया, ''मगर मैं ने तो ख़ूब सूरत औ़रतों में से फ़ाति़मा बिन्ते अ़ब्दुल मलिक से निकाह़ कर लिया है और मेरे लिये दरवाज़े खोल दिये गए हैं लेकिन अब मैं अपना सर नहीं धोऊंगा जब तक परागन्दा न हो जाए और अपने पहने हुए कपड़े नहीं धोऊंगा जब तक बोसीदा न हो जाएं।''

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب صفۃ اوانی الحوض، رقم ۲۴۵۲، ج۴، ص۲۰۱)

(1972)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''बेशक मुहाजिरीन फ़ु-क़रा क़ियामत के दिन अग़निया से चालीस साल आगे होंगे।'' (مسلم، کتاب الزھد والرقائق، رقم ۲۹۷۹، ص۱۵۹۱)

एक रिवायत में है कि ''मेरी उम्मत के फ़ु-क़रा अग़निया से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे।'' अ़र्ज़ किया गया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें उन का हुल्या बयान फ़रमाइये।'' फ़रमाया कि ''उन के कपड़े बोसीदा और सर परागन्दा होंगे और उन्हें दरवाज़ों से दाख़िल होने की इजाज़त नहीं दी जाती और न ही वोह ख़ूब सूरत औ़रतों से निकाह़ कर सकते हैं, उन ही के सदक़े मशरिक़ व मग़रिब वालों को रिज़्क़ दिया जाता है, उन पर अगर किसी का ह़क़ हो तो वोह पूरा अदा करते हैं जब कि उन के हुक़ूक़ पूरे अदा नहीं किये जाते।'' (الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، الترغیب فی الفقر، رقم ۱۲، ج۴، ص۷۳)

(1973)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ता़ने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी, ''اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْنِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ'' तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! मुझे मिस्कीनी की ज़िन्दगी और मिस्कीनी की मौत अ़ता़ फ़रमा और क़ियामत के दिन मिस्कीनों के साथ उठा।'' तो उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया, ''ऐसा क्यूं या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' फ़रमाया, ''क्यूं कि येह लोग अग़निया से चालीस साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे, ऐ आ़इशा ! मिस्कीन को ख़ाली हाथ न लौटाओ अगर्चे एक खजूर ही दे दिया करो, ऐ आ़इशा ! मसाकीन से मह़ब्बत करो और उन की क़ुरबत इख़्तियार करो ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन तुम्हें अपनी क़ुरबत अ़ता़ फ़रमाए।'' (ترمذی، کتاب الزھد، رقم ۲۳۵۹، ج۴، ص۱۵۷)

(1974)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़इज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक मुसल्मान फ़ु-क़रा इस त़रह़ दौड़ते हुए आएंगे जैसे कबूतर उड़ता है। जब उन से कहा जाएगा कि ह़िसाब के लिये रुक जाओ तो वोह कहेंगे, ''ख़ुदा की क़सम ! हमें कोई

ऐसी चीज़ नहीं दी गई जिस का हम से हिसाब लिया जाए।'' तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाएगा, ''मेरे बन्दे सच कहते हैं।'' फिर वोह दीगर लोगों से सत्तर साल पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।'' (طبرانی کبیر،رقم ۵۵۰۸،ج۶،ص۵۸)

(1975)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिद्दीक़ नाजी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बा'ज़ सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से रिवायत करते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मुसल्मान फु-क़रा अग़्निया से चार सो साल पहले जन्नत में दाख़िल होंगे यहां तक कि मालदार मोमिन कहेगा, ''काश ! मैं दुन्या में फ़क़ीर होता।'' किसी ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें उन के औसाफ़ बयान फ़रमाइये।'' तो इर्शाद फ़रमाया कि ''येह वोह लोग हैं कि जब कोई ना पसन्दीदा काम हो तो उन्हें भेजा जाए और जब कोई पसन्दीदा काम हो तो दूसरों को भेजा जाए और येह वोह लोग हैं जो दरवाज़े में दाख़िल होने से रोक दिये जाते हैं।''

(مسند احمد بن حنبل،مسند صحابی،رقم ۲۳۱۶۴،ج۹،ص۴۲)

(1976)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''फु-क़रा मुसल्मान अग़्निया से आधा दिन पहले जन्नत में दाख़िल होंगे और वोह पांच सो साल का होगा।''

(ترمذی،کتاب الزھد،باب ان فقراء المھاجرین الخ،رقم ۲۳۶۱،ج۴،ص۱۵۸)

वज़ाह़त : ह़ज़रते सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ह़दीस में सत्तर साल का तज़्किरा है जब कि इस ह़दीस में पांच सो साल का तज़्किरा है, इन अह़ादीस में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं लेकिन ज़ाहिर येह है कि फ़क़्र व रिज़ा के द-रजात में फ़र्क़ और बुज़ुर्गी के मरातिब में तफ़ावुत (फ़र्क़) की वजह से उन के जन्नत में जल्दी जाने की मुद्दत में तफ़ावुत है। और इस में कई वुजूह का एह़तिमाल है। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(1977)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क्या तुम जानते हो कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की मख़्लूक़ में से सब से पहले जन्नत में कौन दाख़िल होगा?'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं।'' तो आप ने इर्शाद फ़रमाया, ''वोह फु-क़रा मुहाजिरीन जिन के सदक़े सरह़दों के ख़त़रे दूर होते हैं और ना पसन्दीदा चीज़ों से ह़िफ़ाज़त की जाती है और जब उन में से किसी का इन्तिक़ाल होता है तो उन की ख़्वाहिश उन के सीने ही में रह जाती है वोह उस की तक्मील नहीं कर पाते, फिर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों में से जिसे चाहता है इर्शाद फ़रमाता है कि ''उन के पास जाओ और उन्हें सलाम करो।'' तो वोह फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं, ''या रब عَزَّ وَجَلَّ ! हम तेरे आस्मानों में रहने वाले और तेरी मख़्लूक़ में सब से बेहतर हैं, क्या तू हमें येह हुक्म देता है कि हम उन के पास जा कर उन्हें सलाम करें।'' तो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है कि ''मेरे येह बन्दे मेरी इबादत करते थे और मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते थे, इन्ही के सदक़े सरह़दों के ख़त़रे दूर होते थे और ना गवार चीज़ों से ह़िफ़ाज़त की जाती थी और

अगर इन में से किसी का इन्तिक़ाल होता तो उस की ख़्वाहिश उस के सीने में ही रह जाती थी और वोह उसे पूरा न कर पाते थे।'' फिर फ़िरिश्ते उन के पास आते हैं और हर दरवाज़े से दाख़िल हो कर कहते हैं ''سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝ (پ۱۳،الرعد:۲۴)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ही ख़ूब मिला'' (الترغیب والترھیب،الترغیب فی الفقر،رقم۹،ج۴،ص۶۲)

(1978)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब तुम क़ियामत के दिन जम्अ़ हो जाओगे तो पूछा जाएगा कि ''इस उम्मत के फ़ु-क़रा कहां हैं?'' फिर उन फ़ु-क़रा से कहा जाएगा कि ''तुम ने क्या अ़मल किया?'' वोह अ़र्ज़ करेंगे, ''ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ तूने हमें आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया और दूसरों को माल और हुकूमत का मालिक बना दिया तो हम ने उस पर सब्र किया।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि ''तुम सच कहते हो फिर वोह दीगर लोगों से पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे जब कि ह़िसाब की सख़्ती मालदारों और हुक्मरानों पर बाक़ी रह जाएगी।''

सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया कि ''मुअमिनीन उस दिन कहां होंगे?'' इर्शाद फ़रमाया कि ''उन के लिये नूर की कुरसियां रखी जाएंगी और ख़ैमों के ज़रीए उन पर साया किया जाएगा और वोह दिन मुअमिनीन पर दिन की एक घड़ी से भी छोटा होगा।''

(الترغیب والترھیب،کتاب البعث،فصل فی الحشر،رقم ۳۴،ج۴،ص۲۱۱)

(1979)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुवा तो उस में दाख़िल होने वाले अक्सर लोग मसाकीन थे। जब कि मालदार लोग क़ैद में थे सिवाए उन जहन्नमियों के जिन को जहन्नम में जाने का हुक्म दे दिया गया था और मैं जहन्नम के दरवाज़े पर खड़ा हुवा तो उस में दाख़िल होने वाली अक्सर औ़रतें थीं।'' (بخاری،کتاب النکاح،رقم۵۱۹۶،ج۳،ص۴۶۲)

(1980)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि ''मैं जन्नत में हूं फिर मैं ने जन्नत की आ'ला मन्ज़िलों में फ़ु-क़रा मुहाजिरीन को पाया और उस में औ़रतें और अग़्निया क़लील ता'दाद में भी न थे। फिर मुझे बताया गया कि अग़्निया तो दरवाज़े पर हैं और उन से ह़िसाब लिया जा रहा है और उन के गुनाह ज़ाइल किये जा रहे हैं जब कि औ़रतों को दो सुर्ख़ चीज़ों या'नी रेशम और सोने ने ग़ाफ़िल कर दिया है।'' (الترغیب والترھیب،رقم۲۵،ج۳،ص۷۴)

(1981)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जन्नत मुझ पर ज़ाहिर हुई तो मैं ने उस में रहने वालों में कसीर ता'दाद फु-क़रा की पाई और जहन्नम ज़ाहिर हुई तो मैं ने उस के बाशिन्दों में अक्सर औरतें देखीं।" (بخاری، کتاب النکاح، رقم ۵۱۹۸، ج۳، ص۴۶۳، رواہ عن عمران بن حصین رضی اللہ عنہ)

(1982)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरा मोमिन बन्दा दुन्या में तंगदस्त क्यूं होता है ?" तो मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के लिये जन्नत का एक दरवाज़ा खोला गया जब उन्हों ने उस की ने'मतें मुला-हज़ा कर लीं तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि "ऐ मूसा ! येह वोह ने'मतें हैं जिन्हें मैं ने अपने मोमिन बन्दे के लिये तय्यार किया है।" इस पर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर तेरा बन्दा पैदाइशी तौर पर टुन्डा और लूला लंगड़ा हो, और जब से तूने उसे पैदा किया, उस वक़्त से ले कर क़ियामत तक उसे मुंह के बल घसीटा जाए जब कि उस का ठिकाना येही हो तो गोया उस ने कभी कोई परेशानी नहीं देखी।"

फिर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि "तेरे काफ़िर बन्दे के लिये दुन्या इतनी कुशादा क्यूं होती है ?" तो आप عَلَیْہِ السَّلَام पर जहन्नम का एक दरवाज़ा खोला गया और फ़रमाया गया कि "ऐ मूसा ! मैं ने उस के लिये येह अ़ज़ाब तय्यार किया है।" तो मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया कि "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जिस दिन से तूने उसे पैदा फ़रमाया है अगर वोह उस दिन से क़ियामत तक दुन्या में ख़ुशहाल रहे जब कि उस का ठिकाना येह हो तो गोया उस ने कभी कोई भलाई नहीं देखी।"

(مسند احمد حنبل، مسند ابی سعید الخدری، رقم ۱۱۷۶۷، ج۴، ص۱۶۱)

(1983)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि एक दिन तुलूए़ शम्स के वक़्त मैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "क़ियामत के दिन एक क़ौम आएगी उन का नूर सूरज के नूर की त़रह होगा।" हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم क्या वोह लोग हम ही होंगे ?" इर्शाद फ़रमाया "नहीं ! यूं तो तुम्हारे लिये बहुत सारी भलाइयां हैं मगर वोह लोग हिजरत करने वाले फु-क़रा होंगे जिन्हें ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से जम्अ़ किया जाएगा।" (المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو، رقم ۷۰۹۳، ج۲، ص۶۸۸)

एक रिवायत में है कि "ग़रीबों के लिये ख़ुश ख़बरी है।" अ़र्ज़ किया गया कि "ग़रीब कौन हैं ?" फ़रमाया कि "वोह नेक लोग जो बुरे लोगों से बहुत कम हों, उन की बात न मानने वाले उन के इताअ़त गुज़ारों से कहीं ज़ियादा हों।" (مسند احمد بن حنبل، مسند عبداللہ بن عمرو بن العاص، رقم ۷۰۹۳، ۷۰۹۴، ج۲، ص۶۸۸)

(1984)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जन्नत के दरवाज़े पर दो मोमिन मुलाक़ात करेंगे जिन में से एक दुन्या में ग़नी और दूसरा फ़क़ीर होगा तो फ़क़ीर को जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और ग़नी को जब तक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ रोकना चाहे रोक लिया जाएगा। फिर जब उसे जन्नत में दाख़िल किया जाएगा तो वोह फ़क़ीर उस से मुलाक़ात करेगा और कहेगा, ''ऐ मेरे भाई ! तुझे किस चीज़ ने रोक लिया था ? ख़ुदा की क़सम ! जब तुझे रोक लिया गया तो मैं तेरे बारे में ख़ौफ़ज़दा हो गया था।'' वोह कहेगा कि ''ऐ मेरे भाई ! तेरे बा'द मुझे ज़िल्लतो रुस्वाई की क़ैद में रोक लिया गया और मैं इस क़दर पसीना बहा कर तेरे पास पहुंचा हूं कि अगर वोह एक हज़ार ऊंटों को पिला दिया जाता तो वोह शिकम सैर हो जाते।''

(مسند احمد حنبل، مسند عبداللہ بن عباس، رقم ۲۷۷۱، ج۱، ص۶۵۲)

(1985)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह दुआ मांगते हुए सुना कि, ''اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْنَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ तरजमा : ऐ अल्लाह ! मुझे मिस्कीनी की ज़िन्दगी और मिस्कीनी की मौत अता फ़रमा और क़ियामत के दिन मुझे मिस्कीनों के ज़ुमरे में उठाना।''

एक रिवायत में है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''और बेशक सब बद बख़्तों में सब से बड़ा बद बख़्त वोह है जिस पर दुन्या का फ़क्र और आख़िरत का अज़ाब जम्अ हो जाए।''

(المستدرک، کتاب الرقائق، باب اشقی الاشقیاء...الخ، رقم ۷۹۸۱، ج۵، ص۴۵۹)

(1986)...... हज़रते सय्यिदुना अता बिन अबू रबाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते हुए सुना, ''ऐ लोगो ! तंगदस्ती तुम्हें हराम तरीक़े से रिज़्क़ कमाने पर न उभारे क्यूं कि मैं ने ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह दुआ मांगते हुए सुना है, ''اَللّٰھُمَّ تَوَفَّنِیْ فَقِیْرًا وَّ لَا تَوَفَّنِیْ غَنِیًّا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْن तरजमा : ऐ अल्लाह ! मुझे हालते फ़क्र में मौत देना और ग़नी बना कर मौत न देना और मुझे मसाकीन के ज़ुमरे में उठाना।''

एक रिवायत में येह इज़ाफ़ा है कि ''وَلَا تَحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْاَغْنِیَاءِ فَاِنَّ اَشْقَی الْاَشْقِیَاءِ مَنِ اجْتَمَعَ عَلَیْہِ فَقْرُ الدُّنْیَا وَعَذَابُ الْاٰخِرَۃِ तरजमा : और मुझे मालदारों के गुरौह में न उठा क्यूं कि सब से बड़ा बद बख़्त तो वोह शख़्स है जिस पर दुन्या का फ़क्र और आख़िरत का अज़ाब जम्अ हो जाए।''

(الترغیب والترہیب، کتاب الادب، الترہیب فی الفقر، رقم ۲۳، ج۴، ص۶۷)

(1987)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस

का माल कम हुवा और अहलो इयाल ज़ियादा हुए और नमाज़ अच्छी हुई और उस ने मुसल्मानों की ग़ीबत न की, जब वोह क़ियामत के दिन आएगा तो मेरे साथ इस त़रह़ होगा जैसे येह दो उंग्लियां हैं।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فی من قل مالہ وکثرت عیالہ، رقم ۱۷۸۶۸، ج۱۰، ص۴۴۹)

(1988)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ''मस्जिद में सब से बुलन्द मरतबा शख़्स को देखो।'' मैं ने देखा तो मुझे एक शख़्स नज़र आया उस ने हुल्ला पहन रखा था। मैं ने अ़र्ज़ किया कि ''येह है।'' फिर फ़रमाया कि ''सब से कम मरतबा शख़्स को देखो।'' मैं ने देखा कि एक शख़्स ने बोसीदा लिबास पहन रखा है तो उस की त़रफ़ इशारा कर के अ़र्ज़ किया कि ''वोह है।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क़ियामत के दिन उस शख़्स के लिये अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के पास ज़मीन भर से ज़ियादा भलाई होगी।''

(مسند احمد بن حنبل، مسند الانصار، رقم ۲۱۴۵۳، ج۸، ص۹۱)

(1989)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया कि ''ऐ अबू ज़र! क्या तुम माल की कसरत ही को ग़िना समझते हो?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم!'' फिर फ़रमाया कि ''क्या तुम क़िल्लते माल ही को फ़क़्र समझते हो?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم!'' इर्शाद फ़रमाया कि ''ग़िना तो दिल की ग़िना है और फ़क़्र तो दिल का फ़क़्र है।''

फिर मुझ से क़ुरैश के एक शख़्स के बारे में पूछा, ''क्या तुम फ़ुलां को जानते हो?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां।'' फ़रमाया, ''तुम उसे क्या समझते हो?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''जब उस से सुवाल किया जाता है तो वोह अ़त़ा करता है और जब कोई मेहमान उस के पास आता है तो उसे अपने घर में बिठाता है।'' फिर मुझ से अहले सुफ़्फ़ा के एक शख़्स के बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि ''क्या तुम उसे जानते हो?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''नहीं! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! ख़ुदा की क़सम! मैं उसे नहीं जानता।'' फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे उस का हुल्या और औसाफ़ बयान फ़रमाते रहे यहां तक कि मैं ने उसे पहचान लिया तो अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! मैं ने उसे पहचान लिया है।'' तो फ़रमाया कि ''तुम उसे कैसा समझते हो?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''वोह अहले सुफ़्फ़ा में से एक मिस्कीन शख़्स है।'' फ़रमाया कि ''वोह सत़्ह़े ज़मीन पर दूसरों से बेहतर है।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! क्या जो चीज़ उस दूसरे को दी गई है उस में से बा'ज़ इसे नहीं दी गई?'' फ़रमाया कि ''अगर उसे भलाई अ़त़ा हो तो वोह इस का अह्ल है और अगर भलाई ले ली जाए तो नेकी अ़त़ा कर दी जाती है।''

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الفقر والزھد والقناعۃ، رقم ۶۸۴، ج۲، ص۳۷)

(1990)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं एक शख़्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब से गुज़रा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने साथ बैठे हुए एक शख़्स से इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि ''उस शख़्स के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ?'' उस ने कहा कि ''येह बेहतरीन लोगों में से एक है। ख़ुदा की क़सम ! अगर येह किसी को निकाह़ का पैग़ाम भेजे तो इस का ह़क़दार है कि इस से निकाह़ किया जाए और अगर किसी की सिफ़ारिश करे तो इस बात का ह़क़दार है कि इस की सिफ़ारिश क़बूल की जाए।''

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सुकूत फ़रमाया। फिर एक दूसरा शख़्स गुज़रा तो आप صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''इस के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह मुसल्मान फ़ु–क़रा में से एक है, जब किसी को निकाह़ का पैग़ाम भेजे तो इस के साथ निकाह़ न किया जाए और अगर किसी की सिफ़ारिश करे तो इस की सिफ़ारिश क़बूल न की जाए और अगर गुफ़्त–गू करे तो इस की बात न सुनी जाए।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अगर उस जैसे लोगों से ज़मीन भर दी जाए फिर भी येह उन सब से बेहतर है।'' (بخاری، کتاب الرقائق، باب فضل الفقر، رقم ۶۴۴۷، ج ۴، ص ۲۳۳)

(1991)...... हज़रते सय्यिदुना मह़मूद बिन लुबैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''आदमी दो चीज़ों को ना पसन्द करता है, मौत को ह़ालां कि मौत आज़माइश में मुब्तला होने से बेहतर है और माल की कमी को ना पसन्द करता है ह़ालां कि माल की कमी ह़िसाब को कम कर देती है।''

(مسند امام احمد بن حنبل، رقم ۲۳۶۸۶، ج ۹، ص ۱۵۹)

(1992)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि ''जन्नत और दोज़ख़ में मुबा–ह़सा हुवा तो जहन्नम ने कहा, ''मुझ में ज़ुल्म करने वाले और तकब्बुर करने वाले हैं।'' तो जन्नत ने कहा, ''मुझ में कमज़ोर मुसल्मान और मसाकीन हैं।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन दोनों के दरमियान यूं फ़ैसला फ़रमाया कि ''ऐ जन्नत ! तू मेरी रह़मत है तेरे ज़रीए मैं जिस पर चाहता हूं रह़म फ़रमाता हूं और ऐ जहन्नम ! तू मेरा अ़ज़ाब है तेरे ज़रीए मैं जिस पर चाहता हूं अ़ज़ाब करता हूं और तुम दोनों को भरना मेरे ज़िम्मे है।'' (صحیح مسلم، کتاب الجنۃ، باب النار یدخلہا الجبارون، رقم ۲۸۴۶، ص ۱۵۲۴)

(1993)...... हज़रते सय्यिदुना ह़ारिसा बिन वह्ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि मैं ने ह़ुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''क्या मैं तुम्हें जन्नतियों के बारे में न बताऊं ? हर कमज़ोर और कमज़ोर समझा जाने वाला शख़्स जन्नती है अगर वोह किसी बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाएगा।'' फिर फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें जहन्नमियों के बारे में न बताऊं ? हर जफ़ाकार, माल जम्अ़ करने वाला, दूसरों को न देने वाला और तकब्बुर करने वाला जहन्नमी है।'' (بخاری، کتاب التفسیر، باب عتل بعد ذالک زنیم، رقم ۴۹۱۸، ج ۳، ص ۳۶۳)

(1994)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि मैं ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''हर खुश फ़ह्म, माल जम्अ़ करने और दूसरों को न देने वाला, अपनी बड़ाई चाहने वाला जहन्नमी है और कमज़ोर और मग़्लूब लोग जन्नती हैं।'' (المستدرک، کتاب التفسیر، باب کان خلف رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم القرآن، رقم ۳۸۹۷، ج۳، ص۳۲۴)

(1995)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़्बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या मैं तुम्हें जन्नत के बादशाहों के बारे में न बताऊं?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया, ''हर कमज़ोर और कमज़ोर ख़याल किया जाने वाला, बोसीदा लिबास शख़्स जिसे नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है, वोह अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम उठा ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़रूर पूरी फ़रमाए।''

(سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب من لایؤبہ لہ، رقم ۴۱۱۵، ج۴، ص۴۲۹)

(1996)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''कुछ परागन्दा सर ग़ुबार आलूद और लोगों के दरवाज़ों से धुत्कारे जाने वाले लोग ऐसे हैं कि अगर किसी बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा लें तो वोह उन की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فضل الضعفاء والخاملین، رقم ۲۶۲۲، ص۱۴۱۲)

(1997)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''कुछ परागन्दा सर, ग़ुबार आलूद, बोसीदा लिबास और लोगों के दरवाज़ों से धुत्कारे जाने वाले लोग ऐसे हैं कि अगर येह किसी बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा लें तो वोह इन की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए।'' (المعجم الاوسط، من اسمہ احمد، رقم ۸۶۱، ج۱، ص۲۵۰)

(1998)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़्बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''मेरी उम्मत में कुछ लोग ऐसे हैं अगर तुम में से कोई शख़्स उन से एक दीनार मांगने जाए तो वोह न दे सकेंगे और अगर एक दिरहम मांगने जाए तो भी न दे सकेंगे और उन से एक पैसा मांगे तो भी न दे सकें, अगर वोह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जन्नत का सुवाल करें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें ज़रूर जन्नत अ़ता फ़रमाएगा वोह बोसीदा लिबास और नज़र अन्दाज़ किये जाने वाले लोग अगर किसी बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा लें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाएगा।'' (المعجم الاوسط، من اسمہ احمد، رقم ۷۵۴۸، ج۵، ص۳۴۴)

(1999)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا अपने वालिदे गिरामी से रिवायत करते हैं कि "अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिदे न-बवी शरीफ़ में हाज़िर हुए तो हज़रते सय्यिदुना मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर के पास रोते हुए पाया तो पूछा, "तुम्हें किस चीज़ ने रुलाया ?" उन्हों ने जवाब दिया, "इस हदीसे मुबारक ने जिसे मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना कि "थोड़ी सी रियाकारी भी शिर्क है और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया से दुश्मनी की गोया उस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ जंग का ए'लान कर दिया और बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन नेक परहेज़ गार और गुमनाम बन्दों को पसन्द फ़रमाता है जो ग़ाइब हों तो उन की कमी महसूस न की जाए और जब हाज़िर हों तो उन्हें पहचाना न जाए। उन के दिल हिदायत के चराग़ हैं वोह हर अंधेरी ज़मीन से निकल जाते हैं।"

(ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب من ترجی لہ السلامۃ من الفتن، رقم ۳۹۸۹ ج ۴، ص ۳۵۱)

(2000)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मेरे नज़्दीक अपने औलिया में क़ाबिले रश्क वोह मोमिन है जिस का इयाल कम हो और वोह कसरत से नमाज़ पढ़े और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की अच्छे तरीक़े से इबादत करे, तंगदस्ती में उस की इताअत करे और लोगों से पोशीदा रहे, उस की तरफ़ उंग्लियों से इशारा न किया जाए, अगर उस का रिज़्क़ ज़रूरत के मुताबिक़ हो तो उस पर सब्र करे।" फिर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से चुटकी बजाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "ऐसे शख़्स की मौत जल्दी वाक़ेअ हो जाएगी और उस के अम्वाल कम होंगे और उस का विरसा कम होगा।"

(سنن الترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الکفاف والصبر علیہ، رقم ۲۳۵۴، ج ۴، ص ۱۵۵)

(2001)...... हज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने दुन्या में अपनी ख़्वाहिशात पूरी कर लीं तो आख़िरत में उस बन्दे और उस की ख़्वाहिशात के दरमियान रुकावट डाल दी जाएगी। जिस ने ख़ुशहाल लोगों की ज़ीनत की तरफ़ अपनी आंखें फैलाईं वोह आस्मानी सल्तनत में ज़लील होगा और जिस ने ग़िज़ा की तंगी पर अच्छी तरह सब्र किया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में उस की चाहत के मुताबिक़ मस्कन अता फ़रमाएगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب منہ، رقم ۱۷۸۲۰، ج ۱۰، ص ۴۳۴)

(2002)...... हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ मांगी कि "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो तुझ पर ईमान लाए और इस बात की गवाही दे कि मैं तेरा रसूल हूं तो तू अपनी मुलाक़ात उस के नज़्दीक पसन्दीदा कर दे और अपनी क़ज़ा उस पर आसान फ़रमा दे और उस के लिये दुन्या कम कर दे और जो तुझ पर ईमान न लाए और इस बात की गवाही न दे कि मैं तेरा रसूल हूं, तो तू अपनी मुलाक़ात उस के नज़्दीक पसन्दीदा न फ़रमा और उस पर अपनी क़ज़ा आसान न फ़रमा और उस के लिये दुन्या को कसीर कर दे।" (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الایمان، باب فرض الایمان، رقم ۲۰۸، ج۱، ص ۲۱۵)

दुन्या में ज़ोह्द इख़्तियार करने का सवाब

इस बारे में आयाते मुबा-रका :

(1) زُیِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِیْنَ وَالْقَنَاطِیْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَیْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ۝ قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ ؕ بِخَیْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ لِلَّذِیْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا وَ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِیْرٌۢ بِالْعِبَادِ ۝ (پ۳، آل عمران:۱۴-۱۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की महब्बत, औरतें और बेटे और तले ऊपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती येह जीती दुन्या की पूंजी है और **अल्लाह** है जिस के पास अच्छा ठिकाना। तुम फ़रमाओ क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर चीज़ बता दूं परहेज़ गारों के लिये उन के रब के पास जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे और सुथरी बीबियां और **अल्लाह** की खुशनूदी और **अल्लाह** बन्दों को देखता है।

(2) وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَیْرٌ لِّلَّذِیْنَ یَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ (پ ۷، الانعام: ۳۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं तो क्या तुम्हें समझ नहीं।

(3) وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِیْمًا تَذْرُوْهُ الرِّیٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝ اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِیْنَةُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَالْبٰقِیٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَیْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَیْرٌ اَمَلًا ۝ (پ۱۵، الکہف:۴۵، ۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन के सामने ज़िन्दगानिये दुन्या की कहावत बयान करो जैसे एक पानी हम ने आस्मान से उतारा तो उस के सबब ज़मीन का सब्ज़ा घना हो कर निकला कि सूखी घास हो गया जिसे हवाएं उड़ाएं और **अल्लाह** हर चीज़ पर क़ाबू वाला है। माल और बेटे येह जीती दुन्या का सिंगार है और बाक़ी रहने वाली अच्छी बातें उन का सवाब तुम्हारे रब के यहां बेहतर और वोह उम्मीद में सब से भली।

(4) وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ط وَّاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ O (پ۲۱،العنکبوت:۶۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते।

(5) مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ط (پ۱۴،النحل:۹۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो तुम्हारे पास है हो चुकेगा और जो **अल्लाह** के पास है हमेशा रहने वाला।

(6) وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ج وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ O (پ۲۰،القصص:۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कुछ चीज़ तुम्हें दी गई है वोह दुन्यवी ज़िन्दगी का बरतावा और इस का सिंगार है और जो **अल्लाह** के पास है वोह बेहतर और ज़ियादा बाकी रहने वाला तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं।

(7) فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ط قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ O وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ج وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ O فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ قف فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ف وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ O وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ج لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ط وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ O

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में बोले वोह जो दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला बेशक उस का बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी **अल्लाह** का सवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे और येह उन्ही को मिलता है जो सब्र वाले हैं तो हम ने उसे और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअ़त न थी कि **अल्लाह** से बचाने में उस की मदद करती और न वोह बदला ले सका और कल जिस ने उस के मर्तबे की आरज़ू की थी सुब्ह़ कहने लगे अ़जब बात है **अल्लाह** रिज़्क़ वसीअ़ करता है अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है अगर **अल्लाह** हम पर एह़सान न फ़रमाता तो हमें भी धंसा देता ऐ अ़जब काफ़िरों का भला नहीं।

تِلْکَ الدَّارُ الْاٰخِرَۃُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ۝ (پ٢٠، القصص:٨٣)

येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आक़िबत परहेज़ गारों ही की है।

(8) یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَلَا یَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝ (پ ٢٢، الفاطر، ٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह का वा'दा सच है तो हरगिज़ तुम्हें धोका न दे दुन्या की ज़िन्दगी, और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वोह बड़ा फ़रेबी।

(9) اِعْلَمُوْۤا اَنَّمَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ وَّ زِیْنَةٌ وَّ تَفَاخُرٌۢ بَیْنَكُمْ وَ تَكَاثُرٌ فِی الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَیْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ یَهِیْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ یَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ۙ وَّ مَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَ رِضْوَانٌ ؕ وَ مَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۝ سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ جَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ یُؤْتِیْهِ مَنْ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِیْمِ ۝ (پ٢٧، الحدید:٢٠-٢١)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जान लो कि दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेलकूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना उस मींह की त़रह़ जिस का उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन (पामाल किया हुवा) हो गया और आख़िरत में सख़्त अ़ज़ाब है और अल्लाह की त़रफ़ से बख़्शिश और उस की रिज़ा और दुन्या का जीना तो नहीं मगर धोके का माल बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश और उस जन्नत की त़रफ़ जिस की चौड़ाई जैसे आस्मान और ज़मीन का फैलाव तय्यार हुई है उन के लिये जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाएं येह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

इस बारे में अह़ादीसे मुक़द्दसा :

(2003)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल

बताइये जिसे मैं करूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से महब्बत करने लगे और लोग भी मुझ से महब्बत करें।'' इर्शाद फ़रमाया, ''दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार कर लो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से महब्बत फ़रमाएगा और लोगों के माल से बे नियाज़ हो जाओ लोग तुम से महब्बत करने लगेंगे।''

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الزھد فی الدنیا، رقم ۴۱۰۲، ج۴، ص۴۲۳)

(2004)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये जिस की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से महब्बत करे और लोग भी मुझ से महब्बत करने लगें।'' इर्शाद फ़रमाया कि ''वोह अ़मल जिस की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से महब्बत फ़रमाएगा दुन्या से बे रग़बती है और वोह अ़मल जिस की वजह से लोग तुझ से महब्बत करने लगेंगे वोह येह है कि तुम्हारे पास जो माल है उसे लोगों के सिपुर्द कर दो।''

(الترغیب والترھیب، کتاب التوبۃ والزھد، الترغیب فی الزھد فی الدنیا، رقم ۲، ج۴، ص۷۵)

(2005)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''नेक लोगों ने दुन्या से बे रग़बती से बढ़ कर किसी अ़मल से ज़ीनत ह़ासिल नहीं की।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الزھد فی الدنیا، رقم ۱۸۰۵۹، ج۱۰، ص۵۱۰)

(2006)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''दुन्या से बे रग़बती दिलो जान को राह़त बख़्शती है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الزھد فی الدنیا، رقم ۱۸۰۵۸، ج۱۰، ص۵۰۹)

(2007)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तीन दिन में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से एक लाख चालीस हज़ार कलिमात के ज़रीए कलाम फ़रमाया तो जब मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने आदमियों का कलाम सुना तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ का कलाम सुन लेने की वजह से उन के कलाम को ना पसन्द फ़रमाने लगे। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से जो कलाम फ़रमाया था उस में येह भी था कि ''ऐ मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ! मेरे लिये अ़मल करने वालों ने दुन्या से बे रग़बती जैसा कोई अ़मल नहीं किया और मुक़र्रबीन ने उन पर मेरी ह़राम कर्दा अश्या से बचने जैसे किसी और अ़मल से मेरा क़ुर्ब ह़ासिल नहीं किया और मेरी इ़बादत करने वालों ने मेरे ख़ौफ़ में रोने जैसी कोई इ़बादत नहीं की।''

हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلام ने अ़र्ज़ किया, ''ऐ सारी काएनात के रब ! और रोज़े जज़ा के मालिक ! يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام ! तूने इन के लिये क्या तय्यार किया है और तू इन्हें क्या बदला अ़ता फ़रमाएगा ?'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, ''दुन्या से बे रग़बती रखने वालों के लिये तो मैं अपनी जन्नत को मुबाह़ कर दूंगा कि वोह उस में जहां चाहें ठिकाना बना लें और मैं अपनी ह़राम कर्दा चीज़ों से परहेज़ करने वालों को येह इन्आ़म दूंगा कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो मैं परहेज़ गारों के इ़लावा हर बन्दे से सख़्त ह़िसाब लूंगा क्यूं कि मैं उन से ह़या करूंगा और उन्हें इ़ज़्ज़तो इक्राम से नवाज़ूंगा फिर उन्हें बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल फ़रमा दूंगा और मेरे ख़ौफ़ से रोने वाले तो वोही हैं जो रफ़ीक़े आ'ला में होंगे उस में उन का कोई शरीक न होगा।''

(طبرانی کبیر، رقم ۱۲۶۵۰، ج۱۲، ص۹۴)

(2008)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब तुम दुन्या से बे रग़बती करने वाले किसी शख़्स को देखो तो उस की सोह़बत इख़्तियार करो क्यूं कि उस की बातों में ह़िक्मत पोशीदा होती है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، ماجاء فی الزھد فی الدنیا، رقم ۱۸۰۶۰، ج۱۰، ص۵۱۰، رواہ عن عبداللہ بن جعفر رضی اللہ عنہ)

(2009)...... ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि ''अगर तुम मुझ से मिलना चाहती हो तो तुम्हारे लिये दुन्या से इतना ही काफ़ी है जितना सुवार का तोशा होता है और अग़्निया की हम नशीनी से बचती रहो और जब तक कपड़े को पैवन्द न लगा लो उसे बोसीदा ख़याल न करो।''

(الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی ترقیع الثوب، رقم ۱۷۸۷، ج۳، ص۳۰۲)

(2010)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़िए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो दुन्या से क़त्ए तअ़ल्लुक़ी कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ जाएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की हर मुआ़-मले में किफ़ायत फ़रमाएगा और उसे ऐसी जगह से रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा जहां से उसे गुमान भी न होगा और जो (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को) छोड़ कर दुन्या की त़रफ़ आएगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का मुआ़-मला दुन्या के सिपुर्द कर देगा।''

(مجمع الزوائد کتاب الزھد، باب ماجاء فی العزلۃ، رقم ۱۸۱۸۹، ج۱۰، ص۵۴۶)

(2011)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''जिस ने ग़म को एक ही ग़म समझा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस के दुन्यवी ग़मों में किफ़ायत फ़रमाएगा और जिस ने ग़मों को मु-तफ़र्रिक़ कर दिया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को इस बात की कोई परवाह नहीं कि वोह दुन्या की किस वादी में हलाक होता है।''

(شعب الایمان، کتاب الزھد، باب فی الزھد قصر الامل، رقم ۱۰۳۴۰، ج۷، ص۲۸۹)

(2012)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने ख़ातिमुल मुर–सलीन, रह़मतुल्लिल आ़–लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़–लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''जिस का मक़्सूद दुन्या होगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम मु–तफ़र्रिक़ कर देगा और उस का फ़क़्र उस पर ज़ाहिर कर देगा और उसे दुन्या से उतना ही मिलेगा जितना उस के लिये लिखा गया है, और जिस का मक़्सूद आख़िरत होगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम जम्अ़ फ़रमा देगा और उस के दिल को ग़ना से भर देगा और दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आएगी और जिस का मक़्सूद दुन्या होगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का फ़क़्र उस के माथे पर लिख देगा और उस की ज़म्इय्यत को टुकड़े टुकड़े कर देगा, दुन्या में से उस के पास वोही कुछ आएगा जो उस के मुक़द्दर में होगा।'' (ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الھم بالدنیا، رقم ۴۱۰۵، ج۴، ص۴۲۴)

एक और रिवायत में है कि ''जिसे आख़िरत का ग़म होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को ग़ना से भर देगा और उस के बिखरे हुए कामों को समेट देगा और दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आएगी।''

(ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۳۰، رقم ۲۴۷۳، ج۴، ص۲۱۱)

एक रिवायत में है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस का मक़्सूद आख़िरत होगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को ग़ना से भर देगा और उस के बिखरे हुए काम जम्अ़ फ़रमा देगा और उस के माथे से फ़क़्र को मिटा देगा फिर जब वोह सुब्ह़ करेगा तो ग़नी होगा और शाम करेगा तो ग़नी होगा और जिस का मक़्सूद दुन्या होगी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के फ़क़्र को उस के सर पर लिख देगा फिर वोह सुब्ह़ करेगा तो फ़क़ीर होगा और शाम करेगा तो फ़क़ीर होगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، الترغیب فی الفراغ للعبادۃ، رقم ۶، ج۴، ص۵۷)

(2013)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब भी सूरज तुलूअ़ होता है उस के पहलू में दो फ़िरिश्ते भेजे जाते हैं जो ज़मीन वालों को मुख़ातब करते हैं, जिन्नो इन्स के इलावा सारी मख़्लूक़ उन की आवाज़ सुनती है, वोह कहते हैं, ''ऐ लोगो! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ आओ क्यूं कि जो चीज़ कम हो और किफ़ायत करे वोह उस चीज़ से बेहतर है जो ज़ियादा हो मगर ग़फ़्लत में डाले।'' और जब भी सूरज ग़ुरूब होता है उस के दोनों पहलूओं में दो फ़िरिश्ते भेजे जाते हैं वोह निदा करते हैं ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! ख़र्च करने वालों को जल्द बदला अ़त़ा फ़रमा और बुख़्ल करने वालों का माल जल्दी ज़ाएअ़ फ़रमा।'' (المستدرک، کتاب التفسیر، باب ما قل وکفی...الخ، رقم ۳۷۱۴، ج۳، ص۲۳۵)

(2014)...... ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

ने फ़रमाया कि ''जिस क़दर हो सके दुन्यवी ग़मों से फ़राग़त पा लो क्यूं कि जिसे सब से ज़ियादा ग़म दुन्या का होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के पेशे को शोहरत देगा और उस का फ़क़्र उस पर ज़ाहिर फ़रमा देगा और जिसे आख़िरत का ग़म सब से ज़ियादा होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के काम जम्अ़ फ़रमा देगा और उस के दिल को ग़ना से भर देगा और जो बन्दा अपने दिल से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मु-तवज्जेह होता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन के दिलों को उस के लिये मह़ब्बत और रह़मत के जज़्बे से सरशार फ़रमा कर उस के पास भेजता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे हर भलाई जल्द अ़त़ा फ़रमाता है।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فیمن احب الدنیا الخ، رقم ۱۷۸۱۶، ج۱۰، ص۴۳۲)

(2015)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई,

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ج وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ (پ۲۵، الشوری: ۲۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो आख़िरत की खेती चाहे हम उस के लिये उस की खेती बढ़ाएं और जो दुन्या की खेती चाहे हम उसे उस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ ह़िस्सा नहीं।

फिर इर्शाद फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है, ''ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इ़बादत के लिये फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरा सीना ग़ना से भर दूंगा और तेरे फ़क़्र को ख़त्म कर दूंगा और अगर तूने ऐसा न किया तो मैं तेरे सीने को मसरूफ़िय्यत से भर दूंगा और तेरे फ़क़्र को ख़त्म नहीं करूंगा।''

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب اسباب نزول، رقم ۳۷۰۹، ج۳، ص۲۳۳)

(2016)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि ''ऐ इब्ने आदम ! तू मेरी इ़बादत के लिये फ़ारिग़ हो जा मैं तेरे दिल को ग़ना और तेरे हाथों को रिज़्क़ से भर दूंगा। ऐ इब्ने आदम ! मुझ से दूरी मत इख़्तियार कर वरना मैं तेरे दिल को फ़क़्र से भर दूंगा और तेरे बदन को मसरूफ़िय्यत से भर दूंगा।'' (المستدرک، کتاب الرقائق، باب النبی اکل خشنا ولبس خشنا، رقم ۷۹۹۲، ج۵، ص۴۶۴)

(2017)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त़्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिसे दुन्या की मह़ब्बत का शरबत पिलाया गया वोह तीन चीज़ों का

मज़ा ज़रूर चखेगा (1) ऐसी सख़्ती जिस से उस की थकन दूर न होगी, (2) ऐसी हि़र्स जिस से वोह ग़नी न होगा, (3) ऐसी ख़्वाहिश जिस की तक्मील न कर सकेगा। क्यूं कि दुन्या त़ालिबा (या'नी त़लब करने वाली) और मत़्लूबा (जिसे त़लब किया जाए) है लिहाज़ा जिस ने दुन्या को त़लब किया आख़िरत उस के मरने तक उसे तलाश करती रहेगी, जब वोह मर जाएगा तो वोह उसे पकड़ लेगी और जिस ने आख़िरत त़लब की दुन्या उसे ढूंडती रहेगी यहां तक कि वोह इस में से अपना पूरा रिज़्क़ ह़ासिल कर ले।''

(طبرانی کبیر، عبداللہ بن مسعود، رقم ۱۰۳۲۸، ج۱۰، ص۱۶۲)

(2018)...... ह़ज़रते सय्यि–दतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने मेरे बारे में किसी से पूछा और जिसे मेरी त़रफ़ देखना पसन्द हो तो उसे चाहिये कि परागन्दा सर, ज़र्द चेहरे वाले, आस्तीन चढ़ाए हुए शख़्स की त़रफ़ देखे जो एक ईंट पर दूसरी ईंट और एक शहतीर पर दूसरा शहतीर नहीं रख सकता, जिस के लिये अ़लम (या'नी झन्डा) बुलन्द कर दिया गया तो आज उस की तय्यारी है और कल उस का मुक़ाबला है फिर उस का नतीजा जन्नत है या जहन्नम।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب فضل الفقراء، رقم ۱۷۸۸۳، ج۱۰، ص۴۵۵)

(2019)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़मक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से मह़ब्बत फ़रमाता है तो उसे शह्द चखाता है।'' सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस का शह्द क्या है ?'' फ़रमाया कि ''उस बन्दे को अपनी त़रफ़ से नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाता है यहां तक कि उस के पड़ोसी उस से राज़ी हो जाते हैं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب ذکر الموت وقصر الامل، رقم ۴۰، ج۴، ص۱۳۶)
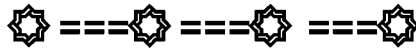
बा वुजूदे कुदरत आजिज़ी की बिना पर उम्दा लिबास न पहनने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًاؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ۝ (پ۲۰،القصص:۸۳)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आक़िबत परहेज़ गारों ही की है।

(2020)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक मरतबा सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने दुन्या का तज़्किरा किया तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या तुम नहीं सुनते ? क्या तुम नहीं सुनते ? कि कुदरत के बा वुजूद ज़ीनत तर्क करना ईमान में से है, कुदरत के बा वुजूद ज़ीनत तर्क कर देना ईमान में से है।'' (سنن ابی داود، کتاب الترجل، رقم۴۱۶۱، ج۴،ص۱۰۲)

(2021)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस सख़ी को पसन्द फ़रमाता है जो इस बात की परवाह नहीं करता कि उस ने कौन सा लिबास पहन रखा है।''

(شعب الایمان، باب فی الملابس، فصل فی التواضع فی اللباس، رقم۶۱۷۶، ج۵،ص۱۵۶)

(2022)...... एक सहाबी के बेटे अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ''जिस ने कुदरत के बा वुजूद तवाज़ोअ़ इख़्तियार करते हुए ख़ूब सूरत लिबास पहनना छोड़ दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे करामत का जोड़ा पहनाएगा।'' (ابوداود، کتاب الادب، باب من کظم غیظاً، رقم۴۷۷۸، ج۴،ص۳۲۶)

(2023)...... हज़रते सय्यिदुना सहल बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जिस ने कुदरत के बा वुजूद आजिज़ी करते हुए अच्छा लिबास पहनना छोड़ दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सारी मख़्लूक़ के सामने बुला कर इख़्तियार देगा कि ईमान का जो हुल्ला (जोड़ा) पहनना चाहे पहन ले।''

(سنن ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب۳۹، رقم۲۴۸۹، ج۴،ص۲۱۷)

(2024)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ''ऊन का लिबास, मुसल्मान फु-क़रा की सोहबत इख़्तियार करना, गधे पर सुवारी करना, बकरी या ऊंट की टांगें बांधना तकब्बुर से बचाता है।'' (شعب الایمان، باب فی ملابس والاوانی، فصل فی التواضع فی اللباس، رقم۶۱۶۱، ج۵،ص۱۵۳)

(2025)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बहुत से परागन्दा सर, गुबार आलूद बोसीदा लिबास वाले जिन की तरफ़ तवज्जोह नहीं की जाती, ऐसे हैं कि अगर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ पर किसी बात की क़सम उठा लें तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उन की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए, बराअ बिन मालिक इन्ही में से हैं।'' (سنن ترمذی، کتاب مناقب، باب براء بن مالک رضی اللہ عنہ، رقم ۳۸۸۰، ج۵، ص۴۵۹)

۞ ===۞ ===۞ ===۞
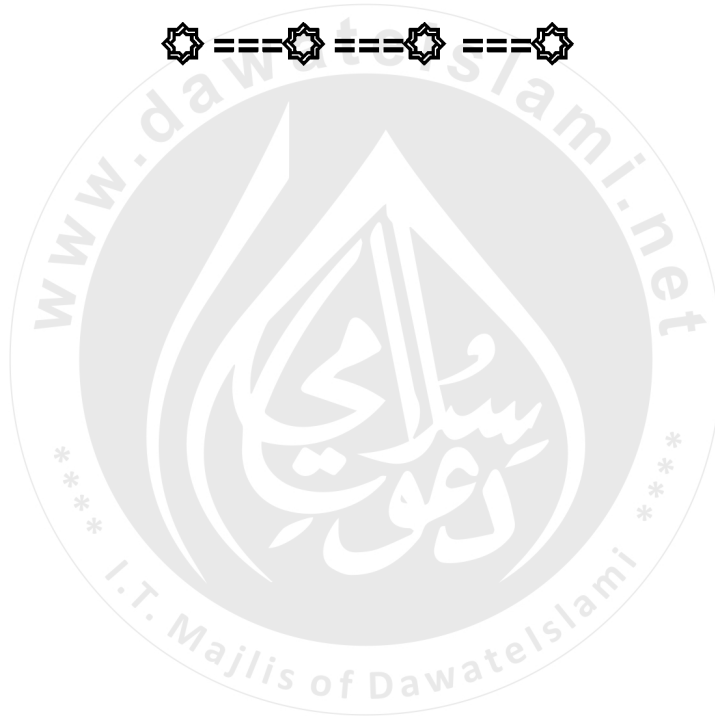
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान और उम्मीद रखने का सवाब

इस बारे में आयाते करीमा :

(1) اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ الَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَ جٰهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ۙ اُولٰٓىٕكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ۝ (پ۲،البقرہ:۲۱۸)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और वोह जिन्हों ने **अल्लाह** के लिये अपने घरबार छोड़े और **अल्लाह** की राह में लड़े वोह रह्मते इलाही के उम्मीद वार हैं और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

(2) یَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّ طَمَعًا٘ وَّ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۝ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۲۱،السجدہ:۱۶،۱۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

(3) اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً یَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۝ لِیُوَفِّیَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَ یَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ (پ۲۲،الفاطر:۲۹۔۳۰)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक वोह जो **अल्लाह** की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीद वार हैं जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं ताकि उन के सवाब उन्हें भरपूर दे और अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा अ़ता करे।

(4) اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّیْلِ سَاجِدًا وَّ قَآىٕمًا یَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَ یَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ یَسْتَوِی الَّذِیْنَ یَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا یَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ (پ۲۳،الزمر:۹)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रीं सुजूद में और क़ियाम में आख़िरत से डरता और अपने रब की रह्मत की आस लगाए क्या वोह ना फ़रमानों जैसा हो जाएगा तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अनजान नसीह़त तो वोही मानते हैं जो अ़क़्ल वाले हैं।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(2026)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फरमाता है "ऐ इब्ने आदम ! जब तू मुझे पुकारता है और मुझ से उम्मीद रखता है तो मैं तेरे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा देता हूं और मुझे कोई परवाह नहीं। ऐ इब्ने आदम ! अगर तेरे गुनाह आस्मानों की बुलन्दी तक भी पहुंच जाएं फिर तू मुझ से बख़्शिश मांगे तो मैं तेरी ख़ताएं बख़्श दूंगा। ऐ इब्ने आदम ! अगर तू मेरे पास गुनाहों से ज़मीन भर कर भी ले आए फिर तू मुझ से इस ह़ाल में मुलाक़ात करे कि तूने मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराया हो तो मैं तुझे ज़मीन भर मग़्फ़िरत अ़ता फ़रमा दूंगा।" (سنن ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبۃ والاستغفار وما ذکر من رحمۃ اللہ، رقم ۳۵۵۱، ج۵، ص۳۱۸)

(2027)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "तुम से पिछली उम्मतों में से तीन शख़्स अपने घर वालों के लिये ग़िज़ा और पानी की तलाश में निकले तो बारिश शुरूअ़ हो गई तो उन्हों ने एक पहाड़ में पनाह ली। अचानक एक चट्टान ने उन का रास्ता बन्द कर दिया तो उन में से एक ने कहा कि "(हमारी यहां मौजू-दगी का) निशान ख़त्म हो गया और पथ्थर ने ग़ार का दहाना बन्द कर दिया अब तुम्हारी यहां मौजू-दगी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई नहीं जानता लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने क़ाबिले भरोसा अ़मल के वसीले से दुआ़ मांगो।"

चुनान्चे उन में से एक ने अ़र्ज़ किया, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं एक औ़रत को पसन्द करता था मैं ने उस से बदकारी का मुता-लबा किया तो उस ने इन्कार कर दिया। एक मरतबा मैं ने उस के लिये माल का एक हिस्सा मुक़र्रर कर दिया तो जब उस ने ख़ुद को मेरे ह़वाले किया तो मैं ने बदकारी का इरादा छोड़ दिया। अगर मैं ने येह अ़मल तेरी रह़मत की उम्मीद और तेरे अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से किया है तो हमारा रास्ता खोल दे।" तो वोह चट्टान एक तिहाई हट गई।

फिर दूसरे ने अ़र्ज़ किया, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने वालिदैन के लिये उन के बरतन में दूध दोहता था। जब मैं उन के पास दूध ले कर ह़ाज़िर होता तो उन्हें सोते हुए पाता, मैं उन के सिरहाने खड़ा रहता जब वोह बेदार होते तो दूध पीते। अगर मैं ने येह अ़मल तेरी रह़मत की उम्मीद और तेरे अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से किया है तो हमारा रास्ता खोल दे।" तो वोह चट्टान एक तिहाई हट गई।

तीसरे ने अ़र्ज़ किया ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू जानता है कि मैं ने एक शख़्स को अपने पास मज़दूरी के लिये रखा था जब उस ने आधा दिन काम कर लिया तो मैं उसे उजरत देने लगा तो वोह नाराज़ हो गया और उजरत न ली तो मैं ने उस उजरत को तिजारत में लगा दिया फिर जब वोह माल बहुत ज़ियादा हो गया तो वोह शख़्स अपनी उजरत लेने आया तो मैं ने उस से कहा कि ''येह सारा माल ले जा।'' अगर मैं चाहता तो उसे सिर्फ़ उस की पहली उजरत दे देता (लेकिन मैं ने ऐसा न किया), अगर मैं ने येह तेरी रह़मत की उम्मीद और तेरे अ़ज़ाब के ख़ौफ़ से किया है तो हमारा रास्ता खोल दे।'' तो वोह चट्टान एक तिहाई मज़ीद हट गई और वोह लोग ग़ार से निकल आए।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الادعیۃ، رقم ۹۶۷، ج۲، ص۱۵۸ بتغیر قلیل)

(2028)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें बताऊं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से पहले मुअमिनीन से क्या फ़रमाएगा और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क्या अ़र्ज़ करेंगे ?'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये।'' फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुअमिनीन से फ़रमाएगा कि क्या तुम मुझ से मिलना पसन्द करते थे ?'' वोह अ़र्ज़ करेंगे, ''हां ! ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ !'' वोह फ़रमाएगा, ''क्यूं ?'' अ़र्ज़ करेंगे कि ''हम तेरे अ़फ़्व और बख़्शिश की उम्मीद रखते थे।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, ''मैं ने तुम्हें अपनी बख़्शिश अ़त़ा फ़रमा दी।''

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند معاذ بن جبل، رقم ۲۲۱۳۳، ج۸، ص۲۴۸ بتغیر قلیل)

(2029)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم एक जवान के पास उस की मौत के वक़्त तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि ''कैसा मह़सूस कर रहे हो ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उम्मीद रखता हूं और अपने गुनाहों पर ख़ौफ़ज़दा हूं।'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जब इस आ़लम में बन्दे के दिल में येह दोनों चीज़ें जम्अ़ होती हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की उम्मीद पूरी फ़रमाता है और जिस बात से बन्दा ख़ौफ़ज़दा हो उसे उस से अम्न अ़त़ा फ़रमाता है।'' (ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الموت والاستعداد لہ، رقم ۴۲۶۱، ج۴، ص۴۹۶)

(2030)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखना बेहतरीन इबादत है।''

(المستدرک، کتاب التوبۃ والانابۃ، باب ان حسن الظن، رقم ۷۶۷۷، ج۵، ص۳۴۲)

(2031)...... हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है कि "मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब होता हूं और जब वोह मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस के साथ होता हूं।" (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत उस के साथ होती है।) (مسلم، کتاب ذکر والدعاء والتوبہ والاستغفار، رقم ۲۶۷۵، ص ۱۴۳۹)

(2032)...... हज़रते सय्यिदुना हब्बान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अस्वद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कि इयादत करने निकला तो मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ से हुई वोह भी उन की इयादत का इरादा रखते थे। जब हम उन के पास पहुंचे और उन्हों ने सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देखा तो अपना हाथ फैला दिया और उन की तरफ़ इशारा किया। हज़रते सय्यिदुना वासिला उन के पास आ कर बैठ गए तो हज़रते सय्यिदुना यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दोनों हाथ थाम लिये और उन्हें अपने चेहरे पर फैरने लगे तो हज़रते सय्यिदुना वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन से पूछा, "तुम्हारा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ कैसा गुमान है ?" तो हज़रते सय्यिदुना यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया, "ख़ुदा की क़सम ! मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान है।" फ़रमाया, "फिर ख़ुश हो जाओ कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि "मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब हूं अगर वोह अच्छा गुमान करे तो उस के लिये वैसा ही है और अगर वोह बुरा गुमान करे तो उस के लिये वैसा ही है।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب حسن الظن باللہ، رقم ۶۴۰، ج ۲، ص ۱۷)

(2033)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक बन्दे के बारे में जहन्नम का हुक्म दिया जब वोह जहन्नम के किनारे पर पहुंचा तो रुक गया और पीछे मुड़ कर देखने लगा और अ़र्ज़ करने लगा, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरी क़सम ! मैं तो तेरे साथ अच्छा गुमान रखा करता था।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि "मैं अपने बन्दे के साथ उस गुमान के मुताबिक़ मुआ-मला करता हूं जो वोह मुझ से रखता है।"

(شعب الایمان، باب عیادۃ المریض، فصل فی آداب العیادۃ، رقم ۹۲۳۶، ج ۶، ص ۵۴۶)

(2034)...... हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के इलावा कोई मा'बूद नहीं जब बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुमान के मुताबिक़ उसे अ़ता फ़रमाता है क्यूं कि तमाम भलाइयां उसी रब عَزَّوَجَلَّ के दस्ते क़ुदरत में हैं।" (طبرانی کبیر ابن مسعود، رقم ۸۷۷۲، ج ۹، ص ۱۵۴)

ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का सवाब

इस बारे में आयाते मुबा-रका :

(1) اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِیَتْ عَلَیْهِمْ اٰیٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِیْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ۝ الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۝ اُولٰٓىٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِیْمٌ ۝ (پ۹،الانفال:۲۔۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले वोही हैं जब अल्लाह याद किया जाए उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक़्क़ी पाए और अपने रब ही पर भरोसा करें वोह जो नमाज़ क़ाइम रखें और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करें येही सच्चे मुसल्मान हैं इन के लिये द-रजे हैं इन के रब के पास और बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त की रोज़ी।

(2) اِنَّ الَّذِیْنَ هُمْ مِّنْ خَشْیَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ هُمْ بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ یُؤْمِنُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا یُشْرِكُوْنَ ۝ وَالَّذِیْنَ یُؤْتُوْنَ مَاۤ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ ۝ اُولٰٓىٕكَ یُسٰرِعُوْنَ فِی الْخَیْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ ۝ (پ۱۸،المؤمنون:۵۷۔۶۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो अपने रब के डर से सहमे हुए हैं और वोह जो अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं और वोह जो अपने रब का कोई शरीक नहीं करते और वोह जो देते हैं जो कुछ दें और इन के दिल डर रहे हैं यूं कि इन को अपने रब की त़रफ़ फिरना है येह लोग भलाइयों में जल्दी करते हैं और येही सब से पहले इन्हें पहुंचे।

(3) یَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَیَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ۝ (پ۱۴،النحل:۵۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अपने ऊपर अपने रब का ख़ौफ़ करते हैं और वोही करते हैं जो उन्हें हुक्म हो।

नोट : येह आयते सज्दा है।

(4) یَخَافُوْنَ یَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِیْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۝ لِیَجْزِیَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَیَزِیْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ (پ۱۸،النور:۳۷،۳۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : डरते हैं उस दिन से जिस में उलट जाएंगे दिल और आंखें ताकि अल्लाह उन्हें बदला दे उन के सब से बेहतर काम का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें इन्आ़म ज़ियादा दे।

(5) يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ (۲۱،السجدہ:۱۶۔۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए में से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

(6) وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝ (۱۸،النور:۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो हुक्म माने **अल्लाह** और उस के रसूल का और **अल्लाह** से डरे और परहेज़ गारी करे तो येही लोग काम्याब हैं।

(7) وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ۝ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ۝ ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ۝ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝ (پ۲۶،ق:۳۱تا۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पास लाई जाएगी जन्नत परहेज़ गारों के कि उन से दूर न होगी येह है वोह जिस का तुम वा'दा दिये जाते हो हर रुजूअ़ लाने वाले निगह दाश्त वाले के लिये जो रहमान से बे देखे डरता है और रुजूअ़ करता हुवा दिल लाया उन से फ़रमाया जाएगा जन्नत में जाओ सलामती के साथ येह हमेशगी का दिन है उन के लिये है इस में जो चाहें और हमारे पास इस से भी ज़ियादा है।

(8) قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ۝ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ۝ (پ۲۷،الطور:۲۶۔۲۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बोले बेशक हम इस से पहले अपने घरों में सहमे हुए थे तो **अल्लाह** ने हम पर एहसान किया और हमें लू (गर्मी) के अ़ज़ाब से बचा लिया।

(9) اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ۝ فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝ وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝ (پ۲۹،الدھر:۱۰،۱۱،۱۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक हमें अपने रब से एक ऐसे दिन का डर है जो बहुत तुर्श निहायत सख़्त है तो उन्हें **अल्लाह** ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी और उन के सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये।

وَالْخٰشِعِیْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِیْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِیْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِیْمًا (10)

(پ۲۲،الاحزاب:۳۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां और ख़ैरात करने वाले और ख़ैरात करने वालियां और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है ।

इस बारे में अहादीसे मुक़द्दसा :

(2035)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''एक शख़्स अपनी जान पर ज़ुल्म किया करता था (या'नी गुनाह किया करता था) जब उस की मौत का वक़्त आया तो उस ने अपने बेटे से कहा कि ''जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना फिर मेरी राख को जम्अ़ कर के हवा में उड़ा देना, ख़ुदा की क़सम ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अ़ज़ाब देना चाहा तो ऐसा अ़ज़ाब देगा जो किसी को न दिया होगा।''

जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो उस की वसिय्यत पर अ़मल किया गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को हुक्म दिया ''जो कुछ तुझ में है उसे जम्अ़ कर दे।'' तो उस ने ऐसा ही किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस बन्दे से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ''तुझे ऐसी वसिय्यत करने पर किस चीज़ ने उभारा ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से डरता था।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।''

(صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب(۵۶)، رقم ۳۴۸۱، ج۲، ص۴۷۰)

एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि एक शख़्स जिस ने कभी कोई नेक अ़मल नहीं किया था उस ने अपने अहले ख़ाना से कहा, ''जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना फिर उस में से आधी राख को ख़ुश्की पर और आधी को समुन्दर में डाल देना, ख़ुदा की क़सम ! अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अ़ज़ाब देना चाहा तो ऐसा अ़ज़ाब देगा जो तमाम जहानों में से किसी को न दिया होगा।''

जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो उन्हों ने उस की वसिय्यत के मुताबिक़ अ़मल किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ुश्की को उस की राख जम्अ़ करने का हुक्म दिया और समुन्दर को भी उस की राख जम्अ़ करने का हुक्म दिया फिर उस शख़्स से पूछा, ''तूने ऐसा क्यूं किया ?'' तो उस ने अ़र्ज़ किया, ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! तू

जानता है कि मैं ने ऐसा तेरे ख़ौफ़ की वजह से किया है।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी।

(مسلم، کتاب التوبۃ، باب فی سعۃ رحمۃ تعالیٰ وانھا سبقت غضبہ، رقم ۲۷۵۶، ص ۱۴۶۷)

(2036)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़–लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''तुम से पहले वक़्तों के एक मालदार शख़्स की मौत का वक़्त क़रीब आया तो उस ने अपने बेटों से कहा ''तुम ने मुझे बाप की ह़ैसिय्यत से कैसा पाया ?'' बेटों ने जवाब दिया कि ''बेहतरीन बाप।'' तो उस ने कहा, ''मैं ने कभी कोई नेक अ़मल नहीं किया लिहाज़ा जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना फिर मुझे राख बना कर तेज़ हवा के दिन में मेरी राख हवा में उड़ा देना।'' तो उन्हों ने ऐसा ही किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस की राख को जम्अ़ कर के फ़रमाया कि ''तुझे इस अ़मल पर किस चीज़ ने उभारा ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''तेरे ख़ौफ़ ने।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस के साथ रह़मत का सुलूक फ़रमाया।''

(صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب (۵۶) رقم ۳۴۷۸، ج ۲، ص ۴۶۹)

(2037)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''सात अश्ख़ास ऐसे हैं कि जिस दिन अ़र्श के सिवा कोई साया न होगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा।

पहला : आ़दिल हुक्मरान, दूसरा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते हुए परवान चढ़ने वाला नौ जवान, तीसरा : वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद में लगा रहे, चौथे : वोह दो आदमी जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत में जम्अ़ हों और इसी मह़ब्बत पर एक दूसरे से जुदा हों, पांचवां : वोह शख़्स जिसे साह़िबे ह़ैसिय्यत ख़ूब सूरत औ़रत गुनाह के लिये बुलाए तो वोह कहे कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरता हूं, छटा : वोह शख़्स जो स–दक़ा इस त़रह़ छुपा कर दे कि उस के बाएं हाथ को पता न चले कि दाएं हाथ ने क्या स–दक़ा किया है और सातवां : वोह शख़्स जो तन्हाई में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हुए रो पड़े।''

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل اخفاء الصدقۃ، رقم ۱۰۳۱، ص ۵۱۴ بتغیر)

(2038)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो डर गया उस ने आख़िरत की बेहतरी को पा लिया और जिस ने आख़िरत की भलाई को पा लिया उस ने मन्ज़िल को पा लिया बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सौदा महंगा है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सौदा जन्नत है।''

(ترمذی، کتاب صفۃ الجہنم، باب (۸۳) رقم ۲۴۵۸، ج ۴، ص ۲۰۴)

(2039)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है, ''जिस ने एक दिन मेरा ज़िक्र किया या जो किसी एक मौक़अ़ पर मुझ से ख़ौफ़ज़दा हुवा उसे जहन्नम से निकाल दो।'' (ترمذی، کتاب الصفۃ، باب ماجاءان للنار نفسین، رقم ۲۶۰۳، ج۴، ص۲۶۷)

(2040)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : ''मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ और दो अम्न जम्अ़ नहीं करूंगा, अगर वोह मुझ से दुन्या में डरेगा तो मैं क़ियामत के दिन उसे अम्न अ़ता फ़रमाऊंगा और अगर वोह दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ होगा तो मैं क़ियामत के दिन उसे ख़ौफ़ में मुब्तला करूंगा।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب حسن الظن باللہ، رقم ۶۳۹، ج۲، ص۱۷)

(2041)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने प्यारे महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर येह आयते मुबा-रका नाज़िल फ़रमाई,

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ (پ۲۸، التحریم:۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

तो एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते करीमा अपने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के सामने तिलावत फ़रमाई तो एक नौ जवान येह आयते मुबा-रका सुन कर ग़श खा कर गिर गया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते मुबारक उस के दिल पर रखा तो देखा कि उस का दिल मु-तहर्रिक है तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''ऐ जवान ! कहो لَآاِلٰہَ اِلَّااللّٰہ।'' तो उस ने कलिमा पढ़ा। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे जन्नत की बिशारत अ़ता फ़रमाई तो सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या दुन्या ही में बिशारत ?'' तो इर्शाद फ़रमाया कि ''क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِیْ وَ خَافَ وَعِیْدِ۝ (پ۱۳، ابراہیم:۱۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : येह उस के लिये है जो मेरे हुज़ूर खड़े होने से डरे और मैं ने जो अ़ज़ाब का हुक्म सुनाया है उस से ख़ौफ़ करे।

(2042)...... हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, महबूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से बन्दे का जिस्म लरज़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे सूखे दरख़्त के पत्ते झड़ते हैं।" (شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ، رقم ۸۰۳، ج۱، ص۴۹۱)

एक रिवायत में है कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक दरख़्त के नीचे बैठे हुए थे कि तेज़ हवा का झोंका आया और उस दरख़्त के खुश्क पत्ते झड़ गए और सब्ज़ पत्ते बाक़ी रह गए तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "इस दरख़्त की मिसाल क्या है?" तो सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان ने अर्ज़ किया, "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानने वाले हैं।" तो इर्शाद फ़रमाया कि "**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से कांपने वाले मोमिन की मिसाल है जिस के गुनाह झड़ जाते हैं और नेकियां बाक़ी रह जाती हैं।"

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، رقم ۸۰۴، ج۱، ص۴۹۲)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोने का सवाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है,

وَاِذَاسَمِعُوْامَآاُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ۝ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (پ۷،المائدہ:۸۳،۸۴،۸۵)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : और जब सुनते हैं वोह जो रसूल की त़रफ़ उतरा तो उन की आंखें देखो कि आंसूओं से उबल रही हैं इस लिये कि वोह ह़क़ को पहचान गए कहते हैं ऐ रब हमारे हम ईमान लाए तो हमें ह़क़ के गवाहों में लिख ले और हमें क्या हुवा कि हम ईमान न लाएं अल्लाह पर और उस ह़क़ पर कि हमारे पास आया और हम त़मअ़ करते हैं कि हमें हमारा रब नेक लोगों के साथ दाख़िल करे तो अल्लाह ने उन के इस कहने के बदले उन्हें बाग़ दिये जिन के नीचे नहरें रवां हमेशा उन में रहेंगे येह बदला है नेकों का।

और फ़रमाता है,

اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖۤ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۝ وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ۝ وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ (پ۱۵،الاسرائیل:۱۰۷۔۱۰۹)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन्हें उस के उतरने से पहले इ़ल्म मिला जब उन पर पढ़ा जाता है ठोड़ी के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं और कहते हैं पाकी है हमारे रब को बेशक हमारे रब का वा'दा पूरा होना था और ठोड़ी के बल गिरते हैं रोते हुए।

नोट : येह आयते सज्दा है।

और फ़रमाता है,

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ۫ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْرَآءِيْلَ ۫ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ؕ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ۝ (پ۱۶،مریم:۵۸)

तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान : येह हैं जिन पर अल्लाह ने एह़सान किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की औलाद से और उन में जिन को हम ने नूह़ के साथ सुवार किया था और इब्राहीम और या'क़ूब की औलाद से और उन में से जिन्हें हम ने राह दिखाई और चुन लिया जब उन पर रह़मान की आयतें पढ़ी जातीं गिर पड़ते सज्दा करते और रोते।

नोट : येह आयते सज्दा है।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(2043)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''सात अश्ख़ास ऐसे हैं कि जिस दिन अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उन्हें अपने अ़र्श के साए में जगह अ़ता फ़रमाएगा।'' इन में उस शख़्स को भी ज़िक्र फ़रमाया ''जो तन्हाई में अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को याद करे तो गिर्या से उस की आंखें बह पड़ें।''

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الحب فی اللہ، رقم ۲۳۹۸، ج۴، ص۱۷۵)

(2044)...... हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नज़्दीक कोई शै दो क़त़रों और दो क़दमों से ज़ियादा पसन्दीदा नहीं, वोह दो क़त़रे जो अल्लाह तआ़ला को पसन्द हैं उन में से एक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से बहने वाले आंसू का क़त़रा और दूसरा राहे ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ में बहाया जाने वाला ख़ून का क़त़रा और वोह दो क़दम जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को पसन्द हैं उन में से एक अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में चलने वाला क़दम और दूसरा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के फ़राइज़ में से किसी फ़र्ज़ की अदाएगी के लिये चलने वाला क़दम है।''

(ترمذی، کتاب فضائل الجھاد، باب ماجاء فی فضل المرابط، رقم ۱۶۷۵، ج۳، ص۲۵۳)

(2045)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ को याद करे और उस की आंखें ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّ وَجَلَّ से बहना शुरूअ़ कर दें यहां तक कि उस के आंसू ज़मीन पर जा गिरें तो उस शख़्स को बरोज़े क़ियामत अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा।''

(مستدرک، کتاب التوبہ، باب لایلج النار احد بکی من خشیۃ اللہ، رقم ۷۷۴۲، ج۵، ص۳۶۹)

(2046)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''दो आंखों को जहन्नम की आग न छू सकेगी, एक वोह आंख जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में रात को पहरा दे और दूसरी वोह आंख जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجھاد، باب الحرس فی سبیل اللہ، رقم ۹۴۸۹، ج۵، ص۵۲۴)

(2047)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''दो आंखों को जहन्नम की आग न छू सकेगी, एक वोह आंख जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और दूसरी वोह आंख जो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में रात को पहरा दे।''

(جامع الترمذی، کتاب فضائل الجھاد، باب فی الحرس فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۴۵، ج۳، ص۲۳۹)

एक रिवायत में है कि ''दो आंखों तक जहन्नम की आग का पहुंचना ह़राम है एक वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और दूसरी वोह आंख जो इस्लाम और मुसल्मानों की कुफ़्फ़ार से ह़िफ़ाज़त में रात बसर करे।'' (المستدرک، کتاب الجہاد، باب ثلاثۃ اعین لاتمسھا النار، رقم ۲۴۷۷، ج ۲، ص ۴۰۳)

(2048)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रैह़ाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू बहाने या रोने वाली आंख पर जहन्नम ह़राम है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा देने वाली आंख पर जहन्नम ह़राम है।'' और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक तीसरी आंख का तज़्किरा भी फ़रमाया था। (الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب الترغیب فی البکاء، رقم ۳، ج ۴، ص ۱۱۳)

(2049)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हु़ज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि, ''दो आंखों को जहन्नम की आग न छूएगी, एक वोह आंख जो रात के पहर में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोए और दूसरी वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा देते हुए रात गुज़ारे।''

(مجمع الزوائد، کتاب الجہاد، باب الحرس فی سبیل اللہ، رقم ۹۴۸۹، ج ۵، ص ۵۲۳)

(2050)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''तीन आंखों के इलावा बरोज़े क़ियामत हर आंख रो रही होगी (1) वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़राम कर्दा चीज़ों को देखने से बाज़ रहे (2) वोह आंख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में पहरा दे (3) वोह आंख जिस से ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब मख्खी के सर बराबर आंसू निकल आए।'' (الترغیب والترہیب، کتاب الجہاد، باب فی الحراسۃ فی سبیل اللہ، رقم ۱۲، ج ۲، ص ۱۶۰)

(2051)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस मोमिन की आंख से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू बह जाए अगर्चे वोह मख्खी के सर के बराबर हो और फिर वोह आंसू उस के रुख़्सार पर पहुंच जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देगा।''

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحزن والبکاء، رقم ۴۱۹۷، ج ۴، ص ۴۶۷)

(2052)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोएगा जहन्नम में दाख़िल न होगा यहां तक कि दूध थनों में वापस चला जाए और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का ग़ुबार और जहन्नम का धुवां कभी जम्अ़ न होंगे।''

(ترمذی، کتاب فضائل الجہاد، باب ماجاء فضل الغبار فی سبیل اللہ، رقم ۱۶۳۹، ج ۳، ص ۲۳۶)

(2053)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जब येह आयते करीमा नाज़िल हुई

اَفَمِنْ هٰذَاالْحَدِیْثِ تَعْجَبُوْنَ۝ وَ تَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ۝ (پ۲۷،النجم:۵۹،۶۰) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या इस बात से तुम तअ़ज्जुब करते हो और हंसते हो और रोते नहीं।

तो अस्हाबे सुफ़्फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इतना रोए कि उन के आंसू उन के रुख़्सारों पर बहने लगे। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के रोने की आवाज़ सुनी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी उन के साथ रोने लगे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को रोता हुवा देख कर हम भी रोने लगे। फिर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोएगा जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा और गुनाह पर इसरार करने वाला जन्नत में दाख़िल न होगा और अगर लोग गुनाह न करें तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ऐसी क़ौम को लाएगा जो गुनाह करेंगे फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ، رقم ۷۹۸، ج۱، ص۴۸۹)

(2054)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं किस चीज़ के ज़रीए जहन्नम से बच सकता हूं?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अपनी आंखों के आंसूओं के ज़रीए से क्यूं कि जो आंख अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोती है उसे जहन्नम की आग कभी न छूएगी।''

(الترغیب والترہیب، کتاب التوبۃ والزھد، الترغیب فی البکاء من خشیۃ اللہ، رقم ۹، ج۴، ص۱۱۴)

(2055)...... हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जो आंख आंसूओं से भर जाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पूरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा देता है और जो क़तरा आंख से बह कर रुख़्सार पर बह जाए उस चेहरे को ज़िल्लत व तंगदस्ती न पहुंचेगी। अगर किसी उम्मत में एक भी रोने वाला हो तो उस की वजह से सारी उम्मत पर रह़्म किया जाता है और हर चीज़ की एक मिक़्दार और वज़्न होता है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से रोने वाला आंसू आग के समुन्दरों को बुझा देगा।'' (شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، رقم ۸۱۱، ج۱، ص۴۹۴)

(2056)...... हज़रते सय्यिदुना हैसम बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को ख़ुत़्बा इर्शाद फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने रोने लगा तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''अगर आज तमाम वोह मोमिन जिन के सर पर मज़्बूत़ पहाड़ों जितने गुनाहों का बोझ हो वोह भी तुम्हारे साथ ह़ाज़िर हो जाते तो इस शख़्स के रोने की वजह से उन सब की

भी मग़्फ़िरत कर दी जाती क्यूं कि इस के लिये मलाएका रो रहे हैं और इस के ह़क़ में दुआ़ करते हुए अ़र्ज़ कर रहे हैं, "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! कसरत से रोने वालों की शफ़ाअ़त, न रोने वालों के ह़क़ में क़बूल फ़रमा ले।"

(شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، رقم ۸۱۰، ج۱، ص۴۹۴)

(2057)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ?" फ़रमाया कि "अपनी ज़बान क़ाबू में रखो और अपने घर को वसीअ़ रखो और अपने गुनाह पर रो लिया करो।"

(ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، رقم ۲۴۱۴، ج۴، ص۱۸۲)

(2058)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई

وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ (پ۲۸، التحریم:۶) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जिस का ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।

इस के बा'द इर्शाद फ़रमाया कि "जहन्नम की आग को एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह सुर्ख़ हो गई, फिर एक हज़ार साल तक जलाया गया यहां तक कि वोह सफ़ेद हो गई, फिर उसे एक हज़ार साल तक जलाया गया तो वोह सियाह हो गई तो अब जहन्नम काली सियाह है उस के शो'ले नहीं बुझते।" येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक ह़ब्शी चीख़ें मार कर रोने लगा तो जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام नाज़िल हुए और अ़र्ज़ किया कि "आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने रोने वाला शख़्स कौन है ?" फ़रमाया कि "ह़ब्शा का एक शख़्स है।" और फिर उस शख़्स की ता'रीफ़ बयान फ़रमाई तो जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल और ارتفاع فوق العرش होने की क़सम ! मेरे ख़ौफ़ के सबब जिस बन्दे की आंख रोएगी मैं जन्नत में उस की हंसी में इज़ाफ़ा फ़रमाऊंगा।" (شعب الایمان، باب فی الخوف من اللہ تعالی، رقم ۷۹۹، ج۱، ص۴۸۹ بتغیر قلیل)

गुज़श्ता सफ़्ह़ात में ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत गुज़र चुकी है कि रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तीन दिन में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام से एक लाख चालीस हज़ार कलिमात के ज़रीए जो कलाम फ़रमाया था उस में येह भी था कि "ऐ मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ! मेरे लिये अ़मल करने वालों ने दुन्या से बे रग़्बती जैसा कोई अ़मल नहीं किया और मुक़र्रबीन ने इन पर मेरी ह़राम कर्दा अश्या से बचने जैसे किसी और अ़मल से मेरा क़ुर्ब ह़ासिल नहीं किया और मेरी इ़बादत करने वालों ने मेरे ख़ौफ़ से रोने जैसी कोई इ़बादत नहीं की।"

हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया, "ऐ सारी काएनात के रब और रोज़े जज़ा के मालिक ! یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام ! तूने इन के लिये क्या तय्यार किया है और तू इन्हें क्या बदला अ़ता फ़रमाएगा ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, "दुन्या से बे रग़्बती रखने वालों के लिये तो मैं अपनी जन्नत को मुबाह़ कर दूंगा वोह इस में जहां चाहें ठिकाना बना लें और अपनी ह़राम कर्दा चीज़ों से परहेज़ करने वालों को येह इन्आ़म दूंगा कि जब क़ियामत का दिन आएगा तो मैं परहेज़ गारों के इलावा हर बन्दे से सख़्त ह़िसाब लूंगा क्यूं कि मैं परहेज़ गारों से ह़या करूंगा और उन्हें इ़ज़्ज़तो इक्राम से नवाज़ूंगा फिर उन्हें बिग़ैर ह़िसाब जन्नत में दाख़िल फ़रमाऊंगा और मेरे ख़ौफ़ से रोने वालों के लिये रफ़ीक़े आ'ला होगा जिस में उन का कोई शरीक न होगा।"

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب ماجاء فی فضل الورع والزھد، رقم ۱۸۱۲۵، ج۱۰، ص۵۲۹)
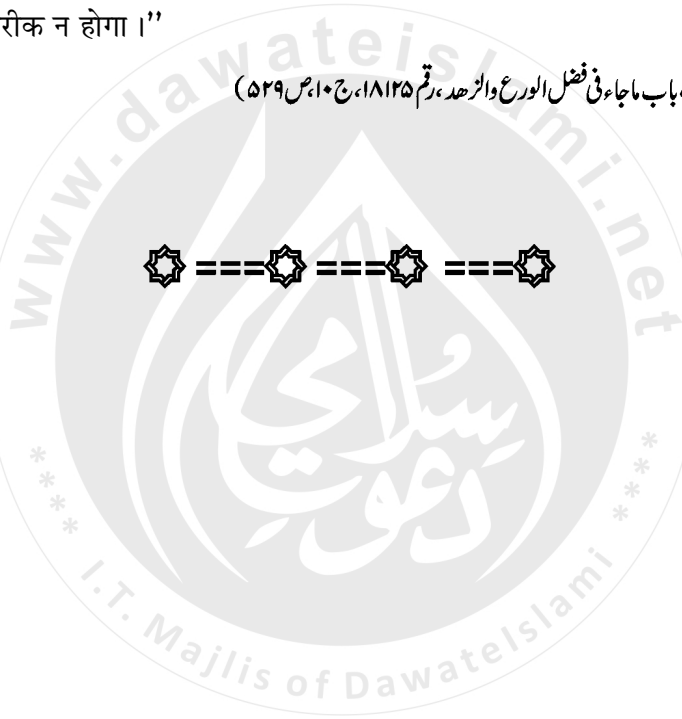
इख़्लास का सवाब

इस बारे में आयाते मुबा-रका :

(1) اِلَّاالَّذِیْنَ تَابُوْاوَاَصْلَحُوْاوَاعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْادِیْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِکَ مَعَ الْمُؤْمِنِیْنَ ؕ وَسَوْفَ یُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِیْنَ اَجْرًاعَظِیْمًا۝ (پ۵،النساء:۱۴۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जिन्हों ने तौबा की और संवरे और **अल्लाह** की रस्सी मज़्बूत़ थामी और अपना दीन ख़ालिस **अल्लाह** के लिये कर लिया तो येह मुसल्मानों के साथ हैं और अ़न्क़रीब **अल्लाह** मुसल्मानों को बड़ा सवाब देगा।

(2) كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِیْنَ۝ (پ۱۲،یوسف:۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हम ने यूं ही किया कि उस से बुराई और बे हयाई को फैर दें बेशक वोह हमारे चुने हुए बन्दों में है।

(3) وَاذْكُرْ فِی الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ز اِنَّهٗ كَانَ مُخْلَصًاوَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِیًّا۝ (پ۱۶،مریم:۵۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और किताब में मूसा को याद करो बेशक वोह चुना हुवा था और रसूल था ग़ैब की ख़बरें बताने वाला।

(4) اَلَا لِلّٰهِ الدِّیْنُ الْخَالِصُ ؕ (پ۲۳،الزمر:۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : हां ख़ालिस **अल्लाह** ही की बन्दगी है।

(5) وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِیَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَیُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَیُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِیْنُ الْقَیِّمَةِ۝ (پ۳۰،البینۃ:۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन लोगों को तो येही हुक्म हुवा कि **अल्लाह** की बन्दगी करें निरे इसी पर अ़क़ीदा लाते एक त़रफ़ के हो कर और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात दें और येह सीधा दीन है।

इस बारे में अह़ादीसे मुबा-रका :

(2059)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जिस ने **अल्लाह** وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ के लिये मुख़्लिस होने की हालत में दुन्या छोड़ी और नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की तो उस ने इस ह़ाल में दुन्या छोड़ी कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से राज़ी था।''

(المستدرک،کتاب التفسیر،باب خطبۃ النبی فی حجۃ الوداع،رقم ۳۳۳۰،ج۳،ص۶۵)

(2060)...... हज़रते सय्यिदुना अबू इमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने यमन की तरफ़ भेजे जाते वक़्त अर्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे कुछ नसीहत फ़रमाइये।'' नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''अपने दीन में मुख़्लिस हो जाओ थोड़ा अमल भी तुम्हें किफ़ायत करेगा।'' (مستدرک، کتاب الرقائق، رقم ۷۹۱۴، ج۵، ص۴۳۵)

(2061)...... हज़रते सय्यिदुना मस्अद बिन सा'ब अपने वालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि जब मैं ने येह गुमान किया कि मुझे दीगर सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पर कुछ फ़ज़ीलत हासिल है तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि ''इस उम्मत के कमज़ोर लोगों की दुआओं, नमाज़ों और इख़्लास के सबब इस उम्मत की मदद की जाती है।''

(نسائی، کتاب الجہاد، باب الاستنصار بالضعیف، ج۶، ص۴۵ بتغیر قلیل)

(2062)...... हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''मुख़्लिसीन के लिये ख़ुश ख़बरी है कि वोही हिदायत के चराग़ हैं उन्ही की वजह से आज़माइश की हर तारीकी छट जाती है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب البعث واہوال یوم القیمۃ، باب الترغیب فی الاخلاص...الخ، رقم ۵، ج۱، ص۲۳)

(2063)...... हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस शख़्स को तरो ताज़ा रखे जिस ने हम से कोई बात सुनी फिर दूसरे तक पहुंचा दी क्यूं कि इल्म के हामिल कुछ अफ़राद ज़ियादा समझदार लोगों तक इल्म पहुंचाते हैं और इल्म के हामिल कुछ अफ़राद समझदार नहीं होते। तीन अमल ऐसे हैं कि मोमिन का दिल इन में ख़ियानत नहीं करता (1) ख़ालिस अल्लाह के लिये अमल करना (2) हुक्मरानों की ख़ैर ख़्वाही और (3) उन की जमाअत को लाज़िम पकड़ना क्यूं कि उन को दीन की दा'वत देना उन के मा तहत लोगों की इस्लाह का ज़रीआ बन सकता है और जिस का मक़्सद दुन्या कमाना हो अल्लाह तआला उस के काम को मुन्तशिर कर देगा और उस के फ़क़्र को उस के सामने कर देगा और उसे दुन्या से वोही मिलेगा जो उस के लिये लिखा गया होगा और जिस का मत्लूब आख़िरत होगी अल्लाह तआला उस के मत्लूब को जम्अ कर देगा और उस के दिल को ग़ना से भर देगा और दुन्या उस की तरफ़ ज़लील हो कर आएगी।'' (الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الفقر والزہد والقناعۃ، رقم ۶۷۹، ج۲، ص۳۵)

(2064)...... हज़रते सय्यिदुना ज़हाक बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अल्लाह तबा-र-क व तआला फ़रमाता है कि ''मैं शरीक से पाक हूं लिहाज़ा जिस ने मेरे साथ किसी को शरीक ठहराया तो वोह मेरे शरीक के लिये है। ऐ लोगो ! अपने आ'माल में इख़्लास पैदा करो क्यूं कि अल्लाह तआला सिर्फ़ इख़्लास के साथ किये जाने वाले आ'माल ही को क़बूल फ़रमाता है।'' (مجمع الزوائد کتاب الزہد، باب ماجاء فی الریاء، رقم ۱۷۶۵۳، ج۱۰، ص۳۷۹)

(2065)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''दुन्या और जो कुछ इस में है सब मल्ऊ़न है सिवाए उस चीज़ के जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा चाही जाए।''

(مجمع الزوائد، کتاب الزھد، باب ماجاء فی الریاء، رقم ۱۷۶۵۹، ج۱۰، ص۳۸۱)

(2066)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि ''आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का उस शख़्स के बारे में क्या ख़याल है जो अज्र (इन्आ़म) और शोहरत के लिये जिहाद करता है, उस के लिये क्या है ?'' रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''उस के लिये कुछ नहीं।'' उस ने तीन मरतबा येही अ़र्ज़ किया और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येही फ़रमाते रहे कि ''उस के लिये इस में कुछ नहीं।'' फिर फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ सिर्फ़ उसी अ़मल को क़बूल फ़रमाता है जो इख़्लास और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा के लिये किया जाता है।''

(نسائی، کتاب الجہاد، باب من غزا یلتمس الاجر والذکر، ج۶، ص۲۵)

(2067)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, ''तुम से पिछली उम्मतों में से तीन शख़्स सफ़र पर निकले रात गुज़ारने के लिये उन्हों ने एक ग़ार में पनाह ली, अचानक पहाड़ से एक चट्टान गिरी और उस ने ग़ार का दहाना बन्द कर दिया तो वोह एक दूसरे से कहने लगे कि ''तुम्हें इस चट्टान से सिर्फ़ येह बात नजात दिला सकती है कि तुम अपने नेक आ'माल के वसीले से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ करो।''

तो उन में से एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मेरे वालिदैन बहुत बूढ़े थे और मैं उन से पहले न अपने घर वालों को दूध पिलाता और न ही अपने मवेशियों को सैराब करता था। एक दिन चारे की तलाश में मुझे बहुत देर हो गई और मैं उन के सोने से पहले वापस न आ सका तो मैं ने उन के लिये दूध दोहा और उन को सोते हुए पाया तो मैं ने उन से पहले अपने घर वालों को दूध पिलाना और मवेशियों को सैराब करना पसन्द न किया। चुनान्चे मैं बरतन ले कर फ़ज्र रोशन होने तक उन के बेदार होने का इन्तिज़ार करता रहा।'' एक रिवायत में है कि ''मेरे बच्चे मेरे क़दमों में मचलते रहे फिर जब वोह बेदार हुए तो उन्हों ने दूध से अपना ह़िस्सा पिया, तो ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! अगर मैं ने येह अ़मल तेरी रिज़ा की त़लब में किया था तो हम से इस चट्टान की मुसीबत को दूर फ़रमा दे।'' तो वोह चट्टान थोड़ी सरक गई मगर निकलने का रास्ता न बना।

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उन में से दूसरे शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मेरी एक चचाज़ाद बहन थी वोह मुझे सब लोगों से ज़ियादा पसन्द थी। मैं ने उस के साथ

बुराई का इरादा किया तो वोह मेरे क़ाबू में न आई यहां तक कि एक साल वोह तंगदस्ती में मुब्तला हुई तो मेरे पास आई तो मैं ने उसे एक सो बीस दीनार तन्हाई में मुलाक़ात करने की शर्त़ पर दिये तो वोह राज़ी हो गई। फिर जब मैं ने उस पर क़ाबू पा लिया तो वोह कहने लगी, ''मैं तेरे लिये ह़लाल नहीं, ह़राम काम से बाज़ आ जा।'' तो मैं उस के साथ ज़िना करने से रुक गया। जब मैं उस से दूर हुवा तो उस वक़्त भी वोह सब लोगों में मुझे ज़ियादा पसन्द थी और मैं ने जो सोना उसे दे दिया था उसी के पास रहने दिया, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर मैं ने येह अ़मल तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हम से इस मुसीबत को दूर फ़रमा दे जिस में हम मुब्तला हैं।'' तो चट्टान मज़ीद सरक गई मगर बाहर निकलने का रास्ता अब भी नहीं बन सका।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तीसरे शख़्स ने अ़र्ज़ किया, ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने कुछ लोगों को उजरत पर रखा था और उन सब को उन की उजरत अदा कर दी। मगर एक शख़्स अपनी उजरत मेरे पास छोड़ गया था। मैं ने उस की उजरत तिजारत में लगा दी ह़त्ता कि उस का माल कसीर हो गया। फिर वोह कुछ अ़र्से बा'द मेरे पास आया और कहने लगा कि ''मेरी उजरत मुझे दे दो।'' तो मैं ने उस से कहा कि ''तू येह जो ऊंट, गाय, बकरियां और ग़ुलाम देख रहा है येह सब तेरी उजरत है।'' वोह कहने लगा, ''ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मेरे साथ मज़ाक़ मत कर।'' तो मैं ने कहा, ''मैं तुम्हारे साथ मज़ाक़ नहीं कर रहा।'' तो वोह सारा माल हांक कर ले गया और उस में से कुछ न छोड़ा, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर मैं ने येह अ़मल तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हम से इस मुसीबत को दूर फ़रमा दे जिस में हम मुब्तला हैं।'' तो चट्टान बिल्कुल हट गई और वोह ग़ार से बाहर निकल आए।''

(مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب قصہ اصحاب الغار ثلاثۃ، رقم ۲۷۴۳، ص ۱۴۶۵)

फ़ाएदा :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सब को इख़्लास की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए (आमीन) याद रखो कि तमाम आ'माले सालिह़ा की क़बूलिय्यत और अज्रो सवाब के ह़ुसूल के लिये इख़्लास अव्वलीन शर्त़ है और इख़्लास के बिग़ैर किया जाने वाला अ़मल हलाकत के क़रीब होता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी رَحِمَهُ اللهُ تَعَالٰى फ़रमाते हैं कि ''सारा इ़ल्म दुन्या है और इस पर अ़मल आख़िरत है और सारा अ़मल मुन्तशिर है मगर जो इख़्लास के साथ किया जाए। नीज़ फ़रमाते हैं कि उ़-लमा के इलावा सब लोग (गोया) मुर्दा हैं और बा अ़मल उ़-लमा के इलावा सब उ़-लमा नशे में हैं और बा अ़मल उ़-लमा धोके में हैं सिवाए उन के जो मुख़्लिस हैं, मुख़्लिसीन अपने अन्जाम के बारे में ख़ौफ़ज़दा हैं यहां तक कि उन्हें मा'लूम हो जाए कि उन का ख़ातिमा कैसा होगा ? लिहाज़ा ! अगर तुम सवाब और अच्छा ख़ातिमा चाहते हो तो इख़्लास के ह़ुसूल की कोशिश करते रहो।''

इख़्लास की ता'रीफ़ में बहुत इख़्तिलाफ़ है हर एक ने अपने अपने ज़ौक़ के मुताबिक़ इस की ता'रीफ़ की है अगर तुम इस की वाक़िफ़िय्यत ह़ासिल करना चाहते हो तो तसव्वुफ़ की कुतुब म-सलन कूतुल कुलूब और एह़याए उ़लूमिद्दीन (एह़याउल उ़लूम) वग़ैरा का मुता़-लआ़ करो। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें नेक आ'माल की तौफ़ीक़ अ़ता़ फ़रमाई और तुम्हारी हिम्मत को इन के सवाब की त़रफ़ मु-तवज्जेह होने से रोक कर अपने वज्हे करीम की त़रफ़ फैर दिया और जहन्नम के ख़ौफ़ और जन्नत की उम्मीद से हटा दिया तो बेशक उस ने तुम्हें इख़्लास के आ'ला द-रजे की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाई और तुम्हें मुक़र्रब बन्दों में शामिल कर लिया।
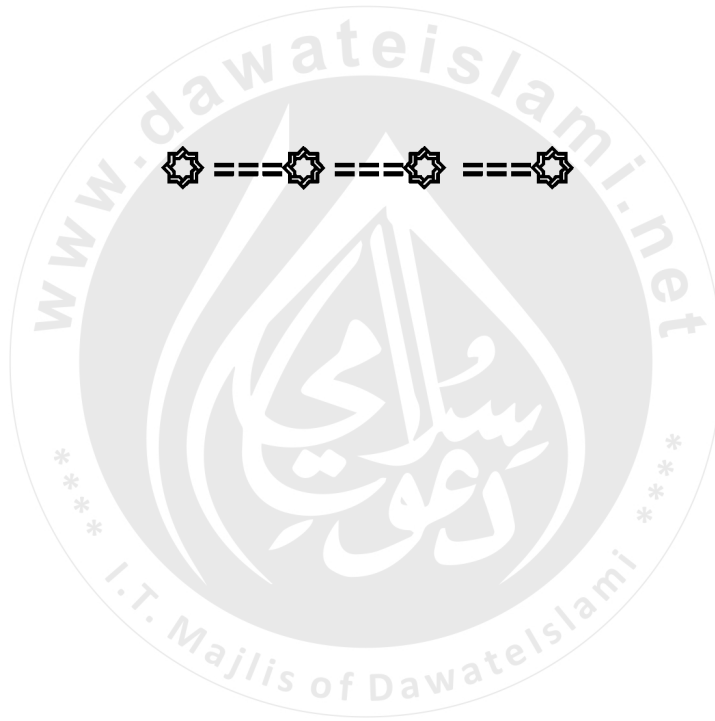
जन्नत के औसाफ़

इस बारे में आयाते मुक़द्दसा :

(1) يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ 0 خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ 0 (پ۱۰، التوبہ: ۲۱-۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : उन का रब उन्हें ख़ुशी सुनाता है अपनी रह़मत और अपनी रिज़ा की और उन बाग़ों की जिन में उन्हें दाइमी ने'मत है हमेशा हमेशा उन में रहेंगे बेशक **अल्लाह** के पास बड़ा सवाब है।

(2) اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ 0 اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ 0 وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ 0 لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ 0 (پ۱۴، الحجر: ۴۵-۴۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में हैं। इन में दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में और हम ने उन के सीनों में जो कुछ कीने थे सब खींच लिये आपस में भाई हैं तख़्तों पर रू ब रू बैठे न उन्हें इस में कुछ तक्लीफ़ पहुंचे न वोह इस में से निकाले जाएं।

(3) اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا 0 اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا 0 (پ۱۵، الکھف: ۳۰-۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और नेक काम किये हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ़ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों उन के लिये बसने के बाग़ हैं उन के नीचे नदियां बहें वोह उस में सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और सब्ज़ कपड़े करेब और क़नादीज़ के पहनेंगे वहां तख़्तों पर तकिया लगाए क्या ही अच्छा सवाब और जन्नत की क्या ही अच्छी आराम की जगह।

(4) هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَ اِنَّ لِلْمُتَّقِیْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝ مُتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا یَدْعُوْنَ فِیْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِیْرَةٍ وَّ شَرَابٍ ۝ وَ عِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِیَوْمِ الْحِسَابِ ۝ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝

(پ۲۳، صٓ:۴۹-۵۴)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : येह नसीहत है और बेशक परहेज़ गारों का ठिकाना भला बसने के बाग़ उन के लिये सब दरवाज़े खुले हुए उन में तकिया लगाए उन में बहुत से मेवे और शराब मांगते हैं और उन के पास वोह बीबियां हैं कि अपने शोहर के सिवा और की त़रफ़ आंख नहीं उठातीं एक उ़म्र की, येह है वोह जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता है ह़िसाब के दिन। बेशक येह हमारा रिज़्क़ है कि कभी ख़त्म न होगा।

(5) اِنَّ الْمُتَّقِیْنَ فِیْ مَقَامٍ اَمِیْنٍ ۝ فِیْ جَنّٰتٍ وَّ عُیُوْنٍ ۝ یَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّ اِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِیْنَ ۝ كَذٰلِكَ ۟ وَ زَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِیْنٍ ۝ یَدْعُوْنَ فِیْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِیْنَ ۝ لَا یَذُوْقُوْنَ فِیْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَ وَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ ۝ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ۝

(پ۲۵، الدخان:۵۱-۵۷)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बेशक डर वाले अमान की जगह में हैं बाग़ों और चश्मों में पहनेंगे करेब और क़नादीज़ आमने सामने यूंही है और हम ने इन्हें बियाह दिया निहायत सियाह और रोशन बड़ी आंखों वालियों से इस में हर क़िस्म का मेवा मांगेंगे अम्नो अमान से इस में पहली मौत के सिवा फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से बचा लिया तुम्हारे रब के फ़ज़्ल से, येही बड़ी काम्याबी है।

(6) مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِیْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِیْهَاۤ اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَیْرِ اٰسِنٍ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ یَتَغَیَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِیْنَ ۚ وَ اَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَ لَهُمْ فِیْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ (پ۲۶، محمد:۱۵)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अह़वाल उस जन्नत का जिस का वा'दा परहेज़ गारों से है इस में ऐसी पानी की नहरें हैं जो कभी न बिगड़े और ऐसे दूध की नहरें हैं जिस का मज़ा न बदला और ऐसी शराब की नहरें हैं जिस के पीने में लज़्ज़त है और ऐसी शहद की नहरें हैं जो साफ़ किया गया। और उन के लिये इस में हर क़िस्म के फल हैं।

(7)

ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ۝ عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ۝ يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۝ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ۝ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ۝ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ ۝ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ۝ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ۝ كَاَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ۝ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ۝ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ۝ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ مَاۤ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۝ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۝ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۝ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۝ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۝ وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝ اِنَّاۤ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ۝ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ۝ عُرُبًا اَتْرَابًا ۝ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۝

(پ۲۷، الواقعہ:۱۳۔۳۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगलों में से एक गुरौह और पिछलों में से थोड़े जड़ाउ तख़्तों पर होंगे उन पर तकिया लगाए हुए आमने सामने उन के गिर्द लिये फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के कूज़े और आफ़्ताबे और जाम और आंखों के सामने बहती शराब कि उस से न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए और मेवे जो पसन्द करें और परिन्दों का गोश्त जो चाहें और बड़ी आंख वालियां हूरें जैसे छुपे रखे हुए मोती सिला उन के आ'माल का उस में न सुनेंगे कोई बेकार बात न गुनहगारी हां येह कहना होगा सलाम सलाम और दाहिनी त़रफ़ वाले कैसे दाहिनी त़रफ़ वाले बे कांटे की बेरियों में और केले के गच्छों में और हमेशा के साए में और हमेशा जारी पानी में और बहुत से मेवों में जो न ख़त्म हों और न रोके जाएं और बुलन्द बिछोनों में बेशक हम ने इन औरतों को अच्छी उठान उठाया तो उन्हें बनाया कंवारियां अपने शोहर पर प्यारियां उन्हें प्यार दिलातियां एक उ़म्र वालियां दाहिनी त़रफ़ वालों के लिये।

(8)

فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۝ اِنِّیْ ظَنَنْتُ اَنِّیْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝ فَهُوَ فِیْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝ فِیْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۝ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَاۤ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝

(پ۲۹، الحاقۃ ۱۹۔۲۴)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो वोह जो अपना नामए आ'माल दहने हाथ में दिया जाएगा कहेगा लो मेरे नामए आ'माल पढ़ो मुझे यक़ीन था कि मैं अपने ह़िसाब को पहुंचूंगा तो वोह मन मानते चैन में हैं बुलन्द बाग़ में जिस के ख़ोशे झुके हुए खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

(9) فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ۝ وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ۝ مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآىِٕكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّ لَا زَمْهَرِيْرًا ۝ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ۝ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ۝ قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ۝ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ۝ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ۝ وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ۝ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ۝ عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۖ وَّحُلُّوْۤا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ۝ اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ۝ (پ۲۹، دھر:۱۱-۲۲)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : तो उन्हें अल्लाह ने उस दिन के शर से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और शादमानी दी और उन के सब्र पर उन्हें जन्नत और रेशमी कपड़े सिले में दिये जन्नत में तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे न इस में धूप देखेंगे न ठिटर (सख़्त सर्दी) और उस के साए उन पर झुके होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे और उन पर चांदी के बरतनों और कूज़ों का दौर होगा जो शीशे के मिस्ल हो रहे होंगे कैसे शीशे चांदी के साक़ियों ने उन्हें पूरे अन्दाज़े पर रखा होगा और इस में वोह जाम पिलाए जाएंगे जिस की मिलौनी अदरक होगी और वोह अदरक क्या है जन्नत में एक चश्मा है जिसे सल-सबील कहते हैं और उन के आस पास ख़िदमत में फिरेंगे हमेशा रहने वाले लड़के जब तू उन्हें देखे तो उन्हें समझे कि मोती हैं बिखेरे हुए और जब तू उधर नज़र उठाए एक चैन देखे और बड़ी सल्तनत उन के बदन पर हैं करेब के सब्ज़ कपड़े और क़नादीज़ के और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए गए और उन्हें उन के रब ने सुथरी शराब पिलाई उन से फ़रमाया जाएगा येह तुम्हारा सिला है और तुम्हारी मेह़नत ठिकाने लगी।

(10) وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ ۝ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ۝ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۝ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۝ وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۝ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ۝ (پ۳۰، الغاشیہ:۸-۱۶)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : कितने ही मुंह उस दिन चैन में हैं अपनी कोशिश पर राज़ी बुलन्द बाग़ में कि उस में कोई बेहूदा बात न सुनेंगे उस में रवां चश्मा है उस में बुलन्द तख़्त हैं और चुने हुए कूज़े और बराबर बराबर बिछे हुए क़ालीन और फैली हुई चांदनियां।

इस बारे में अहादीसे मुबा-रका :

(2068)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है कि "मैं ने अपने नेक बन्दों के लिये ऐसी चीज़ें तय्यार की हैं जो न किसी आंख ने देखीं, न किसी कान ने सुनीं और न ही किसी इन्सान के दिल में इस का ख़याल गुज़रा, अगर तुम चाहो तो येह आयत पढ़ लो

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ۝ (پ۲۱،السجدہ:۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

(مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا، رقم ۲۸۲۴،ص۱۵۱۶)

(2069)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़्-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब **अल्लाह** तआ़ला ने जन्नते अ़दन को पैदा फ़रमाया तो उस में ऐसी चीज़ें पैदा कीं जो न किसी आंख ने देखीं, न किसी कान ने सुनीं और न ही किसी इन्सान के दिल पर उस का ख़याल गुज़रा।" फिर उसे फ़रमाया, "कलाम कर" तो उस ने कहा "**قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ** (پ۱۸،المؤمنون:۱) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले।"

एक रिवायत में है कि "**अल्लाह** तआ़ला ने जन्नते अ़दन को अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमाया और उस में उस के फलों को लटकाया और उस की नहरों को जारी फ़रमाया फिर उस की त़रफ़ नज़र फ़रमाई और कहा कि "कलाम कर" तो उस ने कहा

"**قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ** (پ۱۸،المؤمنون:۱) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले।"

तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया कि "मुझे अपनी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम ! कोई बख़ील शख़्स जन्नते अ़दन में मेरे क़ुर्ब से मुशर्रफ़ नहीं होगा।" (المعجم الاوسط، رقم ۵۵۱۸، ج۴،ص۱۴۷)

(2070)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जो जन्नत में दाख़िल होगा वोह तरो ताज़ा रहेगा कभी न मुरझाएगा, उस के कपड़े बोसीदा होंगे न उस की जवानी फ़ना होगी, जन्नत में वोह ने'मतें हैं जिन्हें न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल पर उस का ख़याल गुज़रा।" (الترغیب والترھیب،صفۃ الجنۃ والنار،فصل فی ثیابھم وحللھم، رقم ۷۹، ج۴،ص۲۹۳)

(2071)...... हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हम ने अ़र्ज़ किया, "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमें जन्नत और इस की ता'मीर से मु-तअ़ल्लिक़ बताइये।"

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''इस की एक ईंट सोने की और एक चांदी की है और इस का गारा मुश्क का है और इस की कंकरियां मोती और याकूत की हैं और इस की मिट्टी ज़ा'फ़रान है, जो इस में दाख़िल होगा तरो ताज़ा रहेगा कभी न मुरझाएगा, हमेशा रहेगा और कभी न मरेगा और उस के कपड़े बोसीदा न होंगे और न ही उस की जवानी फ़ना होगी।'' (ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ما جاء فی صفۃ الجنۃ ونعیمھا، رقم ۲۵۳۴، ج۴، ص۲۳۶)

(2072)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो एक मुनादी निदा करेगा कि ''तुम्हारे लिये येह है कि तुम हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे कभी बीमार नहीं पड़ोगे, तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी नहीं मरोगे, तुम हमेशा जवान रहोगे कभी बूढ़े नहीं होगे, हमेशा तरो ताज़ा रहोगे कभी नहीं मुरझाओगे जैसा कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने फ़रमाया,

وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۸، الاعراف:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली सिला तुम्हारे आ'माल का।

(مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا، باب فی دوام نعیم اھل الجنۃ، رقم ۲۸۳۷، ص۱۵۲۱)

(2073)...... हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने जन्नत की दीवारें एक सोने और एक चांदी की ईंट से बनाईं फिर उस में नहरें जारी फ़रमाईं और दरख़्त उगाए फिर जब मलाएका ने जन्नत का हुस्न देखा तो कहा ऐ बादशाहों के मकानो! तुम्हारे लिये सआदत है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی بناء الجنۃ، رقم ۳۲، ج۴، ص۲۸۳)

(2074)...... हज़रते सय्यिदुना कुरैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को फ़रमाते हुए सुना कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''है कोई जो जन्नत को पाने के लिये कमर बस्ता हो? क्यूं कि जन्नत वोह जिस का कभी किसी को ख़याल भी नहीं गुज़रा होगा, रब्बे का'बा की क़सम! जन्नत झिलमिलाते और खिलखिलाते फूल, मज़्बूत महल, रवां नहरों, पके हुए फलों, हसीन व ख़ूब सूरत बीवियों, बे शुमार जन्नती मल्बूसात और हमेशा रहने वाले सलामती वाले घर और फलों वाले सर सब्ज़ बुलन्दो बाला महल वाली कुशादा ने'मत है।'' तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया कि ''हम उस के लिये कमर बस्ता होने वाले हैं।'' फ़रमाया कि ''اِنْ شَآءَاللّٰہ कहो।'' तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने اِنْ شَآءَاللّٰہ कहा।'' (ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب صفۃ الجنۃ، رقم ۴۳۳۲، ج۴، ص۵۳۵)

(2075)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नते अ़दन को अपने दस्ते क़ुदरत से बनाया है। इस की ता'मीर में एक ईंट सफ़ेद मोती की, एक ईंट सुर्ख़ याक़ूत की और एक ईंट सब्ज़ ज़बर जद की इस्ति'माल की गई है जब कि उस का गारा मुश्क का है, इस की घास ज़ा'फ़रान है, इस की कंकरियां मोती हैं, इस की मिट्टी अ़म्बर है। फिर उस से फ़रमाया कि ''बोल।'' तो जन्नत बोली,

''قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ (پ۱۸، المؤمنون:۱) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले ''
तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि ''मुझे अपने जलाल की क़सम ! कोई बख़ील तुझ में मेरा क़ुर्ब न पा सकेगा।''

फिर सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयत तिलावत फ़रमाई :

وَمَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِہٖ فَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (۲۸، الحشر:۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही काम्याब हैं।

(الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، الترغیب فی الجنۃ فصل فی بناء الجنۃ ...الخ، رقم ۳۳، ج۴، ص۲۸۳)

(2076)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जन्नत की ज़मीन सफ़ेद है, इस का सेह़्न काफ़ूर की चट्टानें हैं, इस के गिर्द रैत के टीलों की त़रह़ मुश्क की दीवारें हैं, इस में नहरें जारी हैं, इस में अहले जन्नत जम्अ़ होंगे इन में आपस के रिश्तेदार भी होंगे और ग़ैर भी, फिर वोह एक दूसरे से तआ़रुफ़ ह़ासिल करेंगे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रह़मत की हवा भेजेगा और उन पर मुश्क की ख़ुश्बू निछावर की जाएगी तो उन में से कोई शख़्स जब अपनी बीवी के पास आएगा तो उस के हुस्न और पाकीज़गी में इज़ाफ़ा हो चुका होगा वोह कहेगी कि ''जब तू मेरे पास से गया था तो मैं तुझ से ख़ुश थी और अब तो मैं तुझ से बहुत ज़ियादा ख़ुश हूं।'' (الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی بناء الجنۃ ...الخ، رقم ۳۴، ج۴، ص۲۸۳)

(2077)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''मेरी उम्मत से सत्तर हज़ार या सात लाख लोग एक दूसरे के हाथ पकड़ कर जन्नत में इकठ्ठे दाख़िल होंगे उन में से पहले वाले लोग उस वक़्त तक दाख़िल न होंगे जब तक आख़िरी दाख़िल न हो जाएं, उन के चेहरे चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ चमक्ते होंगे।'' (مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی دخول طوائف من المسلمین الجنۃ ...الخ، رقم ۲۱۹، ص۱۳۶)

(2078)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''पहला गुरौह जो जन्नत में दाख़िल होगा उस के चेहरे चौदहवीं रात के चांद की तरह़ होंगे, न तो वोह जन्नत में थूकेंगे न ही रींठ

साफ़ करेंगे और न पाख़ाना करेंगे। जन्नत में उन के बरतन सोने के होंगे, उन की कंघियां सोने और चांदी की होंगी, उन का पसीना ख़ुश्बूदार होगा, उन में से हर एक की दो बीवियां ऐसी होंगी जिन की पिंडलियों का गूदा हुस्न की वजह से गोश्त के बाहर से नज़र आएगा, उन दोनों में कोई रन्जिश न होगी और न ही उन के दिल में एक दूसरी के लिये बुग़्ज़ होगा बल्कि उन के दिल एक ही होंगे और वोह जन्नती सुब्हो शाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पाकी बयान करेंगे।"

(مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیما، باب فی صفات الجنۃ واھلھا، رقم ۲۸۳۴ص ۱۵۱۹)

(2079)...... ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़वान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ख़ुत़्बा देते हुए इर्शाद फ़रमाया कि "हमें बयान किया गया है कि जन्नत के दरवाज़ों के पटों में से दो पट के दरमियान चालीस साल की मसाफ़त है और इस पर एक ऐसा दिन आएगा कि येह अज़्दह़ाम और भीड़ की वजह से भरी होगी।"

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ ونعیمھا..الخ، رقم ۴، ج ۴، ص ۲۷۲)

(2080)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह नुफ़ैअ़ बिन ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जिस ने किसी मुआ़हिद (ह़लीफ़) को नाह़क़ क़त्ल किया वोह जन्नत की ख़ुश्बू न सूंघ सकेगा ह़ालां कि जन्नत की ख़ुश्बू पांच सो साल की मसाफ़त से सूंघी जा सकती है।"

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ، الخ، رقم ا، ج ۴، ص ۲۷۰)

(2081)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जन्नत की ख़ुश्बू एक हज़ार साल की मसाफ़त से सूंघी जा सकती है मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वालिदैन का ना फ़रमान और क़त़्ए़ रेह़्मी करने वाला उसे भी न पा सकेगा।"

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ ونعیمھا، رقم ۲، ج ۴، ص ۲۷۰)

(2082)...... ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम बिन ज़-मरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि "अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डरने वालों को जन्नत की त़रफ़ एक गुरौह की सूरत में ले जाया जाएगा। जब वोह जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर पहुंचेंगे तो एक ऐसा दरख़्त पाएंगे जिस के तने से दो चश्मे बह रहे होंगे वोह उन में से किसी एक की त़रफ़ इस त़रह़ जाएंगे गोया कि उन्हें इस बात का हुक्म दिया गया है फिर उस में से पियेंगे तो उन के पेट में जो तक्लीफ़ या गन्दगी होगी वोह दूर हो जाएगी फिर वोह दूसरे चश्मे की त़रफ़ जाएंगे और उस में ग़ुस्ल करेंगे तो उन्हें जन्नत का हुस्न दिया जाएगा तो उन की जिल्द कभी न बदलेगी और न ही उन के बाल परागन्दा होंगे वोह ऐसे रहेंगे जैसे बहुत ज़ियादा तेल लगाया गया हो।

फिर वोह जन्नत के ख़ाज़िन के पास आएंगे तो वोह उन से कहेंगे कि

سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِیْنَ۝ (پ۲۴،الزمر:۷۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सलाम तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने।

रावी फ़रमाते हैं कि ''फिर कुछ बच्चे उन से मिलेंगे और उन्हें इस त़रह़ घेर लेंगे जैसे किसी ग़ाइब और मह़बूब शख़्स की आमद पर दुन्या वाले उसे घेर लेते हैं फिर उस से कहेंगे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे लिये जो करामत तय्यार की है उस की ख़ुश ख़बरी सुन ले। फिर उन बच्चों में से एक लड़का उस की हूरे ईन में से किसी बीवी के पास जाएगा और उसे उस का दुन्यवी नाम ले कर बताएगा कि फुलां शख़्स आ गया है। तो वोह पूछेगी, ''क्या तूने उसे देखा है?'' वोह कहेगा, ''हां! मैं ने देखा है वोह मेरे पीछे ही आ रहा है।'' तो वोह दरवाज़े की चौखट पर खड़ी होने तक अपनी ख़ुशी ज़ाहिर नहीं करेगी। जब वोह शख़्स अपनी मन्ज़िल पर पहुंच जाएगा तो देखेगा कि इस की इमारत की बुन्याद किस चीज़ पर रखी गई है तो देखेगा कि मोती की एक चट्टान है जिस पर सब्ज़ ज़ुमुर्रुद और सुर्ख़ रंग का मह़ल है। फिर निगाह उठा कर उस की छत देखेगा तो वोह बिजली की त़रह़ चमक्दार होगी अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे मह़फ़ूज़ न रखता तो उसे अपनी बीनाई चले जाने का ग़म लाह़िक़ हो जाता। फिर वोह नज़र झुका कर अपनी बीवियों, वहां रखे हुए जामों और तरतीब से बिछे क़ालीनों की त़रफ़ देखेगा तो वोह जन्नती इन ने'मतों की त़रफ़ देखेंगे फिर तकिया लगा कर बैठ जाएंगे और कहेंगे कि

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۟ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِیَ لَوْلَاۤ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ (پ۸،الاعراف:۴۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें उस की राह दिखाई और हम राह न पाते अगर अल्लाह न दिखाता।

फिर एक मुनादी निदा करेगा कि ''तुम हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी नहीं मरोगे हमेशा मुक़ीम रहोगे, कभी कूच न करोगे, हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे कभी बीमार न पड़ोगे।''

(الترغیب الترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب صفۃ دخول اھل الجنۃ الجنۃ، رقم ۳، ج۴،ص۲۷۲)

(2083)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक मुअमिनीन के लिये जन्नत में ख़ौलदार मोती का ख़ैमा है जिस की आस्मान में लम्बाई साठ मील है मोमिन के लिये उस में ऐसे घर वाली बीवियां होंगी कि जब मोमिन उन के पास आएगा तो वोह बीवियां एक दूसरे को न देख सकेंगी।'' एक रिवायत में है कि ''उस की चौड़ाई साठ मील है।''

(صحیح مسلم، کتاب الجنۃ...الخ، باب فی صفۃ خیام الجنۃ، رقم ۲۸۳۸، ص۱۵۲۲)

(2084)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''वोह ख़ैमा एक ख़ौलदार मोती का होगा जिस की लम्बाई और चौड़ाई एक एक फ़रसख़ होगी, उस के एक हज़ार सोने के दरवाज़े होंगे जिन के गिर्द शामियाने होंगे जिन की गोलाई पांच फ़रसख़ की होगी, उस के पास हर दरवाज़े से एक फ़िरिश्ता आएगा जो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से हदिय्या देगा।''

(2085)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान के बारे में सुवाल किया गया,

وَمَسٰکِنَ طَیِّبَۃً فِیْ جَنّٰتِ عَدْنٍ (پ۲۸،الصف:۱۲) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और पाकीज़ा मह़लों में जो बसने के बाग़ों में हैं।

तो इर्शाद फ़रमाया कि ''जन्नत में मोतियों का एक मह़ल है जिस में सुर्ख़ याक़ूत से बने हुए सत्तर मकान हैं, हर मकान में सब्ज़ ज़ुमुर्रुद के सत्तर कमरे हैं, हर कमरे में सत्तर तख़्त हैं, हर तख़्त पर हर रंग के सत्तर बिछोने हैं, हर बिछोने पर एक औ़रत है, हर कमरे में सत्तर दस्तर ख़्वान हैं, हर दस्तर ख़्वान पर अन्वाओ़ अक़्साम के सत्तर खाने हैं हर कमरे में सत्तर ख़ादिम और ख़ादिमाएं हैं। मोमिन को इतनी क़ुव्वत अ़त़ा की जाएगी कि वोह एक दिन में इन सब से जिमाअ़ कर सकेगा।

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ، باب الترغیب فی الجنۃ۔ الخ فصل فی خیام الجنۃ، رقم ۴۱، ج۴، ص۲۸۵)

वज़ाह़त :

इस मुक़द्दस मह़ल में सब्ज़ ज़ुमुर्रुद के चार सो नव्वे (490) कमरे, अठ्ठाईस हज़ार छ सो तीस (28630) तख़्त और इतने ही ख़ुद्दाम और इतने ही दस्तर ख़्वान चार हज़ार एक सो बिछोने और इतनी ही औ़रतें और इतने ही रंगों के खाने होंगे **فَسُبْحَانَ مَنْ لَّا یُحْصٰی فَضْلُہٗ وَلَا یَنْفَدُ عَطَاؤُہٗ** या'नी पाकी है उस ज़ात को जिस के फ़ज़्ल की इन्तिहा नहीं और जिस की अ़त़ा में कमी नहीं।

(2086)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''कौसर जन्नत में एक नहर है जिस के किनारे सोने के और तह मोती और याक़ूत की है उस की मिट्टी मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है और उस का पानी शहद से भी मीठा और बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद है।''

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب صفۃ الجنۃ، رقم ۴۳۳۴، ج۴، ص۵۳۷)

(2087)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नत में एक ऐसा दरख़्त है कि कोई सुवार अगर सो साल तक उस के साए में चलता रहे फिर भी उस की मसाफ़त तै़ न कर सकेगा अगर तुम चाहो तो येह आयते मुबा-रका पढ़ लो,

وَظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۝ وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۝ (پ۲۷،الواقعۃ:۳۰،۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमेशा के साए में और हमेशा जारी पानी में।

(بخاری،کتاب بدء الخلق،باب ماجاء فی صفۃ الجنۃ وانھا مخلوقۃ،رقم ۳۲۵۲،ج۲،ص۳۹۳)

(2088)...... हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं ''وَظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ'' (से मुराद) जन्नत का एक तनावर दरख़्त है कि उस के साए की मसाफ़त तेज़ रफ़्तार सुवार के सो सालह सफ़र के बराबर है, जन्नती लोगों में से बालाख़ानों वाले और दीगर लोग निकल कर उस दरख़्त के साए के बारे में गुफ़्त-गू करेंगे। कोई दुन्या के किसी खेल को याद कर के उस की ख़्वाहिश करेगा तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जन्नत से एक हवा भेजेगा जो उस दरख़्त को दुन्या के हर खेल के लिये मु-तहर्रिक कर देगी।''

(الترغیب والترھیب،کتاب صفۃ الجنۃ والنار،باب الترغیب فی الجنۃ،رقم ۵۴،ج۴،ص۲۸۸)

(2089)...... हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन अ़ब्द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक आ'राबी ने हाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया कि ''जिस हौज़ के बारे में आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बताते हैं वोह कैसा है ?'' (फिर एक ह़दीस बयान की यहां तक कि इस मक़ाम पर पहुंचे कि) आ'राबी ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या उस में फल भी हैं ?'' फ़रमाया ''हां और उस में एक दरख़्त है जिसे तूबा कहा जाता है वोह फ़िरदौस को ढांपे हुए है।'' अ़र्ज़ किया, ''वोह हमारी ज़मीन के किस दरख़्त से मुशा-बहत रखता है ?'' फ़रमाया, ''वोह तुम्हारी ज़मीन के किसी दरख़्त से मुशा-बहत नहीं रखता मगर, क्या तुम कभी मुल्के शाम गए हो ?'' अ़र्ज़ किया, ''नहीं ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم !'' फ़रमाया ''वोह मुल्के शाम के एक दरख़्त की त़रह़ का दरख़्त है जिसे जूज़ा या'नी अख़रोट का दरख़्त कहा जाता है, वोह एक ही तने पर उगता है फिर उस की शाख़ें फैल जाती हैं।'' अ़र्ज़ किया, ''उस की जड़ की लम्बाई कितनी है ?'' फ़रमाया, ''अगर तुम्हारे पालतू ऊंटों में से चार साल की उ़म्र का ऊंट सफ़र करे तो उस वक़्त तक उस की मसाफ़त क़त्अ़ न कर सकेगा जब तक बुढ़ापे की वजह से उस के सीने की हड्डियां न टूट जाएं।''

उस ने अ़र्ज़ किया, ''क्या उस में अंगूर हैं ?'' फ़रमाया, ''हां !'' अ़र्ज़ किया, ''उस के ख़ोशे की लम्बाई कितनी है ?'' फ़रमाया, ''सियाह व सफ़ेद कव्वे के मुसल्सल एक माह इस त़रह़ उड़ने की मसाफ़त कि न वोह गिरे न रुके और न ही सुस्ती करे।'' अ़र्ज़ किया, ''जन्नत के अंगूर के एक दाने का ह़ज्म कितना है ?'' फ़रमाया, ''क्या तुम्हारे बाप ने कभी अपने रेवड़ में से कोई बड़ा जंगली बकरा ज़ब्ह़ कर के उस की खाल उतार कर तुम्हारी मां को दी है और कहा है कि इस की सफ़ाई कर के रंग लो फिर इसे फाड़ कर एक बड़ा सा डोल बनाओ जिस के ज़रीए हम अपने मवेशियों को अपनी मरज़ी के मुत़ाबिक़ सैराब कर सकें ?'' उस ने अ़र्ज़ किया, ''हां !'' फिर अ़र्ज़ किया, ''वोह दाना तो मुझे और मेरे अहले ख़ाना को शिकम सैर कर देगा।'' नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया ''बल्कि तमाम रिश्तेदारों को भी।''

(معجم کبیر،رقم ۳۱۲،ج۱۷،ص۱۲۷بتغیر)

(2090)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू हुजै़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास शाम या यमन में बैठे हुए थे कि जन्नत का तज़्किरा शुरूअ़ हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''जन्नती फल के ख़ोशों में से एक ख़ोशा यहां से सन्आ़ (यमन के एक मक़ाम का नाम) तक का होगा।

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ، رقم ۵۷، ج ۴، ص ۲۸۹)

(2091)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि ''जन्नत में खजूर के दरख़्तों के तने सब्ज़ ज़ुमुर्रुद के हैं और उस की जड़ सुर्ख़ सोने की है और उस की छाल अहले जन्नत का लिबास है और उसी से उन के कपड़े और हुल्ले होंगे और फल मटके और डोल जितने होंगे जो दूध से सफ़ेद और शह्द से मीठे और मख्खन से नर्म होंगे और उन में गुठली भी नहीं होगी।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی شجر الجنۃ وثمارھا، رقم ۶۳، ج ۴، ص ۲۹۰)

(2092)...... ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ौल ''وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا۝ (پ۲۹، الدھر:۱۴) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उस के गुच्छे झुका कर नीचे कर दिये गए होंगे।'' की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि ''अहले जन्नत जन्नत के फल खड़े हुए, बैठे हुए और लैट कर खा सकेंगे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، الترغیب فی الجنۃ فصل فی شجر الجنۃ، رقم ۷۱، ج ۴، ص ۱۱)

(2093)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया कि ''ऐ जरीर! क्या तुम जानते हो कि क़ियामत के दिन के अंधेरे क्या हैं?'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''नहीं जानता।'' फ़रमाया कि ''लोगों का आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म करना।'' फिर एक छोटी सी छड़ी पकड़ ली मैं उसे उन की उंग्लियों में देखता रहा फिर फ़रमाया कि ''ऐ जरीर! अगर तुम जन्नत में इस जैसी छड़ी तलाश करोगे तो नहीं पा सकोगे।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''तो फिर जन्नत के दरख़्त कैसे होंगे।'' फ़रमाया कि ''उन की जड़ें मोतियों और सोने की होंगी जब कि ऊपर का ह़िस्सा फल होगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی شجر الجنۃ، رقم ۶۰، ج ۴، ص ۲۸۹)

(2094)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان कहा करते थे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ'राबी (या'नी देहाती) लोगों और इन के सुवालात से हमें नफ़्अ़ पहुंचाता है। एक दिन एक आ'राबी आया और अ़र्ज़ करने लगा, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत के एक दरख़्त का तज़्किरा फ़रमाया है जिस से ईज़ा पहुंचेगी ह़ालां कि मैं समझता था कि जन्नत में ऐसा कोई दरख़्त नहीं होगा जो अपने मालिक को ईज़ा पहुंचाए।'' रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''वोह कौन सा दरख़्त है?'' अ़र्ज़ किया, ''वोह बैरी का दरख़्त है क्यूं कि उस में कांटे होते हैं जो कि ईज़ा पहुंचाते हैं।''

तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''क्या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह नहीं फ़रमाया ''فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ۝ तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बे कांटे की बैरियों में (پ۲۷، الواقعۃ:۲۸)'' अब वोह बैरी ऐसे फल

देती है कि जब उस में से कोई फल पक कर फटता है तो उस से बहत्तर अक़्साम के खाने निकलते हैं और हर एक का ज़ाएक़ा दूसरे से मुख़्तलिफ़ होता है।'' (الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی اکل اھل الجنۃ وشربھم، رقم ۷۷، ج ۴، ص ۲۹۳)

(2095)...... ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''जन्नती फल की लम्बाई बारह हाथ है और उस में गुठली नहीं होगी।'' (الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی اکل اھل الجنۃ وشربھم، رقم ۷۸، ج ۴، ص ۲۹۳)

(2096)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, ''जन्नत के अनारों में से एक अनार के गिर्द बहुत से लोग जम्अ़ हो कर उसे खाएंगे और अगर उन में से कोई किसी चीज़ को चाहते हुए उस का ज़िक्र करेगा उसे वहीं पाएगा जहां से वोह खा रहा होगा।''

(2097)...... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''अहले जन्नत खाएंगे पियेंगे, न रींठ साफ़ करेंगे, न पाख़ाना करेंगे और न ही पेशाब करेंगे, उन का खाना मुश्कबार डकार से हज़्म हो जाएगा और वोह हर सांस पर तस्बीह़ व तक्बीर पढ़ते होंगे।''

(صحیح مسلم، کتاب الجنۃ...الخ، باب فی صفات الجنۃ واھلھا، رقم ۲۸۳۵، ص ۱۵۲۱)

(2098)...... ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में एक यहूदी ने ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया, ''ऐ अबुल क़ासिम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप गुमान करते हैं कि जन्नती लोग खाएंगे और पियेंगे ?'' उस ने अपने साथियों से कहा था कि अगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सुवाल का जवाब इस्बात में दिया तो मैं (مَعَاذَاللّٰہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर) ग़ालिब आ जाऊंगा। तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''क्यूं नहीं ? उस ज़ाते पाक की क़सम ! जिस के दस्ते क़ुदरत में मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जान है उन में से हर शख़्स को खाने, पीने, शह्वत और जिमाअ़ में सो मर्दों की क़ुव्वत दी जाएगी।'' यहूदी ने अ़र्ज़ किया, ''जो खाएगा और पियेगा उसे ह़ाजत भी होगी ?'' तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस यहूदी से फ़रमाया कि ''उन की ह़ाजत इस त़रह़ पूरी होगी कि उन के जिस्म से मुश्क जैसा पसीना निकलेगा जिस से उन के पेट हलके हो जाएंगे।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث زید بن ارقم، رقم ۱۹۲۸۹، ج ۷، ص ۷۶)

(2099)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि ''जन्नतियों में सब से निचले द-रजे का जन्नती वोह शख़्स होगा जिस के साथ दस हज़ार ख़ादिम खड़े होंगे और हर ख़ादिम के हाथ में दो पियाले होंगे एक सोने का और एक चांदी का, हर पियाले में एक खाने की ऐसी क़िस्म होगी जो दूसरे में न होगी, वोह

उस के आख़िर से भी इसी त़रह़ खाएगा जिस त़रह़ उस के शुरूअ़ से खाता है और जो लज़्ज़त व ज़ाएक़ा उस के पहले हिस्से में पाएगा वोह दूसरे में न पाएगा फिर येह खाना मुश्कबार पसीना और मुश्कबार डकार हो जाएंगे जन्नती न पेशाब करेंगे न पाख़ाना और न ही रींठ साफ़ करेंगे।''

(2100)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम जन्नत में किसी परिन्दे को उड़ता हुवा देखोगे फिर उस की ख़्वाहिश करोगे तो वोह भुना हुवा तुम्हारे सामने आ जाएगा।''

(مجمع الزوائد، کتاب اھل الجنۃ، باب فیما اعدہ اللہ، رقم ۱۸۷۳۴، ج۱۰، ص۷۶۶)

(2101)...... उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''आदमी जन्नत में किसी परिन्दे की ख़्वाहिश करेगा तो वोह परिन्दा बुख़्ती ऊंट की त़रह़ उस के दस्तर ख़्वान पर आ गिरेगा न तो उसे धुवां पहुंचेगा और न ही उसे आग छूएगी तो वोह शिकम सैर होने तक उस परिन्दे से खाएगा फिर वोह परिन्दा उड़ जाएगा।''

(الترغیب الترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ، الخ، رقم ۷۵، ج۴، ص۲۹۲)

(2102)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे ह़ुस्नो जमाल, दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नत में एक परिन्दा है जिस के सत्तर हज़ार पर हैं वोह आ कर जन्नती शख़्स के पियाले में गिर जाएगा फिर वोह हिलेगा तो उस के हर रेशे में से बर्फ़ से ज़ियादा सफ़ेद, मख्खन से ज़ियादा नर्म और शह्द से ज़ियादा लज़ीज़ खाना निकलेगा उन में से कोई खाना दूसरे के मुशाबेह न होगा फिर वोह परिन्दा उड़ जाएगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ، رقم ۷۶، ج۴، ص۲۹۲)

(2103)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''तुम में से जो भी जन्नत में दाख़िल होगा उसे तूबा की त़रफ़ ले जाया जाएगा फिर उस के लिये उस के शिगूफ़े खोले जाएंगे तो वोह उन में से जिसे चाहेगा पकड़ लेगा चाहे सफ़ेद को पकड़े या सुर्ख़ को, सब्ज़ को पकड़े या ज़र्द को या काले को वोह सब गुले लाला की मिस्ल नर्म व ख़ूब सूरत होंगे।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ...الخ، رقم ۸۱، ج۴، ص۲۹۴)

(2104)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''जन्नत में मोमिन का घर एक मोती होगा जिस में चालीस हज़ार मकानात होंगे और एक दरख़्त होगा जो हुल्ले (या'नी जन्नती लिबास) उगाएगा तो वोह शख़्स अपनी दो उंगलियों के साथ मोती और मरजान से मुज़य्यन सत्तर हुल्लों को पकड़ लेगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب الترغیب فی الجنۃ، رقم ۸۳، ج۴، ص۲۹۴)

(2105)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''आदमी जन्नत में सत्तर साल तक एक ही त़रफ़ रुख़ किये हुए टेक लगाए रहेगा फिर उस के पास एक औ़रत आएगी और उस के कांधे पर चपत मारेगी। उसे अपना चेहरा उस के गाल में आईने से ज़ियादा शफ़्फ़ाफ़ नज़र आएगा और उस औ़रत ने जो सब से छोटा मोती पहन रखा होगा वोह मशरिक़ो मग़रिब को रोशन किये होगा फिर वोह उसे सलाम कहेगी वोह सलाम का जवाब देगा और उस से पूछेगा कि ''तू कौन है?'' तो वोह कहेगी, ''मैं मज़ीद में से हूं।'' और उस ने सत्तर कपड़े पहन रखे होंगे जिस में सब से कमतर लिबास तूबा के गुले लाला जैसा होगा तो वोह उस पर अपनी नज़रें जमाएगा तो उसे उस की पिंडलियों का मग़्ज़ बाहर ही से नज़र आएगा और उस औ़रत के सर पर एक ताज होगा जिस का सब से छोटा मोती मशरिक़ो मग़रिब को रोशन कर देगा।''

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابوسعید خدری رضی اللہ عنہ، رقم ۱۱۷۱۵، ج۴، ص۱۵۰)

(2106)...... ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''अगर अहले जन्नत के कपड़ों में से एक कपड़ा आज पहन लिया जाए तो उस की त़रफ़ देखने वाले की नज़र उचक ली जाए और लोगों की बीनाइयां उसे बरदाश्त न कर सकें।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی ثیابھم و حللھم، رقم ۸۴، ج۴، ص۲۹۴)

(2107)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़ौल :

''وَفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ۝ (پ۲۷، الواقعۃ:۳۴) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और बुलन्द बिछोनों में।''

की तफ़्सीर बयान करते हुए फ़रमाया कि ''उस की बुलन्दी ज़मीनो आस्मान की मसाफ़त जितनी है और इन दोनों के दरमियान की मसाफ़त पांच सो साल है।''

(جامع الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الواقعۃ، رقم ۳۳۰۵، ج۵، ص۱۹۲)

(2108)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि आक़ाए मज़्लूम, सरवरे मा'सूम, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में आ-मदो रफ़्त रखना, दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर है और जन्नत में तुम में से किसी की कमान की गोलाई या कोड़ा रखने की जगह दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर है

और अगर जन्नती औरतों में से कोई औरत ज़मीन पर ज़ाहिर हो जाए तो ज़मीनो आस्मान के दरमियान की हर चीज़ को मुअत्तर और मुनव्वर कर दे और उस के सर की ओढ़नी दुन्या और इस की हर चीज़ से बेहतर है।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی وصف نساء اھل الجنۃ، رقم ۹۰، ج۴، ص۲۹۶)

(2109)...... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नती औरतों में से हर औरत की पिंडली की सफ़ेदी सत्तर हुल्लों के बाहर से नज़र आती है बल्कि उस की पिंडली का मग़ज़ तक नज़र आता है इस की वजह येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया :

كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ۝ (پ۲۷، الرحمٰن:۵۸) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : गोया वोह ला'ल और याक़ूत और मूंगा हैं।

और याक़ूत एक ऐसा पथ्थर है अगर तुम उस में धागा डालो फिर उसे बन्द कर दो फिर भी उस के बाहर से वोह धागा तुम्हें नज़र आएगा।''

(ترمذی، باب فی صفۃ النساء اھل الجنۃ، رقم ۲۵۴۱، ج۴، ص۲۳۹ بتغیر)

(2110)...... हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मुझे शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बताया कि जिब्रईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे ख़बर दी कि जब कोई आदमी किसी हूर के पास जाएगा तो वोह मुआ-नक़ा और मुसा-फ़हा से उस का इस्तिक़्बाल करेगी। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''फिर तुम उस की जिन उंग्लियों से चाहो पकड़ो अगर उस की उंगली का एक पोरा दुन्या पर ज़ाहिर हो जाए तो उस के सामने सूरज और चांद की रोशनी मांद पड़ जाए और अगर उस के बालों की एक लट ज़ाहिर हो जाए तो मशरिक़ो मग़रिब की हर चीज़ उस की पाकीज़ा ख़ुश्बू से भर जाए। जन्नती शख़्स अपनी मसहरी पर बैठा होगा कि अचानक उस के सर पर एक नूर ज़ाहिर होगा वोह गुमान करेगा कि शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मख़्लूक़ पर नज़रे करम फ़रमा रहा है जब वोह उस नूर को देखेगा तो वोह एक हूर होगी जो निदा दे रही होगी कि ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! क्या तुम्हारे पास हमारे लिये वक़्त नहीं है ?'' वोह पूछेगा, ''तुम कौन हो ?'' वोह कहेगी, ''मैं उन हूरों में से हूं जिन के बारे में **अल्लाह** तबा-र-क व तआला ने फ़रमाया है, وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ۝ (پ۲۶، ق:۳۵)'' तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे पास इस से भी ज़ियादा है।'' फिर वोह उस की तरफ़ रुख़ करेगा तो देखेगा उस के पास जो जमाल और कमाल है वोह पहले वाली हूरों में नहीं।

फिर जब वोह उस हूर के साथ अपनी मसहरी पर बैठा होगा तो उसे एक और हूर पुकारेगी, ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली ! क्या तुम्हारे पास हमारे लिये वक़्त नहीं ?'' वोह पूछेगा, ''ऐ ! तुम कौन हो ?'' वोह कहेगी कि ''मैं उन हूरों में से हूं जिन के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया है,

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ (پ۲۱، السجدہ:۱۷) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

फिर वोह इसी त़रह़ अपनी बीवियों में से एक हूर से दूसरी की त़रफ़ मुन्तक़िल होता रहेगा।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ والنار، فصل وصف نساءاھل الجنۃ، رقم ۹۴، ج۴، ص ۲۹۷)

(2111)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि ''अगर हूर अपनी हथैली ज़मीनो आस्मान के दरमियान ज़ाहिर कर दे तो उस के ह़ुस्न की वजह से मख़्लूक़ फ़ितने में पड़ जाए और अगर वोह अपनी ओढ़नी ज़ाहिर कर दे तो सूरज उस के ह़ुस्न की वजह से धूप में रखी हुई चराग़ रोशन करने वाली बत्ती की त़रह़ हो जाए जिस की कोई रोशनी नहीं होती और अगर वोह अपना चेहरा ज़ाहिर कर दे तो ज़मीनो आस्मान की हर चीज़ को रोशन कर दे।''

(الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، باب فی وصف النساءاھل الجنۃ، رقم ۹۷، ج۴، ص ۲۹۸)

(2112)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि ''अगर जन्नती औ़रतों में से कोई औ़रत सात समुन्दरों में अपना थूक डाल दे तो वोह सारे समुन्दर शह्द से ज़ियादा मीठे हो जाएं।''

(الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار فصل فی وصف نساءاھل الجنۃ، رقم ۹۹، ج۴، ص ۲۹۹)

(2113)...... ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا फ़रमाते हैं कि एक दिन हम ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ बैठे हुए थे कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''अगर आस्मानी हूर के हाथ की सफ़ेदी और उस की अंगूठियां ज़मीनो आस्मान के दरमियान लटका दी जाएं तो इस की वजह से ज़मीन इस त़रह़ रोशन हो जाए जिस त़रह़ सूरज दुन्या वालों के लिये रोशन होता है।'' फिर फ़रमाया कि ''येह तो मैं ने उस के हाथ का तज़्किरा किया है उस के चेहरे की सफ़ेदी और ह़ुस्नो जमाल और उस के ताज, याक़ूत व ज़बर जद के ह़ुस्न का क्या आ़लम होगा?''

(الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار فصل فی وصف نساءاھل الجنۃ، رقم ۱۰۰، ج۴، ص ۲۹۹)

(2114)...... अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अ़ली बिन अबू त़ालिब كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नत में हूरे ईन का इज्तिमाअ़ होगा जिस में वोह अपनी आवाज़ें बुलन्द करेंगी मख़्लूक़ ने इन जैसी आवाज़ कभी न सुनी होगी वोह कहेंगी हम हमेशा रहने वाली हैं कभी हलाक न होंगी और हम हमेशा ख़ुशह़ाल रहेंगी कभी ना उम्मीद न होंगी और हम हमेशा राज़ी रहेंगी कभी नाराज़ न होंगी ख़ुश बख़्ती है उस के लिये जो हमारा हो और हम जिस की हों।'' (ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی کلام الحور العین، رقم ۲۵۷۳، ج۴، ص ۲۵۴)

(2115)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ''बेशक जन्नत में एक नह्र है जो सारी जन्नत में फैली हुई है उस के दो जानिब कंवारी लड़कियां ख़ूब सूरत आवाज़ में नग़्मा सरा होंगी जिसे सारी मख़्लूक़ सुनेगी और ख़याल करेगी कि जन्नत में इस जैसी कोई और लज़्ज़त नहीं।'' हम ने अ़र्ज़ किया, ''ऐ अबू हुरैरा ! वोह नग़्मा क्या होगा ?'' तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़, उस की तह़मीद व तक़्दीस और सना बयान करेंगी।''

(الترغیب والترہیب، کتاب صفۃ اھل الجنۃ والنار فصل فی غناء الحور العین، رقم ۱۰۸، ج۴، ص ۳۰۱)

(2116)...... हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नत में एक बाज़ार है जिस में अहले जन्नत हर जुमुआ के दिन आया करेंगे। फिर शुमाल की जानिब से एक हवा चलेगी और उन के चेहरों और कपड़ों में सरायत कर के उन के हुस्नो जमाल में इज़ाफ़ा कर देगी फिर जब वोह अपने घर वालों की तरफ़ आएंगे तो उन के हुस्नो जमाल में इज़ाफ़ा हो चुका होगा तो उन के घर वाले उन से कहेंगे कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! हम से जुदा होने के बा'द तुम्हारे हुस्नो जमाल में इज़ाफ़ा हो गया है।'' तो वोह कहेंगे ''और तुम्हारे हुस्न में भी, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! हमारे जाने के बा'द तुम्हारे हुस्नो जमाल में भी इज़ाफ़ा हो गया है।'' (مسلم، کتاب صفۃ الجنۃ ونعیمھا، باب فی سوق الجنۃ، رقم ۲۸۳۳، ص ۱۵۱۹)

(2117)...... अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबू तालिब كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रहमतुल्लिल आ–लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ''बेशक जन्नत में एक बाज़ार होगा जिस में ख़रीदो फ़रोख़्त न होगी बल्कि उस में मर्दों और औरतों की तसावीर होंगी जब कोई आदमी किसी सूरत की ख़्वाहिश करेगा तो (उस का चेहरा) वैसा ही हो जाएगा।''

(ترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ماجاء فی سوق الجنۃ، رقم ۲۵۵۹، ج ۴، ص ۲۴۷)

(2118)...... हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मेरी हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मुलाक़ात हुई तो उन्हों ने फ़रमाया कि ''**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से दुआ करो कि वोह जन्नत के बाज़ार में हम दोनों को जम्अ फ़रमाए।'' मैं ने अ़र्ज़ किया, ''क्या जन्नत में भी बाज़ार भी होगा ?'' तो हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि ''हां ! मुझे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी है कि ''अहले जन्नत जब जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो उन्हें अपने आ'माल के मुताबिक़ महल्लात दिये जाएंगे और उन्हें दुन्या के जुमुआ के दिन की मिक़्दार में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ज़ियारत करने की इजाज़त दी जाएगी, उन पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपना अ़र्श ज़ाहिर फ़रमाएगा और उन के लिये जन्नत की क्यारियों में से एक क्यारी में तजल्ली फ़रमाएगा फिर अहले जन्नत के लिये नूर के मिम्बर, मोतियों के मिम्बर, याक़ूत के मिम्बर, ज़बर जद के मिम्बर सोने और चांदी के मिम्बर रखे जाएंगे और उन में से अदना द–रजे का जन्नती हालां कि उन में कमतर कोई न होगा मुश्क और काफ़ूर के टीले पर बैठेगा तो वोह येह ख़याल नहीं करेंगे कि मिम्बरों पर बैठने वाले हम से अच्छी जगह बैठे हैं।''

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं ने अ़र्ज़ किया, ''या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम अपने रब عَزَّ وَجَلَّ को देखेंगे ?'' इर्शाद फ़रमाया कि ''क्या तुम सूरज और चौदहवीं के चांद को देखने में झगड़ते (शक करते) हो ?'' हम ने अ़र्ज़ किया ''नहीं !'' फ़रमाया, ''इसी तरह तुम अपने रब عَزَّ وَجَلَّ को देखने में भी नहीं झगड़ोगे और इस मजलिस के हर शख़्स को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इतना हाज़िर जवाब कर देगा कि जब भी वोह तुम में से किसी शख़्स से उस की दुन्या की लग़्ज़िशें याद दिलाते हुए पूछेगा कि ''क्या तुझे वोह दिन याद नहीं जिस दिन तूने फ़ुलां फ़ुलां अ़मल किया था ?'' तो बन्दा अ़र्ज़ करेगा,

"या रब عَزَّوَجَلَّ ! क्या तूने मेरी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमा दी ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, "क्यूं नहीं ? मेरी मग़्फ़िरत की वुस्अ़त ही की वजह से तूने येह मक़ाम पाया है।" येह सिल्सिला जारी होगा कि ऊपर से एक बादल आ कर उन्हें ढांप लेगा फिर उन पर ऐसी ख़ुश्बू बरसाई जाएगी जिस की मिस्ल उन्हों ने कभी न पाई होगी फिर अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला फ़रमाएगा, "मैं ने तुम्हारे लिये जो बुज़ुर्गी तय्यार की है उस की त़रफ़ जाओ और अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ उस में से ले लो।" तो वोह मलाएका के साए में बाज़ार की त़रफ़ आएंगे तो उस बाज़ार में वोह ने'मतें होंगी जिन्हें न आंखों ने देखा होगा न ही कानों ने सुना होगा और न ही दिलों पर उन का ख़याल गुज़रा होगा। ह़ज़रत अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मज़ीद फ़रमाया कि "फिर हमें अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ अस्बाब दिये जाएंगे। उस बाज़ार में न कोई चीज़ बेची जाएगी और न ही ख़रीदी जाएगी और उस बाज़ार में अहले जन्नत एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। फिर फ़रमाया कि "आ'ला द-रजे वाला जन्नती जब किसी अदना द-रजे वाले जन्नती से मिलेगा ह़ालां कि उन में कमतर कोई न होगा तो उस पर जो लिबास देखेगा वोह उसे पसन्द आएगा तो उस की बात मुकम्मल होने से पहले उस पर उस से ख़ूब सूरत लिबास आ जाएगा क्यूं कि जन्नत में कोई शख़्स ग़मज़दा न होगा।"

मज़ीद फ़रमाया कि "फिर हम अपने घरों को लौट आएंगे तो हमारी बीवियां हम से मिलेंगी तो कहेंगी مَرْحَبًا وَّاَھْلًا بِکَ या'नी ख़ुश आ-मदीद ! बेशक तुम वापस आए तो तुम्हारे जमाल और पाकीज़गी में हम से जुदाई के वक़्त से ज़ियादा इज़ाफ़ा हो चुका है तो वोह शख़्स कहेगा, "आज हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ने हमें शरफ़ बख़्शा था लिहाज़ा हम इसी हुस्नो जमाल के सज़ावार हैं जिस में हम तब्दील हुए हैं।" (سنن ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب صفۃ الجنۃ، رقم ۴۳۳۶، ج۴، ص ۵۳۸)

(2119)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना, "बेशक जन्नत में एक दरख़्त है जिस की शाख़ों से हीरे जवाहिरात निकलते हैं जब कि उस की जड़ों से सोने के घोड़े निकलते हैं जिन की लगामें मोती और याक़ूत से मुज़य्यन हैं और वोह बौलो बराज़ (या'नी पाख़ाना, पेशाब) नहीं करते उन के पर होते हैं और वोह ह़द्दे निगाह पर क़दम रखते हैं अहले जन्नत उन पर उड़ते हुए सुवारी करेंगे और जब उन से कम द-रजे वाले लोग कहेंगे कि "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन लोगों को येह द-रजा कैसे मिला ?" तो उन से कहा जाएगा कि "येह लोग रात को नमाज़ पढ़ा करते थे जब कि तुम सो जाया करते थे येह दिन में रोज़ा रखा करते जब कि तुम खाया करते और येह अल्लाह की राह में जिहाद किया करते थे जब कि तुम जिहाद से फ़िरार इख़्तियार करते थे।" (الترغیب والترھیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی تزاورھم ومراکبھم، رقم ۱۱۷، ج۴، ص ۳۰۴)

(2120)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन साइदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "मैं घोड़े पसन्द किया करता था लिहाज़ा मैं ने शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ किया "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या जन्नत में घोड़े भी होंगे ?" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ऐ अ़ब्दुर्रह़मान ! अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल फ़रमाया तो वहां तुम्हारे लिये याक़ूत का एक घोड़ा होगा जिस के दो पर होंगे जहां तुम चाहोगे वोह तुम्हें उड़ा कर ले जाएगा।" (مجمع الزوائد، کتاب اھل الجنۃ، باب فی خیل الجنۃ، رقم ۱۸۷۲۵، ج۱۰، ص۷۶۲)

(2121)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ख़ातिमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अहले जन्नत से फ़रमाएगा कि "ऐ जन्नतियो !" वोह अ़र्ज़ करेंगे, "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम ह़ाज़िर हैं और भलाई तो तेरे ही दस्ते क़ुदरत में है।" फिर फ़रमाएगा "क्या तुम राज़ी हो ?" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे, "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! हम क्यूं न राज़ी हों कि तूने हमें वोह ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई हैं जो तूने अपनी मख़्लूक़ में से किसी को अ़त़ा नहीं फ़रमाई।" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा, "सुनो ! मैं तुम्हें इस से भी अफ़्ज़ल ने'मत अ़त़ा फ़रमा रहा हूं।" वोह अ़र्ज़ करेंगे कि "इस से अफ़्ज़ल शै कौन सी होगी ?" तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि "मैं ने तुम पर अपनी रिज़ा ह़लाल कर दी है लिहाज़ा आज के बा'द कभी तुम से नाराज़ न होउंगा।" (صحیح مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا، باب احلال الرضوان...الخ، رقم ۲۸۲۹، ص۱۵۱۸)

(2122)...... ह़ज़रते सय्यिदुना सुहैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "जब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा कि "क्या तुम्हें किसी चीज़ की ख़्वाहिश है कि मैं तुम्हारी ने'मतों में इज़ाफ़ा करूं ?" तो वोह अ़र्ज़ करेंगे कि "क्या तूने हमारी इ़ज़्ज़त नहीं बढ़ाई ? क्या तूने हमें जन्नत में दाख़िल नहीं फ़रमा दिया ? और क्या तूने हमें जहन्नम से पनाह अ़त़ा नहीं फ़रमा दी ?" तो ह़िजाब उठा दिया जाएगा और उन्हें अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ नज़र करने से ज़ियादा मह़बूब कोई ने'मत अ़त़ा नहीं की जाएगी। फिर येह आयते मुबा-रका तिलावत फ़रमाई, "لِلَّذِیْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰی وَزِیَادَةٌ ط (پ۱۱، یونس:۲۶)" तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी ज़ाइद।" (مسلم، کتاب الایمان، باب اثبات رویۃ المؤمنین فی الاٰخرۃ، رقم ۱۸۱، ص۱۱۰)

(2123)...... हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "मेरे पास जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام हाज़िर हुए तो उन के हाथ में एक साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ और ख़ूब सूरत तरीन आईना था जब कि उस के दरमियान में सियाह रंग का एक नुक़्ता था। मैं ने उन से पूछा, "ऐ जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ! येह क्या है ?" अ़र्ज़ किया, "येह दुन्या और उस का हुस्न है।" मैं ने पूछा, "येह इस के दरमियान सियाह नुक़्ता क्या है ?" अ़र्ज़ किया कि "येह जुमुआ़ है।" मैं ने पूछा, "जुमुआ़ से क्या मुराद है ?" अ़र्ज़ किया कि "येह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के रब عَزَّوَجَلَّ के अय्याम में से एक अ़ज़ीम दिन है अ़न्क़रीब मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने इस दिन के शरफ़ व मर्तबा और इस के आख़िरत के नाम अ़र्ज़ करूंगा इस का फ़ज़्लो शरफ़ और दुन्या में येह नाम इस लिये है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस दिन मख़्लूक़ के मुआ़-मले को जम्अ़ फ़रमाया और इस में जो चीज़ उम्मीद वाली है वोह येह है कि इस में एक घड़ी ऐसी होती है कि जो मुसल्मान बन्दा या मुसल्मान बन्दी उस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से जो भलाई मांगेंगे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन दोनों को वोह भलाई ज़रूर अ़ता फ़रमाएगा और इस का आख़िरत में शरफ़ व मर्तबा और नाम येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब जन्नत को जन्नतियों से भर देगा और जहन्नमियों को जहन्नम में दाख़िल फ़रमा देगा और इन पर उन के अय्याम और घड़ियां रवां हो जाएंगी इन में दिन और रात न होंगे उन की मिक़्दार और घड़ियों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है फिर जब जुमुआ़ का दिन आएगा और वोह घड़ी आएगी जिस में अहले जुमुआ़, जुमुआ़ के लिये निकला करते थे तो एक मुनादी निदा करेगा कि "ऐ जन्नतियो ! दारुल मज़ीद की त़रफ़ चलो जिस की वुस्अ़त, लम्बाई और चौड़ाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा कोई नहीं जानता।" तो वोह मुश्क के टीलों की त़रफ़ चल देंगे।"

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि "वोह मुश्क तुम्हारे आटे से ज़ियादा सफ़ेद होगा।" फिर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के ग़िलमान नूर के मिम्बर ले कर निकलेंगे और मुअमिनीन के ग़िलमान याक़ूत की कुरसियां ले कर निकलेंगे तो जब मिम्बर और कुरसियां रख दी जाएंगी तो लोग अपनी अपनी जगहों पर बैठ जाएंगे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक हवा भेजेगा जिस का नाम मसीरा होगा वोह उन पर मुश्क के ढेर और उस की तेज़ ख़ुश्बू निछावर करेगी वोह उन के कपड़ों के नीचे से दाख़िल हो कर उन के चेहरों और बालों से निकलेगी तो अगर इज़्ने इलाही عَزَّوَجَلَّ से किसी औ़रत की त़रफ़ उस हवा को भेजा जाए तो वोह उस औ़रत का उस मुश्क के ज़रीए क्या ह़ाल करेगी वोह मुझे मा'लूम है।

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़र्श उठाने वाले मलाएका पर वह्य फ़रमाएगा फिर उस अ़र्शे अ़ज़ीम को जन्नत की दो पुश्तों के दरमियान रख दिया जाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और बन्दों के दरमियान ह़िजाब होंगे तो वोह जन्नती अपने रब عَزَّوَجَلَّ का जो पहला कलाम सुनेंगे वोह येह होगा कि "मेरे वोह बन्दे कहां हैं जिन्हों ने मुझे देखे बिग़ैर मेरी इत़ाअ़त की और मेरे रसूलों की तस्दीक़ करते हुए मेरे हुक्म की इत्तिबाअ़ की तो मुझ से मांगो आज यौमुल मज़ीद है।"

तो वोह सब एक ही बात कहेंगे कि "या रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से राज़ी हैं तू भी हम से राज़ी हो जा।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जवाब में इर्शाद फ़रमाएगा, "ऐ मेरे बन्दो ! अगर मैं तुम से राज़ी न होता तो हरगिज़ तुम्हें अपनी जन्नत में न ठहराता मुझ से मांगो आज यौमुल मज़ीद है।" तो वोह सब मिल कर एक ही अ़र्ज़ करेंगे कि "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने वज्हे करीम की ज़ियारत करा दे ताकि हम उसे देख सकें।" फिर **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला उन हि़जाबात को उठा देगा फिर उन के लिये तजल्ली फ़रमाएगा अगर वोह उन के ह़क़ में जलने का फ़ैसला फ़रमाता तो वोह सब उस नूर की तजल्ली को बरदाश्त न करते हुए जल जाते तो वोह नूर उन्हें ढांप लेगा फिर उन से कहा जाएगा कि "अपने घरों की त़रफ़ लौट जाओ।"

फिर जब वोह लौट कर अपने घर आएंगे तो अपनी बीवियों से पोशीदा होंगे और उन की बीवियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर की तजल्ली की वजह से उन की नज़रों से ओझल होंगी फिर वोह नूर कभी कम होगा और कभी ग़ालिब आ जाएगा फिर कम होगा फिर ग़ालिब आ जाएगा यहां तक कि वोह अपनी पिछली सूरतों में लौट आएंगे तो उन की बीवियां उन से कहेंगी कि "जब तुम हमारे पास से गए थे उस वक़्त तुम्हारी सूरतें दूसरी थीं और अब तुम मुख़्तलिफ़ सूरतों में लौटे हो।" तो वोह कहेंगे कि "इस की वजह येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे लिये तजल्ली फ़रमाई थी तो हम ने उस के नूर की तजल्ली की त़रफ़ देखा जिस ने हमें तुम से मख़्फ़ी कर दिया।" फिर हर हफ़्ते उन के हुस्न में इज़ाफ़ा किया जाता रहेगा और इस की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह क़ौल है,

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِیَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْیُنٍۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ۝ (پ۲۱،السجدہ:۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का।

(الترغیب الترہیب، کتاب صفۃ الجنۃ والنار، فصل فی نظر اھل الجنۃ...الخ، رقم ۱۳۰، ج۴، ص۳۱۱)

(2124)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर्द गार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने जब अपने रब عَزَّوَجَلَّ से सब से कम द-रजे वाले जन्नती के बारे में सुवाल किया कि "उस की मन्ज़िल कितनी बड़ी होगी ?" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि "वोह शख़्स जन्नतियों के जन्नत में दाख़िल होने के बा'द आएगा तो उस से कहा जाएगा कि "जन्नत में दाख़िल हो जा।" तो वोह अ़र्ज़ करेगा, "या रब عَزَّوَجَلَّ ! कैसे दाख़िल हो जाऊं ? ह़ालां कि लोग अपने मह़ल्लात में चले गए और उन्हों ने अपनी मनाज़िल को ले लिया।" तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

फ़रमाएगा कि ''क्या तू इस बात पर राज़ी है कि तेरे लिये दुन्या के बादशाहों जैसी ने'मतें हों।'' तो वोह अ़र्ज़ करेगा कि ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से फ़रमाएगा, ''तेरे लिये वोही है और इस की मिस्ल और इस की मिस्ल और इस की मिस्ल तो जब रब عَزَّوَجَلَّ उस के इन्आ़मात में पांच गुना इज़ाफ़ा फ़रमाएगा तो वोह बोल उठेगा कि ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं।'' तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा येह सब तेरे लिये है और इस से दस गुना मज़ीद तेरे लिये और तेरे लिये तेरे नफ़्स की चाहत के मुत़ाबिक़ और तेरी आंखों की लज़्ज़त के मुत़ाबिक़ ने'मतें हैं।'' तो वोह अ़र्ज़ करेगा कि ''या रब عَزَّوَجَلَّ ! मैं राज़ी हूं।''

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सब से आ'ला द-रजे वाले जन्नती के बारे में सुवाल किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि ''येह वोह लोग हैं जिन को मैं ने पसन्द कर लिया और इन की इ़ज़्ज़तो करामत पर मैं ने अपने दस्ते क़ुदरत से मोहर लगा दी तो न उसे किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न ही किसी इन्सान के दिल पर उस का ख़याल गुज़रा।''

(مسلم، کتاب الایمان، باب ادنی اهل الجنة منزلة فیها، رقم ۱۸۹، ص ۱۱۸)

दुआ़

ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से तेरी रिज़ा और जन्नत चाहते हैं और उस क़ौल व अ़मल का सुवाल करते हैं जो हमें इन दोनों के क़रीब कर दे। हम तेरी ने'मतों का इक़रार और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करते हैं। तू अपने अ़फ़्वो करम से हमारी कोताहियां मुआ़फ़ फ़रमा। और अपने फ़ज़्ल से हमारी लग़्ज़िशें मुआ़फ़ फ़रमा और ऐ तमाम जहानों के पालने वाले ! हमें अपने मुख़्लिस बन्दों में शामिल फ़रमा।

وصل اللهم علی اشرف خلقك محمد عبدك ورسولك وصفيك

وحبيبك وخليلك وعلى اله وصحبه اجمعين وسلم تسليما كثيرادائما ابداالى يوم الدين -

تمت بالخير والحمد لله رب العالمين

हमारा म-दनी मक़्सद

''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ।''

✡ ===✡ ===✡ ===✡

ماخذ ومراجع

(۱) قرآن کریم — ضیاء القرآن پبلی کیشنز

(۲) ترجمۃ القران کنز الایمان — ضیاء القرآن پبلی کیشنز

(۳) تفسیر الدر المنثور — دار الفکر، بیروت

(۴) صحیح البخاری — دار الکتب العلمیۃ بیروت

(۵) صحیح مسلم — دار ابن حزم بیروت

(۶) جامع الترمذی — دار الفکر بیروت

(۷) سنن ابی داوٗد — دار احیاء التراث العربی بیروت

(۸) سنن النسائی — دار الجیل بیروت

(۹) سنن ابن ماجہ — دار المعرفۃ بیروت

(۱۰) المشکاۃ المصابیح — دار الفکر بیروت

(۱۱) شعب الایمان — دار الکتب العلمیۃ بیروت

(۱۲) المعجم الکبیر — دار احیاء التراث العربی بیروت

(۱۳) المعجم الاوسط — دار الفکر عمان

(۱۴) المسند للامام احمد بن حنبل — دار الفکر بیروت

(۱۵) السنن الکبری — دار الکتب العلمیۃ بیروت

(۱۶) مجمع الزوائد — دار الفکر بیروت

(۱۷) مسند ابی یعلی — دار الکتب العلمیۃ بیروت

(۱۸) المصنف ابن ابی شیبہ — دار الفکر بیروت

(۱۹) المصنف عبد الرزاق — دار الکتب العلمیۃ بیروت

(۲۰) شرح السنۃ — دار الکتب العلمیۃ بیروت

(۲۱) کنز العمال — دار الکتب العلمیۃ بیروت

(۲۲)حلیۃ الاولیاء دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۲۳)الترغیب والترھیب دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۲۴)الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۲۵)صحیح ابن خزیمۃ المکتب الاسلامی بیروت
(۲۶)فیض القدیر شرح جامع الصغیر دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۲۷)المستدرک دارالمعرفۃ بیروت
(۲۸)البحر الزخار بمسند البزار مکتبۃ العلوم والحکما لمدینۃ المنورہ
(۲۹)الموطا للامام مالک دارالمعرفۃ بیروت
(۳۰)مراسل ابی داوٗد مع سنن ابی داوٗد افغنستان اسلامی امارات
(۳۱)مجمع البحرین دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۳۲)المحدث الفاصل دارالفکر بیروت
(۳۳)کتاب الزھد الکبیر للبیھقی موسسۃ الکتب الثقافیہ بیروت
(۳۴)تنزیہ الشریعۃ المرفوعۃ دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۳۵)تاریخ بغداد دارالکتب العلمیۃ بیروت
(۳۶)عمل الیوم واللیل مع السنن الکبری للنسائی دارالکتب العلمیۃ بیروت

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ा-लआ़ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत عَلَیْهِ الرَّحْمَة﴿

(1) **करन्सी नोट के मसाइल :** येह किताब (किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी अह़कामि क़िर्त़ासिद्दराहिम) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है। जिस में नोट के तबादिले और इस से मु-तअ़ल्लिक़ शर-ई अह़काम बयान किये गए हैं। (कुल सफ़ह़ात : 115)

(2) **विलायत का आसान रास्ता** (तसव्वुरे शैख़) **:** येह रिसाला (अल याक़ूतितुल वासित़ह) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है। जिस में पीरो मुर्शिद के तसव्वुर के मौज़ूअ़ पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ात का जवाब दिया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) **ईमान की पहचान** (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) **:** इस रिसाले में तम्हीदे ईमान के मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी और ज़रूरी इस्तिलाह़ात की मुख़्तसर तशरीह़ात दर्ज की गई हैं। (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) **काम्याबी के चार उसूल** (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह़) **:** इस रिसाले में पूरे आ़लमे इस्लाम के लिये चार निकात की सूरत में मआ़शी ह़ल पेश किया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) **शरीअ़त व त़रीक़त :** येह रिसाला (मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) का ह़ाशिया है। इस अ़ज़ीम रिसाले में शरीअ़त और त़रीक़त को अलग अलग मानने वाले जाहिलों की सह़ीह़ रहनुमाई की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) **सुबूते हिलाल के त़रीक़े** (तु-रक़ि इस्बाति हिलाल) **:** इस रिसाले में चांद के सुबूत के लिये मुक़र्रर शर-ई उसूलो ज़वाबित़ की तफ़्सीलात का बयान है। (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) **औ़रतें और मज़ारात की ह़ाज़िरी :** येह रिसाला (जु-मलिन्नूर फ़ी नहयिन्निसा-इ अ़न ज़िया-रतिल क़ुबूर) का ह़ाशिया है। इस रिसाले में औ़रतों के ज़ियारते क़ुबूर के लिये निकलने से मु-तअ़ल्लिक़ शर-ई हुक्म पर वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के मुस्कित जवाबात शामिल हैं। (कुल सफ़ह़ात : 35)

(8) **आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब** (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) **:** इस रिसाले में इमामे अहले सुन्नत عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن पर बा'ज़ ग़ैर मुक़ल्लिदीन की त़रफ़ से किये गए चन्द सुवालात के मुदल्लल जवाबात ब सूरते इन्टरव्यू दर्ज किये गए हैं। (कुल सफ़ह़ात : 100)

(9) **ईदैन में गले मिलना कैसा ?** येह रिसाला (विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ई़द) की तस्हीलो तख़्रीज पर मुश्तमिल है। इस रिसाले में ईदैन में गले मिलने को बिदअ़त कहने वालों के रद में दलाइल से मुज़य्यन तफ़्सीली फ़तवा शामिल है। (कुल सफ़ह़ात : 55)

(10) **राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल :** येह रिसाला (रद्दिल कह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) की तस्हील व तख़्रीज पर मुश्तमिल है। येह रिसाला पड़ोसियों और फ़ु-क़रा से ख़ैर ख़्वाही और वबा को टालने के लिये स-दक़ा के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल अह़ादीस व ह़िकायात का बेहतरीन मजमूआ़ है। (कुल सफ़ह़ात : 40)

(11) **वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुकूक़ :** येह रिसाला (अल हुकूक़ लि त़र्हिल उ़कूक़) की तस्हील व ह़ाशिया और तख़्रीज पर मुश्तमिल है, इस में वालिदैन, असातिज़ए किराम, एह़तिरामे मुस्लिम और दीगर हुकूक़ का तफ़्सीली बयान है। (कुल सफ़ह़ात : 125)

(12) **दुआ़ के फ़ज़ाइल :** येह रिसाला (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) की ह़ाशिया व तस्हील और तख़्रीज पर मुश्तमिल है, जिस में दुआ़ से मु-तअ़ल्लिक़ तफ़्सीली अह़काम का बयान है और हर हर मौज़ूअ़ पर सैर ह़ासिल बह़्स की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 140)

शाएअ़ होने वाले अ़-रबी रसाइल :

अज़ इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن

(1) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74) (2) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) (3) अल इजाज़ातिल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62) (4) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60) (5) अल फ़द्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46) (6) अजलिय्युल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70) (7) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93) (8) हुस्सामुल ह़-रमैन अ़ला मुन्ह़रिल कुफ़्रि वल मैन (कुल सफ़ह़ात : 194)

(शो'बए इस्लाही़ कुतुब)

(1) **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ **:** इस किताब में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से मु-तअ़ल्लिक़ कसीर आयाते करीमा, अह़ादीसे मुबा-रका और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल व अह़वाल के बिखरे हुए मोतियों को सिल्के तह़रीर में पिरोने की कोशिश की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 160)

(2) **इन्फ़िरादी कोशिश :** इस किताब में नेकी की दा'वत को ज़ियादा से ज़ियादा आ़म करने के लिये इन्फ़िरादी कोशिश की ज़रूरत, इस की अहम्मिय्यत, इस के फ़ज़ाइल और इन्फ़िरादी कोशिश करने का त़रीक़ा बयान किया गया है। इलावा अज़ीं अस्लाफ़ की इन्फ़िरादी कोशिश के "99" मुन्तख़ब वाक़िआ़त को भी जम्अ़ किया गया है जिस में बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के "25" वाक़िआ़त भी शामिल हैं नीज़ किताब के आख़िर में इन्फ़िरादी कोशिश के अ़-मली त़रीक़े की मिसालें भी पेश की गई हैं। (कुल सफ़ह़ात : 200)

(3) **शाहराहे औलिया :** येह रिसाला सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की तस्नीफ़ "**मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन**" का तरजमा व तस्हील है। इस रिसाले में इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ ने मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त के तह़त मुन्फ़रिद अन्दाज़ में ग़ौरो तफ़क्कुर या'नी "**फ़िक्रे मदीना**" करने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है। म-सलन इन्सान को चाहिये कि दिन रात पर ग़ौर करे कि जब दिन की रोशनी फैल जाती है तो रात की तारीकी रुख़्सत हो जाती है इसी त़रह़ जब नेकियों का नूर इन्सान को ह़ासिल हो जाए तो उस के आ'ज़ा से गुनाहों की तारीकी रुख़्सत हो जाती है। मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त ग़ौर करे कि किस अ़-ज़मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ के घर में दाख़िल हो रहा है ? इसी त़रह़ इबादत करते वक़्त ग़ौर करे कि इस में मेरा कोई कमाल नहीं येह तो रब तआ़ला का एह़सान है कि उस ने मुझे इबादत की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई, علیٰ ھذا القیاس। (कुल सफ़ह़ात : 36)

(4) **फ़िक्रे मदीना :** इस किताब में फ़िक्रे मदीना (या'नी मुह़ा-सबे) की ज़रूरत, इस की अहम्मिय्यत, इस के फ़वाइद और बुज़ुर्गाने दीन की फ़िक्रे मदीना के "131" वाक़िआ़त को जम्अ़ किया गया है जिस में

बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के 41 वाक़िआ़त भी शामिल हैं नीज़ मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर फ़िक्रे मदीना करने का अ़-मली त़रीक़ा भी बयान किया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 164)

(5) **इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ?** इस रिसाले में उन तमाम मसाइल का ह़ल बयान करने की कोशिश की गई है जो एक त़ालिबे इ़ल्म को इम्तिह़ानात की तय्यारी के दौरान दरपेश हो सकते हैं। येह रिसाला बुन्यादी त़ौर पर दर्से निज़ामी के त़-लबा इस्लामी भाइयों को मद्दे नज़र रख कर लिखा गया है, लेकिन स्कूल व कॉलेज में पढ़ने वाले त़-लबा (Students) के लिये भी यक्सां मुफ़ीद है। इस लिये इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह येह रिसाला इन त़-लबा तक भी पहुंचाएं क्यूं कि इस रिसाले में अपने म-दनी मक़्सद ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ'' को पेशे नज़र रखते हुए बहुत से मक़ामात पर नेकी की दा'वत भी पेश की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 132)

(6) **नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल :** नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल पर मुश्तमिल एक किताब जिस में मुख़्तलिफ़ सूरतों का हुक्म अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی की किताबों से एक जगह जम्अ़ करने की सअ़्य की गई है ताकि अ़वामुन्नास की इन मसाइल तक आसानी से रसाई हो सके और इस मस्अले के बारे में लोगों में जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़लत फ़हमियां पाई जाती हैं उन का इज़ाला हो सके। (कुल सफ़ह़ात : 39)

(7) **जन्नत की दो चाबियां :** इस किताब में पहले जन्नत की ने'मतों का बयान किया गया है, फिर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की जानिब से ज़बान व शर्म गाह की ह़िफ़ाज़त से मु-तअ़ल्लिक़ दी गई एक बिशारत ज़िक्र की गई है। इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि हम इस की ज़मानत के ह़क़दार किस त़रह़ बन सकते हैं। ह़स्बे ज़रूरत शर-ई मसाइल भी ज़िक्र किये गए हैं। उम्मीदे वासिक़ है ज़बान और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त के बारे में एक मक़ाम पर इतनी तफ़्सील आप को किसी दूसरी किताब में न मिलेगी। **ذلک فضل الله العظیم** (कुल सफ़ह़ात : 152)

(8) **काम्याब उस्ताज़ कौन ?** इस किताब में उन तमाम उमूर को बयान करने की कोशिश की गई है जिन का तअ़ल्लुक़ तदरीस से हो सकता है म-सलन सबक़ की तय्यारी, सबक़ पढ़ाने का त़रीक़ा, सुनने का त़रीक़ा علی ھذا القیاس। येह किताब बुन्यादी त़ौर पर शो'बए दर्से निज़ामी को मद्दे नज़र रख कर लिखी गई है लेकिन ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा के उस्ताज़ भी मा'मूली तरमीम के साथ इस से ब ख़ूबी फ़ाएदा उठा सकते हैं नीज़ स्कूल व कॉलेजिज़ में पढ़ाने वाले असातिज़ा के लिये भी इस किताब का मुत़ा-लआ़ फ़ाएदे से ख़ाली नहीं है। (कुल सफ़ह़ात : 43)

(9) **निसाबे म-दनी क़ाफ़िला :** इस किताब में म-दनी क़ाफ़िला से मु-तअ़ल्लिक़ उमूर का बयान है, म-सलन म-दनी क़ाफ़िला की अहम्मिय्यत, म-दनी क़ाफ़िला कैसे तय्यार किया जाए, म-दनी क़ाफ़िला का जद्वल, इस जद्वल पर अ़मल किस त़रह़ किया जाए, अमीरे क़ाफ़िला कैसा होना चाहिये ? इलावा अज़ीं मौज़ूअ़ की मुना-सबत से अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی के अ़त़ा कर्दा म-दनी फूल भी इस किताब में सजा दिये गए हैं। अपने मौज़ूअ़ के ए'तिबार से मुन्फ़रिद किताब है। (कुल सफ़ह़ात : 196)

(10) **ह़ुस्ने अख़्लाक़ :** येह किताब दुन्याए इस्लाम के अ़ज़ीम मुह़द्दिस सय्यिदुना इमाम त़-बरानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की शाहकार तालीफ़ ''**मुकारिमुल अख़्लाक़**'' का तरजमा है। इस किताब में इमाम त़-बरानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने

अख़्लाक़ के मुख़्तलिफ़ शो'बों के मु-तअ़ल्लिक़ अहादीस जम्अ़ की हैं। उम्मीदे वासिक़ है कि येह किताब शबो रोज़ इन्फ़िरादी कोशिश में मस्रूफ़ रहने वाले इस्लामी भाइयों के लिये बहुत मुफ़ीद साबित होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़्हात : 74)

(11) **फ़ैज़ाने एहयाउल उ़लूम :** येह किताब इमाम गृज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَة की मायानाज़ किताब **"एहयाउल उ़लूम"** की तल्ख़ीस व तस्हील है जिसे दर्स देने के अन्दाज़ में मुरत्तब किया गया है। इख़्लास, मज़म्मते दुन्या, तवक्कुल, सब्र जैसे मज़ामीन पर मुश्तमिल है। (कुल सफ़्हात : 325)

(12) **राहे इल्म :** येह रिसाला **"ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीकुत्तअ़ल्लुम"** का तरजमा व तस्हील है जिस में उन उमूर का बयान है जिन की रिआ़यत राहे इल्म पर चलने वाले के लिये ज़रूरी है। और उन बातों का ज़िक्र है जिन से इज्तिनाब मुअ़ल्लिम व मु-तअ़ल्लिम के लिये ज़रूरी है। (कुल सफ़्हात : 102)

(13) **ह़क़ व बातिल का फ़र्क़ :** येह किताब ह़ाफ़िज़े मिल्लत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुबारक पूरी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है "जिसे ह़क़ व बातिल का फ़र्क़" के नाम से शाएअ़ किया गया है। मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने अ़क़ाइदे ह़क़्क़ा व बातिला के फ़र्क़ को निहायत आसान अन्दाज़ में सुवालन जवाबन पेश किया है जिस की वजह से कम ता'लीम याफ़्ता लोग भी इस का आसानी से मुता़-लआ़ कर सकते हैं। (कुल सफ़्हात : 50)

(14) **तह़क़ीक़ात :** येह किताब फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है, तह़क़ीक़ी अन्दाज़ में लिखी गई इस किताब में बद मज़हबों की त़रफ़ से वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के तसल्ली बख़्श जवाबात दिये गए हैं। मु-तलाशियाने ह़क़ के लिये नूर का मनारा है। (कुल सफ़्हात : 142)

(15) **अर-बईने ह़-नफ़िय्यह :** येह किताब फ़क़ीहे आ'ज़म ह़ज़रत अ़ल्लामा अबू यूसुफ़ मुह़म्मद शरीफ़ नक़्शबन्दी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तालीफ़ है। जिस में नमाज़ से मु-तअ़ल्लिक़ चालीस अह़ादीस को जम्अ़ किया गया है और इख़्तिलाफ़ी मसाइल में ह़-नफ़ी मज़हब की तक़्विय्यत निहायत मुदल्लल अन्दाज़ में बयान की गई है। (कुल सफ़्हात : 112)

(16) **बेटे को नसीह़त :** येह इमाम गृज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَة की किताब **"अय्युहल वलद"** का उर्दू तरजमा है। बच्चों की तरबिय्यत के लिये ला जवाब किताब है इस में इख़्लास, मज़म्मते माल और तवक्कुल जैसे मज़ामीन शामिल हैं। (कुल सफ़्हात : 64)

(17) **त़लाक़ के आसान मसाइल :** इस फ़िक़्ही किताब में मसाइले त़लाक़ को आ़म फ़ह्म अन्दाज़ में पेश किया गया है जिस की बिना पर त़लाक़ से मु-तअ़ल्लिक़ अ़वामुन्नास में पाई जाने वाली गृलत़ फ़हमियों का काफ़ी ह़द तक इज़ाला हो सकता है। (कुल सफ़्हात : 30)

(18) **तौबा की रिवायात व ह़िकायात :** इस किताब की इब्तिदा में तौबा की ज़रूरत का बयान है, फिर तौबा की अहम्मिय्यत व फ़ज़ाइल मज़्कूर हैं। इस के बा'द तफ़्सीलन बताया गया है कि सच्ची तौबा किस त़रह़ की जा सकती है? और आख़िर में तौबा करने वालों के तक़रीबन 55 वाक़िआ़त भी नक़्ल किये गए हैं। उम्मीदे वासिक़ है कि येह किताब इस्लाह़ी कुतुब में बेहतरीन इज़ाफ़ा मु-तसव्वर होगी। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़्हात : 124)

(19) **अद्दा'वति इलल फ़िक्र** (अ़-रबी) : येह किताब मुह़क़्क़िक़े जलील मौलाना मन्शा ताबिश क़ुसूरी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی की मायानाज़ तालीफ़ "दा'वते फ़िक्र" का अ़-रबी तरजमा है जिस में बद मज़हबों को अपनी रविश पर नज़र सानी करने की तरग़ीब दी गई है। (कुल सफ़्हात : 148)

(20) **आदाबे मुर्शिदे कामिल** (मुकम्मल पांच ह़िस्से) : फ़ी ज़माना एक त़रफ़ नाक़िस और कामिल पीर का इम्तियाज़ मुश्किल है तो दूसरी त़रफ़ जो किसी कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्ता हैं भी तो उन्हें अपने मुर्शिद के ज़ाहिरी व बात़िनी आदाब से आशनाई नहीं। इन ह़ालात में इस बात की अशद ज़रूरत मह़सूस हुई कि कोई ऐसी तह़रीर हो जिस से शरीअ़त की रोशनी में मौजूदा दौर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ नाक़िस और कामिल मुर्शिद की पहचान भी हो सके और कामिल मुर्शिद के दामन से वाबस्तगान आदाबे मुर्शिद से मुत्तलअ़ हो कर ना वाक़िफ़िय्यत की बिना पर त़रीक़त की राह में होने वाले ना क़ाबिले तसव्वुर नुक़्सान से भी मह़फ़ूज़ रह सकें। इस ह़क़ीक़त को जानने और मुर्शिदे कामिल के आदाब समझने के लिये आदाबे मुर्शिदे कामिल के मुकम्मल पांच ह़िस्सों पर मुश्तमिल इस किताब में शरीअ़त व त़रीक़त से मु-तअ़ल्लिक़ ज़रूरी मा'लूमात पेश करने की सअ्य की गई है। (कुल सफ़ह़ात : तक़्रीबन 200)

(21) **टी वी और मूवी :** फ़ी ज़माना ह़ालात बड़ी तेज़ी के साथ तनज़्ज़ुली की त़रफ़ बढ़ते ही चले जा रहे हैं। एक त़रफ़ बे अ़-मली का सैलाब अपनी तबाही मचा रहा है तो दूसरी त़रफ़ बद अ़क़ीदगी के ख़ौफ़नाक तूफ़ान की होल नाकियां बरबादी के मनाज़िर पेश कर रही हैं। इन ह़ालात में मीडिया का त़र्ज़े अ़मल भी सब के सामने है।

''टीवी और मूवी'' नामी इस रिसाले में टीवी और मूवी के ना जाइज़ इस्ति'माल की तबाह कारियों और जाइज़ इस्ति'माल की मुख़्तलिफ़ सूरतों और फ़ी ज़माना इस की ज़रूरत का बयान है। (कुल सफ़ह़ात : 32)

(22) **फ़तावा अहले सुन्नत :** इस सिल्सिले में सात ह़िस्से शाएअ़ हो चुके हैं।

(23) **जन्नत में ले जाने वाले आ'माल :** इस किताब में मुख़्तलिफ़ नेक आ'माल म-सलन ह़ुसूले इ़ल्म, नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, दीगर स-दक़ात, तिलावते क़ुरआन, सब्र, ह़ुस्ने अख़्लाक़, तौबा, ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और दुरूदे पाक के सवाब के बारे में दो हज़ार(2000) से ज़ाइद अह़ादीस मौजूद हैं। इस किताब का मुत़ा-लआ़ करने वाले ख़ुद में अ़मल का जज़्बा बेदार होता मह़सूस करेंगे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। नेकी की दा'वत आ़म करने का जज़्बा रखने वाले मुसल्मानों के लिये इस में कसीर मवाद मौजूद है। (तक़्रीबन 1100 सफ़ह़ात)

(शो'बए दर्सी कुतुब)

(1) **ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह :** इस रिसाले में इ़ल्मे नह़्व की मश्हूर इस्त़िलाह़ात की ता'रीफ़ात मअ़ इम्सला व तौज़ीह़ात जम्अ़ कर दी गई हैं। अगर त़-लबा इन ता'रीफ़ात का इस्तिह़ज़ार कर लें तो इ़ल्मे नह़्व के मसाइल व अब्ह़ास समझने में बहुत सहूलत रहेगी, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ। (कुल सफ़ह़ात : 45)

(2) **किताबुल अ़क़ाइद :** सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रत अ़ल्लामा सय्यिद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की तस्नीफ़ कर्दा इस किताब में इस्लामी अ़क़ाइद और ह़दीसे पाक की रोशनी में क़ियामत से पहले पैदा होने वाले तीस झूटे मुद्दइयाने नुबुव्वत (कज़्ज़ाबों) में से चन्द की तफ़्सील बयान की गई है। येह किताब कई मदारिस के निसाब में भी शामिल है। (कुल सफ़ह़ात : 64)

(3) **नुज़्हतुन्नज़र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र :** येह किताब फ़न्ने उसूले ह़दीस में लिखी गई इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ الرَّحْمَة की बे मिसाल तालीफ़ **''नख़्बतुल फ़िक्र फ़ी मुस्त़लिहि**

अहलिल असर'' की अ़-रबी शर्ह़ है। इस शर्ह़ में क़ुव्वत व ज़ो'फ़ के ए'तिबार से ह़दीस की अक़्साम, इन के द-रजात और मुह़द्दिसीन की इस्ति'माल कर्दा इस्तिलाह़ात की वज़ाह़त दर्ज की गई है। त़-लबा के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। (कुल सफ़ह़ात : 175)

(4) **ज़ुब्दतुल फ़िक्र शर्ह़े नख़्बतुल फ़िक्र :** येह किताब फ़ने उसूले ह़दीस में लिखी गई इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की बे मिसाल तालीफ़ **''नख़्बतुल फ़िक्र फ़ी मुस्त़लिहि अहलिल असर''** की उर्दू शर्ह़ है। इस शर्ह़ में क़ुव्वत व ज़ो'फ़ के ए'तिबार से ह़दीस की अक़्साम, इन के द-रजात और मुह़द्दिसीन की इस्ति'माल कर्दा इस्तिलाह़ात की वज़ाह़त दर्ज की गई है। त़-लबा के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। (कुल सफ़ह़ात : 91)

(5) **शरीअ़त में उ़र्फ़ की अहम्मिय्यत :** येह रिसाला इमाम सय्यिद मुह़म्मद अमीन बिन उ़मर आ़बिदीन शामी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ के उ़र्फ़ से मु-तअ़ल्लिक़ तह़रीर कर्दा अ़-रबी रिसाले **''नश्रिल उ़र्फ़ फ़ी बिना-इ बा'दिल अह़कामि अ़लल उ़र्फ़''** का उर्दू तरजमा है। तख़स्सुस फ़िल फ़िक़्ह के त़-लबा इस का ज़रूर मुत़ा-लआ़ करें। (कुल सफ़ह़ात : 105)

(6) **अर-बईनिन न-वविय्यह** (अ़-रबी) **:** अ़ल्लामा श-रफ़ुद्दीन न-ववी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃ की तालीफ़ जो कि कसीर मदारिस के निसाब में शामिल है। इस किताब को ख़ूब सूरत अन्दाज़ में शाएअ़ किया गया है। (कुल सफ़ह़ात : 121)

(7) **निसाबुत्तज्वीद :** इस किताब में दुरुस्त मख़ारिज से ह़ुरूफ़े क़ुरआनिया की अदाएगी की मा'रिफ़त का बयान है। मदारिसे दीनिया के त़-लबा के लिये बेह़द मुफ़ीद है। (कुल सफ़ह़ात : 79)

(8) **गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल :** इस किताब में अरकाने इस्लाम की वज़ाह़त बयान की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 180)

(9) **काम्याब त़ालिबे इल्म कैसे बनें ?** इस किताब में इल्म के फ़ज़ाइल, त़-लबे इल्म की निय्यतों, अस्बाक़ की पेशगी तय्यारी और तरजमे में महारत ह़ासिल करने का त़रीक़ा, काम्याब त़ालिबुल कौन ? वग़ैरहुम मौज़ूआ़त का बयान है। (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(शो'बए तख़्रीज)

अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन : इस किताब की जदीद कम्पोज़िंग, पुराने नुस्ख़े से मुत़ा-बक़त और निहायत एह़तियात़ से प्रूफ़ रीडिंग की गई है। ह़वाला जात की तख़्रीज भी की गई है। (कुल सफ़ह़ात : 206)

बहारे शरीअ़त : फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की आ़लिम बनाने वाली किताब ''बहारे शरीअ़त'' जो अ़क़ाइदे इस्लामिया और इन से मु-तअ़ल्लिक़ मसाइल पर मुश्तमिल है। तमाम ह़वाला जात की ह़त्तल मक़्दूर तख़्रीज करने के साथ साथ मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी भी हाशिये में लिख दिये गए हैं। इस की मुकम्मल 3 जिल्दें शाएअ़ हो चुकी हैं।

(मजलिसे तराजिमे कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब)

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के इन रसाइल के अ़-रबी तराजिम शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक) (2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)

(3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम) (4) श-ज-रए आ़लिया क़ादिय्यह र-ज़विय्यह अ़त्तारिय्यह

इन रसाइल के फ़ारसी तराजिम शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(2) ग़फ़्लत

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(3) अबू जह्ल की मौत

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(4) एह्तिरामे मुस्लिम

(मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی)

(5) दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़ ।

इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی के कई रसाइल के सिन्धी तराजिम भी शाएअ़ हो चुके हैं । म-सलन

(1) अह़कामे नमाज़ (2) फ़ैज़ाने र-मज़ान (3) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

(4) पेट जो क़ुफ़्ले मदीना (5) आदाबे त़आ़म (6) बयानाते अ़त्तारिय्या

(7) जिन्नात जो बादशाह (8) सुब्ह़े बहारां (9) ज़ल्ज़लो इन इनजा अस्बाब

(10) आक़ा जो महीनो (11) अब्लक़ घोड़े सुवार (12) पुल सिरात़ जी दहशत

(13) ज़ख़्मी नांग (14) कफ़न जी वापसी (15) बरेली कान मदीना

(16) मुलाज़िमीन जा लाइ 21 म-दनी गुल (17) श-ज-रए अ़त्तारिय्या (18) 40 रूह़ानी इ़लाज

इस्लाम जो मुजद्दिद (सिन्धी) : येह किताब इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की मुख़्तसर सवानेह़े ह़यात पर मुश्तमिल है। जिस में आप के इ़ल्मी मक़ाम और दीनी ख़िदमात का बयान है। (कुल सफ़ह़ात : 52)

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के इन रसाइल के सिन्धी तराजिम भी शाएअ़ हो चुके हैं।

(1) मूवी इन टीवी (2) उ़श्र जा अह़काम (हारीन जा लाइ) (3) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी

(4) आदाबे मुर्शिदे कामिल (5) इन्फ़िरादी कोशिश (6) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

(7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब (8) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आमात**" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net